॥६०॥ॐनमः॥अथतीनचौईसीजीकानामअतीतलिष्यते॥छ॥
निर्वाणजी॥१॥सागरजी॥२॥महासाधजी॥३॥विमलप्रभुजी॥४॥
सुद्धप्रभुजी॥५॥श्रीधरजी॥६॥दतजी॥७॥अमलप्रभुजी॥८॥उ
द्धरजी॥९॥अग्निजी॥१०॥संजमजी॥११॥शिवजी॥१२॥पुष्पांज
लिजी॥१३॥शिवगणजी॥१४॥उत्साहजी॥१५॥ज्ञानेश्वरजी॥१
६॥परमेश्वरजी॥१७॥विमलेश्वरजी॥१८॥यशोधरजी॥१९॥
कृष्णजी॥२०॥ज्ञानमतिजी॥२१॥शुद्धिमतिजी॥२२॥श्रीभ
द्रजी॥२३॥श्रीशांतिजी॥२४॥इतिप्रथम॥अथद्वितीयना॰
श्रीऋषभजी॥१॥अजितजी॥२॥संभवजी॥३॥अभिनंदनजी॥४
सुमति॥५॥पद्मप्रभुजी॥६॥सुपार्श्वजी॥७॥चंद्रप्रभुजी॥८॥पुष्प
दंतजी॥९॥शीतलजी॥१०॥श्रेयांसजी॥११॥वासपुज्यजी॥१२॥
विमलजी॥१३॥अनंतजी॥१४॥धर्मजी॥१५॥शांतिजी॥१६॥कुं
थनाथजी॥१७॥अरहनाथजी॥१८॥मल्लिनाथजी॥१९॥मनि
सुव्रतजी॥२०॥नमिनाथजी॥२१॥नेमनाथजी॥२२॥श्रीपार्श्वना
थजी॥२३॥वर्द्धमानजी॥२४॥इतिवर्तमानचौईसीनामसंपूर्ण॥
॥२॥अथअनागतनाम॥महापद्मजी॥१॥सुरदेवजी॥२॥सुप्रभु
जी॥३॥स्वयंप्रभजी॥४॥सर्वायुधजी॥५॥जयदेवजी॥६॥उदयदे
वजी॥७॥प्रभादेवजी॥८॥उदंकजी॥९॥प्रश्नकीर्तिजी॥१०॥जयकीर्ति
जी॥११॥पूर्णबुद्धिजी॥१२॥निःकषायजी॥१३॥विमलप्रभुजी॥१४॥बह
लजी॥१५॥निर्मलजी॥१६॥चित्रगुप्तिजी॥१७॥समाधिगुप्तिजी॥१८
स्वयंभूजी॥१९॥कंदर्पजी॥२०॥जयनाथजी॥२१॥श्रीविमल
२२॥दिव्यवाहजी॥२३॥अनंतवीर्यजी॥२४॥इतितीनूंचौईसी
कानामसंपूर्ण॥श्री॥ ॥छ॥:॥अथजिनदर्शनलीष्यते॥दर्शनं
देवदेवस्य॥दर्शनंपापनाशनं॥दर्शनंस्वर्गसोपानं॥दर्शनंमो
क्षसाधनं॥१॥दर्शनेनजिनेंद्राणां॥साधुनांवंदनेनच॥नचिरं
तिष्टतेपापं छिद्रहस्तेयथोदकं॥२॥वीतरागमुखंदृष्ट्वा॥पद्मरागस
मप्रभं॥अनेकजन्मकृतंपापं॥दर्शनेनविनस्यति॥वोधनं
तपद्मस्य॥समस्तार्थप्रकासकं॥४॥वोधनंचित्तपद्मस्य॥सम

करचरमसरीर॥पावापुरस्वांमीमहावीर॥सिषरसमेदजिनेसुरवीस
भावसहितवंदौजगदीस॥२॥वरदतऔरइंद्रमुनिंदसायरदत्त
आदिगुणवृंदनगरतारावरमुनिआठकोडि॥वंदौभावसहितक
रजोडि॥४॥श्रीगिरनारिसिषरविष्यात॥कोडिवहेतरिअरुसैसात
संबूप्रद्युमनकुमरद्वैभाय॥अनिरुधआदिनमूंतसुपाय॥५॥राम
चंदकेसुतद्वैवीर॥लाडिनिरंदआदिगुणधीर॥पंचकोडिमुनिमुक
तिमझार॥पावागिरिवंदौनिरधार॥६॥पंडवतीनद्रविडराजान॥आ
ठकोडिमुनिमुकतिपयान॥श्रीसेतुंजसिषरकैसीस॥भावसहित
वंदौनिसदीस॥७॥जेवलिभद्रमुकतिमैंगये॥आठकोडिमुनिऔ
रभए॥श्रीगजपंथसिषरसुविसाल॥तिनकेचरननमूंतिंहुंका
ल॥रामहणूंसुग्रीवसुडील॥गवगवषिनीलमहानील॥कोडिनि
न्याणवेमुकतिपयानि॥तुंगीगिरवंदौधरिध्यान॥९॥नगानंग
कुमारसुजान॥पंचकोडिअरुअर्धप्रमान॥मुकतिगएसोनागि
रसीस॥तेवंदौत्रिभुवनपतिईस॥१०॥रावणकेसुतआदिकुमार
मुकतिगएरेवातटसार॥कोटिपंचअरुलाषपंचास॥तेवंदौधरिप
रमउल्हास॥११॥रेवानदीसिद्धवरकूट॥पश्चिमदिसादेहजिंहछू
ट॥द्वैचक्रीदसकामकुमार॥अठकोडिवंदौभवपार॥१२॥वडवाणी
वडनयरसुचंग॥दक्षणदिसिगिरिचुलउतंग॥इंद्रजीतअरुकुं
भकरण॥तेवंदौभवसागरतरण॥१३॥सुवर्णभद्रआदिमुनिचा
रि पावागिरिवरसिषरमझार॥चलनानदीतीरकेपासि॥मुकति
गयेवंदौनितितास॥१४॥फलहोडीवडगामअनूप॥पश्चिमदिसि
द्रोणागिरिरूप॥गुरदत्तआदिमुनीस्वरजहां॥मुकतिगयेवंदौनि
तितास॥१५॥बालमहाबालमुनिदोय॥नागकुमारमिलेत्रय
होय॥श्रीअष्टापदमुकतिमझारि॥तेवंदौनितिसुरतिसंभालि
॥१६॥अचलापुरकीदिसाईसान॥तहांमेढगिरिनामप्रधान॥साढे
तीनकोडिमुनिराय॥तिनकेचरणनमूंचितलाय॥१७॥वंसस्थल
वनकेढिगहोय॥पश्चिमदिसाकुंथुगिरसोय॥कुलभूषणदे
सभूषणनामतिनकेचरनकरुंप्रणांम॥जसरथराजाकेसुतकहे

॥ देस॥ कलिंगपै सैल है॥ कोडिसिलामुनिकोडिप्रवान॥ वंदनकरौ
जोरिजुगपान॥ १८॥ समोसरनश्रीपार्सजिनंद॥ रिसंदेगिरनैन
नंद॥ वरदत्तआदिपंचरिषराज॥ तेवंदौनितिधरमजिहाज॥ १९॥ ती
नलोककेतीरथजहां॥ नितिप्रतिवंदनकीजैतहां॥ मनवचका
यसहितसिरनाय॥ वंदनकरूंभगतिउरलाय॥ २०॥ संवतसत
रासइकताल॥ भाववंदनाकरूंत्रिकाल॥ जयनिरवांणकांडगु
णमाल॥ २१॥ इतिनिर्वाणकांडभाषासंपूर्ण॥ अथगाथालि
ष्यते॥ वांनरकामरजीकीभाषालिष्यते॥ दोहा॥ आदिपुरिषआद
सजिन॥ आदिसुविधिकरतार॥ धरमधुरंधरपरमगुरु॥ नमोंआदि
अवतार॥ १॥ चौपई॥ सुरनरसमुटरतनछविकैरै॥ अंतरपापति
मरसवहरै॥ जिनपदवंदोमनवचकाय॥ भवजलपततिउधारन
सहाय॥ २॥ श्रुतपारगइंद्रादिकदेव॥ जाकीथुतिकीनीकरिसेव
सबदमनोहरअरथविसाल॥ तिसप्रभुकीवरनौंगुनमाल॥ ३॥ विव
धवंदिपदमैंमतिहीन॥ कैनिलजथुतिमनसाकीन॥ जलप्रतिबिं
वबुद्धिकोगहै॥ ससिमंडलबालकहीचहै॥ ४॥ गुणसमुद्रतुमगु
णअविकार॥ कहतनसुरगुरुपावैपार॥ प्रलयपवनउद्धतजल
जंत॥ जलधितिरैकोभुजबलवंत॥ ५॥ सोमैंसकतिहीनथुतिक
रो॥ भगतिभाववसिकछूनहीडरो॥ ज्योंमृगनिजसुतपालन
हेत॥ मृगपतिसनमुषजायअचेत॥ ६॥ मैंसठसुधीहसनकौ
धाम॥ तुममुझभगतिबुलावैराम॥ ज्योंपिकअंबकलीपरभावम
धुरितुमधुरकरैआराव॥ ७॥ तुमजसजंपतजिनछिनमाहि॥ जन
मजनमकेपापनसांहि॥ ज्योंरविउदैफटैततकाल॥ अलिवल
नीलनिसातमजाल॥ ८॥ तुमप्रभावतैंकरौंविचार॥ होसीयह
थुतिजनमनुहार॥ ज्योंजलकमलपत्रमैंपरै॥ मुकताहलकं
दुतिविस्तरै॥ ९॥ तुमगुणमहिमाहतदुषदोष॥ सोतौदूरिरहो
षपोष॥ पापविनासकहैतुमनाम॥ कमलविकासैज्यौंर

॥१०॥ नहिअचंभजोहोइतुरंत॥ तुमसेतुमगुनव

जोअधीनकौंआपसमान॥

इकटकजनतुमकौंअवलोय॥

कौंकरिषीरजलधिजलपांन॥ष्यारनीरपीवैमतिमांन॥१२॥प्रभु
दमवीतरागगुनलीन॥जिनपरिमाणुदेहतुमकीन॥हैतितनी
हीतेपरिमाणु॥तातैंतुमसमरूपनआंन॥१३॥कहांतुममुखअनु
पमअविकार॥सुरनरनागनैनमनुहार॥कहांचंद्रमंडलसकलं
क॥दिनमैंढाकपत्रसमरंक॥१४॥पूरणचंद्रज्योतिछविवंत॥तुम
गुणतीनजगतलंघंत॥एकनाथजोतुमआधार॥तिनविचर
तकोसकैनिवार॥१५॥जोसुरतियविभ्रमआरंभ॥मननडिगौंतुम
तौनअचंभ॥अचलचलावैप्रलयसमीर॥मेरुसिषरडिगमै
नधीर॥१६॥धूमरहितवातीगतनेह॥परकासकत्रिभुवनघ
रएह॥वातगम्यनांहीपरचंड॥अपरदीपतुमबलेअषंड॥१७
छिपहुनलिपहिराहकीछंह॥जगपरकासतहोछिनमांहि॥घनअ
नवरतदाहनिवाररवितैंअधिककरोगुणसार॥१८॥सदाउदि
तविदलिततममोहविघटितमेघराहअवोह॥तुममुषक
मलअपूरवचंद॥जगतविकासीज्योतिअमंद॥१९॥निसदि
नससिरविकौंनहीकाम॥तुममुषचंदहरैतमधाम॥जोसुभ
वतैंउपजैनाज॥सजलमेघतैंकौनैंकाज॥२०॥जोसुबोधसोहैतु
ममांहि॥हरिहरादिकमैंसोनांहि॥जोदुतिमहारतनमैंहोइ
काचषंडनहिपावैसोइ॥२१॥नाराचछंद॥ ॥सरागदेवदेषि
वीतरागतपिछानिया॥कछूनताहिदेषितैंतहांतुहीविसे
षियै॥मनोगिचितचोरिऔरभूलिहूनदेषियै॥२२॥अनेकपू
त्रवंतनीनितंविनीसपूतहैंनतोसमांनपुत्रऔरमाततैप्रसूत
है॥दिसाधरंतितारिकाअनेककोटिकौगिनैं॥दिनेसतेजवंतए
कपूर्वहीदिसाजानैं॥२३॥पुरानहोपुमानहोपुनीतपुंनिवांन
हो॥कहैमुनीसअंधकारनासकौसुजांनहोमहंतलोहिजा
नकैनहोइवसिकालकै॥नऔरमोषमोषिपंथदेवतोहिका
रिकै॥२४॥अनंतनित्यचितकीअगम्यरम्यआदिहो॥असं
ष्यसर्वव्यापिविस्नुब्रह्महोअनादिहो [illegible] ॥महेसकांमकै
तजोगईसजोगज्ञानहो॥अनेकएकग्यानरूपसुधसंतमान

॥२५॥ तुही जिनेस बुध हो सु बुद्धि के प्रमानतें ॥ तुही
जगत्रय विधानतें ॥ तुही विधात हो सही सुमोखपंथ धारतें ॥
तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतें ॥२६॥
आपदा निवार हो नमो करूं सत्रूरि त्रूमिलोक के सिंगार हो ॥
तुहो
यदेत हे ॥२७॥ चौपई ॥ तुमपूरनजिनगुणगन नये ॥
नकरि तुम परिहरे ॥ और देवगुण आश्रय पाय ॥
फिरि तुम आय ॥२८॥ तरुअसोकतलि
तनसोनितहे अविकार ॥ मेघनिकट ज्यो तेजफुरंत
तिमरनिहनंत ॥२९॥ सिंहासनमणिकिरणि
तिसपरिकंचनवरण पवित्र ॥ तुमतनसोने किरणि
॥ ज्यो उदयाचलरवितमहरि ॥३०॥ कुंदनपङ्गसितच
दलंत ॥ कनकचरनतुमतनसोजंत ॥ ज्योसुमेरतटनिरम
कांति झिरनां झरे नीरसमगांति ॥३१॥ ऊंचो रहे सूरदुति
प ॥ तीनछत्र तुम दिपे अगोप ॥ तीनलोक की प्रभुता
॥ मोतीझालरसो छवि लहे ॥३२॥ दुंदुभिसबदगाह
। चहुंदिसिहोहि तुहारे धीरे ॥ त्रिभुवनजनसिव
संगमकरे ॥ मानो जयजयरवितचरे ॥३३॥ मंदपवनमां
दकवृष्टि ॥ विविधिकलपतरुपुष्पसुवृष्टि ॥ देवकरे विग
तदलसार ॥ मानो द्विजपंकतिअवतार ॥३
ड्डालतेनचंदसवडुतिवंत करेतहेमंद ॥ कोटिसंख्यर
जछिपाय ॥ ससिनिर्म्मलनिसिकरे अछाय ॥३५॥
मारगसंकेत ॥ परमधरमउपदेसनहेत ॥ दि
रअगाध ॥ सवभाषागर्भितहितसाध ॥३६॥ दोहा ...
तसुवर्णकमलद्युतिनखदुतिमिलिचमकांहि ॥ तुमपद
पदवीजहधरे ॥ तहेसुरकमलरचांहि ॥३७॥ ऐ
तुमविषे औरधरे नहीं कोइ ॥ सुरजिमें जो ज्योति है नहीं
तारागनसोय ॥३८॥ [illegible] दालकिकरपतकीमदअलि
नकपोलमलअलिकुलकंकोरे ॥ तिनसुनिसबदप्रचंडक्रो

उधतम्रतिधारै।कालवरणविकरालकालवतसनमुषआ
वै।ऐरापतिकीसरससकलजनभयउपजावै।देषिगयं
दनभयकरैतुमपदमहिमालीन॥विपतिरहितपतिसहित
वरतैंभगतिअदीन॥३९॥अतिमदमंतगयंदकुंभथल
नषनविदारै।मोतीरक्तसमेतडारिभूतलसिंगारै।बांकी
दाढविसालवदनमेंरसनालोलैं॥भीमभयंकररूपदेषिज
नथरहरडोलैं॥ऐसेमृगपतिपगतलैंजेनरआयाहोय॥
सरणगहेतुवचरनी॥बाधाकरैनसोय॥४०॥प्रलयपवनक
रिउठीआगिजोतासपटंतर।वमैंफुलिंगसिषाउतंग।पर
जलैनिरंतर।जगतसमस्तनिगलिकैभसमकरैगीमानैं।
तडतडातदावानलजोचहुदिसाउठानौ॥सोइकछिनमैं
उपसमैंनामनीरतुमलेत।होइसरोवरपरनवैविगसि
तकमलसमेत॥४१॥कोकलकंठसमानस्यामतनक्रोध
जलंतो।रक्तनयनफुंकारमारविसकनउगलंतो॥फण
कोऊंचोकरैवेगिहीसनमुषआवै॥तवजनहोइनिसंकदे
षिफणपतिकोआवैजोपचैनिजपावकौं॥व्यापैविषनल
गारनागदमनितुमनामकौं॥तिनकौंहैआधार॥४२॥जिस
रणमांहिभयानकसवदअतिकरहितुरंगम॥घनसेगज
गरजांहिमतमानौगिरजंगम॥अतिकोलाहलमांहिवात
जहांनाहिसुणिजिराजनकौंवलचंडदोऊचलधीरजछो
जै॥नाथतुम्हारेनामतैंसोछिनमांहिपलाय।ज्योंदिनकर
परकासतैंअंधकारमिटिजाय॥४३॥मारेजहांगयंदकुं
सहथियारविदारै॥उमगेरुधिरप्रवाहवेगिजलसेविस
तारै॥तरणअसमर्थमहाजोधावलपूरै॥जिसरण
मैंजिनतोहिभक्तजेहैरणसूरे॥दुर्जयअरिकुलजीति
कैजयपावैनिकलंक॥तुमपदपंकजवनवसेतेनरसदा
निसंक॥४४॥नक्रचक्रमकरादिमछकरिभयउपजावै॥
जामैंवडवाअगिनितेजनिजनीरजलावै।पारनपावैजास

सथाहनहीलहियेजाकी॥गरजैंज्योंगंभीरलहरिकीगिणतिन
ताकी॥सुषसौंतिरैसमुदकौं॥जेजेतुमगुणमरांहि॥लोककिल्ले
लनिकेसिषरपारजांनलेजाहि॥४५॥महाजलोदररोगभार
पीडितनरैजेहे॥वातपित्तकफकुष्टआदिजेरोगग्रहैहे॥सोवै
रहैउदासनांहिजीवनकीआसा॥अतिघिनांवनीदेहधरैं
दुरगंधनिवासा॥तुमपदपंकजधूलिकौं॥जेलावैनिजअंग
तेनिरोगसरीरलही॥छिनमैंहोहिअनंग॥४६॥पावकंचवै
लेकरिबाधीसांकलनारी॥गाढीवेडीपहरिमांहिजिनजांघ
विदारी॥भूषप्यासचितासरीरदुषजेविललातैसरननांहि
नहोंकोइभूपकेवंदीषाने॥तुमसुमरतस्वयमेवही॥वंधनस
वषुलिजांहि॥छिनमैंतेसंपतिलहैचिंताभयविनसांहि॥
४७॥महामत्तगजराजऔरमृगराजदावानलिफणपति
रणपरचंडनीरनिधिरोगमहावल॥वंधनएभयआवडर
पिकरिमानौनामैंतुमसुमरतछिनमांहिअभैथांनकप्र
गासैं॥इसअपरसंसारमैंमरननांहिअरुकोइ॥यातैंतुम
पदभक्तिकीभक्तिकीहीईहोय॥४८॥इहगुनमालविसालन
थतुमगुणनिसवारीविविधिवर्णकिपुष्प ग्रंथिमैंभक्तिवि
थारी॥जिनरपहरैकंठभावनामैंभावै॥मांनतुंगतेनिजाध
नाशिवलक्ष्मीपावै॥भाषाभक्तामरकीयो॥हेमराजहितहे
त॥जेनरपढैसुभावसौं॥तेपावैसिवषेत॥४९॥इतिभक्ता
मरजीकीभाषासंपूर्ण॥अथएकीभावजीकीभाषा॥दोहा
वंदौंश्रीजिनराजपद॥रिधिसिधदातार॥विघनहरनमंगल
कर॥दारिद्रदलनअपार॥१॥चौपई॥मिथ्याभावकर्म
वंधनयो॥दुर्निवारभवभवदुषदयो॥सोसवनामसमागते
तेहोइ॥रहैनप्रभूदुषकारणकोइ॥२॥गर्पनिज्योतिअघ
तमक्षयकार॥अघटप्रकासकहैगणधार॥मोमननवन
वसैतुमनाम॥तहांनरमतिमरकोंकाम॥३॥पूजागदगदवच
मनलाय॥करोहरषजलवदनन्हुवाय॥विषैमालचिरका
लअपार॥भाजैंतजितनवमईद्वार॥४॥प्रथमकनकमैंभूसंक

न निकलागसु॥ तैं अवतस्यौं॥ चितय हम्यान करु तुमन्याय करौ है
हे मन तचिन्तनकाय॥ ५॥ विनस्वारथ्य सवजग सुषदाय॥ जान्यौ स
वेद रवपरजाय॥ जग लिरची तितसंज्यामो हि तुम व सुषगान
कैसे हो हि॥ ६॥ जम्यौ जगत वन मैं चिरकाल॥ उपज्यो ष ट्रम मि
विकराल तुम नेष मुधा सीत वावरी पुंनि ज दैं लहि सवतपहरी
७॥ गामन प्रजा व कमल कै दल॥ परिमल श्री जुत कन कऔ
व॥ मो मैन परमैतु मसवकाय॥ कौंनन मिलैं मुकै सव सुष आ
य॥ ८॥ विधि वन तजि सिव सुष घर कीयो॥ मदन मांन छिन मै
हरि लीयो॥ पीत पात्र वच सुधा पीवंत॥ विषै रोग रिव त्रास हह
नंत॥ ९॥ तुम दिग मान सथंन जुर दे॥ रतन रांसि व कुसो नाल
हे॥ दषत मांन रोग छय होय॥ जद पी है पाहण मैं सोय॥ १०॥ तु
म मूरति गिर स परस वाय॥ लगैं कमै रज पुंज पुलाय॥ ध्यान
तौ हित रक मल मकार॥ होइ परम पद जगति सतार॥ ११॥
नवजन वपायो दुष अपार॥ यादि कर तलाग त असिधार॥
तुम सव जांन प्रधान कपाल॥ करी जगति अव होह दयाल
१२॥ पापी स्वान अंत की वार॥ लह्यो सुरग सुष सुनि नवका
र॥ जयो अमल मन तुम न्याग चान॥ अचिरज कहा वरो सिव
थांन॥ १३॥ तुम षनु सुधंग पान जिगवंत॥ तो वी जगति छिन
ज्ञो संत॥ मोह जरे दिट मो वि कि चार॥ सो लिस के न लहै सु
ष सार॥ १४॥ मुकति पंथ अघ तम वहु भस्यो॥ गढे कलेस वि
षम विसतस्यो॥ सुषस्यों सिव पद पुहचे कोय॥ जो तुम वचम
न दीप न होय॥ १५॥ करम धरा आतम निधि भूरि॥ दवी कली
पावै नही कूरि॥ जगति कुदाल षोदि लहिं॥ भंत विलसे परम
नद तुरंत॥ १६॥ स्यादवाद हिमगिर स्यों चली॥ तुम पद पर सिजुद
धि मिव रली॥ जगति गंग मैं मो मन न्हाय॥ कौंन पाप मल का
लु षित जाय॥ १७॥ परमातम थिर पद सुष मई॥ मैं सदोष तुम
सम बुद्धि नई॥ यदपि वपत रहम्यान तुम्हार॥ तदपि सुवांछि

कीभा-भा
५

तफलदातार॥१८॥ वचेन उदधिसवजगविसतरयो॥स्यादल
हरिमिथ्यामलहरयो॥श्रिरमनवादउगमनधरै॥ध्यानसु
धापीजमनयहरै॥सोमारंचकुदेवनलहै॥तुमनिपरिशह
अनेमनोग॥कोनकीजनूषनअमिजेगतुमसोनानहीईउ
नुनयो॥एकाअवतारीसोनयो॥लोकनाथनवचारिधियोत
मुकतिपंथइहिविधिथुतिहोत॥२०॥एथुतिवचनसुपुदग
लरूप॥नहीआपेतुमगुणचिद्रुप॥तदपिनभातिदिदसुधा
नुगहै॥मनवंछितफलसुरतरलहै॥२१॥रागदोषविनुपर
मउदास॥चाहरहितअरसवजगदास॥भुवनतिलकनु
मढिगरिपुनसे॥यहप्रभुताकअनिनलखै॥२२॥जसग
वेसुरनारिअपार॥ध्यानरूपध्यायकसंसार॥छादसांगप
गपढिमोहनरहै॥थुतिकरिसुगमपंथमिवलहै॥२५॥अ
नंतचतुष्टयरूपनिहाल॥पावेमनरूचिसहितत्रिकाल
मुनिवानसुजमारगहोइ॥तीर्थंकरपदविलसेसोय॥२५॥
इंद्रसेवकरिपारनलहै॥गणधरादिसवगुणनहीकहै॥च
नमतितनककियोकहाहै॥जगतिनिसिवसुरतरसमदे
ह॥२६॥दोहा॥त्राष्टकाचहिततकेमें॥वादिराजसिरताजए
कीभावप्रगटकीयो॥द्यानतिनगतिजिहाज॥२७॥इति ए
कीभावजीकीभाषासंपूर्ण॥श्री॥ श्री॥ ॥श्री॥ ॥छ॥१
॥अथएकीभावजीसंस्कृतलीष्यते॥एकीभावंगतइवमयायःस्वयं
कर्मबंधोघोरंदुखंभवभवगतोदुर्निवारःकरोति तस्याप्यस्यात्वयि
जिनरवेभक्तिरुन्मुक्तयेचेज्जेतुंसक्योभवति नतयाकोपरः
स्तापहेतुः॥१॥ज्योतिरूपंदुरिततिनिवहध्वांतविध्वंसहेतुंत्वामेवाहुर्जि
नवरचिरंतत्वविद्याभियुक्तः चेतोवासेभवसित्वमममस्फारमुद्भास्य
मानस्तस्मिन्नंहःकथमिवतमोवस्तुतोवस्तुमीष्टे॥२॥आनंदाश्र
स्नपितवदनंगद्गदंचाभिजल्पन्यश्चायेत त्वयिदृढमनाःस्तोत्रम
मंत्रैर्भवंतंतस्याभ्यस्तादपिचसुचिरंदेहवल्मीकमध्यान्निःकास्यंते
विविधविषमव्याधयःकाद्रवेयाः॥३॥प्रागेवेहत्रिदिवभवनादेष्या

तां देव निन्ये त्वयेदं ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वांतगेहं प्रविष्टस्तत्किं चित्रं जि
न वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि॥४॥ लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन
बंधुस्त्वय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रत्यनीका भक्तिस्फीतां चिर
मधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयू
थं सहेथाः॥५॥ जन्माटव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा प्राप्तैवेयं त
व नयकथा स्फारपीयूषवापी तस्या मध्ये हिमकरहिमव्यूहशीते नि
तांतनिर्मग्नं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः॥६॥ पादन्यासाद
पि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनि
वासश्च पद्मः सर्वांगेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे श्रेयः
किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति॥७॥ पश्यंतं त्वद्वचनममृतं भक्ति
पात्र्या पिबंतं कर्मारण्यात्पुरुषमसमानंदधाम प्रविष्टं त्वां दुर्वारस्मरम
दहरं त्वत्प्रसादैकभूमिं क्रूराकाराः कथमिव रुजाः कंटका निर्लुठंति
॥८॥ पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्त्तिर्मानस्तंभो भवति च
परस्तादृशो रत्नवर्गः दृष्टिप्राप्तो हरति स कथं मानरोगं नराणां प्र
त्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्ति [illegible] हेतुः॥९॥ हृद्यः
प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्तिशैलोपवाही सद्यः पुंसां निरवधिरुजा
धूलिबंधं धुनोति ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्तस्या
शक्यः कः इह भुवने देव लोकोपकारः॥१०॥ जानासि त्वं मम भव
भवे यच्च यादृक् च दुःखं जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निःपिनष्टि त्वं स
र्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोस्मि भक्त्या यत्कर्तव्यं तदिह विषये दे
व एव प्रमाणं॥११॥ प्रापद्दैवं तव नुतिपदैर्जीवकेनोपदिष्टैः पापा
चारी मरणसमये सारमेयोपि सौख्यं कः संदेहो यदुपलभते वासवश्री
प्रभुत्वं जल्पन् जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रं॥१२॥ शुद्धे ज्ञा
ने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावंचि
का कुंचिकेयं शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्तिकामस्य पुंसो मुक्ति
द्वारं परिदृढमहामोहमुद्राकपाटं॥१३॥ प्रच्छन्नः खल्वयमघमयै
रंधकारैः समंतात् पंथा मुक्तेः स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधैः तत्क
स्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी यद्यग्रेग्रे न भवति भवद्भारतीरत्नदीपः॥१४

कीभा॰स्तो॰ ६

आत्मज्योतिर्निधिरनवधिर्द्रष्टुरानंदहेतुः॥ कर्मक्षोणीपटलपिहितोयोन
वाप्यःपरेषां हस्तेकुर्वंत्यनतिचिरतस्तंभवद्भक्तिभाजस्तोत्रैर्बंधप्रकृतिप
रुषोद्दामधात्रीखनित्रैः॥ १५॥ प्रत्युत्पन्नानयहिमगिरेरायताचामृताब्धे
र्यादेवत्वत्पदकमलयोःसंगताभक्तिगंगा चेतस्तस्यांममरुचिवशादाप्लु
तंक्षालितांहःकल्माषंयद्भवतिकिमियंदेवसंदेहभूमि॥ १६॥ प्रादुर्भूत
स्थिरपदसुखंत्वामनुध्यायतोमेत्वय्येवाहंसइतिमतिरुत्पद्यतेनिर्विक
ल्पा मिथ्यैवेयंतदपितनुतेतृप्तिमभ्रेषरूपांदोषात्मानोप्यभिमतफल
स्त्वत्प्रसादाद्भवंति॥ १७॥ मिथ्यावादंमलमपनुदन्सप्तभंगीतरंगीवा
गंभोधिर्भुवनमखिलंदेवपर्येतियस्तेतस्यावृत्तिंसपदिविबुधाश्चेतसै
वाचलेनव्यातन्वंतः सुचिरममृतासेवयातृप्नुवंति॥ १८॥ आहार्येभ्यः
स्पृहयतिपरोयःस्वभावादहृद्यःशस्त्रग्राहीभवतिसततंवैरिणायश्च
शक्यः। सर्वांगेषुत्वमसिसुभगस्त्वंनशक्यःपरेषांतत्किंभूषावस
नकुसुमैःकिंचशस्त्रैरुदस्त्रैः॥ १९॥ इंद्रःसेवांतवसुकुरुतांकिंतयाश्ला
घनंतेतस्यैवेयंभवलयकरीश्लाघ्यतामातनोति त्वंनिस्तारीजननजल
धेःसिद्धिकांतापतिस्त्वंलोकानांप्रभुरितितवश्लाघ्यतेस्तोत्रमित्थं॥ २०॥
वृत्तिर्वाचामपरसदृशीनत्वमन्येनतुल्यःस्तुत्युद्गाराःकथमिवतत
स्त्वय्यमीनक्रमंते मैवंभूवंस्तदपिभवतोभक्तिपीयूषपुष्टास्तेभव्याना
मभिमतफलाःपारिजाताभवंति॥ २१॥ कोपावेशोनतवनतवक्वापिदे
वप्रसादोव्याप्तंचेतस्तवहिपरमोपेक्षयैवानपेक्षं आज्ञावश्यंतद
पिभुवनंसन्निधिर्वैरहारीक्वैवंभूतंभुवनतिलकप्राभवंत्वत्परेषु॥ २
२॥ देवस्तोतुंत्रिदिवगणिकामंडलीगीतकीर्त्तिंतोतूर्त्तिंत्वांसकलविष
यज्ञानमूर्त्तिंजनोयःतस्यक्षेमंनपदमटतोजातुजोहूर्त्तिपंथास्तत्वग्रं
थस्मरणविषयेनैषमोमूर्त्तिमात्रं॥ २३॥ चित्तेकुर्वन्निरवधिसुखज्ञा
नदृग्वीर्यरूपंदेवत्वांयःसमयनियमादादरेणस्तवीतिश्रेयोमार्गंसत्प
सुसुकृतीतावताप्रयित्वाकल्याणानांभवतिविषयःपंचधापंचतानां
२४॥ भक्तिप्रह्वमहेंद्रपूजितपदत्वत्कीर्त्तनेनक्षमाःसूक्ष्मज्ञानदृशो
पिसंयमभृतःकेहंतमंदावयंअस्माभिःस्तवनछलेनतुपरस्त्वय्या
दरस्तन्यतेस्वात्माधीनसुखैषिणांसखलुनःकल्याणकल्पद्रुमः॥
२५॥ वादिराजमनुशाब्दि[illegible]कलोकोवादिराजमनुतार्किकसिंहःवा

दिराजमनुकाव्यकृतस्तेवादिराजमनुनम्सहायत॥२६॥इतिश्रीवादि
राजाकवीश्वरविरचितचितैकीभावस्तोत्रंसमाप्तं॥२६॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥अथ
॥ॐनमः॥अथविषापहारस्तोत्रलिख्यते॥स्वात्मस्थितःसर्वगत
समस्तव्यापारवेदीविनिवृत्तसंगःप्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्यः
पायादपायात्पुरुषःपुराणः॥१॥परैरचिंत्यंयुगभारमेकःस्तोतुंवह
न्योगिभिरप्यशक्यःस्तुत्योद्यमेसौवृषभोनभानोःकिमप्रवेशे
विशतिप्रदीपः॥२॥तत्याजशक्रःशकनाभिमानंनाहंत्यजामिस्त
वनानुबंधंस्वल्पेनबोधेनततोधिकार्थंवातायनेनेवनिरूप
यामि॥३॥त्वंविश्वदृश्वासकलैरदृश्योविद्वानशेषंनिखिलैरवे
द्यः॥वक्तुंकियान्कीदृशइत्यशक्यःस्तुतिस्ततोशक्तिकथातवा
स्तु॥४॥व्यापीडितंबालमिवात्मदोषैरुल्लाघतांलोकमवापिप
स्त्वंहिताहितान्वेषणमांद्यभाजःसर्वस्यजंतोरसिबालवैद्यः
॥५॥दातानहर्तादिवसंविवस्वानद्यश्वइत्यच्युतदर्शिताशःस
व्याजमेवंगमयत्यशक्तःक्षणेनदत्सेभिमतंनताय॥६॥उपैति
भक्त्यासुमुखःसुखानित्वयिस्वभावाद्विमुखश्चदुःखंसदावदातद्यु
तिरेकरूपस्तयोस्त्वमादर्शइवावभासि॥७॥अगाधताब्धेःस
यतःपयोधिर्मेरोश्चतुंगाप्रकृतिःसयत्रद्यावापृथिव्योःपृथुता
तथैवव्यापत्वदीयाभुवनांतराणि॥८॥तवानवस्थापरमार्थतत्त्वं
त्वयानगीतःपुनरागमश्चदृष्टंविहायत्वमदृष्टमैषीर्विरुद्धवृत्तो
पिसमंजसस्त्वं॥९॥स्मरःसुदग्धोभवतैवतस्मिन्नुद्धूलितात्मा
यदिनामशंभुःअशेतवृंदोपहतोपिविष्णुःकिंगृह्यतेयेनभवा
नजागः॥१०॥सनीरजास्यादपरोघवान्वातद्दोषकीर्त्यैवनतेगुणि
त्वंस्वतोंबुराशेर्महिमानदेवस्तोकापवादेनजलाशयस्य॥११॥क
र्मस्थितिंजंतुरनेकभूमिंनयत्यमुंसाचपरस्परस्यत्वंनेतृभावंहि
तयोर्भवाब्धौजिनेंद्रनौनाविकयोरिवाख्यः॥१२॥सुखायदुः
खानिगुणायदोषान्धर्मायपापानिसमाचरंतितैलायबाला
ःसिकतासमूहंनिःपीडयंतिस्फुटमत्वदीयाः॥१३॥विषापहा
रंमणिमौषधानिमंत्रंसमुद्दिश्यरसायनंचभ्राम्यंत्यहोनत्वम

विषाप०स्तो०
७

तिस्मरंतिपर्यायनामानितवैवतानि॥१५॥चित्तेनकंचित्कृतवान
सित्वंत्वमवेस्त्रिलोकीस्वामीतिसंरमानिपतेरमीयांवोधाधिपति
श्रुतिनात्रचिष्यतेन्योपिचेत्याप्तदमूतयीदं॥१६॥नाकस्यपत्युःपरि
कर्मरम्यंनागम्यरूपस्यतवोपकारितस्यैवहेतुःस्वसुखस्यभानो
रुद्बिभ्रतश्छत्रमिवादरेण॥१७॥क्वोपेक्षकस्त्वंक्वसुखोपदेशःस
चेत्किमिच्छाप्रतिकूलवादः क्वासौक्ववासर्वजगत्प्रियः त्वंतत्प
यातथ्यमवेविचिंते॥१८॥तुंगात्फलंयत्तदकिंचनाच्चप्राप्यंसमृद्ध
न्नधनेश्वरादेः॥निरंभसोप्युच्चतमादिवाद्रेर्नैकापिनिर्यातिधु
नीपयोधेः॥१९॥त्रैलोक्यसेवानियमायदंडंदध्रेयदिंद्रोविनये
नतस्यतत्प्रातिहार्यंभवतःकुतस्त्यंतत्कर्मयोगाद्यदिवातव
स्तु॥२०॥श्रियापरंपश्यतिसाधुनिःस्वःश्रीमान्नकश्चित्कृपणंत
दंस्यः यथाप्रकाशस्थितमंधकारस्थायीक्षतेसौनतथातमस्थं॥
२१॥स्ववृद्धिनिःश्वासनिमेषभाजिप्रत्यक्षमात्मानुभवेपिमूढःकिं
चाखिलज्ञेयविवर्तिबोधस्वरूपमध्यक्षमवैतिलोकः॥२२॥तस्या
त्मजस्तस्यपितेतिदेवत्वांयेवगायंतिकुलंप्रकाश्यतेद्यापिननु
अश्मनमित्यवश्यंपाणौकृतंहेमपुनस्त्यजंति॥२३॥दत्तस्त्रिलो
क्यांपटहोभिभूताःसुरासुरास्तस्यमहानसलाभःमोहस्यमोह
स्त्वयिकोविरोद्धुंमूलस्यनाशोबलवद्विरोधः॥२४॥मार्गस्त्वयैक
दृष्टोविमुक्तेश्चतुर्गतीनांगहनंपरेणसर्वंमयादृष्टमितिस्मये
नत्वंमाकदाचिद्भुजमालुलोकः॥२५॥स्वर्भानुरर्कस्यहविर्भुजों
भःकल्पांतवातोंबुनिधेर्विघातःसंसारभोगस्यवियोगभावोवि
पक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये॥२६॥अजानतस्त्वांनमतःफलंयत्तज्जान
तोन्यंनतुदेवतेतिहरिन्मणिंकाचधियादधानस्तंतस्यबुद्ध्या
वहतोनरिक्तः॥२७॥प्रशस्तवाचश्चतुराःकषायैर्दग्धस्यदेवव्य
वहारमाहुःगतस्यदीपस्यहिनंदितत्वंदृष्टंकपालस्यचमंगल
त्वं॥२८॥नानार्थमेकार्थमदस्त्वदुक्तंहितंवचस्तेनिशमय्यव
क्तुः॥निर्दोषतांकेनविभावयंति॥ज्वरेणमुक्तःसुगमःस्वरेण
२९॥नक्वापिवांछाववृतेचवाक्तेकालेक्वचित्कोपितथानियो
गःनपूरयाम्यंबुधिमित्युदंशुःस्वयंहिशीतद्युतिरभ्युदेति॥रागेषु

णागनीरा:परमा:प्रसन्नाबहुप्रकाराबहवस्तवेतिदृष्टोयमंतस्त
नेनतेषांगुणोगुणानांकिमत:परोस्ति॥३१॥स्तुत्यारंनास्तिमलंप्रभ
स्यास्मत्स्याप्रणास्याचततोनजामिस्मरामिदेवप्रणमामिनित्यं
केनाप्युपायेनफलंहिसाध्यं॥३२॥ततस्त्रिलोकीनगरीनमा
धिदेवंनित्यंपरंज्योतिरनंतशक्तिं॥अपुण्यपापंपरपुण्यहे
तुंनमामाहंवंद्यमवंदितारं॥३३॥अशाब्दमस्पर्शमरूपगंधंत्वां
नीरसंतद्विषयावबोधंसर्वस्यमातारममेयमन्यैर्जिनेंद्रमस्मा
र्यमनुस्मरामि॥३४॥आगाधमन्यैर्मनसाप्यलंघ्यंनिकिंचनंप्र
र्थितमर्थवद्भि:॥विश्वस्यपारंतमदृष्टपारंपतिंजनानांशरणंव्र
जामि॥३५॥त्रैलोक्यदीक्षागुरवेनमस्तेयोवर्द्धमानोपिनिजो
न्नतोभूत्॥प्रागंडशैल:पुनरद्रिकल्प:पश्चान्नमेरु:कुल
पर्वतोभूत्॥३६॥स्वयंप्रकाशस्यदिवानिशावानबाधितायस्
यनबाधकत्वंनलाघवंगौरवमेकरूपंवंदेविभुंकालकल
मतीतं॥३७॥इतिस्तुतिंदेवविधायदैन्याद्वरंनयाचेत्वमुपेक्षको
सिछायातरुंसंश्रयत:स्वत:स्यात्कश्छाययायाचितयात्मला
भ:॥३८॥अथास्तिदित्सायदिवोपरोधस्त्वय्येवसक्तांदिश
भक्तिबुद्धिंकरिष्यतेदेवतथाकृपांमेकोवात्मपोष्ये
सुमुखोनसूरि:॥३९॥वितरतिविहितायथाकथंचिज्जिनवि
नतायमनीषितानिभक्तिस्त्वयिनुतिविषयापुनर्विशेषाद्दि
शतिसुखानियशोधनंजयंच॥४०॥इतिधनंजयकृतंविषा
पहारस्तोत्रंसमाप्तं॥२॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥

॥॥अथपार्श्वनाथायनम:॥अथकल्याणमंदिरस्तोत्रंलिख्य
ते॥काव्यंवसंततिलकाछंद:॥कल्याणमंदिरमुदारमवद्य
भेदि॥भीताभयप्रदमनंदितमंघ्रिपद्मं॥संसारसागरनिमज्जदशे
षजंतु॥पोतायमानमभिनम्यजिनेश्वरस्य॥१॥यस्यस्वयंसुरगुरुर्गरिम
अंबुराशे:॥स्तोत्रंसुविस्तृतमतिर्नविभुर्विधातुं॥तीर्थेश्वरस्यक
मठस्मयधूमकेतो॥स्तस्याहमेषकिलसंस्तवनंकरिष्ये॥२
युग्मं॥सामान्यतोपितववर्णयितुंस्वरूप॥मस्मादृशा:कथम

किंकलधर्म्मेरज्ञे॥३॥मोहक्षयादनुभवन्नपिनाथमर्त्यो,
णांनूनंगणापितुंनतवहमेत॥कल्पांतवांतपयसःप्रकटोपियं
मीयेनकेनजलधेर्ननुरत्नराशिः॥४॥अ

णाकरस्यवा

नजवाङकुमुगांवितत्वविस्तीर्णांतांकथयतिस्वाधियांवुराशेः॥५॥
पयोगिनामपियनयांतिगुणास्तवेशवक्तुंकथंनव
कान्ताःजातातदेवममसमीक्षितकारितेयंजल्पंतिवानिजगीरा
नुपक्षिणोपि॥६॥आस्तामचिंत्यमहिमाजिनसंस्तवस्तेनामा
पातिभवतोभवतोजगंतिप्रीत्यातपोपहतपांथजनांन्निदाघे
प्रीणातिपद्मसरसःसरसोनिलोपि॥७॥हृद्वर्तिनित्वयि
थिलीभवंतिजंतोःक्षणेनतिविडाअपिकर्मबंधाः
याङ्वमध्यभागमभ्यागतेवनशिखंडिनिचंदनस्य॥८॥
वमनुजास्सहसाजिनेंद्ररौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितो
र्वपिनिस्फुरतेजसिदृष्टमात्रेचौरेरिवाशुपशवःप्रपलायमा
माने॥९॥त्वंतारकोजिनकथंभविनांतएव्‌त्वामुद्वहं
दयेनयदुत्तरंतःयद्वाहतिस्वरतियज्जलमेषनूनं
तःसकिलानुभावः॥१०॥यस्मिन्हरप्रभृतयो
सोपिस्वयारतिपतिःक्षपितःक्षणेनविध्यापिताहुतभुज
यन्नाप्ययेनपितंनकिंतदपिदुर्द्धरवाडवेन॥११॥स्वामिन्न
पिप्रपन्नास्त्वांजंतवःकथम
न्नोदधिंलघुतरंस्पतिलाघवेनचिंत्योनहंतमहतांय
॥१२॥क्रोधस्त्वयापदिवि
वतकथंकिलकर्म्मचोराः॥प्लोषत्यमुत्रयदिवाशिशिरापि
पनानिनकिंहिमा॥१३॥त्वांयोगि
नसदापरमात्मरूपमन्वेषयंतिहृदयांवुजकोशदे
वाकिमस्यादक्षस्यसंभविपदंननुकर्णिकायाः॥

लप्ता लो

ध्यानुतेदा ॥१५॥ अंतःसदैवजिनयस्यविभाव्यसेत्वंभव्यैःकथंतदपिना
शयसेशरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथमध्यविवर्तिनोहियद्विग्रहंप्रशमयंतिमहानुभा
वाः ॥१६॥ आत्मामनीषिभिरयंत्वदभेदबुद्ध्याध्यातोजिनेंद्रभवतीहभ
वत्प्रभावः पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानंकिंनामनोविषविका
रमपाकरोति ॥१७॥ त्वामेववीततमसंपरवादिनोपिनूनंविभोहि
रिहरादिधियाप्रपन्नाः ॥ किंकाचकामलिभिरीशसितोपिशंखोनो
गृह्यतेविविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥ धर्मोपदेशसमयेसविधानुभावा
दास्तांजनोभवतितेतरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गतेदिनपतौसमही
रुहोपिकिंवाविबोधमुपयातिनजीवलोकः ॥१९॥ चित्रंविभोक
थमवाङ्मुखवृंतमेवविष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गो
चरेसुमनसांयदिवामुनीश ॥ गच्छंतिनूनमधएवहिबंधनानि ॥
स्थानेगभीरहृदयोदधिसंभवायाः पीयूषतांतवगिरःसमुदीर
यंति ॥ पीत्वायतःपरमसंमदसंगभाजो ॥ भव्याव्रजंतितरसाप्य
जरामरत्वं ॥२१॥ स्वामिन्सुदूरमवनम्यसमुत्पतंतोमन्येवदं
तिशुचयःसुरचामरौघाः येस्मैनतिंविदधतेमुनिपुंगवायते
ःखलुशुद्धभावाः ॥२२॥ श्यामंगभीरगिरमुज्ज्वल
नसिंहासनस्थमिहभव्यशिखंडिनस्त्वांआलोकयंतिरभसे
मुच्चैश्चामीकराद्रिशिरसीवनवांबुवाहं ॥२३॥ उद्गच्छता
तवशितिद्युतिमंडलेनलुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव सांनिध्य
पियदिवातववीतरागनीरागतांव्रजतिकोनसचेतनोपि ॥२
प्रमादमवधूयभजध्वमेनमागत्यनिर्वृतिपुरींप्रतिसा
र्थवाहं ॥ एतन्निवेदयतिदेवजगत्त्रयाय मन्येनदन्नभिनभः
डंदुभिस्ते ॥२५॥ उद्द्योतितेषुभवताभुवनेषुनाथतारान्वि
तोविधुरयंविहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसिताल
त्रिधाधृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥ स्वेनप्रपूरित
पिंडितेनकांतिप्रतापयशसामिवसंचयेन ॥ माणि
मरजतप्रविनिर्मितेन ॥ सालत्रयेणभगवन्नभितोविभासि
॥२७॥ दिव्यस्रजोजिननमत्त्रिदशाधिपानां ॥ उत्सृज्यरत्नर
पिमौलिबंधान् ॥ पादौश्रयंतिभवतोयदिवापरत्र ॥ त्व
संगमेसुमनसोनरमंतएव ॥२८॥ त्वंनाथजन्मजलधे

मुखोपि॥यत्तारयस्यसुमतोनिजपृष्टलग्नान्॥युक्तंहिपार्थिव
निपस्यसतस्तवैव॥चित्रंविभोयदसिकर्मविपाकशून्यः॥२
विश्वेश्वरोपिजनपालकदुर्गतस्त्वं॥किंवाक्षरप्रकृतिरप्य
लिपिस्त्वमीश॥अज्ञानवत्यपिसदैवकथंचिदेव॥ज्ञानंत्वयि
स्फुरतिविश्वविकासहेतुः॥३०॥प्राग्भारसंभृतनभां
सिरजांसिरोषादुत्थापितानिकमठेनशठेनयानि॥छायापितैस्तव
नहताहताशो॥ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेवपरंदुरात्मा॥३१॥यद्गर्जदू
र्जितघनौघमदभ्रभीमं॥भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारं॥दै
त्येनमुक्तमथदुस्तरवारिदध्रे॥तेनैवतस्यजिनदुस्तरवारिकृत्यं
॥३२॥ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड॥प्रालंबभृद्भयदव
क्त्रविनिर्यदग्निः॥प्रेतव्रजःप्रतिभवंतमपीरितोयः॥सोस्याभव
त्प्रतिभवंभवदुःखहेतुः॥३३॥धन्यास्तएवभुवनाधिपयेत्रि
संध्य॥माराधयंतिविधिवद्विधुतान्यकृत्याः॥भक्त्योल्लसत्पु
लकपक्ष्मलदेहदेशाः॥पादद्वयंतवविभोभुविजन्मभाजः॥३४
॥अस्मिन्नपारभववारिनिधौमुनीश॥मन्येनमेश्रवणगोचरतांग
तोसि॥आकर्णितेतुतवगोत्रपवित्रमंत्रे॥किंवाविपद्विषधरी
सविधंसमेति॥३५॥जन्मांतरेपितवपादयुगंनदेव॥मन्येमया
महितमीहितदानदक्षं॥तेनेहजन्मनिमुनीशपराभवानां॥जातोनि
केतनमहंमथिताशयानां॥३६॥नूनंनमोहतिमिरावृतलोचने
न पूर्वंविभोसकृदपिप्रविलोकितोसि॥मर्माविधोविधुरयंति
हिमामनर्थाः॥प्रोद्यत्प्रबंधगतयःकथमन्यथैते॥३७॥आक
र्णितोपिमहितोपिनिरीक्षितोपि॥नूनंनचेतसिमया
विधृतोसिभक्त्या॥जातोस्मितेनजनबांधवदुःखपात्रं॥यस्मात्क्रि
याःप्रतिफलंतिनभावशून्याः॥३८॥त्वंनाथदुःखिजनवत्सलहेश
रण्य॥कारुण्यपुण्यवसतेवशिनांवरेण्य॥भक्त्यानतेमयिमहेशद
॥दुःखांकुरोद्दलनतत्परतांविधेहि॥३९॥निःसं
ख्यसारशरणंशरणंशरण्य॥मासाद्यसादितरिपुःप्रथितावदा
तत्पादपंकजमपिप्रणिधानवंध्यो॥वंध्यो
हतोस्मि॥४०॥देवेंद्रवंद्यविदिताखि

रतारकविनोनुबगाधिनाथ॥ आयस्वदेवकरुणाह्रदमांपुनीहि
सीदंतमद्यभयदव्यसनांबुराशे॥४३॥यद्यस्तिनाथभवदंघ्रिसरो
रुहाणां॥भक्तेःफलंकिमपिसंततिसंचितायाः॥तन्मेत्वदेकशर
णस्यशरणपभूयाः॥स्वामीत्वमेवभुवनेत्रभवांतरेपि॥४४॥इत्थं
समाहितधियोविधिवज्जिनेंद्र॥सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितां
गभागाः॥त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्षा॥येसंस्तवंतववि
भोरचयंतिभव्याः॥४५॥जननयनकुमुदचंद्र॥प्रभास्वराःस्व
र्गसंपदोभुक्त्वा॥तेविगलितमलनिचया॥अचिरान्मोक्षंप्रपद्यं
ते॥४६॥इतिश्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रसंपूर्णं॥श्री॥श्री॥श्री॥
॥अथलक्ष्मीस्तोत्रलिख्यते॥लक्ष्मीर्महस्तुल्यसतीसतीसती॥प्र
वृद्धकालोविरतोरतोरतो॥जरारुजापन्महताहताहता॥पार्श्वफ
णेरामगिरौगिरौगिरौ॥१॥अर्हंतमाद्यंसुमनामनामना॥मनायःसर्व
देवोनुविनाविनाविना॥समस्तविज्ञानमयोमयोमयो॥पार्श्वफ०
२॥विनिष्ठजंतोशरणंरणंरणं॥क्षमादितोयःकमठंमठंमठं॥ज
मरासमक्रमंक्रमक्रमं॥पार्श्वफ०३॥अज्ञानशत्कामलतालताल
ता॥यदीयशाज्ञावनतानतानता॥निर्वाणसौख्यंसुगतागतागत
४॥पार्श्वफणे०॥विवादिसान्नोसविधिर्विधिर्विधि॥र्वभूवसर्वावह
रीहरीहरी॥विज्ञानशाज्ञानहरोहरोहरो॥पार्श्वफ०५॥यद्विश्व
लोकैकगुरुंगुरुंगुरुं॥विराजतायेनवरंवरंवरं॥तमालनीलं
गभरंभरंभरं॥पार्श्वफ०६॥सरस्तलोदिव्यवनंवनंवनं॥विराजेता
येषुदिवोदिवोदिवौ॥पा[illegible]दष्येनृतसुरासुरासुरा॥पार्श्वफ०
रराजनित्यंसकलाकलाकला॥समारतल्लोद्वजिनोजिनोजिन
संहारपूज्यंवृषभात्रभात्रभा॥पार्श्वफ०॥नबैभाकरणेनाटकच
येकाआकुलेकोशलेविख्यातोनुविपश्चते॥श्रीपद्मप्रभदेवनि
र्मितमिदंधि॥गंभीरंयमकाष्टकंभणियःशक्रूपसालभ्यते॥श्रीपद्म
प्रभुदेवनिर्मितमिदंस्तोत्रंजगन्मंगलं॥पार्श्वफणेरामगिरौगिरौगि
रौ०॥इतिश्रीपार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णं॥ ॥श्री॥ ॥श्री
अथपार्श्वनाथस्तुतिलिख्यते॥नरेंद्रफनेंद्रंसुरेंद्रंअधीसं॥॥

ॐनमसिद्धेभ्यः॥ अथजिनदेवपूजाजयमालालिख्यते॥ मंत्र॥
जयजयजयनमोस्तुनमोस्तुनमोस्तु॥ णमोअरहंताणं॥ णमोसिद्धा
णं॥ णमोआइरियाणं॥ णमोउवज्झायाणं॥ णमोलोएसव्वसाहू
णं॥ चत्तारिमंगलं॥ अरहंतमंगलं॥ सिद्धमंगलं॥ साहुमंगलं॥ के
वलिपण्णत्तोधम्मोमंगलं॥ चत्तारिलोगुत्तमा॥ अरहंतलोगुत्तमा॥
सिद्धलोगुत्तमा॥ साहुलोगुत्तमा॥ केवलिपण्णत्तो॥ धम्मोलोगुत्त
मा॥ चत्तारिसरणंपव्वज्जामि॥ अरहंतसरणंपव्वज्जामि॥ सिद्ध
सरणंपव्वज्जामि॥ साहुसरणंपव्वज्जामि॥ केवलिपण्णत्तो॥ ध
म्मोसरणंपव्वज्जामि॥ ॐनमोर्हते॥ अपवित्रःपवित्रोवासुस्थि
तोदुःस्थितोपिवा॥ ध्यायेत्पंचनमस्कारंसर्वपापैःप्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रःपवित्रोवा॥ सर्वावस्थांगतोपिवा॥ यःस्मरेत्परमा
त्मानं॥ सबाह्याभ्यंतरेशुचिः॥२॥ अपराजितमंत्रोयं॥ सर्वविघ्न
विनाशनः॥ मंगलेषुचसर्वेषु॥ प्रथमंमंगलंमतः॥३॥ एसोपंच
णमोयारो॥ सव्वपावप्पणासणो॥ मंगलाणंचसव्वेसिं॥ पढमंहो
इमंगलं॥४॥ अर्हमित्यक्षरंब्रह्म॥ वाचकंपरमेष्ठिनः॥ सिद्धचक्र
स्यसद्बीजं॥ सर्वतःप्रणमाम्यहं॥५॥ कर्माष्टकविनिर्मुक्तं॥
मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्॥ सम्यक्त्वादिगुणोपेतं॥ सिद्धचक्रंनमा
म्यहम्॥६॥ श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं॥ स्याद्वादनायक
मनंतचतुष्टयार्हम्॥ श्रीमूलसंघसुदृशांसुकृतैकहेतु॥ जैनें
द्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि॥७॥ स्वस्तित्रिलोकगुरवेजि
नपुंगवाय॥ स्वस्तिस्वभावमहिमोदयसुस्थिताय॥ स्वस्तिप्र
काशसहजोर्जितदृङ्मयाय॥ स्वस्तिप्रसन्नललिताद्भुतवै
भवाय॥८॥ स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय॥ स्वस्तिस्व
भावपरभावविभासकाय॥ स्वस्तित्रिलोकविततैकचिदु
द्गमाय॥ स्वस्तित्रिकालसकलायतविस्तृताय॥९॥ द्रव्यस्य
शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं॥ भावस्यशुद्धिमधिकामधिगंतु
कामः॥ आलंबनानिविविधान्यवलंब्यवल्गन्॥ भूतार्थय
ज्ञपुरुषस्यकरोमियज्ञम्॥१०॥ अर्हन्पुराणपुरुषोत्तमपाव

तानि॥ वस्तूनि नूनमखिलान्ययमेकएव॥ अस्मिन्ज्वलद्विम
केवलबोधवह्नौ॥ पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥ २॥ इति विधि
यज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ श्रीवृष
भः॥ स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअजितः॥ श्रीसंभवः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअभि
नंदनः॥ श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ती श्रीपद्मप्रभः श्रीसुपार्श्वः स्व
स्ति॥ स्वस्ति श्रीचंद्रप्रभः॥ श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशी
तलः श्रीश्रेयांन् स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥ श्रीविमल स्वस्ति
स्वस्ति श्रीअनंतः॥ श्रीधर्मः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीशांतिः श्रीकुंथु
स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअरनाथः श्रीमल्लि स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीमुनिसुव्र
तः॥ श्रीनमिः स्वस्ती॥ स्वस्ती श्रीनेमिः श्रीपार्श्वः स्वस्ती॥ स्वस्ति
श्रीवर्द्धमानः नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः॥ स्फुरन्मनःपर्यय
शुद्धबोधाः दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः पर
मर्षयो नः॥ १॥ कोष्टस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रो
तृपदानुसारि चतुर्विधं बुद्धिबलं दधाना॥ स्वस्ति क्रियासु
परमर्षयो नः॥ २॥ संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा॥ दास्वादनाघ्रा
णविलोकनानि॥ दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रि
यासो परमर्षयो नः॥ ३॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रवणसमृद्धाः प्रत्ये
कबुद्धा दशसर्वपूर्वैः प्रवादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति
क्रियासु परमर्षयो नः॥ ४॥ आणिम्निदक्षाः कुशला महि
म्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्नि॥ मनोवपुर्वाग्बलि
नश्च नित्यं॥ स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥ सकामरूपैव
वशित्वमैशं॥ प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ता॥ तथाप्रतिघात
गुणप्रधानाः स्वस्ति०॥ ७॥ जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतु॥ प्र
सूनबीजांकुरचारणाढ्या॥ नभोंगणस्वैरविहारिणश्च स्व
स्ति०॥ ८॥ दीप्तंचतप्तंमहातथोग्रं घोरतपो घोरपराक्रमाश्च
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रिया०॥ ९॥ आमर्षसर्वौषध
यस्तथाशी॥ विषं विषाहष्टिविषं विषाश्च॥ सखिल्लविड्ज
ल्लमलौषधीशाः॥ स्वस्ति क्रिया०॥ १०॥ क्षीरं स्रवंतोत्र घृतं

तंअवंतोमरुअवंतोमिमृतंअवंतः॥अर्हाणसंवासमहान
माश्च स्वस्तिक्रियासुःपरमर्षयोनः॥२१॥इतिस्वस्तिमंगलविधा
नम्॥अथदेवशास्त्रगुरुपूजाप्रारंभ्यते॥शार्दू॥ सर्वैकनाथःस
कलतनुभृतापापसंतापहर्त्ता॥त्रैलोक्याक्रांतकीर्तिःक्षतम
दनरिपुर्घातिकर्म्मप्रणाशः॥श्रीमान्निर्वाणसंपद्वरयुवतिकर
लीढकंठःसुकंठैः॥देवेंद्रैर्वंद्यपादोजयतिजिनपतिःप्राप्त
कल्याणपूजः॥२२॥जयजयजयश्रीसत्कांतिप्रभोजगतांप
ते॥जयजयभवानेवस्वामीभवांभसिमज्जताम्॥जयजयम
हामोहध्वांतप्रभातकृतेर्चनं॥जयजयजिनेशत्वंनाथप्रसी
दकरोम्यहम्॥२३॥इत्युच्चार्यजिनचरणाग्रेपरिपुष्पांजलिं
क्षिपेत्॥जिनचरणपूजनप्रतिज्ञा॥देवीश्रीश्रुतदेवतेभग
वतित्वत्पादपंकेरुह॥द्वंद्वेयामिशिलीमुखत्वमपरंभक्त्या
मयाप्रार्थ्यते॥मातश्चेतसितिष्ठमेजिनमुखोद्भूतेसदात्राहि
मां॥दृग्दानेनमयिप्रसीदभवतीसंपूजयामोधुना॥२४॥इत्यु
च्चार्यपुस्तकाग्रेपरिपुष्पांजलिंक्षिपेत्॥श्रुतपूजनप्रतिज्ञा॥सं
पूजयामिपूज्यस्य॥पादपद्मयुगंगुरोः॥तपःप्राप्तप्रतिष्ठस्यग
रिष्ठस्यमहात्मनः॥२५॥इत्युच्चार्यगुरुचरणपूजनप्रतिज्ञा॥दे
वेंद्रनागेंद्रनरेंद्रवंद्यान्॥शुंभत्पदान्शोभितसारवर्णान्॥दु
ग्धाब्धिसंस्पर्द्धिगुणैर्जलौघैः॥जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहम्
२६॥ॐह्रींअर्हंश्रीपरमब्रह्मणेअनंतानंतज्ञानशक्तयेनमः
॥ जन्मजरामृत्युविनाशनायअर्हद्भ्यः
सिद्धेभ्यःआचार्येभ्यःउपाध्यायेभ्यःसर्वसाधुभ्यःप्रथमानुयो
गाय॥करणानुयोगाय॥चरणानुयोगाय॥द्रव्यानुयोगाय॥
सम्यग्दर्शनाय॥सम्यग्ज्ञानाय॥सम्यक्चारित्राय॥जलंनि
र्वपामीतिस्वाहा॥ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्त्तिसमस्तसत्वा
हितहारिवाक्यान्॥श्रीचंदनैर्गंधविलुब्धभृंगैः॥जिनेंद्रसि
द्धांतयतीन्यजेहम्॥२७॥ॐह्रींअर्हंश्रीपरमब्रह्मणेअनंता
नंतज्ञानशक्तयेनमः॥श्री॥अर्हद्भ्यःसिद्धेभ्यःआचार्येभ्यःउपाध्

येभ्यः सर्वसाधुभ्यः॥ आचार्येभ्यः उपाध्यायेभ्यः सर्वसाधुभ्यः प्रथ॥
मानुयोगाय। करणानुयोगाय। चरणानुयोगाय। करणांनुयोगाय
सम्यग्दर्शनाय। सम्यग्ज्ञानाय। सम्यक्चारित्राय। चंदनं॥ अपा॥
रसंसारमहासमुद्र॥ प्रोत्तारणे प्राज्यतरीन् सुभक्त्या॥ दीर्घाक्षतां
गैर्धवलाक्षतौघैः॥ जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहम्॥ २७॥ ॐ ह्रीं
अर्हं श्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्तये नमः॥ अखंड
तपदप्राप्तये॥ अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः॥ आचार्येभ्यः॥ उपाध्यायेभ्यः
सर्वसाधुभ्यः अथमानुयोगाय॥ करणानुयोगाय॥ चरणा
नुयोगाय। द्रव्यानुयोगाय॥ सम्यग्दर्शनाय॥ सम्यग्ज्ञानाय
सम्यक्चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ अक्षतं॥
विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान्॥ वर्यान्सुचर्याकथनैकधु
र्यान्॥ कुंदारविंदप्रमुखप्रसूनैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजे
हम्॥ २८॥ ॐ ह्रीं॥ अर्हं श्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्त
ये नमः कुसुमबाणविध्वंसनाय॥ अर्हद्भ्यः॥ सिद्धेभ्यः आ॥
चार्येभ्यः उपाध्यायेभ्यः सर्वसाधुभ्यः॥ प्रथमानुयोगाय॥ क
रणानुयोगाय॥ चरणानुयोगाय॥ द्रव्यानुयोगाय॥ सम्यग्दर्श॥
नाय॥ सम्यग्ज्ञानाय॥ सम्यक्चारित्राय॥ पुष्पं निर्वपामीति स्वा
हा॥ कुदर्पकंदर्पविसर्पसर्पप्रसह्यनिर्णाशनवैनतेयान्॥
प्राज्यान्यसारैश्चरुभीरसाढ्यैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहम्॥
२९॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्तये नमः॥
क्षुधावेदनीयरोगविनाशनाय॥ अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः आचार्ये
भ्यः उपाध्यायेभ्यः सर्वसाधुभ्यः प्रथमानुयोगाय॥ करणानु
योगाय॥ चरणानुयोगाय॥ द्रव्यानुयोगाय॥ सम्यग्दर्शनाय
सम्यग्ज्ञानाय॥ सम्यक्चारित्राय॥ नैवेद्यं निर्वपामीति स्वा
हा॥ ध्वस्तोद्यमांधीकृतविश्वविश्वमोहांधकारप्रतिघातदी
पान्॥ दीपैः कनत्कांचनपात्रसंस्थैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजे
हम्॥ ३०॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्तये
नमः मोहांधकारविनाशनाय॥ दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ दीपं॥
दुष्टाष्टकर्मेंधनपुष्टजालसंधूपने भास्वरधूमकेतून्॥ धू

पेविपूतान्सुगंधगंधैः॥ जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहम्॥२॥ ॐ ह्रीं
अर्हं श्रीपरमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्तये नमः अष्टकर्मद
हनाय। अर्हद्भ्यः। सिद्धेभ्यः आचार्येभ्यः। उपाध्यायेभ्यः सर्व
साधुभ्यः प्रथमानुयोगाय। करणानुयोगाय चरणानुयोगाय। द्र
व्यानुयोगाय। सम्यग्दर्शनाय सम्यग्ज्ञानाय। सम्यक्चारि
त्राय। धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥ धूपं॥ दक्ष्याद्भिः स्वमनस
मगम्यान्। कुवादिवादास्खलितप्रभावान्॥ फलैरलं मोक्षफ
लाभिसारैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्यजेहम्॥८॥ ॐ ह्रीं॥ ॥
श्रीपरमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्तये नमः। मोक्षफलप्राप्त
ये। फलं॥ स्वच्छार्घगंधाक्षतपुष्पजातै॥ नैवेद्यदीपामलधूपधू
म्रैः॥ फलैर्विचित्रैर्घनपुण्ययोग्यान्। जिनेंद्रसिद्धांतयतीन्य
जेहम्॥९॥ ॥ॐ ह्रीं॥ श्रीपरमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्त
ये नमः॥ अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः आचार्येभ्यः॥ उपाध्यायेभ्यः सर्वसा
धुभ्यः प्रथमानुयोगाय। करणानुयोगाय। चरणानुयोगाय॥
सम्यग्ज्ञानाय। सम्यक्चारित्राय। अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ये पूजां जिननाथशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते। त्रैसंध्यं सुवि
चित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतो नराः। पुण्याढ्या मुनिराजकीर्ति
सहिता भूत्वा तपोभूषणाः ते भव्याः सकलावबोधरुचि
रां सिद्धिं लभंते परां॥१०॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥ वृषभो जितना
मा च संभवश्चाभिनंदनः॥ सुमतिः पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनस
त्तमः॥ चंद्राभः पुष्पदंतश्च॥ शीतलो भगवान्मुनिः॥ श्रेयांश्च
वासुपूज्यश्च। विमलो विमलद्युतिः॥२७॥ अनंतो धर्मनामा च।
शांतिः कुंथुर्जिनोत्तमः। अरश्च मल्लिनाथश्च॥ सुव्रतो नमितीर्थ
कृत॥२८॥ हरिवंशसमद्भूतो। रिष्टनेमिर्जिनेश्वरः॥ ध्वस्तोपसर्गदै
त्यारिः पार्श्वो नागेंद्रपूजितः॥२९॥ कर्मांतकृन्महावीरः सिद्धा
र्थकुलसंभवः॥ एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विषः॥ पू
जिता भरताद्यैश्च भूपेंद्रैर्भूरिभूतिभिः॥ चतुर्विधस्य संघस्य

शांतिं कुर्वंतु शाश्वतीम् ॥४१॥ जिने भक्ति र्जिने भक्ति र्जिने भ
क्तिः सदास्तु मे ॥ सम्यक्त्वमेव संसार ॥ वारणं मोक्षकारणं ॥४२॥
श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदास्तु मे ॥ सज्ज्ञानमेव सं
सार वारणं मोक्षकारणं म् ॥४३॥ गुरौ भक्ति र्गुरौ भक्ति र्गुरौ भक्ति
सदास्तु मे ॥ चारित्रमेव संसार ॥ वारणं मोक्षकारणं म् ॥४४॥
अथ जयमाला ॥ पद्धरी छंद ॥ वत्ताणुट्ठाणे ॥ जणधणदाणे ॥
पइ पोसिउ तुहु खत्तधम्म ॥ तवचरणविहाणे केवलणाणे तु
हु परमप्पउ परमपम्म ॥४५॥ जय रिसह रिसीसरणमियपा
य ॥ जय अजिय जियंगम रोसराय ॥ जय संभव संभव कयविओ
जय अहिणंदण णंदियपयोघ ॥४६॥ जय सुमइ सुमयसम्मय
पयास जय पउमप्पह पउमाणिवास ॥ जय जयहि सुपास सु
पासगत्त ॥ जय चंदप्पह चंदाहवत्त ॥४७॥ जय पुप्फदंत दंतंत
रंग ॥ जय सीयल सीयल वयणमेह ॥ जय सेय सेय किरणोह सु
ज्ज ॥ जय वासुपुज्ज पुज्जाणपुज्ज ॥४८॥ जय विमल विमलगु
ण सेढिठाण ॥ जय जयहि अणंताणंत णाण ॥ जय धम्म धम्म
तित्थयर संत ॥ जय संति संति विहियायवत्त ॥४९॥ जय कुंथु
कुंथु पहु अंगिसदय ॥ जय अर अरमाहर विहियसमय ॥ ज
य मल्लि मल्लि आदाम गंध ॥ जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध
॥५०॥ जय णमि णमियामर णियर सामि जय णेमि धम्मरह
चक्कणेमि ॥ जय पास पासछिंदणकिवाण ॥ जय वड्ढमाण
जय वड्ढमाण ॥५१॥ इय जाणियणामहि दुरियविरामहि
परहिं विणमिय सुरावलिहिं ॥ अणिहणहि अणाइहि
समियकुवाइहि पणविवि अरहंतावलिहिं ॥५२॥ पुष्पांज
लि ॥ ॐ ह्रीं वृषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपा
र्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंतशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानं
तधर्मशांतिकुंथुअरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्वना
थवर्द्धमानचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घं महार्घं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ इति देवजयमालार्घं ॥ अथ शास्त्रजयमाला संघ ॥

इसुहकारणकम्मवियारणि ॥ भवसमुद्दतारणतरणि ॥ जि-
ज्जिणवाणिणमस्सम्मिसत्तिपयासमि ॥ सग्गमोक्खसंगम-
करणि ॥ ५३ ॥ जिणिंदमुहाउविणिग्गयतार ॥ गणिंदविगुंफि-
यगंथपयार ॥ तिलोयहमंडणधम्महखाणि ॥ सयापणमामि-
जिणिंदहवाणि ॥ ५४ ॥ अवग्गहईहअवायजुएहि ॥ सुधार-
णभेयहितिण्णिसएहि ॥ मईछत्तीसबहुप्पमुहाणि ॥ सया-
पणमामिजिणिंदहवाणि ॥ ५५ ॥ सुदंपुणदोण्णिअणेयपयार-
सुबारहभेय ॥ जगत्तयसार ॥ सुरिंदणरिंदसमच्चिउजाणि ॥
सयापणमामिजिणिंदहवाणि ॥ ५६ ॥ गणिंदणरिंदहरिद्धि ॥ प-
यासइपुण्णपुराकिउलद्धि ॥ णउणुपहिंदुउक्केवियाणि ॥
सयापणमामिजिणिंदहवाणि ॥ ५७ ॥ जुलोयअलोयहजु-
त्तिकरेइ ॥ जुतिण्णिविकालसरूवभणेइ ॥ चउग्गइलक्ख-
णदुज्जउजाणि ॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणि ॥ ५८ ॥ जि-
णिंदचरित्तुविचित्तुमुणेइ ॥ सुसावयधम्महजुत्तिजणेइ ॥
णउणुविचित्तिजवइहुवियाणि ॥ सयापणमामिजिणिंदह-
वाणि ॥ ५९ ॥ सुजीवअजीवहतच्चहचक्कु ॥ सुपुण्णविपाव-
विबंधविमुक्कु ॥ चउत्थुणिउणुविभासइणाणि ॥ सयापण-
मामिजिणिंदहवाणि ॥ ६० ॥ तिभेयहिउहिविणाणविचित्तुच-
उत्थुरिजोविउलंमइउत्तु ॥ सुखाइयकेवलणाणवियाणि ॥
सयापणमामिजिणिंदहवाणि ॥ ६१ ॥ जिणिंदहणाणज-
गत्तयभाणु महात्तमणासियसुक्खणिहाणु ॥ पयच्चक्कभ-
त्तिभरेणविचाणि ॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणि ॥ ६२ ॥ प-
याणिसुबारहकोडिसयेण ॥ सुलक्खतिरासियजुत्तिभरेण ॥
सहस्सअवावणपंचवियाणि ॥ सयापणमामिजिणिंदह-
वाणि ॥ ६३ ॥ इकावणकोडिउलक्खअठेव ॥ सहसचुलसी-
दिसयाछक्केव ॥ सढाइगवीसहगंथपयाणि ॥ सयापणमा-
मिजिणिंदहवाणि ॥ ६४ ॥ इयजिणवरवाणिविसुद्धमई ॥
जोभवियणणियमणिधरई ॥ सोसुरणरिंदसंपइलहिवि

केवलणाणविउलरमो ६५॥ ॐ ह्रीं॥ सरस्वतीवाग्वादिनीद्वाद
शांगश्रुतज्ञानेभ्योनमः॥ आचारांग॥ सूत्रकृतांग॥ स्थानांग॥
समवायांग॥ व्याख्याप्रज्ञप्त्यंग॥ ज्ञातृधर्मकथा॥ उपासका
ध्ययनांग॥ अंतकृद्दशांग॥ अनुत्तरोपपादकदशांग॥ प्रश्नव्याक
रणांग॥ विपाकसूत्रांग॥ दृष्टिवादांगनामधेयद्वादशांगश्रु
तज्ञानेभ्यो अर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ इति श्रुतजयमा
ला संपूर्णं॥ अथ श्री गुरांकी जयमाला॥ भवियह भवतारण
सोलहकारण॥ अज्जवितित्थयरत्तणहं॥ तवकरमि असं
गइ दयधम्मंगइ पालमि पंचमहव्वयहं॥ ६६॥ वंदामि म
हारिसि सीलवंत॥ पंचेंदियसंजमजोगजुत्त॥ जे ग्यारह अंगा
ह अणुसरंति॥ जे चउदय पुव्वह मुणि थुणंति॥ ६७॥ पादा
णुसारि वरकुट्ठबुद्धि॥ उप्पण्ण जाहं आयास रिद्धि॥ जे पाण
हारी तोरणीय॥ जे रुक्खमूल आतापणीय॥ ६८॥ जे मोण
धाय चंदाइणीय॥ जे जत्थत्थ वणि णिवासणीय॥ जे पंचमह
व्वयधरणधीर॥ जे समिति गुत्ति पालहण वीर॥ ६९॥ जे वड्ढहि
देहविरत्तचित्त॥ जे रायरोस भयमोहचित्त॥ जे कुगइहिं संवर
विगय लोह॥ जे दुरिय विणासण काम कोह॥ ७०॥ जे जल्लम
ल्ल तिणलित्तगत्त॥ आरंभपरिग्गह जे विरत्त॥ जे तिण्णिका
लबाहिर गमंति॥ छट्ठट्ठमदसमउ त्थ चरंति॥ ७१॥ जे इक
गास दुइमास लेंति॥ जे णीरसभोयण रइ करंति॥ ते मुणिव
र वंदउ ठियमसाणि॥ जे कम्म डहइ वरसुक्कझाणि॥ ७२॥ बार
विह संजम॥ जे धरंति॥ जे चारिउ विकहा परिहरंति॥ बावीस
परीसह जे सहंति॥ संसार महण्णउ ते तरंति॥ ७३॥ जे धम्मबु
द्धि महियलि थुणंति॥ जे काउसग्ग णिसि गमंति॥ जे सिद्धिवि
लासिणि अहिलसंति॥ जे पक्खमास आहार लिंति॥ ७४
गोदूहणि जे वीरासणीय॥ जे धणुह सेज्ज वज्जासणीय॥ जे
तववलेण आयास जंति॥ जे गिरिगुह कंदर विवर थंति॥ ७५
जे सत्तु मित्त सममाव चित्त॥ ते मुणिवर वंदउ दिढचरित्त॥
चउवीसह गंथह जे विरत्त॥ ते मुणिवर वंदउ जगपवित्त॥ ७६॥ जे

सुज्झाणिज्झाणि कचित्त॥ वंदामि महारिसिमो कयवुयतवा रयणत्तय
पत्ता
रंजियमुणिनाहा॥ तेमुणिवर वंदउं विदिसमहावा॥७७॥ जेतवसिरिएसे
जमधीरा सिद्धिवधूअणुराइया॥ रयणत्तयरंजियकम्महरा निय
तेरिसिवरमइझाइझा॥७८॥ ॐ ह्रीं गुरुसम्माचार्यादिगुरुभ्यो न
मः पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकगुरुभ्यो अर्घं महार्घं नि
र्वपामीति स्वाहा॥ इति गुरुजयमाल संपूर्णः॥ ॥श्री॥ श्री
॥ अथ गुरावलीपूजा लिख्यते॥ ध्वस्तीणेमणिवन्मलेस्वमहसि
स्वार्थप्रकाशात्मके॥ निर्मग्नानिरुपाख्यमोघचिदचिन्मोहा
र्थितार्थैदिपः॥ कृत्वानायपि जन्मशांतमम तसायुग्मनंतं श्रित
न्॥ सदृग्धीन नयवृत्तसंयमतपः सिद्धानजजेयैणावे॥१॥ अनेन
हेतुप्रतेमार्गे सिद्धानामर्घंदत्वान् स्तुवीत तथाहि॥ वृषभवृष
भसेनाद्याः सिंहसेनादयोजितं संभवं चारुषेणाद्यावज्रनाभिपु
रस्सराः॥२॥ कपिथजंघामराद्याः सुमतिपद्मलांछनं॥ ये वज्रचमर
प्रद्याः सुपार्श्वं बलपूर्वकाः॥३॥ चंद्रप्रभं दत्तमुख्याः पुष्पदंतंस
मास्थिताः विदर्भाद्याः शीतलेशामनगारपुरोगमाः॥४॥ कुंथुप्र
धानाः श्रेयांसं धर्माद्यावाद्यंजिनं विमलं मेरुपौरस्त्याः जया
र्याद्याश्चतुर्दशं॥५॥ धर्मं अरिष्टसेनाद्याः शांतिं चक्रायुधादयः स
ये॥ स्वयंभुप्रमुखाः कुंथुं॥ कुंभार्याद्यास्त्वरप्रभुं॥६॥ मल्लिं विशाखप्रमुखाः
मल्ल्याद्याः मुनिसुव्रतं नमीं त्वसुप्रभाद्याः वरदत्ताग्रतः सराः॥७॥
नेमिं पार्श्वं स्वयंभ्वाद्याः गौतमाद्याश्च सन्मतिं॥ तेभ्यो गणधरेशेभ्यो
दत्तोर्घोयं पुनातु नः॥८॥ ॐ ह्रीं वृषभसेनादिसर्वगणधरेभ्यो अर्घं
निर्वपामीति स्वाहा॥ येसन्मतेरिंद्रभूति॥ वायुभूत्यग्निभूति
कौसुधर्ममौर्यमौंड्याख्यः॥ पुत्रमैत्रेयसंज्ञितो॥९॥ अकंपनो
धवेलाख्यः प्रभासश्च गणाधिपः॥ एकादशोदयुगीन॥ मुत्पादी
स्तानुपास्महे॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेशिनः एकादशगण
धरेभ्यो अर्घं नि०॥ अर्घं॥ श्री गौतम सुधर्माख्यजं
ब्वणान्॥ श्रुतकेवलिनो विष्णुनंदि मित्रापराजितान्॥११॥
गोवर्द्धनं भद्रबाहुं दशपूर्वधरान् पुनः॥ विशाखप्रो
ष्ठी क्षत्रियं जयसाकवं॥१२॥ नागसेनं च सिद्धार्थं॥ धृतिषेण स

यं॥ विजयं बुद्धिलिंगगा॥ देवार्कं धर्मसेनकं॥ १३॥ एकादशांगविख्या
ता॥ नक्षत्रजयपालकौ॥ पांडुं च ध्रुवसेनं च कंसं चाचार्यानिमान्गु
णः॥ १४॥ सुभद्रं च यशोभद्रं भद्रबाहुमनुक्रमात्॥ लोहार्यं च यज
मोत्र॥ जिनसेनादिकानपि॥ १५॥ ॐ ह्रीं॥ गौतमादिमुनिभ्योऽ
र्घं निर्व०॥ यजेऽर्हद्बलिमुख्यांगपूर्वज्ञं माघनंदिनं॥ धरसेनगुरुं
पुष्पदंतभूतबलिं तथा॥ १६॥ जिनचंद्रं कुंदकुंदाचार्यमास्वा
तिवाचकौ॥ समंतभद्रस्वाम्यार्यं शिवकोटिं शिवायनं॥ १७॥ पूज्य
पादं चैलाचार्यं॥ वीरसेनं सुतेक्षणं॥ जिनसेनं नेमिचंद्रं रामसे
नमुताकलंकान्॥ १८॥ अकलंकानंतविद्यानंदमाणिक्यनंदि
नः प्रभाचंद्र रामचंद्र वासवेंदुमवासिसं॥ १९॥ गुणभद्रादिक
नन्या॥ नमिश्रुततपः परान्॥ वीरांगजातानर्घेण॥ सर्वान् संस्म
रयाम्यहं॥ २०॥ ॐ ह्रीं॥ माघनंद्यादिमुनिभ्योऽर्घं निर्व०॥ अर्घं नि
र्घयाः स्वमलोलगुणमणिनिर्येनगारायतीयुः संज्ञाबु
ह्लादिधर्मौक्षयय इति च ये बुद्धिलब्ध्यादिसिद्धे श्रेणीपारा
रोहणैर्येनगारायतीयुः संज्ञाबुह्लादिधर्मौक्षयय इति च ये
बुद्धिलब्ध्यादिसिद्धे श्रेणीपारारोहणैर्येयतय इति समग्रेतराप्सदवे
घेः येमुन्या स्वाध्याय सर्वानश्चमहमिहतानर्घयामो मुमुक्षून्॥ २१॥
ॐ ह्रीं जिनानुत्तरेण सर्वमहर्षिभ्योऽर्घं निर्व०॥ अर्घं इति महर्षिपर्यु
पासनविधानं॥ श्रीवर्धनबोधनविस्तृतविश्ववर्धमानहत्ताभुतानु
भवसंभवसंमदोयाः॥ स्फूर्जत्तपः स्फुरितलब्धिगणाधिपस्ता
स्वस्तिक्रियासुरसकृत्परमर्षयो नः॥ १॥ एकांतसंशयतमोऽभिनि
वेशमूल हग्मोहनिग्रहविकस्वरचित्स्वरूपाः स्याद्वादसंवि
दमृतप्लवमांतत्त्वावाः॥ स्वस्ति॥ २॥ तद्यद्दयारसलिहः श्रियत
स्यवाचः॥ अन्लोपयोग्य वग्रहोहतमारदर्पोमृ छोछिदोरजने
नोजनवर्जिनस्तु स्वस्ति०॥ ३॥ सत्रानुसारिगमनालपना
सनात्म॥ धर्मांगिसंग्रहविसर्गवशुर्म्मलाम्ना॥ व्याधात्मदर्शी
नरवलीनजितेंद्रियस्वा॥ स्वस्ति०॥ ४॥ सामायिकस्तवनवंदन
पापनोम॥ सुज्ञ्याइतिक्रमणकायविसर्जनेषु उद्भादिषट्कनै
हितात्मसुजागरुकाः॥ स्वस्ति०॥ ५॥ अस्नानभूशयनलोच

विचेलतेकनकेषदंतधवनेस्थितिभोजनेचशक्ताःपरीषहस
हाःसहितास्तपोभिः॥स्वस्ति०॥६॥क्षांत्यार्जवमृदिमसंयमसत्य
शौच॥त्यागैरकिंचनतयातपसामलेनब्रह्मव्रतेनचदशात्मवृषे
णनंताः॥स्वस्ति०॥७॥श्रुत्यष्टकेनविनयांगवचोहृदीयमुत्थ
गम्भिःस्पर्शायतनासनगोचरेणरोविहीनवःसउपयोगदृढाभियो
गाः॥स्वस्ति०॥८॥स्वस्पष्टदेशचलिपुद्गलपाकिदेहा॥नामोद
यात्ततनुवाग्मनसस्यवीर्य्ये॥कर्म्मागमागमपवर्गधियाकर्ष
तःस्वस्ति०॥९॥साम्येप्रतिक्रमपरेपरिहारशुद्धौलीनातुच्छकल
पकलुषेचवृत्तेःनिसोद्यतामुकुरधिहितधर्म्मशुक्लाः॥स्वस्ति०॥१०॥दृ
ग्बोधसंचलितसंज्वलिनाकषायतीव्रेतरोदयसमापगमक्रमांतैः
योगित्वयोगविगमावरविप्रकाराःस्वस्तिक्रियासुरसकृत्परमर्षि
योनः॥११॥स्वाध्यायदिग्महगनित्यपुरस्सरानुप्रेक्षासमीक्षणव
शीकृतचित्तदैत्याः॥एकत्वसत्वसुतपोधृतिभावनेशाःस्वस्तिक्रि
यासुरसकृत्परमर्षयोनः॥१२॥जाग्रज्जिनेंद्रसमयासमतानु
मित्रा॥बुद्ध्यादिलब्धिमहिमानुगृहीतविश्वाः॥घोरमाकुलि
तसिंहगजादिसेव्याःस्वस्ति०॥१३॥सन्त्रेपुलाकवकुशाःप्रथि
ताःकुशीलाःनिर्ग्रंथनामकलिताःसकलाववोधाःयेस्नात
कास्तइहपंचतयोप्यसंगाः॥स्वस्ति॥१४॥यत्रक्वचिन्मनुजलो
कइहोपसर्गाःसंसर्गिणःस्थिरधियोनुपसर्गिणोवा॥शुद्धा
त्मसंविदमुदारमुदोभजंतः॥स्वस्ति०॥१५॥एवंविधस्वस्त्यय
नादयास्तसंक्लेशाम्नावोधिकसिद्धिभावाःजिनाभिषेकादिवि
धीनविधत्तेयःसोस्तुतेधर्म्मयशोपशाम्भो॥१६॥इतिस्वस्त्ययनम
नःपुण्याधनविधानं॥ॐह्रींसर्वगणधरादिमुनिभ्यःपुलाक
वकुशकुशीलस्नातकानिर्ग्रंथेभ्यः अर्घंनिर्वपामितिस्वाहा
॥अर्घं॥इतिगुर्वावलीपूजासंपूर्ण॥ ॥ श्री॥ ॥श्री॥
॥अथसरस्वतीपूजालिख्यते॥अकठिनपरमार्थेश्रुद्धसिद्धांतसा
रे॥जिनपतिसमयेस्मिन्सारदांसंदधानःजगतिसमयसारःकी
र्त्तितःसन्मुनींद्रैःमवसतुममचित्तेसच्छ्रुतज्ञानरूपः॥ॐह्रींसरस्व

तिभगवतिवाग्वादिनिद्वादशांगश्रुतज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट् आ
ह्वाननं॥ ॐ ह्रीं श्री सरस्वति भगवति वाग्वादिनि द्वादशांगश्रुतज्ञान अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ ॐ ह्रीं सरस्वति भगवति वाग्वादिनि अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं॥ ॐ ह्रीं॥ अथाष्टकं॥ अतुलसौख्यनि
धानमनायकं॥ शिवपदं विपदंतकरं परं॥ जिनमिषुर्जिननाथमुखो
द्गतं समयसारमहं सलिलैर्यजे॥ १॥ ॐ ह्रीं श्री॥ सरस्वति भगवति द्वा
दशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः॥ आचारांग॥ सूत्रकृतांग॥ स्थानांग॥ समवा
यांग॥ व्याख्याप्रज्ञप्त्यंग॥ ज्ञातधर्मकथांग॥ उपासकाध्ययनांग॥ अं
तकृद्दशांग॥ अनुत्तरोपपादकदशांग॥ प्रश्नव्याकरणांग॥ विपा
कसूत्रांग॥ दृष्टिवादांग॥ नामधेयद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो जलं नि
र्वपामीति स्वाहा॥ विषमया खलु सुसमविभ्रमया॥ त्रिभुवनं प्रतिबो
धमयं तमन्॥ उदयमत्र गतो वरचंदनैः समयसारमहं प्रकरोम्य
हे॥ २॥ चंदनं॥ नवविपल्लतचेतनसत्सुखं॥ मदनमज्वरसंशमनं
प्रधं॥ श्रुतनिधिं प्रतिबोधितसद्भुवं समयसारमिमैः सदकैर्यजे
अक्षतं॥ ३॥ अजपदार्थमणिद्युतिनिर्जितं प्रहत दुर्दरमोहतमोभरं
समयसारनिधिं स्वदरिद्रता॥ व्रजमनायमहं विसरोरुहैः॥ ४॥ ॐ
ह्रीं सरस्वती भगवती वाग्वादिनी नमैः॥ आचारांग॥ सूत्रकृतांग॥ स्थानांग॥ सम
वायांग॥ व्याख्याप्रज्ञप्त्यंग॥ ज्ञातधर्मकथांग॥ उपासकाध्ययनांग॥ अंत
कृद्दशांग॥ अनुत्तरोपपादकदशांग॥ प्रश्नव्याकरणांग॥ विपाकसूत्रां
ग॥ दृष्टिवादांग॥ नामधेयद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यः पुष्पं निर्वपामी
ति स्वाहा॥ प्रमनरामरनाथमुखोद्गतं॥ शुचिवचःकुसुमोत्करपूजि
तं॥ समयसारमपाररसान्वितैः॥ अरुवैः प्रयजे शिवशर्मणे॥ ५॥ नै
वेद्यं॥ विमलकेवलबोधविधायिनी॥ समयसारमयी किल देवतां
हततमःप्रसरैर्मणिदीपकैः॥ भगवतीमहंतीं परिपूजये॥ ६॥ दीपं॥ द
गबोधसुवृत्तमहौषधं॥ शमितजन्मजरामरणामयं॥ अगरुनिर्गु
रुक्किनरादहं॥ समयसारमसारहरं यजे॥ ७॥ धूपं॥ समयसारमयी
त्रिदशापगा॥ परमहंसकुलोद्भवसूचिका॥ त्रिभुवनं कलुषक्षय
कारिणी॥ शुभफलैः पुनतीं परिपूजये॥ ८॥ फलं॥ सरोरुहैः शुभाक्ष
तैः सरसचंदनैर्निर्मितं॥ कनत्कनकभाजनस्थितमनर्घमर्घं मुदा

नीष्टफललब्धयेपरमपद्मनंदीश्वरः॥ स्तुतायवितरामहंसमय
सारकल्पद्रुमे॥ ॐह्रींसरस्वत्यै॥ आचारांगसूत्रकृतांगस्थानांगस
मवायांगव्याख्याप्रज्ञप्त्यंग॥ ज्ञातृधर्मकथांग॥ उपासकाध्ययनां
ग॥ अंतकृद्दशांग॥ अनुत्तरोपपादकदशांग॥ प्रश्नव्याकरणांग॥ वि
पाकसूत्रांग॥ दृष्टिवादांग॥ नामधेयद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्योऽर्घं॥
निर्वपामीतिस्वाहा॥ अर्घं॥ अथजयमाला॥ त्रिजगदीशजिनेंद्र
मुखोद्भवा॥ त्रिजगतीजनजातहितंकरा॥ त्रिभुवनेशनुताहिस
रस्वती॥ चिदुपलब्धिमियंवितनोतुमे॥१॥ अखिललोकशिवां
ध्वनिदीपिका॥ नयनयेषुविरोधविनाशिनी॥ मुनिमनोंबुजमोद
नभानुभा॥ चिदु॥२॥ यतिजनाचरणादिनिरूपणा॥ द्विदशभेदग
तागतदूषणा॥ नवनयात्मपनाशनचंद्रिका॥ चिदु॥३॥ गुणसमुद्रवि
शुद्धपरात्मनो॥ शकटनैककथासुपटीयसी॥ जितसुधानिजभक्ति
त्रिवप्रदा॥ चिदु॥ [illegible]॥ विविधदुःखजलेनवसागरे॥ गद
जरादिकमीनसमाकुले॥ अमृतलांकिलतारणनोसमा॥ चिदु॥५
गगनपुष्पलयमीतदर्मकैः सहसदासगुणैश्चिदनेहसौकलय
तीहनरोयदनुग्रहात्॥ चिदु॥६॥ गुरुरयंहितवाक्यमिदंगुरोः श्रुत
मिदंजगतामथवाश्रुतं॥ यतिजनोहियतोत्रविलोकते॥ चिदु॥७
त्यजतिदुर्मतिमेवकुजनेमतिं॥ प्रतिदिनंकुरुतेचगुणेरतिं॥ जडन
रोपियथार्पितधीघनाः॥ चिदु॥८॥ खलुनरस्यमनोरमणीजने न
रमतेरमतेपरमात्मनि॥ यदनुभक्तिभरस्यनरस्यवै॥ चिदु॥९॥
विविधकाव्यकृतेमतिसंभवे॥ भवतिचापिलदर्थविचारणे॥ य
दनुभक्तिभरान्वितमानवे॥ चिदुपलब्धिमियंवितनोतुमे॥१०॥ योहर्
न्निशंपठतिमानसमुक्तिमार॥ स्वादेवतस्यभवनीरसमूहपारः॥ मु
क्तोजिनेंद्रवचसोहृदयेचहार॥ सज्ञानभूषणकवेस्तवनंचकार॥
॥ॐह्रीं॥ सरस्वतीभगवतिवाग्वादिनीद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्योऽर्घं
महार्घंनिर्वपामीतिस्वाहा॥ अर्घं इति श्रीशास्त्रजीकीजयमाल
पूजासमाप्तः॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥
॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥छ॥ १॥

॥अथ लब्धिविधानपूजनजयमाल लिख्यते॥ छं॥ श्री वर्द्धमानजि
नराजगिरः प्रयुक्तं॥ श्रीगौतमादिगणनायकवुद्धयुक्तं॥ स्थापयामि
नवकेवललब्धिहेतो॥ योज्ञानचपस्यदिहलब्धिविधानहृत्तं॥१॥
वीरं श्रीवर्द्धमानश्च॥ सन्मतिश्च जगत्त्रये॥ वुद्धैरपि महावीरो॥ म
हाधीरश्च कीर्त्तितः॥२॥ एतानि पंचनामानि॥ समुच्चार्य प्रभक्तितः
पुष्पांजलिविधानं च॥ कर्त्तव्यस्त्रीप्रदत्तण॥ ॐ ह्रीं॥ श्रीमत्म
हावीरवर्द्धमानस्वामिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं॥१
ॐ ह्रीं श्रीमत्महावीरवर्द्धमानस्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थाप
नं॥२॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीमत्महावीरवर्द्धमानस्वामिन् अत्र मम स
न्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं॥३॥ काव्यम्॥ क्षीराब्धिते
पैर्वरकुंकुमाद्यैः स्वर्णभृंगारविनिर्गतैश्च॥ चापेजिनेंद्रं जित
मोहमल्लं॥ श्रीवर्द्धमानं नवलब्धिहेतो॥१॥ ॐ ह्रीं श्री॥ अर्हन् श्री
मन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन् अनंतज्ञानाय नमः॥१॥ अनंतदर्शना
य नमः॥२॥ अनंतसौख्याय नमः॥३॥ अनंतक्षायिकाय नमः॥४
अनंतक्षायिकाय नमः॥५॥ अनंतलाभाय नमः॥६॥ अनंतभोगाय
नमः॥७॥ अनंतउपभोगाय नमः॥८॥ अनंतवीर्याय नमः॥९॥ जलं नि
र्वपामीति स्वाहा॥१॥ जलं॥ श्रीचंदनैश्चारुचरित्रतुल्यैः॥ गंधात् दिनै
र्घनसारमिश्रैः॥ चापेजिनेंद्रं जितमोहमल्लं॥ श्रीवर्द्धमानं नवल
ब्धिहेतो॥२॥ ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन् अनं
तज्ञानाय नमः अनंतदर्शनाय नमः॥२॥ अनंतसौख्याय नमः॥३
अनंतक्षायिकाय नमः॥४॥ अनंतलाभाय नमः॥५॥ अनंतभोगाय न
मः॥६॥ अनंतउपभोगाय नमः॥७॥ अनंतवीर्याय नमः॥८॥ चंदनं निर्व
पामीति स्वाहा॥२॥ चंदनं॥ शुक्लोपयोगैरिव मुक्तताभैः शालि
तैरक्षतसद्गुणौघैः॥ चापेजिनेंद्रं जितमोहमल्लं॥ श्रीवर्द्धमानं नवल
ब्धिहेतो॥३॥ ॐ ह्रीं अर्हन् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन् अनंत
ज्ञानाय नमः॥ अनंतदर्शनाय नमः॥ अनंतसौख्याय नमः॥ अनंतक्षा
यिकाय नमः॥ अनंतलाभाय नमः॥ अनंतभोगाय नमः॥ अनंतउप
भोगाय नमः॥ अनंतवीर्याय नमः॥ अक्षतं॥३॥ काव्यम्॥ सत्पा

जातामलचंपकाद्यैः॥गुंजद्विरेफैःकुसुमोच्चयैश्च॥चार्पेजिनेंद्रं
जितमोहमल्लं॥श्रीवर्द्धमानंनवलब्धिहेतो॥४॥ॐह्रींअर्ह
न्श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन्अनंतज्ञानायनमः अनं
तभोगायनमः॥अनंतउपभोगायनमः॥अनंतवीर्यायनमः
पुष्पंनिर्वपामीतिस्वाहा॥४॥पुष्पं॥मिष्टान्नपक्वान्नसुपाप
साद्यैः॥नैवेद्यकैःपात्रगतैरसाद्यैः॥चार्पेजिनेंद्रंजितमोहमल्लं
श्रीवर्द्धमानंनवलब्धिहेतो॥५॥ॐह्रीं॥अर्हन्श्रीमन्महावी
रवर्द्धमानस्वामिन्अनंतज्ञानायनमः॥अनंतदर्शनायनमः
अनंतसौख्यायनमः॥अनंतक्षायिकायनमः॥अनंतला
भायनमः॥अनंतभोगायनमः॥अनंतउपभोगायनमः॥अ
नंतवीर्यायनमः नैवेद्यंनिर्वपामीतिस्वाहा॥५॥नैवेद्यं॥दीपैरुदा
साखिलदिग्विभागैः॥सत्केवलादित्रकरैरुचोद्यैः॥चार्पेजि
नेंद्रंजितमोहमल्लं॥श्रीवर्द्धमानंनवलब्धिहेतो॥६॥ॐह्रीं
अर्हन्श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन्अनंतज्ञानायन
मः॥अनंतदर्शनायनमः॥अनंतसौख्यायनमः॥अनंतक्षायि
कायनमः॥अनंतलाभायनमः॥अनंतभोगायनमः॥अ
नंतउपभोगायनमः॥अनंतवीर्यायनमः॥दीपं॥६॥ कृष्णागरु
प्रभृतिधूपचयोरुदारैः॥सौरभ्यवासितसमस्तदिगंतरालैः॥चा
र्पेजिनेंद्रंजितमोहमल्लं॥श्रीवर्द्धमानंनवलब्धिहेतो॥७
ॐह्रींअर्हन्श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन्अनंतज्ञानाय
नमः॥अनंतदर्शनायनमः॥अनंतसौख्यायनमः॥अनंतक्षा
यिकायनमः॥अनंतलाभायनमः॥अनंतभोगायनमः॥अनं
तउपभोगायनमः॥अनंतवीर्यायनमः॥धूपं॥निर्वपामीतिस्वा
हा॥७॥नारंगपूगक्रमुकाम्रलिंगैः॥नानाफलैर्मोक्षफलैर्निवे
द्यैः॥चार्पेजिनेंद्रंजितमोहमल्लं॥श्रीवर्द्धमानंनवलब्धिहेतो
॥८॥ॐह्रीं॥अर्हन्श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन्अनंतज्ञा
नायनमः॥अनंतदर्शनायनमः॥अनंतसौख्यायनमः॥अनं
तक्षायिकायनमः॥अनंतलाभायनमः॥अनंतभोगायनमः

अनंतउपभोगायनमः॥ अनंतवीर्यायनमः॥फलं॥निर्वपा
मितेस्वाहा॥ जलादिद्रव्याष्टकसंगताक्षै। अर्घैःसदर्घ्वैरूप
मानमुक्तैः। चापेजिनेन्द्रंजितमोहमल्लं॥ श्रीवर्द्धमानंन
वलब्धिहेतो॥ ए॥ ॐ ह्रीं॥ अर्हन्श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामि
नअनंतज्ञानायनमः॥ अर्घ॥ अनंतदर्शनायनमः॥ अनंतसौ
ख्यायनमः॥ अनंतक्षायिकायनमः॥ अनंतलाभायनमः
अनंतभोगायनमः। अनंतउपभोगायनमः॥ अनंतवीर्या
यनमः॥ अर्घ॥ ए॥ अथजयमालालिख्यते॥नानामहोत्स
वैपेतं॥दत्वाचार्घंजिनेशानं॥पश्चात्जयमाजरावै॥कुर्वेने
वांप्रदक्षिणं॥ १॥ छ॥ जयसकलसुरासुरनमितपाद॥जयवा
क्यविसर्जितकुमतिवाद॥जयपरमयोगनिर्मलविचार
जयचरणाहतसंसारमार॥२॥जयनिर्जितनिमिथ्यावपनबो
ध॥ जयखंडितकर्मारातिदेह॥जयपरिहरिताहलकमगेह
जयलोकसमुद्धरणैकधीर॥जयपापनिराकरणाप्रवीरा
जयमोहमहातमभेदिकुवार॥जयमुक्तिपुरंध्रीहृदयहा
र॥जयछिन्नभिन्नकंदर्पमार॥जयरागद्वेषरिपुकृतप्रहार
॥ जयरत्नत्रयभूषितशरीर॥जयनयरविशोषितविषयनी
र॥जयपरिमलविमलनिनिजपाप्रमाद॥ जयकरुणान्वितनि
तिविषाद॥ ६॥जयलोकत्रयमहनीयरिष॥जयनिंदितप
परसग्रंथलेवेष॥जयकांचनमेरुकृताविषेकज्जयबोधिस
माधिगुणीतिरेष॥७॥जयशत्रुमित्रसमहेमलोह॥जयद
ग्धाशितपापरोह॥जयनिबलविमलकेवलविशालज
यसहजबुद्धिहंसीमराल॥८॥ जयसप्तपंचपल्यचरित॥
जयसर्पजनलक्षणपवित्र॥जयसमोसरणविनबाधि
रूढ॥जयसिद्धअनाहतमंत्रगूढ॥ ए॥ घत्ता छंद॥ इत्यादिनु
तिसद्वाक्यैः॥ हर्षकीर्त्तिनुरंजकैः॥ स्तुत्वाश्रीसन्मतिप्राप्त
ता॥पुष्पांजलिभिनिंदयेत॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हन्श्रीमन्म
हावीरवर्द्धमानस्वामिनअनंतज्ञानसक्तेनमः॥अनंतदर्श
नायनमः॥ अनंतसौख्यायनमः॥ अनंतक्षायिकायनमः॥ अनंतलाभायनमः॥ अनंतभोगायनमः॥
अनंतउपभोगायनमः॥ अनंतवीर्यायनमः॥ अर्घ॥ इति नेलाकान्तिलब्धिविधानपूजासमाप्तः॥ ९॥

सुन्कासि॥ ज्कासकचित्त॥ वंदामिमहारिसिमोक्खपल॥ रयणत्तय
रंजियसुधमाव॥ तेमुणिवर [illegible] विसालकीर्त्ति [illegible] वर
वजुधरजिनपतिनमो॥ [illegible] चंद्रानचंद्रायण॥ चोतीसअ
[illegible] [illegible] सहाव॥ [illegible] जोतनिवसु [illegible] नमवीर
[illegible] सुगुससस्वा॥ स्वगातपरंजियकम्महगंजियतेरि
सिवमसरूजाया॥ ४॥ ॐ ह्रीं गुरूमोचार्यादिगुरुम्योनमः सुर
[illegible]
स्वाहा॥ इतिगुरुजयमालार्घं॥ अथवीसविहरमाणांकी
जयमाला लिखिले॥ श्रीमंधरजिणवंदस्यांजगसारहो॥
पुंडरीकिणीजिणराय॥ जंबूद्वीपविदेहमैजगसारहो॥ मेरुपूर्व
दिशिनाय॥ वजुनायजुगमंधरजिनेस्वरनमोकरनरनारी
तकवाकुनमोस्कवाकुस्वामीअनेकगुणमणिसागरो पांच
सैधनुषप्रमाणसोहै॥ कोटिरविसमवाजये॥ अवकडुमवि
मणास्कणहोजोजिनथानकीघंडराजये॥ १॥ संजातकजि
नसेयस्यांजगसारहो॥ सूरीतिस्वयंप्रभदेवरिषनराणंप्रण
मूंसदाजगसारहो॥ अनंतवीर्यकरिसेव॥ करिमेवस्सरोप्य
ऊजिणंदश्रीविशालकीर्त्तिप्रभावना॥ वरवज्रधरजिनपति
नमो॥ नितिचंद्रानचंद्रायण॥ चोतीसअतिसयगुणगरिष्ठा
समोसरणसोभाधरा॥ नागेंद्रइंद्रनरेशवंदैतेनिश्चलजीवद
यापरा॥ २॥ पुष्करार्द्धजिनसेयस्यांजगसारहोलागूंजिनजी
केपाय॥ चंद्रोपमजिनचंद्रजोजगसारहो॥ जिनसेयांपा
तिगजाय॥ सवजायपातिगजिनभुयंगमजगनाथसकईस्व
रो॥ नेमप्रभनप्रकुवीरसेणजीमहानद्राजतीस्वरो॥ जिनदेव
जसअरअजितवीर्यविहरमाणमहावला॥ स्कल्लग्यानके
वलदीपदीपतविस्वतत्वचराचरा॥ ३॥ समवसरणजिनको
सोजगसारहो॥ मानस्थंभस्करंग॥ चहुंदिशिसरससरो
वरीजगसारहो॥ षाईसजलभरेगसतरंगखाईपुष्पवा
डीकोटतीनविराजयेवनच्यारिवेदीमारिसोहैनाटिसा

गाजये सकल तूपह स्पो वली मनोहर चैत्य है सस्क हा वना॥
आकार स्फाटिक मणिमय जहां सभा हा दस्त्रा नावना॥ध॥जे
ह विचि सिंघासन रच्यो जोग सार जी हो॥ उपरि कमल अ
नूप अंतरीष जे है पर रहै जग सार है॥ अतिसै ॥ जिनरू
प॰ जिन नूप अतिशय वंत दीसैं करा करमन मोहीये॥ ढाले॥
चोसठ चमर स्वरूप तिछत्र तीन जु सो हयो॥ जहां अमर अप
छरा गीत गावै हाव भाव जसं तिया॥ रुणि झुणि येक मिकी
कमिक नाच चरण रुणि झुणि कैं तिया॥ ए कज भाव भाव
नां जग सार हो॥ पूजा करे ई कंचन॥ ए क करै गुण वर्णनां ज
ग सार हो॥ घट पट मन लाय॥ मन लाय एक जपै जपाली एक
करै भावना॥ एक तत्व सार विचार भाषै सूणी अनेक महा
जनं॥ जहां मोक्षि मारग सदा चालै काल चवथो ईरहै सु
विदेह षेत्र सं षेत्र ता की अवर महिमां को कहै॥ सु॥ कुंथला
य जिन के सम सैं जग सार हो॥ अवतरिया जिन राय॥ मुनि दि

सुतु तवारैल ही जग सार है॥ जिन दिष्य रूप साधु स्वपन
य जिन जी के कोडि पूर्व आयु मान परमानीये॥ आगम चौ
वीसी विषे कुलकर पुत्र जो जिन जानिये॥ सालमो जिनजी के
समैं गामी मोषि जे सुदिगंबरा॥ भावना भावै दरष की तिहाय
मुक्ति स्वयंवरा॥ अ॥ उदक चंदन तंदुल पुष्प के॥ चरु सुदीप
सुधूप फलार्घ के॥ धवल मंगल गान रवा कुले॥ जिनगृहे
जिन वीस महं यजे॥ २॥ ॐ ह्रीं श्री वीस विहरमांण विदेह क्षेत्र
के विषे सदां सास्वता केवल ज्ञान मैं विराजमान है॥ श्री
मंधर जी १ युगमंधर जी २ [illegible] बाहु जी॥ ३॥ सुबाहु जी॥ ४॥
स्वयंजात जी॥ ५॥ स्वयंप्रभ जी ६ रिषभानन जी ७ अनंतवीर्य जी
८॥ सूरप्रभ जी॥ ९॥ विशालकीर्त्ति जी॥ १०॥ वज्रधर जी॥ ११ चंद्रा
नन जी १२ चंद्रबाहु जी १३ भुजंगम जी १४ ईस्वर जी १५ नेमप्रभु जी
१६ वीरसेण जी १७ महाभद्र जी १८ देवजस जी १९ अजितवीर्य

२०॥ एह बीस विहरमाण है तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं नि
र्वपामीति स्वाहा॥ इति श्री बीस विहरमाण जयमाला संपूर
र्ण॥ कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्
वंदे भावनव्यंतरज्योतिर्वराकल्पामरावासगान्॥ सद्गंधाक्षतपु
ष्पदामचरुकैः दीपैश्च धूपैः फलैर्नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा
दुःकर्म्मणां शांतये॥ ८॥ ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसं
बंधि जिनबिंबेभ्योऽर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ वर्षेषु व
र्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु॥ यावंति चैत्यायतनानि
लोके॥ सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम्॥ ८१॥ अवनितलगतानां
कृत्रिमाकृत्रिमाणां॥ वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम्
इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां॥ जिनवरनिलयानां भाव
तोहं स्मरामि॥ ८२॥ जंबूधातकिपुष्करार्द्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भ
वा॥ श्चंद्राम्भोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घनाभा जिनाः सम्य
ग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेंधना॥ भूतानागतवर्त्त
मानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः॥ ८३॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रज
तगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके
कुंडले मानुषांके॥ इक्ष्वाकारेंजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे
स्वर्गलोके ज्योतिर्लोकेभिवंदे भवनमहितले यानि चैत्याल
यानि॥ ८४॥ द्वौ कुंदेंदुतुषारहारधवलौ द्वाविंद्रनीलप्रभौ द्वौ
बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ॥ शेषाः षोडश जन्म
मृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभा॥ स्ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः
सिद्धिं प्रयच्छंतु नः॥ ८५॥ इच्छामि भंते चेइयभत्ति काउस्सग्गो क
ओ तस्सालोचेउं॥ अहलोयतिरियलोयउड्ढलोयम्मि किट्टिमा
किट्टिमाणि॥ जाणि जिणचेइयाणि॥ ताणि सव्वाणि तीसुवि लो
एसु भवणवासिय वाणविंतर जोयसिय कप्पवासिय त्ति च
उविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वे
ण धूपेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण॥ दिव्वेण ण्हाणेण णि
च्चकालं अंचंति॥ पुज्जंति॥ वंदंति॥ णमंसंति॥ अ
हमवि इह संतो तत्थ संताइयं णिच्चकालं॥ अंचेमि पूजेमि॥ वं

१५० पूके
२०

दामि॥ णमंसामि दुक्खक्खउ कम्मक्खउ बोहिलाहो सुगइगम
णंसमाहिमरणं। जिणगुणसंपत्तिहोउमज्झं॥ अथ पूर्वाह्निक
कमध्याह्निकापराह्निकदेववंदनायांपूर्वाचार्यानुक्रमेण
सकलकर्मक्षयार्थंभावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीपंचम
हागुरुभक्तिकायोत्सर्गंकरोम्यहम्॥ णमोअरहंताणं॥ णमोसि
द्धाणं॥ णमोआइरियाणं॥ णमोउवज्झायाणं॥ णमोलोएसव्वसा
हूणं तावकायं पावकम्मंदुच्चरियंवोस्सरामि॥ जाप्यं॥९॥ दीय
ते॥ इति देवपू[illegible]संपूर्णं॥ अथ सिद्धों की पूजा [illegible]ष्यते॥
कामं॥ ॐ ह्रीं ऊर्ध्वाधोरयुतंसबिंदुसपरंब्रह्मस्वरावेष्टितंवर्गापू
रितदिग्गतांबुजदलंतत्संधितत्वान्वितं। अंतःपत्रतटेष्वना
हतयुतंह्रींकारसंवेष्टितंदेवंध्यायतियःसमुक्तिसुभगोवैरी
भकंठीरवः॥१॥ ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र
अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं॥१॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनं॥२॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं॥
॥३॥ निजमनोमणिभाजनभारया॥ समरसैकसुधारसधार
या॥ सकलबोधकलारमणीयकं॥ सहजसिद्धमहंपरिपूज
ये॥ ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ जलं॥ स
हजकर्मकलंकविनाशनैः॥ रमलभावसुवासनचंदनैः॥ अनुपम
नगुणावलिनायकं॥ सहज०॥ चंदनं [illegible]
[illegible]
सहजभावसुनिर्मलतंदुलैः॥ सकलदोषविशालविशोधनैः
अनुपरोधसुबोधनिधानकं॥ सहज०॥ अक्षतं॥ समयसार
सुपुष्पसुमालया॥ सहजकर्मकरेणविशोधया॥ परमयो
गबलेनवशीकृतं॥ सहज०॥४॥ पुष्पं॥ अकृतबोधसुदिव्य
निवेद्यकैः॥ विहतजातिजरामरणांतकैः॥ निरवधिप्रचुरा
त्मगुणालयं॥ सहज०॥५॥ नैवेद्यं॥ सहजरत्नरुचिप्रतिदीप
कैः॥ रुचिविभूतितमःप्रविनाशनैः॥ निरवधिस्वविकासप्रका
शनैः॥ सहज०॥६॥ दीपं॥ निजगुणाक्षयरूपसुधूपनैः॥ स्वगुण
घातमलप्रविनाशनैः॥ विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं॥ सह

सद्वोधसुदीर्घसुखात्मकं॥सहज०॥धूपं॥ परमभावफला
वलिसंपदा॥सहजभावकुभावविशोधया॥निजगुणस्फुरा
नात्मनिरंजनं॥सहज०८॥फलं॥ नेत्रोन्मीलविकाशभावनिवहै
रत्यंतबोधाययै॥ वार्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैसद्दीपधूपै
फलैः॥यश्चिंतामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चये॥सिद्धान
स्वादुमगाधबोधमचलं संचर्चयामो वयं॥५॥ अर्घं॥ त्रैलो
क्येश्वरवंदनीयचरणाः प्रापुःश्रियंशाश्वती॥यानाराध्यनि
रुद्धचंडमनसः संतोपि तीर्थंकराः॥सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्य
विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणैर्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सि
द्धान् विशुद्धोदयान्॥१॥ विरागसनातनशांतनिरंश॥निराम
यनिर्भयनिर्मलहंस॥सुधामविबोधनिधानविमोह॥प्रसीदवि
शुद्धसुसिद्धसमूह॥२॥विदूरितसंसृतभावनिरंग॥समामृतपू
रितदेवविसंग॥अबंधकषायविहीनविमोह॥प्रसीद०२॥
निवारितदुःकृतकर्मविपाश॥सदामलकेवलकेलिनिवा
स॥भवोदधिपारगशांतविमोह॥प्रसीद०३॥ अनंतसुखामृ
तसागरधीर॥कलंकरजोमलभूरिसमीर॥विखंडितकामवि
रामविमोह॥प्रसीद०४॥विकारविवर्जिततर्जितशोकवि
बोधसुनेत्रविलोकितलोक॥विहारविरावविरंगविमोह॥प्र
सीद०५॥रजोमलखेदविमुक्तविगात्र॥निरंतरनित्यसुखामृत
पात्र॥सुदर्शनराजितनाथविमोह॥प्रसीद०६॥नरामरवंदि
तनिर्मलभाव॥अनंतमुनीश्वरपूज्यविहाव॥सदोदयविश्व
महेशविमोह॥प्रसीद०७॥विदंभवितृष्णविदोषविनिद्र॥
परापरशंकरसारवितंद्र॥विकोपविरूपविशंकविमोह॥
प्रसीद०८॥विचिंतितनिर्मलनिरहंकार॥अचिंत्यचरित्रविद
र्पविमोह॥प्रसीद०९॥विवर्णविगंधविमानविलोभ॥विमा
यविकायविशब्दविशोभ॥विमायविकायविशब्दविशोभ अ
नाकुलकेवलसर्वविमोह॥प्रसीद०॥१०॥घत्ता॥असमसमय
सारंचारुचैतन्यचिह्नं॥परपरणतिमुक्तिंपद्मनंदीन्द्रवंद्यं॥नि

खिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं ॥ स्मरति नमति यो वा स्तौति
सोऽभ्येति मुक्तिं ॥ ११ ॥ इति सिद्धचक्रपूजाजयमाल समाप्तं ॥ अ
थ षोडशकारणपूजाजयमाल लिख्यते ॥ श्लोक ॥ ऐंद्रपदं प्रा
प्य परं प्रमोदं धन्यात्मतामात्मनि मन्यमानः ॥ दृक्शुद्धिमुख्या
नि जिनेंद्रलक्ष्म्या महाम्यहं षोडशकारणानि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं द
र्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अत्रावतरावतर संवौष
ट् आह्वाननं ॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अ
त्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडश
कारणे अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधीकरणं ॥
गंगादितीर्थप्रभववारिपूरैः ॥ स्नायापहारैर्घनसारसारैः ॥ ती
र्थंकरश्रीसुखसाधकानि ॥ यजे मुदा षोडशकारणानि ॥ १ ॥ ॐ
ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वा
हा ॥ जलं ॥ थारसेन सच्चंदनयेन सार ॥ कर्पूरगौरेण संनोह
रेण ॥ तीर्थंकरश्री० ॥ यजे मुदा० ॥ २ ॥ चंदनं ॥ कुंदैरमंदैः
शुचिसिद्धचारैः ॥ सत्सारिज्ञासैः सरसैः सुदेशैः ॥ तीर्थंकर
यजे मुदा० ॥ पुष्पं ॥ ३ ॥ ॥ पक्वान्नशाल्योदनपायसाद्यैर् नैवे
द्यकैः कांचनभाजनस्थैः ॥ तीर्थं० ॥ यजे मुदा० ॥ नैवेद्यं ॥ ध्वस्त
तमोऽन्धहरैरुदारैर्दीपैर्ज्वलत्केवललब्धिहेतोः ॥ तीर्थंकरश्री
० ॥ दीपं ॥ धूपोद्गमावासितदिग्विभागैः ॥ धूपैर्नवज्योतिवि
नाशनाय ॥ तीर्थंकर० ॥ ७ ॥ धूपं ॥ नारिंगपूगीफलमातुलिंगैः ॥
श्रीमङ्क्षिरात्मैः कदलीफलैश्च ॥ तीर्थंकर० ॥ ८ ॥ फलं ॥ नक्तिस्रक
शुभेंद्र संस्तुतमिदं तीर्थंकराणां पदं ॥ लक्ष्म वांछति यो विवा
रचतुरः संसारनीलाश्रय ॥ श्रीमद्दर्शनशुद्धिनृर्विनयक्र
नतोदीन्फलं ॥ तन्माषोडशकारणानि मनसा संपूज्य वा
राधयेत् ॥ ९ ॥ अर्घं ॥ पुष्पां ॥ भवजनमणनिवारण सोलहका
रण ॥ पयडमि गुणगणसायर ॥ यणवि विवि छ वय पय सु
ह सयंकर केवलणाणदिवायर ॥ वदिट्टयरकयपरमदं
सणविसुद्धि ॥ मणवयणकायविरइय तिसुद्धि मांवडकंवे
णनवउप्पयाक ॥ जोमुतिवारं गणिहियहहाक ॥ अणुदिए

परिपालकुसीलनेउ॥जोअत्तिहरइसंसारहेउ॥णाणोपयोगजो
कालुगमइ॥तसुतणियकित्तिभुवणयलिनमइ॥सवेउवाउजे
अणुसरंति॥वेएणेनवमनुतरंति॥जेमनउत्तवंतिवीरहप्प
रु॥तेमग्गासुरिंदहवहवसारु॥जोमाकुसमाहियरंतियकु॥
सोणइवइकालुमहियवकु॥जोजाणइतयावच्चुकरणसोहि
इसव्वुदोसाणहरणु॥जोचिंतइमणिअरहंउदेवतसावसयह
णंतहकवणथनं॥पचयणहिंसमरसगरुजंणवंति॥चउग
इससारिणतेनमति॥वकुसुमहन्नतइजेणःकुरंतितेअण
उरयणनियभरंति॥जोछहआवासहावनुदइ॥सोसिद्धिपहु
सहसीलिइ॥जेमग्गायहावणआयरंति॥जेअरहमिंदत्तणु
संनवंति॥जेपवयणकज्जसमछकुंत्ति॥तहकामजिरांतह
कवणजंति॥जेवछहत्तसकारणुवहंति॥तेतिछयरत्तणु॥
पउलंहंतिइयसोलहनावणजेधरंति॥तेउत्तरमग्गुणवाण
हचढंति॥घत्ता॥इहसोलहकारणकम्मवियारण॥जेथरं॥
तिवयसीलधरा॥तेदिविअमरेसर॥पुहमिणरेसर॥सिद्धिव
रंगणिहियइहरा॥छ॥इतिश्रीसामानंसोलहकारणंभू
जाजैमालसमाप्तं॥ ॥छ॥अथदशलक्षणपूजालिख्य
ते॥उत्तमादीषमादंत॥ब्रह्मचर्यसुलक्षणांस्थापयेदसधाय
र्मे॥ऊंमंजीनभाषीतं॥ॐह्रींदसलक्षणेकधर्मागाय॥अत्राव
तरावतरसंवौषट्आव्हाननं॥ॐह्रीं अत्रतीष्टतीष्टःठःठःस्था
पनं॥ॐह्रीं॥अत्रममसंनीहीतोभवभववषटसंनिधापनं॥छ॥च
वलोचनगंगार॥नालानगेतसेजपे॥सेजये॥सतषमाद
वरंयमे॥जोजेहंदसलषणं॥ॐह्रींदसलषणेकधर्मागाय
उत्तमषमा॥मार्दव॥आर्जव॥सत्य॥सौच॥संयम॥तप॥त्याग॥
आकींचनब्रह्मचर्याणीधर्मा॥१॥जलं॥चंदनवंदगंधाढ्यो॥
मलीयाचलसंभवे॥सतषमादीवरंयमे॥यजेहंदसलष
णं॥चंदनं॥२॥सालेयरषतेसौधे॥रषतेसरलेसुभे॥स
तष॥अक्षतं॥३॥मंदारमालतीपुष्पे॥पारीजातात्रचंप
के॥सतष॥पुष्पं॥४॥नेवेद्यैघृतपुरादो॥षीरानंदधीपुवके

द०पू०पू०
२२

सतव्याप॥नैवेद्यं॥ दीपैर्दीपीतदीकुचक्रे॥ कर्पुरावर्त्तीसंयुतैः॥स
तवे॥दीपं॥ धुपैर्धुपीतदिक्चक्रे॥ कर्पुरागुरुसंभवैः॥सत०॥
७॥धूपं॥ आम्रोदःफलसंघातै॥ नासानेत्रसुखावहैः॥सत:
८॥फलं॥जलचंदनसालेयैः पुष्पनैवेद्यदीपकैः धुपैः फलैः
स्तु संकीर्णमर्घं धर्माय वरं ददे॥ ९॥ अर्घं॥ जैई काउणनीस
रं॥ जेण हंती जम्मपंजरं॥ णीरोयं अयरामरं॥ तेलहंतीमोक्खपरं
॥१॥जेणमोक्षफलंतपाथीजइ॥ सुधम्म थित्तणहोगीजइ॥धम्म
मा ॥ घयुतुंगउदेहउ॥ मद्दवपलवअज्जवसाहउ॥२॥ सत्तसो
च मुलसंजमदलु॥ उवीहमहातवणवकुसुमायेलु॥ चउखी
हचाउपसारीयपरीमलु॥ पीणीयजगलोयछप्पयलु॥ अ
दीहसंदोहसदाकयकलयलु॥ सुरनरवर्षसुहसफलु॥ दीण
ण हरदहसमणीगाऊ॥ सुधसमीतणीमीतपरीगाऊ॥ धावंत
चेतु ख्रायारसीहासीउ रायहंसणीयरहीसमासीउ॥ एहोधमो
दुषीलषीजइ॥ जीवदयावउवीधीपालीजइ॥ ५॥ कारणगुण
जलारोकीजइ॥ मीछामहीपयणादीजइ॥ सीलसलीयधार
संचीजइ॥ एमपयंतावदारीजइ॥६॥ घत्ता॥ कोहानलचकउ
होयगुरुकउ॥ जायरसंजमसीवइ॥ पुक्कायसुकत्तु॥ धम्ममहा
तरु॥ देहफलायसुमीवइ॥ इति दशलक्षणपूजाजयमाल
संपूर्णः॥ अथ श्रीरत्नत्रयपूजालीष्यते॥ श्रीवर्धमानमान
म्य॥ गौतमादीश्च सद्गुरून्॥ रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये॥ यथाम्नायविमुक्त
ये॥ ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अत्रावतरावतर संवौष
ट् आह्वाननं॥ ॐ ह्रीं॥ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अत्र तीष्ठ: ठ:
ठ:ठ: स्थापनं॥ ॐ ह्रीं॥ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अत्र मम सन्नि
हीतो भव भव वषट् सन्नीधापनं॥३॥ स्वर्धुनीनीरधारानी॥
गंधशु नीरादर्शनं॥ ॐ [illegible] ह्यासदर्शनज्ञानं॥ चारीत्राम्य॥
र्च्चयाम्यहं॥ ॐ ह्रीं त्रयोदशांगकाय यः॥ जलं॥ हरीचंदननी
र्यासैदीतान्नासे कामहासीनो॥ देद्या०२॥ चंदनं॥ तंदुलैः
पांडुराषडैः पुंजीतैरलीगुंजीतै॥ देद्या०३॥ प्रसुनैर्मोक्ष्याम्रु
ने रत्नुनैर्गुणाद्यैस्तन्नैवेद्याम०॥पुष्पं॥ क्षान्नाद्यैस्तजीता

अक्षतं॥

नाऽर्घ्यैः ॥ नीकाधेगुणसंपदा ॥ हेम्या० ॥ नैवेद्यं ॥५॥ दीपैश्च दीपता
मेघैः ॥ दीकृचक्रे नयनप्रीयैः ॥ हेम्या० ॥ दीपं ॥६॥ धुपैर्धुमधुता
गुणावीनुमैधुपाणसंनुमैः ॥ हेम्या० ॥ धुपं ॥७॥ फलैर्देरससरैर्गाधव
र्णेर्हीसंपदेहेम्या ॥ फलं ॥८॥ अर्धेणर्धावुवीदी ॥ इमसर्वस
हारीणा ॥ हेम्या० ॥ अर्घं ॥९॥ इत्यचपंतीजेभेदा ॥ भेदभेदरत्नत्रय
संपदा तेसी श्रमाधारणानका ॥ श्रीयोवदंतीनीर्हती ॥ अर्थ
यमालनीछिते ॥ प्रणवेपीणुमावे ॥ वीमलमहावे ॥ वीरजीणंद ॥
गुणोहमिदी ॥ गुरुगाणधरजासग ॥ वीवुहपयामहा ॥ रयणत्र
येसुवीहाणवीही ॥१॥ जादवमासमेयवारसीदणु एहायीवी
मयवंछुपरीहरीजाणप्पणु ॥ पोसकुसजीपमाणुलणयणु धम्मु
फाणणिचीतववीजई ॥२॥ वारसीणीसीजागरणुगमीजइते
रसीदीणएहकरेप्पणु ॥ वरसमकीतपदमुपुज्जवीणु ॥ सोत्र
वेगपदावणसारउ ॥३॥ संकारहीनुगुणगणगणउ ॥ तीही
णीकंषीतवनुपुजीजही ॥ नीवीदीगंछनगुणअचीजइणीपु
छगुअंग ॥ पुणवछलवीगुणहंगरीवउ ॥ अवमआप
हाणवसारमु ॥ धायत ॥ ईयलअवपरूया ॥ पुजामारय ॥ पंदम
पहरीदेसणकरउ ॥ नवसाधेरलीलालरउ [illegible] तीपूजा स
मा: ॥ अर्थ ... ईजी की पूजा लिष्यते ॥ तीर्थोदकैर्मणिसु
वर्णघटोपनीतैः ॥ पीठपवित्रवपुषिप्रविकल्पितार्घे ॥ लक्ष्मी
श्रुतागमनवीजविदर्भगर्भे ॥ संस्थापयामि भुवनाधिपतिं जि
नेंद्रं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं आषाडमासे शुक्लपक्षे आष्टाह्निकायाम
हामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये पूर्वदक्षिणपश्चिमे
तरएकाएक अंजनगिरि च्यारि दधिमुख अष्ट रतिकरादिकुस्थे
तिजिनप्रतिमा अत्रावतरावतर संवोषट् आह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ
तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधा
पनं ॥ कर्पूरपूरिपरिपूरितपूरिनीर ॥ धाराभिराभिरभितश्च
महाहिरणी ॥ नंदीश्वरेष्टदिवसानि जिनाधिपानां ॥ मानंदितः
प्रतकृतिपरिपूजयामि ॥१॥ ॐ ह्रीं ॥ श्री ॥ जलं ॥ काश्मीरलक्ष्मणण
रेपरितपसर्पिगंधे सुचंदनस्यैर्घनकुंकुमाद्यैः ॥ नंदी० ॥२॥ ॐ चंदं ।

पंचमेरुपू०
२३

न्निजचंद्रविलसतकरणावदातैसकुंदकोरकनिभैःकलि
धितोद्यैः॥ नंदी०॥३॥ अक्षतं॥ मंदारचारुहरिचंदनपारिजात
संतानभूरुहनवैकुसुमैर्विचित्रैः॥ नंदी०॥४॥ पुष्पं॥ सिद्धैर्विशु
द्धनवकांचनजातरस्यैःपीयूषचारुभिरमैश्चरुभिर्विचित्रैःनंदी
०॥५॥ नैवेद्यं॥ ध्वस्तांधकारनिकरैःकरुणावदातैःदीपैःप्रदीपि
तसमस्तदिगंतरालै॥ नंदी०॥६॥ दीपं॥ धूपैरधूमतरुसौरभ
लोभगुंजितः भृंगाकुलैरगुरुचंदनचंद्रमिश्रैः॥ नंदी०॥७
धूपं॥ कामाम्रदाडिममनोहरमातुलिंगजातैफलैःप्रमतसौ
रभस्तफलाद्यैः॥ नंदी०॥८॥ फलं॥ दीपेनदीश्वरेस्मिन्विवि
धमणिगणकांतिकांतानिकांताश्चुंरायास्तचंद्रद्युतिक
रध्वस्तमोहांधकाराः चैत्याचैत्यालयाश्वजलकुसुमफला
द्यैरनर्घ्यप्रभावैः॥ जैनार्यैरर्घ्यपर्चैर्यतिस्फुटमसमसुखं तेभजंति
विमुक्तिं॥ ए॥ अर्घं॥ परमेट्ठिणंवेप्पिणुजिणसुमरेप्पिणुनव
श्रोहडुहणासणं॥ नवियणसकुणिज्जकुथिरमणुकिजा
कुअकिट्टिमजिणगुणकितणु॥ असुरलखायचउसट्ठिजिण
मंदिरं॥ णायसुलसीदिलखवाइजिणमंदिरं॥ लखवहत्तरिहेम
कुमरालयं॥ दीवबहत्तरेपिणदिक्कुमरालयं॥ दिसकुमारसि
तअग्गिपुण्णमयं॥ छहत्तरकुमारारि॥ छहत्तरेलखकयं॥ दस
भिभवणणाणवसुलखाणायंसंख्वजभवणाणअमरणजि
णगेहयं॥ सत्तकोडीववहत्तरेलखकयं॥ एवकुजिणगेहक्किम
हीयकम्मखयं॥ पंचमेरुणअसियाणजिणगेहयं॥ वीसगय
दंततहतीसकुलपव्वयंरूवगिरिसोहयंजिणहसत्तरिमय
कुरुदमेदतजिणअसीयवखारयंचारिमनुसोतरेचारिसु
गारयंचारिकुंडलगिरिरुजगिचत्तारयं॥ अवमोदीवनंदीसु
रासुदंसंवंदिमोतस्सबावन्नजिणमंदिरं॥ तिरएणरलोइस
व्वायजिणगेहयं॥ अडपणाहियंचारिसयवंदिए॥ अवसे
यांणतेअंतराजाणियं॥ संखरहियाणिजिणगेहवंदियम
यं॥ चंदसूराणग्रहताराणखत्तयं॥ पंचविहजोइसीयसंखर
हियाणियं॥ तिण्णिसंकायमिच्छिरुउहमारानं॥ एवकुजिणगे

हजिमहोइकम्मरकयं॥पढमसग्गमिपुनकहमिजिनगेहियं
लखबत्तीसईसाणअडवीसयं॥सनतकुमारंमिबारहविल
खाणयं॥अडलखाइमाहेंदसग्गाणयं।बंभबंभोतरेचारिल
खाणायं।लंतवेसग्गेकापिठजिणगेहियं॥सहसयंचासमु
खरहिवंदियमयं।सुक्कमहासुक्कसग्गमिसुहालयंसहस
चालीसवंदामिजिणगेहियं॥सग्गिसत्तारिसहसारिवेसग्ग
यं॥सुरवरेमहियजिणभवनसगीसयं॥आणदेसग्गियएण
पाणदेसग्गये।आरणेसग्गेतहअच्चुलेजाणियं॥चउमकथे
सजिणभवनसयसरूयं॥अहियेयारसेमेकगेवज्जयंसत
अहिएसयंमज्झगेवज्जयं।एगवदिएयाहियंउवरगेवज्जियं
सएणमिजिणभवनअहिमिंदसुरपूजयं॥नवएणबाणोत्तरेण
वदिजिणमंदिरं॥पंचपंचोत्तरेपंचजिणमंदिरं।सव्वकप्पाणअ
हमिंदजिणासंखयं॥लखचुलसीदिसत्ताणवदिसहसयं॥अ
हियतेवीसवंदामिउहनाआनं॥तिज्जयलोयंमिजंजिणभ
वेनासयं॥अडकोडीउछप्पनलखाणयं॥सहससत्ताणव
दिआरियेयासयं।दिमयंदोवयंअकिट्टमंजिणवरंनतिम
रणतेणवमिजिणमंदिरं॥अहियअठोतरेपढमसउजाणि
यं॥पंचसयधनुहपडिमाकचलयं॥अहियपणवीसनवयके
डीनयं।लक्खतेवन्नसगवीससहस्सयजिणं॥सइयनवअव
रअडियालजिणायणिमयं॥सवगणियाकुवंदेतोडिनवं
तोरणंमंगलपाडिहेरवयं॥तिणिसालाउचउगोवरेण
डयं।रयणथूहाइचत्तचेइयंसोहियंमाणथंभायविहडावि
यंमाणयं॥नहसालाइसीयायत्तीतोदयं।दहसमीपेहि
कंचनगिरसोहयं।तसुकुंडमिपडिवाउएक्केक्कयंमेरुप
डिवययंविणिसयपडिमयं।पंचमेरुतहसहसकूडोदयं॥
तिणचउवीसयंनरहणिमायये।सवियंसिहरिकइविलास
तेवंदियंणउजिणगेहजिमहोयकम्मक्खयंदीवअट्ठाइंयंजे
जिणगेह [illegible] यंभवियकरावयंतेमयंवंदयंअ
छहीणाहियंजम्मएबुरूयंखमऊजिण।णाहजिम

मनहयं॥ घत्ता॥ इहश्राण [illegible] विजिणसु
रमहिपरमेसुर अमरसुखसोपावइ॥ सोणरहो पिणचरीयचे
पिण सिद्धसुखसो पावइ॥१॥ नवकोडिसयापण वीसातेंवण
लखायसहसस ताईसानरमेतिहं अट्ठिलाला॥ जिणपडिमा
अकहिमावंदे॥२॥ इतिश्रीनंदीश्वरजीकीपूजाजयमालासं
पूर्णं॥ अथपंचमेरुपूजालिख्यते॥ संवोषडाह्वयानिवेसिटा
न्यासातिअमानीपवषट्पदेनं॥ श्रीपंचमेरोस्थजिनालया
नांयं जामपत्रीतिप्रतिमासमस्ता॥ ॐह्रींपंचमेरसंवंधीअसी
तीजिनचैतेल्पो अत्रा ञ्चावतरसंवोषट्काननंअत्रतिष्ठ
तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ अत्रममसन्निहितोसन्निधीकरणं॥ अ
थाष्टकं॥ सुंमिधुसुखाखिललीर्थमार्यो॥ वर्त्तिमुनानोजर
जोन्निरामें॥ श्रीपंचमेरोस्तजिनालयाना॥ यजामपत्रीतिप्रति
मासमस्ता॥ जलं॥१॥ [illegible] श्रीचंदनैमथविलुप्तनंगैः सर्वोत्तमे
गंधविलासुक्तं श्रीपांचमेरो॥ चंदनं॥२॥ शाल्यक्षतैकैरवंकुड्
लानं॥ गुणत्रयणनुममाहृद्भि॥ श्रीपंचमेरोः॥ अक्षतं॥३॥ प्रथा
नसतानंकमुखमयुष्पैः सुगंधिता गच्छदनुछमृगैः॥ श्रीपंचमे
रो॥४॥ पुष्पं॥ वांछायमानैघृतपूदयुरै नानाविधमोत्तगतः रसा
द्रनैः॥ श्रीपंचमेरो॥५॥ नैवेद्यं॥ तमोविनासप्रकटीकृथौतीर्थंद्र
दीपैरमेषजवचौनुरूपे॥ श्रीपंचमेरो०॥६॥ दीपं॥ स्वपापरीलाप
रिणामसंधूम्रैः॥ रिवोरुकृष्णागुरुचंदनैद्धैः॥ श्रीपंचमेरो०॥७॥
धूपं॥ नारिंगमुख्यैफलमातुलिंग॥ फलैःसुगंधैसरससुवर्णैः॥
श्रीपंचमेरो०॥८॥ फलं॥ वार्गंधपुष्पाक्षतदीपधूपनैवेद्यइ
वीफलवक्रिरयैः॥ श्रीपंचमेरोस्तजिनालया॥ यजामपत्रीति
प्रतिमासमस्ता॥ अर्घं॥९॥ अथजयमाला॥ जिनमज्जनपि
ठं॥ मुनिगानईठुं॥ असीचैत्यमंदिरसहितं॥ वंदोगिरिनायकम
हमालायक॥ पंचमेरतीर्थमहितं॥१॥ जंबूदीपअधिकं छविड
जामधिसुदर्शनमेरुविराज॥ ३ लक्षजोजनलक्षप्रमानं॥ रोमा
तरसिरिजुकविमानं॥२॥ दीपधातकीखंडमझारा॥ मेरुजुगम
आपमैं आगमअनुसारा॥ विजयनामसूरिवदिसिमोह॥ प

त्तिमनागअचलमनमोहै ॥३॥ पुहकरार्द्धमैंनीकुंतियोही ॥ म
दिरविद्युतमालीसोही ॥ चारयौंकीइकसारचाईसहस्रअसी
चौजोजनगाई ॥४॥ पांचोंमेरमहागिरएई ॥ अचलअनादि
निधनथिरजेई ॥ मूलवज्रमधिमनिमयनासैं ॥ ऊपरकनकम
ईतमनासैं ॥५॥ गिरिगिरिप्रतिवनच्यारिवषांनैं ॥ वनवनदेव
लच्यारिमानैं ॥ चामीकरमयेवहुंदिसिराजैं ॥ रतनजडितनौ
वतरंविलाजैं ॥६॥ समोसरनाचनामंवधारै ॥ भूजपांननितसौंप
यविडारै ॥ सोजोजनआयामगनिज्जै ॥ आसतासतैंअर्थेनने
ज्जै ॥७॥ तुंगपैनसैंजोजनभारे ॥ नंदनमालजिनग्रहसारे ॥ ऊपर
अर्थअर्द्धसवजानुं ॥ पांडुकवनपरजंतवषानैं ॥८॥ पांचैंमेरु
नकीसुनिलीजैं ॥ सुनिवरननसरध्यानकरीजैं ॥ सोनावरन
तपारनलहीए ॥ वुद्धिवोछीकसैंकरिकहीये ॥९॥ विनअगे
तरसोइकमाही ॥ रतनमईदेषतदुषजांहीं ॥ आननतरअ
रविदहैंसैंहैं ॥ लछनव्यंजनसहितलसैंहैं ॥१०॥ सिंघासनपरि
सोहतअसैं ॥ जगसिरसिधविराजतजैसैं ॥ पद्मासनवैरागवदा
व ॥ सुरविद्याधरपुजनआवैं ॥११॥ मेहैमाकोनकहैजिनके
री ॥ त्रिभूवननयनांनंदजिनकेरी ॥ धनकपांचसैंतनचितवै
रे ॥ वंदैंभावसहितकरजोरैं ॥१२॥ गजदंतादिसिषरपरजेहैकृ
त्तिमअकृतिमजिनगेहैं ॥ अरुत्रिभुवनमैंप्रतिमांसरी ॥ निति
प्रतियोकत्रिकालहमारी ॥ घता ॥ भूधरपतियहां ॥ करमनजे
हानत्तिं ॥ विषवहुचितधरी ॥ करिपुजासारीअष्टप्रकारीपंच
मेरजमालतनणी ॥१३॥ इतिपंचमेरुजीकीपूजाजैयमालासं
पुर्णं ॥ अथपद ॥ नरभवपायफेरिदुषभरनां ॥ असाकाजनक
रनांहो ॥ नाहकममतठानिपुदगलसं ॥ करमजालकौंपरनां
हो ॥ नरभवपायफेरिदुषभरनां ॥ असाकाजनकरनांहो ॥टे॥ ह
तोजडतूप्यानअरूपी ॥ तिलतुसज्यौंगुरवरनांहो ॥ रागदोष
तजिममताकूंकर्मसाथकेहरनांहो ॥ नरभ० ॥२॥ योभवपा
यविषैसुषसेनां ॥ गजचढिईधनढोनांहो ॥ वुधजनसमझिसे
यजिनवरपद ॥ ज्यौंभवसागरतिरनांहो ॥ नरभवपायफेरि

॥अथ शांतिपाठ लिख्यते॥ शांतिजिनं शशि निर्मलवक्रं शी
लगुणं व्रतसंजमपात्रं॥ अष्टसताचितलक्षणगात्रं॥ नौमि जि
नोत्तममंबुजनेत्रं॥१॥ पंचममीप्सितचक्रधराणां॥ पूजितमिं
द्रनरेंद्रगणैश्च॥ शांतिकरं गणशांतिमभीप्सु॥ षोडशतीर्थं
करं प्रणमामि॥२॥ दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि॥ दुंदुभिरासन
योजनघोषौ॥ आतपवारणचामरयुग्मे॥ यस्य विभाति च मं
डलतेज॥३॥ तं जगदर्चितशांतिजिनेंद्रं॥ शांतिकरं शिरसा
प्रणमामि॥ सर्वगणाय तु यच्छतु शांति॥ मह्यमरं पठते परमं
च॥४॥ येभ्यर्चिता मुकटकुंडलहाररत्नैः शक्रादिभिः सुरगणै
स्तुतपादपद्माः॥ ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपा॥ तीर्थं
करांस्तुत शांतिकरा भवंतु॥५॥ संपूजकानां प्रतिपालकानां
यतींद्रसामान्यतपोधनानां॥ देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः॥
करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः॥६॥ अशोकवृक्षसुरपुष्पवृष्टि
र्दिव्यध्वनिचामरमासनं च॥ भामंडलं दुंदुभिरातपत्रं सत्प्रा
तिहार्याणि जिनेश्वराणां॥७॥ क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बल
वान् धार्मिको भूमिपाल॥ काले काले च सम्यग्विकिरतु चमेघ
न् व्याधयो यांति नाशं॥८॥ दुर्भिक्षं चोरमारी क्षणमपि जग
तां मास्म भूत् जीवलोके॥ जैनेंद्र धर्मचक्रं प्रभवतु सततं
सर्वसौख्यप्रदायि॥९॥ प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभ
नाः कुर्वंतु जगतां शांति॥ वृषभाद्या जिनेश्वराः॥१०॥ श्रेयःप्रा
र्थनां प्रथमं करणं चरणं ज्ञानं नमः शास्त्राभ्यासो जिनपतिनु
तिः संगतिः सर्वदार्यैः सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च
मौनं॥११॥ सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावने चात्मतत्वे संपद्यं
तां मम भवे भवे यावदेते ऽपवर्गः॥१२॥ तव पादौ मम हृदये म
म हृदयं तव पदद्वये लीनं॥ तिष्टतु जिनेंद्र यावद्यावन्निर्वाण
संप्राप्तिः॥१३॥ अक्खरपयहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणि
यं॥ तं खमउ णाणदेवय मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु॥१४॥ दुक्ख
क्खउ कम्मक्खउ॥ समाहिमरणं च बोहिलाहो य॥ मम
होय जगतबंधव॥ तुव जिणवरचरणसरणेण॥१५॥ दुक्ख॥

नुकमरवत्॥वोहिलाहोयसुमयगमणंममाहिमरणंजिणगुणंजि
णगुणसंपत्तिहोनुगज्ञ॥१६॥नमोस्तु श्रीआचार्यवंदनाय।सिद्ध
भक्तिकायोत्सर्गंकरोम्यहं॥णमोअरहंताणं॥णमोसिद्धाणंण
मोआइरियाणं॥णमोउवज्झायाणं॥णमोलोएसव्वसाहूणं॥इ
त्यादिजाप्य॥९॥उच्छ्वास२७दत्वा॥इतिशांतिपाठसंपूर्णं॥ॐ
अद्दिलरज्जनं॥ज्ञानतोज्ञानतो वापि॥शास्त्रोक्तंनकृतं म
या॥तत्सर्वंपूर्णमेवास्तु॥त्वत्प्रसादाज्जिनेस्वर॥१॥आह्वानंनै
वजानामि॥नैवजानामिपूजनंविसर्जनंनैवजानामि॥क्षमस्व
मप्रमेस्वर॥२॥आहूताष्येपरोदेवा॥लब्धभागायथाक्रमंतेग
यान्पविलैनत्या॥सरवोवा—षयास्थतं॥इतिश्रीशांतिपाठ
संपूर्ण॥:॥अथअदायनंदज्जीकीपूजा॥ सर्वज्ञ—मानम
सिचार्थीनिष्ट॥गुणाब्धिदात्तनसुनधर्महेतन॥जजामिपादा॥
ब्जजिनेस्वरस्यअष्टा निधिश्रावणशुक्लदशम्यां।ॐह्रीं श्रीप
रमब्रह्मणेअत्रावतरावतरसंवौषट्आह्वाननं।ॐह्रीं॥श्रीप
रमब्रह्मणेअत्रतिष्ठतिष्ठठःठःस्थापनं।ॐह्रीं॥श्रीपरमब्रह्म
णेअत्रममसन्निहितोभवभववषट्सन्निधीकरणं॥अनीश
णीतामिरतीवसज्ज॥विशुद्धकर्पूररजोयुतानि॥जजामिरस
च्चेसुखार्थहेतो॥जिनेंद्रविंवंनवनांत्रानाय१॥जेलं॥संवेदने
लोहितचंदनोघमितानुकालागुरुजातमिश्रै॥जजामि०॥२॥चं
दनं॥सदक्षतैरक्षतमुख्यदेहै॥कुंदोज्ज्वलैःसौरभगंधगेहै॥जजामि
०॥३॥अक्षतं॥सन्मालिकाचंपककुंदमल्लै।विरब्धस्नेस्तुगंधप
रै॥जजामि०॥४॥पुष्पं॥विचित्रनद्देरतिरंजितात्है॥माधुर्यसोदवे
निवद्धनद्दे॥जजामि०॥५॥ नैवेद्यं॥स्व दीपमघेमुनिहृदतु
ल्ये॥प्रकाशिलानेकपदर्थसारे॥जजामि॥६॥दीपं॥मांगल्यका
रागुरोव र्यधूपै॥सल्लक्षधूपैर्घणगंधरूपै॥जजामिहे०॥७॥धू
॥धूपं ॥जाठिनश्रीफलमातुलिंगो॥निसर्गमाधु
र्यभरैरसैसे॥जजामिहे०॥८॥फलं॥ जलमल
यजक्षता तसा॥स्रग्जनैवेद्यदीपधूपफलै॥ रचितार्घ
नयजेवररत्नंत्रितं॥जिनानुभावसंभक्तंस्निहे॥९॥अर्घं॥अ॥

जैयमाल जलगंधादि । विधाय ॥ अथ हेच — — मे ॥ कलिमर रमविहाय ॥ ख ॥ सुगंधसुसीतलनिर्मलहार सदांबुसदारसणीशीयनार ॥ अरैवेनिधिना मविधानअपार ॥ सुवांछितसर्गापवर्गोदाता ॥ १ ॥ सुकुंकुममिश्रितचंदनसार ॥ सुराचरमानवमानसहीर ॥ अरैवेनिधिनामं ॥ २ ॥ समाजितदुग्धपयोधिपरजा ॥ समानसमुज्वलतंदुलपूजा ॥ अदैवेनिधि० ॥ ३ ॥ सरोजवचंपककुंदकदंब ॥ सुरद्रुमजातजयैनिकरंब अर्हेनिधि० ॥ ४ ॥ निरस्तदिवाकरशशिसदृम ॥ सुरत्ननिशाकरदीपसमूह ॥ अरैवेनिधि ॥ ५ ॥ अहीनविमोदकमंडकखंडप्रचंड सुधासमपायपिंड ॥ अरैवेनिधि० ॥ ६ ॥ सुगंधितसर्वदिगंतसदूपमूलमादनसीतकरागुरुधूप ॥ अरैवेनि० ॥ ७ ॥ मनोहररत्नसुवर्णविशालसुभाजनराजितचोचरसाल ॥ अर्हनि० ॥ ८ ॥ अलंकुरुपुज्यपुरानअदेव ओंममदेवअरैवेनिधि ॥ घत्ता ॥ जयजैनपतिवरंपरमसुखाकर: गुणनिधानकलमलहरणं ॥ नानादि त्रिभुवनविहतसरणवरं ॥ सेवकजनमंगलकरणं ॥ १० ॥ इति श्री अर्हेनिधिपूजा जिनालयसमाप्त: ॥ छ ॥ ॥ १ ॥ अथ चतुर्विंशतिस्तवंन्नस्तोत्र लिख्यते ॥ येनस्वयंबोधमयेनलोका: आश्वासिता: केचनवृत्तिकार्ये ॥ प्रबोधिता: केचनमोक्षमार्गे तमादिनाथंप्रणमामिनित्यं ॥ १ ॥ इंद्रादिभि: क्षीरसमुद्रतोयै: संस्नापितोमेरुगिरौजिनेंद्र: ॥ य: कामजेताजनसौख्यकारी तंशुद्धभावादजितंनमामि ॥ २ ॥ ध्यानप्रबंधप्रभवेनयेन ॥ निहत्यकर्मप्रकृती: समस्ता: मुक्तिस्वरूपीपदवींप्रपेदे ॥ तंसंभवंनौमिमहानुरागात ॥ ३ ॥ स्वप्नेयदीयाजननीक्षणायां ॥ गजादिवन्हिंनिमिदंददर्श यस्यात्तैरस्याद्गुरू: ॥ सुरौघं नैमिफमोदादभिनंदनंत: ॥ ४ ॥ कुवादिवादंजयतामहांतं ॥ नयप्रमाणैर्वचनैर्जगत्सु ॥ जैनमतंविस्तरितंचयेन ॥ तंदेवदेवंसुमतिंनमामि ॥ ५ ॥ यस्यावतारेसतिपितृधिष्ण्ये ॥ ववर्षरत्नानिहरेर्निदेशात ॥ धनाधिप: षण्णवमासपूर्वं पद्मप्रभंतंप्रणमामि साधुं ॥ ६ ॥ नरेंद्रसर्पेश्वरनाकिनाथै ॥ र्वाणीनरंताजगृहेस्वचित्ते ॥ यस्यात्म

धः॥प्रथितासन्नाय॥सहेसुपार्श्वजिनंनुतंनमामि॥७॥सत्प्रातिहार्याति
शयप्रपन्नोगुणप्रवीणोहतदोषसंगः॥योलोकमोहांधतमःप्रदीप
श्चंद्रप्रभंतंप्रणमामिभावात्॥८॥गुप्तित्रयंपंचमहाव्रतानिपंचोपदिष्ट
समितीश्चयेनवभाषेद्वादशधातपांसि॥तंपुष्पदंतंप्रणमामिदेवं॥९॥
ब्रह्मव्रतांतोजिननायकेनोत्तमक्षमादिर्दशधापिधर्मः॥येनप्रयु
क्तोव्रतबंधबुद्ध्या॥तंशीतलंतीर्थकरंनमामि॥१०॥मायोजानानंदकरे
धरांते॥विध्वस्तकोपश्रमैकचित्तेयोद्वादशांगंश्रुतमादिदेश॥
श्रेयांससमानोमिजिनंतमीशं॥११॥मुक्त्यंगनायैरचितंविशालंरत्न
त्रयंशेखरकायपेन॥यत्कंठमासाद्यबभूवश्रेष्ठ॥तंवासुपूज्यंप्रणमा
मिवेगात्॥१२॥ज्ञानीविवेकीपरमस्वरूपीध्यानीव्रतीप्राणिहितोप
देशी॥मिथ्यात्वघातीशिवसौख्यभोजीबभूवयस्तंविमलंनमामि
१३॥आभ्यंतरंबाह्यमनेकधायःपरिग्रहंसर्वमपाचकारयोमार्गमु
द्दिश्यहितंजनानां॥वंदेजिनंतंप्र[illegible]णमाम्यनंतं॥१४॥सार्थ्यपदा
र्थानवसप्ततत्त्वैःपंचास्तिकायाश्चनकालकायाः॥षट्द्रव्यनिर्णीति
र्लोकयुक्तिर्येनोदितंतंप्रणमामिधर्मं॥१५॥यश्चक्रवर्तीभुविपंच
मोऽन्वश्रीनंदनोद्वादशकामोगुणानां॥निधिःप्रभुषोडशमोजिनेंद्रस्तं
शांतिनाथंप्रणमामिनेदात्॥१६॥प्रशांतितोयोनविनाशितिहर्षोविशुद्धे
तोयोनकरोतिरोषं॥शीलव्रतंब्रह्मपदंगतोयस्तंकुंथुनाथंप्रणमामि
हर्षात्॥१७॥नसंस्तुतोनप्रणुतःसनाथो॥यःसेवितोनंतगणेनपूर्ण
याघदाच्युतेःकेवलिभिर्जिनाय॥देवाधिदेवंप्रणमाम्यरंतं॥१८॥रत्न
त्रयंपूर्वभवांतरेयोवृतंपवित्रंकृतवानशेषं॥कायेनवाचामनसा
विशुद्ध्या॥तंमल्लिनाथंप्रणमामिभक्त्या॥१९॥ब्रुवंनमःसिद्धपदा
यवाक्यमित्यग्रहीद्यःस्वयमेवलोचं॥लोकांतिकेभ्यःस्तवनेनिरा
म्य॥वंदेजिनेशंमुनिसुव्रतंतं॥२०॥विद्यावतेतीर्थकरायतस्मादाहार
दानंददतोविशेषात्गृहेनृपस्याजनिरत्नवृष्टिःस्तौमिप्रणामायु
नयोनमिंतं॥२१॥राजीमतीयःप्रविहायमोक्षस्थितिंचकारपुनर
गमार्यास्वदेषुजीवेषुदयांदधानस्तंनेमिनाथंप्रणमामिभक्त्या॥२२
सर्प्पाधिराजःकमठारितोयः॥धृतःसभैःफणवितानैःयस्मैपर्व

र्गो निरवर्त्तयन्तं नमामि पार्श्वं महमादरेण ॥ २३ ॥ नागो विजंतु समूह
ये नाभाकर्षयामास हि धर्मपोतात मज्जंतमुच्चैस्तय जिनेंच येनश्र
वर्द्धमानेन गणमाम्यहं तं ॥ २४ ॥ यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः स्त्री वाकृ
तोपस्कृता ॥ सर्वज्ञध्वनिसंभवं त्रिकरणं व्यापारशुध्यानितं ॥ न
मानां जां जयमालया विमलया पुष्पांजलिं दापये ॥ नित्यं स श्रि
यमालनोति सकलस्वर्गापवर्गस्थिते ॥ २५ ॥ इति श्री स्वयंभू स्तम
स्तं ॥ अथ विशेष सोलहकारणपूजा जयमाला लिख्यते ॥ इदि
सोलह मत्तइं उक्कवखयेत ॥ सोलहकोइहलि हिं ॥ अणुक्कमेण सु
ठिहिं वरसुदिठिहिं ॥ पुण णिसुणहि सय पुज्जविहिं ॥ १ ॥ तं जिजंतु
वरपहवविज्जइ ॥ तस्सयपवासव्वहकिज्जइ ॥ घयपयदहियइक्खु
रसयउरहि ॥ एहाविज्जइबउंतइत्तुरइ ॥ पुण कलसहिं एहाविवि
गंधोदउ ॥ वंदिज्जइ णो सिद्धत्तणुरोयउ ॥ पुणु परकालिविवाचि
विजंते ॥ आपुण समुज्जुं जिविमंते ॥ पुण दंसण विसुद्धि तिकु
वारहि मंतु पढे विणुद्धरियणि वारहि ॥ आवाहण विहिपढमी कि
ज्जइ तउ थिरु चित्त करिवि ठाविज्जइ ॥ सण्णिहीयकरण तउ
पुतिज्जइ ॥ तउ छावणु विहाणु मा विज्जइ ॥ पुण पुज्जावसु
जेयहिं दव्वहि ॥ सारें णिज्जइ विपलियगव्वहिं ॥ तं जह ॥ गाथा ॥ णे
मदहादे णिगाय ॥ सुरसरि सलिलेण सुत्तिण सिसोण ॥ सोलह
कारण जंते ॥ तेण महामी हृत्तावेण ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री दर्शन विसुद्धादि
सोलहकारणेभ्यो ॥ जलं ॥ सिसिरकंड चंदन कुंकुम रस सरिक
लिलेण कणयवेणेण ॥ अच्चमि जंतमणि गंधा विलेवया जं तवी
मीरमविसुद्धयार ॥ ॐ ह्रीं ॥ चंदनं ॥ ससिकर संणिहस्सुसुद्धि हि अ
रकहअक्खेहि अक्खयसुहस्से सोलहकारण जंतमच्चयामी
हत्तीए ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ अक्षतं ॥ मंदार कुंद चंपक ॥ मालामालीहि
अतीरवालाहि ॥ अच्चमि जंतमण गंधडग्गुयगमण स दंसिवंवि
गंधा ॥ ॐ ह्रीं ॥ पुष्पं ॥ सज्जुण्ह अज्जयपक्काहि ॥ चिलपमोएहि घेव
राईहिं ॥ णेवज्जेहि अहंपियय ॥ सोडश कारणं अच्चे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं ॥ नै
॥ वेद्यं ॥ कप्पूरवत्तिकलियहिं ॥ दीवावलिएहिं दिसयासेहिं ॥ केव
लणाण कंण हि तूरणि णदेहि जंतमच्चेहि ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं ॥ दीपं सि

ण्हारसअइराइयं॥दिट्ठिविमिस्सेणसरसंधूवेण॥उद्धूपयाहि
जंतंसुपसयसिद्धीएपसिद्धीए॥७॥धूवं॥णारंगपूयवोचामल
कविल्लेहिंचित्तमहिदेहिं॥फलेहिंफलसिद्धदेहो॥अच्चेवसुह
णकारणमहिया॥८॥फलं॥जलगंधरकयकुसुमणेवपस
दीवधूपफलजुत्ती॥कुसुमंजलिपुणुजल्थमि॥सुजंतरस्सपु
ब्बणिदस्सणं॥अर्घं॥एवंपिपक्खगाणं॥दसणपमुहाइअ
टुणगणं॥एक्केक्कंपडिपुज्जाकायव्वा॥तिमतिणयो॥१०॥एक्के
क्केगंपडिपुणुजलारउकणयपत्तचविअगंध॥जस्सगयस्स
भूया॥तस्सपुइकिज्जएण्णअंघं॥११॥अर्घमहार्घ॥जम्मंवहि
तारण॥कुगइणिवारण॥सोलहकारणभावकरणं पण
विविसुद्धासिमि॥सत्तिपवासमि॥तित्थयरत्तलविधरंतें
ज्जावउत्तवियउदंसणविसुद्धि॥पणवीसदोसवज्जियपसे
द्धि पंचविउविणयउपालउजुउत्तु॥जिणसासणिमूलुजि
जोधमुवीतविपालउअइयारमुक्कु॥सिवपंथसहायउ
जोगुरुक्कु॥णाणोपउवरववणिसववणिसरेउ॥सेकप्पविपण
इपरिहरेउ॥संवेउअगमावउमणि॥धम्मुजिधम्मउफलु
सेउतम्मि॥णियसत्तिएदिज्जइपत [illegible] ति
वेक्खिज्जइसाउसमाहिचित्ति॥णायाइयदोसहिं॥कियपरि
चित्ति॥वइयावच्चविदसनेयपयारु॥विरइज्जइजदआवइ
णिवारु॥अरहंतभत्तिअइणिसिउणेउ॥तउणामकउ
थिरुमणिगुणेउ॥पवहिज्जियपुणआयरियभत्ति॥गुरुभत्तिदेव
वंदणउत्ति॥वउसुयहभत्तिदोसावहारि॥विरइज्जइणोणपवि
त्तियारि॥पवयणउभत्तिजिणसमयपोस॥किज्जइसंसयतमद
लनगोस॥छावासयकिरियाणिसकरे॥उम्मुहासुहआवंत
नुहरेउ॥जिणमगपहावणकरउमत्त॥जिहिंअणउंतायुण
कुंतिस्सत्थ॥वच्छल्लु किज्जइसंघरूपहाणु॥फेडेप्पिणउच्छमो
हमाणु॥घत्ता॥इयसोलहभावण॥सिवसुहदावण॥थिरचि
त्तिजोकविकरइ॥पावविविनित्यजणु॥सच्चुहिपलाणुसोपं
चमगइसंचरइ॥१२॥ॐह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो

नमः दर्शनविशुद्धिविनयसंपन्नताशीलव्रतेष्वनतीचारो
ऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगशक्तितस्त्यागशक्तितस्तपः।
साधुसमाधिर्वैयावृत्त्यकरणमर्हद्भक्तिः।आचार्यभक्तिः
बहुश्रुतभक्तिःप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिःसन्मा
र्गप्रभावना।प्रवचनवात्सल्यत्वषोडशकारणनामभ्यो
जलचंदनाक्षता।पुष्प।नैवेद्यदीपधूपफलादिसहितम
अर्घंमहार्घं।निर्वपामीतिस्वाहा॥अर्घं॥अथषोडशका
रणपुष्पैकजयमालापूजनं॥मदामदोपवासमैराकर्णे
तेतदानदा॥मोदसौरमस्पकृत्हणि॥कारणान्यपिषोडश
थायंत्रमध्येदर्शनविशुध्यादिषोडशकारणसंबंधिषोडश
कर्णिकालस्योपरिपुष्पांजलिंक्षिपेत्॥अथषोडशकारण
षोडशजयमालालिख्यते॥असत्यसहिताहिंसा॥मिथ्यात्वंचन
दृश्यते।अष्टांगयत्रसम्यक्त्वंदर्शनंतद्विशुद्धये॥१॥ॐह्रींदर्शनविशु
द्धयेनमः।पंचमगइकारणु॥ऊाइणिवार[illegible]णु॥पणदहकरणका
रणु॥भावउजविवउमणि॥भवउहतममणि॥दंसणसुद्धिमवि
यसरणु॥१॥संकाकंखविदिगिछचित्तु॥दंसणविसुद्धयामुण
पवित्तु॥णिम्मूढत्तेउवगूहणेण॥ठिदिकरणेवच्छल्लेगुणे
ण॥तुपहावणोइदंसणविसुद्धि।मुंदत्तयवज्जणितासुद्धि॥छ
क्कायअणाणाणाणचाइ॥दंसणविसुद्धिवज्जियपमाइ॥२॥ण
विजीवउज्जाइसहावहोइ॥कम्मउपरिणइ॥इहअणेहिंजोइ
वतसुविचंडालकुलेणिचउगइहिंगउकुलउपुंणवुजुत्तइ
सत्तुचउगइअमणाहेउ॥णिगंथतिलोयकुहोइजेउ॥दुविवि
मरूउजावडुविहिसु।तउगबुकरइकिहमुणिपसणुसुणाण
उविसिज्झइणमहुरियादमंगलहकवणुजबि।दंसणुवज्जि
उतअहलुणु।लवगवणुकिज्जइमबुलेण।कम्मारिजिणिज्ज
हिंजिंवलेण।तेसम[illegible]वज्जउणउकियमलेण।जेहिंजिविणेण
इजवनमेइ॥अणुचउगइजोणहिदमेइ॥तेसयलजिकुविण
णाणइहवंति॥तहगसुणमणिमुणिवरवहंति॥पणवीसदोष
वज्जियतिसुद्धि।जझाइअहिपरमदंसणविसुद्धि॥घत्ता।दंसण

विसुद्धिपदमंगरुणि॥ पूयकरेमि णुउरियमज्झ॥ अप्पुजितंतारक
गुणसहियसोसम्मणाणसिद्धिवस्थ्य इति॥ दर्शनज्ञानचारित्रतप
संयत्रमेरवे॥ मनोवाक्कायसंशुद्धासाओकाविनयस्थिति॥ ॐ ह्रीं
विनयसंपन्नतायैनमः॥ ३॥ दंसणणाणचरणवहिणउ तवयुए
विसुद्धकुसवदलणु॥ सुकुसत्तिएसहियलिणिवसिरु॥ किज्जइ
वणरकयजलणु॥ १॥ विणउ विनवतरुजालणु किसाणु॥ विणउ जे
तिलोयमज्झह यहाणु॥ विणउ विजिणसासणि [illegible]
[illegible] सयलमू
लु॥ विणउ वि मिच्छाइ छियहि सूलु॥ विणए विणुमाणुसजम्म
कवुमाणु गिएइ केवि सहइ उक्कु॥ तं विणउ देवगुरुसत्थहो इ
दंसणणाणहु विनयंति जो इच्चारित्त विणउ संयमसणाउ॥ अप्पा
णविमानमारुअम्मानउ एक्करापदो सगंजियइ चित्त॥ सा विज
इवणिरवलि जिकविमित्तु॥ साचवणइसमइ विसुद्धजीउ न हि
ए सुचितइ सत्तुजीउ॥ तस्मिच्छइ विणउपगत्तु एहु॥ शिवणि
यर पंथसंबलसुलेहु॥ घत्ता॥ विणएं विणु घडियमसाउ सक्कइम
नएंति विणयपमाण॥ जो सहवि अगुभरइ इहु सो धारइ ह्री
वरमणिकरु॥ इति ३॥ अनेकशीलसंपूर्णं॥ व्रतपंचकसंयु
तं॥ पंचविंशत्क्रियापत्र॥ तच्छीलव्रतमुच्यते॥ ४॥ ॐ ह्रीं निरती
चारशीलव्रतायनमः॥ ॥ ४॥ दुगाइदुहहारणु॥ सुहगइ
कारणु॥ जीबितउ वयसंयमहं॥ सीलं गुत्तें जइ पालइ णएस
इणमक्कु॥ मणु पंचंगचंचलदमह॥ १॥ अइयार विवज्जिय वु
इसीलु॥ पालइस्सवइणि रुचितु पीलु॥ माणु सदेवीति रियंच
नारि॥ छंडिज्जइ मण वयतणि विघारि॥ अप्पुणु अप्पा लिक इ
वणु चलेइ॥ अप्पाणउणउ वणसुणुक्क लेइ॥ अवरहु कीरंत
उ कुगइ जीउ एउ अणुमोयइ गुणु नउ जीउ॥ अविलावालायेच्छं तु
संतु॥ सुत्ती वविथाणहि मणि महंतु॥ जोवणकरिंद आरूदमू ढ॥ ला
घणसलिल सच्चं गमगू ढु॥ समयइ सणिए विणुसमसमाणमणए
नकरइ सम्माणदाण॥ सीलेतियसेसरपयणमंति॥ सीलेमि वज
रिणि जयकमंति सीलेण लंकि उवि णयदूउ॥ तणुकुहिउ विमो

हइसुकवसूउ॥मयणावयाहपुणुसीलचित्तुणुक्षुक्कारिज्जइ
सोणिरुत्तु॥जंकियपयजवयनवक्कुकिंपि॥अकवलियपावि
ज्जइसव्वुलंपितंपुणुजुणिंतिसीलुजिरिसीस॥समदव्वक्कुरिक
सहिणगुरुगारीस॥घत्ता॥इति॥सीलेसहुत्थोवउपवहफलु॥णि॥
फलुवक्कुववतेणविणुइममुणिवितिजिसीलंगावहा॥पुज्जउ
अग्गहतीसदिणुघ॥इतिः॥ कालेपात्रःसमेसानं॥शास्त्रेचिंता
गुरोनतिः॥यत्रोपदेशानालोके॥ज्ञास्त्रेज्ञानोपयोगता॥४॥
॥ॐह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगायनमः॥अभिक्खणणाणे
उगुणे॥अक्खयपारहिमहिमहवि॥पुणुअणुत्तारिज्जइ
तिमलुकुसुमंजलिअगाइरविविचि॥१॥जंखणिखणिचेय
णुनाविज्जइतंजिअभीखणुणाणुमुणिज्जइ॥अहवाजंसुत्त
त्थहंअज्झासो॥णवसिक्खाणपुणुअज्झासो॥कवणेणइविरतुचिंतन
विसा वहसावरतोनावंतरि॥एकुविणाणेणुगुपहिहउफेडि
य विसयकसायविसहरउ॥णाणअज्झासेमणुथिरुयकइणाणं
णि वियप्पगणुलुक्कइ॥णाणअज्झासेअवियलुज्झाणे॥णाणअज्झा
सेचलइणझाणें॥णाणअज्झासेसासणुवहइ॥णाणअज्झासेअसुहे
हइ॥णाणअज्झासेसुपहावणगुण॥णिम्मदइरदलियइरियवि
णु॥घत्ता॥इयगुणहिंलंकियउअगावहा॥उरिउसमणिविअथु
लईअत्तारइगेहत्थजिसयणुसावइसुमणुगिहत्थजई॥इति॥
पुत्रमित्रकलत्रेभ्यःसंसारविषयार्थन॥विरक्तिर्जायतेयत्र
ससंवेगोबुधैःस्मृतः॥५॥ॐह्रींसंवेगायनमः॥वसुविहदव्वंम
हइगुणु॥पुजिविकरणयथालसरिवि॥अग्गुलाभिज्जइवयउ
णु॥नित्तिएकुसुमंजलिकरिवि॥१॥जिणसामियदलक्खणम
यम्मि॥रयणत्तयलक्खणविणयउम्मि॥सागाराणगारएव
हाणे॥दयजुत्तिविपंसेयजीवठाणे॥णिस्सयधम्मिजहहोइजा
उ संवेगत्ते जिपउणु॥शविरउ॥अहवत्थसरूउपसत्थधम्मु
केवलदंसणुणाणि[illegible]म्मु॥तहरत्तचित्तसंवेवसितुतोफल
जाविज्जइअइविसिवु॥दारिदहरिहलहस्वरूणाण्णहु॥तित्थ
यरसुक्केवलिअवाह॥अविलयासणमुरवरतहसुरेस अह

मिदाणयवासियविसेसा॥परिसहवंतिधम्मेउफलेण॥परमत्था
रहियणिम्मलेण॥जहिमोतम्मिहिज्जइलहफलम्मि॥तेपुणुसंवे
गविसरिसणम्मि॥छत्ता:॥साहम्मियजणिमोत॥सेयमायच्चर
कणणिरु॥तेसंवेगपएणंगु॥अणुसारउडुरियहरु॥इति॥४॥
दानपात्रेलपश्रेतिचतुर्दशगाथापरं॥स्वशक्त्याविधेलेयन्नव
दान:लपसोस्थिते॥६॥ॐह्रींशक्तितःलाभाय नमः॥चाउवि
सुपसत्थधम्म॥अणुसमच्छिविनत्तिमण॥लउत्तारिज्जइ
खुपुणु॥हुणिविहूरसयतत्थण॥२॥दोविहपरिगहछंडेणचा
उ॥सकसाएदियडंडेणंचाउ॥चाउविहवेइरसचायएणचाउ
विहवेइस्सजाचरणेण॥३॥चाउविमणजायविपण्णासि॥चाउ
विहवेइमोहदूविणासि॥जंधम्मकवाणुकहेइसाउसाव
यउहेपुरउकयसुगयलाउ॥तंचाउविज्जाणिप्पउजणाहिं
यालिज्जउणिरुमुणिवरगणेहिं॥उत्तिमसज्जिमवहणयाहे
जिणसमयहजणियतिपलयाहं॥अहारपमुहचउदाणता
हं॥दिज्जइजत्तिएउणगणयआरह॥उद्दियहंदिज्जइसम्मणुकं
पणेण॥तंचाउहोइविपपियमुहेण॥घत्ता॥चायेविणुमंदिरु
येयवणुपुरुसविपडयमुरिस्थजे॥गोहावमपुत्तकलत्तविय
रवंतिधणामिसुणिस्थउ॥इति॥५॥त्यागोदशगाथाशेलंकावासे
संतस्नेदत:स्वशक्त्याक्रियतेनमे:स्वर्गमोक्षफलप्रदं॥७॥ॐ
ह्रींशक्तितस्तपसेनमः॥घत्ता॥सपासछिंदणपरमु॥देहसुक्र
णिणासणउकोवीण्णइवच्छुउचयण॥तंतउकरिदिहासणउ
तंतउजहिलवनरदमियअंगु॥तंतउजहिणउसोसिज्जएं
गु॥तंतउजहिदोचिहणत्थिसंगु॥तंतउजहिइंदियविसयभंगु
वंतउजहिगिरिकंदरिणिवासु॥तंतउजहिइत्थियजतणुगासु॥उवस
गागमिकंपइणजंजि॥तवयरणुअणुनासियउतंजि॥णिज्जरइचे
इज्जियकम्मडुक्क॥कासोवरिराउणवुहिउत॥महवयपणपालणु
सनिदिपंच॥पालणरोहणइंदियहसंच॥सिरकेसहलुंचणुणि
थकरेण॥छावासज्जुंजइनियखणेण॥णगाउवियलइतिउ
कालजोग॥आजम्मुविअणहेंणउजोइमसयणजोयणिहासवे

इअंतविणाविअंगुलाणउणिविवइहिदिनायणुमउणइइक
वार॥तुंजइणीसुविसयावहार॥एरिसुतउजइमरणेउहोइ॥
केवलणावइतेपरमजोइ॥घत्ता॥तउपुज्जविअजिविसुगण
अमुत्तारिविकरिविथुइ॥जेतिवकामिणिउरंतरिम॥एवहिं
सुम्हहिकरइरइ॥ इति॥७॥मरणोपसर्गरोगा॥दिष्टवियोगा॥
दनिष्टसंयोगात॥नतयंपत्रशक्तिरातिसाधुसमाधिःसविदेये
८॥ॐह्रीं साधुसमाधयेनमः॥साकुसमाहिअंतकालहिंपणम

छहढालो
३२

॥अथ छहढालो लिख्यते॥ सोरठा॥ सरवद्रव्य मैं सार आतमहित
कोजेकारी है॥ नमो ताहि चितधार॥ नित्यनिरंजन जानिकै॥१॥ चौ
॥पई॥ आयु घटै तेरी दिनराति॥ होय निचीत रह्यौ क्यौं भ्रात॥ जोवन
धनतन किंकर नारि॥ सब है जलबुदबुद उनहार॥२॥ पूरन आय
बधै षिन नाहि॥ दये कोटि धन तीरथ मांहि॥ इंद्र चक्रवति हू कहा
करै॥ आयु अंत तै वेहू मरै॥३॥ यो संसार असार महांन॥ सार आपमैं
आपा जांनि॥ सुषतैं दुष दुषतैं सुष होय॥ समता च्यारू गति न
हि कोय॥४॥ अनंत काल गति गति दुष लह्यो॥ बाकी काल अ
नंतो कह्यो॥ सदा अकेलो चेतन येक॥ तो मांही गुन वसत अने
क॥५॥ तू न किसी का कोय न तोय॥ तेरा सुषदुष तोकौ होय॥ यातैं
तोकूं तू उरधारि॥ परद्रव्यनितैं मोह निवार॥६॥ हाड मांस तन
लिपटी चाम॥ रुधिर मूत्र मल पूरित धाम॥ सो हू थिर न रहै क्षय हो
य॥ याकौं तजै मिलै सिवलोय॥७॥ हित अनहित तन कुलज
न मांहि॥ षोटी बांनि हरो क्यौं नांहि॥ यातैं पुद्गल करमन जोग॥ प्र
नवै दायक सुष दुष रोग॥८॥ पांचू इंद्री के तजि फैल॥ चित निरो
धि लागि सिवगैल॥ तामैं तेरी तू करि सैल॥ कहा रह्यो है कोल्हू बै
ल॥९॥ तजि कषाय मन की चलि चाल॥ ध्यावो आपनो रूप रसाल॥
झरै कर्मबंधन दुखदांन॥ बहुरि प्रकासै केवलग्यांन॥१०॥ तेरो
जनम हुवो नहीं जहां॥ ऐसो षेतर नांही कहा॥ याही जनमभू
मिका रचो॥ चलो निकसि तो विधि तैं बचो॥११॥ सब व्योहार कि
या को ग्यान॥ भयो अनंती वार प्रधान॥ निपट कठिन अपनी प
हचानि॥ ताको पावत होत कल्यांन॥१२॥ धर्म सुभाव आप स
रधांन॥ धर्म न सील न न्हांन न दांन॥ बुधजन गुरु की सीष वि
चार॥ गहो धर्म आतम हितकार॥१३॥ इति द्वादशानुप्रेक्षा॥ अ
थ ढाल जोगीरासी की॥ सुनि रे जीव कहत हूं तोकूं तेरे हि
त के काजै॥ हो निश्चल मन जो तू धारै तब कछु इक तोहि लाजै॥
जो दुष तैं थावर तन पायो वरनन सकूं सो नांही॥ अठारै वार मूवौ अ
रु जीयो येक सास के मांही॥१॥ काल अनंतानंत रह्यो यो पुनि
विकलेत्रय हूवो॥ बहुरि असैनी निपट अग्यांनी छिन जीयो

छिन

योमूढौ॥ऐसैं जलमगयोकरमनवसितेरोवसिनहिचाल्यो॥पुं
न्यउदैमैंनीपसुहूवौतवहूपानलान्यो॥२॥जवरमिल्योतै
नतोहिसतायोनिवलमिल्यौतैघायो॥मातत्रियसमभोगीपापी
तातैंनरकसिधायो॥कोटिकवीछूकाटतजैसैंऐसीभूमितहां
है॥रुधिरराधिपरवाहवहततहैदुरगंधनिपटजहांहै॥३॥घावक
रतअसिपत्रअंगमैंसीतउष्णतनगालै॥कोईकाटैकरवतक
रगहिकोईपावकजालै॥जथाजोगिसागरतिथिदुषतैंदुष
कोअंतनआवै॥कर्मविपाकऐसाहीकैतैमानुषगतिल
वपावै॥४॥मातउदरमैंरहेगीदकैनिकसतहीविललावै
डंभादिंतलाविसफोटकडाकनितैंवचिजावै॥तोजोव
नमैंभांमनिकैसंगिनितनिसदिनभोगरचावै॥अंधाकैधं
धादिनषोवैवूढानाहिहलावै॥५॥जवपकैरजवजोरना
चालैसैंनासैनवलावै॥मंदकषायहोवैतोभाईभुवनंत्रिकप
दपावै॥परकीसंपतिलषिअतिझूरैकैरतिकालगमावै
आयुअंतमालामुरझाजावैतवलषिलषिपछितावै६
चलैतहांतैंथावरहोवैरुलितहैकालअनंता॥याविधिपं
चपरावुतपूरनदुषकोनाहीअंता॥काललवधिजिन
गुरकिरपातैंआपआपकोजानै॥तवहीसुतजनमव
दधितिरकैपदुंचिजायसिवथांनै॥७॥इतिदालाः२॥अथ
जेमालकी॥याविधिनववतकेमांहिजीव॥वसिमोहगह
लसूतेसदीव॥उपदेसततणासह जैसवोधि॥तवहीजागै
ज्योंतवतजोध॥१॥जवचितवतअपनेंमाहिआपहूंचि
दानंदनहिपुन्यपाप॥मेरोनाहीहैंरागभाव॥योतोविधिवसि
उपजेविभाव॥२॥हूनितनिरंजनसिद्धसमान॥ज्ञानावरनी
आछादिज्ञान॥निश्चैसुधएकअबोहारभेव॥गुनगुनीअं
गअंगीअभेव॥३॥मानुषसुरनारकपसुपजाय॥सिसुजु
वानवृधवहुरूपकाय॥धनवानदरिद्रीदाससराव॥ऐतोवि
टवसुफवनासुभाव॥४॥रसपरसगंधवरनादिनाम॥मेरेना

हीमैं ज्ञानधांम॥ रूपक रूपनही होत और॥ मुकरमैं प्रतिविंवत
सकलगोराप॥ तनपुलकत वरहरषत सदीव॥ ज्यौं नईं कषरे
रि छिप्रली व॥ जव ध्रुवलअवलाखोंनप्याप॥ तव चित परणति
ऐसी उपाय॥ सोमुनी सविक चितधारि कांन॥ वरणत हूं तां
कों विधि विधांन॥ सव करै काज घरमांहि वास॥ ज्यौं भिन्न
कमल जलमैं निवास॥६॥ ज्यौं सती अंगमांही सिंगार॥ अति
करत प्यार ज्यौं नगर नारि॥ ज्यौं धाय लडावत आंन वाल सौं
नेम करत नांही सुस्याल॥७॥ जह उदै मोह चारितभाव न
हि होत रंच रूत्यागभाव॥ तह करै मंद षौटी कषाय॥ वरमै
उदास कै अथिरध्याय॥८॥ सव की रिद्धाजुतन्यायनीत॥ जि
नसासन गुरकी दिढप्रतीत॥ वहु रुलै अर्ध पुदूलपमांन॥
सो घरम हूवै लेपमैं थांन॥९॥ वे धन्नि जीव धनभाग सोय
जाके ऐसी परतीत जोय॥ ताकी महिमां कै सुर्गलोय॥ वुधज
न भाषे मोतैं न होय॥१०॥ इति॥ ३॥ ढाल सोरठा॥ उग्यौ आ॥
तम सूर॥ दूरि भयो मिथ्यात तम॥ अव प्रगटे गुन भूरि॥ तिनमें क
छूयक कहत हूं॥१॥ सेका मन मैं नांहि॥ तत्वारथ सरधान मैं॥
निरवांछा चितमांहि॥ परमारथमैं रत रहै॥२॥ नैकन करत
गिलांन॥ वाह्यि मलन मुनिजन लषै॥ नांही होत अज्ञान॥
तत्वकूं तत्वविचारमैं॥३॥ उरमैं दया विशेषि॥ गुन प्रगटै औ
गुन ढकै॥ शिथल धर्म तैं देषि॥ जैसे तैसें दिढ करै॥४॥ साधर
मीय हचांन॥ धरै हेत गौवांछलौ॥ महिमां होत महान ध
र्म काज ऐसैं करै॥५॥ मद न हि जो नृप तात॥ मद न हि भूपते
नांन कौ॥ मद न हि जो परधान॥ मद न हि संपति कोस कौ॥६॥
रूपकौ ज्ञानमदपात॥ नजिराग दिविज्ञावपौरि॥ ताके कैके
मांन॥ जात्यादिक वसु अथिर कौ॥७॥ वंदत है अरिहंत॥ जि
न मुनि जिनसिद्धांत कौं॥ नवैन देषि महंत॥ कुगुरु कुदे
व कुग्रंथ कौं॥८॥ कुतसित आतमदेव॥ कुतसित गुरु कु
नि सेवक॥ परसंसा षट नेव॥ करै सम्यकितवान षै॥१०॥

गद्यासमासुनाव॥कसाश्रनावमिथ्यातकौ॥वंदो ताकेपाव॥बुध
जनमनवच कायतै॥१४॥इति॥४॥ढालयमहस्ती सं दम सांधै॥
तिरजंचमिनषदोऊगतिमैं॥हूलधारकसरधाचितमै॥सोम्प्रगालि
तनीरनपीवै॥निसिभोजनतजतसदीवै॥१॥मुषमाहिंषवस्तु
नहिलावै॥जिनमतक्रिलित्रिकालसराहवै॥मनवचतनकपटनि
वारै॥कृतकारितमोदसवारै॥२॥जेसीउपसमतकषाया॥तै
सातिनत्यागवताया॥कोऊसातविसनकोत्यागै॥कोईअनुव्र
ततैपागैं॥त्रसजीवकवूनहिमारै॥थिरथावरनसंघारै॥पर
हितविनझूंठनवोलै॥मुषसांचविनांनहीषोलै॥४॥जलमृति
काविनधनसवहू॥विनदीयोलेनहिकवहू॥ब्याहींवेनतावि
ननारी॥लघुवहनवडीमहतारी॥५॥तिसनाकाजोरसंकोचै
ज्यादापरिगहकौंमोचै॥दिसकीमरज्यादालावै॥वाहिरनहिपां
वहलावै॥६॥ताहूमेंपुरसरसरिता॥नितिराषतअघतैंडर
ता॥सववनरथदंडनकरिहै॥छिनछिननिजधर्मसुमरिहै
७॥जअछ्यानकलासुधलावै॥समतासामायकध्यावै॥पोसैंए
काकीहोवै॥निरकिंचनमुनिज्योंसोहै॥८॥परिग्रहपरमांनवि
चारै॥नितिनेमभोगकाधारै॥मुनिआवनविरियांजोवै॥जवजो
गिअसनमुषलावै॥९॥योउत्तमक्रियाकरता॥नितिरहैपाप
तैंडरता॥जवनिकटमृत्युनिजजानैं॥तवहीसवममताभा
नैं॥१०॥ऐसैंपुरुषोत्तमकेरा॥वुधजनचरननकाचेरा॥वैनिश्चै
सुरपदपावै॥थोरैदिनमैंसिवजावै॥११॥इति॥अथअहोजग
तगुरकीदासमैं॥अथिरध्यायपरजायजोगतैंहोयउदासी॥नि
त्यनिरंजनजोतिआतमाघटमैंभासी॥सुतदारादिवुलायस
वनितैंमोहनिवारा॥त्यागसहरधनधांमवासवनवीचवि
विचारा॥१॥भूषनवसनउतारिनगनह्वैआतमचीनां॥गुरुढि
गिदिष्याधारिसीसकचलुंचजुकीना॥त्रसथावरकाघात॥
त्यागमनवचतनलीनां॥झूंठवचनपरिहारगहेनहिजलवि
नदीना॥२॥चेतनजडतियभोग॥तज्यागतिडषकारा॥अहि

ढाल्यो०
३५

कंचुक ज्यौं ज्यौं निचित तैं परिगै न्यारौ ॥ गुपति पलन कै काज ॥ कपट म
न वच तन नांही ॥ पांचूं समति सम्हारि परीसै सहि है आई ॥ छो
रि सकल जंजाल ॥ आप करि आप आप मैं ॥ अपने हित कौं आ
प करि बौध्कै सु हृ जाप मैं ॥ ऐसी निश्चल काय ध्यांन मैं मुनिजन के
री ॥ मांनूं पथ्थर रची कि धौ चित्राम उकेरी ॥ ४ ॥ चारि घातिया ना
सि ग्यान मैं लोक निहारा ॥ दे जिनमत उपदेस भविक कौ दुख तैं
टारा ॥ बहुरि अघाति तोरि ॥ समै मैं सिवपद पाया ॥ अलष अ
खंडित जोति सुद्ध चेतन ठहराया ॥ ५ ॥ काल अनंतानंत जैसे के
तैं से रहि है ॥ अविकारी अविनास अचल अनुपम सुष लहि
है ॥ ऐसी भावनां भाय ऐसे जे कारिज करि है ॥ ते ऐसे ही होय
दुष्ट करमन कौं हरि है ॥ ६ ॥ जिनके उर विसवास ॥ वचन जिन सा
सन नांही ॥ ते भोगातुर होय सहै दुष नरकनि मांही ॥ सुष दुष
पूर्व विपाका ॥ अरे मति कालपै जीय ॥ कठिन कठिन तैं मीतज
नम मानुष ले लीना ॥ ७ ॥ सो विरथा मति षोय ॥ जोय आपा पर भाई ग
ई न लागै फेरि उदधि मैं डूबी राई ॥ भला नरक का वास सहित स
मकित जे पाता ॥ बुरे बने जे देव नृपति मिथ्यामतमाता ॥ नहीं ष
च्य न होय नहीं काहू लैं लरनां ॥ नहीं दीनता होय नहीं घर का पर
हरनां ॥ समकित सहज सुभाय आपका अनुभव करनां ॥ या बि
न जप तप वृथा कष्ट के मांही परनां ॥ ९ ॥ कोटि बात की बात अरे बुध
जन उर धारनां ॥ मन वच तन सुध होय गहो जिनमत का सरनां ॥ ठा
रा सैं पचास अधिक नव संवत जांनूं ॥ तीज सुकल वैसाष ढाल ष
ट सुभ उपजांनूं ॥ १० ॥ इति षट ढाल संपूर्ण ॥ ॥श्री॥ ॥

॥ अथ जिनपूजा अष्टक सुंदरी छंद ॥ सलिलचंदनअक्षत पुहपले । चरुसुदीपसुधूपफलांनले । परममंत्रजपेक्षचे कुजिये । जिनगुरुगुरुसारदपूजिये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमदेव अत्रावतरावतर संवौषट् ० अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ० अत्र मम संनिहितो भव ॥ जलविचित्रपवित्रसुलाइये । विमलथाल सुक सुष्ककराइये । त्रिविधधारसुधीधनुधाइये । मलजरामृतज जन्मवहाइये ॥ ॐ ह्रीं श्री परमदेव । जलं ॥ अमलद्युति सीत लचंदनं तपतदाहअथाहरिकंदनं । करतश्रीजिनदेवसुसं वनं । हरततापकराडुषमोहनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमदेव ० चंद नं ॥ अजल [illegible] अषं तसुंदरचंदनं श्रीभगवंतकूपूजनिरंतरा मधुरवैनउचारसुगावेनं । अक्षतहे हिकौनैगुणपावनं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ अक्षतं ॥ सुमनचारुसुवासस वासतं । अरचश्रीअरहंतहतारतं । मदनवांनसुनांनवला धरं । सुथिरहोयसुसीलसुषाकरं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं ॥ अचल अन्नघना घृतमंडितं । सुनमनिष्टकधानयपंडितं । धरत श्रीजिनराजविराजतं । सवक्षुधादिकदोषनुजाजितं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री ॥ नैवेद्यं ॥ तमविनासनदीपप्रकासतं । चिंतजे जोतिमहाछविनासतं । चरचश्रीभगवानवियानसो । लहत ज्ञानप्रधांनजुजांनसो ॥ ६ ॥ दीप ॥ दहीसुगंधसधूमसुधूम तं । दसदिसाविसतारसुघूमतं । चरणश्रीपतिधूपछिपा इयें । करमअष्टसुकाऊनराइये ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं । धूपं । फलअने कप्रकारसजोगता । नगतमावविशेषपयोगता । महतत षेवढाइचढाइये । सुफलमोषअषेफलपाइये ॥ ॐ ह्रीं श्री फलं । अरघअष्टवियारकरौ नरौ । दरवभावसमेतसदा रो । पढकुर्घानतिछंदसुसुंदरी । जगतपारउतरकोतरी ॥ ॐ ह्रीं श्री परमदेव अर्घ्यं ॥ इति जिनपूजा अष्टकं ॥ अथ जयमालकी आरती ॥ दोहा ॥ रुषभवीरसुथिरचित्तरी सनायसिरनाय । विघनहरनमंगलकरन आरति आ

रतिजाय॥१॥ चोपई॥ जयजय आदि आदि अवतारं जय
जय अजित अजित जितमारं॥ जयजय संभव संभव हरणं
अभिनंदन नंदन धनधरनं॥ जयजय सुमति सुमति दाय
णं॥ जयजय पदम पदम नविनानं॥ स्वामि सुपास सुपास
विनासं॥ चंदाप्रभु चंदागनदासं॥ जयजय सुविध सुविध
निधूरचनं॥ जयजय सीतल सीतल चनं॥ जयजय श्रीयांस
अंसमोगोहं॥ वासपूज्य सुरपूज्य अरोहं॥ जयजय विमल वि
मल जसवानं॥ जयजय अनंत अनंत गुणथानं॥ जयजय ध
र्म सुधर्म निगामनं॥ जयजय सांति सांति पदपगनं॥ कुंथु कुं
थु जिय आदि दयालं॥ जयजय अरअरि हरि वरचालं॥
जयजय मल्लि महन मद घातं मुनि सुव्रत मुनि सुव दानं
जयजय णमि णमि सुर नर महितं जयजय णेमि णेमि जि
य कहतं॥ जयजय पारस पारस नामं॥ वीर वीर विध हत हि
सं धामं॥ छत्ता॥ ध्यान ते जिनस्वामी॥ अंतरजामी॥ सुरधि विर
मी॥ जो ध्यांमी सो होत अकामी॥ जगमें नामी संपत यांम
सिव अम॥ इति श्री देवपूजा जयमाल संपूर्णं॥ अथ देवपू
जा अष्टक लिष्यते॥ जलचंदन अक्षत फूल जु चरु दी
प धूप फल लाय॥ मन वच काय करौ जिन पूजा सुरग मुक
त सुख दाय॥ कै जिन पद ध्याय लै॥ जिन जिन ध्याये तिन सु
ख पाए॥ अंतर की लौ धाय॥ ना ति विनासं सार जल घि तै
को नव तारे पाय॥ कै जिन पद ध्याय लै॥ कंचन थारी मन मैं
झारी गंगा जल निरमांन॥ मन वच काय करौ जिन पूजा
सुत्रषा रोग की हानि॥ कै जिन पद ध्याय लै॥ चंदनं॥ दीरघ
अमल सुगंध अक्षत सुन तंडुल चंद समान॥ मन वच का
य करौ जिन पूजा है हि अषित गुन थान॥ कै जिन पद ध्या
य लै॥ नैध्यौ॥ अक्षतं॥ कवल केवकुं जो करनौ कंद कं
ल पन रु फूल॥ मन वच काय करौ जिन पूजा मिटै काम क
मूल॥ कै जिन पद ध्याय लै॥ पुष्पं॥ मरी म वरी मग वम गल
मोदक मो तीचूर॥ मन वच काय करौ जिन पूजा हु धारे

गकरिहरकेजिनपदध्यायलैं।नैवेद्यं।६।दीपप्रदीपसमीपध
रनकेजगमगजगमगहोता।मनवचकायकरौजिनपूजाकेव
लज्ञांनउदोता।केजिनपदध्यायलैं।७।ॐह्रींदीपं।।कृष्णागुरुपाव
कमैंषेवोधूपधूपमहिकाय।मनवचकायकरौजिनपूजाकर्मका
वजरिजाई।केजिनपदध्यायलैं।८।ॐह्रींधूपं।।। सीताफलसं
गतरेसदाफलश्रीफलसरदेसेव।मनवचकायकरौजिनपूजा
होइमुकतफलएव।।९।।ॐह्रीं।।फलं।।जलफलअर्घकरौथि
रतासौंनाचौगायवजाइ।मनवचकायकरौजिनपूजाज्ञानत
धर्मउपाय।केजिनपदध्यायलैं।।१०।।इतिश्रीअर्घ।अष्टकसंपू
।।अथआरतीजयमाल।।चौवीसौजिनराजपदवंदौमनवचका
य।कहौनंदचौवीसलौंवदैमपानअधिकाय।२।आदिनाथपर
मश्रुरएकसरूपहै।अजितदेवदोदरसनज्ञानअनूपहै।संभव
तीनदरवगुनपरजैजांन।।अभिनंदनचारौक्रोधादिकहांनए।२
सुमतिपंचपरवर्तनिसागरतारहै।पदमछकायकेजीवपालन
हारहैं।।३।।सुपाससवामीसातमहानयनासए।चंद्रप्रभूआठेगु
नमंडितभासए।४।पुहपदंतनववाडनिकेरषवारहै।सीतलदस
धाधर्मरतनभंडारहै।।५।।श्रेयंसाग्यारप्रतिमाकथनसुनाइया।वास
पूज्यवारहविधितपसमुझाइया।।६।।विमलतेरैचारित्रनैंपानवे
लामिया।।अनंतचतुदहमारगनापरगासिया।।७।।धरमपंद्रप
ऽहविधसर्ववषांनए।।सांतिनाथसोलहकारनपरवांनए।।८।।कुं
थुनाथसतरहविधसंजमपालए।।अरहवरअष्टादसहूवनटाल
ए।।मल्लउनवलाए।जीवसमासवनीसहै।।मुनिसुव्रतकहिपुद्गल
केगुनवीसहै।।१०।।नमिजिनश्रावककेगुनइकईसौकहे।नेमिना
थवावीसपरीसहसवसहे।।पारसनाथवषांनीतेईसवरगनां।।
माहावीरचौवीससंगतजिसुषसनां।।११।।घत्ता।।दोहा।।महापुरष
कीआरती।।महापुरुषकीवांनि।।पढनैसुनतेसुषलहैसोतीरांम
सुजांन।।१२।।इतिसंपूर्णतीर्थंकरकीआरतीअष्टक।। छ:।: ।।

पूजा
३६

॥अथ पूजा अष्टक लिख्यते॥ दोहा॥ प्रभु तुम राजा जगत के हमैं दे
हु दुख मोह॥ करूं जथारथ वीनती हम पै करुना होय॥१॥ ॐ ह्रीं अ
त्रावतरा०॥ अत्र तिष्ठ०॥ अत्र मम:॥१ छंद त्रिभंगी॥ बहु त्रिषा
सतायो अति दुख पायो तुम ढिग आयो जल लायो॥ उत्तम गंगाज
ल सुचि अति सीतल प्रासुक निरमल गुन गायो॥ प्रभु अंतरजाम
त्रिभुवननामी सब के स्वामी नीत करौ॥ यह अरज सुनी जे दीलन
की जे न्याव करी जे दया धरौ॥२॥ ॐ ह्रीं॥ जलं॥ अघ तपत निरंतर
अगनि पटंतर अगनि पटंतर मो उर अंतर खेद करौ॥ लै बावन चंद
न दाह निकंदन तुम पद वंदन हरष धरौ॥ प्रभु अंतरजामी त्रिभुवन
नामी सब के स्वामी नीत करौ॥ यह अरज सुनी जे दीलन की जे न्या
व करी जे दया धरौ॥३॥ ॐ ह्रीं॥ चंदनं॥ औगुन दुखदाता कह्यो न जा
ता मोहि असाता बहुत करै॥ तंदुल गुन मंडित अमल अखंडित
त धरौ॥ प्रभु अंतरजामी त्रिभुवननामी सब के स्वामी नीत करौ॥ यह
अरज सुनी जे दीलन की जे न्याव करी जे दया धरौ॥४॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥
सुर नर पसु को दल काम महाबल बात कहत मोहि लिया॥ ताके॥
सर गाक फूल चढाकं मगति बढाकं षोल हिया॥ प्रभु अंतरजामी
सब के स्वामी नीत करौ॥ यह अरज सुनी जे दीलन की जे न्याव क
री जे दया धरौ॥५॥ ॐ ह्रीं॥ पुष्पं॥ सब दोषनि मांही जा सम नांही
भूष सदा ही मो लागे॥ सद घेवर बावर लाडू बहु धरि थाल कनक भ
र तुम आगे॥ प्रभु अंतरजामी सब के स्वामी नीत धरौ॥ यह अरज सुन
जे दील की जे न्याव करी जे दया धरौ॥६॥ ॐ ह्रीं॥ नैवेद्यं॥ अज्ञा
न महातम छायर ह्यौ मम पान तदक्यो हम दुख पावै॥ तुम मेटन हा
री तेज अपारा दीप सभा रात सगावै॥ प्रभु अंतरजामी त्रिभुव
ननामी सब के स्वामी नीत करौ॥ यह अरज सुनी जे दीलन की
जे न्याव करी जे दया धरौ॥७॥ ॐ ह्रीं॥ दीपं॥ एक कर्म म
हाबल नृप तर छाजन सिव मारग न नयावत है॥ कृष्णागुरु धूपं
अमल अनूपं न सखद रूपं धावत है॥ प्रभु अंतरजामी त्रिभुवन॥

नामीसवकेस्वामीनीतकरौ॥ यहअरजसुनीजेंढीलनकीजेंम्हा
वकरीजेंदयाधरौ॥ ठौ॥ सवतेंजोरावरअंतरायअरिसुफलवि
घनकरिफारितहै॥ फलपुंजविवधनरतेंनमनोहरश्रीजिनपद
तरधारितहै॥ ध्रुवअंतरजामीत्रिभुवननांमीसवकेस्वांमीनीत
करौ॥ यहअरजसुनीजेंढीलनकीजेंम्हावकरीजेंदयाधरौ॥ ऐं
ऐंश्री॥ ध्रुवं॥ आगेंडुमदांनीआवनिसांनीतुमढिगआनी
वारनहै॥ दीननमिसुतारनअमअधारनयोंनततारनका
रनहै॥ ध्रुवअंतरजामीत्रिभुवननांमीसवकेस्वंमीनीतकरौ॥ य
हअरजसुनीजेंढीलनकीजेंम्हावकरीजेंदयाधरौ॥ १५॥ ऐंश्री
श्रीअंर्घ॥ अथतीर्थंकरकीजयमालछीयालीसतोलनकीलि
ष्यते॥ दोहा॥ गुनअनंतकहिकोसकैछीयालीसजिनराय॥ प्र
गटसुगुनगनतीकरूंतुमहीहोजुसहाय॥ पद्धडि॥ एकज्ञानके
वलजिनस्वामी॥ दोआगमअध्यातमनांमी॥ तीनकालविधि
परगटजानी॥ च्यारअनंतचतुष्टैग्यांनी॥ १॥ पंचपरावरतनिपर
कासी॥ छहोंदर्वगुनपरजैंनासी॥ सातअंगवांनीपरकासक॥
आठोंकर्ममहारिपुनासक॥ २॥ नवतततिकेभाषनहारे॥ दा
सलछनसोंभविजनतारे॥ ग्यारेप्रतिमांकेउपदेसी॥ वारैसभा
सुषीअकलेसी॥ ३॥ तेरैचिधचारतकेदाता॥ चौदैमारगनाके
ग्याता॥ पंद्रैंदप्रमादनिवारी॥ सोलैभावनिफलअविकारी
॥ ५॥ तारेसत्तैअंकतरतनुव॥ वारैथांनदानदाताउंवसावउ
नीसनकेहेंप्रथमगुन॥ वीसअंकगनधरजीकीधुन॥ ६॥ इक
ईसमरववघातविधजानैं॥ वाईसवंधननवमगुनथानैं॥ तेइ
सतिधअफरतननरेश्वर॥ सोपूजैचौवीसजिनेस्वर॥ ७॥ प
चीसकषायनासकरीहै॥ देसघातछवीसहरीहै॥ ततद
रवसताईसदेषे॥ मतिविग्यांनअठाईसपेषै॥ ८॥ उनतीस
अंकमनुषसवजांने॥ तीनकुलाचलसरववषांने॥ इकतिस
सपटलसुधर्मनिहारे॥ वतीसदोषसमाइकटारे॥ ऐंतेतसमागरसु

करआए॥चौतीसअनेदअलछिवताए॥पैंतिसअछरजयसुषदाईछ
तीसकारनरीतमिटाई॥२७॥सैंतिसमगाकहिगणौरगुनमैं॥अरति
सपदलहिनरकअपुनमैं॥उनतालीसउदीरनतेरमा॥चालिस
नचनइंद्रपूजेनमा॥२८॥इकतालीसअनेदआराधना॥देवियाली॥
सतीर्थंकरजाना॥तेतालीसबंधपातानहि॥वारचवालिसनर
चौथेमहि॥२९॥पैंतालीसपल्सकेअछर॥छियालीसविनदोष
मुनीसर॥नरकउदेनछियालीसमुनथुन॥प्रकृतिछियालीस॥
नामदसगुना॥अछियालीसघनराजसात॥गुरअकछियाली
समरसोकहिकुवा॥भेदछियालीसअंतरतपवर॥छियालीस
पूरनगुनजिनवर॥३०॥छंदघत्ता॥मिथ्यातपतनिवारनचंद
समानहो॥आपानतिमरवारनकारननानहो॥कालकषा
यमिटावनमेघमुनीसहो॥ध्यानतसमकरतनत्रैगुनईसहो
३१॥इतिश्रीछीयालीसबोलआरतीसंपूर्ण॥अथवीसतीर्थं
करकीपूजाआरतीलिख्यते॥दोहा॥दीपअढाईमेरपअवती
र्थंकरवीस॥तिनसवकीपूजाकरौमनवचकरधरसीस॥१॥छंद॥
ॐह्रीवीसतीर्थंकरअत्रावतरा॰अत्रतिष्ठः॰अत्रममसं॰छंद
इंद्रफनिंदनरिंद्रवंद्यनिरमलपदधारी॥सोभनीकसंसारसारगुन
हैअविकारी॥छीरोदधिसमनीरसोंहोपूजैंत्रिषानिवार॥सीम
धरजिनआदिदेहोवीसविदेहमकार॥ॐह्रीश्रीवीसविदेहमें॥
तीर्थंकरविराजमानेभ्योजलं॥१॥तीनलोककेजीवपापआ
तापसताए॥तिनकौंसाताहातासीलवचनवताए॥वावनच
दनसोजजैहोभ्रमतपतनिरवार॥सीमंधरजिनआदिदेहो
वीसविदेहमकारश्रीजिनराजहो॥२॥ॐह्रींश्रीचंदनंयहसंसा
रअपारमहासागरजिनस्वामी॥तातैंतारेवडीभगतिनोकाजग
नामी॥तंदुलअमलसुगंधसोंहोपूजौतुम[illegible]गुनकार॥सीमंध
रजिनआदिदेहोवीसविदेहमभारश्रीजिनराजहो॥ॐह्रींश्री
वीदे॰अक्षतान॥विकसरोजविकास॥नीदनमहरगविसेंहो
जतिआवकआचारकथनकौंतुमीवडेहोफूलसुवासअने

अनेकसौहै।पूजौमदनप्रहार॥सीमंधरजिनआदिदै हैवीस
विदेहमझारश्रीजिनराजहैं॥५॥कामनागविषधामनास पुष्पं
कौगरुडकहैहैं॥छुधामहादोज्वालतासकौमेघलहहै॥नेव
जवउद्दृष्टतमिष्टसौहै।पूजौत्रूषविकार॥सीमंधरजिनआ०॥
ॐह्रीं श्री वी० नेवेद्यं॥नहमहोननदेहसर्वजनमांहिनसौहै
मोहमहातमघोरनासपरकासकसौहै॥पूजौदीपप्रकास
सौहै ग्यानजोतकरतार॥सीमंधरजिनआदिदै हैवीसविदेह
मझार श्रीजिनराजहैं॥७॥ॐह्रीं॥दीपं॥कर्मआठसबकाठअ
र विस्तारनिहारा॥ध्यानअगनिकरिप्रगटसर्वकीनौतिरवार
धूपअनूपमषेवतैहौ दुषजलनिरधार॥सीमंधरजिनआदि
०८॥ॐह्रीं॥धूपं॥ मिथ्यावादीदुष्टलोभहंकारनरेहै॥सब
कौछिनवेजीतजैनकेमेरघरेहै॥फलअतिउत्तमसोजजोहै
वंछतफलदातार॥सीमंधरजिनआदिहै वीसविदेहमझार
श्रीजिनराजहैं॥९॥फलं ॐह्रीं वि०॥जलफलआठोदरवअ
रघकरगीतधरीहै।गनधरइंद्रनहूनैथुतिपूरीनकरीहै।
द्यानतसेवकजानकैहै जगतैलेउनिकार।सीमंधरजिनआ
दिदैहैवीसविदेहमझारश्रीजिनराजहैं॥१०॥इतिअर्घं
अथजयमाल आरती०॥सोरठा॥ग्यानसुधाकरचंदभविक
षेतहितमेघहै॥भ्रमतमभानअमंद सीमंदरवीसौनमौ॥१॥
॥छंदचौपई॥सीमंधरसीमंधरस्वामी॥जुगमंधरजुगमंधरनं
मी॥सुबाहुबाहुजिनजगजतारे॥वेउबाहुबलकरमविदारे॥२॥
सुजातसुजातकेवलग्यानं॥स्वयंप्रभप्रभुस्वयंप्रधानं॥रिषभान
निरषनांनतिदोषं॥अनंतवीरजवीरजकोषं॥३॥सोरीप्रभूसौर
गुनमालं॥विसालसुगुनविसालदयालं॥वज्रंधारभौगिरव
ज्रहै।चंद्राननचंद्राननिवरहै॥४॥भद्रबाहुभद्रनिकेकरता।
श्रीभुजंगभुजंगमहरता॥ईश्वरसबकेईश्वरछाजै॥नेमप्रभूज
मनेमविराजै॥५॥वीरसेनवीरंसेनजानै॥महाभद्रमहाभद्रवषा
नै॥नमौजसौधरजसधरकारी॥नमोअजितवीरजबलधारी॥६

धनुषपांचसैकायविराजै आवकोफपूरवसवछाजै॥समो
सरनसोभ्नतजिनराज नौजलतारनतरनजिहाज॥७॥स
मकरततत्रैनिधदानी॥लोकालोकप्रकासकरणानी॥सतं
द्रनिकरिवंदितसोहै॥सुरनरपसुसवकेमनमोहै॥८॥
दोहा॥तुमकौंपूजावंदनाकरैधन्यनरसोय॥द्यानतसर
धामनधरैसोभीधरमीहोय॥९॥अथसिद्धौकेअष्टकलि
ष्यते॥नरयअघोरकारक्षुतविंदीसहनिहकारसिद्धच
क्रपूजौसदा॥अरिकरिहरहरिसार॥१॥आजहमारेआन
द॥ॐह्रींनमोसिद्धाणं॥सिद्धपरमेष्टीनमअत्रावतराण
अत्रतिष्ठ॥अत्रममसंनि॰॥आजहमारेआनंदहै॥॥अ
चली॥मोहमहारिपुनासकैपायौसुषसमकचार यातै
पूजौंनिरसौं॥मिथ्यातदृषानिवार॥आजहमारेआनंदहै
॥२॥ॐह्रीं॥जलं॥ ग्यानावरनीजीतकैजविष्णाद्यौकेवल
ग्यान॥वंदनसौंपूजाकरै अग्यानतपतिहीहानि॥आ
जहमारेआनंदहै॥३॥ ॐह्रींश्री॥चंदनं॥दर्शनआवरणी
हतैंनये॥दरस अनंतअपार॥पूजौअनंतसायकै
औगुनतमहरगुनकार॥४॥आजहमारेआनंदहै॥ॐह्रीं
॥अक्षतं॥अंतरायकौघातकैउपज्यौवलअनंतरास॥पू
लनिसौंपूजौसदाप्रभुकामकौजोरविनास॥५॥आजह॰
॥ॐह्रीं॥पुष्पं॥कर्मवेदनीमिटगयौनिरवाधावाधाहीन
अल्पछहैसमसौंपूजौंमेरोरोगछुधाकरिछीन॥६॥आ
जहमारेआनंदहै॥ॐह्रींश्रीनैवेद्यं॥आयुकरमकौका
टकै [illegible] योअवगाहअचलपरकास॥पूजौदीपचढा
यकैकरनरमतिमरकौनास॥७॥आजहमारेआनंदहै
॥नामप्रकृतिसवचूरकै नयेअमलअमूरतकदेव॥
धूपसुगंधीषेयकैसवकर्मजलेस्वयमेव॥८॥आजह
मारेआनंदहै॥ॐह्रींश्रीधूपं॥गोतकर्मगिरतोरकै
हुएअगुरुअलघुकनफार॥फलसौंपूजौभावसौ

लकं मनवंछितफलसार॥१०॥ आजहमारे आनंदहै॥ फले॥
हरषकरौ उछाहसौं नमौं आवौ आगनवाय॥ आनंद दौलत
गमकौं॥ प्रभु नौ नौ हो इस हाय॥११॥ आजहमारे आनंदहै॥ आ
विज्ञानघरन हिदैषैं॥ हमदेषैसरधावंत॥ जानेमानेंअनुत्त
वे तुमरा चौपासमहंत॥ १२॥ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं सिद्धपरमे
ष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ अर्घ॥ इति अष्टक॥ अथ आरती
जयमाल॥ दोहा॥ आठकर्मदिढबंधसौं नषसिषबंधोजि
हौंन॥ बंधरहितसुषगुनसहित नमौ सिद्धनमावंन॥१॥ सुषसे
म्यक दर्शनग्यानधर बलनंगुरुनलघुवीधहरं॥ अवगा
ह अमूरतिनायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ २॥ अ
मलं अचलं अमनं अतनं अवचं अकलं॥ अजरं अमरं जग
ग्पायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ३॥ निरमोगसु
जोगअरोगपरं॥ निरजोगअसोगविजोगहरं॥ अरसेसुरसे
दुषघायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ४॥ सवकर्मक
लंकअटंकअजं॥ नरनाथसुरेसमहजजं॥ मुनिध्यावनसे
ज्जनग्पायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ५॥ अविरु
द्धविसुद्धप्रबुद्धमयं॥ सवजानतलोकअलोकचयं॥ परमेंध
रमें त्रिवलायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ६॥ निरवंध
अबंध अगंधपरं॥ निरनेनिरषैनिरनेअघरं॥ निरूपअनूपअ
कायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ७॥ निरभेदअषेदअ
छेदलहा॥ निरदुंदसुछंद अछंद महा॥ अतुधा अत्रिघाअ
कचायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ८॥ असमंअयसं
अतमंलहियं॥ अगमं सुगमं सुरवयं गहियं॥ जमरायकीवे
टवचायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ९॥ निरधामसु
धामअकामजुतं॥ अविहारअहारनिहारचुतं॥ नवनासन
ती छनसायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ १०॥ निरवर्न
अकर्नअसर्ननं॥ आतंअमतं अव्रतं अरतं॥ अतितिन्हिम
नावसुभायक है॥ सव सिद्धनमो सुषदायक है॥ ११॥ निरंग

असंगअनंगदा॥ अतपंअजपंअयपंसुषदा॥ अमदंअ
गदंगुनज्ञायकहै॥ सर्वसिद्धनमोसुषदायक है॥ अविषा
दअनादअवादवरं॥ नगचंतअनंतमहंततरं॥ तुमध्येय
महारिषध्यायकहै॥ सवसिद्धनमोसुषदायकहै॥ १३॥ नि
रनेहअदेह अगेहसुषी॥ निरमोह अकोह अलोहलुषी॥
तिहुंलोकके नायकपापकहै॥ सवसिद्धनमोसुषदायहै
१४॥ पंदैसर्पनागमहानिवसैनव॥ लाषकेनागजघन्य
लसै॥ तनवातकेअंतसहायकहै॥ सवसिद्धनमोसुषदा
यकहै॥ १५॥ गीताछंद॥ जोपूजैगावैथुतिवदावैनवैनवै
ध्यावै प्रीतसै॥ षुस्यालचंद कहैकहु जैजिपजिनैकारीत
सै॥ जिनांमअष्टरजपैहरषैधन्यत्तेनरनारिहै॥ भूनयलतला
रनदुषनिवारनजगतिकौंनिसतारहै॥ १६॥ इतिआरतीस
माप्ता:॥ अथगुरुकेअष्टक॥ दोहा॥ चहुंगतिदुषसाग
रविषैतारनतरनजिहाज॥ रत्नत्रयनिरधनगननतनयत्लम
हमुनिराज॥ स्थापनं। आ। ना। अत्र। ठ। अत्रैमम॥ गीताछंद॥ सुचनीरनिरमलछीरदधिसमसु
स्वरनछडाईया॥ तिहुंधारतिहुंगददारस्वामीअतिउछाह
वदाईया॥ जैजैगतनवैरागधारनिहारसिवतपतपतुहै
तिहुंजगतनाथअराधसाधसुपूजनितगुनजपतहै॥ १॥
करपूरचंदनसलिलसौघसमुगुरुपदपूजाकरौ॥ सवपापतापमि
टावस्वामीथरमसीतलविसतरौ॥ जैजैगतनवैरागधारनिहार
सिवतपतपतहै॥ २॥ (चंदनं) सुनफूलरासउकासपरमलसुगुरुपाय
निपरतहै॥ निरवारमारउपाधस्वामीसीलदिढउरधरतहै॥
जैगतनवैरागधारनिहारसिवतपतपतहै॥ ३॥ पकवानमि
ष्टसलौनसुंदरसुगुरुपावनप्रीतसौ॥ करछुधारोगविनास
स्वामीसुथिरकीजेरीतसौ॥ जैजैगतवैरागधारनिहारसिवत
पतपतहै॥ ४॥ तिहुंजगतनाथ॥ ॐ ह्रीं पंचप्रकारकाश्रीमहामुने
श्रीगुरुभ्योनम:॥ नैवेद्यं॥ ५॥ दीपकउद्योतसजोतजगमगासु
गुरअहनजौसदा॥ तमनासज्ञानउजासस्वामीमोहिमोह

१ जिनवाकमेदृढवासवज्जलसुगुरुपादधरतहै गुनकाअंगुनहारस्वामीवंदनाहमकरतहै जैजैगतनवैरागधार
निहारसिवतपतपतहै॰ २ ॐ ह्रीं श्री... अक्षतं ५८

नहोकदा॥ नौनौगत वैरागधारनिहारसिवतपतपतहै॥७॥ ॐह्रीं
पंचप्रकारश्रीगुरुमहामुनिमोहायकारदीपं॥ वकुश्रगरश्रादसुगं
धषेकेसुगुरुपादपदमधरे। दुषपुंजकाटजलावस्वामीगुनश्र
धोचितमैंधरे॥ नौनौगतवैरागधारनिहारसिवतपतपतहै॥७
ॐह्रीं॥फ॥ नरनालपरवादामवऊविधसुगुरुक्रमश्रागेधरौ॥
मंगलमहाफलकरौस्वामीजोरकरविनतीकरौ॥ नौनौगतवै
रागपधारिनिहारसिवतपतपतहै॥ ७ए॥ ॐह्रीं॥फलं॥ जलग
धश्रदतपूलनेवजलदीपधूपफलावली॥ द्यानतसुगुरपद
देहस्वामीहमहमेनवश्रावली॥ २०॥ ॐह्रीं महामुनिश्रीगुरुचं
पुकारकेभ्योश्रर्घं॥ श्रयश्रारतीजयमाल॥ दोहा॥ कनकका
मनीविषेवसदोषसवसंसार॥ त्यागीवैरागीमहासाधुसुगुनभं
डार॥१॥ तीनघाटिनवकोरसववंदौसीसनवाय॥ मनतीश्रगा
सलोकहै॥ श्ररतीगाय॥२॥ एकदयापालैमुनराजा रागदोषदे
हरनपरं॥ तीनौलोकप्रगटसववदेषै॥ चारौश्रारायनिनिकरैप
पंचमहाव्रतदुषधरधारे॥ छहौदरवजानैसुहितं॥ सातभंगव
नीमनलावै॥ पावैश्रावरिहतचितेनवोपदारथविधसौभाषै
वंधदसोचूरनसरनं॥ ग्यारैसंकरजानैमानै॥ उत्तमवारैव्रतध
रनं॥ तेरैभेदकाठियाचूरे॥ चौदैगुनथानकलषियं॥ महाप्रमाद
पंचदसनासे॥ सोलहकषायसवैनषियं॥ वंधादिकसत्रैसत
लषवारैजन्मनमरनमुनं॥ एकसमैउनईसपरीसेवीसपरूप
निमैंनिपुनंजावउदीकइकीसोजानें॥ वाईसश्रनषत्यागकरं॥
श्रहिमंदिरतेईसोवदै॥ इंद्रसुरनचौसवरं॥ पचीसौभावनानि
तभावै॥ छवीसौश्रंगउपंगपढै॥ सताइसौविषयविनासै श्रव
ईसौगुनसुवढै॥ सीतसमैसरचौपटवासी॥ ग्रीषमगिरसिरजोग
धरै॥ वरषावृक्षतलैथिरगढै॥ श्राठकरमसिद्धवरै॥ ९॥ दोहा॥ क
हौकहालैभेदमैंवुधथोरीगुनभूर॥ हेमराजसेवकहियेभगतभरे
भरपूर॥ १०॥ इतिश्रीमुनिराजश्रीगुरुपूजाश्रारतीजयमाला
संपूर्णः॥ पुलाक १॥ वकुस २॥ कुसील ३॥ निरग्रंथ ४॥ सनात १

॥अथ जिनवाणीपुजाअष्टक॥ दोहा॥ जनमजरामृतछैकरै हरैकु
नैजडरीत भवसागरतैलेतिरैपूजैजिनवचप्रीत॥१॥ ॐ ह्रीं जिन
वाणीजिनअत्रावतर० अत्रति० अत्रमम०॥ त्रिभंगीछंद॥ छी
रोदधिगंगाविमलतरंगासललअभंगासुषसंगा॥ भरकंचनझा
रीधारनिकारीत्रिषानिवारीहितचंगा॥ तीर्थंकरकीधुनगण
धरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई॥ सोजिनवरवानीसवसुषदानी
त्रिभुवनमानीपूजनई॥१॥ जल॥ करपूरमंगायाचंदनआयाकेसरला
यारंगभरी॥ सारदपदवंदौमनअभिनंदौपापनिकंदंदाहहरी
तीर्थंकरकीधुनिगणधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई०॥२॥ चं०
दनं॥ सुषदासकमोदंधारजमोदंअतअनमोदंचंदसमं॥ बहु
लगतवदाईकीरतगाईहोतसहाईमातममं॥ तीर्थंकरकी
धुनगणधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई०॥३॥ अक्षतं॥
बहुफुलसुवासंविमलप्रकासंआणंदरासंलायधरे॥ मेक
मभिटायोसीलवढायोसुषउपजायोदोषहरे॥ तीर्थंकरकी
धुनिगणधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई०॥४॥ पकवानवना
या॥ बहुघतल्यायासवविधभायामिष्टमहा॥ पूजूंथूतगा
ऊंप्रीतवढाऊंक्षुधानसाऊंहरषलहा॥ तीर्थंकरकीधुनिग
णधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई॥५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥ करदी
पकजोतंतमछेदोतंजोतनद्योतंतुमहेचढै॥ तुमहोपरकास
कभरमविनासकहमघटभासकग्यानवढै॥ तीर्थंकरकी
धुनिगणधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई०॥६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥
सुभगंधदसोकरपावकमेंधरधूपमनोहरषेवतहो॥ सवपा
पजलावैपुन्यकमावैदासकहावैसेवतहो॥ तीर्थंकरकीधु
निगणधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई०॥७॥ धूपं॥ वादाम
छुवारीलौंगसुपारीश्रीफलभारीलावतहो॥ मनवंछित
दातामेटअसातातुमगुनमाताध्यावतहो॥ तीर्थंकरकीधु
निगणधरनेसुणअंगरचेचुनगणनमई०॥८॥ फलं॥ नैनन
सुषकारीमृदुगुनधारीउज्जलभारीमोलधरे॥ सुभगंधसम्हारी

वसुनन्निहारा तुम तरधारा पाप न करै॥ तीर्थंकर की फल नम गणधर
रनै सुण अंगारचे चुनग पानमई॥ १०॥ २०॥ जल चंदन अक्षत फूल।
चरो चतदीप धूप अतिफल लावै॥ पूजै को धानल जो तुम जा
नतसो नरध्यानत सुष पावै॥ तीर्थंकर की फल नम गणधर रनै सुण
अंगार चे चुनग पान मई॥ ०॥ २१॥ अर्घं॥ इति जिनवानी अष्टक सं
पूर्ण॥ अथ आरति जयमाल शास्त्र जी की लिख्यते॥ सोरठा
तैका रफनि सार॥ द्वादशांग वानी विमल॥ नमो भगवत उरधार
पाप न करै जड नार हे॥ १॥ छंद चौपई॥ पहला आचारांग वषानं॥ प
द अठार सहस्र प्रवानं॥ दूजे सूत्रकृतं अभिलाषं॥ पद छत्तीस
सहस गुरभाषं॥ २॥ तीजा ठाणा अंग सुजानं॥ सहस बियालीस
पद सरधानं॥ चौथा समवायंग निहारं॥ चौसठ सहस लष एक
धारं॥ ३॥ पंचम व्याख्या प्रगपत दरसं॥ दोयलाष अठाईस सहसं
छठा ग्यात्रकथा विसतारं॥ पंच लाष छपन हजारं॥ ४॥ सात
म उपासकाध्ययनंगं॥ सत्तर सहस ग्यार लष भंगं॥ अष्टम अं
तकृतं दस ईसं॥ आठ ईस सहस लाष तेईसं॥ ५॥ नवम अनुत्तर
दसम सुविसालं॥ लाष बानवे सहस चवालं॥ दसम प्रश्नव्याक
रन विचारं॥ लाष त्रानवे सोलह जारं॥ ६॥ ग्यारम विपाक सूत्र
सू भाषं॥ एक कोड चौरासी लाषं॥ चारि किरोर पंदरै लाष दोह
जार सब पद गुर साषं॥ ७॥ द्वादशा दिष्टवाद पन भेदं॥ इकसौ अंठ कों
र पद वेदं॥ अडसठ लाष सहस छपन हैं॥ सहत पंच पद मिथ्या
हन हैं॥ ८॥ इकसो बारै कोरि वषानो॥ लाष तिरासी ऊपर जानो॥
ठावन सहस पंच अधिकानो॥ द्वादस अंग सरब पद मानो॥ ९॥
इक्यावन कोर आठ ही लाषं॥ सहस चौरासी छसै भाषं॥ साढ़ई
की सम सिलोक बताए॥ एक एक पद के ए गाए॥ १०॥ दोहा॥ जा व
नी के ग्यान तेस झै लोक अलोक॥ ग्यान त जगजैवंत को सदा
देत हों धोक॥ ११॥ इति शास्त्र जी की आरती जयमाल संपूर्ण
॥ अथ पंचमेरुकी आरती पूजा लिख्यते॥ गीता छंद॥
तीर्थंकरों के न्हौन जलतें भए तीरथ सर्वदा॥ तातें प्रदछन देत

सुरगनपंचमेरनिकी सदा॥ दोऊ अढाईदीपमैं॥ सवगनतमूल विराजही॥ पूजोअसीजिनधामप्रतिमाहोहिसुषदुषनाशही॥ ॐह्रींश्रीपंचमेरअस्सीजिनचैत्यालयजिनेंद्रप्रतिमा अत्र अवतरा०॥ अत्रतीष्ठ: ॥ अत्रमम०॥ होप ६०॥ सीतलमिष्टसुवासमिलाय॥ जलसोपूजोश्रीजिनराय महासुषदहै॥ देवैनाथमहासुषदहै॥ पांचोमेरअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमाजकोकरोप्रनाम॥ महासुष है॥ ॐह्रींपंचमेरअस्सीजिनचैत्यालय॥ अर्घ॥ जलकेसरकरपूरमिलाय॥ चंदनसोपूजो॥ श्रीजिनराय॥ महासुषहैदेषैनाथमहासुषहै॥ पांचो०॥ सवप्र०॥ ॐह्रींपंचमे०॥ चंदनं॥ अमलअषंडसुगंधसुहाय॥ अक्षतपूजोश्रीजिनराय॥ महासुषहै देषैनाथपरमसुषहै॥ पांचो०॥ सव०॥ ॐह्रीं॥ अक्षतं॥ वरनअनेकरहेमहिकाय॥ फूलनिसोपूजोश्रीजिनराय॥ महासुषहै देषैनाथपरमसुषदहै॥ पांचो०॥ सवप्रति०॥ ॐह्रींपंच०॥ पुष्पं॥ मनवांछितवहुतुरतबनाय॥ चरुसोपूजोश्रीजिनराय॥ महासुषहै॥ देषैनाथपरमसुषहै॥ पांचो०॥ सव०॥ ॐह्रीं॥ नैवेद्यं॥ तमहरउज्जलज्योतजगाय॥ दीपकपूजोश्रीजिनराय॥ महासुषहै०॥ ॐह्रींपंचमेर०॥ दीपं॥ षेकअगारअमलअधिकाय॥ धूपसोपूजोश्रीजिनराय॥ महासुषहै॥ देषै नाथपरमसुषहै॥ पांचोमेर० सव०॥ ॐह्रींपंच०॥ धूपं॥ सरससुवरनसुगंधसुनाय॥ फलसोपूजोश्रीजिनराय॥ महासुषहै॥ देषैनाथपरमसुषहै॥ पांचो०॥ सव०॥ ॐह्रींपंचमेर॥ फलं॥ आठदरवमैअरघवनाय॥ द्यानतपूजोश्रीजिनराय महासुषहै॥ देषैनाथपरमसुषहै॥ पांचोमेरअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमाजीसोकरोप्रणाम महासुषहै॥ देषैनाथपरमसुषहै॥ ॐह्रींपंचमेरअस्सीजिनचैत्यालेजिनेंद्रेभ्यो०॥ अर्घं॥ जयमल॥ सोरठा प्रथमसुदरसनस्वाम॥ विजलअचलमंदरकहा॥ विद्युनमालीनामा॥ पंचमेरजगमैप्रगटा॥१॥ छंद॥ चौपई॥ प्रथमसुदरसन

सनमेरुविराजै॥भद्रसालवनऊपरछाजै॥ चैत्यालेच्यारौसुषकारी
मनवचतनवंदनाहमारी॥२४॥ऊपरपांचसतकरिसो है॥नंदन
वनदेषतमनमोहै॥ चैत्यालेच्यारुसुषकारी॥मनवचतनवंदना
हमारी॥२३॥ साढेवासठिसहसउचाई॥ वनसौमनससोभैअधि
काई॥ चैत्यालेच्यारौसुषकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२४॥
ऊंचाजोजनसहसछतीसं॥पंडुकवनसोभैगिरसीसं॥ चैत्या
लेच्यारौंसुषकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२५॥च्यारौंमेरुस
मांनवषांने॥भूपरिभद्रसालचहुंज्यांने॥चैत्यालेच्यारौसुषका
री॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२६॥ऊंचेपांचसतकऊपरभाषे॥चा
रौंकंदवनसमनिलाषे॥चैत्यालेच्यारौसुषकारी॥मनवचत
नवंदनाहमारी॥२७॥साढेपचपनसहसउतंगा॥वनसौमनस
चारचहुरंगा॥चैत्यालेच्यारौसुषकारी॥मनवचतनवंदनाहमा
री॥उंचेअठाईससहसवतांए॥पंडुकचारौवनसुभगांए॥चैत्या
लेसोलेसुषकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२८॥सुरनरचा
रनवंदनआवै॥सोसोभाहमकिहमुषपावै॥चैत्यालेच्यारौसु
षकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२९॥ दोहा॥ पंचमेरकीआ
रतीपढैसुनैजोकोय॥द्यानतफलपावैप्रभू॥तुरतमहासुषहो
य॥ॐह्रींपंचमेरसंबंधीपूजाजयमालाअर्घं॥:॥:॥छ:छ:॥
॥अथअठाईजीकीपूजाजयमाललीष्यते॥अडिल्ल॥सरव

अठाई

रवनमैंवडोपरवहै॥नंदीसुरसुरजाहिलेयवसुदरवहै॥हमैंस
कतिसोनांहिइहांकरियापनां॥पूजौंजिनग्रहप्रतिमाहैहित
आपनां॥५॥ॐह्रींस्थापनाइनछे॥

कंचनमनमैंभार॥तीरथनीरजरातिकुयारदई॥निरवारजेंमन
मरणजिरा॥नंदीस्वरश्रीजिनधाम॥बावनपूजकरौं॥वसुदिन
प्रतिमाअभिराम॥आनंदभावधरौं॥ॐह्रीं॥जलं॥१॥

मेवतहरसीतलवाचसोचंदननांही प्रभुयहमुनकीजेसोचस्रये
तुमवांही॥नंदीसुरश्री जिनधामबावनपूजकरौ॥वसुदिनप्रतिमा
अभिरांम॥ॐ ह्रीं नंदीसुरद्वीपे॰॥२॥ चंदनं॥ उत्तमअक्षितजिन
राजपुंजधरैसोहै॥सवजीतेअछसमाज॥तुमसमअरुकोहै॥नं
दीसुरश्री जिनधामबावनपूजकरौ॥वसुदिनप्रतिमाअभिराम॥
॥अक्षतं॥
आनंदभावधरौ॥३॥तुमकामविनासकदेवध्याऊंफूलनिसौ ल
कुसीललछमीएवबूटौसुलतिसै॥नंदीस्वरश्री जिनधामबावन
पूजकरौ॥वसुदिनप्रतिमाअभिरांम॥आनंदभावधरौ॥४॥ॐ ह्रीं
नंदी॰पुष्पं॥ नेवजइंद्रीवलकारसोतुमनेचूरा॥चरुतुमढिग
सोहैसारअचरजहैपूरा॥नंदीसुरश्री जिनधांमबावनपूजक
रौ॥वसुदिनप्रतिमाअभिरांम॥आनंदभावधरौ॥५॥
॥नैवेद्यं॥
दीपककीजो
तिप्रकासतुमतनमांहिलसै॥टूटैकरमनिकीरासज्ञानकणीदर
सै॥नंदीसुरश्री जिनधांमबावनपुजकरौ॥वसुदिनप्रतिमाअ
भिरांम॥आनंदभावधरौ॥६॥दीपं॥ कृस्नागुरुधुपसुवास
दिसदिसनारवरै॥अतिहरषभावपरकाससमानोनृत्यकरौ॥नंदी
सुरश्री जिनधामबावनपूजकरौ॥वसुदिनप्रतिमाअभिरांम॥
आनंदभावधरौ॥७॥ॐ ह्रीं॥धूपं॥ वहु [illegible] विधफललेति
हुंकाल॥आनंदराचतहै॥तुमसवफलदेंकुदयाल॥तोकुजाचत
है॥नंदीसुरश्री जिनधामबावनपुजकरौ॥वसुदिनप्रतिमाअ
भिरांम॥आनंदभावधरौ॥ॐ ह्रीं नंदी॰॥फलं॥ यहअरघकियोनि
जहेत॥तुमकोअरपतहै॥द्यानतकीनौंजिनहेत॥सूपसमरप
तहै॥नंदीस्वरश्री जिनधामबावनपुजकरौ॥वसुदिनप्रतिमाअ
भिरांम॥आनंदभावधरौ॥९॥ॐ ह्रीं नंदीस्वरदीपे॰॥अर्घं॥
दोहा॥कातकफागुनअसाढके॥अंतआठदिनमाहि॥नंदीस्वरसुरजा
तहै॥हमपूजैइहठाहि॥११॥ छंद॥एकसौतेसठकोडिजोजन
महा॥लाखचौरासीयएकदिसमेंलहा॥आठमोदीपनंदीस्वर
भास्वरं॥भौनवावनप्रतिमानमोसुखकरं॥१२॥ च्यारदिसच्यार
अंजनगिरराजही॥सहस्रचोरासीयएकइकलाजही॥ढोलस

गोलकुपरतलैसुंदरं॥जौनवावनप्रतमांनमैंसुषकरं॥२३॥ए
कएकचारदिसचारसुनावबरी॥एकइकलाषजोजनअमलजल
भरी॥चहुंदिसचारवनलाषजोजनवरें॥२४॥जौनवावनप्रतमा
नमैसुषकरं॥२४॥सोलवापीनिमधसोलगिरदधिमुषसहसद
सामहाजोजनलषतहीसुषं॥वावरीकौनदैमांहिदोरतकरं॥जौन
वावनप्रतिमानमेसुषकरं॥२५॥सैलवतीसइकसहसजोजनक
हे॥चारसौलैमिलेपरववावनलहे॥एकइकसीसपरएकजिन
मंदिरं॥जौनवावनप्रतमांनमैसुषकरं॥२६॥विवअगएकसौअ
तनमैंसोहहीं॥देवदेवीसरवनैनमनमोहहीं॥पंचसैधनुषतन
पदमआसनपरं॥जौनवावनप्रतिमानमोसुषकरं॥२७॥लाल
नषमुखनयनस्यामअरुसेतहै॥स्यामरंगभौहसिरकेसछ
विदेतहै॥वचनबोलतमनोहसतकालपुहरं॥जौनवावनप्र
तिमांसुखकरै॥२८॥कोटससिभानदुतितेजछिपजातहैमहा
वैरागपरनांमनहरातहै॥वैननहिकहैलषहैनसमपकथ
रं॥जौनवावनप्रतिमानमोसुषकरं॥२९॥घत्ताछंदसोरठा॥नं
दीसवरनिजधाम प्रतमाम हिमाकौंकहैं॥द्यांनतलीनौंनांम॥
यहीनगतिसवसुषकरै॥२०॥इतिमहाअर्घ॥इतिपूजापंचमे
रुजीवानंदीस्वरजीकीद्यानतरायजीकृत॥अथसोलहका
रणपूजालिष्यते॥सोलैकारननायतीर्थंकरभए॥हरषेइंद्र
अपारमेरपैलगए॥पूजाकरनिजधांनलषोबहुचवसो हम
हूषोडसभावनभवैनावसौ॥२॥परमगुरुहो॥जैजैनाथपरमगु
रुहो यहटेरमैं॥चौ०जैदर्सनविसुद्धीषोडसकारणैभोअ
त्रावतर॥०वत०अत्रतिष्ठ०अत्रममसन्निहितौभव॥वषि०॥
चौपई॥कंचनझारीनिरमलनीरपूजौंजिनवरगुणगंभीर॥प
रमगुरुहो॥जैजैनाथपरमगुरुहो॥दरसविसुद्धिभावनाभायसो
लैतीर्थंकरपददाय॥परमगुरुहो॥जैजैनाथपरमगुरुहो॥जै
जीदर्शनविसुद्धि०षोडसकारणेभ्यो॥१॥जलं॥चंदनकेसर
करपूरमिलाय॥पूजौंश्रीजिनवरकेपाय॥परमगुरुहो॥जैजैन

दसों विशुद्धिभावनां नाय ।सो ले तीर्थ०ॐ ह्रीं ॥१॥ चंदनं ॥ तंडुल
अक्षत सुगंध अनुप पूजूं जिनवर तिहुं जग भूप । परमगुरु हो । दर
स विशुद्ध भावनां नाय ॥ सो ले तीर्थंकर० ॐ ह्रीं दर्शन ०२॥ अक्षतं ॥
फुल सुगंध मधुप गुंजार । पूजौ जिनवर जग आधार ॥ परमपद हो द
रस विशुद्ध भावनां नाय । सो ले ती० ॥३॥ ॐ ह्रीं ॥ पुष्पं ॥ सदनेवज व
हु विध पकवांन । पूजौ श्री जिन केवल धाम । परमगुरु हो । दरस विशु
द्ध भावनां नाय ॥७॥ सो० ॐ ह्रीं षोडस कारणेभ्यो । नैवेद्यं ॥ दीपक जोति
तिमर छयकार । पूजो श्री जिन केवल धार ॥ परमगुरु हो ॥ दरस विशु
द्ध भावनां नाय सोले० ॥ माहसुषहो जैजैनाथ परमगुरु हो ॥७॥ ॐ ह्रीं
॥ दीपं ॥ अगर कपूर गंध सव षेय ॥ श्री जिन वर आगे महकेय पर
मगुरु हो ॥ दरस विशुद्ध भावनां नाय । सो० ॥ ॐ ह्रीं ॥ धूपं ॥ श्रीफल आ
दि बहुत फल सार । पूजौ जिन वंछित दातार ॥ परम सुष हो ॥ दरस वि
विशुद्ध भावनां नाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीफलं ॥ जल फल आगे दरव च
ढाय । ग्यांन तवरत करो मन लाय । परमगुरु हो । दरस विशुद्धि भाव
नां नाय । अर्घ ॥ ॐ ह्रीं षोड० अर्घं ॥

अथ आरतीजयमाललिष

ते ॥ षोडसकारनगुनकरै । हरै चतुरगतवास ॥ पापपुंन्य सव नास
को ग्यान ज्ञान परकास ॥१॥ चोपई ॥ दरस विशुद्धधरै जो कोय ॥ ताको आ
वागमन न होय ॥ विनै महाधारै जो प्रांनी ॥ सिववनता की सषी वषान ॥
१॥ सील सदा दिढ जो नर पालै ॥ सो औरन की आपद टालै ॥ ग्यान अ
भ्यास करै मन मांही ॥ ताकै मोह महातम नांही ॥२॥ जो संवेग भाव वि
स्तारै ॥ सुरग मुकतिपद आप निहारै ॥ दान देय मन हरष विसेषै ॥ इह भौ
जनपरभौ सुषदेषै ॥४॥ जो तप तपै षपै अभिलाषा ॥ चूरै करम सिषर
गुरु भाषा ॥ साधसमाध सदा मन लावै ॥ तिहुं जग भोग भोगि सिव जावै ॥ ५ ॥ नि
सदिन वैयावृत करइया ॥ सो निहचै भवनीर तरईया ॥ जो अरिहंत भगत
मन आनै ॥ सो जन विषै कषाय न जानै ॥६॥ जो आचारज भगत करै है ॥
सो निरमल आचार धरै है ॥ वहुश्रुतवंत भगत जो करई ॥ सो नर संपूरन
श्रुतधरई ॥ प्रवचनभगत करै जो ग्याता ॥ लहै ग्यान परमानंददाता ॥ष
ट आवश्यक काल जो साधै ॥ सो ई रतनत्रै आराधै ॥ ध्रमप्रभाव करै जो ग्या

नी। तिन सिव मारग रीत पिछांनी। वछल अंग सदा जो ध्यावे।
सो तीर्थंकर पदवी पावे।१०। दोहा।। ए ही सोले भावनां सहत धरे व्रत
जोइ। देव इंद्र नर विंद पद द्यानत सिव पद होय।११। इति श्री सोले का
रणजी की पूजा संपूर्णं।। :।। अथ दसलक्षणजी की पूजा
लिष्यते।। अडिल।। उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव है। सत्य सौ
च संजम तप त्याग उपाव है। आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दस सार है। च
हुगति दुषतैं काढ मुकत करतार है।। १।। ॐ ह्रीं।। श्री उत्तम छिमादि
दसलक्षणीक परम धरमाय अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं।।
अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः। अत्र मम ०।। सोरठा।। हेमाचल की धार मुनि चित
सम सीतल सुरभि। जो आताप निवार। दसलक्षन पूजो सदा।। ॐ
ह्रीं दसलक्षण ०। जलं।। चंदन केसर गार हो ~~[illegible]~~ सु
वास दसौ दिसा।। जो आताप निवार। दसलछन पूजो सदा।। २
।। ॐ ह्रीं। चंदनं।। अमल अषंडत सार। तंदुल चंद समान सुभ
न व आताप निवार। दसलछन पूजो सदा।।३।। ॐ ह्रीं। अक्षतं
फूल अनेक परकार। महिकै ऊरध लोकलौं। भव आताप
निवार दसलछन पूजो सदा।।४।। ॐ ह्रीं श्री पुष्पं। नेवज विवि
धि निहार। उत्तम षटरस संजुगत। भव आताप निवार। द
सलछन पूजों सदा।। ॐ ह्रीं नैवेद्यं। आग धूप विसतार। फैले
सरव सुगंधता। भव आताप निवार। दसलछन पूजो सद
।। ॐ ह्रीं।। धूपं।।: फल की जात अपार। घ्रान नैन मन मोहने
भव आताप निवार। दसलछन पूजो सदा।। फलं। आठों दरव संमार
द्यानत अधिक उछाह। भव आताप निवार। दसलछन पूजो सदा
ॐ ह्रीं दसलक्षण ०। अर्घं।। सोरठा।। पीडै दुष्ट अनेक। बांध मार
बहुविध करै। धरिये छिमा विवेक। कोप न कीजें पीतमा।। १। चौ
पई। गीतामलार छंद। उत्तम छिमा गहो रे भाई। इह भव जस पर
भो सुषदाई। गाली सुन मन षेद न आनों। गुन कों औगुन कहे अ
यानौं।। कहि है अयानो वस्तु छीनैं बांध मार बहुत करै। घर तैं
निकारै तन विदारै बैर जो न तहां धरै। ते करम पूरब किये षोटे सहे क्यों न
व घरा। अति क्रोध अगनि बुझाव प्रांनी साम जल लेसी परा।। छमा

मांन महाविषरूप। करै नीचगत जगतमै॥ कोमल सुधा अनूप
सुष पावै प्रांणी सदा॥ उत्तम मार्दव गुन मन मांना॥ मान करनका
कौन ठिकाना॥ वस्यौ निगोद माहि तैं आया॥ दमरी रूकन भा
ग विकाया॥ रूकन विकाया करम वसतैं देव। इकेंद्री भ
या॥ उत्तम मूवा चंडाल हूवा॥ नृप कीडो मैं गया॥ जीतव जोव
न धन गुमान कहा करै जल वुदवुदा॥ करि विनय वहुगुन वडे
जनकी ग्यान का पावै उदा॥२॥ मार्दव॥ सोरठा॥ कपट न की
जे कोय॥ चोरंन के पुर नां वसै॥ सरल सुभावी होय॥ ताकै घर व
हु संपदा॥ उत्तम आर्जव रीत वषांनी॥ रंचक दगा वहुत दुष
दांनी॥ मनमै होसो वचन उचरिये॥ वचन होय सो तन सौं क
रिये॥ करिये सरल तिहुं जोग अपने देषि निरमल आरसी मुष
करै जैसा लषै तैसा॥ कपट प्रीत अंगार सी॥ नहि लहै लछि
मी अथ कल छल करम वंध विसेषता॥ भय त्याग दूध विलाव
पीवै आपदा नहि देषता॥३॥ आर्जव॥ सोरठा॥ कठिन वचन म
त बोल॥ परनिंदा अरु झूंठ तज॥ सांच जवाहर षोल॥ सतवा
दी जगमैं सुषी॥ उत्तम सत्त विरत पालीजै॥ पर विसवासघात
नहीं कीजै॥ सांचे झूठे मानक देषो॥ आपन पूत स्वपास न
वेषो॥ पेषो तिहायत पुरुष सांचे कौ दरव सव दीजिये॥ मुनि
राज श्रावक की प्रतिष्टा सांच गुन लष लीजिये॥ ऊंचे सिंघा
सन वैठि वसु नृप धरम का भूपत भया॥ वच झूठ सेती नरक
पहुंचा सुरग मैं नारद गया॥४॥ सत॥ सोरठा॥ धर हिरदै संतोष॥ करै
तपस्या देह सौं॥ सौच सदा निरदोष॥ धरम वडा संसार मैं॥ उ
त्तम सौच सरव जग जानां॥ लोभ पाप का वाप वषानां॥ आस
पास महा दुषदानी॥ सुष पावै संतोषी प्रांनी॥ प्रांनी सदा सु
चि सील जप तप ग्यान ध्यान प्रभाव तैं॥ नित गंग जमुन स
मुद्र न्हाए असुच दोष सुभाव तैं॥ ऊपर अमल मल भरयो भी
तर कौन विधि घट सुच कहै॥ वहु देह मैली सुगुन थैली सौच
गुन साधू लहै॥५॥ सौच॥ सोरठा॥ काय छहौं प्रतिपाल पंचे
द्री मन वस करौ॥ संजम रतन संभाल विषै चोर वहु फिरत हैं॥

उत्तमसंजमगहुमनमेरे॥भोभोकेभाजेअघतेरे।सुरगनरकप
सुगतिमेंनाही॥आलसहरनकरनसुषठाही॥ठांहीप्रथीजल
आगमरुतरूषत्रसकरुनाधरौ॥सपरसनरसनाघ्राणनैना
कानमनसबवसकरो॥जिसबिननहीजिनराजसीझैतूरुलो
जगकीचमैं॥इकघरीमतिविसरोकरौ॥नितआवजम
मुषवीचमैं॥९॥संजमसोरठै॥तपचाहैसुररायकरमसिष
रकोवज्रसमान॥वस्योअनादिनिगोदमझारा॥भूवि
कलत्रैयपसुतनधारा॥धा॥धारामनुषतनमहादुर्लभ
सुकुलआवनिरोगता॥श्रीजैनवानीतत्वग्यानीभईविषैप
योगता॥अतिमहादुर्लभत्यागविषैकषायजेतपआदरै
नरभौअनोपमकनकघरपरमनमईकलसाधरै॥१०॥त्याग॥
सोरठा॥दानचारपरकारचारसंघकोदीजिये॥धनबिजल
उनहारनरभौलाहोलिजिये॥११॥उत्तमत्यागकहैजगसारा॥
औषदसास्त्रअभैअहारा॥निहचैरागदोषनिरवारै॥ग्याता
दोनोंदानसंभारै॥१२॥दोनौंसंभारैकूपजलसमदरवघरमें
परनया॥निजहाथदीजेसाथलीजेषायषोयाबहगया॥धन
साधसास्त्रअभैदिवैयात्यागरागविरोधकौ॥बिनदानश्र
वकसाधदोनौलहैनांहीबोधको॥१३॥त्यागपरग्रहचौवी
सभेद॥त्यागकरैमुनिराजजी॥त्रसनाभावउछेदघटती
जांनघटाइयै॥१४॥उत्तमआकिंचनगुनजानो॥परग्रहचिं
तादुषहीमानो॥फांसतनकसीतनमेंसालै॥चाहलंगोटी
कीदुषभालै॥भालैनसमतासुषकभीनरबिनामुनमुद्राध
रै॥धनिनगनपरतननगनठाढेसुरअसुरपायनिपरै॥घरमां
हितिसनाजोघटावैरुचनहीसंसारसौ॥बहुधनबुराहूभ
लाकहिएलीनपरउपगारसौ॥आकिंचनसोरठा॥सीलवाढि
नौराष॥ब्रह्मभावअंतरलषौ॥करिदोनौअभिलाषकरौस
फलनरभौसदा॥१५॥उत्तमब्रह्मचर्यमनआनैं॥मातावहनसु
तापहचानैं॥सहैवानवरषाबहुसूरे॥टिकैननैनवानलषकूरे
कूरेत्रियाकेअसुचितनमैंकामरोगीरतकरै॥बहुमृतकसडहिमसां

मांन मांही का कही वै॥ चे जे संसार में विष वेल नारी तज गए
जोगीस्वर॥ द्यानत धरम दस पैडि चढ के सिव महल में पग
धरा॥ २६॥ उत्तम ब्रह्मचर्ज॥ दोहा॥ दस लछन वंदौं सदा मनवंछि
त पद दाय॥ कहूं आरती भारती हम पर होय सहाय॥ १७॥
छंद॥ चौपई॥ उत्तम छिमा जहां मन होई॥ अंतर बाहर शत्रु न के
ई॥ उत्तम मार्दव विनै प्रकासै॥ नाना भेद ग्यान सब भासै॥
उत्तम छिमा जहां मन होय॥ अंतर बाहर शत्रु न कोय॥ उत्तम मा
र्दव विनै प्रकासै॥ नाना भेद ग्यान सब भासै॥ उत्तम आर्जव क
पट मिटावै॥ दुर्गति त्याग सुगति उपजावै॥ उत्तम सत्य वचन
मुख बोलै॥ सो प्रानी संसार न डोलै॥ १८॥ उत्तम सौच लोभ परिहा
री॥ संतोषी गुन रतन भंडारी॥ उत्तम संयम पालै ग्याता॥ नर भौ स
फल करै लहि साता॥ १९॥ उत्तम तप निरवंछित पालै॥ सो नर क
रम सत्रु को टालै॥ उत्तम त्याग करै जो कोई॥ भोगभूमि सुर सि
व सुख होई॥ उत्तम आकिंचिन व्रत धारै॥ परम समाधि दसा वि
सतारै॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै॥ नर सुर सहित मुकति पद पा
वै॥ २०॥ दोहा॥ घत्ता॥ करै कर्म की निर्जरा भौ पिंजरा विनास॥ अज
र अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास॥ २१॥ इति श्री दसलछ
ण जी की पूजा जयमाल आरती संपूर्ण॥:॥:॥ श्री॥ ॐ नमः॥:॥
अथ रतनत्रै पूजा आरती जयमाल लीष्यते॥ चहुं गति फनि वि
षहरन मनि दुष पावक जलधार सिव सुष सुधा सरोवरी सम्य
क त्रयी निहार॥ १॥ सोरठा॥ छीरोदधि उनहार उज्जल जल
अति सोहनां॥ जनम रोग निरवार सम्यक रतनत्रै जजौं॥ २॥ ॐ ह्रीं
॥ जलं॥ चंदन केसर धार परमल महा सुरंग
॥ जनम रोग निरवार सम्यक रतनत्रै जजौं॥ ३॥ ॐ ह्रीं चंद
॥ तंदुल अमल चितार वासमती सुषदास के॥ जनम रोग नि
रवार सम्यक रतनत्रै जजौं॥ ४॥ ॐ ह्रीं॥ अक्षतं॥ महिकै फू
ल अपार अलि गुंजै ज्यौं थुति करै॥ जनम रोग निरवार॥ सम्य
क रतनत्रै जजौं॥ ५॥ ॐ ह्रीं॥ पुष्पं॥ लाडू बहु विस्तार चीकं
ह सुगंध ला॥ जनम रोग निरवार सम्यक रतनत्रै जजौं

॥ ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो : अत्र अवतर अवतर अत्र तिष्ठ॥ ०॥ अत्र मम संनिधौ॥:

निवेद्यं॥ दीपरतनमैंसारज्योतप्रकाशैजगमैं॥ जनमरोगनि
रवार॥ सम्यकरतनत्रैनजो॥७॥ ह्रीं दीं॥ धूपसुवासविथार॥ चंद
नअगारकपूरका॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्यकरतनत्रै॥
नजो॥ धूं॥ पं॥ फलसोभाअधिकार॥ लौंगछुहारेजायफ
ला॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्यकरतनत्रैनजो॥ पं॥ फलं
आठदरवनिरधार॥ उत्तमसौउत्तमलिए॥ जनमरोगनि
रवार॥ सम्यकरतनत्रैनजो॥ ॐह्रीं सम्यकदरसनअर्घं
निरपामीतस्वा॥ अर्घं॥ सम्यकदरसनापान॥ ब्रतसिवम
गलीनोमई॥ पारउतारनजोन॥ द्यानतपूजोब्रतमह
ति॥११॥ अथदर्शनपूजा॥ दोहा॥ सम्यकदरसप्रधान
॥१२॥ सोरठा॥ नीरसुगंधअपार॥ त्रिषाहरैमलछेकरै॥
सम्यकदरसनसार॥ आठअंगपूजोसदा॥१३॥ जलं॥ जल
केशरघनसार॥ तापहरैसीतलकरै॥ सम्यकदरसनधा
र॥ आठअंगपूजोसदा॥ चंदनं॥ अछतअनूपनिहार॥ दा
लदनासेसुखलेरै॥ सम्यकदरसनसार॥ आठअंगपूजोस
दा॥१५॥ अक्षतं॥ पुहपसुवासउदार॥ खेदहरैमनसुचक
सम्यकदरसनसार॥ आठअंगपूजोसदा॥१६॥ पुष्पं॥ नेव
जबिवधप्रकार॥ छुधाहरैथिरताकरै॥ सम्यकदरसनसा
र॥ आठअंगपूजोसदा॥१७॥ [illegible]
[illegible] नैवेद्यं॥ दीपजोतितमहार॥ घटपटपरकासैम
हा॥ सम्यकदरसनसार॥ आठअंगपूजोसदा॥ दीपं॥ धूप
घ्राणसुषकार॥ रोगविघनजडताहरै॥ सम्यकदरसनसा
र॥ आठअंगपूजोसदा॥ धूपं॥ श्रीफलआदिविथार॥
निहचैसुरसिवफलकरै॥ सम्यकदरसनसार॥ आठअं
गपूजोसदा॥ फलं॥ जलगंधाछतचार॥ दीपधूपफलफू
लचरू॥ सम्यकदरसनसार॥ आठअंगपूजोसदा॥२१॥
दोहा॥ आपआपनिहचैलषै॥ ततप्रीतव्योहार॥ रहतदो
षपचीसहै॥ सहतिअष्टगुनसार॥२२॥ जकरीचौपई॥ मि

लागीताछंद। सम्यकदर्शनरतनगहीजे। जिनवचमेंसंदेह नकीजे। इहभोविभौचाहदुषदांनी। परभोभोगचहैमति षांनी। ग्लानीगिलाननकरिश्रमुनलषघरमगुरप्रभुकरह रषिये। परदोषढकियेधरमडिगतेकौंसुथिरकरहरषिये चहुसंघकौवाछ[illegible]लुकीजै। धरमकीपरभावनां। गुनश्रा वसोगुनश्रावलहिकै। इहांफेरनश्रावनां। २३। श्रथज्ञा नपूजादोहा। पंचभेदजाकेप्रगटोयप्रकासनभांन। मोह नपतमहरचंद्रमांसोईसम्यकज्ञान। २४। स्थापना। सोरठा नीरसुगंधश्रपारत्रिषाहरैमलछैकरै। सम्यकज्ञानविचा र। श्राठभेदपूजोंसदा। २५। जलं। जलकेसरघनसारता पहरैसीतलकरै। सम्यकज्ञानविचार। श्राठभेदपूजोंस दा। चंदन। श्रछतश्रनूपनिहार। दालदनासेंसुषभरै। सम्यकज्ञानविचार। श्राठभेदपूजोंसदा। २७। श्रछतं। पुहुपसुवासउदार। षेदहरैमनसुचकरै। सम्यकज्ञानवि चार। श्राठभेदपूजोंसदा। पुष्पं। नेवजविविधप्रकार। छुध हरैथिरताकरै। सम्यकज्ञानविचार। श्राठभेदपूजोंसदा २७। नैवेद्यं। दीपजोतितमहार। घटपटपरकासेमहा। सम्य कज्ञानप्रकास। श्राठभेदपूजोंसदा। ३०। दीपं। धूपघ्रांन सुषकार। रोगविघनजडताहरै। सम्यकज्ञानविचार। श्राठभेदपूजोंसदा। ३१। श्रीधूपं। श्रीफलश्रादिविथार निहचेसुरसिवफलकरै। सम्यकग्यांनविचार। श्राठभेदपूजे सदा। फलं। जलगंधाछतचारु। दीपधूपफलफूलचरु। सम्य कग्यांनविचार। श्राठभेदपूजोंसदा। ३३। श्रर्घ। दोहा। श्राप श्रापजानैनियतग्रंथपठनव्योहार। संसैविभ्रममोहविन श्रष्टश्रंगगुनकार। ३४। जेकरी। सम्यकग्यांनरतनमनभा या। श्रागमतीजानैनवताया। श्रछरसुद्धश्ररथपहचांनौ श्रछरश्ररथउभैसंगजानैं। जानैसुकालपठतिजिनागमनाे मगुरुनछिपाईये। तपरीतगहिवहुमानदेकेविनेंगुनचित

लायपै ॥ १८ ॥ आवेनेदकरमतछेदकापांनदरपनदेषनां ॥ इस
गपांनहीसोनरतसीका औरसवपठपेषनं ॥ १५ ॥ अथवारत
पूजा ॥ दोहा ॥ विषैरोगऔषदमहा दवकषायजलधार ॥ ती
र्थंकरजाकौंधरें सम्यकचारतसार ॥ १६ ॥ सोरठा ॥ नीरसुगंध
अपार त्रिषाहरैमलछेदकरे ॥ सम्यकचार तधार तैरेविध
पूजोसदा ॥ १७ ॥ जलं ॥ जलकेसारघूनसार ताप हरै सीतल
करै ॥ सम्यचारितधार तेरेविधिपूजोसदा ॥ १८ ॥ चंदनं ॥ अछ
तअनूपनिहार ॥ दालदनासेंसुषलहै ॥ सम्यकचारतधार तेरे
विधपूजोसदा ॥ १९ ॥ पुहपसुवासउदार षेदहरैमनशुचकरै
सम्यकचारतधार तैरेविधपूजोसदा ॥ ४० ॥ पुष्पं ॥ नेवजविव
धप्रकार ॥ षुधाहरैथिरताहरै ॥ सम्यकचारित्रधार तैरेवि
धपूजोसदा ॥ ४१ ॥ नेवेद्यं ॥ दीपजोतनमहार ॥ घटपटपरका
सेमहा ॥ सम्यकचारितधार ॥ तैरेविधपूजोसदा ॥ ४२ ॥ दीपं ॥
धूपघ्रानसुषकार रोगविघनजडता हरै ॥ सम्यकचारित
धार ॥ तैरेविधपूजोसदा ॥ ४३ ॥ धूपं ॥ जलगंधाछतचरु
दीपधूपफलफूलचरु ॥ सम्यकचारित्रधार तैरेविधपूजोस
दा ॥ ४४ ॥ श्रीफलआदिविथार ॥ निहचेसुरसिवफल करै ॥
सम्यकचारित्रधार तैरेविधपूजोसदा ॥ अर्घं ॥ दोहा ॥ ११
आपआपथिरनियतनै ॥ तपसंजम सोहार ॥ सुपरदयादो
नोलियेतैरेविधउपहार ॥ ४६ ॥ जकरी ॥ सम्यकचारितरतन
संभालो पाचपापतजकैव्रतपालो ॥ पंचसमतित्रैगुपतगा
हीजे नरभोसफलकरोतनछीजे ॥ छीजेसदातनकोजत
नयह ॥ एकसंयमपालियो ॥ वहुरुल्योनरकनिगोदमांहिक
षायविषयनिटालियै ॥ सुभकरमजोग ॥ सुघाटआयापार
होदिनजातहै ॥ द्यानतधरमकीनाववैठो सिवपुरीकुसल
तहै ॥ ४७ ॥ आरती ॥ दोहा ॥ सम्यकदरसनज्ञानव्रत इनविनमुकति
नहोय ॥ अंधपंगअरआलसी जुदेजलैदवलोय ॥ ४८ ॥ छंद ॥
चौपई ॥ तापैध्यानसुथिरवनआवै ॥ ताकेकरमवंधकटजा

...परमानंद दसा विसतरै॥ आप तें आतम तत्त्व
वै जो सम्यक रतन त्रै ध्यावै॥४८॥

तासौ सिववनिय प्रीत वढावै॥ जो सम्यक रतन त्रै ध्यावै॥४९॥ ता
ज्ञातिके दुषनां ही॥ सो न परै जो सागर मैं ही॥ जनम जरामृ
त दोष मिटावै॥ जो सम्यक रतन त्रै ध्यावै॥५०॥ सो ई दसलछन
साधै॥ सो सोले कारन आराधै॥ सो परमातम पद उपजावै
करतन त्रै ध्यावै॥५१॥ सो इस क चक्र पद लेई॥ ती
न लोकके सुष वित्तमें ही॥ सो रागादिक भाव वहावै॥ जो सम्य
॥५२॥ दोहा॥ एक सरूप प्रकास निज वचन
कह्यो नहि जाय॥ तीन भेद व्यौहार सब॥ द्यानतकौ सुषदा
य॥ इति श्री रतनत्रै पूजा जयमाल आरती संपूर्ण॥ २॥ ॥

जैनसतक

ॐ नमः ॥ अथ जैनशतक भाषा लिख्यते ॥ सवैया ॥ ज्ञान जिहाज बैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नाहिं तिरै है। अमर समूह आनि अवनी सौं घसि घसि सीस प्रणाम करै है ॥ किधौं भाल कुकरम की रेखा दूरि करन की बुद्धि धरै हैं। ऐसे आदिनाथ के अहनिसि हाथ जोरि हम पाय परै है ॥१॥

काउसग्ग मुद्रा धरि वन मैं ठाढे रिषभ रिद्धि तजि दीनी। निश्चल अंग मेरु है मानौं दोऊ भुजा छोरि जिन दीनी ॥ फसे अनंत जंतु जग चहले दुखी देखि करुनां चित लीनी। काढन काज तिन्हे समर्थ प्रभु किधौं बाहु युग दीरघ कीनी ॥२॥

करनौं कछु न करन तैं कारिज तातैं पानि प्रलंब करे हैं। रह्यौ न कछु पायनि तैं पैवो ताही तैं पद नांहि टरै है ॥ निरखि चुके नैनन सब यातैं नैन नासिका अनी धरै है। कानन कहा सुनैं यो कानन जोगलीन जिनराज खरे है ॥३॥

छंद छप्पय ॥ जयो नाभि भूपालबाल सुकुमाल सुलच्छण जयो स्वर्गपाताल पाल गुणमाल प्रतच्छण ॥ दृग विसाल वर भाल लाल नख चरन विरजिहि ॥ रूप रसाल मराल चाल सुंदर लखि लज्जहिं ॥ रिपु जाल काल रिसहेसु हम फसे जनम जंबाल दह ॥ यातैं निकाल बेहाल अति भो दयाल दुख टाल यह ॥४॥

कवित्त ॥ छंद ॥ चितवत वदन अमल चंद्रोपम तजि चिंता चित होय अकामी ॥ त्रिभुवन चंद पाप तप चंदन नमत चरन चंद्रादिक नामी ॥ तिहुं जग छई चंद्रिका कीरति चिह्न चंद चिंतत शिवगामी ॥ वंदौं चतुर चकोर चंद्रमा चंद्रवरण चंद्रप्रभु स्वामी ॥५॥

छंद सवैया ॥ शांति जिनेश जयो जगतेश हरो अघताप निशेष की नांई ॥ सेवत आप सुरासुर राय नमैं सिर नाय महीतल तांई ॥ मौलि लगे मणि नील दिपै प्रभु के चरनौं झलकै वह झांई ॥ सूंघन पांय सरोज सुगंध किधौं चलि ए अलि पंकति आई ॥६॥

छंद कवित्त ॥ सोभित प्रियंग अंग देखे दुख होत भंग लाजत अनंग जैसे दीप भांन भास तैं ॥ बालब्रह्मचारी उग्रसेन की कुमारी जादू नाथ तैं निकारी जन्म कादो दुखरासि तैं ॥ भीम भवकानन मैं आनन सहाय स्वामी अहो नेमि नामी तकि आयो तुम तास तैं ॥ जैसे कृपाकंद वनजीवनि की वंदिछो ॥

धीस्योंहीदासकौंखलासकीजेजगफासिनें॥७॥छंदछप्पै॥जनम
जलधिजलयं॥नजांनिजविहंसमांनसर॥सरवईज्ञमिलिश्रीनिश्रै
नजसथरहिस्रीत्रापर॥परउपगारीवांनिवांनउस्यपयकुनयगान
गानसरोजवनमौंनमौंनिममोहतिमरघन॥घनचूरनदेहदुख
दाघहरहरषितहेरमयूरमन॥मनमथमतंगहरिपार्श्वजिनजिन
विसरहुविनजगतजन॥८॥छंददोहा॥हठकरमाचलदलनप
वि॥नविसरोजरविराय॥कंचनछविकरजोरिकर॥नमौंवीरजिन
पाय॥९॥छंदकवित॥रहोदूरिअंतरकीमहिमाँवाहिजगुणवरन
तअघकाँपे॥एकहजारआठलछणतनतेजकोटिरविकिरणि
उथापै॥सुरपतिसहसआँखिअंजुलीकरिरूपामृतपीवतनहि
धापै॥तुमविनकौनसमरथवीरजिनजगसौंकाढिमोक्षमैंथापैं
१०॥छंदसवैया॥ध्यांनहुतासनमैंअरिईंधनझोकिदीएरिपुरोगनि
वारी॥सोकहरयौनविलोकनकौवरकेवलग्यांनमयूखउघारि
लोकअलोकविलोकहुएजितजन्मजरामृतपंकपखारी॥सि
द्धनथोकवसैंसिवलोकतिहूंपगधोकत्रिकालहमारी॥११॥ती
रथनाथप्रणांमकारैतिनकेगुनवर्ननमैंबुधिहारी॥मोमगयो
गलिमूंसिमझारिरहियोतहसोमतदाछतधारी॥लोकहि
रनदीपतिनीरगएतिरनीरजएअविकारी॥सिद्धनथोकव
सैंसिवलोकतिन्हपगधोकत्रिकालहमारी॥१२॥छंदकवित॥
सीतरितुजोरैंअंगसवहीसकोरैंगिरिकौरैतपवेधरै॥घोरघ
नघोरैघटाचहुवोरमोरैज्योंज्योंचलतहिलोरैत्योंत्योंकोरैव
लएओरै॥देहनेहतोरैंपरमारथसौंप्रीतिजोरै॥ओसेगुरुवोरै
हमहाथअंजुलीकरैं॥१३॥छंदसवैया॥श्रीवीरहिमाचलतैंनि
कसीगुरुगोतमकेमुखकुंडढरीहैं॥मोहमहाचलभेदिचली
जगकीजडतापनिदूरिकरीहै॥ग्यानपयोनिधिमाहिरली
वहुभंगतरंगनिसोंउछरीहै॥तासुविसारदगंगनदीप्रति
मैंअंजुलीनिजसीसधरीहै॥१४॥याजगमंदिरमैंअनिवार
अग्यांनअंधेरछयोअतिभारी॥श्रीजिनकीधुनिदीपसिखा

मुनिजोनविहोतप्रकासनहोरी॥तौऽसमंतिपदारथपौतिकहालेह।
तेरहतेअविचारी॥याविधिसंतकहैथनिहैधनिहैजिनवैनवखेउपक
री॥१५॥छंदकवित्त॥कैसेंकरिकेतकीकनेरएककहेजाँहिआ
कइधगायदूधअंतरघनेरहे॥पीरीहोतरीरीपैनरीसैकंचनकीक
हाकाकवानीकहाकोयलकी■टेरहे॥कहाभाँनतेजभारोकहाँ
आगियाविचारोपूनौकोउजारोकहामावसअंधेरहेरहे॥पदी
छौरिपारखीनिहारोनैकनीकेकरिजेनवैनऔरवैनइतनोहो
फेरहे॥१६॥कवयई्वासनसौंउदासहोयवनैमेकवैकैनिजरू
पकौंगतिमनकरीकी॥रहिहैंअडोलएकआसनअचलअं
गसहिहैपरीसासीतयामभेघझरीकी॥सारंगसमाजघाजक
वधौंसुजैहेअॉनिधानदलजोरिजीतौसेनामोहअरीकी॥एकलवि
हारीयथाजातलिंगधारीकवहोंसुइछाचारीवलिहारीवाघरीकी
१७॥रागउदैजोगमावलागतसुहावनेंमेविनारागऐसेलागेजैसे
नागकारेहो॥रागहीसौंपागिरहेजगमैसदीवजीवरागगएँआव
तगिलानिहोतन्यारेहै॥रागहीसौंजगतरीतिझूठीसबसाचजा
नैरागमिटेसूझतअसारखेलसारेहै॥रागीवीतरागीकेविचार
मेंवडोहीभेदजैसेंभटापथ्यकाहूकाहूकौंवयारेहै॥१८॥छंद
सवैया॥२३तूनितचाहतभोगनएनरपूरवपूंनविनाकिमपैहे॥कर
मसंजोगमिलेकहिजोगगहेतवरोगनभोगिकेहेजोदिनचारके
मोतवन्योतकर्कूतोपरिडुगोतिमैपछितैहे॥याहीतेंयारसलाह
यहीहैगईकरिजाहनिवाहनहैहै॥१९॥मातपितारजवीरज
सोंउपजीसवसातकुधाततरीहैं॥माषिनकीपरमाफिकवाहरि
चामकेवेढनवेढिधरीहे॥नांहितोआयलगेंअवहीवकवायस
जीवववैनघरीहे॥देहदसायहदीसतभ्रातघिनातनहींकिनवु
द्धिहरीहै॥२०॥छंदकवित्त॥काहूघरपुत्रजायोकाहूकेवियोग
आयोकाहूंरागरंगकाहूंरोवारोहपरीहै॥जहांभानऊगतउछा
हगीतगानदेषेसांझसमैंताहीयांनहायहायपरीहै॥ऐसीजग
रीतकौंनदेषिभयभीततनहोयहाहानरमूढतेरीमतिकौंनहरीहै

मानुषजनममेंपायसोवलविहायोजायषोवलकिशोरनिकीएकएकघरी।
हे।२१। सोरठा। करिकरिजिनगुनपाग।जातेंअकारथेंजिया। आग।
पहरमेंसांवघरीघनेरमोलकी॥२२ कानीकौडीकाज।कोरिनकोलि
षदेतषत।ऐसेमूरषराज।जगवासीजियदेषिये॥२३॥ दोहा॥कानी
कौडीविषयसुख नवदुखकरजेंअपारविनदीयेंनहीछूटिमीलसक।
दांमनुधार॥२४॥त्रिभंगी॥छप्पय॥दिनदशविषयविनोदफेरिवकुविपते
परंपर।असुचिगेहदुहदेहनेहजांनतआयजर।मिंत्रवंधसनमंदऔर
परजनेअगी॥अरेअंधसववंधजांनस्वारथकेसंगी॥परहितअकाज
पनैनकरि।मूढराजअवसमकेंतरे।तजिलोकलाजनिजकाजकौंअ
जदावहेकहतगुरपासवैया।जौलौदेहतेरीकाहूरोगसौंनघरीजौलौज
रानांहिनेरीजासोंपराधीनपरिहे।जौलौजमनामावेरीदेहनदमामांजौ
लौमानेंकांनिरांमाबुद्धिजायनविगारिहे।तौलौमित्रमेरनिजकारजंस
वारिलेरेपोरषथकेंगोफेरिपीछेकहाकरिहे।अहोआगिलागेजवझ
पराजरनलागें।कूवाकेषुदायेंतवकौनकाजसरिहे॥२५ सोवरषआ
युताकालेषाकरिदेषोसव।आधीतौअकारथहीसोवतविहायरे।आधी
मेंअनेकरोगवालवृद्धदसामाग।औरऊसंजोगकेतीऐसेंवीतिजायरे।व
कीअवकहारहीताहितूवीचारसही कारजकीवातयहीनीकेमनलायरे
षातरमेंआवैतोषलासीकरिडारतनेमैं नावेफसिफंदवीचदीनासमुझ
यरे॥२७॥वालपनेवालरह्योंपीछेगृहभारवह्योलोकलाजकाजवांधे
पापनिकोढेरहे।आपनोअकाजकीनोलोकनमेंजसलीनोपरभौविस
रिदीनोविषेंवसिजेरहे।ऐसेहीगईविहायअलपसीरहीआयनरपर
जायइहआंधेकीवटेरहे।आयेसेतभैया।अवकालहेअवेयाअहो
आयारेसयानतेराओजोनीअंधेरहे॥२८॥सवैया॥२९॥वालपनैं
नसम्हारिसकोकछूजांनततांहिनताहितहीकौं।जोवनवैस
सीवनितारंगरंगकैनितलागिरह्योलछमीकौ।योपनदोइविगोय
दूयनरडारतक्योंनरकेनिजजीकौ।आयेहेसेतअजोसठचेतगई
सुगाईअवराषिरहीकौ॥सवैया॥३०॥सारनरदेहसवकारनकौंनौ
पएहपढ्योविष्यातवातवेदनमेंवचेहे।तीमेंतरुणाईधर्मसेवनकौ
समैंताईसेयेतवविषेजेसेंमाषीमधुरचेहे।मोहमदसोयेधनरांमाहितरो

जरो थैयो ही दिन षोये षाय कोउं जिम मचै है॥ ए रे मुनि वौरे अवरुआये सीष
घो रे अनो सावधांन होरे नर नर कसो वचै है॥ २७॥ मांड्या अथ वायला
कवलाय लगी मिटे मत्त नयो न रत्नू लतत्यौ ही॥ रुधन ये न अजैं नगावं
न विषै विषया तअयातनको ही॥ स्त्रीसुत ये वुगला समस्त तरसौ
अंअतरस्यां मअजयो हीं॥ मां तु षना मुकताफल हार गवार तगाहि
ततौ रत यो ही॥ २५॥ अथ सं॥ रीचि॥ वन॥ वैया॥ २८॥ चाहत है धन है
य किसी विधि तो सब काज सरै जि परा जी॥ गेह वि नायक रोग हैं
कछु मांहि सुता सुत वादि पिआ जी चिंत तयौ दिन जाय ववे लै जम
आंति अचांन करै तद गाज विलल पेज विला रगा पे रहि ज्ञा तरु
पीसत संजकी वाजी॥ २९॥ तेन तुरागसुरंगन ले रथ मत्त मतंग उत्तं
ग घरे ही॥ दास अवास सवास अवाधन जोरि करोरन कोस भरे हैं
औसे नये तो कहा भयो ए नर छोभि छिले तक्षि अंति छरे ही॥ धाम धरे रहे
काम परे रहे दाम डरे रहे ठाम धरे ही॥ रत्न कंचन भंडार भरे मोतिन के
पुंज परे धने लोक उचारि षरे मारग निहारते॥ जांन चढि डोलत है
जीने सुर वोलत है कहा हुकी वो सने कनी कैन निहार तको लोध नषे
गके छकैयो न जागै तई फिरै पावना गो कां गोपद झारते॥ येते पै अया रे
गरवानें रहे विना पाय॥ छिग है मम जि औसी यमे न सम्हारते॥ ३०॥ अध
दस्मोत्तर जोवन मैं पुत्र कौं वियोग॥ जयो तेसे ही निहारि निज नारि कु
लमग मैं जतें पुनि वांन जीव दीसत है जि नहीं परं कन्नये फिरे लई
यांन ही न पा मैं॥ येते ये अनाराधन जीवन सों रागधरे होय न विराग
जानें रूगो अलगामें आं बिन विलौकि अंधघु मेकी अंधेरी करे अ
स राज रोगकों इलाज कहा जग मैं॥ ३१॥ दोहा॥ जैन वचन अंजन व
टी॥ आंजे सुगुरु प्रवीन॥ रागतिमर तोउ न मिटै वडो रोग लषि ल
ना॥ ३२॥ निज अवस्था वर्ननं॥ सवैया॥ ३३॥ जो ई छिन कटै सो ई आंव
मैं अव सिघटै बूंद बूंद वीति जैसें अंजुली को जल है॥ देह अति छीन है
तनैं तत जही न होत जोवन मलीन होत छीन होत वल है॥ आवै जु
रा नेरी तकै अंक अहेरी आवै परभौ नजीक जात नरभौ निफल
है॥ मिलिकै मिलापी जन पूछत कुसल मेरी औसी या दसा मैं मित्र का
हे की कुसल है॥ ३४॥ दृष्टि डिष्टा वर्ननं॥ [illegible] २५॥ दिष्ट घटै पलटी

ननकी है विवेकगई गति लंकनई है। हमिरही घरकी घरनी अतिरंकन
कापरि जंकलई है। कंपति नारि वहै मुख लाग हामति संगा तिछारि
गई है। अगउपगपुरानपरे तिमनां गर और नवीन नई है। ३८। सवै
या ३१। रूपको नघोजरसो तरूप तुसारदह्यो अयो पत फरकिधे
रही भारसनी सी। कंवरी नई है कटि इ वरी नई है देहकवरी ई तिकत्र
यसेरमाहि पूनी सी जोवनने [illegible]
[illegible] विदांली नीजरने जुहार
कीनी

ओ है रत्न अपने अनागत दे नां हिजां नी वीतरागवांनी सारदयारस
मीनी है। जोवन के जोरेथि रजे गम अनेक जी वजाने जे संताप कछु
करुनां न कीनी है। लई अवजी वराछि आये पुर लोक पास लेगावे
रहे गोउ पलई नीं नवीनी है। वनही के न्याय कोन रोसो जांन कांपत है
वाकुरमो करानें लाखी हाथली नी है। ४०। जाकों इंजचाहे अमिंद
सेज मां है। जासू जीवमुक्त माहे जाइ गो मल वहावे है। असे नज
नम पाय विषय विषया बोये जे सें का चसाटमूढ मां निकगवावे है
माया नदी बूडगी जा काया वल तेज छी जा आया पलती जा अव
कहा वनि आवे है। तातें निजसी सदा लेनी चैनेन की यफोलेक
हाव ढि वो लैंहू हिवचन उरांवे है। ४१। देषहु जो राजमन टकोज
महीपति के पहतो आगवांनी। उज्जल केस निसांन धरे वकु रोग
नि की से गिफो जपलांनी। कायपुरी तजि भाजि चल्यो जि हिं आव
तजो वन भूपगुमांनी। लूटि लई नगारी सगरी दिन दोय मेंषो इहै
नाव निसांनी। ४२। दोहा। सुमती हित जो वन समें। सेवो विषै विक
रा बालि साटे न हि षोइये जनम जवाहसार। ४३। कर्त्तमअदे
दे वगुरु सांचे मानि सां चो धर्म हिये आनि सांचो ही व षानसुनि सं
चे पंथ आव रे। जीवन की दया पालि झूठ तजि चोरी टाल देष निं वे
गंनी चाल त्रिसनाय टावरे। अपनी वडाई पर निंदाम ति करे भा
ई रही चतुराई मद मास को वचाव रे। साधि षट कर्म साध संग
ति में वैठि वीर जो है धर्म साधन को तेरो चित चाव रे। ४४। साचे

देवसो ईजामैं दोस को न लेस कोई है गुरु जाकै उरकारु कीनवोह
दिसहीधर्म्म चहीजहांकरुणां प्रधानकहीग्रंथजहां ॥ आदिअंत
कसो निवाहहै ॥ एई जगरत्न आरियतकौं परखियार सांचे ले जु
वैडारि नरत्नाकोलाह है ॥ मानुष विवेक विना पसु कीसमान
नांतातै यह वात वीकपारखीसलाहहै ॥ ४४ ॥ देवलछनमत
विरोध निराकरण ॥ छप्पै ॥ जो जग वस्तु समस्त हस्तल ज्यों नि
हारै ॥ जगजनकों संसार सिंधु के पार उतारै ॥ आदिअंत अवि
रुद्ध वचन सबकों सुखदानी ॥ गुनअनंतजिसमांहि दोषकी
नांहि निसानी ॥ माधौ महेस ब्रह्मा किधौं वर्द्धमान के बुद्ध देहे पे
हचित नजास तिसकेचरन नमो मफि देव वहै ॥ ४५ ॥ यज्ञनिंदे
दासवया ॥ छप्पै ॥ कहे पसू दीनसु नि जाप कके रथ्या मो हि होमत
कुलासनमें कौनसी वडाई है ॥ स्वर्गसुषमें न चहुं दे हम सुफ़ियां
न कछुं घास षाय रहूं मैरे यही मनि नाई है ॥ जो तुं यह जानत है
वेद यो वषांनत है जग्य जलौ जीव पावै स्वर्ग सुखदाई है ॥ डा
रे कों न वीर या मैं अपनें कटुंब ही कुं मोहि जिन जाले जगदीस
की दुहाई है ॥ ४७ ॥ सातोंवारकानांम ॥ छप्पै ॥ अघअंधेर आदि
त्य नित्य लायकरि जैसो मोष समंघार ताप हरतपकरि लिज्जे
जिनवरपूजा नियमकरौ नित मंगल दायन्य बुधसंजम आदि
रीधरै श्रीगुरुपायपन्य निजवितसमांन अनि मांतवितसुकर
सुपलहहान करयो सुनि सुधर्म षटकर्म नजिनरजनवलाह
लेहत यो सुनि सुधर्म षटकर्म न जिनरजनवलाह लेहनर ॥ ४८ ॥
दोहा ॥ ए ईछह विधि कर्म्म नाजि साता विसनतजि वीवांस ही पेय
कुंचिहै ॥ क मक्रमअनचजलती साध ॥ ऐसात विसनाहोहा ॥ जु
वा षेलन मांस मद वेश्या विसन सिकार ॥ चोरी पररमनी रम
न ॥ सातों या पनिवारि ॥ ५० ॥ जुवा निषेद ॥ सकल पाप संकेत आ
पदा हेत कुलछन ॥ कलह षेत दारिद्र दीसत निज अपछन ॥ गुण
समेत जस सेत केतरवि रोकत जैसें आगुन निकर निकेत लेतलन
विबुधजन जैसें ॥ जूवा समांन इस लोक में आन अनीति न पेषि

रं॥इसविसनरायकेषेलकोकौतिकइन्हिदेषिए॥५१॥मांसनिषेध
छप्पै॥जंगमजियकोनासहोयतवमांसकहावै॥सपरसआकृ
तिनामगंधउरघिनउपजावैनरकजोगनिरदईषांहिनरनीच
अधरमी॥नांमलेततजिदेतअसनउत्तमकुलकरमी॥इसनिप
टनिषिद्धअपवित्रअतिक्रिमिकुलरासिनिवासनित॥आमिषअ
तइसकेसदावरजोदोषदयालचित॥५२॥मदनिषेधसवैया
कामिरासकुवाससरायदैहैसुचितासवछीवतजायसही॥
जिसपांनकीयेसुधिजातहियेजननीजनजानतनारिय
ही॥मदिरासमऔरनिषिद्धकहांयहजांनिभलेकुलमैंनगा
हीश्रे॥गहैवनकोवहुजीवजलौजिनमूढ़हिनिकेमतलीनक
ही॥५३॥वेस्यानिषेधसवैया॥धनकारनपापनिप्रीतिक
रानहितोरतनेहयथातनको॥लवचाषतनीचनिकेंमुंहकीसु
चितासवजायछियेजिनको॥मदमांसवजारनषायसदाअंध
लेविसनीनकरैघिनको॥गनिकासमलेसवलीननयेछिगहै
छिगहैघिगहैतिनको॥५४॥आषेटनिषेधसवैया॥थकानम
मेंवसेऐसेअननगरीवजीवप्रांननसोंप्यारज्ञांनपूंजीजिन्ह
पैहैहैकायरसुभावधरेकाकोदीनताहकरैसवहीसोंडरेदां
तलियतनरहैहै॥काहूंसोंनरोषनिकाहूपेनपोषचहैकाहू
कोपरोषपरदोषनांहीकहैहैनेकस्वादसारिवेकोंऐसीमृगीम
रिवेकोंकहाहारकगोरनिकेसोकरवहैहै॥चोरीनिषेधछ
प्पै॥चितातजेनचोररहतचोकायतमारेपीटेंघनीविलापकिलो
कनिरदेकरिमारै॥प्रजापालकरिकोयतोपसोरोपहडावैम
रमहादुषदोषफिरिप्रतिनीचगतिपावै॥अतिविपतिमूलचोरी
विसनप्रगटत्रासआवैनजरि॥परवितअदत्तअंगारगनिनिन
तिपुनपरसैंनकरि॥५६॥परस्त्रीनिषेध॥कुगतिवहनगुण
गहनदहनदावानलसीहै॥सुजसचंदघनघटादेहकृसकर
रनछईहै॥धनसरसोषनधूपधर्मदिनसांझसमानी॥विपतिभुयंगमव
सवाईवेदवषानी॥इहविधिअनेकऔगुनभरीप्रांनहरनफांस
प्रवल॥५७॥परस्त्रीत्यागसवैया॥दिवदीपकलोयवनीवनिताज

इजीवपतंगतिहायरते॥ उषपावतप्राणीमावलहै॥ वसेजनर है
दगसौजरते॥ ईसमांतिविचछनआंषिनकेवसिहोयअ
नीतिनहीकरते परतीलषिजेधरतीपरषेंधनिहैथते
हैथनिहैनरते॥५८॥ दिटसीलसिषिरोममनकारिजेमें
जगमेंजमआरजतेईलहैंतिनकेजुगलोचनवारिजेहैं
ईसनोतिअवारजआपकहै॥ परकोमिनिकोंमुषचंद
चितेंमुदिजोहिसदायहटेवगहैं॥ धनिजीवनहैतिनजीव
नकोंधनिमायउनेंउरमोंकिजेहैं॥५५॥ कुशीलनिंदा
सवैया॥ जेपरनारिनिहारिनिलज्जहसेंविकसेंबुधि
हीनवडेरेकेविनकीजिमपातलिदेषिजुसीउरकेव
रहोतघनेरेहै जिनकीयहटेववहै तिनकोंईसनों
अपकीरतिहेरैं॥ कैपरलोकविषेंविजुरीकरिहैंनत
षंडसुखाचलकेरे॥५६॥ एकएकअसतसोनष्टन
येतिनकेनाम॥ छंद॥ छप्पै॥ प्रथमपंडवाजूपषेलिज
वोसवषोयो॥ मांसषायवकरायपायविपदावज
रोयो॥ वेनुजानैमदपानजौभजादेगनदकैचारु
दत्तसुवसहैविसिवाविसनअरकेहतबुह्मदत्तआ
षेटसोछिजसिवनतिअदतरतिपररमनिरांचिरोव
णगयौसातोसेवतकोंनगति॥५७॥ दोहा॥ पापनमन
नरपतिकरैंनरकनगरमेंराज॥ तिनिपठयेपायक
विसनतनिजपुरवसतीकाज॥५८॥ जिनकेजिनकेव
चनकी वसीहियेपरतीति विसनप्रीतितेनरतजे
नरकवासभयभीत॥५९॥ कुकविनिंदा सवैया॥ ३१॥
रागउदैजगअंधभयोसहजेसवलोगनलाजगमा
ई॥ सीषविनानरसीषिरहेविसनादिकसेवनकीसु
घराई॥ तापरिरीतिफिरचेसवकाव्यवडेनिरदेंकुमति
काविनाई॥ औरअमूजनकीअषियोमनुदीनरिये
हलितेरतअमाई॥ ६०॥ कंचनकुंचनिकीउपमाक

हिंदे तउरोजनुकौं कवि वारें ९ परिग्रोंम विलो किनिकें म
ति नील ककीट कनी टकि वारे॥ यों सत्तवे न कहेन कुंपं
डित घेजुगा श्रीमिष पिंड उघारे साधन कार दसी मुष छा
रन घेरें ह हेत कि घौ कुंच कारे॥ ९५॥ ये बुधि मलिन रत्रु
वतें सम ज्यौं न कहौं कि मत रिषनाई॥ दीन कुरंगनि के
तनमैं तिन दंत धरें करुनां किनि आई॥ क्यौं न करी ति
नजीवन के जे काम करें परकौं उपदेई॥ साधु अनुग्रह
दुरजन दंड उवेसध ते विसरी चतुराई॥ ९६॥ मन हस्ती व
र्नन॥ छ॥ ग्यांन महावत डारि सुमति सांकल गहि षंडे
गुरु अंकुस नहिं गिनें ब्रह्मव्रत विरष विहंडे करि सि
द्धांत सिर न्हांन केलि अघरज सौं ठानें करन चपल
ता धरें कुमति करणी रति मानें डोलत सुछंद मद म
त्त अति गुण पथिक न आवत उरें वैराग षंभ बांधे
नू सहि मन मतंग विचरत बुरे॥ ९७॥ गुरु उपकार वर्नन॥
सवैया॥ ढहीं सी सराय काय पंथी जिय वस्यो आय रत
नत्रय निधि जीमें मोष जाकौं घर है॥ मिथ्या निसि कारी
जहां मोह अंधकार भारी कामादिक तस्कर समूह न
कौ थर है॥ सोवे जो अचेत सोई षोवे निज संपदा कों
तहां गुरु पाहरू पुकारें दया कर है॥ गाफिल न हूजे भ्रा
त ऐसी है अंधेरी रात जागि रे बटोही इहां चोरन कौ डर
है॥ ९८॥ कषाय जीतन उपाय॥ सवैया॥ षेम निवास छि
मां धुवनी॥ विन क्रोध पिसाच उरै न टरैगो॥ कोमल भा
व उपाव विनां यह मान महा मद कौन हरैगो॥ आरज
सार कुठार विनां छल वेलि निकंदन कौन करैगो॥ तो
ष सिरोमनि मंत्र पढै विन लोभ फणी विष क्यौं उतरै
गो॥ ९९॥ मिष्ट वाक्य॥ सवैया॥ २३॥ काहे कौं बोलत बोल बुरे
नर नाहक क्यौं जस धर्म गमावैं कोमल वैन चवै किन
क्यौं न लगे कछु है न सबै मन भावें तालु छिदै रसना

नमिलैनघटैकछुअंकदरिद्रनआवैजीवकहैजियहो
ननहिंसुकजीसवजीवनकौंसुषपावैं।७०।धीरजदिव
वन।सवैया।आयौहैअचानककनयोनकअसाताकर्म
ताकेदूरिकरिवेकौंवलीकाहूहहियै।जेजेमननायेते
तेकुंमायेसुषपायआपतेंडीअवआयेनिजउदेका
ललहियै।येरेमेरेवीरकहेहोतहैंअधीरयामेंकाहूं।
कौंनसीरतंत्रकेलौयेकसहियै।नयेदलगीरकछूपीर
नविनविजायषाहीतेंसयानेंलेतमौनसंगीररहियै।७१।
होनहारउर्निवार।केसेकेसेवलीन्नपरिविष्यातनये
अरिकुलकांपैनेकमोहकेविकारसौं।लंघेगिरसायर
दिवायकरसेदियैंजिनुंकायरकीयेहैंनटकीरनहका
रसौं।ऐसेमांहामानीमोतीआयेंहूनहारिमांनीक्यौंहो
नउतरेनेकमांनकेपहारसौं।देवसौंनहारेकुनिदानेसें
नहारेऔरकाहूसौंनहारेपरिहारेहोनहारसौं।७२।का
लसामर्थवर्ननं।लोहमईकेईकोटनिकीवोटकरोकं
गुरेनतौपरोपराबोपटनेरिकें।इज्वेदवौकापतचौक
सक्केचौकीदेऊंचावरंगचमुंचऊंवौररहोघेरिकें।नहो
येकनौहरावनायवीचिवेवोकुंनिवोलौमतिकोऊजो
बुलावेनौवटेरिकें।ऐसेपरपंचपांतिरचौकौंननौति
नौतिकेंसेंहूनछोरेकालदेषौंहमहेरिकें।७३।गणांनी
जीवउषीकथनासवैयाइकतीसा०।अंतकसौंनछूटे
निहचेपरिमरिवजीवनिरंतरधूजें चाहतहैचितमेंनं
तिहीसुषाहोयनलाननमनोरथपूजें।तोपनिमूढवंधें
नयअग्रासवधोवडबदवीनलनूझें।छोडिविचछिनए
जडलषिनधीरजधरिसुबीकिनसूजें।७४।धीरजध
रण।सवैया।वोधनलाननिलाररलिषौंलघुदीरघसुं
कनकेअनुसारेंसोलहिहेकछूफेरनहीमरूदेसकेंद्वेर
सुमेरसिधारेपघटनिवाधिकहीवहहोयकहौकरिअा

वतसोचाविचारै कूंपकिधौंभवसागरमैंनरगागरमांन
मिलैजलसो॥७५॥आसनदीव मोहसेमहांनउच्च
चेतसोटरिआईतिहूंजगभूतलकौपायविसंभरीहै
विविधिमनोरथमैंनभूरिजलभरीवहै॥तिसनातरंग
तिसौंआकुलतोंघरीहै॥परिभ्रमभोरजहांरागसोम
करतहांचिंतातटतुंगहैषधर्मतरुहिटरीहै॥औसीयु
हाआसानांमनदीहैअगाधताकोंधन्यसाधधीरज
जिहांनचदितरीहै॥७६॥महामूढवर्ननसवैया॥३१॥अ
जीवनिकितेकतामैंकहांवातीरह्योतापैंअधकौन
कौनकौरेरिफेरीहौ॥आपकोचतुरजानैऔरनकौंम
दमांनैंसाहूंहोतआईहैविचारतसवेरहौ॥वांमही
केचषनसोंचितवेंसकलचालतउरसोनचोघेकेरे
राख्योहैंअंधेरहौ॥बांहेवांनतांनिकेअचोनकहीअ
सोजमदिसिहैंमसोनथांनहोरनिकोंटेरहौ॥७७॥के
तीवारस्वोजसंघसोवरासियालसोपसिधुरसारंग
समांसरीतदेरैपरयो॥केतीवारचिहूंचिमगादरवके
रचिताचक्रवाकचातकचंडलतनजीधस्यो॥केतीवार
कछमछमेंडकगिडोलामीनसंखसीपकोडीव्हेजलं
कोजलेमेतिस्यो॥कोउकहैंजाहरेतिनोवरतोबुरोमा
नैयोनमूढजानैमैंअनेकवारव्हैमस्यो॥७८॥दोहवर
न॥छप्पै॥करिगुणअंमतपांनदोषविषविषमसमप्प
ये॥वंकचालनहिंतजेंजुगलजिव्हामुषथप्पें॥तप्पे
तिरंतरहिउद्वेदंपररीपनकच्चे॥विनकारनदुखकरै
वैर॥कोकरैंकवऊंनमुच्चे॥वरमौनमंत्रसोंहोपवसि
गातिकीयेहोतिहैं॥वऊमिलवानतातैंसहीदुरजनअ
रपसमांनहै॥७९॥विधसलाकीसोवितकी॥सज्जनजो
रचेतीसुधारससोकौनकाजदुष्टजीवकीयेंकालकूट
सोकहेरहीदातानिरमोपेफेरियापेक्योंकलपहष॥

ग्राचिकविचारैलघुतिनकूंतैहैंसही॥ईष्टकेसंजोगसोनभ
सीरोघनसारकछूजगतकौंष्यालइंद्रजालसमहैवही॥ग्रे
सेंदोयदोयवातदीसैविधिएकसीहीकाहेकूंवनांईयेरे
घेघोंमनहैंयही॥८०॥चौतीसतीर्थंकरांकेचिह्ननांमागऊ
वृषगजराजवाजवानरमनमोहैकोककमलसांथि
यासोमसफरीपसिसोहो॥सुरतकगोडामहिषसुरकूं
तिसेहाजोनेवज्रहरिणअमीनकलसकछुपकरस्रा
नो॥सरपत्रसंखाअहिराजहरिरिषवदेवजिनआदि
ये॥श्रीवर्द्धमानलौंजांनियेचहनचारुचौवीसये॥८१॥
आदिनाथजीकेभवांतरनांम॥आदिजयवरमाहजैंम
हावलभू८पतीजेंसुरगईशांनललितांगदेवथाये
हे॥चौथेंवज्रजंघएहपांचमेंजुगलदेवसमकलैंछ्ठे
देवलोकफिरिगयोहें॥सातवेंसुबुद्धिरायआववेंअ
च्युतइंद्रनौमेंनोनरेंद्रवज्रनाभिनोजनयोहे॥दसेंग्र
हिमिंद्रजोनिग्पारहेंरिषभनांननाभिवंशाम्भघरकैं
सीसजन्मलीयोहे॥८२॥चंद्रप्रभजीकेभवांतरनां॥श्री
धर्मनृपतिपालिपकूंमीसुरगिपहलैंसुरयो॥कूंमि
अजितसेनछ्पेइनायकंइंद्रअचुतमैंथयो॥वरपद
मनोभिनरेसनिज्जेरवैजयंतविमानमें॥चेजनस्वाम
सातवेंभोनयेपुरचपुरांनमें॥८३॥शांतिनाथजीके
भवांतर॥श्रीषेनआरजफुनिसुरगाअमिततेजषेच
रपदपाया॥सुररविचूलसुरगाआंनतमैंअपराजित
बलिभद्रकहाया॥अच्युतइंद्रवज्रायुधचक्रीफिरिग्रै
हिमिंद्रमेघरथराया॥सरवारथसिद्धेसांतिजिनयेप्र
भुकीहादशपरजाया॥८४॥नेमनांथजीकेभवांतर॥
पहिलैंनवबनभीलइतियअभिकेतसेवघय॥तीजें
सुरसौधर्मचत्रमचिंतागतिनभवचर॥पंचमचौथेसु

अदलगहेवनितानचहैंलवलोननजानैंमौनिवहेय
दिलेदलहैनहिंनेमजहेहलरीतिपिछानैंजोनिवहैवि
तिपानईहैंपरिमोषतहैजिनवीरवषानैं।९०।अनुभव
पुत्रांसासण।जीवतअलपआयवुधिवलहिनतामेंअ
गमअगाधसिंधुकोंसैंताहिडांकहैं।हादशांगमूलये
कअनुतोअपुव्वकलाजनमदाघहारीघनसारकीस
लाकहैयहैंकसीषलीजैयाहीकोंअभ्यासकीजैयाकै
रसपीजैऐसोवीरजिनवाकहैं।यतनोहीसारयहीआ
तमकोंहितकारहोईलोमदारऔरआगेंदूकलाकहैं
।९१।श्रीभगवानसंअर्थनो।आगमअभ्यासहोउंसेवा
सरवज्ञकेरीसंगतिसदैवमिलैसाधरमीजनकीसंतने
केगुनकोववयानयहैंवांनिपरोमिटोदेवदेवपरऔगु
नकथनकीसवहीसोंऐनसुषदेनसुषवैन।नाषोनाव
नोत्रिकालराषोआतमांकथनकी।जोलोकर्मकाटषे
लोमोनकेकपाटतोलोयेतीवातहूजेपुन्यपूजौंआसम
नकी।९२।जिनमतउसंसा।दोहा।छ्येअनादिअनुजो
नमोंजगजीवनकेनेन।सवमतमंवीधूरिकीअजन।
मतहैजेन।९३।नलिनदीकेतीरकों।औरजतनकछु
हेन।सवमतघाटकुंघाटहैं।राजघाटहैजैन।९४।ती
ननवतमेंनरिरहो।यांवरजेगमजीवसमवमतनदे
कदेषिये।रतनकजैनसदीव।९५।यसअपारजगज
लघिमें।नहिंनहिंऔरईलाज।पाहनवोहनधर्मसव
जिनवरधर्मजिहाज।९६।मिथ्यामतमदिराछके।सव
मतवारेलोय।सवमतवालेंजानियें।जिनमतमतनहो
य।९७।मतगुमांनगिरवरटलो।वडेनयेमनमांहिलघुदे
षेंसवलोककों।कोहूतरतनाहि।९८।वांमहतसोंसव
मती।चितवकरतीनवेर।ज्ञानतैनसोजेनहीं।जोवनईत
नोफिर।९९।जोवजाजटिंगराषिकेपटपरषैपरवीन।

सोंतुमसोंमतकीपरषपावेंपुरषअमीत॥२५॥दोयपद
जिनमतविषैं॥नयनिहचैव्यवहार॥तिनिविनुनहेंसयह०
सिवसरवरकीपार॥२॥ सीकेसीकेसीकिहैं तीनलोककति
कुंकाल॥जिनमतकोंउपगारसबजिनभूमकरौंदयाल॥३॥
महिमाजिनवरवचनकी॥नहीवचनवलहोयजुजवलसौं
सागरअगम॥तिरेनताहकोयाध॥अपनेंअपनेंपंथकौंपो
षतसकलजिहान॥तैसेंयहमतपोषनौं॥मतिसमकौंमति
वान॥५॥ईससागरसंसारमें॥औरनसरनउपाय॥जनमज
नमहूंजोहमें॥जिनवरधर्मसहाय॥६॥अथयोंग्रंथकुंवोती
काओरोस॥आगरामेंवालबुद्धिन्हूघरबंडेलवालककेबा
लसेकवितककरिजानहैं॥ऐसेंहीकरतनयोंजैसंघस॥
बाईसवाहाकिमगुलावचंदआयोतिहिथांनहैंहरीसंघ
साहकेसुवंधर्मरागीनरतिनकेकहेसोंजोडकीनांएकगां
नहैं।फेरिफेरिबेरेमेरेआलसकोंअंतआयोजिनकीसहाय
यहमेरेमनमांनहैं॥६॥दोहा॥सत्रहसैंईक्यासिये॥पोसमासस
मलीन॥तिथिसेरसिरविवारकौंसकलसमझरनकीन॥७॥
॥अथ॥इतिश्रीजिनसतकसंपूर्ण॥अथपदलिषते॥:॥
मेरेमनमेंयहआरीयानिसचौरसुभगजिनकीमूरतिपरि
रहूंलुभारी॥मन०॥परमसांतिचिद्रूपसुषलषि॥रागवुद्धिविन
साय०॥मन०॥गुनसनमुषअरविमुषदोउपरि॥समतादिष्टि
धराई॥तुमसेतुमहीहोप्रभुताहुता॥आनयहनिधिपाई॥म
न॥अवजबलतकेचरननचेरो॥आपनकाजजमोई॥लहूं०
नेंदेनिजपदलनलोरहौं॥तुमगुणनकिसहारी॥मन०॥आर
तागईमन॥अणीमैंनिसिदितेध्यावोणीयादितुसाडीरहा
हीमनमें॥अणी०॥तुजविनमनुऔरनहिंसदा॥चितरहद
दरसणमें॥अणी॥१॥तेनुविनवेष्णामेंडासाडी॥नमतक्ति
ह्योनववनमें॥अणीव॥२॥देनयोंसुखकोंअवमेरें॥प्रभ
दीवानेतनमें॥अणी॥३॥अथसंबोधिपंचासिकालिष्यते॥

तें कारमकार। पंचपरमगुरु संत हैं। तीन भवन में सार वंदौं म-
नवचकायसौं।१। आतमज्ञान न मोहि। छंदभेद समझौं नहीं। बु-
धि थोरी किम होय। भाषा अक्षर बावनी।२। आतम कवि न उपा-
य। पायो नरभव क्यों तजो। राई उदधि समां ना फिरि ढूंढी नहि पा-
ईये।३। इ विधि नरभव कोय। पाय विषैं सुष सौं रमैं। सो सब अ-
मृत षोई। हलाहल विष आचवैं।४। ईस्वर भाषेउ हनरभव म-
ति षोवे वृथा फिरि न मिलै ईह देह। पिछतायो वक होईगौ।५। उ-
त्तम नर अवतार। पायो उषकर जगत में ईजिय सौंच विचार-
कछू तौ तासा संग लीजिये।६। ऊरध गतिकौ बीज धरम जो
न आचरैं। मानुष जो निलहं त कूंप परैं कर दीप लै।७। रिस-
न जिके सुनि बैन। सारमनुष्य सब जोनि मैं। ज्यौं मुष उपरि नैन
ना नुदि पै आकास मैं।८। दो ढाल। री फेरी फेर नरभव पाया कु-
लजाति विमल तूं आया। जो जैनधरम नहिं धारा। सब ला-
भ विषैं संग हारा।१। लषि बात ही ये गहि लीजे। जिनकथि-
त धरम निति कीजे। भव उषसागरकौं तरिये। सुषसौं नौका
जो चरिये।२। अरि लीन विषैं मंक भरिया। भ्रममो हि जमो-
हित करिया। विधिना जब दई घुमरिया। तव नरक भूमि तूं परे-
या।३। रानरक रिधरम अगाऊ। जबलौं धन जोवन चाऊ। म-
जबलौं नहिं रोग सतावै। तौ हि काल अचानक पावै।४। एनाते-
रे आसन नैना। जबलौं तेरी दिष्टि फिरैना। जबलौं तेरी बुधि स-
वारी। करि धर्म अगाऊ नारी।५। वो सजल ज्यौं जोवन जे है। करे-
ध मजरा पनौ अहै। ज्यौं बूढा बैल थके है। कछू कारिज करि न
सके है।६। अरे मिण संयोग वियोगा। छिण जीव षिणा मृत रोगा।
षिण मैं धन जोवन जावै। किहि विधि जग मैं सुष पावै।७। अब-
र घन जीवन जे हो। गजकरण चपल धन एहो। तन दर्पण छा-
या जाणौं। एवात सचे उर आणौ।८। ढाल राग चंद के बागचं
षोमो रियौं। जय ज मिले नित आरी। क्यौं नही धरम सुणी जे
जैन तिमर नित हीन। आसन जोवन छीजै।१। कमला चलैं

नपैड सुषदा के पारा। देह थकै व हो पोषि। क्यो न लषे संसार
२। षिन नहिं छोडे काल। जो पाताल सिधारै वैसे उदधि केवी
च जो वर्जे हरि पधारै। ३। गण सुर रोषे तो हि। रोषे उदधि मथ ई
या तोय न छोडे काल। दीप पर्वत पर ईया। ४। चरगौ सो तो
दो न। मो णि औषदि सव यो ही। मंत्र जंत्र करि तंत्रा। काल मे
टै नहीं क्यो न हीं। ५। नरक तणां दुष भूरि। जे तें जीय सं महा रे
तनव न रह चैन्या हा। ६। अव सव पडि पिहडा रैं। है चेत न गरभ
मझारि। नरक अधिक दुष पायो। बाल पणां को षेल। सब जा
प्रगट ही गांयो। ७। छिन में धन को सोच। छिन में विरह सता
वें। छिन में ईष्ट वियोग। तरुणा कमल सुष पावे। ८। रागसोर
ठा। जुरा पै पींड षजे सह्यो। मन भाई रे। सो क्यो भूल्यो तोहि चेते
मन भाई रे। ज्यो तूं विषया सो लग्यो मन भाई रे। आतम हित न
हिं होय चेति मन भाई रे। १। ऊ इपाय करि पुन्यो मन भाई रें
गारन वस्यो वसि पाप चेति मन भाई रे। सात घात लहि पायेतें
मन भाई रे। अजहो या परवत आप चेति मन भाई रे। २। नहिं
ज राग द आई हैं। मन भाई रे। ३। नहिं ण कहां गयो जन्म जन्
चेति मन भाई रे। जो न चिंत तें केरह्यो। मन भाई रे। ये सब है
पर तह्न। चेति मन भाई रे। ४। उप सुष को नव दधि परयौ म
न भाई रे। पाप लहरि दुख देई। चेति मन भाई रे। पकरयो धर्म
जिहाज जो। मन भाई रे। सुष सो पार करे हि। चेति मन भाई
रे। ५। ठीक रहे हैं धन सास तो मन भाई रें। होई न रोग न काल
चेति मन भाई रे। जब लग धर्म न छांडिये। मन भाई रे। धर्म
कथित जिन धर्म रे। चेति मन भाई रे। ६। डरप तजो परलो
कतें। चेति मन भाई रे। चाहत सिव सुष कार। चेति मन भाई
रे। क्रोध लोभ विषया तजो। चेत मन भाई रे। कोटि कहैं अ
घ जाल चेति मन भाई रे। ढील न करि आरंभ तजो। मन भा
ई रें। आरंभ में जीव घाव। चेति मन भाई रे। जीव घात में अ
घ वढे। मन भाई रे। अघ सो नरक निपात चेति मन भाई रे। ७।

नरकआदितिकूंलो।कर्मो।मनमाइरि०।येपरमवडमरासिचे
तिमनमाइरि।सोसवपूरवपापतें।मनमाइरि।जीवसेहेवसिआ
स०।चेतिमनमाइरि।८।ढालवीरजिनंदकी।तेहूंजममेंसुर।
आदिदेवजी।सोसुषफलमसार।सुंदरतामनमोहनीजी।सो।
देषमीविचारिरेमाई।तधर्मअवविचारि।१।थिरताजसमु।
षधरमसोजीपावेरत्तनभंडार।धरमविनांजंणीलहेजी।ड।
षनानापरकाररेमाई।।तअवधरमविचार।२।दानधर।
मतेसुरलहेजी।।नरकलहेकरिपाप।।ईविधिजांणोंकोप
डेजी।।नरकविषेंतंआपरेमाई।अवतूधरमविचारि।आदा
नधरमतेंसुरलहेंजी।।नरकलहेकरिपाप।ईहिविधिजां।
णोको।पडेजी।।नरकविषेंतूंआपरेमाई।तूंअवधरमवि।
चारि।३।धरमकेरतसोभालहेजी।हयगयरथसवसाजप
षकदानघनावस्योजी।घरिआवेंमुनिराजरेमाई।तूंअ।
वधर्मविचारि।५।नवलसुनगमनमोहनोजी।।सुजनीक।
रजगमांहि।रूपमधुरवचधर्मस्योजी।उपकोमायेंनांहि।
रेमाई।।तूंअवधर्मविचारि।६।परमारथरावातहेजी।मुने
कोसमदारेमाई।।तूंअवधर्मविचारि।७।किरिमुनिकह।
णोधरमसोजी।गुरुकहियेनिरग्रंथ।देवअठारादोवविनांजी
एसहीसिवपंथरेमाई।तूंअवधर्मविचारि।८।विनधनघर
सोभानहीजीदांनविनांतेंनिजेह।जेसैविषयातापसीजी०।
धर्मदयाविनतेहरेमाई।तूंअवधर्मविचारि।दोहा।९।मोह
धनहितकरअघकरअघसोधननहिंहो।या।धरमकरतध
नपाईये।मनवचजांणोंसोय।१।मतिजीवसोचेकिंवत।होणं
हारसोहोय।जेअक्षरविधिनांलिषे।ताहिनमेटेकोय।२।ण
हवहवातेंवडकरे।पैठैसागरमांहि।सिषरचढेवसिलोमके
अधिकोपावेनांहि।३।रातिदिवसचितेंचिंता।मांहिजेरेमन।
जीव।सोदीयोसोपाईयो।औरनलहेंसदीव।४।लांगिधरम
जिनपूजिये।सांचकहोसवकोरी।चित्तसपमूचरणचलमाई

क्षुधातृषाहिमउसनडंसमसकदुषभारी।निरावरनतनअर
तीषेदउपजावननारी॥चर्य्याआसनसैनदुष्टदायकवधबंध
न।जाचैंनहींअलाभरोगतिनफरसनिबंधन।मलजनित
मानसनमानवसप्रज्ञाऔरअग्यानकर।दरसनमलीन
बाईससबसाधुपरीसहजांनिनर॥१॥दोहा॥सूत्रपाठअनु
सारयो।कहेपरीसहनाम।इनकेदुषजेमुनसहैंतिनप्रति
सदाप्रनाम॥१॥अथवरवीरनामछंद।क्षुधापरीसहवरननं
अनसनऊनोदरतपपोषं।तौंपाषमासदिनवीतिगयेहैं।जो
नहीवनैंजोगभिक्षाविधिसूकिअंगसवसिथलभयेहैं॥त
वेतहँदुसहभुषकीवेदनसहतसाधनहीनेकनयेहैं॥तिन
केचरनकमलप्रतिप्रतिदिनहाथजोरहमसीसनयेहैं॥१॥त्रि
षापरीसह॥पराधीनमुनिवरकीभिषापरघरलेहिकहैंक
छूनांही।प्रकृतिविरोधपारनैंभुंजतबढतप्यासकीत्रासत
हांही॥ग्रीषमकालपित्तअतिकोपैलोचनदोयफिरेजब
जांहीनीरनचहैंसहैंतिसितेमुनिजैवंतेवरतोजगमांही॥२॥
सीतपरीसह॥सीतकालसवहीजनकांपैंषडेंजांहांवनविषें
रहेहैं।झांझावायवहैंवरषारतिवरषतवादलझूमिरहेहैं।
तहांधीरतटनीतटचौपटतालपालपैकर्मदहेहैं॥सहैसंभा
लसीतकीवाधातेमुनितारनतरनकहेहैं॥३॥उसनपरीसह
भुषप्यासपीडैउरअंतरप्रजुलैआंतदेहसवदागैं।अगनीस
रूपधूपग्रीषमकीतातीवालीझालसीलागै।तपैंपहारता
पतनउपजेकेपेंपित्तदाहज्वरजागैं॥इत्यादीगरमीकीवाधास
हतसाधधीरजनहीत्यागैं॥४॥डंसमंसपरीसह॥डंसमंसमा
षीतनकांटैं।पीडैंवनपंछीवहुतेरैं।डसैंव्यालविसपालवी
छूलगैषजूरेआनीघनेरे।सिंघस्यालसूंडालसतावैंरीछ
रोजदुषदेहिवडेरौं॥ऐसेकष्टसहैंसमभावनितेमूनिराजहरौ
अघमेरौं॥५॥नगनपरीसह॥अंतरविषैवासनावरतैंवाहिरलो
कलाजभयभारी।तातैंपरमदिगंवरमुद्राधरिनहीसकैदीन

वा॰ ६
५६

संसारी॥ ऐसी इघरनंगनपरीहजीतैसाघसीलविरमारी॥ निर विकारबालकवतनिरषैंतिनकेपापनटोकहमारी॥ ६॥ ऐसि नपरीसहदेसकालकोंकारणलहिकैहोवऐवेनअनेकउ कारो तवतेचिअहोहिजगवासीकलमलाघथिरतापनछा रो॥ ऐसीअरितपरीसहजुपजतलहोधीरधीरजनरधारेंअसे साधनकोंनरऐतरवसोनिरंतरनामहमारे॥ असत्रीपरीसह तेउघिनकेहरिकेंपसरेपत्रमघाकरिपावसोचयेता तिन कोतनकदेषिमोहवाकोकोटोकसरदीनताजयेता॥ ऐसे पुरषपहाडजुडेवनभूलयपावनतीयलेदपयेपत॥ ष्टस्व घमासमोधसोहेसीमेजसमेरतिनकोनहीकयसचीचर्या परीसहण॥ चारिहोयपरवोनपरषियथवलतईष्टईतजेत जहोतानें॥ कोमलपापकविनघरापरिघरतधीरवोघान हीमाने॥ नागतुरंगपालकीचढीतेतेसवाददरयादिनघो ली॥ घोसुनिराजब्रह्मचयडिषतवदिढकरमकुलाचलनें नो॥ ७॥ असादपरीसह॥ फागुणमसाणसैलसिलकोटर जिवसतहोसुघनुहेरे॥ परमितकालरहेनिश्चलतनवारवा रआसननहीफेरा॥ मनुषदेवअवतजपसुकितवैवेविपतर आनिजवधेरा॥ वोरनतजनजेथिरतापदतोगुरसदावेसो नरमेरो॥ सैनपरीसह॥ जेमहानसोनेकेमहलनिसुदरसेजतें वसुषजोवें॥ तिअवअचलअंगयेकासनकोमलकविन॥ भुंमिपरिसोवें॥ ऐसीपाहनकंडकवोरकोकरीगडत —— सेनपरीसहजातनतसुतिकमकोलिमोघोवो॥ १०॥ उसुव यकपरीसह॥ जगतजीवजावंतचराचरसवकेहितसव कोसुषदानी॥ ताहिदेषिडरवचनकहेडरपापंडढिगपह अनिमानी॥ मारोचाहयेकरीपापीऐतपसीनेषचोरहै छानी॥ ऐसेंवचनयानकीपिरपाडिमोठलिवोटेसुनिपां नी॥ ११॥ वघवंधनपरिसह॥ निरपराघनिरवेरमहांसुनि तिनकोडसलोकामिलिमारेकेरपेविषेनसोवायसकेर

पाढ़कमें परजालौ तहां कायन ही करै कदाचित पूरब कर्मवि
पाक विचारौ समरथ होय सहैं वध बंधन ते गुर सदा सहाय ह
मारें॥२३॥ जाचन परीसह॥ घोर वीर तप करत तपोधन भये षी
न सूकी गल बांही॥ अस्थि चाम अवशेष रहे तन नसां जाल
झलकै तिस मांही॥ औषधी असन पांन इत्यादिक प्रांन जा
उ पर तजौं चतनां ही॥ दीरघ अजाची वृत्त धारै करै हिं न मलि
न धर्म पर छांही॥२४॥ अलाभ परीसह॥ एकवार भोजन की
विरया तैं मुनि साधु बसती में आवें॥ जो नहीं बनै जोग की वि
रषा विधि तो महंत मन षेद न लावें॥ ऐसो भ्रमत बहुत दीन
बीते। तब तप विरधि भावना भावें॥ यों अलाभ की परम परी
सा सहै साधु सो ही सीव पावें॥२५॥ रोग परीस्या लीषते॥ वात पि
त कफ श्रोणत चारों ये जब बधे घटे तन मांही॥ रोग संजोग सो
गतन जे परि जे जगत जीव कायर होइ जाही॥ ऐसी विधि वेद
ना दाह न सहे तुरत उपचार न चाहें॥ आतम लीन देह सो विर
कत जैन जती निज नेम निवाहें॥२६॥ तिन सय परीसह॥ मुनि के
तिन अरतीष न कांटे कठिन मांसरी पाय विदारे॥ रज उड़ि आ
य पडे लोचन में। तन क पास तन पीर विथारै तौ यह पर सि
हाय नहीं बंछत अपने कर सौं काढि न डारैं॥ यों तीन परास परी
सा वीते गुरु ज्ञानी भौ तरन हित धारै॥२७॥ मल परीसह॥ जाव नि
व जिल नहीं बलज्यो॥ विन नगन रूप बन थां न बरे है॥ चलेप
सेव धुप की वरषा जेड जघुली सब अंग परे हैं॥ मलिन देह कैं
दे षि महांमुनि मलिन भाव उर नांही करे हैं॥ यो मल जनति
परीसह जो तित तिनैं हाथ जोरि सीस धरे हैं॥२८॥ सतकार पु
रसकार परीसह॥ जे महांन विद्या निधि विजई चिर तपसी
गुन अतुल धरे हैं॥ तिन की विनय वचन सौं अथवा उठि प्र
णांम जन नांहि करे हैं॥ तो मुनि तहां षेद नहीं मानें उर मल
लीनता भाव हरे हैं॥ ऐसें परम साध के अहनि सि हाथ जो
रि हम पाय परे हैं॥२९॥ प्रज्ञान परीसह तक परीसा लिषते:

तर्कछंदव्याकरणकलानिधिआगमअलंकारपढिजानैं।जाकीसु
मतिदेषिपरवादीविलषेहोयलाजकरआंनेजैसेंसुनतसमुद्रके
हरिकौमलगयंदनागकआपमांनैं।ऐसेंमाहाबुधिकेभाजन
येमुंनीसमुदरंचनगानैं।२०।अज्ञांनपरीसहा।सांमग्रांनवर
तेनिसवांसरसंजमअरपरमवैरागी।पालतउंपतागयेहिं।
नदीरघसकलसंघममतापरित्यागी।अवधिज्ञांनअथवा
मनपरजेकेवलकिरणअकनहींजागी।योवीललपन।
हींकैरतपोचनसौंअज्ञांनविजायेवडभागी।२१।अदरसन।
परीसहणे।मैंवीरघोरघोरतपकीजो।अजोरिधिअतिस।
यनहींजागें।तपवलसिधिहोहिसवमुनिसुनसोनोवांत।
कुवसीलागें।योकदाचिमनमेंनहींचिंततसमकतिसुध
सांतरसपागें।सोईसाधअदरसनविजई।ताकेदरसन।
सोअघनांगें।२२।।इतीबाईसपरीसासंपूर्णं।।अथधरम।।
दोहा।।येहरीतीसैसारकी।जीनेजांणौसवकोय।।तातधरमसं
नेहकरी।ईममरतासंगीहोइ।।२७।।धरमसारसंसारमेंधर
मकरतसवहोइ।धरमविनांचारूंगतीरुलें।धरमकरौं
सवकोइ।।२८।।औरमिथ्यातसवहीपरिहरौ।येनाइ।२०।श्री
।।अथसंमेदसिषरविलासभाषालिष्यते।।निर्वाणकांडलि०
श्रीजिनवरकेपूजिपदसरस्वतिसीसनवायगणधरमुनिके
चरणनमिभाषाकरौंवनाय।चौपई।श्रीसंमेदसिषरसुष
धांम।।तापरिवीसकूंटअभिरांम।तिनतेंतीर्थंकरमुनि
राज।मुक्तिगयेवेधर्मजिहाज।।२।।तिनकीसंष्याकहोंवनो
य।।अरकूटनकौंनांमसुनाय।जिनकेदरसणकौफल
कहौं।याकेकहेमहासुषलहौं।।३।।प्रथमसिद्धवरकूंट
गनीस।।अजितनाथदेआदिमुनीस।।येकअरबअरु
अस्सीकोडि।चौवनलाषकुंकरजोडि।।येसवमोखग
येधरिध्यांन।तिनकौंनमौंछोडिअभिमांन।कूंटतणौ
दरसणफलयेह।कोटिवतीसउपवासकहा।प।धवलसु

तजेरिषराजतीर्थंकरसंभवमाहाराजः।नोकोडाकोडीगुण
माला।लक्षवहत्तरिसहसविंयाला।६।पांचसैंत्रिंवपुरकोंग
येतिनकोंध्यांनधरेसुषये।कुंदरसफलषोषधजा।।।वी
यालीसलाषयेमोनि।७।।अभिनंदनकोंआनंदकें॥

।अथ चरचासतक ग्रंथानतरा भनीकृति भाषा केवत लिष्यते।
जेमरवणप अलोक लोक इकंतेउवत देषे हस्तांमल ज्यूं हाथली क
ज्यूं सरव विसेषे।ऊहै दर्व गुण परजकाल त्रय पवर्तमान सम।दर्पण
जेमप्रकासना समल कर्म महातप।परमेष्टी पांचो विघनहरन मंग
लकारी लोकमैं। मनवचनकाय सिरलाय गुन आण दसों दिसों कमैं
१।वंदों नेमजिनंद चंद सवकौ सुषदाई।वल नारायण वंद सुकठ
मणसोभापाई।अंतर इंद्रवतीसजन वनचालीसैं अवि।रविससे
चक्री सिंघ मृग चौवीसौं थावे।सव देवनिके देव जिन सुगुरुनि
के गुरु राय हैं।कूजे दयाल मम हाल पै गुन अनंत समुदाय हैं।२।
अथ अकृतम चैत्यालै प्रतिमा संष्या स्तुति छप्पय।वंदों आठ के
रोरलाष छप्पन सहस्रानूं।सहस्र च्यार सैं असीएक जिनमंदिर जा
नूं।नौसैं पचीस कोरलाष त्रेपन सताईस।वंदो प्रतिमा सरव सह
स नौसैं अठतालीस व्यंतर ज्योतिक अगिनत सकल चैत्यालै प्रति
मां नमो।आनंदकारण पहार संवफेरि नहीं नवव न नमो।३।अ
थ सिद्धनमस्कार छप्पय।लोकईस तन वात वसी सज गदीस चि
रजै।एक रूप वसुरूप गुन अनंत तन छाजे।अलवस्त परमेय
अगरलघु दरव प्रदेसी।चेतन अमूर्तीक आठ गुन अमल सुदे
सी। नितकिह जथ्य अवगाहय दमा सन परगास न लसे।सव प
य कलोक अलोक विधि नमो सिद्ध नकनप नसें।४।अथ आ
चार्य उपाध्याय मुनि तीनोंसाथ मैं तानैं साथ कौं वंदना छप्पय।आ
चारज उवझाय साध तीनों मन आकां घ एछतीस पचीस वीस
अरुआठ मनाकं तीनोंकोपद साध मुकतकौ मारग साधे भौ
तन भोग विराग राग सिव धा अराधै।गुनसागर अविचल मेर
समथी रज सौं परिसहे।मैं नमों पाय जुगलाय मन मेरो जी वांछि
त लहे।५।अथ लोक अलोक सरूप छप्पय।अमल अनादि स्व
नंत अकृत्तम अनमित अषंडसन।अचल अजीव अरूप पंच न
हिं स्व अलोक नञ निराकार अविकार अनंत प्रदेस विराजै।

सुहसु गुन अवगाहन सो दिस अंतन पाजै॥ या मद्धलोक न अतीन वि
थ अरुत आमिट अई सरो॥ अविचलित अनादि अनंत सम व्याप्ये
अ आदी सरो॥ धि लोक सरूप सबै ऊ न्याव॥ १ पूरव पछिम सात न र
क तलै राजू सात आगै यह्यो॥ मध्य लोक राजू एक रह्यो है॥ ऊचै व
टि गया ब्रह्म लोक राजू पांच न पा आगै घटा अंत एक राजू सरद्ह
है॥ दक्षन उत्तर आदि॥ मध्य अंत राजू सात ऊंचा चौदे राजू षट
द्रव्य अनस्थान स्था है॥ असंख्यात परदेस मूरती क कियो अ स [illegible] थं
रे ऐसै हरै कोन स्वयं सि-द्ध कह्या है॥ ७ पुन: तीनौ लोक तीनो वात
व लैवे टैस वगैरह बस्त्र छ अंड जाल तन चांम दे षिये॥ अधो
लोक वेत्रासन मद्धि लोक थाली अन निज रध मर्दंग गति अ सो
ही विशेषिये॥ कर कटि धारि पाव कौ पसारि नराकार भेद सु
रुप आकार अविनासी पेषिये॥ घरमांहि छीका जैसे लोक है अ
लोक वीच छीके कौ अधार पट निराधार लेषिये॥ ८॥ पुन: ती
न सै तितालराजू घनाकार सब लोक घनोदधि घन तन वात के
अधार है॥ तामै चौदै चौकूंटा त्रस नाडी त्रस थावर परे तीन से उ
नतीस थावर सदा रहे॥ दक्षन उत्तर छोरी वीयालीस राजू सब
पूरव पछिम उनतालीके विचार है॥ राजू असवीसा सो तैता
लीस अधिक कहे लोक सीस सिद्ध निकों मेरो नमोकार है॥ ९॥
पुन: केवल मैं छेक वंसनाल लोक त्रसनाडि ऊंची चौदे चौ
एक राजू त्रस नरी है॥ यामै त्रस वहिर थावर आवे [illegible] बांधी काह
म नैसो आगा कग यो त्रस चालकरी है॥ [illegible]
[illegible] वाहे
र थावर कौ पुत्र आव बांधी होय मने सम्मे कार मां न त्रस नारी तय
री है॥ केवल समुद्घात त्रस रूप न हां जानती नो भांति न है॥ त्र
स जिनवानी षरी है॥ १०॥ अब समुच्चय तीन सै तेतालीस राजू
घनाकार सकल लोक कथन [illegible] पूर्व पछिम तले सात
न थिए एक व षांनी॥ पंचम सुरग मैं पांच अंत मैं एक पवा तीच

ऊमिला पचऊंअंस तीन साटापरवानौ॥ दछुन उतर सात [illegible] साटचै
वीस वषानौ॥ ऊंचाचौ दैराजू गुनौं अधिक तितालीस तीनसैं॥ यह [illegible]
घनाकार तिहूंलोक कौ केवलग्यान विषैलसैं॥ २१॥ अथ [illegible] लोक लै
कराकसो छानवैराजू॥ छप्पय॥ पूरवपछम नलै सातमथिए कैग
ग। उत्तमथमिलैसौं आठअरथ करिअधारि वताई दछुन उतर सात
गुनौ अठाईसराजू॥ ऊंचाराजू सात सनकछानवैजयराजू यह अ
धौलोक कासरवकहा घनाकार जिनधरममैं॥ मतिपरौ नरकमै
पापकरिहौ सुमारगपरममैं॥ २२॥ अथ ऊरधलोक राकसौ सैता
लीस राजू कथन॥ छप्पै॥ मध्यलोक रकारहसपांच ऊंमेलन इष
वा पूरवपछिमदिसा आईकरि तीनराजू रट॥ दछुन उतर साम गु
नी इकईसवषानी॥ ऊंचासाढेतीनसाढतेहतरजांनी॥ साटसै(
हतरिविथियेहीलोकअंतसौ ब्रह्मलग॥ राजूइकसौसैतालस
वधर्मकौ पावैसुमग॥ २३॥ अथ [illegible] नसैतैतालीस लोकमै जुदा(
जुदा [illegible] छप्पय॥ छियालीस चालीस औरछ्यौतीस अवाईवा
ईस सोलै दस उतनीस साटैव नला इ॥ साटैयेतिससाट सोलसाटैसो
लैअनि॥ आगैदेदोहानिअंतपारैराजूगनि॥ इमसात नरक(
आवैजुगलकपरसोलै थानमैं॥ राजूतैतालीसतीनसै घनाका(
रकहिगृपानमैं॥ २४॥ अथ तीनलोकके तीनवातवलैकाजुदा जु
दा प्रमाणकथन॥ तलैवातवलै मोटे जोजनसहससाठ अचै इ
कराजूलौं साठसहसधारनै॥ आगै सातपांचचारतीनोसो लैजोज
नके मधिपांचचारतीनवारैके चितारनै॥ ब्रह्मलोकतीनोसोलै अं
तमांहितीनोवारैसीसदोयकोस एककोसकोविचारनै॥ तनवा
तथनुषपोनैसोलैसैताके भागपंद्रैसैसिद्धएकभागमैंनिहारनै
२५॥ तीनलोककेपटलएकसौवारै [illegible]॥ एकातीनपनसात(
औरनौगपारतैरजिय॥ इकतीससातसुचारदोयइकएकतीन
तियतीनतीनअरतीन एकइकपटलवताए॥ इकसौवारस
रववीसथानिककौ [illegible]रा॥ सवसांतनरकआवैजुगलअर्यी

वकउपजतरे।उनवासनरकतेसवसुरायनदोनोंसमकितनरे
२६।छहोसंघननरकस्वर्गगर्भसन्निकथन।छहोतीसरेजोदिवं
चचौथेपंचमलग।आरसंघनन छवेएकसातएंनरकमग छदे
च्या वमेसुरगपंच सारमसुरजावे।आरसो लमैं लोकतीनमोग्री
वकपावे।दोनोंसंघननउतरेएकपंचपंचोतरे।।२कवर मसरी
रीसिवलहेवदोजैनवचनपरे।२७।अपछहोंकालचौदेगुण
थानकसंघननओराकथन।छप्पे।प्रथमउतिपञ्चसत्रिहुय
कालमेंपहिलाजानो चौथेषटसंघननपंचमेंतीनवृषांनो क
रमभूमितिपवीनएकछठेकेमांही विकलचहुकमैंएकए
कईंद्रीकेनांही षटकहेसातगुणथांनलगतीनइद्वारेलो
लहैं इकोषिपकसेनगुनठेरहेथनजिनवानीमेकहे।२७।चौ
वीसोंजिनअंतरकथन।सवैया३१।पचासलीसदसनोकिरो
रलाषनछेनोसहसकोरनोमेंकोरनछेनोकोरहे।सोसागरव
षिलाषछासवसहसछहीया८२कोरसागरचोवनतीसव
रहे।नवच्यारतीनघाटपोंनपल्यअर्द्धपावघाटलाषोंला
षवर्षलाषोलाषजोरहे।चौवनछपावलाषसहसपोनेवो
रासीमाढेअंतराजिनेसगावेनिसजोरहे।२८।अथएकसौअ
वतालीसप्रकृतिकिसकिसगुनथांनछिपीछप्पय।सातच
उ कृतिकोघातचीकसायसगुनथानेतीनआवनहिहोयन
म चुतीमेजानैं।दसमेलोभविचारवारहेसोलमिटावे।
चोदहेमेकेअंतवहत्तरतेरहपावे।इमतोरकमेंअठताल
सोमुगतमांहसुषकरतहे।प्रचुमोहिवुलावोआपटिगहम
कृपापनिपरतहे।२०।अथमानषोतरमांन।कवित्तमांनषोत्र
परवतचौराईमूपरएकसहसवाईस।मध्यमातसैतेईसजोज
नउपरच्यारसनकचोवीस।सतरैसैइकईसउचाईजडच्यारसै
पावअरुतीसरिजु विमानकिंहनंतिमिस्योहेजोजनलाष
कसौउगनीया२१।अथदेवलोकनारीसंजोगऔरावायघ

रगमैंकायजोगहै।दोयसुरगमैंफरसनिहारा।चारिसुरगमैंरूपनि
हारै।च्यारिसुरगमैंसवदविचार।चारसुरगमैंरूपनिहारै च्यारिसु
रगमैंसवदविचार।चारसुरगमैंमनसूंविकलपन।आगेंसहजसी
लनिरधार।अहिमिंदरसबमहासुषीहे।बंदोसिद्धसुषीअवि
कार॥२४॥अथएकसौगुणहत्तरपुरुषकथन।छप्पय।चौवीसै
जिनरायपापवंदौसुषदायक।कांमदेवचौवीसईससुमरौसिव
नायक।भरतआदिचक्रेसदोसवऊसुरनरस्वामी।नारिदपदम
मुणिग्यारैप्रतिहरजगनांमी।जिनतातमातकुलकरपुरुषसं
करउतमजियधरौ।कुछुनतनवकुछुनवरसंगतिमुकति
रूपवंदनकरौ॥२५॥अथकर्मप्रकृति१४८कौव्यौरा।छप्पै।ग्या
नावरनीपंचदरसनावरनीनौविध।दोयवेदनीजांनमोहनीअ
ठवीसनिधिआवच्यारिप्रकारनांमकीप्रकृतितिरांनूं।तथाए
कसोतीनगोतदोभेदवषांनं।कहिअंतरायकीपांचसवसो(
अठतालीसजांनिये॥इमआठकरमअठतालिसौभिन्नरूप
निजमांनिये॥२६॥सवैया३१वर्नादिकवीससंस्थानसंघनन(
वारैबंधनसंघातदेहअंगोपांगवारैहै।अगुरुलघुआताप
उपघातपरघाततनिर्मानपरतेकसाधारनसारैहै।अथिरउदो
तथिरसुभअसुभवासवपुग्गलविपाकीजेविपाकीआवै
रैहै।छेत्रकीविपाकीचारआनपूरवीउतरवाकीजीवकीवि
पाकीघारैअघटारैहै॥२७॥सवैया॥२४केवलदरसग्यांनआ
वरनीताकीदोयमिथ्यातसैंमिथ्याततियपांचजांनियेतैं
नचौकरीकीवारैसर्वघातइकईसमैंजलनच्यारतवनोकषा
यमांनिये।ग्यानावरनीकीचारदरसनावरनीकीअंतरायपां(
चसम्यकमिथ्यातठानियेदेसघातिकीछवीसवाकीइक
सौअघातसीनौघातकर्मघातआपसुहजानिये॥२८॥वर्नां
दिकचारसौलैंनांहिदेहआदिपंचदसनाहिमिथ्याएकदे
यवंधनाहीहै।सोलेदराहोयविनावंधएकसवीसमि(

तत० ६५

थ्यातदेती न रोपवंदे ते देपां ही है॥ ते देशै उदीरना है एक सत्व
इसकी सत्ता सो अबाध विसेष नाम ही है॥ मिथ्यागुण सो ढय
लका इसतसता इस पांचो ति स्नांगी सो अ संभी आपमां ही है॥ २
छप्पै॥ बंध एक सौ वीस उदै सौ वाईस आवै॥ सत्ता सौ अडताल
पकी सो कहि लावै॥ पुंन प्रकृति अडसठ नरजीव विपाकी नाम
वदेह विपाक पेतनव चउवाकी॥ इकईस सरब घाती प्रकृति देस
घाति छवीस है॥ बाकी अघ॥ इति इक अधिक सत भिंन लखि दरसे
व रूस है॥ २ पैं अथ पापप्रकृति नाम सवैया॥ २१ घ्यात सैताली
स उ षनीच नरकाउ पांच संसथान संघनन वरन रसमांनिये॥ नर
न सुगति आंन पूरवी फरस आठ गंध दोय इंद्री चार खुरी चाल गानिये
अथिर अपर्यापति सूछम औ साधारन अपघात थावर अ सुभ
रखां निये॥ दुर्भग दुसर अनादर अजस ए स पापप्रकृति से भेद
स्यागधमें जांनिये॥ २ ऐं अथ पुन्य की॥ ६८ प्रकृति वर्णन॥ सवै
या॥ २१॥ सुर नर पसु आव साता ऊंच नलीचा लि सुर नर गति आं
न निरमांन स्वास है॥ बंधन संघात देह कर्न रस पंच अ सतान आं
सुभ दोय गंध आठ फास है॥ अगुरुलघु पंचेंद्री संसथान संघ
नन वादर प्रत्येक थिर पर्याप जस रास है॥ आतप उदोत परघात
सुसुर सुभग आदर तीर्थंकर को वंदो अघनास है॥ २ ऐं अथ जै
नमत अस्रधांन वर्णन॥ छप्पय॥ तिहुं काल षट दर्व पदारथ नौ उ
भ आबे सात तत्त पंचास्तिकाय षट काय कराबे॥ आठ कर्म गुन
आठ भेद लेस्या षट जांनें॥ पंच व्रत्त समिति चरित्र गति ग्यान व
षांनें सरधे प्रतीत रुचि मन धरै मुकति मूल समकित यहा पद
न मोजो रष करिसी स धरे धन सरव गपर विधि कही॥ २१॥ अथ॥ २
५५॥ कुलकोडिका कथन सवैया॥ २१॥ पृथ्वीकाय वीस दो
य जल सात तेज तीन वायु सात तरु वीस आठ परखां निये॥ बे
ते चउइंद्री सात आठ नव षग बारे जलचर साढे बारै चौपे दस जं
निये॥ सिरिस सर्पिन व नारकी पंचीस नर चौदे देवता छवीस कु

ल लाष कोरिमां निये। दोइ कोराकोरिमां हि अध लाष कोरि नो ही
नवकों निहारिकै टयाल न्याव आनिये। ३१ अथ पोरे अंकका
नती नाम छप्पय ग्पारे अंकपद एक अंक दस सव पदषांनी। पूरव
चौदे अंक वीस अरु छव जिन वांनी। नन ति स अंक कम नुष्य पछ्र पेत
लीस अरु छव। सरसो कुंड द्वीपाल फेट सैंथिति अस छ रव। इक ती
स अंक पलकल प के जंवु फला वट दस वरन। सववा नव सो पारे वर।
नधं निजैन मसे हरन। ३२ अथ तेरहमें गुनस्थान क सात त्रिभंगी कथन।
छंद। छप्पय। सा जुन आसर क्वार वंध इकसातो कहिये। चौदे अ
व अमांण पच्चासी सत्ताल हिये। असी चौतरासीय इक्यासी और पच्या
सी। यह सत्ता चौभेद विशेष जिनम्व लासी। इक कम चालीस उदी
रण अवै वियालीस मांनिये। यह तेरहमें गुनथांन में सात त्रिभंगी
जानिये। ३४ अथ वंधदस कथन। छप्पे। जीव करम मिलि
वंध देइ रस तासु उदै नणि। उदीरणा उपाय रहि जव लों सत्ता गुणि
उत्करषन थिति वढै घटै अपकरषन कहिय न संक्रमन पर
रूप उदीरण विनु उपसमम त। संक्रमन उदीरन विनु निधि तघ
ट वढ उदि निसंक्रमन। वउ विनानि काच न वंध दस मिल अ
प परज्ञांनि मन। ३५ अथ तीन लोक के विषे अकृतम चैत्या
लो की संख्या कथन। सवैया ३१ ३६। सात किरोड वहत्तर लाष
पताल विषे जिन मंदिर जांनि। मध्यहि लोक में च्यार सै आवन व्यंत
र जोतक के अधिकांने। लाष चौरासी हजार सतानवै तेईस ऊरध
लोक वषांने। एकेक में प्रतिमा सत आठ नमै तिउ जोग त्रिकाल
सयानें। ३६ अथ तीन घाटि नव कोटि मुनि संख्या उ रूपक सवैया
३१। पांच किरोड तिरानवै लाष हजार अठानवै दो से छजांनै जी
व छठे गुन तैं आघे सात में ग्यारमें छ्यानवे च्यार विकांने आ
ठ नवे दस वारह चौदह सें उनतीस नवे परवांने। तेरमें आठ हि
लाष हजार अठानवे दस वारह चौदह सें उनतीस नवे परवां
ने। तेरमें आठ हि लाष हजार अठानवे पांच सें दोइ वषांनें। ३७
अथ अढाई द्वीप ज्योतिषी संख्या। कवित्त छंद।

सूरअगासीय हआ ग्राइस नछत्र वषांम। छासठ सहस पच तरनवसै
कोडाकोडी तारे जांन। इकसो बतीस चंद इह्ही विधि ढाई द्वीप मध्य प
रवांन। सब चैत्यालै प्रतिमामंडित वंदन करो जो रिजुगपांन ॥२५॥
अथ आयु कर्मके बंधके भेद ॥६॥ कवित्त। आउ अंसपैं सब सेइ
कसव इकईस से सतासी जांन सात सतका उनतीस दो इसे तेता
लीस इक्यासी मांन सतताईस अरु नो तीने एक अवमहे दवषांन
नो मी अंतकालमे बांधे आगली गतिकी आउ निदांन ॥२६॥ अथ
सतावन जीवसमास सं। छप्पै। भू जल पावक वाय निति इतर साध
रण। सूछम बादरकर तहां तर द्वादश चारन सु प्रतिष्ठ अप्रतिष्ठ
मिलत चौदैय रखांनो। पज्ज अपर्याप्त लब्धि गुन तब्यालीस बषांनो गु
न बेते चौइद्री त्रिविधस रव एकपंचासन मनसहित रहित तिअ
ने इसो सत्तावन धर दया मन आयो। अथ अठानवै जीवसमास सवै
या ॥२७॥ इक्याबन थावर जा न थावर विकलत्रै के गर्भज दो तीन
सनमूरछ न गाए हे। पांचौ सैनी और असैनी जल थल नभचारी
भोगभूमि भू चर षेचर दो दो पाए हैं। दो दो नारकी सुदेव भोग विध
मनुष्य नेव भोगभू कुभोगभूम ले छ भूवता ए है। दोइ दोइ दोय
तीन आरज मे रजत हैं अठानवे दयाकै साधते कहाए है ॥२८॥
अथ साढे सैतीस हजार प्रमाद भेद ने दकथन। छप्पै। विकथा रू
प पचीस अरु पणवीस कषाय निगुनते छ सै सवा पांच इद्री मन
सो गुनि पूनै च्यार हजार पंचनिद्रा सो गुनिये। सहस पेंनउनइस
ने दुअरू मोह सु गुनिये साढै सैतीस हजार सब भेद प्रमाद प्रमा द
घवां निये। खट है गुन थानक लौक है त्याग आपथिरवां निये ॥२९॥
अथ ज्योतिक पटल कात लेंड पतिष्टर कथन। छप्पै सात सत
का अरु नवे तास परतारे राजे। ता ऊपरि दस नां अठसी परि चंद
विराजे। चार नषत बुध आर तीन परसुक्र वतायो। तीन गुरु कुज
ती न परि शनि बहु मयो। इमनवसै जोजन भूमि तै ज्योतिषचक्र
क वषांनिये। इकसो दस जोजन गगन मे फैलि रह्यो मो कथन ई
पाना मे मीलतो [illegible] इकताली सकोस परमांनिये। ध ३ अ

यगुनस्थानंकउपसमीकेकिहिमारगआवैजावैसोकथन।छप्पै
मिथ्यसासाद्यमिश्र तीनचउपांचमानमनि॥ इतिपएकमिथ्यात
ततियचौथापहिलागनि॥ अत्रतमारगयांचतीनदोएकसातप।
नपंचमपंचमुसातमा तिपदेशएकमन॥ छहैषटस्कपंचमअ
धिकसात आठनवदसमुनौतिपअथअरथचौथेमरनगपारवार
बितुदोमुनो।४४अथचौवीसतीर्थंकरवर्णककथन।छप्पै।
पुहपदंतप्रभुचंदचंदसमसेतविराजै॥पारसनाथसुपासहरि
तपन्नामयछाजे।वासुपूज्यअरुपदमरक्तमाणिकउतिसो
है।मुनिसुव्रतअरुनेमसुरनरमनमोहै॥बाकीसोलेकंचनव
रनयहविषहारसरीरथुति॥निहचैअरूपचेतनविमलदर।
सगपांनचरित्रजुत।४५।अथश्रीगोमटसारकाआदकानम
स्कारअष्टकसूचका।छप्पै।बंदोनेमजिणंदनमोंचौवीसजि
नेस्वर।महावीरवंदामिवंदसवसिद्धमहेस्वर॥सुरुजीवषण
मामिपंचपदप्रणमु।सुषअतिगोमटसारनमामिनेमिचंदआ।
चारजनमि जिनसिद्धअकलंकवरगुनमनिभूषनिउदयत्रे
कहंसीसपदपननाचसोंपहमंगलसवविघनहर।४६अथ
षटविधमंगल।छप्पै।नमअरहंतसुनऊंजिनचिंब।
कमलहर।जिनश्रीदारिकदिव्यविवजनिर्वाणअवनिपर।
कल्याणककालजनमजअकेवलगुनपायक।यहषटवि
धतिक्षेपमहामंगलवरदायक।मंगलजनेद्रसवज्ञाज्ञानमंगसु
मलहरजीयरा।यहआदमध्यपरजंतमैंमंगलराषौहीयरा।४
अथपांचप्ररूपणाचौदहमारगणामध्यगर्भितहैसोकथ
न।सवैया।१२रजीवसमासपरजापतिमनवचस्वासईंद्रीक
मांहिआवगतिमैंवषानिये।कायवलजोगमांहिइंद्रीपांच
ज्ञांनमांहिआहारपरिग्रहएलोभमेंवषांनिये।क्रोधमां
हिभयअरुवेदमांहिमैथुनहै॥ध्यानध्यांनमांहिदर्शनदर्श
मांहिजांनिये॥पांचौपरूपनाएचौदहमैंगर्भितहैगु
नमारगनातोयकनेदमांनिये॥४

षतोंम॥छप्पै॥वंदौपारसनाथनमौंबलरामचंद्रवर॥कांमदेवहनुमं(
तअगटराघवनमांनीनर॥द्वादसचक्रेसमीलतैसीतानांमी॥तपवा(
हुबलरावनरावनरनैममस्वामी॥जगमदादेवहैस्तुपदकिम्रनांम
हरिजांनिये॥द्यानतकुलकरमैनातिनपतीमवलीमुवमांनिये
॥७०॥ सर्वद्वीपसमुद्रोंकेनामोंकीगणतीकथन सवैया॥जंबूद्वी(
पदोइलवनांबुधिमेंच्यारचंदधातखंडवारैकालोदधिबापाली
सहै॥पुष्करकेनागदोइईधरवहतरहैं॥कथैवारैसैचौसठआषै
जगदीसहै॥पुष्करजलधिसारदोसतापारैहजारआगैचाआगै
चौगुनेवषांनेनिसईसहै॥जेतेलाषतेतेवलैहनेआधिकेहैसवअ(
संष्यचित्यालैवैदिमुनीसहै॥७१॥अथोलोकचित्यालैसंष्या
कथनकवित॥छंद॥चौसठिलाषअसुरजिनमंदिरलाषचउर
सीनागकुमार॥हेमकुमारसुलाषवहत्तरछहत्तरिधलाषछहत्त
रधार॥लाषवांनवैवातकुमारपताललोकभावनदससार॥सा(
तकोरसवलाषवहत्तरचैत्यालैवंदौसुषकार॥७२॥मध्यलोक
चैत्यालैसंष्या॥छप्पै छंद॥पंचमेरकेअसीअसीवरकायविरा(
जै॥गजदंतनिपै वीसतीसकुलपरवतछाजे॥सोसमेरवैतारथा(
रकुरद्रुमदसोंतर॥इष्वाकारपहारच्यारववमांनषोत्रपरनंदी
सरवावनरुचिकमैंचाच्यारकुंलसिषर॥इममध्यलोकसैग
वतवंदौविवनहर॥७३॥ऊरधलोकचैत्यालैसंष्याकथन
सवैया॥प्रथमवतीमहैजेअवाईसतीजेवारैचौथेआठ(
पांचैचहुचारलाषध्यानहैं॥सातैआठैपचासनैमेंदस
मैचालिसगपौरवारैछहजारच्यारैसतस्यानहै॥अथोएक
सतगपौरमध्यसतकसतसातऊरधइक्यानवनवोतरैजा
नहै॥पंचोत्तरैपाचचउरासीलाषसतानूहजारतेइसचित्य
लैवंदौंअघघातहै॥७४॥अथसोधर्मइंद्रकेसेनासातप्रक
तिसकीगनती॥सवैया॥इंद्रसेनसातहाथीघोरेरथप्या
देवैलगंधरवनत्समातसातपरकारिहैं॥आदिवौरासी(
हजारआगैदूनेदूनेएककोरछलाषअवसठहजारै

है। एतेगाजते ते तेते छहभेदसवकेतेसातकोरछ्यालीसला।
षनिरधारिहै। सहस छहतरओरएकअंवनारन्येगपुनकर्मने
गभोगमोषकोंसिधारिहै। ४४। अथएकेंद्री आदिसेनीपर्जत।
षट्भेदजीवनिजइंद्री विषैक्षेत्रसीमाकथन। छप्पै। फरसचार।
सैधनुषअरुसैंनीलोंदुगनागनि। रसनाचौसठिधनुषघ्रानचौते
इंद्रीमनि। चषजोजनउनतीससतकचौवनपरवानैं। कांनअ
ठसैधनुषसुनैंसैनीजोजानैं। नवजोजनघ्रानरसनिफरसके
नउवारहसजोजना। चषसैंतालीससहसदुसैतेसठदेषैजिन
नना। ४५। दंडकपाटअरुपतरमैंतीनजोगपाइयेंकिसकिस
किसकिससमैंसोकथन। सवैया। पहलैसमैंमैंकरैदंडअरुठमैंसं
वरैपरदेसअरुतीसरेमैंदारिकप्रवांनिये। दूसरेकपाटहोयसा
तमैंसंवरैसोपसंवरैअंतरहुहैमिश्रजोगजांनिये। तीसरेअंतरचौ
थेपूरनसरवलोकपूरनसंवरैपांचैकारमानमांनिये। आठस
मैंमांहिजाफकेवलसमुदघातनिर्जराअसंख्यगुनीदेवसीवषा
निये। ४६। मिथ्यातीय्यातीमुकतनहोयसमकितीहोयमु
हकथन। सवैया। एकसमैंमांहिएकसमैंपरवढवंधेएकस
मैंपरवढफरैहै। वर्गनाजघन्यमैंअनंतसोअनंतगुनीअन
किष्टसिद्धकौअनंतभागधरैहै। जैसेएकगासषायसातृप्तान
होयजायतैसेएकसातकर्मरूपअनुसरैहै। योंनलहैमोषके
इजाकैउरज्ञानहोयएकसमैवजषोयसोईसिववरैहै। ४७।
आठकर्मकेआठदिष्टांतसवैया। देवपैपर्यौहैपटरूपको
ग्यांनहोयजैसेंदरवांननृपदेषनोंनिवारैहै। सहतलपेटी
असिधारासुषदुषकारमदराज्योंजीवनिकोंमोहनीविचारै
है। काठमेंदियौहैपावकैरथितकोंमुत्तावचित्रकारनानानां
मवीनकेसमारैहै। चक्रीजैवनीचयैसनूपदियेंमकैकरैए।
इंआवकर्मदरसोईहमैंतारैहै। ४८। कवित्त। पद्मपनअवा
ससैंतालीसछयालीससेतिसचौविसजान। वाइसचाइसमै

लैदसअरुनवनवसातअंतअंतनववांन। चौदैगुनथानकमे
इहविधआश्रवधारकहेभगवांन। मूलवारछत्तरस तावउ
नासकरोथरिसेवरग्पांन॥५८॥ इकसौसतरैएकएकसौचौहं
तरसतहतरमांन॥ सतसठतेसठउसववावनवाइससतरैदस
मैंथांन॥ ग्पारमवाभ्रतेरमसाताएकवंधनछित्रंतनिदांन॥ सव
गुनथांनकवधैप्रकृतिइमनिरखैपापअवंधपिछांन॥ ६०॥ इक
सौसतरैइकसौग्पारैसौअरुसौचौसतासीय॥ इक्यासीछेहतरवं
हतरछासठअरुसावउदीय॥ उनसठसतावनविपालिसव
रैप्रकितउदैहैजीय॥ चौदैगुनथानककीरचनाउदैभिन्नतुव
सिद्धसुकीय॥ ६१॥ इकसौसनरैइकसौग्पारैसौसौचौसतासी
जांन॥ इक्यासीतेहतरछुमहतरतेसठसतावनमांन॥ छपनचौ
पनउनतालीसतेरमैंअंतनहीपरवांन॥ मह उदीरनांचवदे
थांनककैग्पांनवलसोतूग्पांन॥ ६२॥ पहलैसोअवताल इजेमै
पैंतालतीजेमांहिसौसैतालचौथैअवतालसो॥ पांचेगुननौसैताल
छवैसातैआठैनौमेदसमेंग्पारमैंउपसमीहैछपालसो॥ आठैंनो
मैंसोअछतीसदसमेंइकसौदोयवारमइकसौएकआगेपइटाल
सो॥ तैरचौदैमैंपिच्यासीसतानासअविनासीनमोंलोकपनम
धराजूसैतालसो॥ ६३॥ भूजलपावकपोनसाधारनपंचभेदसु
छमवादरदसपरतेकग्पारहे॥ छहजातत्यारैवांरैजनममरन
धारैवेतेचौइंद्रीअसीसावचालीसथारहे॥ चौवीसपंचेंद्रीसव
वासठसहसतीनसेछतीसमेसेतालीसचेहतरसारहे॥ छतीस
ससेपिच्यासीस्वासअथिकतीजाअसनमोनाथमोहिसव
दुखसोंउधारिहै॥ ६४॥ घातियाकर्मकीप्रकृति॥ मतिश्रुतओथ
मनपरजैकेवलग्पांनपंचआवरनग्पानावरनीपंचभेदहै॥ च
छुअचछुओधकेवलदरसचारआवरननिद्रानिद्र
निद्रापेदहै॥ प्रचलाप्रचलाप्रचलाथांनगृधनौभेददरसना
वनीमोहअवाईसवेदहै॥ दांनलाभभोगउपभोगवलअंत

रायपंचसवसैंतालीसघातियानिषेदहै।६५। मोहकर्मकी प्रकृ
ति।२८। नाम। अनंतानवंधीक्रोधअप्रत्याख्यानीप्रत्याख्यान।
संजलनचारोंक्रोधमाँनमायालोभहै। हासरतिअरतिसोकभै
जुगपसानारीनरषंढएपचीसीचारितकोंछीनहै। मिथ्यातसमैमि
थ्यातसमैंप्रकृतिमिथ्यातहीनोंदरसनमोहदरसनकौंघोतहै
अठाईसमोहनीयजीयनिकौंमोहतहैनामसैंजथाख्यातसम्य
कघायकसोतहै।६६। अघातियाकीप्रकृति।१०१। तिनमें आ
उकर्मकीथितिउतकिष्टजघनजथा। साताअसातादो
यवेदनीनरकपसुनरसुरआवआरउचनीचगोतहैं। नाम
कीतिरानूंएकसवएकअघातआदितीनअंतरायथितिती
सहीतहै। नामगोतवीसमोहनीसत्तरकोराकोरिदधिआवर
कीसागरतेतीसउदोतहैं। वेदनिचौवीसघरीसोलेनामगो
तपांचोंअंतरमहूरतविनासैंग्यानजोतहै।६७। नामकीप्रकृ
ति।९३। नाम। तननवंधनसंघातवर्नरसजानपंचसंसथानसंघ
ननषटआठफासहै। गतिआनपूरवीहैचारदोविहायगंध
अंगहीनपैसठएत्रसथूलनामहै। परजापतपिरसुभसुभगप्र
त्येकजसमुस्वरआदरदोदोनिरमानस्वासहै। अपघातपर
घातअगुरलघुआतापउदोततीर्थकरजीवदौआयनासहै
।६८। जंबूदीपपूरवपछिमकोंओरजंबूदीपएकलाषमेरदसह
हजारतनसालदोवनसहसचवालीसको। वाकीछपालीस
आधैआधदोनोंहीविदेहदेवावनउनतीससैवाइसकेती
नौनदीपैनिचारसतआरौहीविष्यारदोहजारआवैंहोवि
देहवचनईसकोसठैसहससातसततीनजोजनकेनमों
चारतीर्थकरस्वामीजगदीसको।६९। दछिनउत्तरओरजं
बूदीपदछिनउतरलाषजोजनकौंमानएकसौनवैएकभर
तमाड़पैदोयहिमवनसैलचारहैमवतषेतमहाहिमवन
अवसोलेहरआईपैवतीसनिषधइएतरेसठअंधैनेसवधाच

मैंविदेहभागचौसठवताइये॥भागपांचसैछुवीसकलाछहह
जिसकीअवहतरछियालेसढासीसताइयै॥७०॥अथोलो
कसेनीवथविलेसंष्या॥सातनर्कभूमिउगंचासपाथरेनिवास
इंद्रकजीउगंचासवाचमांहिविलेहै॥पहिलोसीमंतचारुदिस
सेनउगंचासचारविदसामेअठतालीसयनिलेहै॥आवदिसमे
नीवरुत्तीनसेअचासीजएअगौआवआवघटेअंतचारमि
लेहै॥सवत्रांनवेसैचारजोजनअसंषघारद्याथेयमंकरेति
नोंइषमिलहै॥७१॥कर्ध्वलोकसेनीवर्द्धविमानसंष्या॥करधव
रसठपटलकहेआगममेत्रेसठहीइंद्रकविमांनवीचजांनिये
पहिलोजुगलताकेंपहलेकौरजुनांमजाकीचारदिसासेनवा
सठश्रेंवांनिये॥चारौदिसेअठतालीआगेघटेचारवारअंतर
हैवारउंचेचारठीकवांनिये॥सेनीवरुत्तरमैसोलेजोजन
असंषसिद्धवारेजोजनपैथ्यांनमांहिआंनिये॥७२॥लोनोदधिके
माहि१००७५कलसजथा॥लोनोदधिवीचचारदिसामांहिवा
रकूपकैहेहै॥मृदंगजेमतिनकोंश्रवांनहै॥पेटऔरउंचेए
कएकलाषजो■जनकैनीचेऔमुषताकोदसहजारमांनहै
चारविदसामेचारपेटऔरऊंचेदसहजारएकनीचेऔमुष
कोवषांनहै॥अंतरदिसाहजारपेटऊंचेहैहजारनीचेऔर
मुषसौकेधनजैनग्यांनहै॥७३॥तेसठइंद्रकविमांनकौमांन
पेतालीसलाषकौहेइंद्रकरिजुविमांनसर्वारथसिद्धजुतए
कलाषकाकहा॥चवालीसघटेहैतेसठमेंवासठवीरऊंचे
ऊंचेएकएककेताघटतीलहा॥सतरहजारतेसैसतसठजो
जनहैं॥तेईसअधिकभागइकतीसकागहा॥तेसठइंद्रक
नांमतेसठहीजिनधांमवंदौमनवचकायतिनकीसोनामह
७४॥आवपकृंतिजपरकेगुनथानवंधेनीचेउदेआवैसुर्वे
सपक्रतिजहांवंधेनहांहीउदेआवैवाकीनीचैगुनस्थांन॥
वंधिकेऊंचेउदेआवै॥ताकोकोठा॥सर्वैईपा॥देवगतै॥

आवर्त्तनपूरवीअकृततीनवेकूपकअंगआहारकअंगचा
रहैअजनसएआगेमेंक्षेत्रवर्धैनीचेउदैहैहिसंजलननोकवि
नापदैहैनिहारहै।हासरतिनैगिलाननखेदनरआंतसूक्ष्मअ
पर्यापतसाधारनयारहै।आतपमिथ्यानएछवीसवंधउदै
साथनीचेवेक्षकउचेकउदैस्त्रीयासीविचारहै।७५।भावपरा
वर्त्तनिअनंतानागभवकालअवपरावर्त्तनिअनंतानागकाल
परावर्त्तनिअनंतानागषेतकहीषेतकोअनंतानागपुग्गल
विसालहै।ताकोआधनामअर्द्धपुग्गलपरावर्त्तनिफिरतो
लोहै।याछिपांनीत्यांनतालहै।ताहीसमेसम्यकउपजवेको
जोगतयोऔरकहासम्यकताअरकोकाव्यालहै।७६।द्रव्य
वपरावर्त्तनिअनंततेकहैहैजीवएकभावतेअनंततेकि
परावर्त्तकलहै।एकतेसतीअनंतकालपरावर्त्तकरेका
लतैअनंतक्षेत्रपरावर्तकरतहै।एकक्षेत्रतेअनंतपुगल
परावर्तपंचफेरीविषेआयमिथ्यावसपरतहै।सातकोवि
नासजिनकेसम्यकप्रकासतेईदर्वषेतकालभवभावते
निकरतहै।७७।अथपाचलब्धकथनध्यावरतमेंनीरोयय
हैविउपसमहै।दानपूजाउछहविसोहीउपयोगहैगुरुउप
देसतत्वग्यानसोईदेसनाहै।अंतकोराकोरीकर्मकीथिति
प्रायोगहै।जामेंअनंतवारवारलब्धपाईइनिकानैलब्धिवि
नासमकितकोनजोगहैअथोअपूरव।अनिवृतकरनतीन
करैमिथ्यामांहिपीछेचोथासम्यकनियमहै।७८।नंदीसर
दीपजथा।एकसोतरेसठकिरोरचवरासीलाष
वोरादीपवावनपहारहै।दिसाचारअंजन
हजारसोलेदधिमुषजोजनदसहजारहै।रतिकरहैवं
तीसजोजनहजारएकलंवचोरऊचेसवढोलकेआकार
हैं।सवपरजिनभौनवावनविराजतहै।वर्षतीनवार
कोजैजैकारहै।७९।मेरुजथा।मे

लानूहजारचूलकाचालीसवालअंतरविमानहै।नंदिवनदु
सालवनहिंसाचारजिनभौनपांचसैपैनंदनविस्तालेचारवा
नहै।साटेवासठहजारसौमनसवनचारचिस्तालेअंचेसहस
छत्तीसवृषानहै।तहांवनपंडुकविस्तालेवारसवसौसैमं
नखवकायसेतीवंदौपापहांनहै॥५०॥पुनमेरुगोलअंदत
लेदसहजारनचैकोभूममेंहजारदसनंदनपेलहाहै।नौ
हजारनवसेचौवनभागकेहेंवहींसौमनसवियालासेवह
तरहाहै।पंडुकहजारएकवीचवावैचूलकाहैचोसेचौरानूं
वनपंडुकसरदहाहै।सोमनसनंदनहैपांचसेकेनइसावेवा
ईसहजारपूर्वपछिममैंकहाहै॥५१॥चौदेगुनथांनकस्यागु
उस्पति।छप्पै॥मिथ्याद्रष्टीएसंजोगतीनमेंमरणनपावे।सात्र
वनचदसमगपारमरचौथेआवे।प्रथमचहुंगतिजामउति
यविननरकतीनगतिचौथेपूरवआववंध्यतेचहुंगतिपावु
ति।पंचमतेंपारमसातगुनमैंरेसुरगमैंश्रीनरे।वंदेइकचौ
दसथांनतजिअजरअमरसिवपदवरै।छं०॥नवमगुणथां
नप्रकृतिछपा।रहिनांम।सवैया३१सा।अप्रत्याख्यानीचारप्र
त्याख्यानीचारभेदसंजलनतीननवनोकषायजांनिये।ए
केंद्रीविकलत्रैथावरआतपउद्योतसूक्ष्मऔसाधारनार
जीवनकोभाषिये॥निद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाथ्रीणथीनगृध
नीतीनोंमहापोटीकवहुनवाणियेनर्कपसुगतिआनपू
रवीप्रकृतचारनोमैंगुनथानकमैंएछतीसमांनिये।छं०॥अ
थजिनवांनीकेपदकीसंख्याकथनसोलेसैचौतीसकोरि।
त्र्यासीलाखतेरासीठतरसयअठासी।अछरएलेषियेइक्यावन।
कोटआठलाषसहसचौरासीछहसैसाटेइकीस।एसिलो॥
कपेषिये।ताकोपदइकसौकिरोरतेरासीलाषसहसअठा
वनटेषिये।पंचपदएतेसवद्वादसांगजिनवांनीवंदौमनव
यनेटग्यांनकौंविसेषिये।छं०॥चौदेगुनथांनकऊपरसात्

नआस्रवद्वारकथनपहलेपांचैमिथ्यातदूजैअनंतानुबं
धीग्यारहअविरतउत्पारमांनीपांचैगाह।वैक्रयकऔत्र
उत्पारमांनीत्रसवंधचौथैआहारकद्वछैपदहास्पआवलै
लहै।तीनवेदतीनसंजलननवैलीनदसैअसतउजैवचन
मनवारहैकहै।।सतअनुभयवचनऔदारकतैरैमिश्रका
र्मानचारिगुनथांनेसरदहै।।५५।।चौदैगुणथांनविषैचारि
आयुवंधतथाउदयविवरन।।नरकआवपहलैवंधैउदै।
चौथैहिलोपसुआवदूजैवंधउदैपांचमैकहीनरआववचौ
थैलगावंधउदैचौदहलौंसुरआवसातैवंधउदैचारिमैलहै
नरपसुजीवनकैपसुनरआववंधचौथैतैआगैचढवकै
नसकतगाही।।चारौआवतीजैगुनथांनकमैंवंधैनांहिअ
वनासन्नएसिंधतिनकौंवंधौसही।।५६।।नआगुथांनक
निगोदनहीं।।चारथांनकसास्वादनजायनहीं।।तीर्थंकरस
ताजहांनपाईए।।सूक्ष्मऔरकामौनसरीरैग।।मनपर्येय
परमावधिसर्वावधिमोक्षजांहि।।सोकथन।।त्रूसैनीरआ
गियौनकेवलऔरआहारकनकैसुर्गआवमैंनिगोदनां
हिंगाईये।।सूक्ष्मनरकतेजवायमैंनसास्वादनमैंनत्रिक
पसुमैंनतीर्थंकरपाईये।।सवहीसूक्ष्मअंगकहेहैकपोतरं
गकारमानदेहकौंसुपेदस्वपनाइये।।विपुलमनपजैऔपर्म
अवधिसर्वअवधिविकलहैमोक्षतातेंइकैसीसनाईये।।५७।
।।सातनरकसौंलैस्वर्गतथाअहमिंदउत्पातिकथनं।।
सातैतैनिकसपसुछठेनरभूतनांहि।पांचैमहाव्रतचौथैसे
तीमोक्षसारहै।।तीजैदूजेपहिलैतेंआयजिनराजहोयजोन
त्रिकसुरगादेयाकिंहीयारहै।।बादसामैसुर्गसेतीपचेंद्रीपसु
यकपरकौंआयैएकनरकौंओतारहै।।दक्षिंजसुधर्मरानीलो
कपाललोकांतकमिरंसमचारोनर्कमांहिलेधरै।।हलीक
हाकथंजमेषसीगाथाकीमलक्रोधमानमायालोभतिरजंचैमैं
पैरस्थलीककावथंजगोमूतदेहतेलसेकषायनरजीवमांनु
पनिमैंऔतरे।।जलरेपवेतदंकधुरपाहलदरंगद्यांनतरांचा

मिथ्यात्वलहैनमोकारहोयएसोलेकषायदृष्टांततथाफल।।पाहनकीरेषाथंनपायपकौबांसविनाक्रोध

रभावसुगोस्किकोकैरो॥ ९८॥ चौतीसभावचौदैगुनस्थानकं
विषैकथन॥ पहिलै मिथ्यातमैं दूसरेविनंगतीनलेश्यप
तीनअहंतनरकदेवचारमैंपसुपांचैलेस्यादोयसातैं लौ
नदसैलगक्रोधमांनमायातीनवेदनौ छिचारमैंसततैरैन
नवजीवनअसिद्धचौदैपंचलब्धुपानवछअचछवारमैं
चौतीसौभावकहेचौदैगुणथांनकमैंवेकनीसवारहमैमैं
हौअविकारमैं॥ १००॥ उनीसभाववारहगुणथानकैमैं॥ उ
पसमचौथैग्यारैवेदकहेचौथैसाछांयकचौदेचौथैदसहं
तपाचमैं॥ग्यानतीनतीजेंवारैमनपर्जैछठेवारैचारितस
रागछैदैकसोसांचमैं॥ उपितीजेवारैउपसमचारित
रेहीछायकचारितवारैचौदैकमैंवांचमैंपंचलब्धछायक
दसग्यानतैरैचौदैनमौभावउनईसछूटोनर्कैआंचमैं॥ १०१॥
चौदगुनथानकमैंत्रेपनभावविचार॥ सवैया॥ चौतिसवतिस
ततीसछतिसइकतिसइकतीसमानअठाईसअ
ईसवाईसइकईसवीसवारमैंथान॥ चौदैतैरैअतमथानकपंच
भावसिद्धालेजांनासम्पकग्यानदरसवलजीवतनिहचैसो
नआपपिछांन॥ १०२॥ चारौंगतिमैंआश्रवहारमौरा॥ वैकि
यकदोयविनांनरपचमतहारआहारकदोयविनांत्रेपनति
जंचहै॥ औदारिकदोयदोयआहारकषटवेदपांचविना
देवनिकेवावनकौंसचहै॥ आहारकदोयदोयऔदारकन
रनारषहौविनाइक्यावननर्कमैंउपंचहै॥ चारौंगतिमांहि
औसैंआश्रवसरूपजांननमौंसिद्धनगावांनजहांनांहिरंचहै
॥ १०३॥ च्यारौंगतिमैंत्रेपनभावकौरासास्वतौस्वभावपंचम
वसिद्धवंदतहैं तीनौंगतिविनांनरकेपचासदीसहैं॥ छैमक
केआगसमकितविनांमनपर्जैचारितदौग्यारैविनपसुउ
नतालीसहै॥सुभलेश्यातीननरनारवेददेसव्रतएईछहैं
भावविनांनारकतेतीसहै॥ हीनतीनलेश्याषंवेदचारि
भावनांहिसुभलेस्यानरनारसुरकैचौतीसहै॥ १०४॥ अथले
स्यावाले मिथ्यातगुनथांनवंधमौरा॥ विकलत्रैसुक्षमसाधा
रणअपर्जापतनर्कैगतिआनपूरवीनरकआवहै॥ मिथ्या

साहिलेस्यातीनवांधेइकसौसतरैनवौंविनांयीतकेंअवोत
सोजावहै॥इकिंदीथावरऔआतपइनतीनविनांपदमइक
सोपांचवंधकोजपावहै॥ पसुगतिआवआंनपूरवीउदोतचार
विनासुककलसोएकबांधेपुन्यचावहै॥८५॥चौरासीलाषज
कोरा॥सातलाषप्रथ्वीकाय॥सातलाषअपकाय॥ सातलाष
तेजकाय॥सातलाषवातहै॥सातलाषनित्यऔइतरसातस
धारण॥दसलाषपरतेकएकेंद्रीजातहै॥वेतेचवइंद्रीदोदोमनु
षचौदहलाषनर्कसुर्गपसुचारचारलाषजातहै॥चवरासी
लाषजातमोकुपरक्षिमांकरोहमनेक्षिमाकरीवैरक्रिये
घातहै॥८६॥त्रेसठिप्रकृतिनांम॥ नरकपसुगतिआनपूरवी
प्रकृतिचारपंचइंद्रियविनांचरआतपउदोतहै॥ साधारणसूक्ष
औथावरप्रकृतितेरैनरआवविनांतीनमिलसोलैहोतहै॥से
तालीसघातियाकीत्रेसठप्रकृतसबनासनरातीर्थंकरपान
मईजोतहै॥देवनिकेदेवआरिहंतहैपरमपूजतिनहीकोसंव
पूजहैहिकंचगोतहै॥८७॥चारगतिविषैबंधप्रकृतिनांम॥औ
दारिकदोयअहारकदोयनर्कदेवगतिआवआनपूरवीदस॥
बंधनीहै॥विकलत्रैसूक्षमसाधारनअपजीपतसोलैविन
सतचारदेवकेबंधनीहै॥एकेंद्रीथावरआतपतीनप्रकृतिवि
नांनरकएकसतएकबंधजोगजानीहै॥तीर्थंकरआहारकविना
पसुमनुष्यनरकेवीसासोसवनासेसिवयांनीहै॥८८॥सूक्ष्म
बारेवरसबाइसजलसातवाततीनतरुकायकीदसहजा
रहै॥पषीकीवहत्तरिसहसबीयालीससर्पआगदिनतीन
दोइन्द्रीवरसवारहै॥तेइंद्रीदिनउनचासचवइंद्रीछमासस
रीरसूपपूरवागनवआवधारहै॥मछकोरपूरवमनुषपसुती
नपल्यसागरतेतीसदेवनारकीकीसारहै॥८९॥षटपांचती
नएकषटतीनषटच्यारदोदोपांचएकएकचौषटतीनैग
हे॥नवचौचौतीनतीनपांचएकसोगपारहदोयदोयवती॥
सपांचतीनतारेएलहै॥कल्पकादगाईसकेसबदौसेइकत
लीसकएकंकेगपारहसैपारसदहै॥दोयलाषसवसवह

गार न वसै वाणं सब मैं छिन्या लेष लिवि व वानी मैं कहे ॥१०८॥
जमहे न काल ना व आपेन रमुहे अस्तपर के च तुष्टे न
मा मत दर व है ॥ आपले है परसेन एक समै ॥ अस्तनाप
[illegible] जो के सौ न क है जो हि अवतव न वहै अस्तकह
नास का अ माव अस्त अवतव नासक है अस्त नां हि
नाहि नास अवतव है ॥ एक वे कहे न जांहि ॥ अस्ते नास अव
त अस्याद वाद से ती सात भंग ॥ सधे सब है ॥ र जीव है अनंत
एक जीव के असंख्य ।। असंख परदेस मानिये ॥ एक
परदेस मैं अनंत कर्म वर्गणा है ॥ एक वर्गणा अनंत पर
मानू गंनिये ॥ अणु मैं अनंत गुण ॥ एक गुन मैं अनंत पर्याय
एक के अनंत भेद जानिये ॥ तिन तें रूप ये अनंत नातें होय
में अनंत सब जाने सम मैं माहि देव सो वषानिये ॥ ॥ रूपे चर
चा मुष सो लानै सुने ग्यानी न हि कांनन ॥ केई मुनि घर जांहि
नांहि न बैफि स्यान ना ॥ तिन कों लषि रूप गर सार यह स
त कच नाई ॥ पढत सुनत है बुधि सुध जिनवानी गाई ॥ इस
मैं अनेक सिद्धांत कों मथन कथन द्यानत कहा ॥ सब मैं हि
नाम है जीव का वहम सरदहा ॥१०९॥ इति श्री चर
चा शतक द्यानतरायजी कृत संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥१
मंगल ॥ अथ बारषडी सुरत की लिषते ॥ दोहा
नमों अरिहंत कों ॥ नमों सिद्ध आचार उपाध्याय सब सा
धु कों नमों पंच परकार ॥ १ ॥ जन करो श्री आदि कैं अंत नाम म
हावीर ॥ तीर्थंकर चौवीस कों ॥ नमो ध्यान धर सीस ॥ २ ॥ तिन मु
ष ते उपजी सार ॥ नमस्कार ताकों करो इक
जा वानी के सुनत ही ॥ ॥ ॥ पर मग्यान
॥३॥ कुदी सुरत क छुक हन्दी ॥ बारषडी के छंद ॥ ४ ॥ बारषडी कुं
छंद बनाऊ ये मेरे मनमाई ॥ जैन पुरान वषानी वानी सो मैं मु
नि पाई ॥ गुरु प्रसाद ज्ञान विचयन की संगति यह तप जीव तुराई से र
त कहै बुधि है थोरी ॥ श्री जिन नाम सदा हार्ड ॥ क का करत सद
फिर्यो ॥ जाम न मरण अनेक ॥ लष चौरासी जोन मैं ॥ काजन सु
लो एक ॥ काज न सुधरो यक दिवानां ॥ तेसुं न असंख कुमाया

तेरीभूलतौहैदुषदाई॥वकुतेरासमझाया॥नटकितफिरमैछ
कुगतिकैमीतरि॥कालअनादिगमाया॥सुरतसतगुरसीषन
मांनीतातैजमनरमाया॥ध्यषाभूवीमतलषै॥संसारीसुषज
नि॥यहसुषदुषकामूलहै॥सतगुरुकहीवषांनि॥सतगुरुकहे
वषांनिजांनयहहूमतिहोयअयानां॥विनासीषसुषइनइंद्रैन
कौतेमीठीकरेजानी॥इहसुषजांनिघानिहैदुषकी॥इसकानि
मेंभूलानां॥सुरतपछिपछितावैगाजवहीहोयनरकजवय
नाप॥गंगागुरुनिरग्रंथनै॥मतपवांनीमुषनाष॥औरविकारस
कलतजौ॥इहथिरतामनराष॥यहथिरतामनराष॥चाषरसजै
अपनोसुषचाहे॥औरसकलजंजालहूरिकरिएवातेअवगा
हा॥पचइंद्रीवसराषआपनीकर्मभूलकौंदाहै॥सुरतचेतअचे
तहोहमतिऔसरवीत्याजाहै॥घाटघाघाटसुघाटमैं॥नावल
गीहैआयजेअवकैचेतेनही॥तौगहरेगोतषाइ॥गहरेगोते
षाय॥जायवहकौंननिकासनहारा॥समैपायमानुषगतिपा
ई॥अजहूंनांहिसंभारा॥वारवारसमझाऊचेतन॥मानौकहा
हमारा॥सुरतकहैपुकारगुरोनयोहोवैनिसतारो॥७॥ननांना
ताजगतमैं॥आपस्वारथसवकोइ॥आनिगाढजिसदिनपरै
कोइनसंघातीहोइ॥कोइनसंघातीहोइनसाथीजादिनकाल
सरताबै॥सवपरिवारआपनेसुषका॥तेरेकांमनआवै॥आगै
मदमैंछकाकिरलोछै॥मैंमैंमैंविरलावै॥सुरतसमझिहोयमति
वोला॥फिरियहैदावनआवै॥८॥चंचलचंचलविकलमनतिसम
नकौंवसआंन॥जवलगमनवसमैंनहीं॥काजनहोयनिदांनक
जनहोयनिदानजानयहवसनांहीमनतेरा॥पांचौइंद्रीछगो
चेरमनतूइनकाजयाचेरा॥रागदोषउरमोहसमीपीइनि
आनिमिलिघेरा॥सुरतजिसदिनमनथिरहैवैतिसदिनहै
इनिवेरा॥९॥छकाछकेहैरसस्वादमैं॥रसीछकहुरतिमानि॥छका॥कि
रसौछौडेनहीसमझतनहीआपांन॥समझतनहीअज्ञान
पानध्यांनया॥इनस्वादनमैंराच्यो॥औरैचिंतालागिरहीहैमा
नध्यानमुकाचौ॥जैसैंकर्मस्वावतयाकूं॥तैसीहीविधिनाचौ

सूरत रह्यौ चऊं गति मैं नटकत मिल्यो न सतगुर सांचै ॥२०॥ ज
जा जागि सुजान नर यह जागन की वार ॥ जौ अव के जागौ न
हीं ॥ तौ फेर न होइ संसार ॥ फेर नहीं होइ संसार सार यह जौ अ
व के नहीं जागै ॥ जौ जागै निरभय पद पावै जरा मरन भव भ
गै ॥ नां तर फसैं भव सागर हाथ कछु नहीं लागै ॥ सूरत होय म
ला जिव तेरा संसारी सुष त्यागै ॥२१॥ झझा झारि पिछौरि कै ॥
कंहूं तौ हि समझाय ॥ जा मैं लै वासा कीया सो तेरी नहीं काय
सो तेरी नहीं काय जाय संग तुझ के अकेला जानां तैनें घर वकु
तेरची नें आवत जात भुलानां ॥ थावर पंच त्रस पंछी मनष
भया देवै कहीं दांना ॥ सूरत वकुत काल तै भुगते आया नहें
पिछानां ॥२२॥ नना नर पद है भलौ ॥ अैसो औरन कोइ जेय
संसारे ते तरे ॥ भवजल पार जसोइ ॥ भवजल पार जसोइ
विज्ञ न तिरै विचारे ॥ तीन काल तिन सही परीस्या कमे चूर
करि झारे ॥ आवत जात जगत सौ छूटत लोकालोक निह
रे ॥ सूरत जे अैसा सुष चाहै चेतौ विनि सवारे ॥२३॥ टटा टाम
तिन की ते बुडे संसार फिरै नटकते जगत मैं तिन कौं वार
न पार तिन कौं वार न पार कहीं है फिरै विचारे ॥ नरतिरं ग्रंथ
नरक देव गति चारौं भ्रमनि हारे जां मन मरन कीये वकु तेरे सहे म
हा दुष भारे ॥ सूरत कौं तरा आप कमाये कि संपै जा स्ने वारे ॥२४॥
वगा व वाकिर ह्यौ कहा ॥ वेगो कौं न संसार ॥ छोडि गाव संसार कौ
जौ टूटै जग जाल ॥ ज्यौं टूटै जग जाल नहीं लखेउ रिव्ही उपावै ॥
सतगुर कही मान लै सिष्या फेर न जनमैं आवै ॥ छोडै संग कुमति षोट
कौं सो तुमकूं वह कावै ॥ सुरत संग सुमति को लीजे ॥ सिवपुर जाइ
दिषा देवावै ॥ डडा डिग मति जाय तू ॥ अडिग होइ पद साधि दिढ
ताग हि परमातम की ॥ जो सुषल है समाधि जो सुषल है समाधि म
धित जि आपा पो ज्यो नाई सिद्ध रूप तेरै घट अंतर कहां ढुढ़ ऐं
जाइ ॥ जड पुद्गल कूं भिन्न जांनि त मिटै करम दुषदाई ॥ सूरत अ
प मैं आपा सो थोय हसुत गुरु फुरमाई ॥२५॥ ढढा ढोरी छोरि दे दि
गइ न की मति जाइ ॥ कुगुरु कुदेव कूपा न क्रां तुमति चित लगाय

कुमति चित्त लगाय जावा। ते जिनराकु देवकु वासी॥ ये तोकुं इग
तिदि षलावै सोडुष मूलनिसानी॥ ७ नतैं काज एक नहीं सुधरै कर्म भ
रमके दानी॥ सूरत ताजि विपरीतेइन्है कीस तगुरु आप वषानी ७
षाणारण औसौ करो॥ संवर सस्त्र संनारि॥ कर्मरूप रिपु आरि वडौ
ताहि ताकि कै मारि॥ ताहि ताकि कै मारि वार करि कर्मरूप आरि सौ
डौ॥ है अनादि के दुषदाई ते। रीजा ति विगोडौ॥ नारायण प्रतिहर
अरु चक्रीयानें वभ्भान कोडौ॥ सूरत ग्यान सुभट तहां जाते तिन याक
जड षोडौ॥१८॥ ततातननतेरा नहीं॥ तामेरसौ लु नाड। तौडै ना ता
तनकर्मो ताहि कसौ पतिजाहि॥ ताहिकसौ पति जाइ पाइ सु
षकैर सौ जगको वासी॥ जिनमें मैरषि तकर्म उपजे होय जगत मैं
हासी॥ याके संग वदेवकु ममता परैम महादुषफासी॥ सूरत निं
नजो निरस तनको यासैर हौन दासी॥१९॥ यथा थिरपदकौं व
सो थिरपद नहीं होइ॥ थिर ता गहियर नाम की॥ थिरपद परसें सोय
होय सुषगति आरो संछूटै॥ ग्यानध्यानकौ करे हथौडो कर्म आरि
जकैं कूटै॥ यह जग जाल अनादि कालकौ सो औसी विधि छूटै सूरत
थिरपद कैसे परसें सिवपुर का सुषलूटै॥२०॥ ददादरवछु ऊकहै
प्रगट जगत के मांहि॥ औरदरवसव षेलहै॥ ग्यानी मानतनांहि॥
ग्यानीमानतनांहि रवषे सोधातनके जानें॥ मांटीभूमिसवलैं
जोधन जथमैं प्रगट वषानें॥ पुदगलजी वधरम अधर्म काल अ
कास षष्ट जानें॥ सूरत इन दरवान की चरचा ग्यानी गिनें षजानें
२१॥ यथा ध्यान जगत विषै प्रगटकहौ है च्यारि॥ आरति रुद्र धरम
सुकल ये जिन मति कहै विचारि॥ जिनमति कहै विचारि च्यारि ये
ध्यान जगत के मांही॥ आरति रोद्र जगत के करता याते मुक्त गते
नांही॥ धर्म ध्यान के मोनर धारक सुजसुष होत सदा ही॥ सुरल सुक
लध्यान के करता ते सिवपुर को जाही॥२२॥ ननाना सेकरम जव
नेह धरै निज मांहि॥ नटकी कला जगत विषै नेह करै छिन मां
हि नेह करै छिन मांहि तै [illegible] ग आया नहीं फीसा वै जो पानी मैरहै
कमलन रजु जनेट नहीं पावै॥ सुजन अर अषन एक से दो करी फन
हा पिछता वै॥ सूरत जिन नलषे औसी विधि करम कहां दिग आवै

२३॥ पयाइं जु अपनौ लषौ॥ अरु परसंग तिह्यो॥ छोरा॥ परसंग तिआ
श्रव वंधै॥ देहकरम॥ फफकफोरा॥ देहकर्म फफकफोर तू जै आश्रव फिरि
निकसन नहि होइ॥ आश्रव बंध पडी है वेडी लगौ उपावन कोइ
यालेंइ॥ तिधरो संवर सो हितकरि कै दिल जोइ॥ सूरत संवर
कौ आदरिये कर्म निर्जरा होइ॥ २४॥ फफा फूल्यौ ही फिरै॥
फोकट देषि न मूल फासी फंद अनादि के॥ करतोडन का मूल
करतोडन का मूलन्मूल मति दावन लौ तै पायो॥ तुम तैं भवसा
गर सौ मति आगति सो पायो॥ याही गति सैं अनंत तीर्थंकर केव
लग्यान उपायो॥ सूरत जानि वृभमति चूके यह सतगुरु समझा
यो॥ २५॥ बबा विसन कुविसन है॥ विसन वेगि तू त्यागि॥ वस
करि पांचो इंद्री॥ सुनकारे कौ लागि॥ सुजकाज्ञि कौ लागि स
गिकर विसन सीत ये नारी॥ जुवं आमिष सुरा पांन मधु षेटक
नांजुल थारी॥ परधन चोरी अर वेस्या कौ त्याग करै परनारी॥
सूरत इसन वमैं सुष पावै॥ परभव सुष अधिकारी॥ २६॥ भभा
भूल्यो ही फिरै॥ भरम्यो महा मिथ्या॥ भेद न पावै ग्यान कौ॥ या
तैं आवत जात यातैं आवत वात सुन भेद गपात नही पायौ
क्रोध मान लोभ अर माया इन सौ नेह लगायो॥ परमारथ क
री तिन जांनी स्वारथ देषि भुलाना॥ सूरत भेद ग्यान तिन जा
नि तात्यौ तिन मिथ्यात मिटायौ॥ प२॥ दोहा॥ ममा मति तिन क
सही॥ तिन मल कीनी दूर॥ मलवाले मलमुं नरे॥
२७॥ तिन कौं नही समुझ॥ तिन कौं नही समुझ रहर है॥ कुमती कु
मति विचारै॥ तिन कै कुगर निनैं समझावै पकडै भवजल म
र॥ पुन्य पाप के भेद न जांनैं जीव अनादि कमारै॥ सूरत ते नर
पर कुसंगति किस विधि दोष निवारै॥ २८॥ यायां या निपजौ पुर
षा मे होय अकाज॥ यह ममता में फसि रह्यो॥ याहि न आवै ल
ज॥ याहि न आवै लाज वाज नहि॥ कहो तेरो द्यो को है॥ तात म
त वाधव काम नि सुति तुइन को सुष मो है॥ आगे जांम पग न है
इ मन मे यह तुम कै न ही मो है॥ सूरत तजि अस्थान स्थान पत
त वसि वपुर सुष हो है॥ २९॥ ररा ररयौ अनादि कौ॥ रचि विषि

रनसोद्री ॥तारसराचैौ॥नहीआतमा॥लषीनरसंकीरीत
लषीनरसकीरिति॥मीतैतैविषयनसंगसुषमान्या॥आतमी
कसूषहैसि वदायक सोतैंनदीपिछांनी॥जिनरसरीतिल
षीआतमकीसोसिवपुरकोंरानां॥सूरतवेनवमुकतिजादि
गतिनआत्म ॥हितआना॥१॥ललालषद्यैादीरहै॥लगो
जतकैजेषलष्यौन आपसरूपकोलह्यैौनसुधविवकान है
नसुधविवेकएक तैंपरआपानहींबूझा॥वस्त विनासी
नहीं॥अपुकासीकटारमतसैगकूफा॥सूरतवेनवपारनये
हैति नकौंअलमसूफा॥२॥वावावासंगतिबुरी॥तासौहैार
कूनाव॥सासयलीसंगतिनलीतामैंसहजसुनावै॥तामैं
सहजसुनावहैसोसहलीमोप्यारी तत्वदरवकीचरचाति
नकोतजेकुचरचान्पारी॥नरमनावसोउरिरहेत है धरमम
नकीत्यारी॥सूरतयहवेछामैरमनचनमितनसोपारी॥२॥
ससासोईसुघरहै॥सुनसुघरकीसीषसदारहैसुनध्यान
मेंसहीजेनकीठीक॥सहीजेन कीठीकतिनूहैं अरकछु
नहीनावै॥आगमओरअध्यातमवानी॥सुनैसुनैवेगावे
कुकथाआरिविगारजगतकी तिनकौंनाहीसुहावै॥सर
तसोफजनमोनावैतेसिवपंथवतावै॥२॥षषापुदुकनि
वारिकैषिमातावचितलाय॥षुलेकपाटअभ्यासके॥षैरकर
मउषदाषजाय॥षैरकमेउषजायजायवहषिमांतावचित
चितलावैहोयअभ्यासलासजनभवकोंगपानीजय जग
सदामगनता॥अपनैं मनमैरीरीझआपसुषपावै॥सूरत
न्यारातिंनसवनिमेंसोआत्महितलावै॥२३॥ सोसाहू
जगतेह॥सोसाधुजगतेहैजालेमे सोविचारै॥सोषवातमेहै
सेवसंसोरी॥तिनकौंनहीनिहारासंकलपविकलपजगके
जितनेतिनउसमनकैटारै॥सूरतसोसाधूजनऐसा॥सिवपुर
कोपहुचैं॥२४॥ललालछमीसिववैराणनलछनकोचेवा
लषोसुलषअपरष्पकै॥ तजेकुलछिनदेवा॥तजेकुलछिनदे
वदेवलषिसियरूपकोंधोवै॥अरहंतआचारिजउवकायसा
२ ससासोध्यानांसदासुधवचनलषलेहसदारांहैसंतोषमैं२७२

संतोष

नसीसनमावै॥जिनमतदेषिसिधगुनआरोयहदिटलामन
लावै॥सूरतइहपरतीतधरैमनसोसम्यकपदपावै॥३४॥दोहा
हूजेहीरहै॥कैपरवससुषपायकैंानआपवसिद्धजियेदोय
परमसुषदाय॥होयपरमसुषदायपायपदअनरूपीअविना
सी॥केवलग्यानदरसजहांकेवलसिधपुरीसुषरासी॥आगेक
रमछिपावैजिनकेआवैगुनपरकासी॥सूरतसिधमहासुष
पावैकालअनंतेषासी॥३७॥ललालेकैपरमपद॥लषिलषि
गएंनिरवांन॥लोकसिषरऊपरचेटे॥लषोसिधसिवथांन॥
लयो॥सिद्धसिवथानजिनोनैंसोई॥सिद्धकहाये॥सूरतसिधप
देऐसैंगुरजैनपुराननगाये॥३८॥दोहा॥सम्यकपदकोजेल
है॥करैवैनगुनप्रीति॥देवधरमगुरग्यानकै॥परषसहैनिज
रीति॥३९॥वारषडीहितसोकही॥नहीगुनइनकीरीस॥दोहा
तेचालीसहै॥छंदकहेछतीस॥४०॥इतिश्रीसुरतजीकीवार
षडीसंपूरण:॥अथदूसरीककावतीसी लिष्यते॥ककाकेव
लपदनिजमूलिमति मेरेमनवाजाई॥केवलपदविनमेरेज
वजगतजरमाई॥१॥षषाषलअलषषोजेनही॥मेरेमनवाज
ई॥षलषअलषषोजेतोहेरेजीवअलषलगाई॥२॥गगागति
गतिनटकतलूफिरो मेरेमनवाजाई॥वहरूपाज्यैमेरेजीवसाग
वगोई॥३॥घघाघसौघाटकुघाटमेमेरेमनवाजाई॥अवनहीं
चेततोहेरेजीवगोसाबाई॥४॥ननानावनगवनोकारकीमेरे
चटेसमकतिमेरेजीवनारजनराई॥५॥चतुराईसवछोडिदेरेमन
वाजाई॥आतमदरसनमेरेजीवसमकितचतुराई॥६॥छछाछल
वलपरपंचछोडिदे मेरेमन०॥छलवलकरिसोहेरेजीवआतम
छलनलाई॥७॥जोगजुगतिजानीनही मेरेमन०॥जोगजुगतिवि
नहेरेजीवमुक्तिनथाई॥८॥झझाझपपापकोमूलहै मेरेमनवा
झटझटतैंबुड्यौहेरेजीवववसरपराई॥९॥याञायोहीतेरीकरि
रह्योमेरेमन०॥यांनहीतेरीहेरेजीवयुहीलपटाई॥१०॥टटामि
थ्यादरसनटेकतजिमेरेमनवाजाई॥टेकतिहारीहेरेजीवअना
लगाई॥११॥ठंठाठगाकर्मनकेवसिपसौहेरेमनवाजाईअवरमि

कुवगहे रे जीव अवसर आई॥१२॥ डडा डंड कचोई सुविषै हे रे म॥
आवत जावत हे रे जीव वो हो विधि नाई॥१३॥ ढढा ढोक दई अ
म देव नै रे मेरे मन वा ना ई॥ कव कुन ढाके हे रे जीव जिनव
माई॥१४॥ णणा रणा कर मन को नित्य वधै मेरे मन वा ना ई॥ हो प्र
नवीता हे रे मेरे जीव नी दल गाई॥१५॥ त कत्तौ तू ही ना गता मे
रे मन वा ना ई॥ तू न कसी को हे रे जीव तेरो न कहाई॥१६॥ थिर
नै रहै थिर ना रही मेरे मन वा ना ई॥ थिर नैरे हसी हे मेरे जीव अ
थिर ज्यो छाई॥१७॥ दया धर्म को मूल है मेरे मन वा ना ई॥ करि
करुणा हे रे जीव समकि षट्काई॥१८॥ धधा धर्म विनं धूक
जीवो मेरे मन वा ना ई॥ लष्यात रुणी हे रे जीव॥ वहु षदाई
१९॥ नर भव रतन गुमाई यो मेरे मन वा ना ई॥ फिर पछितासी हे रे
जीव ज्यो मूल गुमाई॥२०॥ पपा पर पुद्गल ए भिन्न है मेरे मन व
नाई॥ शुद्ध निरंजन हे रे जी व चेतन राई॥२१॥ फफा फिरि फं
दा विषै परे मेरे मन वा ना ई॥ ज्यो दीपग मे हे रे जीव पतंग जर
ई॥२२॥ बुद्ध विकलप ना उरि है रे मन वा ना ई॥ निर्मल निज गुण करि
हे रे जीव सोधि सुषदाई॥२३॥ भभा भ्रम ना व हीय मे धरो मेरे
मन वा ना ई॥ भाव न क्ति ते हे रे मेरे जीव भव तराई॥२४॥ मम
न मृग विषय नव न विषै मेरे मन वा ना ई॥ दौरत डूत गत हे रे जी
व लल विलल चाई॥२५॥ ययौ वन नदिया पुरि मे मेरे मन वा ना
ई पार न पायो हे रे जीव गार करहाई॥२६॥ ररा रतन पडे पर हा
थ मे मेरे मन वा ना ई॥ लव क्या करसी हे रे जीव उपाव न थाई
२७॥ लो नल हे रि सिर तु परे मेरे मन वा ना ई॥ वही जात है [illegible]
मेरे जीव था गज नाही॥२८॥ वावा वडु षम ल्यो अवइहा मेरे म
न वा ना ई॥ छेदन भेदन हे रे मेरे जीव फो फिर आई॥२९॥ सस
मता सरिता स्नान करि मेरे मन वा ना ई॥ पाप कलंक जर हे रे मेरे
जीव क्यो न धूपाई॥३०॥ हाहा हू सि हसि करता है मेरे जीव सवल
आई॥३१॥ षला ला यिक समकत्ति के विना मेरे मन०॥ मुक्ति न
पावैसी हे रे मेरे जीव वकुइ षपाई॥३२॥ नेम कीर्त्ति की वीनती
मेरे मन वा ना ई॥ सुनि हिरदै धरि मेरे जीव सदा सुषव दाई॥ इति
हायहाय अवकोकै मेरे०॥८४॥

अथ ती बारषडी बीजाकी ढालवा गोपीचंदकी ढालमैं लिष्यते ॥

७६

दोहा ॥ श्री जिनवर वृषभकूं नमूं । नमूं जिनोतम वाणि । बारषडी उपदेशमय । रचुं स्वपरहित जाणि ॥ ढाल गोपीचंदकी ॥ ककाकाई रे हुं करतौ फिरै तु आलजंजाल । सीष न मानी रे गुरांकी तोहि ग्यानीजीव । विषयन मैं रे दे लिपटौर है तु बांधै कर्म । धर्म न जाणौरे कया हो यसमे । ग्यानीजीव ॥ १ ॥ षषा बांधे छै रै षोटो कर्मा तणी तुं न्यौं अनादि । षोटन दीसै रे जैनु कोतो हि । ग्यानीजीव । षमलगा पूरि रैजे नाषि कै कोई विगलेजाय । सुषमोदिक रै षडी मूढ ग्यानी गुण गमायौरे गमायो तु फिरै या विषयामांहि नदीलषै छै रै आतमरूप । ग्यानीजी । घघारना छै रे घारी लारना नदुःखमैं समसाय करै गोरे आतमरूप । ग्यानीजीव ॥ ३ ॥ घघाघर तु रे मुल्यौ आपणौ शुद्ध परस्वरूप । जो घरजाणौरे सो तो ना है ग्यानीजीव ॥ जातैं थौरे रैनयसं कहैसौ है सुषरूप जहां लषै सुष पैरै सो दुःषकूप ग्यानीजीव ॥ ४ ॥ नना नानानर भव रे दुलभपाय कैतैं पकीनो नाना पापुत्रादिकमैं रै रसौ तु नाय ग्यानजी ॥ थेमुत लव कैतैरै नाय है तुकूं नरमाय ॥ विन मूत लवतौ रै हितु मुनिराय ग्यानीजी ॥ ५ ॥ चचा चोरी रे जुग मैं तु करै औरकषाय आनंदनी च कर्म तु रै करै परतन्त्र ग्यानीजी चचाहैसुषकुं रे दुःखकुं नंचहै । होवे कि मजाय ॥ वोमध वुरा रे आमकी पूज्ञानीजी ॥ ६ ॥ छछा छेदारहै न अफा सींकु यो अरूपाय ॥ पलक पलकमैं रै छीजै छै आय ग्यानीजीव ॥ पापिनती तुरै गती मैं नाय है । पतनत्रय रापता यग होनै रै करमनाय । ग्यानीजी ॥ ७ ॥ जजा जोवन रै पौदि न आरि कौं या फूली काय मलमुत्रादिकैरै भरना या मांझ । ग्यानीजीव ॥ ८ ॥ ट गोदेयकै रै लोकू नाष सी दुरगति के मांहि तुया कारणरै मतिषणकमाय ग्यानीजी ॥ ९ ॥ झझा झगडो रै कर मनि तयझो निरजकि मया या दुःखदैवा रै तो हरक वनाय ग्यानीजी । नागअनतौ रे अहरकी जितो ये रहसी ग्यान फेरि न मीलसी रे आतमअनाज्ञानी ॥ १० ॥ ननानमा नरांणपौरे करी सोधातसु नीयरसुद्दीप ।

य॥पर कूं त्याग्यो रे निज लाय ग्यानीजी॥ दाव पड्यो छै रे थारी हूं स
के पीछे पिछिताय फेरि न मीलसी रे आराधन माय ग्यानी॥
२०॥ घटाटा लोरे हे मिथ्यात कुजिन वचन रथ्यारि राग द्वेष म
द रे मोह कूं मारि॥ ग्यानीजी॥ श्रि वन हि मीलसी रे मुद मुदाय
२१॥ जन्म मरन माय॥ निज सुध्दि पासी पोरे श्रीव लेजाय॥ ग्यानी॥
वं गा गा कूं रे रे तु तिहुं लोक को नुल्यो निज रूप॥ परवसि हो
य कै रे मूआ न व कूप ग्यानीजी॥२२॥ आई रिवि तरपा लजो॥ श्रा
न्या व कुरूप॥ नाहिं लीया छै रे आत्मरूप ग्यानीजी॥२३॥ ढढ
ढो री रे श्रीगुर की गहो मति फिरो सुछंद मोह विटपयो रे नाषै गे
फंद ग्यानी॥ तू एका करि तोरी साय जो करसी को न्याय॥
फिर जिनवानी रियां मिलसी नाहि॥ ग्यानी॥ ढढा ढूढो रे ब
मल मुत्र को आगत्यागो ने न्याय॥ ढूढो निज पद रे सिव पद दाय
ग्यानी॥ आतम थारो रे ढूंढो ग्यान दे तुज्यो नहीं और नो त विग
यो रे तुजी गेर ग्यानी॥२५॥ णाणा पायो रे मंत्र णोकार कोया
जा के माहि॥ अवत कोई रे चावै छै न्याय॥ ग्यानीजी॥ त्याते
उपेरे रे कूं करम करे का नास णि॥ आकनेनी ध्या वो रे त्यागो
वा के॥ ग्यानी॥२६॥ तता तो कूं रे तरण उपाय छ्यो सो दियो वता
य॥ जो कछु लागै रे तो कूं दुष दाय ग्यानीजी॥ तो मति वोले
रे पर कूं मति कहे यो योथे रे वी आराया तें मीलसी रे सिवनी
रधार॥ ग्यानी॥ थाथ्या थाथ्या रो रे काज सुधारे लेया संगति
पाय॥ पर पुद्गल मै रे कहा रह्यो लपटाय ग्यानीजी॥ पाचोइं
द्री रे वसि कर रिजीतले पचीस कषाय॥ जिनमति माहि रे ए
त्रे व्रत धाय ग्यानी॥२९॥ ददा देही रे देवल देव छै॥ यो आत्म
रूप॥ हमजो एणा परे सोरो जिन रूप ग्यानीजी॥ ये जिनप्रति
मा रे जिनमंदिर कहे॥ ते है भव दारिद्र तिहं दाते रे पावनी रू
॥ ग्यानी॥३०॥ धधा धन तो रे पञ्चलार हे सो अव कूं न्याय॥
जातें दुरगति हि सो। त्यागो न्याय ग्यानी॥ जो धन विन सैं रे से
किम और कन्य विना दी दाय ग्यानी॥३१॥ ननानी ही रे
जाणि पदार्थ तद समान हि नेया तिन मैं नी अवे रे आतम त्रा

आतम आदेय ॥ग्यानीजी ०॥ याही पिछाणे रे सोजाणेना हि
वोनचतेयरहनाहि ॥ सम्यक्दृष्टी रे जाणे न वमा ग्यानन
२० पप्पा परणोरे मुक्ति वधू अवतो हि कहू उपाय ॥ जासे
गमोगे रे सुष अघाय ॥ ग्यानीजी ॥ फादरा ते थतपराह
णेपहरिस्मोव सतरव्रुत संवर ॥ सीलस्वारी रे नावना
पाच ग्यानीजी ०२ ॥ फफा फेरनी रे जगमे तो हि कू वेरी
योकम सर्व विगाड्यो रे थारो जनम ॥ ग्यानीजी ॥ दुरगति
माहरि आरनि गोदिमपटके गोफेरि ॥ जातेसि वगति
केसो वे गोहे रि ग्यानीजी ॥ २३ ॥ बबा वरणेपोरे मेंहित
आपणो तु कोन हिया ॥ वीरवरमें रे नो दिकह बुका
रि ॥ ग्यानीजी ॥ जवजनम आसरि तवतू जावसी सरसी न्ह
काज ॥ नाहि नरो सोरे कर स्यो निज काज ग्यानी ॥ २३ ॥
जन्मा नरभौरे तु पामो हते अवमो हिछिपारि दो षरह
तनु रे मुनिपद धारि ॥ ग्यानीजी ॥ मुम्यव्रुत दीषे रे तो कुं
कविनस्यो श्रावकव्रुत धारि ॥ नाहि मोह अवरे नासे गोम
रि ग्यानीजी ॥ २४ ॥ ममा म्हारी रे म्हारी करतो रहे तो नहि
हिये विवेक ॥ थारी ला रनेरे को कजासी एक ॥ ग्यानी
जीव ॥ अजातन करि मि मकरि रे मोन हि छोड नही अ
लातु न्ही छोडे रे षासी काल ॥ ग्यानीजी ॥ २५ ॥ [illegible]
~~सो स्यारी हीर रहीत निवसननिवार साल ली है रे नरक~~
~~को दुवार ग्यानी~~ धर्म मुतादि करे या जुले ले न ही मेसव जु
या याया ही रे नव मे देषता हो जाय वियोग ॥ को करिस
रहे रे पर वसत्ता संयोग ग्यानीजीव ॥ जोये आता रे आते
मला र वाये जाता ला रे तो नुमरा षेरे नहि तेजि नरथा ग्या
नीजी व २६ ॥ ररा राग रिदे षी हाय के वाथे व कुकर्म नाहि
जाणे रे आत्मधर्म ग्यानीजीव ॥ श्री गुरु प्रा हि रे करमकी
रे ष ग्यानीजी व ॥ २७ ॥ लल्ला ले स्यो रे ला मसुथ मे को न्न
नफला न निजगुण जाते रे षु गट सो ला न ग्यानी जीव ॥ नि
जगुण जाते रे रु पकर्म ओछो मे है रे न व रुप सो मति जाणे ।

रला नसुषसुपा॥ग्यानीजीवण॥वाचाचाहवारयारीहारहीतुवी
सननिवारसा तुदीहरनरककेहवार॥ग्यानीजीवा॥यमेसुता
ईकरयाकु तललहीहनीदापरमईनकेसागेरसोहवुतयमे
ग्यानी॥२॥ससासारोरुनवतषोदीयो॥नीजकाजनकीनश्र
छोपायो॥गुरुकूचनउवीना॥ग्यानजीवा॥अचकूछीकरकर्म
रुगलोयीलमलमतीकरीविलंवलोकरिझावणरमतीक
रवंडे॥ग्यानीजीव॥३॥मयाषटहीरदरववताईयाश्रीजिन
वरतोहि तिनमेंश्रातमैरहोनीजजोय॥ग्यानीजी॥परवारी
तोरेकुसमजन्हीउनकूं कहे॥दोयदिनाकेमाहिं रहे
हीजोयां॥ग्यानीजीव॥४॥ग्रात्राश्रूनीरेपडियोसुणिलियो
नहीतजीकसायौ [illegible] तिनकेश्रतनीरन
वडुषदाया॥ग्यानीजीव॥मांसतुसनीनेरयोकलतीरगयसीव
गुतिछुतीसतजोकषायोरेविसचावीस ग्यानीजीव॥५॥श्रहाह
हाहीरुनवतुमतिकेरेपायोजि॥नयमेंपुएप०देसुरकुलनाति
श्रूपमी॥ग्यानीजीवण॥सतसंगतिश्रकारेनक्तिगुरांतणीजिन
श्रागमममेंनि॥निजवनयारोरेजपूहेशिवरमेंज्ञानी॥७॥दोहा॥
गारमेंनिम्माणवेरतासुसमतकैमाय॥पोससुदि[illegible]वमीन
ली॥तादिनपाववनाय॥१॥वारषडीकीजेनिपुनायदेसु
नेंकरिचित॥तिनकेमनवंछितफलहोवेचितपवित्र॥२॥
हीरानंदउपरोधतयासस्वदासयाकीनवीवुधिसुधिकरि
हीजीयदोषसुगुणछीन॥३॥इतिवारखडीवीजाकीचालमे॥
संपूर्णः॥ऋथवाराजलजीकीवतीसीली॥ख्यते॥चालरज्याकु
सुनीराजमती हेकाहसंषिनतेनेमकवार॥तोहेरथमोरिमंदर॥
गिरकुधाया॥१॥सुपीडालोहेकवरांजोलषिकरुणाकरी
विरकतभावहेकीनेवडेउरफाई॥श्रराजमतीतोहेसुनिके
ग्रँवासेजोवोलतीसुनिमातामेरीवातपरमसुषदाई॥श्रम
नमथरुकु हेश्रवजाउपतिनाथको॥वावीनाश्रनपसवजुनहेते
धरमकेनाई॥२॥संजमथरसूहेश्रवारकुसगनायदीसुनीहे
नायलजिकेदवारगिरकूंघ्याई॥३॥
श्रेवाजोवोलतीकहाश्रजोगीहेराजुलतेंवातवनाई

राज॰वती
७८

वरपरणास्यूंहेतोकुंमैंनेमकवारसोतुपगुणाकोहेथारीकह
मनमैंस्थायी॥१७॥संयमनारीहेबेटीनसंजमझालहे॥यावयमैं
तोहेबेटीनतपवणिआई॥१८॥तपकीतोवाताहेजोरीवनावो
हीसहजहे॥तपधरवोतोहेबेटीयादुहेराआई॥१९॥इमसुनि
हेवेरीहेराजुलअंवामैंजोबोलतीयामेरीदेहजीतेजनमीस
मरीनाही॥२०॥येसंनबंधहेअंबाजितसवदेहकेमैयादेहतैंम
रीअबसुषिपाई॥२१॥मातपिताजोसुतपरिवारधारेमघनेते
नकेनेहतेनिजकाजभीविसराई॥२२॥अबयोजोगहेमाता
मैंपायोपुन्यतें॥नाथमीलेजोहेमोकुंजाउपतिराई॥२३॥वी
षयलोगअशुद्धेमातामोकुंनहीचायहेवीषयसुषमेंहेलोग
सुरगकेमाही॥२४॥तपधरवेकुंहेनरभवसरोहेईरजुसोयोजे
गहेमातामिल्योसहजाई॥२५॥अबमैंतेरीहेअंबाजोचाकुंसी
षडी॥मेरहीतकहेमेरेनाथसोतवनाही॥२६॥मातपितासुन
तापजोवजसकलहासीषदीवावोहेमोकुंषिमाकरवाई॥२७
इतनीसुनिकेपीलाउग्रसेनजीबोलते॥बेटीरीतपलुवाल
केसेंवनाया॥२८॥अंगतुमारोहेबेटीबडोसुकमालहेतप
धरवातोहेबेटीतमासोनाही॥२९॥केसेवोलैतेलाकरैगी
वावरीजोजनवीसबवसीनारहिपरघरमाई॥३०॥हासिक
रासीवेटीतुनोरीपेवावरीयावयमैंतोहेबेटीनतपवा
णिआई॥३१॥इमसुणिकेजोहेराजुलवोबाणीबोलतीमव
नवमायमईकलाजोवकुंडषपाई॥३२॥नरकनणोजोहेमे
रतातेबहुपबकुंसही॥तिनिकेनेदहेमेरेतातेकहतनवा
नाई॥३३॥तिरजंचगतिमेंहेमेरेतातमैंनटकीयणीमाताही
हेनबिजायककोउनसहायी॥३४॥देवमनुषमैंहेमेरेतातत्रासना
वसिकरीदुषकोलहेमेरेतातकबुनलहायी॥३५॥तुमसंज
मदिहेमेरेतातेसुषकोतुपहे॥नेमकवरजीह्रैतजिराजजोगय
ाई॥३६॥जैसीरीतिहेपकरीहमारेनाथजीसोहीरीतिहम
कूंजोगपसोजादाई॥३७॥तपजीकरस्यूंहेमेरेतातसंजमधार
स्यूं॥यावयकूंतूमपरमादसफलकराई॥३८॥हमहवजानिहेप
रिवारसराजुलतणो॥धनिधनिधरिसबकरतेजोनमनकराई२

राजमतीजीहैंत्राविधाजोढवस्ताआचरीसुरणसंपूर्ण॥१॥

ॐनमः॥अथद्रमसंग्रहजीकीभाषालिख्यते॥मंगलाचरन
अडिल्ल॥रिषभनाथजगनाथसुगुनमनधांमहैं॥देवइंद्र
नरविंदवंदसुषदांनहैं॥मूलजीवनिरजीवदरबषट्विधक
हो॥वंदोसीसनवायसदाहमसरदहैं॥१॥सतइंद्रजोमइंद्रवती
सनवनचालीसहैं॥रविससिचक्रीसिंघसुरगचौवीसहैं॥स
तइंद्रनकरिवंदनीकअरिहंतहैं॥वंदोचौवीसोंजिनराजम
हंतहैं॥२॥जीवनौंअधिकारनांमसवैया॥३१॥जीवसदाउ
पयोगमईनिरमूरतभावनिकौकरताहैं॥देहप्रवांनकहै
भुगतानववासवसैंसिवकौंनरताहैं॥ऊरधचालसुभा
वविराजततौअधिकारनिकौंधरताहैं॥सोसबनेदवषो
नकरोसरधांनधरोंभ्रमकौंहरताहैं॥३॥जीवजथासवैय
३१॥इंद्रीपांचवलतीनस्वासआवदसप्रांनमूलचारइंद्री
वलस्वासआवमांनिये॥तेरवजीवैथाअरुजीवैआगेज
वहगाईएईप्रांनसेतीविवहारजीवजांनिये॥सुषसता
वोधअरुचेतननिहचैप्रांनसासतोसुभावतीनकालमैं
वषांनिये॥विवहारनिहचैसरूपजांनसरधांनऐसेजी
ववस्तलषैंसोसुषीपिछांनिये॥४॥उपयोगजथाकवित्त
॥इकउपजोगभेददोताकेदरसनग्यांनदरसनविधचा
र॥चक्षुअचक्षुऔधअरुकेवलग्यांनकहौंहैंआठप्र
कार॥कुमतकुस्रुतकुऔधसुमतस्रुतऔधऔरमन
परजैधारकेवलग्यांनसरवकोंनायकसोतुकमैंकि
नआपनिहार॥५॥सोरठा॥मतिस्रुतपरोछदछ॥मनपर
जैअरुऔध॥सुंनएकदेसपरतछ॥केवलसकलपर
तछहैं॥६॥चौपई॥दरसनचारआठविधग्यांन॥चेतन
केलछनसामांन॥नेव्योहारकरमकृतजोग॥निहचैसुद्ध
सुद्धउपजोग॥७॥अमूर्तीजथाकवित्त॥करनपंचरसपंच
गंधदोफरसआठकीमूरतहोय॥निहचैजीवअमूर
तीजांनौवीसमांहिकौंएकनकोय॥कर्मवंध्यौव्यो[illegible]हार

१०भा०

मूरती कालागोरा कहिवत लोय नै निहचै ओहारसमझ।
कै समतामाहै विचछन सोय।८। करता यथा। दरव भी करम।
घटपट आदिक कौ जीव ओहार वषांन। भाव क्रोध आदि
क रागादिकनैं असुध निहचैं परधांन। निहचैं सुध सुध नि
जगुन मैं केवलग्यांन सरूप सुजान। स्याद वाद सौ सवै
साधै अनुभौ निरविकलप सुषषांन।९। देह प्रवांन ज
था लष्यो। ज्यौ दीपक परकास एक सा घट वढ नांही। घटै
षटक नै मांहि वडै वट कै के मांही। यौं असंष परदेस वेत
जिय निहचै जांनौं। समुदघात विन तन प्रवांन ओहार व
षांन्यौं। लघु काय पाय संकोच कै थूल देह लहि विस्त
रैं। सव प्रांनी आप्प समांन हैं दया करैं सो वरतरैं।१०। सम
दघालसात नोमसरूप जथा। सवैया।। तश मूल देहतैं छू
टै नांहि वाहिर प्रदेस जांहि कहीयो हैं समुदघात सो ऽभै
दसातहैं। क्रोध सेती सत्रु निपैं वेदनां सौं औषद पैं सुभ
असुभतैजस कौ कृत ला विष्यात हैं। मरनांजगतमांहि
वेक्री वक्रजीव करैं। आहारक साधनिकैं संदेह विला
तहैं। केवल समुदघात समैं मांहि चेतन ही काय सेती
वाहिर निकल आपजातहैं।११। दोहा।। लोक प्रवांन
प्रदेस सौं तन समान ओहार। लोक अलोक सुग्यांन।
लो सुध आप समसार।१२। भुगताजथा कवित। पुंग्गल
दैतैं षांन पांन वहु पावत दैत पसीत अपार पुदगल।
कर्मवंध तैं प्रांनी सुषदुष भुगतामैं ओहार। विषैं कषाय
दयासमता निज भाव भोगता निहचै धार। सुद्ध ग्यांन सु
ष सिद्ध भोग वैं धुरै ध्यांन भोगो सुषसार।१३। संसारज
थ्याचोप ई।। भूतल अगन पवन तरुकाय। थावर एकें
द्री वहु भाय। लट वेटी माषी नर देह। वैते चोपन त्रस म
हु एहा।१४। एकेंद्री सूछम अरथूल। विकलत्रै सव
आम नैं मूल। समन अमन पंचेद्री मांहि। परज अपरज

चतुरदस मांहि॥१५॥ चौदै मारगनां गुनथांन नै असुद्ध सै
सारी जांन॥ सब जिय सुद्ध सुद्धनै मांहि॥ आप सुद्ध अनुभो
भो नांहि॥१६॥ सिद्ध सरूप घट मिथ्या बुध्या तिरा करन स
वैया॥ ३१॥ कर्म नास मन ए सिद्ध सदा सिव नांहि जीव अष्ट
गुन मई सिद्ध निगुन न ता वरे॥ अविनासी सिद्ध समैं सा
रे जीवै नांहि चलै जो हि नांहि लोक अंत वह रावरे देह
सेती कछू हीन चेतन प्रदेस सिद्ध परसेती मिंल मिले
नांहि वाव वावरे॥ भावल हर हो जांहि सागर ज्यो थिर
सिद्ध सुन ता सुभाव नांहि तीके मन वा वरे॥१७॥ उरध
चालत था षट् दिसा चाल जथा प्रकृत प्रदेस॥ दोय बंध
जोग सेती होय थित अनुभाग बंध कौं कषाय करै हैं॰
चारो बंध नासैं आग जेम चलै उरध कौं वाकी तजि कौं
न षट दिसा कौं निकरै हैं॥ वक्र चाल एक दोय तीन समैं
अनाहार रहाय लग उ मूरत जैसैं विसतरै हैं॥ सुधा चा
ल एक समैं वांन जेम आहार क मिथ्या वस जीव मरै सा
म्प कसो तरै हैं॥१८॥ अजीव पंच भेद जथा॥ अडिल्ल॥ पुद
गल धरम अधरम गगन जम जांनियो॥ पंच अजीव
दरव सव जड मैं मांनियें॥ पुग्गल मूरत बंध वीस गुन
सहति हैं॥ चार अमूरत जोन जिनागम सहत हैं॥१९॥ पु
दगल जथा॥ सवैया॥ धूप छांहि चांदनी अंधेर सबद
आकार थूल सुछ बंध भेद जे परजाय जांनिये॥ सूछम सू
छम अनु सूछम है कारमान सूछम ता थूल चार इंद्री।
विषै मांनिये॥ थूल सूछम है धूप छांह थूल जल घीव।
थूल थूल पृथ्वी का भेद एवं मांनियें॥ दस परजाय।
छहौ भेद सव पुग्गल के सारे आप आप विषै आप ही
पिछांनियें॥२०॥ धरम दरव जथा॥ चौपई॥ मीन चलै नै
जजल कौ पाय जिय पुदगल गति धरम सिहाय थिर

स० ना० नचलावैपेरकहोय।चलतेकौंसहकारीसोय।२४।अध
रमद्रव्यजथा।जियपुदगलकौंथितसहकार।अधरम
दरवकहीगनधमथ।पंथीवैवैछायामांहि।चलैनिसैवे
गावैनांहि।२५।धरमअधरम।दोहा।पुंन्यपापहोंयोंन
हीहैअविनांसीवस्त।तीनलोकमैंनररहैज्यौंपरतलेस
मस्त।२६।आकासदर्वजथा।कवित्त।सरवदरवकोठौ
रदेतहैंदरवआकाससुगुनअवकास।ताकेदोयभेद
नितजांनोलोकाकासअलोकाकास।पुदगलधर
मअधरमजीवजमपंचजहांसोलोकाकास।येचदर
वविनएकसुंननसोअलोकप्रांनमैंउकास।२७
कालदरवजथा।एककालअनंतेतीहूंजीकालअ
नूजाय।उगालकीपरमांनैतहांसमांहोतहैं।जलक १
कटोरीघरीसूरजसोदिनहोयमासरितअैनवर्षआ
दहेउदोतहैं।नईवस्तवोदीकरैपरावर्तचालधरै।
सोईविवहारकालविनासीकगोतहैं।अतीतअना
गतवरतमानपरजायकालानैंदरवलंषैंजाकेउ
रजोतहैं।२५।पुनः एकदर्वहैअकासताकेअनंतप्र
देसतांमैंलोकाकासकेअसंष्यातप्रदेसहैं।एकए
कदेसमांहिएकएककालअनूरेनरासजैसेथिर
न्यारीविनजैसहैं।सर्वदर्वपरनतिसहायनिहचैका
लअसंष्यातसताअविनासीअकलेसहैं।एकवी
रधसोमन्हचाकफिरैहैंअपंडसौंअलोककौसा
हायकालहींऐसेसहैं।२६।पंचास्तकाय।चौपई।जी
वदरवईकचेतनसार।दरवअजीवपंचपरकारा।छ
हौंदरवनाषैसमझाय।कालविनांपंचासतकाय।२
७।कालअकायपयथा।सोरठा।बहुप्रदेसजिनमांहि
अगनिकायतेईकहैंयातेंकायानांहि।कालएकपर

दूस कौं ॥२८॥ कवित धरम अधरम एक चेतन के असंषा
त परदेस सु जांन ॥ व्योम अनंत प्रदेस विराजै लोक अलोक
सरवगत वांन ॥ पुदगल संष असंष अनंत प्रदेसी विछूरे
मिले प्रवांन ॥ काल एक प्रदेस अरूपी तातें काल अकाय
वषांन ॥२९॥ परमांनूं बहु प्रदेसी जथा कालानूं है एक प्रदे
सी मिलन सकत सो कबा ही नांहि ॥ तातें काल अकाय व
ता यो अप्रदेस हैं छदरव मांहि ॥ परमांनू हैं एक प्रदेसी मे
ल बहु भेद षंध हो जांहि ॥ तातें कायवंत बहु देसी नैं उपचा
र होन की छांहि ॥३०॥ आकास के अवकास गुन महात
म जथा ॥ अविनासी पुदगल परमांनू रोके जेतो षेत अक
स ॥ ता कौं नांम प्रदेस वषांनों तामें पूरन पुंन अवकास ॥
धरम अधरम प्रदेस प्रमांन कालानूं बहु बंधनि वास ॥
जीव अनंत प्रदेस गौर देषन सरवग्य कियो छिन भास
॥३१॥ सवैया ॥२१॥ अलबध सूछम निगोदये की चआचा
ल पहिले समैमें लंबा चौर हो य जात हैं ॥ दूजे समैं मांहि चौ
रा तीजे समैं मांहि गोल सो दीस वर्तें जघन्य कौ यात हैं ॥
राघो नांम मछ साढे बारे कोउ जोजन कौं दोनों रे के लो
क असंष्यात देस व्यात हैं ॥ छोटा बडा मध्य भेद कें सो री ॥
सरीर धरो एक परदेस एक जीवन समात हैं ॥३२॥ नवत ॥
त्वथा पनो जथा ॥ कवित ॥ चार दरवनि त भिन्न विराजैं पुद ॥
गल जीव मिलें जिह चार ॥ सात पदारथ तहां होत हैं दोय ॥
आप सो नौं परकार ॥ आस्रव बंधन संवर निर्जर मोष पुंन ॥
अरूपाप नि हार ॥ सो सब भेद वषांन करत हैं कछु सरूप स
म्य क गुन कार ॥३३॥ जीव तत ॥ छप्पै ॥ एक चेतना सार दोय ॥
नि हचे मो हारी ॥ रतनत्रै करि तीन अनंत चतुष्टै धारी पंच
परम पद रूप काय षट पालनहारो ॥ सात भंग सौं सधै आ
ठ करमनि तैं न्यारौ नौ लबधवंत दस धर्म धरि सो सरूप है

म०ना ८१

रैहै धरो ईम जीव तत्व सरधांन सो उतरनो सागर तरौं ॥५६
अथ जीव तत्व कवित्त ॥ पंच अजीव कथ है चारो जिनके का-
नी विना व न होय ॥ पुदगल मुरत अमुरत विराजैं मुरत अन गु-
न पाचे जोय ॥ सीत ताप रूपे चिकन के दोरस वरन गंध अ-
व लोय वंध अ रूप वीस गुन परगट देषैं जानैं चेतन सो-
य ॥ ५७ ॥ आश्रव तत ॥ गीता छंद ॥ मिथ्यात पंच अविरत वा-
रे पंच वीस कषाय हैं ॥ परमोद पंद्रै जोग पंद्रै वहतर उ षट सा-
य हैं ॥ आतमा के परनांम एई भाव आश्रव नहिं लाव
स करम होनैं जोग आवें दरव आश्रव पुदगला ॥ ५८ ॥ वं-
ध तत ॥ जिम राग दोष विमोह अपनें भाव चिकने पग-
ले हैं ॥ ईस भाव वंध निमत सेती करम रज उवलगत हैं चे-
तन प्रदेस पुरांन करमन ए करम मिलि दिढ भए ॥ सह द-
रव वंध जथा भेद मद भाव वक विध परनये ॥ ५९ ॥ सित-
स वैया ॥ तथ जीव जैसा भाव करैं तैसा कर्म वंध परैं तीव्र
मंद मध्य भेद लीनें विसतार सो ॥ वंधे जैसा भेद आवें तै-
सा भाव उपजावैं तैसा फिर वंधे किम छूटत संसार-
सो ॥ भाव सारूप वंध होय ॥ वंध सारूप भेद जो भाव भाव-
च वलंगी साधी चदसार सो ॥ तीह्र मंद भेद तीह्र भाव
मूढ धारत हैं ॥ तीह्र मंद भेद मंद भाव दोस्वि चार सो ॥ ६० ॥
संवर तत ॥ छप्पै ॥ पंच पंच व्रत समति गुपत तीनो थिर-
पालैं ॥ वारैं भावन भाय धर्म दस भेद समा लें ॥ दस आलो-
चना सुरूप पंच चारित्र व नभागी ॥ जित छुधादि बाईस भा-
व संवर वैरागी ॥ तिस कैं नहिं लगैं करम रज सौं संवरा-
दरव ततहां यह भाव दरव संवर समझ जुदा जगत सो
हो रहैं ॥ ६१ ॥ निर्जरा तत ॥ तप निरवंछ क भाव निरज-
रा भाव तत सो ई ॥ वंध्यो करम तव षिरैं निरजरा दरव तहो-
ई उदै देय करि षिरै वुरी सविपाक निरजरा उदै दे यवि-

षिरैं ज ली अविपाक सुषकरा॥ सठकै अकाम निर्जरा जग॥
स्यानासकाम निर्जरा॥ अविपाक सकाम करी तिन हो जिन
हो ग्यांन घट मैं धरा॥ मोष तत्त॥ सवैया॥ ७१॥ राग दोष मोह नां
हि सम्यक सरूप मांहि सोई भाव मोष आप सुद्ध भाव मई हैं
प्रकृति प्रदेस थिति अनुभाग वंध चार सर्वथा विनास भएं द
र्व मोष भई हैं॥ परजाय नैं विचार जीव मोष जयो सार दर्वत
नैं सदा सिव नगरी नांहि नई हैं॥ दर्व मोष भाव मोष सिद्ध जी
व राजत हैं॥ सो मैं अव मेरी बुद्धि ऐसी परनई हैं॥ ७२॥ पुंन्य
तत पाप तत भाव पुंन्य सुभ भाव पूजा दांन जप तप भाव
पाप परनांम विषै औ कषाय हैं॥ दर्व पुंन साता अव सव
भेद पुग्गल के दर्व पाप सौं अभेद पुग्गल व अभाग हैं॥ दर्व भा
व पुंन्य पाप सुर्ग नर्क कौ मिलाप॥ सव सौं निराला आप
यही जीव राग हैं॥ एई षट् दर्व नव तत्त सरधांन हैं॥ राग॥
दोष मोह हरे मोष कौं उपाय हैं॥ ७३॥ रतनत्रै॥ सोरठा॥ स
म्यक दरसन ग्यांन॥ चारित सिव कारन कहे॥ नैं व्योहार
प्रवांन॥ निहचै तिहूं मैं आतमा॥ ७४॥ चौपई॥ सम्यक रतन
त्रै जिय मांहि॥ निज तन और दरव मैं नांहि॥ तातैं तीनो मैं
निह पाय॥ सिव कारन चेतन यह आप॥ ७५॥ दोहा॥ आप
आपमैं आपकौं देषै दरसन जोय॥ जांनपनां सो ग्यांन हैं चि
रताचारत सोय॥ ७५॥ दरसन ग्यांन यथा॥ कवित॥ जी
वादिक भावनि की सरधा॥ सो सम्यक निज रूप निहार॥
जा विन मिथ्या ग्यांन हो सहैं॥ जा विन मिथ्या चारत धार उ
रनै कौं परवेस जहां नहिं संसै विभ्रम मोह निवार॥ सुपर
सरूप जथारथ जानैं॥ सम्यक ग्यांन अनेक प्रकार॥ ७६॥
जो सामान्य हे विसेष विन निराकार दरसन परवांन॥ जो
विसेष जीनै अर्थनि कौं सो आकार ग्यांन परवांन संसा
री छदमस्त जीव कौं एक काल नहिं दरसन ग्यांन एक स

भैभैंदेषे जानैं केवलरूप अनुपम मांन॥४७॥ चारतरूप अ
था॥दोहा॥ असुभभाव निरवारकैं सुभउपयोग विसतार॥ सु
पतिसमति व्रत भेद सौं सो चारित्र व्यौहार॥४८॥ चौपई॥ बोहि
रपरनति चंचल जोग॥ अंतरभाव समस्त उपयोग॥ दोनौं
कियें बढै संसार॥ यो केनि हचे चारतसार॥४९॥ ध्यांन कारन
चारित्र निहचै अरु व्यौहार॥ तनै मुकत कारन निरधार॥
होहिं ध्यांन तें दोनौं यांस॥ कीजें ध्यांन जतन अभ्यास॥५०॥
ध्यांन दसा॥ सवैया॥ ३१॥ ईष्ट औ अनिष्ट जे पदारथ जगत
मांहि तिनैं देष राग दोष मोह नांहि कीजियें॥ विषैं सेती अब
ताय सा गही जियें कषाय चाह दाह धोय एक दसा मांहि भी
जियैं॥ ततरपांन कौं संभार समता सरूप धार जीत कै परी
सह आनंद सुधा पी जियैं॥ मन कौं सुवस आंनना नां विध
ध्यांन वांन आपनी सुवास आप मांहि आपली जियें॥५१॥
सबजाप अछर मौहार॥ अडिल्ल॥ पैंतिस सोलें षट प
न चव दुग एक हैं॥ सा सजाप्य एं अछर और अनेक हैं॥
पंच परम पद रूप सदा मन ध्याईयें॥ रिध सिध हैं कहां सु
कत पद पाईयें॥५२॥ जाप्य अछर रूप॥ सवैया॥ ३१॥ नमो
अरहंतानं सात नमो सिद्धानं॥ पंच नमो आईरियानं सा
त वरन भावरे॥ नमो उवझायानं सात नमो लोए वारस
वसाहूनं॥ पैंपैतिस लववलायरें॥ अरिहंत सिध आचा
रज उवझाय साधु सुन सोलै अरिहंत सिध षट ध्यावरे
असि आ उसा ए पंच अरिहंत चार सिध दोय तें एक सर
व अछर कौं रावरे॥५३॥ पुनः पैंतीस अछर सरूप॥ कवित
सात नमो अरितानं अरु पांच नमो सिद्धानं ध्यांन॥ सात न
मो आइरियानं अरु नमो उवझायानं सात चार नमो लो
म जांनौं॥ पंच सव्वसाहूनं ग्यांन॥ पंच परम पद पैंतिस
अछर सुषकारी ध्यांऊं दिन रात॥५४॥ अरिहंत चौपई॥

घातियाकर्मविनास॥ग्यानदरससुषबलपरकास०
परमोदारकतनगुनवेत्त॥ध्याऊंसुद्धसदांअरिहंत॥५५॥सि
धकरमपापनासिसबथोक॥देषैंजानैंलोकअलोकलो
कसिषरथिरपुरुषाकार॥ध्याऊंसिद्धसुषीअविकार॥५
६॥आचारज॥दरसनग्यानप्रधानविचार॥तपवीर
जपंचाचार॥धरैधरावैऔरनिपास॥ध्याऊंआचारजसु
षरास॥५७॥उपाध्याय॥सम्यकरतनत्रैगुनलीनसदा
धरमउपदेसप्रवीन॥साधनिमेंमुषकरतांधार॥ध्याऊं
उपाध्यायहितकार॥५८॥दरसनग्यानसुगुननभंडार॥प
रमदिगंबरमुद्राधार॥साधैसिवमारगआचार॥ध्याऊं
साधसुगुनदातार॥५९॥उतमध्यानजथा॥तनचेष्टास
जआसनमांड॥मौनधारिचितासबछांडि॥थिरकैम
नआपमैंआप॥यहउतकिष्टध्याननिहपाप॥६०॥जा
वलौंसुकलनहैंमुनराज॥तबलौंनिहपावैंसिवकाज०
सबचिंतातजिएकसरूप॥सोईनिहचैध्यानअनूप॥६१
दोहा॥ध्यानोचलनांसोवनांमिलनांबचनविलासजौ
जौंपंचघटाईयेसोंसौंध्यानप्रकास॥६२॥सवैया॥आग
मग्यानसदाहतवोनतपैंतपजोनतिहुंगुनपूरा॥ध्यान
महारथधारनकारनहोयधुरंधरसोनरसूरा॥ध्यान
अध्यासलहैंसिववासविनांनवपासपरैदुषमूरा॥का
मंमहादिढमैंलचढेवऊध्यानसुबज्रकरैचकचूरा॥६३
पूरनत॥सवैया॥नेमचंदआचारजकहैमैंअलपश्रुत
कीनोदर्वसंग्रहकौंसोधौमुनिराजजी॥लषनरहितगुन
लषनसहितसुमसबदसबपूरनहोचूरनअकाजजी॥यां
नतततनकबुधतापरवषानकरीबालरीतधरीदकिली
जौगुनसाजजी॥कुंकथाकेनासनकौंबुधकेप्रकासनैं
कौंभाषायहग्रंथभयोसम्यकसमाजजी॥६४॥इतिश्री॥

दईसेग्रुहनाजासंपूर्णे॥ रागगौरवः॥ प्रांणी आतम
रूप अनूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल। प्रांणी॥१॥ यह सब क
र्मउपाधि हैं राग दोष भ्रम जाल॥ प्रांणी आतमरूप अनू
प हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥२॥ कहा भयो कांई लगी आतम
दर्पन मांहि॥ प्रांणी आतमरूप अनूप हैं परतैं भिन्न त्रिका
ल॥३॥ परकी भूप रहैं अतरषेवी नांहि॥ प्रांणी आतमरू
प हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥४॥ सूलि भेवरी अहि मुओं बू
लभ्यो नर रूप। प्रांणी आतमरूप हैं परतैं भिन्न त्रिका
ल॥५॥ त्यौं तैं पर निज मांनियाव हू जन दतूं चिद्रूप॥ प्रांणी
आतमरूप हे परतैं भिन्न त्रिकाल॥६॥ जीव कर्म करतन
मिल के भिन्न भिन्न परदेस॥ प्रांणी आतमरूप हैं परतैं
भिन्न त्रिकाल॥७॥ मांहे मांहे संध हे मिलैं नहीं लवले
स॥ प्रांणी आतमरूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥८॥ घनक
र्म नि आछादियो भ्यो नमोंन परकास॥ प्रांणी आतमरू
प हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥९॥ हैं ज्यौं का त्यौं सास्वता स्व
क दोयन नांस॥ प्रांणी आतमरूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल
१०॥ लाली फूल कैं फटक मैं फटक न लाली होय॥ प्रांणी आ
तमरूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥११॥ परसंगति परनावहैं
सुद्ध स्वरूप न कोय॥ प्रांणी आतमरूप अनूप हैं परतैं भि
न्न त्रिकाल॥१२॥ त्रस थावर नर नारकी देव आदि कज
नेद॥ प्रांणी आतमरूप अनूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥१
३॥ गुण ज्ञानादि अनंत हैं परजै सकत अनंत॥ प्रांणी
आतमरूप अनूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥१४॥ निहवै
एक सरूप हैं ज्यौं पट सहज सुपेद॥ प्रांणी आतमरूप
अनूप हैं परतैं भिन्न त्रिकाल॥१५॥ ध्यांन तत्त्व अनुभौं की
जियैं या कौं यह सिद्धांत॥ प्रांणी आतमरूप अनुप हैं प
रतैं भिन्न त्रिकाल॥१६॥ इति पद संपूर्णं॥ ॥-॥

॥अथ स्वयंभू स्तोत्र भाषा लिख्यते॥ चौपई॥ राज विषैं जुगलनि सुख कि
यो॥ राज त्याग भव सिवपद लियो॥ स्वयं बोध स्वयंभू भगवांन॥ बंदौं
आदिनाथ गुणषांन॥१॥ इंद्र षीर सागर जल लाय॥ मेरु न्हवाय गा
य वजाय॥ मदन विनासिक सुख करतार॥ बंदौं अजित अजित
पद कार॥२॥ सुकल ध्यांन करि करम विनास॥ घाति अघाति स
कल दुखरास॥ लह्यौ मुकति पद सुख अविकार॥ वंदौ संभव भव
दुखटार॥३॥ माता पछ्छिम रैंन मंझार॥ सुपिनैं सोलै देखे सार॥ भूप पू
छि फल सुन हरषाय॥ बंदौं अभिनंदन मन लाय॥४॥ सब कुंवा
द वादी सिरदार॥ जीते स्यादवाद धुनि धार॥ जैन धरम परका
सक स्वांम॥ सुमतिदेव पद करो प्रनांम॥५॥ गरभ अगाउ धं
नपति आय॥ करी नगर सोभा अधिकाय॥ वरषे रतन पंदरै
मांस॥ नमौं पदम प्रभु सुख की रासि॥६॥ इंद्र फनिंद नरिंद त्रि
काल॥ वांनी सुन सुन हौंहि सुख्याल॥ बारै सभा ग्यांन दातार॥
नमौं सुपारस नाथ निहार॥७॥ सुगन छियालीस हैं तुम मां
हि॥ दोष अठारै कोई नांहि॥ मोह महातम नासक दीप॥ नमौं
चंद प्रभु राष समीप॥८॥ बारै विध तप करम विनास॥ तेरै भे
द चारित परकास॥ निज अनिछ्छ भवि इछ्छक दांन॥ वंदौ पु
हपदंत मनि आंन॥९॥ भवि सुखदाय सुरग तैं आय॥ दस वि
ध धर्म कह्यो जिनराय॥ आप समांन सबनि सुख देह॥ वंदौं सी
तल धरम सनेह॥१०॥ समता सुधा कोप विष नांस॥ द्वादसां
ग वांनी परकास॥ चार संघ आनंद दातार॥ नमौं श्री श्रेयांस जि
नेस्वर सार॥११॥ रतनत्रय सिर मुकट विसाल॥ सोभै कंठ सुगु
न मनि माल॥ मुकति नारि भरता भगवांन॥ वासपूज्य वंदौं ध
र ध्यांन॥१२॥ परम समाधि सरूप जिनेस॥ ग्यांनी ध्यांनी हि
त उपदेस॥ करम ~~नास्य नरता भगवांन॥ वासपूज्य वंदौं~~
~~धरम ध्यांन॥~~ नास सिव सुख विलसंत॥ वंदौं विमलनाथ भ
गवंत॥१३॥ अंतर बाहिर परिग्रह टारि॥ परम दिगंबर व्रत कौं

धार सरवनांमप्रिवसुषविलसंत॥वंदौंविमलनाथभगवंत
१३॥अंतरवांहिरपरगहहत्याग॥परमदिगंवरव्रतकौंधार॥सरव
जीवहितराहदिषाय॥नमौंअनंतवचनमनकाय॥१४॥सातत
त्वपंचासतकाय॥अरथनवौंछदरवअरुभाय॥लोकअलोकस
कलपरकास॥वंदौधर्मनाथअघनांस॥१५॥पंचमचक्रवर्तीनि
धभोग॥कांमदेवद्वादशममनोग॥सांतकरनसोलमजिनरा
य॥सांतनाथवंदौहरषाय॥१६॥वहुथुतकरेहरषनहिंहोइ
निंदेंदोषगहैंनहिंसोय॥सीलवांनपरव्रह्मसरूप॥वंदौंकुं
थनाथसिवभूप॥१७॥वारैंगुनपूजेंसुषदाय॥थुतवंदनांकरैं
अधिकाय॥जाकीनिजथुतकवहुनहोय॥वंदौंअरजिनव
रपददोय॥१८॥परभौरतनत्रैअनुसार॥इसभौंव्याहसमैंवै
राग॥वालब्रह्मपूरनव्रतधार॥वंदौंमल्लिनाथजिनसार॥१९॥
विनउपदेसस्वयंवैराग॥थुतलौकांतकरैंपगलाग॥नमः
सिद्धकहिसवव्रतलेहिं॥वंदौंमुनिसुव्रतव्रतदेहिं॥२०॥श्रा
वकविद्यावंतनिहार॥भगतभावसौंदियौंअहार॥वरषे
रतनरासिततकाल॥वंदौंनमिप्रभुदीनदयाल॥२१॥सव
जीवनिकेवंदीछोर॥रागदोषदोवंधनतोर॥रजमततजि
सिवतियकौंमिले॥नेमनाथवंदौंसुषमिले॥२२॥दैतकि
योउपसर्गअपार॥ध्यांनदेषिआयौंफनिधार॥गयौकम
वसवमुषकरस्यांम॥नमौंमेरसमपारसस्वांम॥२३॥भौस
गरतैंजीवअपार॥धरमयोगमैंधरैनिहार॥न्हवतकादेद
या विचार॥वरधमांनवऊंवंदौंवार॥२४॥दोहा॥चौवीसौं
पदकमलजुगवंदौंमनवचकाय॥द्यांनतपढैंसुनैंसदा
सोप्रभुक्यौंनसुहाय॥२५॥इतिस्वयंभुस्तोत्रभाषासंपूर्णं॥छ॥
अथग्यारसैंछहजीवसमास॥दोहा॥वंदौनेमिजिनंदपदस
वजीवनसुषदाय॥वालव्रह्मचारीभयेपसुंगनवंधछुडाय॥१॥
जीवसमांसअनेकविधिभाषेगोमहसार॥नेमचंदगुरवंदिकैं

कहूं एक अधिकाय ॥७॥ चौपई ॥ पृथ्वी काय भेद बषांन। को
मल माटी कठिन वषांन ॥ पांनी पावक पौंन विचार। नि सई
तर साधारन धार ॥ ये सो तो सूछम सात तौं थूल ॥ इन के चौदै
भेद कथूल ॥ कही असे कक्काय दो जात ॥ परतिष्टत अप्रतिष्ट
त जुं तात ॥८॥ दोहा ॥ ह्रव वेल छोटा विरष वडा हष अरु कंद। ये
च भेद परतेक के लषत नांहि मतमंद ॥९॥ जब इनि मांहि नि
गोद हैं तब परतिष्टत जांनि ॥ जब निगोद नहि पाईयें अपर
तिष्टत व मांहि ॥१०॥ जात दसौं परतेक की वे चौदे हैं चौवीस ॥
परज अपरज अलवधसौं भेद वहत्तर दीस ॥११॥ वे ते चौइंद्र
त्रिविध परज अपरज अलब्द विकलत्रै के भेद नव हिंसा
केरनिषद्ध ॥१२॥ चौपई ॥ करमभूमि तिरजंच विष्यात। गरभज
सनमूर्छन दो जात गरभज परज अपरज अवीन ॥ अल
वधि हू सनमूर्छन तीन ॥ सैनी पंच असैनी पंच। दसौं भेद ज
लचर तिरजंच ॥ दसौं भेद थलचर पसु काय। दसौं भो नभचर
उभै सुनाय ॥१३॥ करमभूमि तिरजंच प्रकार। तीस भेद भाषे
निरधार ॥ भोगभूमि अव सुनो सुजान ॥ थलचर नभचर
दो सरधान ॥१४॥ परज अपरयापत दो भेद ॥ चार भेद जांनो
विनु खेद ॥ उतम मध्यम जघन्य सूतनै ॥ चारै भेद जिनांगम
ननै ॥१५॥ दोहा ॥ पंचेंद्री तिरजंच के कहे वियालीस भेद ते
रे भेद मनुष्य के सम फों नरम उछे दो ॥१६॥ चौपई ॥ उतम ॥
भोगभूमि सुषषांनि ॥ उतम पात्र दांन फल जांन ॥ मध्यम ज ॥
घन्य भोग सुव दोय ॥ चौथें कुंभोग भू नर जोय ॥१७॥ पंच मम
लेछ षंड प्रकार ॥ छ वें आचार ज गरभ सार ॥ परज अपर ॥
जइषा दस जांनि ॥ अलवधि नर ईनमें नहि मांना ॥१८॥ अ ॥
ढिन्न ॥ न्यारि अंसी मैथुन नांभि कांष में पाईये ॥ नरनारी के ॥
मलमूतर में गाईये ॥ मुरदे में संमूर्छन में नीजीघरा ॥ अल
वधपरजा य तेद यादर ही परा ॥१९॥ सोरठा नरक परलजुन

वास॥ परजअपरजापतकहे॥ जीवसमासप्रकास॥ सातामें
अवानवें॥२७॥ चौपई॥ ऐसवपटलसुरगकेपाव॥ भुवनय
तीदसअंतरआव॥ जोतिकपाचछियासीनये॥ परजअ
परजापतितिनलये॥२८॥ दोहा॥ नरकमांहिअगवनेय
सुईकसौतेईस॥ नरतैंसवदेसकेसतकवहत्तरदीसा॥२
९॥ अडिल्ल॥ परजापतएकसौंछियासीजांनियें॥ अप्रज
पतेंइकसौंछ्यासीमांनियें॥ अलवधपरजापतेंजीवचौ
तीसहैं॥ चवसतघटपरकरनांकरैमुनीसहैं॥३०॥ दोहा
नियतयेकचेतनमई भेदसरवव्योहार॥ निहचैंअरु
व्योहारकाजांननहारासार॥३१॥ सुदयासमताआप
मेंयहपरदयाविचार॥ ग्यांनतसुपरदयाकरैतेविरलै
संसार॥३२॥ इतिच्यारसैंघटजीवसमाससंपूर्ण॥ अथ
दरशग्यांनचौवीसीलिषतें॥ रिषवदेवरिषदेववीरलौंभी
रधीरकनि॥ च्यारवीसजगदीसईसतेईससुगुनगुन
सुरगवांमनिजनांममातपुरलांमचंरनतन॥ आयु
कायसुंभचित्रसुंकतआसनदसवरनन॥ जसगाय
पुंन्यउपजायवुधिपापकरोंमंगलअमर॥ सिरनाय
नमोंजुतजोरकरभोजिनंदनवतायहरा॥ रिषभदेवरि
षभनाथवृषभलछनतनसोहैं॥ नांभिरायकुलकम
लमातमरुदेव्यासोहैं॥ चौरासीलषपुब्बआवसतपं
चधनुषतन॥ नगरअजोध्याजनमकनकवसुंवरम
नहरनमन॥ सर्वार्थसिधतैंगमनपदमासन॥ केव
लग्यांनवरसिरसिर॥ अजितअजितअजितरिपुअ
जितहेमतनगजलछनमम॥ पितारायजितशत्रुआ
अषरगासन॥ आसन॥ लषवहत्तरपुब्बआवपुरज
मअयोध्या॥ धनुषच्यारसैंसाटगदवचवऊप्रतिवोध
ध्या॥ तजिविजयथांनपरधांनपदवसेविजैसेनांउदर

सिर॥२॥संभवनाथ॥संभवसंभवहरनपुरीसावत्रीजानौं
मातसुषेनांरूपभूपदिढराजउद्यानौं॥षरगांसनसुषस्वाद
आयग्रैवेयकतैंआये॥चिन्हतुरंगतुंगरंगकंचनकंचन
मैंगाए॥थितसाठलाषपूरवसुगतिधनुषच्यारसैंलषि
चतुर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरिनोजिनंदनवतापहर
३॥अभिनंदन॥अभिनंदनअभिनंदकंदसुषरूपसुषयं
व४॥मातासिद्धारथाकथाजुवरननतनमनहरतीनसक
तपंचासधनुषतननगरविनाता॥पूरबलाषपंचासतास
कपिलछनमीता॥षरगासनविजयविमानतैंकरम॥
तासपरकासकर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरनोजिनं
दनवतापहर॥५॥सुमतिनाथ॥सुमतिसुमतिदातार
सारवससवैंजयंतमना॥भूपमेघरथतातमातमंगला
करनकतन॥पूबलाषचालीसईसतनधनुषतीनसैं
चक्रवाकलषिचित्रपरगआसनसुषविलसैंछह
मासअमांकगर्भतैंअयोविनतीसुरनगर॥सिरनाय
नमौंजुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥६॥पद्मप्रभु
पदमपदमभविनवरपदमलछनसुषदाई॥घर
नभूपगुनकूंपसकूंपसुसीमांमाई॥अंतमग्रैवेय
कवासउसैंपंचासचापतनषरगासन॥वजसकतर
कवतनहरषकरमन॥थितितीसलाषपूरवपुरीकौं
संवीसवसनसुघर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरनोजिनं
दनवतापहर॥७॥सुपारस॥देतसुपाससुपासचवग्रीव
कतैंआए॥सुप्रतिष्टभूपालपृथ्वीषेनांमनभाए॥नगर
वनारसधांमस्वांमधरगामनराजैं॥चिन्हसाथियावी
सलाषपूरवथितिछाजैं॥तनहरतवरनदोसैंधनुषसु
रदोरैचोसठचमर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरनोजि॥
नंदनवतापहर॥८॥चंद्रप्रभु॥चंद्रप्रभुप्रभचंदचंदपुर॥
वैदेविकृगन॥महासेनविष्यातमांतलछमनासेततन॥

वैजयंततैं आयकायषरगांसनधारी॥ आवपुव्वदसलाष
नयेसवकौंसुषकारी॥ फेटसैंघनषतनभविकजनहंसपाव
तुममांनसरा॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमो जिनंदभवताप
हर॥ ८॥ सुबधिनाथ॥ सुविधिसुविधिकरतारसारग्यानतके
योनी॥ महान्रूपसुग्रीवजीवजयरामांरांनी॥ उज्जलवरन
सरीरधीरषरगांसनधारो॥ का।कंदीपुरसाषलाषदोपूर
वमोनो॥ ननघनुषएकसौनौरहतसहतचिहंजलचरम
कर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमो जिनंदभवतापहर॥
१०॥ सीतलनाथ॥ सीतलसीतलवचननयपुरआरनस
वरवरदिढरथतातविष्णातसुनंदामाताअवतरनवेंध
नुषसरीरधीरकंचनमेंगायौ॥ आवपुव्वईकलाषवरना
आसनसुषपायौ॥ श्रीहछचिह्नकेवलप्रगटभिंनभिंन
नाष्योसुपर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमो जिनंदभवताप
हर॥ ११॥ श्रेयांसनाथ॥ नअश्रेयांसश्रेअंसस्वर्गसोलनके
वासी॥ विष्णुराजमहाराजमातनंदापरकासी॥ असीचाप
ततमायआपगेंडेकौलंछनापरगासनजगवांनसिंघपु
रकनकवरततन॥ चौरासीलाषवरसजुगतिउषदावान
लमेघझर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमो जिनंदभवतापह
र॥ १२॥ वासपूज्यनाथ॥ वासपूज्यसवभूजभूपवसुविधि
सौंपूजौं॥ दसमलौकसैं आपकरतसुभकायनहूजौं॥ सतर
चापसरीरधीरस्वंपापुरआएं॥ लछनमहिषमनोगजोगप
दसासनगाये॥ थितिलाषबहतरिवरसकीजयावतीमाता
सुमर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमो जिनंदभवतापहर
विमलनाथ॥ विमलविमलअदलोकिलोकदादसवसा
स्वांमी॥ कपिल्लापुरआयकायकंचनजगनांमी॥ कृतवर्मा
भूपालवालजयस्यामामाता॥ सूकरचिह्नंनिसौनसावध
सुवनअतिसाता॥ थितिसाठलाषवरसनिसुषीषरगास
नतैंजवर॥ सिरनायनमौंजुगजोरकरमो जिनंदभवतापहर

१४॥ अनंत नांथ॥ सुगुन अनंत अनंत अंत सुर सो लजि
ने खरा॥ सिंघसेन नृप राय माय जपस्यामा के घरा॥ कनक वरन
परगास तास पंचास ता पतन॥ आव लाष है तीस ईस कौं सेही
लछन॥ परगासन कोसलपुर जनम कुल तहां आगे पहु
रा॥ सिर नायन मौं जुत जोर कर मो जिनंद जन वता पहरं॥१५
धर्मनाथ धर्म सुंधर्म प्रकास तास सरवारथसिघ सुघ भौं
न राऊ जस भान मात सुव्रता देवी जये॥ परगासन विंज
पाप चाप चालीस पंच तन॥ आव लीष दस वरस सरस
कंचन तन न हेम नां॥ लषिब रग चिंह्न सुन रतनपुर पारम
पावैं सुरति करा॥ सिर नायन मौं जुत जोर कर मो जिनंद
जन वता पहरा॥१६॥ सांतिनाथ सांति जगत सव सांति भो
गा सरवारथ सिघ रिध॥ कांम देव तन कनक तन चौद
हैं न चौ निधि विस्वसेन नृप तात मात अपरामत तवलं
छन॥ हथनांपुर मैं आप काय चालीस धनन्न ना॥ थिति
लाष वरस आसन पदम नांम रटैं अघ जाय टरा॥ सिर
नायन मौं जुत जोर कर मो जिनंद जन वता पहरा॥१७॥ कुं
थनाथ॥ कुंथु कुंथु रष वार सार सवारिथ वसा॥ हस्तिनां
गपुर आय चामीकर हरससस सूरिसैंन नृप जैन अैतस्री
कांता सुत मन॥ पच्चानवें हजार वरस पैंतीस धनुष तन
षरगांसन लछन गांस सुन तारेज न वैराग्य घर सिर
नायन मौं जुत जोर कर मो जिनंद जन वता पहरा॥१८॥ अर
अरि करि हरि सिंघ जयंत विमांन जांन जन॥ रूप सुंदर
सन सार मित्र सैनां मात्ता जनि॥ हस्तिनांगपुर आय चा
प तन तीस विराजैं॥ थिति चौरासी सहस वरस कंचन छ
वि छाजैं॥ षरगासन लंछन मीन सुभ वैन जलद सरस
वि कनरा॥ सिर नायन मौं जुत जोर कर मो जिनंद जनवताप
हरा॥१९॥ मल्लिनाथ मल्लि कर मरिपु मल्ल अयान अपराजे
त जांनौं॥ मिथलापुर अवतार सार घट चिंह्न पिछांनौं॥ कुं

नराजमहाराजषरगआसनसरदहियै।धनुषपचीसस
रीरसहसपचपनथितिलहियें।देवीप्रजावतीकनक
तनअमलअचलअविकलअजथसिरनायनमों।
जुगजोरकरजोजिनंदसवतापहर।२०।मुनिसुव्रतनां
थ।मुनिसुव्रतव्रतवरस्वर्गप्रानतकेथांनी।नृपसुमि
त्रपवित्रमित्रसुतसोमारांनी।राजग्रहीमेंआयकाय
कज्जलछविछाजै।वरससहसथितितीसवीसतन
चापविराजै।लंछनकछुवाआसनषरगदीनदया
लदयानजयसिरनायनमोंजुगजोरकरजोजिनंद
नवतापहर।२१।नमनाथ।नमिनमिसुरनरराजरा
जसरवारथसिधकर।विजयराजमाहाराजविप्प
लारांनीउरधर।आववरसदससहसपुरीमिथुलासु
षदारी।पैंडेधनुषसरीरषरगआसनलौलारी।तन
कनकवरनलंछनकमलग्यांनमांनहरिभ्रमतिमर
सिरनायनमोंजुगजोरिकरिमोजिनंदसवतापहर२
२।नेमिनाथ।नेमिधरमरथनेमजयंतविमांनवास
कियसमदविजैमहाराजसिवादेवीजोनौंजियनग
रद्वारिकानांमस्यांमतनजनममनहारी।आववरसइ
कसहसचापदसरजमतधारी।षरगासनआसनमे
षकौंसंषचिह्नहरिवंसनर।सिरनायनमोंजुगजोरि
करजोजिनंदसवतापहर।२३।पारसनाथपासप्रा
अयतोसवासप्रानतकरिआएं।अस्वसेनअवद
तमातब्रह्मीमनभाएं।नगरबनारसथांनजांनफं
नलंछननांमी।आवएकसौंवरसषरगआसनसे
वगांमी।तत्वहरितवरननकरधरनवज्रप्रगटसंक
रसिषर।सिरनायनमोंजुगजोरिकरजोजिनंदसवत
पहर।२४।वर्द्धमानवर्द्धमांनजसवर्द्धमांनअच्युतविमां

नगति नगरकुं फपुँरधरसारसिद्धारथभूपर॥रांनीप्रियका
रनीवनी कंचनछविकाया॥आववहलरवरसजोगषरगा
सनध्याया॥ तनसात हाथ मृगनाथपत्ति तुमतैंअवलौंध
रमजरा॥सिरनायनमोंजुगजरिकरजोजिनंदभवतापह
र२५॥रिषभअजितसंभवअभिनंदनसुमतिपदमसम
जिनसुपासप्रभुचंदसुंविधिसीतलश्रेयांसनम॥वासु
पूज्यजीविमलअनंतधरमपदरमां॥सांतकुंथुअरिम
ल्लमुनिसोविरतवीसमां॥नमिनेमपासवीरेसपदम
सिद्धनौनिधघरा॥सिरनायनमोंजुगजोरिकरजोजिनं
दभवतापहर॥२६॥पंचकुंमारनांमवासपुंज्यसूरपूज्यम
ल्लविधमल्लजयंकर॥नेमिदेहजमनेमिपासजोपांसछ
यंकर॥महावीरमहावीरधीरपरपीरनिवारन॥वडेपुर
षसंसारसारसंपतसुषकारन॥एपंचकुमरपदरीसुम
रकविनसीलवालकउमर॥सिरनायनमोंजुगजोरिक
रजोजिनंदभवभयहरन॥२७॥कलपव्रछकलपतैंचिं
ततैंचिंतामनिमन॥पारसकुंपरसतैंकरतहितएकज
नमजन॥जगतअलकलपअचिंतअसरसनिहारी
नोमी॥नोनोसवसुषदेहिंकोंनउपमांदेस्वांमी॥होनि
पटसिथलताकेविषेंचपलचितनिसदिनफिकर॥सि
रनांयनमोंजुगजोरिकरजोजिनंदभवभयहरन॥२८॥महा
पुरांनप्रवांनजांनआगेविधिवरनन॥वासवगांनवषां
नजांनदोलछनआसन॥होपकोपसंदेहनेहकरितहो॥
निहारेंसुद्धछंदसोसुधफेरिकौकवित्तसमारोहो॥अलप
वुद्धिबुद्धितविषैंऐकवातलीनीपकर सिरनायनमोंजुग
जोरिकरिजोजिनंदभवभयहरन॥२९॥जैजैंमलब्रह्मा
चरिजअटलबलसकलवनाय॥ऐकयेकजिनस्वांम
नामदसदसगुनगाएं॥सुनतसुनतचित्तचुनतधनतउ
षसंततप्रांनी॥धांनतरायभपायगायजिनपापकहांनी

गदजनमजरामतनहिंभगतजगतिएकतमदविगर॥सिरनाय
नमोंजुगजरकरिमोजिनंदमोतापहर॥१०॥ इतिदसथांनचौवीसी
संपूर्णं॥१॥अथदसबोलचौवीसीलिषते॥छंदछप्पै॥एकसम
पअभेददोयविधिविधितिषेदमें॥रतनत्रैकरिलीनचारविध
वीदिकमें॥पंचमगतिसुंचिगैरआपषट्कारकराजैं॥सातोंभे
करिभिंनआठगुनसहितविराजैं॥नवनोकषायदसबंध
हरितासरूपहिरदैधरो॥पूजोध्यावोंगावोंसदाजिहविह
विधभवजलतरो॥१॥अथयेकबोलकेचौवीसभेद॥वंदौ
वांनीएकएकध्यांनीअघनासक॥येकदरवआकासए
ककेवलसवभासक॥परमांनूयेकचलैंएककालानूप
रसैं॥एकसमैनिरअंसएकतीर्थंकरदरसैं॥इकिगुरुनिर
गथंजहांजसमएकदयामारगचला॥इकसमैंजीवजि
गतिकरैयेकआपअनुभौंकला॥२॥पुनः॥येकआंनचोद
हैवंधइकतेरयजिनवर॥एकमेरमरजादयेकमिथ्याव
घातकर॥जघनदेहइकसमैंराजवोदैंअनुजावैं॥धर्मअध
मेंविमांनएकवसलिवपदपावैं॥सुतरूपांनकरमविनइक
समैंजीवततलोपरनमें॥इकअनंतप्रदेशावऊदेसकोंवैर
देतजिनवचनमें॥३॥अथदोयवोलकेचौवीसभेद॥न
मोंउविधजिनरायजीवनिरजीवबषांनैं॥सिधअौरसं
सारभेदत्रसथावरजानैं॥कहीप्रत्येकनिगोदनितइते
रसाधारन॥सूछमथूलवषांनपंचइंद्रीमनविनमिन
आगमअध्यातमकथनसुनसुपरभेदकोंपरनएथे
रकलपत्यागजिनकलपधरकेवलज्ञांनदरसनएंध
पुनः॥वंदौंवंदसरूपसाधश्रावकसुषदायकनितअ
नितप्रवांनगुनीगुनसवकेग्यायक॥पुंनपापपरकास
तासफलसुषदुषभाषैं॥रूपअरूपनिहारदोयपरिग
हनहिंराषें॥दोभेदध्यांनवरननिकरैंदरवभावसंरजि
ये॥तिहवैमोहारसंभारमनदोयदयामेंहूजिये॥४॥अथ

थतीनबोलकेचौवीसभेद॥तीनसाधआराधवचन॥
मनकायलायकरि॥तीनपात्रसरधांनतीनविधआ
तममनधय॥तीनलोककौंजांनकायतीमौंअवधारै
संषअसंषअनंतदरवगुनपरजविचारौ॥संसैविमो
हविभ्रमरहितध्यानध्येयध्याताजुनौं॥करताकर्मकि
रियासमकग्यांनगेयग्याताजुंनौं॥६॥पुनः॥सामायक
तिऊंवारतीनसवसल्लनसाकं॥तीनौंदरसनमोहउ
नमनतजरागमिटाकौं॥तजतीनौंअग्यांनतीनसमकि
तमनआंनौं॥तीनसमैंअनहारदेवगुरुधर्मप्रवां
नौं॥लषभावपारगांमीत्रिविधतीनकरमसौंभेलन
हैं॥तजरागदोषअरुमोहकौंतीनचेतनांचिन्नहैं॥७॥
अथच्यारबोलकेचौवीसभेद॥चतुराननभगवांन
दांनविधच्यारबतावैं॥च्यारआराधनच्यारअर्थने
कौंपावैं॥चारसंघआधारच्यारविधवेदवषांनैंन
मैंचारविधदेवच्यारनिछेपेजांनैं॥चऊंघातिकरम
गिरचूरकरिजरसंगपाचारोमई॥चवध्यांनवषांनवे
ध्यांनसोचारभावनांमनभई॥८॥पुनः॥सहितअनंत
चतुष्टयच्यारचौकविनांसी॥च्यारकषायजलायच्यार
विकथानहिंनासी॥ज्ञांनच्यारप्रकारच्यारदरसन
परकासक॥पुंद्गलकेगुनचारनांरिचिऊंसीलवि
नासक॥सहिच्यारजातउपसर्गकौंच्यारभेदमनव
सकिया॥तिनबंधच्यारपरकारहरिसिवगतिकौंपा
नीदिया॥९॥अथपंचबोलकेचौवीसभेद॥नमौं
पंचपदसारपंचइंद्रीवसकीजैं॥पंचलवधकौंपाय
पंचस्वाध्यायपढीजैं॥चारतपंचविचारपंचपरमाद
विसारौं॥अंतरायविधपंचपंचमिथ्याततिवारौ॥पं
चौसरीरममतजौंनीदपंचनहिंकीजिये॥धरपंचम

हो द्दस भावसौं पंच समितिचित दीजियै॥२०॥पुनः॥सिद्ध पंच
हीनावपांच पैतालीजांनौ॥पंचाचारविचार पंचसिवका
रनमांनौं॥पंचजोतिकी देव पंचगोलेसाधारन पट पं
चासतकाय मूल के भावपंचगतनवपंचपरावरतन
तिकलपंचनरकउघसोंडरो॥बऊभेदपंचथावरसम
कपंचकल्यांनकपदधरो॥२०॥अथ षट्बोलकेचौबी
सभेद नमौंछमततमैंसारदर्व षट्भेदउकासकवाह
जतपषट्भेदभावतपषट्उघनांसकाषट्अनाय
तनतजोहां तिषट्हधअगुरलघाग्रदगलकेषट्भे
दक्रियाषट्गेहमोहअघाषट्नरकजायतारीकुमते
षट्विधसमकितवरनया॥पूजादिकर्मषट्पोषहर
षट्आवसकसौंसुबनया॥२२॥पुनः॥षट्मंगलवं
दामछुहौंपरजायतिजांनौ॥षट्सेनांचक्रेसंसंघन
नषट्परवांनौं॥संसथांनषट्जांनछविधपरजेनैं
धारौं॥छहौकालपरनांमकायषट्दयाविचारौं॰
जियमरनवेदषट्दिसिचलै षट्लेस्याजोधारिहैं॥ष
ट्अविधप्यांनकेभेदषटविधनिहचैमोहारहैं॥२२
अथ सातबोलकेचौवीसभेद॥सातनरकनयका
रमसनसातोतजजाइ॥सातषेतधनषरचप्रक्रत
सातौंउघदाई॥सक्रसातविधसैनरतनसवसात
किप्रधरसातअचेतनरतन॥सातचेतनचक्रेस
रलषसातधातमैंतन॥अनुचिमोनसातविधघ
रकैंदातागुनसातौसातविधअंतरायकौंटारिकै
१४ ॥पुनः॥सातअंगसरधांनजानतन॥जोगसात
हैं॥समुदघाताहैसातसातसंजमविष्यातहैं॥तीन
जोगविधसातसाततनमैंलं वषांनै॥सातस्वरनके
भेदसीलहतसातौजांनैं॥निजनामस्वांदसातौंउद

घईहांसातहीमेतहैं॥प्रभुनांमईतसातोंटलैंसातसत
सिवहेतहैं॥२५॥अथआठवोलकेचौवीसभेद॥आठमू
लगुनपालआठमदतजोंसयानें॥सम्यकआठोंअंग
गपांनकेआठवषांनें॥आठवीरतनिगोदआठगुनस
रगनराजें॥आठजुगलमेंदेवआठविधअंतरछांजै
पूजियेंआठविधदेवजिनआठौंअंगनिवारईये॥देऊरे
आठमंगलदरवआठपहरलोंलाईये॥२६॥पुनः॥आ
ठोप्रवचनधारजोगकेआठअंगहैं॥आठरिद्धदातार
फरसकेआठभेगहैं॥आठसमैंममादिआठकपमोनव
षांनें॥आठभेदसतआदआठलोकांतकजांनें॥अंग
लकुलमगुवरोमवसआठप्रातहारजभलेसवआठ
पांनपावकविषेंकाठकरमआठोंजलें॥२७॥अथन
ववोलकेचौवीसभेद॥नवोपदारथधारदरसनांवर
नीनोविध॥नोनैनगमआदसक्रधारीकेंनोनिधि॥नो
नारायनजांनमांननोहैंवलभद्र॥प्रतिनारायणनवें
नवोंनारदहरिहितकर॥नोनेंगुनपरजेंदरवकीआव
वंघनोवारिहैं॥नोगुनथांनककेभेदनोसमकितनों
परकारहैं॥२८॥पुनः॥क्षायकगुननोनमोंसीलनोवारे
संभारें॥प्रायचितनोभेदसांतरसनोमेंधारें॥नोग्रैवेय
कनरधारनोनतंतरक्षेरवुध॥जोनभेदनोजांनपांच
मंगलनोपदसुध॥नोगुनथांनकनोकोरमुनिनो॥
गुरुअछरअंकसवनोदोनतनीविधजांनकेनोधरम
गतिविनोमरन॥२९॥अथदसवोलकेचौवीसभेद॥
पूजोंदसअवतारजनमदसगुनजिनसाहब॥घात
घातदससुगुनदसोसमकितभाषेसव॥ईजआदद
सभेदजनवनवासीदसजांनें॥पुद्गलदसपरजायस
त्रूदसभेदवषांनें॥दसदोषरहतिआलोचना॥कोमकुं

स०
९०

वेष्टा दस तजौ ॥ जुव आदि जीव के भेद दस वईया ॥ चेतन दस वे
धान जो ॥ २७ ॥ पुन्य ॥ दसौं दिसा मन रोक ज्ञान दस भिन्न चेत
नो ॥ दावत मैं दस भेद संग दस साध लेतनो ॥ दस विध हैं दि
गपाल निरजरा दस विध जीनी ॥ दसौं वि शेष सुभाव अ
क दस सव पद वांनी ॥ दस विध कूंदांन फल नरक उघद
स सामांनिक गुन दरव ॥ सुन समोसरन मैं दस घुजा धर
म ध्यांन दस विध सरव ॥ २१ ॥ अथ घटन व जथा ॥ असत
कथन उपचार जीव कौं जनम न जांनौं ॥ असत विनां उ
पचार काय आतम कौं मांनौं ॥ सांच कथन उपचार है स
कौ राग विचारौं ॥ सांच विनां उपचार ग्यांन चेतन कौं धा
रौं ॥ निह्चै असुद्ध निरभेद ने राग सरूपी आतमो ॥ आद
यद्ध निह्चैं सम ग्यांन रूप परमांतमां ॥ २२ ॥ अथ दर
व करम भाव करम सुद्ध भाव कौं करता पुदगल जीव
व्योहार निह्चै ॥ यथा ॥ दरव करम कौं करैं जीव व्योहा
र वतावैं ॥ दरव करम पुदगल सरूप निह्चै तें गावैं भा
व करम करतार धार व्योहार सु पुदगल भाव करम आ
तमां रूप निह्चै ते कौं वल ॥ दोनों असुद्ध जिय मोह मैं
पुदगल बंध लगावनौ ॥ अननवौं सुद्ध पुदगल अनु
जीव ग्यांन मैं भावनौ ॥ २३ ॥ अथ मिथ्या रूप सरधांन जथा ॥
नरकौ विषयनि मांहि करौ परचौं इन मैं न र ॥ परचौ दरव
सु षेत सदा अरचो श्री जिनवर ॥ परचौ वारंवार अतरसैं
मन सुखदायक ॥ पुदगल धरम अधरम व्योम जम जड ज
गपायक ॥ सब अहकस अनादिक अजर अमर गुन पर
जाय दरव मई ॥ इति भासैं केवल आरसी मोहि मोह ह्वै स
रधान ई ॥ २४ ॥ अथ कविलछुता अरु ममता साप
अय वृषभसेन गुनसेन गौतम मरीतम गनधर ॥ सक
ल पाप सिरनाय पुंज तप जाप पुधवर ॥ कहे कवित हित

कारसारूज है हीन अधिक अति॥ छमा वरौं सुद्ध करौं दोष
मति धरौं विपलमति यह सब दहैन वारिध लहर गतन
पार कौं पायहै॥ ध्यांनतज्ञांनी आतम मगन यह पुदगल
परजाय है॥ २५॥ इति दसबोल पचीसी संपूर्ण॥ २५॥ श्री॥
अथ जिनगुणमाला लिषमीसं पूर्ण॥ असोक पुहुप मंजरी॥
छंद सवैया॥ ३१॥ समोसरन थुति मांन थंभ देव औ सरोव
री भली विसेष षातका गंभीर पेष पुःप वार राजही रूप
को टनाट साल वाग दोय नैं विसाल वेद का धुजा सतास
सालआदि छाजही॥ हेम कोट कल्प वृछ वाग सोहनेंअ
तछ रत्न पुंज थंभ माआवली मनोग्य गाजही॥ वज्र कोट
चार पोल वार सेव सोलनी तवीच वेदका त्रिपीठ वसेजु
जी विराजही॥ १॥ दसगुन जनम तनथ्या॥ वल तोअतु
ल वीर स्रम केन होय नीर हित मित मीठी वानी ठानी।
कौं सुहावनी॥ आदिसंसथान है गंभीर संघनन धीर रूप की
सोभा अनूप सब कोटि पावनी॥ सहस्र आवलछन सरी
र लोहू है षीर देह की सुगंध और गंध कौं लजावनी॥ मल
कौं न लेस ली येउ पजें दसो जिते समेर कौरैं को मसो सुरे
सनकनावनी॥ २॥ घात करमतां सभे ती दसगुन जथा।
जोजन सौ सै सुभिछ व्योम चलैं अंतरिछ चारौं मुष चारो
दिस सब विद्यापति हैं॥ जीव कौं न वंध ही उपसर्ग नांहि
कोय कौला हार लेत नांहि ग्पोन सुधारति हैं निमेल सरू
प मांहि सन कौन परैं छांहित यकेस वढैं नांहि आषनी
लगत हैं॥ घातिया करमनांस दसौं गुन परगास जिनकी
नगति कियेपा पनैनगत हैं॥ ३॥ चौदैं गुन देव कृत जथा
अरधमागधीनाषा॥ वैरि तफलफूल षिंह स्पाल औत
री तआरसी आवनि हैं॥ पौन उहारें मेघजल कन सुगंध
फेरे पापतलै कंज धरैं आनंद सब नि हैं॥ निर्मल गगन औ

२०
१८५

रदसौ दिसा उज्जल है फलै षेत सौ नै भूमि धर्मचक्र मनि॥
है॥ आगै मंगलीक सार सुर कौं जे कारचौ दें अतिसय॥
तेरे देवकृत घातिहीं॥६॥ आठ प्रातहारज अथा॥ फूलसव
मुष वरषत मानौं चंदनि कौं देव ऊंडजी केवाजे गाजे पा
पनारजी॥ सिंघासन तीनसे तीतीन लोकसा हिवहीं ती
न छत्र कहे रतन जयदातारजी॥ जानौं अवर सुपेद चौस
व चमर ढरें और कहां सोक हृछ्छ रूं असोकधारजी॥ ना
मंडल आरसी है वनी सुधाधारसी है नमौं आठ प्रातहा
रज के सिरदारजी॥८॥ अथ अनंत चतुष्टय जथा॥ लोका
लोक दर्व गुन परजाय तिहूं काल दीखै जोगु केरयाषे
प्यांन में प्रकास है॥ चे दनौ न असंष्यात तैं अनंत गुनीजो
त सौ ऊनी हि लगें ऐसें दर्शन की रासि है॥ निरावाध सा
स्वतौ अनाकुल अनंत सुख अंस हूं न लोकमांहि डी
डी सुषजास है॥ सत इंद्र सेती जोर वल कौं नहीं हैं ऐसौ अ
नंत चतुष्टै नाथ वेदौं अघ नांहि है॥६॥ छियालीस गुन जथ
दसौं जनमत सार दसौं घातघातकार चौदें सुरकृत पष्ट
तहारज आगैं गाहे॥ अनंत चतुष्टै कहि वत कौं छया
लीस है॥ गुन हैं अनंत तेरे ग्यानी नमें लहैं॥ तारन कौं
मौन मे घधारकौं प्रवांन और संभू रमनि लहर तातें
अधिक एक है॥ कौन नौं तिनाषे जो हि थिरता औ बुधि
नांहि ह्यां नतसेवकनैं त्यारे त्यारे सरद है॥७॥ इति श्रीजि
नगुनमाल संपूरन समाप्ता॥ अथ पद लिषते॥ राग वसंत
मोह तारो हो देवाधिदेव मैं मन वचन करि करौं सेव॥ मो
हि तारो हो देवाधिदेव॥ तुम दीनदयाल अनाथ नाथ ह
म हूं कौं राषो आप साथ॥१॥ मोहि तारो हो देवाधिदेव य
ह मार वार संसार देस॥ तुम चरन कमल पत रुहर कलेस
॥ मो हि तारो हो देवाधिदेव॥ तुम नाम रसायन जीवपी

याद्यांनत्तिअजरामरननवन्नती।पाधमोहतारोहोदेवाघे
देवा।दे३॥ईति ७॥केदारोरेजियक्रोधकाहेकरै॥देषिकेअ
विवेकज्ञानी॥क्यौंविवेकनधरे॥१॥रेजियक्रोधकाहेकों।
करै॥जिसैजेसीतदेआवें।सोफिपाआवेंसहजनतूअप
नोविगारै॥जायउरगनपरै॥२॥रेजियक्रोधकाहेकोक
रै॥होईसंगतिगुनसवनिकोंसवजगतदरैं॥तुमनलेक
रनलेसवकौं॥बुरेलषमतजरै॥३॥रेजियक्रोधकाहे
कोकरै॥३॥वेदपरविषहरसकतनहिंआयनयको
मरै॥वकृकषायनिगोदवासाछिमोद्यानतनरैं॥रेजि
यक्रोधकाहेकोंकरै॥६४॥ईति॥ऐसेमित्रसोंकरि
प्यारी॥विषैविलाससमकनहियाकों।ध्यानध्यानअ
धिकारी॥ऐसेमित्रसोंकरिप्यारी॥१॥उपलचलावेसे
कलपावेंआंवरीतगहिसारी॥दीननहीअभिमानीन
हीमध्यदसाव्यवहारी॥ऐसेमित्रसोंकरिप्यारी॥२॥श
आदोनकरैनहिंचाहेसुरगतकीरतनारी॥जीवतद
सामतकरतोनीरागदोषपरहारी॥ऐसेमित्रसोंक
रिप्यारी॥३॥चंदनभूमनदीतरुवरविससिवारदसेउप
गारी॥हेमराजतिनहीपुरुषनिकरवसुंधातीरथध
री॥ऐसेमित्रसोकरिप्यारी॥६५॥ईति॥औरकोंवि
सारपारनेमपेमसार॥रोगसोगकोंविजोगजोगहों
अपार॥पारनेमपेमसारऔरकोंविसार॥१॥उपजा
यसुषपायध्यानकोंनिवार॥पारनेमपेमसारऔर।
कौंविसार॥२॥पर्मजीतधर्मतीतसर्मरीतकार॥पार
नेमपेमसारऔरकोंविसार॥३॥मोदनांसकामआ
सक्रोधलोभहार॥पारनेमपेमसारऔरकोंविसार
॥४॥पापहांनआपभ्पांनजायकोंकरार॥पारनेमपेम
सारऔरकौंविसार॥५॥दीनवानहीनतानस्वर्गमोष।

पद१०
९२

ज्ञारहेमराजजी॥ संचारधूमधामकार॥ यारनेमपेमसार॥१०
औरकोविसार॥७॥ इति॥ ६१॥ चेतनसवहीमैंघाटवाटन
हिंऔर॥ दीपमांदमेंदिरपरगोंसैंसों ततमैंसिरमोर॥ चेत
नसवहीमैंघातवाटनहिंऔर॥१॥ तमनीचकरमसो
जगमैंमिलमुकतकीवोर॥ काहिंअराधैंकाहिविरा
धोयहमिथ्याकीदोर॥ चेतनसवहीमैंघाटवाटनहिंऔ
र॥२॥ गजकुंथवावरावजानोमानोसोनाषोरकोनसु
कलकीनिंदाकीजैंकाकीकीजेंगोर॥ चेतनसवहीमैंघ
टवाटनहिंऔर॥३॥ केवलज्ञानमईसवराजैंयहसर
धासिवऔरहेमराजआस्वादैंजानैंअनुनौंअमतकें
र॥ चेतनसवहीमैंघाटवाटनहिंऔर॥४॥ इति॥ ६२॥ फू
लीवसंतफूलीवसंत॥ जहंआदीस्वरसिवपुरगएं॥ अर
तनरूपवहतरजिनअरहकववकमईसवनिरमएं॥ फूली
वसंतफूलीवसंत॥१॥ तीनचोवीसरतनमैंप्रतिमांअं
गरंगजेजेनएं॥ सिद्धसमांनतीससमसवकेअद्भुत
सोभापरनएं॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥२॥ वालआदे
आहूंवकोंरमुनिसवनिमुकतसुषअनुनएं॥ तीनअ
टाईफागनिषगमिलगावेंगीततएनए॥ फूलीवसंत
फूलीवसंत॥३॥ वसुजोंजनवसुंपेडीगंगा॥ फिरीवज्र
तसुरआलएं॥ द्यांनतसोकेलासनमोहेगुनकोंपैंजो
वरनएं॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥४॥ इति॥ ६३॥ तुमग्यां
नविनौं फूलीवसंत॥ मनमधुकरसुषसोरमंत॥
तुंमग्यांनविषैंनौंफूलीवसंत॥१॥ दिनवडेभएवैराग्य
भाव॥ मिथ्यामतिरजनीकोंघटाव॥ तुमग्यांनविषैंफू
लीवसंत॥२॥ वजफूलीफेलीसुरुचिवेल॥ ग्यातारज
नसमतासंगकेल॥ तुमज्ञानविनौंफूलीवसंत॥३॥
द्यांनतवांनीपिकमधुररूप सुरनरपसुआनंदप

नरूप सुमज्ञान विनौं फूली वसंत ॥५॥ ईति ॥ दृष्टि ग्यानीजी वद्यानित पालैं ॥ आरंभतें परद्यात होत है क्रोध घात निज टालैं ॥ हिंसा त्याग दया कही वैं जल लैं कषाय वदन में ॥ वाहिर त्यागी ॥ अंतर दागी ॥ पडूपैं नरक सदन में ॥१॥ ग्यानीजी वद्यानित पालैं ॥ करैं दया पर आलस भावी ताकौं कहियें पापी ॥ सांत सुभाव प्रमाद न जाकैं ॥ सो परमारथ आपी ॥ ग्यानीजी वद्यानित पालैं ॥२॥ मिथ्याचार निरूहि मरहनौ सहनौ वजडष त्राता ॥ द्यानत वोलति फोलति जी मनि करैं जतन सौं पात्ता ॥ ग्यानीजी वद्यानित पालैं ॥३॥ ईति ॥ ७० ॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥ अंगसंग नहिं वहिर भूत सव ॥ घनहार सामग्री तेती ॥ कारज ब्रह्म एक ही सेती ॥ सो लह सुरग नव ग्रैवेयक मैं दुषी ॥ सुष ते सात मैं नतकावेती ॥ जा सिव कारन मुनिगन ध्यावैं सो तैंरे घट आनंद सेती ॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥१॥ दांन सील जप तप व्रत पूजा अफल ग्यान विन किरिया केती ॥ पंच दरव तो तैं नित न्यारे न्यारी राग विराग जेती ॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥२॥ तूं अविनासी जग परगासी ॥ द्यानत भासी सुकलावेती ॥ तजौ लाल ज तन के विकलप सव ॥ अनुभौ मगन सुविद्या एती ॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥५॥ ईति ॥ ७१ ॥ होरी चेतन षेलै होरी ॥ सतानैं मिछ मावसंत मैं समता ग्रांन प्रिया संग गोरी ॥ चेतन षेलैं होरी मन कौं मट पेम कौं पांनी ता मैं करुना के सर घोरी ॥ ग्यान ध्यान पिचकारी भरि भरि आपस मैं छोरै होरा होरी ॥ चेतन षेलै होरी ॥१॥ गुरु के वचन मृदंग वजत है नै दोनौं डफ टाल टकोरी ॥ संजम अंतर विमल व्रत चूका भाव गुलाल भरैं भर झोरी ॥ चेतन षेलै होरी ॥२॥ धरम मिठाई तप वकू मेवा समरस आनंद अमल कटोरी ॥ द्यानत सुमत कहैं सषियन सौं चिरजीवौ यह जुग जुग जोरी ॥ चेतन षेलै होरी ॥

ईति॥७२॥नैरनयोनजश्रीजिनराजसफलहोहिंतेरेसबकें
म॥धनसंपतिमनवंछितनोग॥सबविधश्रानवनैंसंजोग॥
नैरनयोंनजश्रीजिनराज॥१॥कलपब्रक्षताकेघररहैं॥
कामधेनुनितसेवाचहैं॥पारसचिंतामनिसमुदायहि
तसौंश्रायमिलेंसुषदाय॥नैरनयोंश्रीजिनराज॥२॥दुलै
नतैंसुलनकेंजाय॥रोगसोगउपद्रपलाय॥सेवादेव॥
करेंमनलाय॥विघनतलटमंगलवहराय॥नैरनयों
नजिश्रीजिनराज॥३॥डाकनभूतपिसाचनवलें॥राज
चोरकोंजोरनचलें॥जसश्रादरसौंनागप्रकास॥घो॥
नतिस्वरगमुकतपदवास॥नैरनयोंनजिश्रीजिन॥
राज॥४॥ईति॥७३॥जिनकेंहिरदेंभगवानवसैंतिनश्रा
नकोंध्यानकियानकिया॥चक्रीएकमिलापमएतैं॥
श्रौरनरनमिलियामिलया॥जिनकेंहिरदेंभगवान॥
वसैंतिनश्रानकोंध्यानकियानकीया॥ईकचिंतमन॥
वंछितदायकश्रौरनगनगहिया॥पारसएककनीकर
श्रावैंश्रौरधननलहिफलहिया॥जिनकेंहिरदेंभगवा
नवसैंतिनश्रानकोंध्यानकीयानकीया॥१॥एकनांवद
सदिसउजियारा॥श्रौरग्रहनउदियानदिया॥घेकका
लतरुसवसुषदाता॥श्रौरतरुनउगियाउगिया॥जि
नकेंहिरदेंभगवानवसैंतिनश्रानकोंध्यानकियान
किया॥एकश्रनैंमहादानदेयकैं॥श्रौरसुदानदिया
नदिया॥ग्यानतग्यानसुधारसचाष्यौं॥श्रमनश्रौरपे
यानपिया॥जिनकेंहिरदेंभगवानवसैंतिनश्रानकों
ध्यानकीयानकीया॥४॥ईति॥७४॥श्रायौंसहजवसं
तखेलेंसबहोरीहोरीहो॥उततबुधदयाछमाबहुठारी
ईतजियरतनत्रेगुनजोरी॥होग्यानध्यानडफताल॥
वजतहें॥श्रनहितसबदहोतघनघोरा॥धरमसुराग
गुलालउडतहैंसमतारंगदउनैंघोराहों॥२॥परसन

तुतरनरेपिचकारीछोरतदोनोकरितोरा।ईतनैंकहैनार
तुमकाकीउनतैंकहैंकोनछोरा३।आवकाअनुनैं।
पावकमैंजलबुझसांतनरीसुंचडेरां।ह्यानतसिवआ
नंदचंदछुविदेषैंसजनतैनचकोरा।४।ईति।७५।अजत
नांथसोमनलावोरे करसोंतालवचनमुषनाथ्योमेरे
तलगावोरे।अजतनांथसोंमनलावोरे।ग्यानदरस
सुषवलगुनधारी।अनंतचतुष्टयध्यावोरे।अवगाह
नाअवाधमूरतअगुरुअलकवतलावोरे।१।अज
तनांथसोंमनलावोरे।करनोसागरगुनरतनागर०
जोतिउजागरध्यावोरे।त्रिभवननायकभववनयघाय
कआनंददायकगावोरे।अजतनाथसोंमनलावोरे
२।।परमनिरंजनपातकभंजनभविरंजनवहरावोरे
ह्यानतजैसासाहिवसेवोतैसीपदवीपावोरे।अजतनं
थसोंमनलावोरे।३।ईति।७६।रागआसावरी।अव।
हमअमरभएंनमरेंगें।तनकारनमिथ्यातकीयोतज
कोकरिदेहधरेंगें।अवहमअमरभएंनमरेंगें।उप।
जेमरेकालतेंप्रानी।तातेंकालहरेंगें।रागदोषजग
वंधकरतहैं।इनकोंनासकरेंगें।अवहमअमरभए
नमरेंगें।देहविनासीमैंअविनासी भेदग्यानकरेंगें
नासीजासीहमथिरवासीचोषैंहोनिषरेंगे।अवह
मअमरभएंनमरेंगें।मरेअनंतवारविनसमकेअ
वसवउषविसरेंगें।ह्यानतनिपटनिकटअक्षरदो
विनसुमरेंसुमरेंगें।।अवहमअमरभएंनमरेंगे।अ
वहमअमरभएंनमरेंगें।४७।ईति।आसावरी।ना
डीग्यांनीसोडीकहियेकरमउदेसुषदुषभोगतैंराग।
विरोधनलहियें।नाडीग्यांनीसोडीकहिये।कोंजे
ग्यांनक्रियातैंकोकोसिवमारगवतलावैं।नेनिहचैव्
वहारसाधिकेदोनोंचित्तरिझावेंगा नाडीग्यांनीसोक

हिये॥५॥ कोई कहै जीव छिन मैं गुर कोई निरूपण षों नैं परजय
दरवतनय परमानैं॥ दोनं समता आनैं॥ नाई ग्यानी सौ कहि
ये॥२॥ कोई कहैं तदेह सोई कोई तह्मि बोलैं॥ द्यानत तत्त्व
दसुतुला मैं दोनो वस्तैं तोलैं॥ नाई ग्यानी सौं कहिये॥३॥ ई
ति॥७६॥ नारी कौंन धरम हम चालें॥ एक कहै जिह कुल
मैं आरंभा कुर कौ कुल पावैं॥ नारी कौंन धरम हम चालें॥१
सिवमत बौध सुवेद नैं पाप का मीमांसक अरु जैना॥ आ
यसरा हैं आगम गाहे का की सरधा अैनौ॥ नारी कौंन
धरम हम चालें॥२॥ परमेसर पैं आया हौं ता की वात सु
नीजैं॥ मूवें वजन न बोलें कव जव की फिकर क्या कीजैं
नारी कौंन धरम हम चालें॥३॥ जिन सव मत के न्याय सों
च करि मारग एक वताया॥ द्यानत सौं गुर पूरा पाया नाम
हमारा आया॥ नारी कौंन धरम हम चालें॥४॥ ईति रा
ग गौरी॥ हमारो कारज कैसें होय॥ कारण पंच कुकतम
रग के तिन में के हैं दोय॥ हमारो कारज कैसें होय॥ हीन
संघनन लघु आउषा अलप मनीषा जोई॥ कच्चे भाव
न सच्चे साथी सब जग देख्यो टोई॥ हमारौ कारज कैसैं
होय॥१॥ इंद्री पंच सुविषयन दौरैं मानै कह्या न कोई सा
धारन चिरकाल वस्यो मैं धरम विनो फिरसो य॥ हमा
रो कारज कैसे होय॥२॥ चिंता वडी न कछु वनआवै अ
व सव चिंता षोई॥ द्यानत एक सुद्ध निज पद लषि आ
प मैं आप समोई॥ हमारौं कारज कैसें होय॥३॥ ईति०
राग गौरी॥ हमारौं कारज अैसें होई॥ आतम आतम पर प
रजानैं॥ तीनौं संसै षोय॥१॥ हमारौं कारज अैसे होई॥ अ
तसमाधि मरन करि तन तजि हौं हिसक सुरलोई॥ वि
वधि भोग उपभोग भोगवै धरम त नौ फल सोई॥ हमा॥
रौं कारज अैसें होय॥२॥ पूरी आव विदेह भूप कैं राज सं॥
पदा भोई॥ कारण पंच लहै गहै दुधर पंच महाव्रत जोई

॥ अथ सहस्रनाम जिनसेनकृत लिख्यते ॥ स्वयंभुवे नमस्तुभ्य
मुत्पाद्यात्मानमात्मनि ॥ स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेचिंत्यवृत्तये ॥१॥
नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोस्तुते ॥ विदांवर नमस्तुभ्यं
नमस्ते वदतांवर ॥२॥ कामशत्रुहणं देवमामनंति मनीषिणः ॥ त्वा
मानमत्सुरेण्मौलिभामालाभ्यर्चितक्रमं ॥३॥ ध्यानद्रुघणनिर्भिन्न
घनघातिमहातरुः ॥ अनंतभवसंतानजयादासीरनंतजित् ॥४॥
त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तदुर्दर्पमतिदुर्जयं ॥ मृत्युराजं विजित्यासी
ज्जिन मृत्युंजयो भवान् ॥५॥ विधुताशेषसंसारबंधनो भव्यबां
धवः त्रिपुरारिस्त्वमेवासि ॥ जन्ममृत्युजरांतकृत् ॥६॥ त्रिका
लविषयाशेषतत्त्वभेदात्त्रिधोत्थितं ॥ केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रि
नेत्रोसि त्वमीशितः ॥७॥ त्वामंधकांतकं प्राहुर्मोहांधासुरमर्द
नात् ॥ अर्द्धं ते नारयो यस्मादर्द्धनारीश्वरोस्यतः ॥८॥ शिवः शिव
पदाध्यासाद्दुरितारिहरो हरः ॥ शंकरः कृतशं लोके शंभव
स्त्वं भवन्सुखे ॥९॥ वृषभोसि जगज्ज्येष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः
नाभेयो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदनः ॥१०॥ त्वमेकः पुरु
षस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने त्वं त्रिधा बुद्धसन्मार्गस्त्रिज्ञ
स्त्रिज्ञानधारकः ॥११॥ चतुःशरणमांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुरस्रधी
पंचब्रह्ममयो देवः पावनस्त्वं पुनीहि मां ॥१२॥ स्वर्गावतरणे तु
भ्यं सद्योजातात्मने नमः जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमो
स्तु ते ॥१३॥ संनिःक्रांतावघोराय परंप्रशममीयुषे केवल
ज्ञानसंसिद्धावीशानाय नमोस्तु ते ॥१४॥ पुरस्तत्पुरुषत्वे
न विमुक्तिपदभागिने ॥ नमस्तत्पुरुषावस्थां भाविनीं ते
द्य बिभ्रते ॥१५॥ ज्ञानावरणनिर्ह्रासान्नमस्तेनंतचक्षुषे दर्श
नावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदृश्वने ॥१६॥ नमो दर्शनमोहघ्ने
क्षायिकामलदृष्टये नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौज
से ॥१७॥ नमस्तेनंतवीर्याय नमोनंतसुखात्मने ॥ नमस्तेनंत
लोकाय लोकालोकविलोकिने ॥१८॥ नमस्तेनंतदानाय
नमस्तेनंतलब्धये नमस्तेनंतभोगाय नमोनंतोपभोगिने
॥१९॥ नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये ॥ नमः परमपूताय न

मस्तेपरमर्षये॥२०॥नमः परमविद्याय नमः परमतच्छिदे नमः परमतत्त्वाय नमस्तेपरमात्मने॥२१॥ नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे॥ नमः परममार्गाय नमस्तेपरमेष्ठिने॥२२॥परमं जुषे धामपरमज्योतिषे नमः॥ नमः पारेतमः प्राप्तधाम्ने परतमात्मने॥२३॥नमः क्षीणकलंकाय क्षीणबंध नमोस्तुते नमस्तेक्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः॥२४॥नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे॥ नमस्तेतींद्रियज्ञानसुखायानिंद्रियात्मने॥२५॥कायबंधननिर्मोक्षादकायाय नमोस्तुते नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने॥२६॥अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः परमयोगिने नमः परमसंयमनमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय तायिने॥२७॥नमस्तुभ्यमलेश्याय शुद्धलेश्यांशकस्पृशे॥ नमोभव्येतरावस्थामतीताय विमोक्षिणे॥२८॥ संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये॥२९॥अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे॥ अतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे॥३०॥अजराय नमस्तुभ्यं नमस्तेस्तादजन्मने॥अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने॥३१॥अलमास्तां गुणस्तोत्रमनंतास्तावका गुणाः॥ त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे॥३२॥एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशांतये॥३३॥ इति प्रस्तावना॥ प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरांपतिं नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोभीष्टसिद्धये॥३४॥ इति स्तुतिः॥ श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः॥३५॥विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः॥विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वरः॥३६॥विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः विश्वव्यापी विधुर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः॥३७॥विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः॥विश्वदृग्विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः॥३८॥जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः अनंतजिदचिंत्यात्मा भव्यबंधुरबंधनः॥३९॥युगादिपुरुषो

ब्रह्मा पंचब्रह्ममयः शिवः परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥
स्वयंज्योतिरजोजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः मोहारिविजयीजेता
धर्मचक्री दयाध्वजः ॥४१॥ प्रशांतारिरनंतात्मा योगी योगीश्व
रार्चितः ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥४२॥ सिद्धो
बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः सिद्धसिद्धांतविद्ध्येयः
सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥४३॥ सहिष्णुरच्युतोनंतः प्रभविष्णु
र्भवोद्भवः प्रभूष्णुरजरोयज्योत्ता जिष्णुर्धीश्वरोमयः ॥४४॥ वि
भावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः ॥ परमात्मा परंज्योति
स्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥४५॥ इति श्रीमच्छतं ॥१॥ दिव्यभाषापति
र्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो
दमीश्वरः ॥४६॥ श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः त
र्थकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोमलः ॥४७॥ अनंतदी
प्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापति मुक्तः शक्तो निराबाधो नि
ष्कलो भुवनेश्वरः ॥४८॥ निरंजनो जगज्ज्योति निरुक्तोक्तिर्निराम
यः अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥४९॥ अग्रणी
र्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ॥ शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो
धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥५०॥ वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः
वृषो वृषपतिर्भर्त्ता वृषभांको वृषोद्भवः ॥५१॥ हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृ
द्भूतभावनः प्रभवो विभवो भास्वान्भवो भावो भवांतकः ॥५२॥ हिरण्य
गर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोभवः स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो
जगत्प्रभुः ॥५३॥ सर्वादिः सर्वदृक्सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः सर्वात्म
सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥५४॥ सुगतिः सुश्रुतः सुश्रु
त्सुवाक्सूरिर्बहुश्रुतः विश्रुतो विश्वतःपादो विश्वशीर्षः शुचिश्र
वाः ॥५५॥ सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ भूतभव्य
भवद्भर्त्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥५६॥ इति दिग्म्बरशतं ॥२॥ स्थवि
ष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठो
णिष्ठो गरिष्ठगी ॥५७॥ विश्वभुद्विश्वसृड्विश्वेड्विश्वभुग्विश्वनाय
यकः विश्वाशी विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितांतकः ॥५८॥ विभवो
विभवो वीरो विशोको विजरो जरन् विरागो विरतोसंगो वि

वीतमत्सरः ॥५९॥ विनेयजनताबंधुर्विलीनाशेषकल्मषः वियो
गोयोगविद्विद्वान्विधातासुविधिःसुधीः ॥६०॥ क्षांतिभाक्पृथ्वी
मूर्त्तिः शांतिभाक्सलिलात्मकः वायुमूर्त्तिरसंगात्मा व
ह्निमूर्त्तिरधर्म्मधृक् ॥६१॥ सुयज्वायजमानात्मासुत्वासुत्रामपूजि
तः ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञोयज्ञांगममृतंहविः ॥६२॥ व्योममूर्त्ति
रमूर्त्तात्मा ॥ निर्लेपोनिर्म्मलोऽचलः ॥ सोममूर्त्तिः
मूर्त्तिर्म्महाप्रभः ॥६३॥ मंत्रविन्मंत्रकृन्मंत्रीमंत्रमूर्त्तिरनंतगः स्व
तंत्रस्तंत्रकृत्स्वंतः कृतांतांतः कृतांतकृत् ॥६४॥ कृतीकृतार्थःस
त्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतु
ः ॥६५॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्मब्रह्मात्माब्रह्मसंभवः महाब्रह्म
पतिर्ब्रह्मेट्महाब्रह्मपदेश्वरः ॥६६
धर्म्मदमप्रभुः प्रशमात्माप्रशांतात्मापुराणपुरुषोत्तमः ॥६७॥
॥ इति स्थविष्ठशतं ॥ ७ ॥ महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टापद्म
विष्टरः पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥६८॥ पद्मयोनिर्ज
गद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः स्तवनार्होहृषीकेशोजितजेयः कृ
तक्रियः ॥६९॥ गणाधिपोगणज्येष्ठोगण्यः पुण्योगणाग्रणीः गु
णाकरोगुणांभोधिर्गुणज्ञोगुणनायकः ॥७०॥ गुणादरीगुणो
च्छेदीनिर्गुणः पुण्यगीर्गुणः शरण्यः पुण्यवाक्पूतोवरेण्यः पु
ण्यनायकः ॥७१॥ अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः
धर्म्मारामोगुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥७२
पात्माविपाप्मावीतकल्मषः निर्द्वंद्वोनिर्मदः शांतोनिर्मोहो
निरुपद्रवः ॥७३॥ निर्निमेषोनिराहारोनिःक्रियोनिरुपप्लवः
निःकलंकोनिरस्तैनानिर्धूतागोनिरास्रवः ॥७४॥ विशालोवि
पुलज्योतिरतुलोऽचिंत्यवैभवः सुसंवृतः सुगुप्तात्मासुबुत्सुन
यतत्ववित् ॥७५॥ एकविद्योमहाविद्योमुनिः परिवृढपतिः धी
शोविद्यानिधिःसाक्षीविनेताविहतांतकः ॥७६॥ पिता पि
तामहः पाता पवित्रःपावनोगतिः त्राताभिषग्वरोवर्योवरदः परम
पुमान् ॥७७॥ कविःपुराणपुरुषोवर्षीयान्वृषभः
वोहेतुर्भुवनैकपितामहः ॥७८॥ इति महाशतं ॥८॥ श्री वृक्षल

क्षणः सुलक्षणो लक्षण्यः शुभलक्षणः निरक्षः पुंडरीकाक्षः पु-
ष्करेक्षणः ॥७९॥ सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनं
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्द्धमानो महर्द्धिकः ॥८०॥ वेदांगो वेदवि-
द्वेद्यो जातरूपो विदांवरः वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतां-
वरः ॥८१॥ अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः यु-
गादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥८२॥ अतींद्रोऽतींद्रि-
यो धींद्रो महेंद्रोऽतींद्रियार्थदृक् अनिंद्रियोऽहमिंद्रार्च्यो महेंद्रम-
हितो महान् ॥८३॥ उद्भवः कारणं कर्त्ता पारगो भवतारकः अ-
ग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः ॥८४॥ अनंतर्द्धिरमेयर्द्धि-
समग्रधीः प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्निमोऽग्रजः ॥८५॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः महायशा महाधामा
महासत्वो महाधृतिः ॥८६॥ महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्म-
हाबलः महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥८-
७॥ महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महादयः महाप्राज्ञो म-
हानंदो महाभागो महाकविः ॥८८॥ महामहा महाकीर्त्ति-
र्महाकांतिर्महावपुः महादानो महाज्ञानो महायोगो म-
हागुणः ॥८९॥ महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः म-
हाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥९०॥ इति श्री[illegible]
शतं ॥ महामुनिर्महामौनी महाध्यानो महादमः महाक्षमो
महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥९१॥ महाव्रतपतिर्मह्यो महा-
कांतिधरोऽधिपः महामैत्रीमयोऽमेयो महोपायो महोमयः ॥९२॥
महाकारुणिको मंता महामंत्रो महायतिः महानादो महाघो-
षो महेज्यो महसांपतिः ॥९३॥ महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो
महिष्ठवाक् महात्मा महसांधाम महर्षिर्महितोदयः ॥९४॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः महापराक्र-
मोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥९५॥ महाभवाब्धिसंतारी
महामोहाद्रिसूदनः महागुणाकरः क्षांतो महायोगीश्व-
रः शमी ॥९६॥ महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मो महाव्रतः म

हाकर्म्मारिहात्मज्ञो॥महादेवोमहेशिता॥९७॥सर्व्वक्लेशापहः।
साधुःसर्व्वदोषहरोहरः॥असंख्येयोप्रमेयात्मा॥शमात्माप्रश
माकरः॥९८॥सर्व्वयोगीश्वरोचिंत्यःश्रुतात्माविष्टरश्रवाः॥दा
न्तात्मादमतीर्थेशो॥योगात्माज्ञानसर्व्वगः॥९९॥प्रधानमा
त्माप्रकृतिःपरमःपरमोदयः॥प्रक्षीणबंधःकामारिःक्षेमकृत्
क्षेमशासनः॥१००॥प्रणवःप्रणयःप्राणःप्राणदःप्राणतेश्व
रः॥प्रमाणंप्रणिधिर्दक्षोदक्षिणोध्वर्युरध्वरः॥१०१॥आनं
दोनंदनोनंदोवंद्योनिंद्योभिनंदकः॥कामहाकामदःकाम्य
कामधेनुररिंजयः॥१०२॥इतिमहामुनिशतं॥असंस्कृतसु
संस्कारोप्राकृतोवैकृतांतकृत्॥अंतकृत्कांतगुःकांति
श्चिंतामणिरभीष्टदः॥१०३॥अजितोजितकामारिरमितो
मितशासनः॥जितक्रोधोजितामित्रोजितक्लेशोजितांत
कः॥१०४॥जिनेंद्रःपरमानंदोमुनींद्रोदुंदुभिस्वनः॥महेंद्रवंद्यो
योगींद्रोयतींद्रोनाभिनंदनः॥१०५॥नाभेयोनाभिजोजा
तःसुव्रतोमनुरुत्तमः॥अभेद्योनत्ययोनाश्वानधिकोधिगुरुः
सुगीः॥१०६॥सुमेधाविक्रमीस्वामीदुराधर्षोनिरुत्सुकः॥वि
शिष्टः॥शिष्टभुक्शिष्टःप्रत्ययःकामनोनघः॥१०७॥क्षेमीक्षे
मंकरोक्षय्यःक्षेमधर्म्मपतिःक्षमी॥अग्राह्योज्ञाननिग्रा
ह्योध्यानगम्योनिरुत्तरः॥१०८॥सुकृतीधातुरिज्यार्हःसु
नयश्चतुराननः॥श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतु
र्मुखः॥१०९॥सत्यात्मासत्यविज्ञानःसत्यवाक्सत्यशा
सनः॥सत्याशीःसत्यसंधानःसत्यःसत्यपरायणः॥११
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः॥अणु
रणीयाननणुर्गुरुराद्योगरीयसां॥१११॥सदायोगःस
दाभोगःसदातृप्तःसदाशिवः॥सदागतिःसदासौख्यः
सदाविद्यःसदोदयः॥११२॥सुघोषःसुमुखःसौम्यःसु
खदःसुहितःसुहृत्॥सुगुप्तोगुप्तिभृद्गोप्तालोकाध्यक्षो
दमेश्वरः॥११३॥इतिअसंस्कृतशतम्॥बृहद्बृहस्पतिर्वाग्मी

वाचस्पतिरुदारधीः मनीषी धिषणो धीमान् शेमुषीशो गिरांपतिः
॥२२४॥ नैकरूपो नयोत्तुंगो नैकात्मा नैकधर्मकृत् ॥ अविज्ञेयोऽप्रत
र्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥२२५॥ ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भो
प्रभास्वरः ॥ पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥२२६॥ लक्ष्मीवां
स्त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता ॥ मनोहरो मनोज्ञांगो धीरो
गंभीरशासनः ॥२२७॥ धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ॥२२८॥ अमोघवागम
मोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः ॥ सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः स
माहितः ॥२२९॥ सुस्थितः स्वास्थ्यभाक् स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धव
अलेपो निःकलंकात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥२३०॥ वश्येंद्रियो वि
मुक्तात्मा निःसपत्नो जितेंद्रियः प्रशांतोऽनंतधामर्षिर्मंगलं म
लहानघः ॥२३१॥ अनीदृगुपमाभूतो दिष्टिर्दैवमगोचरः अमू
र्त्तो मूर्त्तिमानेको नैको नानैकतत्वदृक् ॥२३२॥ अध्यात्मगम्यो
गम्यात्मा योगविद्योगिवंदितः ॥ सर्वत्रगः सदाभावी त्रिका
लविषयार्थदृक् ॥२३३॥ शंकरः शंवदो दांतो दमी क्षांतिपरायणः
अधिपः परमानंदः परात्मज्ञः परात्परः ॥२३४॥ त्रिजगद्व
ल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिस्त्रिलो
काग्रशिखामणिः ॥२३५॥ इति बृहच्छतं ॥८०॥ त्रिकालदर्शी लो
केशो लोकधाता दृढव्रतः सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसा
रथिः ॥२३६॥ पुराणः पुरुषः पूर्वः कृतपूर्वांगविस्तरः ॥ आदिदे
वः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥२३७॥ युगमुख्यो युगज्येष्ठो यु
गादिस्थितिदेशकः कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याण
लक्षणः ॥२३८॥ कल्याणप्रकृतिर्दीप्तः कल्याणात्मा विकल्मषः
विकलंकः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः ॥२३९॥ देवदेवो
जगन्नाथो ॥ जगद्बंधुर्जगद्विभुः जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो ज
गदग्रजः ॥२४०॥ चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः सद्योजा
तः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥२४१॥ आदित्यवर्णो भ
र्माभः सुप्रभः कनकप्रभः सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटिसम

प्रभः॥१३२॥ तपनीयनिभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभः॥ संध्याभ्रब
भ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरछविः॥१३३॥ निष्टप्तकनकछायः कनत्कां
चनसन्निभः॥ हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुंभनिभप्रभः॥१३४॥ द्यु
म्नाभो जातरूपाभो दीप्तजांबूनदद्युतिः॥ सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो
हाटकद्युतिः॥१३५॥ शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरः क्षमः॥ शत्रु
घ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः॥१३६॥ शांतिनिष्ठो मुनि
ज्येष्टः शिवतातिः शिवप्रदः॥ शांतिदः शांतिकृच्छांतिः कांतिमा
न् कामितप्रदः॥१३७॥ श्रेयोनिधिरधिष्टानमप्रतिष्टः प्रतिष्टितः॥
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान् प्रथितः पृथुः॥१३८॥ इति त्रिका
लज्ञशतम्॥ दिग्वासा वातरसनो॥ निर्ग्रंथेशो दिगंबरः॥ निःकिं
चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः॥१३९॥ तेजोराशिरनंतौजा
ज्ञानाब्धिः शीलसागरः॥ तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्त
मोपहः॥१४०॥ जगच्चूडामणिर्दीप्तः शंवान् विघ्नविनाशकः॥ क
लिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः॥१४१॥ अनिद्रालु
रतंद्रालुर्जागरूकः प्रमामयः॥ लक्ष्मीपतिर्जगज्योतिर्धर्मरा
जः प्रजाहितः॥१४२॥ मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः॥
प्रशांतरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः॥१४३॥ मूलकर्ताखिल
ज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणं॥ आप्तो वागीश्वरः श्रेयान् श्रायसोक्तिर्नि
रुक्तिवाक्॥१४४॥ प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित्॥ सुत
नुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः॥१४५॥ श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो
वीतभीरभयंकरः॥ उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः॥
१४६॥ लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः॥ धीरधीर्बुद्धसन्मा
र्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक्॥१४७॥ प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नि
यमितेंद्रियः॥ भदंतो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः॥१४८॥ समुन्मू
लितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः॥ कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हे
यादेयविचक्षणः॥१४९॥ अनंतशक्तिरछेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रि
लोचनः॥ त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः॥१५०॥ समं
तभद्रः शांतारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः॥ सूक्ष्मदर्शी जितानंगः॥

कृपालुर्धर्मदेशकः ॥२५४॥ इतिदिग्वाससतं ॥ शुभंयुःसुख
सात्कृतः पुण्यराशिरनिरामयः धर्म्मपालोजगत्पालो धर्मसा
म्राज्यनायकः ॥२५२॥ इतिअंतकृच्छतं ॥ १००८ ॥ धाम्नांपते
तवामूनिनामान्यागमकोविदैः समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्
पूतस्मृतिर्भवेत् ॥२५३॥ गोचरोपिगिरामासांत्वमवाग्गोचरोम
तः स्तोतातथाप्यसंदिग्धंत्वत्तोभीष्टफलंभजेत् ॥२५४॥ त्वमतो
सिजगद्बंधुस्त्वमतोसिजगद्भिषक्त्वमतोसिजगद्धाता त्वम
तोसिजगद्धितः ॥२५५॥ त्वमेकंजगतांज्योतिस्त्वंद्विरूपोपयो
गभाक् त्वंत्रिरूपैकमुक्त्यंगःस्वोत्थानंतचतुष्टयः ॥२५६॥ त्वं
पंचब्रह्मतत्वात्मापंचकल्याणनायकः ॥ षड्भेदभावतत्वज्ञस्त्वं
सप्तनयसंग्रहः ॥२५७॥ दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वंनवकेवललब्धिक
दशावतारनिर्धार्यो ॥ मांपाहिपरमेश्वर ॥२५८॥ युष्मन्नामाव
लीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया ॥ भवंतंवरिवस्यामः प्रसी
दानुगृहाणनः ॥२५९॥ इदंस्तोत्रमनुस्मृत्यपूतोभवति
भाक्तिकः यः संपाठंपठत्येनंसस्यात्कल्याणभाजनं
॥२६०॥ ततः सदेदंपुण्यार्थीपुमान्पठतुपुण्यधीः पौरुहू
तींश्रियंप्राप्तुंपरमामभिलाषुकः ॥२६१॥ स्तुत्वेतिम
घवादेवं चराचरजगद्गुरुं ॥ ततस्तीर्थविहारस्य ॥ व्यधात्प्रस्तावनामि
मां ॥२६२॥ भगवन्भव्यसस्यानांपापावग्रहशोषिणां ॥ धर्मामृतप्रसेके
नत्वमेधिशरणंविभो ॥२६३॥ भव्यसार्थाधिपप्रोद्यद्दयाध्वजविरा
जित ॥ धर्म्मचक्रमिदंसज्जंत्वज्जयोद्योगसाधनं ॥२६४॥ निर्धूयमो
हपृतनांमुक्तिमार्गोपरोधिनीं ॥ तवोपदेष्टुंसन्मार्गंकालोयं
समुपस्थितः ॥२६५॥ इतिप्रबुद्धतत्वस्यस्वयंभर्तुर्जिगीषतः ॥
पुनरुक्ततरावाचः ॥ प्रादुरासन्शतक्रतोः ॥२६६॥ तंदेवंत्रिद
शाधिपार्चितपदंघातिक्षयानंतरं प्रोक्तानंतचतुष्टयंजिन
मिमंभव्याब्जिनीनामिनं ॥ मानस्तंभविलोकनानतजग
न्मान्यं त्रिलोकंपतिं ॥ प्राप्तानंतचतुष्टयंजिनमिमंभक्त्याप्र
वंधमहे ॥२६७॥ इतिश्रीजिनसेनाचार्यविरचितंजिनाष्टोत्त रशत
रशतसहस्रनामस्तवनंसमाप्तः ॥ ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रनामधारकश्री
जिनेन्द्रोअर्घंमहार्घंनिर्वपा०

।सहस्रना॥
९९

॥६०॥ ॐ नमः॥ अथ सहस्रनाम आशाधरजीकृत लिख्यते
। श्रीसारदायै नमः॥ प्रभो भवांगभोगेषु निर्विण्णो दुःखभीरु
कः॥ एष विज्ञापयामि त्वां शरण्यं करुणार्णवं॥१॥ सुखलालस
या मोहाद्भ्राम्यन्बहिरितस्ततः॥ सुखैकहेतो नामापि तव न।
ज्ञातवान्पुरा॥२॥ अद्य मोहग्रहावेशशैथिल्यात्किंचिदुन्मुखः
अनंतगुणमाप्तेभ्यस्त्वां श्रुत्वा स्तोतुमुद्यतः॥३॥ भक्त्या प्रोत्सा
र्यमाणोपि दूरं शक्त्या तिरस्कृतः॥ त्वां नामाष्टसहस्रेण स्तुत्वा
त्मानं पुनाम्यहं॥४॥ जिनसर्वज्ञयज्ञार्हत्तीर्थकृन्नाथयोगिनां
निर्वाणब्रह्मबुद्धांतकृतां चाष्टोत्तरैः शतैः॥५॥ तद्यथा॥ जिनो॥
जिनेंद्रो जिनराट् जिनपृष्ठो जिनोत्तमः॥ जिनाधिपो जिनाधी
शो जिनस्वामी जिनेश्वरः॥६॥ जिननाथो जिनपतिर्जिनराजो जि
नाधिराट्॥ जिनप्रभुर्जिनविभुर्जिनभर्ता जिनाधिभूः॥७॥ जि
ननेता जिनेशानो जिनेनो जिननायकः॥ जिनेट् जिनपरिवृढो
जिनदेवो जिनेशिता॥८॥ जिनाधिराजो जिनपो जिनेशी जिनश
सिता॥ जिननाथोपि जिनाधिपतिर्जिनपालकः॥९॥ जिनचं
द्रो जिनादित्यो जिनार्को जिनकुंजरः॥ जिनेंदुर्जिनधौरेयो
जिनधुर्यो जिनोत्तरः॥१०॥ जिनवर्यो जिनवरो जिनसिंहो जि
नोद्वहः॥ जिनर्षभो जिनवृषो जिनरत्नं जिनोरसं॥११॥ जिनेश
विकश्च जिनग्रामणी जिनसत्तमः॥ जिनप्रवर्हः परमजिनो जिन
पुरोगमः॥१२॥ जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो जिनमुख्यो जिनाग्रिमः॥ श्रीजि
नश्चोत्तमजिनो जिनवृंदारकोरजित्॥१३॥ निर्विघ्नो विरजाः शु
द्धो निस्तमस्को निरंजनः॥ घातिकर्मांतकः कर्ममर्माविन्
कर्महानघः॥१४॥ वीतरागोऽक्षुद्द्वेषो निर्मोहो निर्मदोऽगदः॥ वै
तृष्णो निर्ममोऽसंगो निर्भयो वीतविस्मयः॥१६॥ अस्वप्नः प्र
श्रमोऽजन्मा निःस्वेदो निर्जरोऽमरः॥ अरत्यतीतो निश्चिंतो निर्वि
षादस्त्रिषष्टिजित्॥१७॥ छ॥ इति श्रीजिनशतं॥१॥ छ॥
सर्वज्ञः सर्ववित्सर्वदर्शी सर्वावलोकनः॥ अनंतविक्रमो।
नंतवीर्योऽनंतसुखात्मकः॥१८॥ अनंतसौख्यो विश्वज्ञो विश्व
दृश्वाऽखिलार्थदृक्॥ न्यक्षदृग्विश्वतश्चक्षुर्विश्वचक्षुरशेष।

वित॥२॥आनंदःपरमानंदःसदानंदःसदोदयःनित्यानंदोम
हानंदःपरानंदःपरोदयः॥३॥परमोजःपरंतेजःपरंधामपरम
हः॥प्रत्यग्ज्योतिःपरंज्योतिःपरंब्रह्मपरंमहः॥४॥प्रत्यगात्माप्र
बुद्धात्मामहात्मात्ममहोदयः॥परमात्माप्रशांतात्मपरात्मात्म
निकेतनः॥५॥परमेष्ठीमहिष्ठात्माश्रेष्ठात्मास्वात्मनिष्ठितः॥
ब्रह्मनिष्ठोमहानिष्ठोनिरूढात्मादृढात्मदृक्॥६॥एकविद्यो
महाविद्योमहाब्रह्मपदेश्वरः॥पंचब्रह्ममयःसार्वःसर्वविद्येश्व
रःस्वभूः॥७॥अनंतधीरनंतात्मानंतशक्तिरनंतदृक्॥अनंता
नंतधीशक्तिरनंतचिदनंतमुत्॥८॥सदाप्रकाशःसर्वार्थसा
क्षात्कारीसमग्रधीः॥कर्मसाक्षीजगच्चक्षुरलक्ष्यात्माचलस्थि
तिः॥९॥निराबाधोऽप्रतर्क्यात्माधर्मचक्रीविदांवरः॥भूतात्मा
सहजज्योतिर्विश्वज्योतिरतींद्रियः॥१०॥केवलीकेवलालोको
लोकालोकाविलोकनः॥विविक्तःकेवलोऽव्यक्तःशरण्योचिंत्य
वैभवः॥विश्वभृद्विश्वरूपात्माविश्वात्माविश्वतोमुखः॥विश्व
व्यापीस्वयंज्योतिरचिंत्यात्मामितप्रभः॥१२॥महौदार्योमहाबो
धिर्महालाभोमहोदयः॥महोपभोगःसुगतिर्महाभोगोमहा
बलः॥१३॥इतिश्रीसर्वज्ञशतं॥२॥यज्ञार्होभगवान
र्हन्महार्होमघवार्चितः॥भूतार्थयज्ञपुरुषोभूतार्थःक्रतुपौ
रुषः॥१॥पूज्योभट्टारकस्तत्रभवानत्रभवान्महान्॥महाम
हार्हस्तत्रायुस्ततोदीर्घायुरर्घ्यवाक्॥२॥आराध्यःपरमारा
ध्यःपंचकल्याणपूजितः॥दृग्विशुद्धिगुणोदग्रोवसुधाराचि
तास्पदः॥३॥सुस्वप्नदर्शीदिव्यौजाःशचीसेवितमातृकःस्या
द्रत्नगर्भःश्रीपूतगर्भोगर्भोत्सवोच्छ्रितः॥४॥दिव्योपचा
रोपचितःपद्मभूर्निष्कलःस्वजः॥सर्वीयजन्मापुण्यांगोभा
स्वानद्भूतदैवतः॥५॥विश्वविज्ञातसंभूतिर्विश्वदेवागमाद्भु
तः॥शचीसृष्टप्रतिच्छंदःसहस्राक्षदृगुत्सवः॥६॥नृत्यदैराव
तासीनःसर्वशक्रनमस्कृतः॥हर्षाकुलामरखगश्चारणर्षि
महोत्सवः॥७॥व्योमविष्णुपदारब्धस्नानपीठपताद्रिराट्

ब्धिस्नानांबुस्नातवासवः ॥७॥ गंधांबुपूतत्रैलो
सूचीशुचिश्रवा ॥ कृतार्थितशचीहस्तः ॥ शक्रो
द्घुष्टनामकः ॥८॥ शक्रारब्धानंदनृत्यः शचीविस्मापितांबिक
इन्द्रनृत्यंतपितृको रैदपूर्णमनोरथः ॥१०॥ आज्ञार्थींद्रकृतासेवो दे
वर्षीष्टशिवोद्यमः ॥ दीक्षाक्षणक्षुब्धजगद्भूर्भुवःस्वःपतीडि
तः ॥११॥ कुबेरनिर्मितास्थानः ॥ श्रीयुग्योगीश्वरार्चितः ब्रह्म
ज्ञो ब्रह्मविद्वेद्यो याज्यो यज्ञपतिः क्रतुः ॥१२॥ यज्ञांगममृतं यज्ञो
हविः ॥ स्तुत्यः स्तुतीश्वरः ॥ भावो महामहपतिर्महायज्ञोग्रया
जकः ॥१३॥ दयायागो जगत्पूज्यः पूजार्हो जगदर्चितः देवाधिदेव
शक्रार्च्यो देवदेवो जगद्गुरुः ॥१४॥ संहूतदेवः संघार्च्यो पद्म
यानो जयध्वजी ॥ भामंडली चतुःषष्टिचामरो देवदुंदुभिः ॥१५॥ वा
गस्पृष्टासनश्छत्रत्रयराट्पुष्पवृष्टिभाक् ॥ दिव्याशोको मान
मर्दी संगीतार्होष्टमंगलः ॥१६॥ इति श्रीयज्ञार्हशतं ॥९॥
तीर्थकृत्तीर्थसृट्तीर्थंकरस्तीर्थंकरः सुदृक् तीर्थकर्ता तीर्थभर्ता
तीर्थेशस्तीर्थनायकः ॥१॥ धर्मतीर्थकरस्तीर्थप्रणेता तीर्थका
रकः ॥ तीर्थप्रवर्तकस्तीर्थसेव्यस्तैर्थिकतारकः ॥ सत्यवाक्याधि
पः ॥ सत्यशासनोऽप्रतिशासनः ॥३॥ स्याद्वादी दिव्यगीर्दिव्यध्वनि
रव्याहतार्थवाक् ॥ पुण्यवागर्थ्य ॥ वागर्धमागधीयोक्तिरिद्धवाक्
॥४॥ अनेकांतदिगेकांतध्वांतभिद्दुर्णयांतकृत् ॥ सार्थवाग
यत्नोक्तिप्रतितीर्थमदघ्नवाक् ॥५॥ स्यात्कारध्वजवागी
हापेतवागचलौष्ठवाक् ॥ अपौरुषेयवाक्शास्तारुद्धवा
क्सप्तभंगिवाक् ॥६॥ अवर्णगीः ॥ सर्वभाषामयगीर्व्यक्त
वर्णगीः ॥ अमोघवागक्रमवागवाच्यानंतवागसंगि
वाक् ॥७॥ अद्वैतगीः सूनृतगीः सत्यानुभयगीः सुगीः
योजनव्यापिगीः क्षीरगौरगीस्तीर्थकृत्वगीः ॥८॥ भव्यैक
श्रव्यगुः सद्गुश्चित्रगुः परमार्थगुः प्रशांतगुः ॥ प्राश्निगुः सु
श्रुतिर्नियतकालगुः ॥९॥ सुश्रुतिः सुश्रुतो जन्मश्रुतिः सु
श्रुतमहाश्रुतिः ॥ धर्मश्रुतिः श्रुतिपतिः श्रुत्युद्धर्ता ध्रुव
श्रुतिः ॥१०॥ निर्वाणमार्गो दिग्मार्गदेशकः सर्वमार्गदे

दिक्॥ सारस्वतपथस्तीर्थः परमोत्तमतीर्थकृत्॥२१॥ देष्टावागीश्व
रोधर्मशासकोधर्मदेशकः॥ वागीश्वरस्त्रयीनाथस्त्रिभंगीशो
गिरांपतिः॥२२॥ सिद्धाज्ञः सिद्धवाग्ज्ञासिद्धः सिद्धैकशासनः ज
गत्प्रसिद्धसिद्धांतः सिद्धमंत्रः सुसिद्धवाक्॥२३॥ शुचिश्रवा नि
रुक्तोक्तिस्तंत्रकृन्न्यायशास्त्रकृत्॥ महिष्ठवाग्महानादः क
वींद्रोदुंदुभिस्वानः॥२४॥ इति श्रीतीर्थकृच्छतं॥४॥ नाथः पतिः
परिवृढस्वामिभर्त्ताविभुः प्रभुः॥ ईश्वरोधीश्वरोधीशोधीशानो
धीशितेशिता॥१॥ ईशोधिपतिरीशान इनइंद्रोधिपोधिभूः॥
महेश्वरोमहेशानोमहेशः परमेशिता॥२॥ अधिदेवोमहादे
वोदेवस्त्रिभुवनेश्वरः॥ विश्वेशोविश्वभूतेशोविश्वेट्विश्वेश्व
रोधिराट्॥३॥ लोकेश्वरोलोकपतिर्लोकनाथोजगत्पतिः
त्रैलोक्यनाथोलोकेशोजगन्नाथोजगत्प्रभुः॥४॥ पिताप
रः परतरोजेताजिष्णुरनीश्वरः॥ कर्त्ताप्रभूष्णुर्भ्राजिष्णुः प्र
भविष्णुः स्वयंप्रभुः॥५॥ लोकजिद्विश्वजिद्विश्वविजेतावि
श्वजित्वरः जगज्जिताजगज्जेत्राजगज्जिष्णुर्जगज्जयी॥६॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेताभृर्भुवः स्वरधीश्वरः धर्मनायकऋद्धी
शोभूतनाथश्चभूतभृत्॥७॥ गतिः पाता वृषोवर्योमंत्रकृत्
शुभलक्षणः॥ लोकाध्यक्षोदुराधर्षोभव्यबंधुर्निरुत्सुकः॥८॥
धीरोजगद्धितोजय्यस्त्रिजगत्परमेश्वरः॥ विश्वासी सर्वलोके
शोविभवोभुवनेश्वरः॥९॥ त्रिजगद्वल्लभस्तुंगस्त्रिजगन्मंगलो
दयः॥ धर्मचक्रायुधः सद्योजातस्त्रैलोक्यमंगल॥१०॥ वरदो
ऽप्रतिघोच्छेद्योदृढीयानभयंकरः॥ महाभागोनिरौपम्योधर्मसा
म्राज्यनायकः॥११॥ इति श्रीनाथशतं॥५॥ योगीप्रव्यक्तनिर्वेद
: साम्यारोहणतत्परः॥ सामायिकीसामायिकोनिःप्रमादोप्रतिक्र
मः॥१॥ यमप्रधाननियमः स्वभ्यस्तपरमासनः॥ प्राणायामच
णसिद्धप्रत्याहारोजितेंद्रियः॥२॥ धारणाधीश्वरोधर्मध्याननिष्ठः॥
समाधिराट्॥ स्फुरत्समरसीभावः एकीकरणनायकः॥३०॥
निर्ग्रंथनाथोयोगींद्रऋषिः साधुर्यतिर्मुनिः॥ महर्षिः साधुधौ
रेयोपतिनाथोमुनीश्वरः॥४॥ महामुनिर्महामौनीमहाध्यानीम

हावृती॥ महाद्रमोमहाशीलोमहाशांतोमहादमः॥५॥निर्लेपो
निर्भ्रमस्वांतोधर्माध्यक्षोदयाध्वजः॥ब्रह्मयोनिःस्वयंबुद्धोब्रह्म
ज्ञोब्रह्मतत्वविन्॥पूतात्मास्नातकोदांतोभदंतोवीतमत्सरः
धर्मवृक्षायुधोक्षोभ्यःप्रपूतात्मामृतोद्भवः॥७॥मंत्रमूर्तिःस्वसौम्या
त्मा स्वतंत्रोब्रह्मसंभवः॥सुप्रसन्नोगुणांभोधिःपुण्यापुण्यनिरोधकः
॥सुसंवृतसुगुप्तात्मासिद्धात्मानिरुपप्लवः॥महोदर्कोमहोपायोज
गदेकपितामहः॥८॥महाकारुणिकोगुण्योमहाक्लेशांकुशःशुचिः
अरिंजयःसदायोगःसदाभोगःसदाधृतिः॥१०॥परमोदासितानास्व
न्सत्पात्रीःशांतिनायकः॥अपूर्ववैद्योयोगज्ञोधर्ममूर्तिरधर्मध
क्॥११॥ब्रह्मेणमहाब्रह्मपतिःकृतकृत्यः॥कृतक्रतुः॥गुणाकरोगुणो
च्छेदीनिर्निमेषोनिराश्रयः॥१२॥सूरिःसुनयतत्वज्ञोमहामैत्रीम
यः॥क्षमी॥प्रक्षीणबंधोनिर्द्वंद्वः॥परमर्षिरनंतगः॥१३॥इतिश्री
योगशतं॥९॥निर्वाणःसागरःप्राज्ञैःमहासाधुरुदाहृतः॥वि
मलाभोथसुद्धाभः॥श्रीधरोदत्तइत्यपि॥१॥अमलाभोपुद्धरोग्नि
संयमश्चशिवस्तथा॥पुष्पांजलिःशिवगणःउत्साहोज्ञानसंज्ञ
कः॥२॥परमेश्वरइत्युक्तोविमलेशोयशोधरः॥कृष्णज्ञानमतिः
शुद्धमति॥श्रीभद्रशांतियुक्॥३॥वृषभस्तद्वदजितःसंभवश्चा
भिनंदनः॥सुनिभिःसुमतिःपद्मप्रभःप्रोक्तःसुपार्श्वकः॥४॥चंद्रप्रभः
पुष्पदंतःशीतलश्रेयसाह्वयः॥वासुःपूज्यश्चविमलोनंतजिद्धर्म
इत्यपि॥५॥शांतिःकुंथुररोमल्लिश्चसुव्रतोनमिरप्यतः॥नेमिःपा
र्श्वोवर्द्धमानोमहावीरःसुवीरकः॥६॥सन्मतिश्चाकथिमहति
महावीरइत्यथो॥महापद्मःसुरदेवःसुप्रभश्चस्वयंप्रभः॥७॥स
र्वायुधोजयदेवोभवेत्उदयदेवकः॥प्रभादेवउदंकश्चप्रश्न
कीर्तिर्जयाभिधः॥८॥पूर्णबुद्धिर्निःकषायोविज्ञेयोविमलप्र
वहलोनिर्मलश्चित्रगुप्तः॥समाधिगुप्तकः॥९॥स्वयंभूश्चापिकं
दर्पोजयनाथइतीरितः॥श्रीविमलोदिव्यवादोनंतवीर्योपुदी
रितः॥१०॥पुरुदेवोथसुविधिःप्रज्ञापारमितोव्ययः॥पुराणपु
रुषोधर्मसारथिः॥शिवकीर्तनः॥११॥विश्वकर्माक्षरोछद्मा
विश्वभूर्विश्वनाथकः॥दिगंबरोनिरातंकोनिरारेकोभवांतकः॥१२

दृढव्रतोनयतुंगोनिःकलंकोकलाधरः॥सर्व्वक्लेशापहोशांतश्
हृल्लक्षणः॥२३॥इतिश्रीनिर्वाणकांडं॥ः॥ब्रह्माचतुर्मुखोधाता
विधाताकमलासनः॥अब्जभूरात्मभूःस्रष्टासुरज्येष्ठःप्रजापतिः॥१॥
हिरण्यगर्भोवेदज्ञोवेदांगोवेदपारगः॥अजोमनुः॥शतानंदोहंसया
नस्त्रयीमयः॥२॥विष्णुस्त्रिविक्रमःशौरिः॥श्रीपतिःपुरुषोत्तमः॥वै
कुंठः॥पुंडरीकाक्षोहृषीकेशोहरिः॥स्वभूः॥३॥विश्वंभरोसुरध्वं
सीमधुर्बलिबंधनः॥अधोक्षजोमधुद्वेषीकेशवोविष्टरश्रवाः
॥४॥श्रीवत्सलांछनःश्रीमानच्युतोनरकांतकः॥विष्वक्सेनश्चक्रपा
णिःपद्मनाभोजनार्द्दनः॥५॥श्रीकंठःशंकरःशंभुःकपालीवृषके
तनः॥मृत्युंजयोविरूपाक्षोवामदेवस्त्रिलोचनः॥६॥उमाप
तिःपशुपतिः॥स्मरारिस्त्रिपुरांतकः॥अर्द्धनारीश्वरोरुद्रो
भवोभर्गःसदाशिवः॥७॥जगत्कर्त्तांधकारातिरनादिनि
धनोहरः॥महासेनस्तारकजिद्गणनाथोविनायकः॥८॥वि
रोचनोविपजन्मेनादशगात्माविभावसुः॥द्विजाराध्योहुतभु
क्चित्रभानुस्तनूनपात्॥९॥द्विजराजःसुधाशोचिरोषधी
शः॥कलानिधिः॥नक्षत्रनाथः॥शुभ्रांशुःसोमःकुमुदबां
धवः॥१०॥नैर्ऋतोनिलः॥पुण्यजनः॥पुण्यजनेश्वरःधर्म
राजोभोगिराजः॥प्रचेतानृमिनंदनः॥११॥सिंहकातनयश्छा
यानंदनोहलांपतिः॥पूर्वदेवोपदेष्टाचद्विजराजसमुद्भवः
१४॥इतिश्रीब्रह्मकांडं॥छ॥बुद्धोदशबलःशाक्यःषडभिज्ञस्तथा
गतः॥समंतभद्रःसुगतः॥श्रीघनोनंतकोटिकः॥१॥सिद्धार्थोमा
रजिच्छास्तालक्षणैकसुलक्षणः॥बोधिसत्वोनिर्विकल्पदर्शनो
दयवाद्यपि॥२॥महाकृपालुर्नैरात्म्यवादीसंतानशासकः॥सामा
न्यलक्षणचणः॥पंचस्कंधमयात्मदृक्॥३॥भूतार्थभावना
सिद्धचतुर्भूमिकशासनः॥चतुरार्यसत्यवक्तानिराश्रयचिद
न्वयः॥४॥योगोवैशेषिकस्तुल्यार्च्चित्षट्पदार्थदिक्॥नैयाय
कःषोडशार्थवादीपंचार्थवर्णकः॥५॥ज्ञानांतराध्यक्षबोधः॥
समवायवशार्थभित्॥भुक्त्येकसाक्ष्यवर्णोतोनिर्विशेषगु
णामृतः॥६॥सांख्यःसमीक्ष्यःकपिलः॥पंचविंशतितत्त्ववित्

हिस्र०आ

१०२

मक्तामकृज्ज्ञविज्ञानी ज्ञानचैतन्यभेददृक्॥७॥ असत्संविदिता-
ज्ञानः वादीसत्कार्यवादसात्॥ त्रिप्रमाणोऽप्रमाणः स्याद्वादि-
कारिकाहृदिक्॥८॥ क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषो नरो नाचेतनः पुमान्।
अकर्त्ता निर्गुणोमूर्त्तो भोक्ता सर्वगतोक्रियः॥९॥ द्रष्टा तटस्थः
कूटस्थो ज्ञाता निर्बंधनोभवः॥ बहिर्विकारो निर्मोक्षः प्रधानं बहुधा-
नकं॥१०॥ प्रकृतिः ख्यातिरव्यक्तः प्रकृतिः प्रकृतिप्रियः॥ प्रधानभो-
ज्योप्रकृतिर्विरम्यो विकृतिः कृती॥११॥ मीमांसकोस्तसर्वज्ञः॥
श्रुतिपूतः सदोत्सवः॥ परोक्षज्ञानवादीष्टपावकः सिद्धकर्मकः
१२॥ चार्वाको भौतिकज्ञानो भूताभिव्यक्तचेतनः॥ प्रत्यक्षैकप्रमा-
णोस्तपरलोको गुरुश्रुतिः॥१३॥ पुरंदरविद्धकर्णो वेदांती संवि-
तद्वयी॥ शब्दाद्वैती स्फोटवादी पाखंडघ्नो नयौघयुक्॥१४॥ इति
श्रीबुद्धशतं॥९॥ अंतकृत्पारकृत्तीरप्राप्तः पारेतमः स्थितः॥ त्रि-
दंडी दंडितारातिर्ज्ञानकर्मसमुच्चयी॥१॥ संहृतध्वनिरुच्छिन्न-
योगः सुप्तात्मबोधनः॥ योगस्नेहापहो योगकिट्टनिर्लेपनोद्य-
तः॥२॥ स्थितस्थूलवपुर्योगो गीर्मनोयोगकार्श्यकः॥ सूक्ष्मका-
यक्रियास्थायी सूक्ष्मवाक्चित्तयोगहा॥ एकदंडी च परमहंसः
परमसंवरः॥३॥ नैःकर्म्यसिद्धः परमनिर्जरः प्रज्वलत्प्रभः॥ मोघ-
कर्मा त्रुटत्कर्मपाशः शैलेश्यलंकृतः॥४॥ एकाकाररसस्वादः
विश्वाकाररसाकुलः॥ अजीवन्नमृतोजागरदसुप्तः॥ सुप्तजाग-
ध्येयानयोगी चतुरशीतिलक्षगुणोगुणः॥ निपीतानंतपर्यायो
विद्यासंस्कारनायकः॥७॥ दुर्वेनिर्वचनीयोणुरणीयाननणुः श्रे-
यः॥ प्रेष्ठः॥ स्थेयान् स्थिरो निष्ठः श्रेष्ठो ज्येष्ठः सुनिष्ठितः॥ भूता-
र्थशूरो भूतार्थदूरः॥ परमनिर्गुणः॥ व्यवहारसुषुप्तोतिजागरू-
कोतिसुस्थितः॥८॥ उदितोदितमाहात्म्यो निरुपाधिरकृत्रिमः
अमेयमहिमात्यंतशुद्धः॥ सिद्धिस्वयंवरः॥१०॥ सिद्धानुजः॥ सिद्धि-
पुरीपांथः सिद्धिगणातिथिः॥ सिद्धिसंगोन्मुखः॥ सिद्धलिंग्य-
सिद्धोपगूहकः॥११॥ पुष्टोष्टादशसहस्रशीलाश्वः पुण्यसंबलः॥
वृत्ताग्र्यसुम्पः॥ परमशुक्ललेश्योपचारकृत्॥१२॥ क्षेपिष्ठोंत्यक्ष-
णसंख्यात्वलक्ष्यस्थितिः॥ द्वासप्ततिप्रकृत्यासीत्रयोदशांक-
लिप्रणुत्॥१३॥ अवेद्योयजकोयज्योयाज्योयज्ञपरिग्रहः अग्निहो-

त्रीचपरमनिस्पृहो संततिर्हेयः ॥१४॥ अग्रियो ग्रामको दीक्षेदीक्षको
दीक्षितोक्षयः ॥ अगम्यो गमको रम्यो रमको ज्ञाननिर्भरः ॥१५॥ इति
श्रीअंतकृच्छतं ॥१०॥ महायोगीश्वरो द्रव्यसिद्धो देहो पुनर्भवः ॥ ज्ञानै
कचिज्जीवघनः ॥ सिद्धो लोकाग्रगामुकः ॥११॥ इति श्रीअंत्या
ष्टकं ॥११॥ इदमष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं भक्तितोर्हतां ॥ योनंतानामधी
तेसौ मुक्त्यंतां मुक्तिमश्नुते ॥१॥ इदं लोकोत्तमं पुंसामिदं शरण
मुत्तमं ॥ इदं मंगलमग्रीयमिदं परमपावनं ॥२॥ इदमेव परं तीर्थ
मिदमेवाष्टसाधनं ॥ इदमेवाखिलक्लेशसंक्लेशक्षयकारणं ॥३॥ ए
तेषामेकमप्यर्हन् नाम्नामुच्चारयन्नघैः ॥ मुच्यते किं पुनः सर्वा
ण्यर्थज्ञस्तु जिनायते ॥४॥ इति श्रीआशाधरसूरिविरचिते जि
नसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णं ॥ ॥श्री॥ श्री ॥
॥ अथ अकलंकाष्टकं लिख्यते ॥ काव्यं ॥ त्रैलोक्यं सकलं त्रिका
लविषयं सालोकमालोकितं साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्र
यं सांगुलिं ॥ रागद्वेषभयामयांतकजरालोलत्वलोभादयो ॥ नालं य
त्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते ॥१॥ दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा
तीव्रार्चिषा वह्निना ॥ यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गु
हः ॥ सोयं किम मम शंकरो भयतृषारोषार्तिमोहक्षयं ॥ कृत्वा यः स तु सर्व
वित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः ॥२॥ यत्नाद्येन विदारितं कररुहैर्दैत्येंद्र
वक्षस्थलं ॥ सारथ्येन धनंजयस्य समरे यो मारयत्कौरवान् ॥ नासौ वि
ष्णुरनेककालविषयं यज्ज्ञानमव्याहतं ॥ विश्वं व्याप्य विजृंभते स तु
महाविष्णुः विशिष्टो मम ॥३॥ उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो य
दीयं पुनः ॥ पात्रीदंडकमंडलुप्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिं ॥
आविर्भावयितुं भवंति स कथं ब्रह्मा भवेन्मादृशां ॥ क्षुत्तृष्णाश्रम
रागरोगरहितो ब्रह्मा कृतार्थोस्तु नः ॥४॥ यो ज[illegible]ग्ध्वा पिशितं
समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन् कर्ता कर्मफलं न भुंक्त इति यो व
क्ता स बुद्धः कथं ॥ यज्ज्ञानं क्षणवर्ति वस्तु सकलं ज्ञातुं न शक्यं सदा
यो जानन् युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ॥५॥ ईशः किं छिन्नलिं
गो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्यान्नाथः किं भैक्षचारी य
तिरिति स कथं सांगनः सात्मजश्च ॥ आर्द्राजः किं त्वजन्मा सकलवि

दितिकिंवेत्तिनात्मांतरायंसंदेहात्सम्यगुक्तंपशुपतिमपशुःको
त्रधीमानुपास्ते॥६॥ब्रह्माचर्मोक्षसूत्रीसुरयुवतिरसावेशविभ्रांतचे
ताःशंभुःखट्वांगधारीगिरिपतितनयापांगलीलानुविद्धःविष्णुश्चक्रा
धिपःसन्दुहितरमगमद्गोपनाथस्यमोहादर्हन्विध्वस्तरागोजि
तसकलभयःकोयमेष्वाप्तनाथः॥७॥एकोनृत्यतिविप्रसार्यककु
भांचक्रेसहस्रंभुजानेकःशेषभुजंगभोगशयनेव्यादायनिद्राय
ते॥दृष्टुंचारुतिलोत्तमामुखमगादेकश्चतुर्वक्त्रतामेतेमुक्तिप
थंवदंतिविदुषामित्येतदत्यद्भुतं॥८॥योविश्वंवेदवेद्यंजननजल
निधेर्भंगिनःपारदृश्वापौर्वापर्याविरुद्धंवचनमनुपमंनिष्कलंकंय
दीयंतंवंदेसाधुवंद्यंसकलगुणनिधिंध्वस्तदोषद्विषंतंबुद्धंवाव
र्द्धमानंशतदलनिलयंकेशवंवाशिवंवा॥९॥मायानास्तिजटा
कपालमुकुटंचंद्रोनमूर्द्धावलीखट्वांगंनचवासुकिर्नचधनुःशू
लंनचोग्रंमुखंकामोयस्यनकामिनीनचवृषोगीतंननृत्यंपुनः
सोस्मान्पातुनिरंजनोजिनपतिःसर्वत्रसूक्ष्मःशिवः॥१०॥नोब्रह्मां
कितभूतलंनचहरेःसौम्यंनमुद्रांकितंनोचंद्रार्ककरांकितं
सुरपतेर्वज्रांकितंनैवच॥षड्वक्त्रांकितबौद्धदेवहुतभुग्य
क्षोरगैर्नांकितंनग्नंपश्यतवादिनोजगदिदंजैनेंद्रमुद्रांकितं॥११॥मौंजीदं
डकमंडलुप्रभृतयोनोलांछनंब्रह्मणोरुद्रस्यापिजटाकपालमु
कुटंकौपीनखट्वांगनाविष्णोश्चक्रगदादिशंखमतुलंबौद्धस्यरक्तां
बरंनग्नंपश्यतवादिनोजगदिदंजैनेंद्रमुद्रांकितं॥१२॥नाहंकार
वशीकृतेनमनसानद्वेषिणाकेवलंनैरात्म्यंप्रतिपद्यनश्यतिज
नेकारुण्यबुद्ध्यामयाराज्ञःश्रीहिमशीतलस्यसदसिप्रायोविद
ग्धात्मनोबौद्धौघान्सकलान्विजित्यसुगतःपादेनविस्फालि
तः॥१३॥खट्वांगंनैवहस्तेनचहृदिरचितालंबितानैवमालाभस्मांगनै
वशूलंनचगिरिदुहितानैवहस्तेकपालंचंद्रार्द्धंनैवमूर्द्धिनचवृषगम
नंनैवकंठेफणींद्रःतंवंदेत्यक्तदोषंभवभयमथनंईश्वरंदेवदेवं॥१४॥
किंवाद्योभगवानमेयमहिमादेवोकलंकःकलौकालेयोजनतासुधर्म
निहितोदेवोकलंकोजिनःयस्यस्फारविवेकमुद्रलहरीजालेप्रमेयाकु
लानिर्मग्नातनुतेतरांभगवतीताराशिरःकंपनं॥१५॥साताराखलुदेवताभ
गवतीमन्यापिमन्यामहेषण्मासावधिजाड्यसांख्यभगवान्भट्टाकलंकप्रभो
वाक्कल्लोलपरंपराभिरमतेनूनंजनोमज्जनंव्यापारंसहतेस्मविस्मितम
तिःसंताडितेतस्ततः॥१६॥इतिअकलंकाष्टकसंपूर्णं॥

॥अथमंगलपंचूमो लिष्यते॥ ॥पणविवि पंच परमगुरु गुरु
जिनसासणो॥ सकलसिद्धिदातार तिविघनविनासणो॥ सा
रद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकासणो॥ मंगलकर चउ संघ ह पा
पपणासणो॥ पापपणासण गुणह गरुवा दोष अष्टादश रहो
धरि ध्यान कर्म विनाशि केवल ज्ञान अविचल जिन लह्यो॥ प्रभु
पंचकल्याणक विराजित सकल सुरनर ध्याईये॥ त्रैलोकना
थसु देव जिनवर जगत मंगल गाइये॥१॥ जाकै गर्भकल्याणक
धनपति आइयो॥ अवधिज्ञान परिमाण सु इंद्र पठाइयो॥ रचि
नव बारह जोजन नयर सुहावनी॥ कनकरयणमणि मंडित मं
दिर अति वणी॥ अति वणी पोरि पगार परिषा सु वन उपवन सो
हणे॥ नरनारि सुंदर चतुर वेष सु देषि जनमन मोहिये॥ सहां जन
क ग्रह छह मास प्रथमहि रतनधारा वरषियो॥ पुनि रुचिकवा
सि निजननि सेवा करहि सब विधि हरषियो॥२॥ सुरकुंजर स
म कुंजर धवल धुरंधरो॥ केसरि केसरि सोभित नषसिष सुंदरो॥
कमला कमल नय नहोयदाम सुहावनी॥ रविससि मंडल म
धुर मीन जुगल पावनी॥ पावनी कनकघट जुगम पुरन कमल
कलित सरोवरो॥ कल्लोलमालाकुलित सागर सिंहपीठ मनो
हरो॥ रमणीक अमरविमान फुनि पति भुवन भवि छवि छाजए
रुचिर रत्नराशि दिपंति दहन सु तेजपुंज विराजए॥३॥ ए सषि सो
लह सुपना सूती सैन ही॥ देषि माय मनोहर पछिम रैन ही॥ उ
ठि परभाति पिय पुछियो अवधि प्रकाशियो॥ त्रिभुवनपति सु
त होसी ये फल तिह भासियो॥ भासियो फल तहां चितं दंपति
परम आनंदित भए॥ छह मास परि नव मास फुनि तहां रयन
दिन सुखसूं गए॥ गर्भावतार महंत महिमा सुनत सब सु
षपावए॥ त्रैलोकनाथसु देव जिनवर जगत मंगल गाइ
ये॥४॥ इति प्रथम मंगल संपूर्ण॥१॥ अथ द्वितीय मंगल लिष्यते
मति श्रुत अवधि विराजित जिन जव जनमियां॥ तिहुं लो

नयोहोतितसुरगननरमियो॥कलपवासिघरघंटअनाहदवजि।
या॥ज्योतिकघरिहरिनादसहजगलगाजियो॥गाजियासह।
नहिसंखवनावनअवनत्राइसुहावनें॥मंतरनिलयपटुपट।
हवाजे॥कहतमहिमांकोवनै॥कंपितसुरासनअवधिवलजे।
नजनमनिश्चैजानियो॥धनराजतबआजराजमायामईनिरमिय।
मानियो॥५॥योजनलक्षगयंदवदनसोनिरमये॥वदनवदन।
वसुदंतदंतसरसंठए॥सरसरसोपणवीसकमलनीछाजए।
कमलिनिकमलिनिकमलपचीसविराजए॥राजयतिक।
कमकमलअठोतरसी॥मनोहरदलवनें॥दलदलअपछर।
नटहिनाटकहावनावसुहावनें॥तहांकनककिंकिणि।
वरविचित्रसुअमरमंडितसोहए॥घनघंटचमरधुजापताका।
देषित्रिभुवनमोहए॥६॥तिहकरिहरिचढिआइयोसुरपरि।
वारियो॥पुरहिपदछिणदेतहजिनजयकारियो॥गुपतजा।
यजिनजननीहसुखनिद्रारची॥मायामईसिसुराषितु।
जिनआन्योरची॥आनोरचीजिनरूपदेषतनयनतृप।
तिनपूजये॥तवपरमहरषितहृदयहरिणासहसलोचनह।
जये॥पुनिकरिप्रणामसुप्रथमइंद्रउछंगधरिप्रभुलीनहो॥इसा।
नइंद्रसुचंदछविकरिछत्रप्रभुसिरदीनहो॥७॥सनतकुमारम।
रमहेंद्रचमरयुगढारए॥शेषशक्रजयजीवशब्दउचारए॥उ।
छवसहितचतुरविधसुरहरषितनये॥योजनसहसनमाए।
गगननलंघिगए॥लंघिगएसुरगिरिजहांपांडुकवनविचि।
त्रविराजिए॥पांडुकशिलातहांअर्धचंद्रसमानमणिछवि
छाजिए॥योजनपचासविशालदुगुणीआयामवसुऊंचीग
णी॥वरअष्टमंगलकनककलसनिसिंहपीठसुहावणी॥८
रचिमणिमंडपशोभितमध्यसिंहासणो॥थाप्योपूरवमुख
तहांप्रभुकमलासणो॥वाजहितालमृदंगवीणवीनामुनी
दुंदुभिप्रमुखमधुरधुनिअवरजुवाजनी॥वाजनीवाजैसर
वमिलिमंगलमंगलगावही॥अतिकरहिंउछवसुरगन॥

सब देव कौतुक आवही॥ नरि षीरसागर जल जु हाथहि हाथ सुरगि
रिलावही॥ सौधर्म अरु ईसांन इंद्र सुकलश ले प्रभु न्हावही॥ ऐ॥
वदन उदर अवगाह कलसगत जानिये॥ एक चारि वसु जोजन
मान प्रमानिये॥ सहस अठोत्तर कलस प्रभू कै सिर ढरै॥ फुनि सिं
गार प्रमुख आचार सबैं करै॥ करि प्रगट प्रभु महिमा महोत्सव
आनि फुनि मातैं दयौ॥ धनपति हिं सेवा राखि सुरपति॥ आप सुर
लोक ह गयो॥ जन्माभिषेक महंत महिमा सुनत सब सुख पा
ईयो॥ त्रैलोक्य नाथ सुदेव जिनवर जगत मंगल गाईए॥२०॥ इति॥
श्रीजन्ममंगल॥ अथ तप॥३॥ श्रमजल रहित सरीर सदा सब मल र
ह्यौ॥ षीर वरण वर रुधिर प्रथम आकृति सह्यौ॥ प्रथम सार संह
नन स्वरूप विराजए॥ सहज सुगंध सुलष्षन मंडित छाजए॥ छा
जैं अतुलैं बल परम प्रिय हित मधुर वचन सुहावनें॥ दश सहज
अतिसय सुभग मूरति बाललील कहावनें॥ आबाल काल त्रै
लोकपति मन रुचित उचित जु नित लये॥ अमरोपुनीत पुनी
त अनुपम सकल भोग विभोगए॥२१॥ भव तन भोग विरत्त क
दाचित चिंतये॥ धन जोवन पिय पुत्र कलित्र अनित्तये॥ कोउ न
सरन मरन दिन दुष चहुंगति भरयो॥ दुषसुष एकही भुगतै जी
व विधिवसि परयो॥ परयो विधिवसि आन चेतन आन जड जु क
लेवरो॥ तन असुचि परतैं होइ आस्रव परहरे संवरो॥ निरज
रा तप बल होइ समकित विनु सदा त्रिभुवन भम्यौ॥ दुर्लभ वि
वेक विना न कबहूं परम धर्म विषै रम्यौ॥२२॥ ए प्रभु बारह पाव
न भावन भाइया॥ लौकांतिक वर देव नियोगैं आईया॥ कुसुमां
जलि दे चरन कमल सिर नाइयौ॥ स्वयंबुद्ध प्रभु थुति करि तिन
समुझाइयो॥ समुझाय प्रभुकौं गए निजपद फुनि महोछौ हरि
कियो॥ रुचिर चिर चित्र विचित्र सिविका कर सुनंदन वन लि
यो॥ तहं पंचमुष्टी लोंच कीनों प्रथम सिद्ध नुति करी॥ मंडि
य महाव्रत पंच दुर्धर सकल परिग्रह परिहरे॥२३॥ मणिमय भा
जन केश परिट्ठिय सुरपती॥ षीरसमुद्र जल षिपि करि गयो अम

रावती॥ तपसंजमबलप्रभुकेमनपरजैतयो॥ मोनसहितनतपकर
तकालकछूतहांगये॥ गयोतहंकछूकालतपबलरिद्धिबसुवि
द्धिसिद्धिया॥ जिसुधर्मध्यानबलेनषयगयसमप्रकृतिप्रसिद्धि
या॥ षिपिसातवेगुणजतनबिनुतहां॥ तीनप्रकृतिजुबुद्धवि
करिकरणतीनप्रथमसुकलबलक्षपकश्रेणीप्रभुचढ्यो॥
ध॥ प्रकृतिछतीसनवेगुणथांनविनासिए॥ दसमेंसूषिमलो
नप्रकृतितिहिनासिये॥ सुकलध्यानपददूजोफुनिप्रभुपू
रियो॥ बारहमेंगुणसोरहप्रकृतिजुचूरियो॥ चूरियोत्रेसठिप्र
कृतिइहविधिघातियाकर्मातणी॥ तपकियोध्यानपर्यंतबा
रहविधित्रिलोकसिरोमनी॥ निःक्रमनकल्याणकसुमहि
मांसुनतसबसुषपाईये॥ त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरजग
तमंगलगाइये॥ २५॥ इतितृतियमंगल॥ ३॥ तेरहमेंगुणथा
नसजोगिजिनेश्वरो॥ अनंतचतुष्टयमंडितभयोपरमेश्व
रो॥ समोसरणतबधनपतिबहुविधिनिरमियो॥ आगमप्र
जुगतिप्रमाणगगनतलिपरिठयो॥ परिठयोचित्रविचित्रम
णिमयसभामंडपसोहये॥ तहांमध्यबारहबनेकोठेबनक
सुरनरमोहए॥ मुनिकल्पवासिनिअर्जिकातहांजोतिसीम
नवनतिया॥ फुनिभूमजोमसुकल्पसुरनरपसुतिकोठनिवे
ठिया॥ २६॥ मध्यप्रदेशतीनमणिपीठतहांबनें॥ गंधकुटीसिं
घासनकमलसुहावनें॥ तीनछत्रसिरसोभितत्रिभुवनमो
हए॥ अंतरीषकमलासनप्रभुतनसोहए॥ सोहएचोसठिचम
रदुरतहांअसोकतरुतलिछाजए॥ फुनिदिव्यध्वनिप्रतिस
बदजुनतहदेवदुंदुभिबाजए॥ सुरपुष्पवृष्टिसुप्रभामंडलकोटि
रविछबिछाजए॥ इमअष्टअनुपमप्रातिहार्यसुवरविभूति
विराजए॥ २७॥ जोजनसतइकमानसुभिक्षचहुंदिसि गग
नगमनअरुप्रानीवधनअहोनिसि॥ निरुपसर्गनिराहा
रसदाजगदीसए॥ आननचारिचहुंदिससोभितदीसए॥ स
भेदअवेसविद्याविभवचरईस्वरपतो॥ छायाबिन

वर्जितसुद्धफटिकसमानतनउनुकोवन्यो॥नहिनयनपलक
पतनकदाचितकेसनषसमवढतजहघातियाषयजनितअति
सयदसविचित्रविराजइ॥२८॥सकलअरथमागधियाभाषाज्ञा
नियो॥सकलजीवगातिमैत्रीभाववषानियो॥सवरतिकेफल
फूलवनस्पतिमनहरै॥दर्पणसमतहअवनिपवनगतिअ
नुसरै॥अनुसरैपरमानंदसवको॥नारिनरजेसेवता॥जोज
नप्रमाणधरातिउज्जलमारजहिमारुतदेवता॥फुनिक
रहिमेघकुमारगंधोदकसुवृष्टिसुहावनी॥पदकमलत
लिसुरषिपहिंकमलसुधरनिससिसोभावनी॥२९॥अम
लगगनतलिअरुदिसितहअनुसारहीं॥चतुरनिकायदेव
तिसुरहिंकारहीं॥धर्मचक्रचलैआगौंरविजिहिंलाजहीं॥फु
निभृंगारप्रमुषवसुमंगलराजहीं॥राजहिंतिचौदहचारुअ
तिसयदेवरचितसुहावने॥जिनराजकेवलज्ञानमहिमा
औरकहतकहावने॥तहांइंद्रआयकियोमहोछौसभा
सोभितअतिवनी॥धर्मोपदेसकियोतहांउच्छलियवानी
जिनतनी॥३०॥छुधातृषाअरुरागद्वेषअसुहावने॥जन्मज
राअरुमरणत्रिदोषभयावने॥रोगसोगभयविस्मयअरुनिद्रायनी॥
खेदस्वेदमदमोहअरतिचिंतागनी॥गनिएअठारहदोषतिनिकरि
रहितदेवनिरंजनो॥नवपरमकेवललब्धिमंडितसिवरमनि
मनरंजनो॥श्रीज्ञानकल्याणकसुमहिमासुनतसवसुषपाइये॥
त्रैलोकनाथसुदेवजिनवरजगतमंगलगाइये॥इतिचौथोमं
गलसंपूर्ण॥४॥केवलदृष्टिचराचरदेष्योजारिसो॥भविनि
प्रतिउपदेस्योजिनवरतारिसो॥भवभयभीतभविकजनसर
निजुआइया॥रत्नत्रयलछनसिवपंथलगाइया॥लाइयापंथे
जुभविफुनिप्रभुत्रितियसुकलजुपूरियो॥तजितेरहैगुनथा
नप्रभुतहप्रकृतिवहतरचूरियो॥फुनिचौदहैगुणप्रकृति
तेरहचुरिचसुकलवलेहती॥इमघातिवसुविधिकर्मपहुंचेस
मयमैंपंचमगती॥३१॥लोकसिषरतनुवातवलेमहिसंठियो

यो धर्मद्रव्यगिनुगमननजिहिंआगेकियो॥मदनरहितमूषोदरग॥
आंवरजारिसो॥किमपिहीननिजतनुतैंनयो॥अनुतारिसो तारे॥
जुपर्ययनित्यअविचल॥अर्थपर्ययषिनुषई॥नियतदृष्टि
अनंतगुणमवहारनयवसुगुणमई॥ वस्तुस्वभावविभाव
विरहितसुद्धपरिणतिपरिनयो॥चिद्रूपपरमानंदमंदिरसुद्धपर
मातमनयो॥२॥ तनुपरिमाणदामिनिपरिसवषिरिगए रहेस
षनषकेसरूपजेपरिनये॥तवहरिप्रमुषचतुरविधिसुरगनसु
नसच्यो॥मायामईनखकेसरहितजिनतनुरच्यो॥रचिअग
रचंदनप्रमुषपरिमलद्रव्यजिनजेकारियो॥पदपसितअगनि
कुमारमुकुटानलसुविधिसंस्कारियो॥ निर्वाणकल्याणकसु
महिमांसुनतसवसुषपाईये॥त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरज
गतमंगलगाइये॥इतिश्रीपंचमंगलरूपचंदकृतसंपूर्ण॥५॥
मैमतिहीनभगतिवसुभावनभाइया॥मंगलगीतप्रवंधसुजि
नगुनगाईया॥जोइसुसुनइवषानइसुरधरिगावइ॥मनवंछि
तफलसोनरनिश्चैपावइ॥पावइसुआठोसिद्धिनवनिधिमन
प्रतीतिकुमानए॥भ्रमभावछूटैसकलमनकेजिनस्वरूपसु
जानए॥फुनिहरिहिपातिकटरहि विघनसुहोयमंगलनित
नयो॥भनिरूपचंदत्रिलोकप्रभुजिनदेवचौसंघजयो॥२५॥ इ
तिश्रीपंचमकल्याणकमंगलसमाप्तम् स्वाध्यायसंपूर्णः॥
अथविषापहारभाषालीष्यते॥चौपई॥श्रीरिषभनाथविमल
गुणईस॥वर्द्धमानवंदोचौवीस॥गणधरगौतमसारदमायवरदीजे
मुहिवुद्धिसहाय॥१॥सिद्धसाधसतगुरअवधार॥करूंकवितआत
मउपगार॥विषापहारसंतवनउच्चार॥सर्वऔषधीईमृतधार॥२॥मैं
मंत्रतुम्हारोनाम॥तुमहीगारुडगरुडसमांन॥तुंमसमवैद्यनकोसं
सार॥तुंमस्यांनेतिहुंलोकमभार॥३॥तुमविषहरणकरणजगसंत
नमोनमोनितदेवअनंत॥तुमगुणमहिमांअगमअपार॥सुरगुरसे
सलहैनहीपार॥४॥तुंमपरमातमापरमानंद॥कलपवृक्षसवसुष
केवृंद॥मुदितमेरमहिमंडलधीर॥विद्यासागरगहरगंभीर॥५॥तुम
उधिमथनमहावलवीर॥संकटविकटनयभंजनभीर॥तुमजगतार

तुम जगदीस वेदउद्धारण विस्वावीस॥ धरतन चिंतामणि तुम गुण
रास॥ चित्रावेलि चितहरन विलास॥ उपसर्गहरण तुम नाम सकल
मं। मंत्र तंत्र तुमही मनमूल॥७॥ जैसें वज्र परवत परिहार॥ ज्यों तुम नं
म विषापहार॥ नागदमनि तुम नाम कहाहिं॥ विस हर विषम दमें
छिन मांहि॥८॥ तुम सुमरण चितै मन मांहि॥ विषय पिवत ईमृत कैंन
हिं॥ नांम सुधारस वरषै जहां॥ पाप मूल रहै नाहीं तहां॥९॥ ज्यों पार
सकों परसै लोह॥ निज गुण तजि कंचन सम होह॥ त्यों तुम सुमरण
साधै मूंच॥ नीच जपावै पदई कंच॥१०॥ जे तुम नाम मंत्र मन कूल॥ मह
मंत्र सरजीवन मूल॥ मूरिष मरम न जानें भेव॥ करम कलंक दहन तु
म देव॥११॥ जे तुम नाम गरुड का गहै॥ काल भुजंगम कै भैर है॥ तुम
अनंत रज हा जिनराय॥ मरन न पावै को तिहिं ठाय॥१२॥ तुम्हारो उप
उदयो घट जास॥ सांसो सी तन आपै तास॥ जीवै दादर वरषै लो
य॥ सुनि वांनी सरजीवन होय॥१३॥ तुम विन कौन करै मुहि सार॥ तु
म विन कौन उतारै पार॥ दयावंत तुम दीन दयाल॥ तुम करता हरत
करपाल॥१४॥ सरणैं आयो श्री जिनराय॥ अब मुहि काज सुधारो
आय॥ मैं रंक हूं जी धन पूत॥ साहक है राखो घर सूत॥१५॥ करूं
वीनती वारंवार॥ तुम विन कौन करै उपगार॥ तुम पैंगंवर तुम
ही पीर॥ तुम विन को काटै पर पीर॥१६॥ विग्रह ग्रह दुष विपति वि
योग॥ रोला घोल जलंधर रोग॥ चरण कमल रज तन कौं लाय॥ दु
ष्ट माधि सुर गंध मिटाय॥१७॥ मैं अनाथ तुम त्रिभुवन नाथ॥ मात
पिता तुम सज्जन संगात॥ तुम सम दाता कौं उन दांन॥ और कहां जा
चो जगमांन॥१८॥ प्रभु तुम पतित उधारन आहिं॥ वाह गहे की ला
ज निवाहि॥ जहां देषौ तहां तुम ही आय॥ घट घट जोति रही ठह
राय॥१९॥ वाट घाट विषम भय जहां॥ तुम विन कौन सहाई तहां॥
विकट विथा अंतर जलवाय॥ नांम लेत छिन मांहि विलाय॥२०॥
आचारिज मांनतुंग अवसांन॥ संकट सुमरयौ नाम निधांन॥ भ
कामर तुम भक्ति सहा॥ प्रणाम्यो प्रगटे तिहिं ठाय॥२१॥

॥वादराज न पढ़ न गायो॥ एकीभाव कियो॥

संदेह॥ कष्टगयो कंचनसमदेह॥२३॥ कल्याण मंदिरक्रमदचंदवये
राजा विक्रमविस्मैनयो सेवकजी नितुम करीसहाय॥ पार्श्वनाथप्र
गटे तिहिंगाय॥२४॥ नसमसमाधिसुमंतनजनशे संन्यस्तकतिजि
नस्तुतिवरी॥ गई आधिविमलमतिनशे॥ तहांपनिसहायतुम
हीवई॥२५॥ नवंसदेतं श्रीपालनरेस॥ सांससंकटजलसूवेस
तहांपनितुमहीनयेसहाय॥ आनंदसौध्ररिपकुंचे जाय॥२६॥ स
नाडुसासनपकस्योचीर॥ द्रोपतिपनराष्यौकरिधीर॥ सीताल
छिमनदीनोसांच॥ रावणजीतिनभीषणराज॥२७॥ सेवसुदर
शणसहायकीयो॥ सूलीसिंघासणतुमहीदीयो॥ आषाढभू
तधस्योतुंमध्यान॥ नाटिकनाचेकेवलग्यांन॥२८॥ सिंहसपो
दिकजी वन्नगनेका॥ तुमसुमरंताराषीटेका॥ ऐसीकेइरकजन
कीसाषि॥ साहकहैसरणागतराषि॥२९॥ यहऔसरजीचैयोव
ला॥ मेरोसंदेहमिटैततकाल॥ बंदीछोडविडदमहाराज॥ अपनोंबि
डदनिवाहोलाज॥३०॥ औरआलंबनमेरैनाहि॥ मैंनिहचोकी
नोमनमांहि॥३१॥ चरणकमलछांडौंनहीसेव॥ मेरैतोतुंमसद
गुरदेव॥३२॥ तुंमहीसूरिजतुंमहीचंद॥ मिथ्यामोहनिकंदन
कंद॥ धरमचक्रतुमधारनधीर॥ विसहरचक्रविदारनवीर॥३३॥
चोरआगनिजलभूतपिशाच॥ जलजंगलअटवीउदास॥ डरउ
ग्रामनराजाबसिहोय॥ तुमप्रसादगंजैनहिकोय॥३४॥ हयेगयर
यसबलसावंत॥ सिंघसाईलमहामयवंत॥ दिढबंधनविग्रह
विकराल॥ तुमसुमरनछूटैततकाल॥३५॥ पयपन्नगहीनकन
नाज॥ ताकांतुम [illegible]वकसोगजराज॥ एकतथापियथोफिरिराज
तुंमप्रभुवडेगरीबनवाज॥३६॥ पानीसोपयदासकरो नस्याव
र तुंमरीताकरो॥ तुमकरताहरताकरतार॥ कीरीकुंजरकरत
नवार॥३७॥ गुनअनंतअलपमोहिग्यान॥ कहांलगप्रभुके
करूंवषांनि॥ आगमपंथसकैनहीमोहि॥ तुम्हारोचरीत्रवनि
आवैतोहि॥३८॥ नयोसपरससाहंसकीयो॥ दयावंतआयदर
शणदीयो॥ साहपूतसचेतंननयो॥ हस्तहस्तसोधरकुंगयो॥३९
धनिदासणदेष्योनगवंत॥ आजिधनिमुषनैनंपवित्रप्रभुके

केचरणकमलहूनयो॥ जनमसुकारथमेरोनयो॥ नृपकरपंकज॥
करनाऊंसीस॥ मुक्तिअपराधहमोजगदीस॥ संवतसतरासैंसुन
थांन॥ नारगेलतथिचौदसिजांन॥ १९॥ पढैसुणैंतहांपरमानंद
कल्पवृक्षसमसुषकेवृंद॥ अष्टसिद्धिनवनिधिनतिलहै॥ अचल
कीर्तिआचारजकहै॥ २०॥ दोहा॥ नयनंजनरंजितजगतविष
पहारगनाम॥ सांसोतजिसुमरोसदा॥ सतिसाहिवकानाम॥ २१॥
इतिश्रीविषापहारभाषासंपूर्ण॥ श्री॥ अथपरमजोतिलि
ष्यते॥ दोहा॥ परमजोतिपरमातमा॥ परमज्ञानपरवी
न॥ वंदौपरमानंदमय॥ घटघटअंतरलीन॥ १॥ चौपई॥ निरभैक
रणपरमपरधांन॥ भवसमुद्रजलतारणजांन॥ शिवमंदिरअ
घहरणअनंद॥ वंदौपासचरणअरविंद॥ २॥ कमठमांनभंज
नवरवीर॥ गरमासागरगुणगंभीर॥ सुरगुरपारलहैनहिंज
स॥ मैंअजानजपूंजसतास॥ ३॥ प्रभुसरूपअतिअगमअथा
ह॥ क्योहमसैंयेहोयनिवाह॥ ज्योंदिनअंधउलूकोपूत॥ क
हनसकैरविकिरणउद्योत॥ ४॥ मोहहीनजांणेमनमाहिं॥ त
ऊनतुमगुणवरणेजांहि॥ प्रलयपयोधकरैजलवौन॥ प्रगटै
रतनगिनैतैकोन॥ ५॥ तुमअसंखनिरमलगुणषांनि॥ मैंम
तिहीनकहूंनिजवांन॥ ज्योंबालकनिजवाहपसारि॥ सागरप
रमितकहैविचारि॥ ६॥ जेजोगींद्रकरैतपखेद॥ तेऊनजांणैं
तुमगुणभेद॥ भगतिभावमुझमनअभिलाष॥ ज्योंपंषीबोलै
निजभाष॥ ७॥ तुमजसमहिमाअगमअपार॥ नामएकत्रि
भुवनैंआधार॥ आवैपवनपदमसिरहोयग्रीषमतपतिनि
वारैसोय॥ ८॥ तुमआवतभविजनघटमांहि॥ करमनिवं
धसिथलकैजांहि॥ ज्योंचंदनतरुबोलैंमोर॥ डरैभुयंगलगैंच
हुंवोर॥ ९॥ तुमनिरषतजिनदीनदयासंकटतैंछू
काल॥ ज्योंपशुघेरिलीएनिसिचोर॥ तेतजिभागैदे
रा॥ १०॥ तुमभविजनतारककिमहोय॥ तेचित्तधारितिरै
तोहि॥ यहऐसोकरिजांणिसुभावतिरैमसकज्योंगरभित

वाव॥११॥जिनसवदेवकियेवसिवामतेंछिनमेंजीतेसकुका
मज्योंजलकरैआगनिकुलहानवडवानलपीवैसोपान॥१२
तुमअनंतगरवागुणलिये॥क्योंकरिभक्तिधरौंनिजहिये॥ह्वै
लघुरूपतिरेसंसार॥यहप्रभुमहिमांअगमअपार॥१३॥क्रोधनि
वारिकियोमनसांति॥करमसुभटजीतेकहिंभांति॥यहपटत
रदेष्योसंसार॥नीलवृक्षज्योंदहैतुषार॥१४॥मुनिजनहिये
कमलनिजटोय॥सिद्धरूपसमध्यावैतोय॥कमलकरणका
वननहैंओरकमलवीजउपजनकीगोर॥१५॥जवतुमध्या
नधरैमुनिकोय॥तवविदेहपरमातमहोय॥जैसेंधातुसिल
तनुत्याग॥कनकसरूपधवैजवआग॥१६॥जाकेमनतुम
करोनिवासविनसिजायसवविग्रहतास॥१७॥करैविबुधजेआ
तमध्यांन॥तुमप्रभावतैंहोयनिदांन॥जैसेंनीरसुधाअनुमा
न॥पीवतविषयविकारकीहांन॥१८॥तुमभगवंतविमलगु
णलीन॥समलरूपमानेंमतिहीन॥ज्योंपीलियारोगदृगग
है॥वर्णविवर्णसंषसोंकहै॥१९॥दोहा॥निकटरहितउपदे
शसुनि॥तरवरभयेअसोक॥ज्योंरविऊगतजीवसवप्रग
टहोतभवलोक॥२०॥सुमनवृष्टिजोसुरकरैहेटवीटमुषसो
य॥त्योंतुमसेवतसुमनजन॥वंधअधोमुषहोय॥२१॥उपजीतु
महियउदधितै॥वांणीसुधासमांन॥जहांपीवतभविजनलहै
अजरअमरपदथांन॥२२ करैइसारतिलोककोएसुरचाम
दोयभावसहितजोजननमैंतसुगतिउरधजहोय॥२३॥सिंघा
सनगिरमेरुसमप्रभुधुनगरजितघोर॥स्यामसुतनघनरूपल
षि॥नाचतभविजनमोर॥२४॥छविहितहोयअसोकदल
तुमभामंडलदेषि॥वीतरागकेनिकटतैंरहतनरागविसे
ष॥२५॥सीषकहैतिहुंलोककूं॥एसुरदुंदुभिनाद॥सिवप
सारथवाहजिन॥भजोतजोपरमाद॥२६॥तीनछत्रत्रिभुव
नउदितमुक्तागनछविदेत॥त्रिविधिरूपधरिमनहुंससि
सेवतनषतसमेत॥२७॥पधडीछंद॥प्रभुतुमसरीरति

रनजेम परतापपुंजजे सुधहेम॥ अतिधवलसुजसरूपासमांन॥
तिनकेगह तीनविराजमांन॥२७॥ सेवैसुरिंद करिनिमतभालति
नसीसमुकटतजिदेवमाल॥ तुमचरणलागतलहलहैप्रीति॥ न
हीरमैंअवरजिनसुमंनरीति॥२८॥ प्रभुभोगविमुषतनकमेंदाह
जिनपारकरतभवजलनिवाह॥ ज्यौंमाटीकलससुपक्कहोय॥
लेभारअधोमुखतिरहिसोय॥ तुममहाराजनिरधननिरास
तजिविभोविभोसवजगविकास॥ अक्षरसुभावसौंलिषनकों
य॥ महिमाअनंतभगवंतसोय॥२९॥ कोपियोकमठनिजवैरदे
रदेषि॥ तिनकरीधूलिवरषाविशेष॥ प्रभुतुमछायानभयोहीनसे
नयोपापलंपटमलीन॥३०॥ गरजंतघोरघनअंधकार॥ चमकं
तवीजुजलमुशलधार॥ वरषंतकमठधरध्यांनरूप॥ उलरकं
तनिजनवशमूप॥३१॥ वस्तुछंद॥ मेघमालीमेघमालीआपव
लफेरिभेजेतुरतपिसाच॥ गणनाथपासउपसर्गकारण॥ अग
निज्वालमूकंतमुषधुनिकरतजिममतवारण॥ कालरूपवि
करालतनमुंडमालतिनकंठ॥ व्हैनिसंकआहरंकनिजकरै
करमदिढगांति॥३४॥ चौपई॥ जेतुमचरणकमलतिहुकाल॥
सेवैतजिमायाजंजाल॥ भावभगतिमनहरषिअपार॥ धन्यधन्य
जगतअवतार॥३५॥ भवसागरमैंफिरतअजांन॥ मैंतुमसुजस
सुन्यौनहिकांन॥ जेप्रभुनाममंत्रमनिधरै॥ तासुविपति
भुयंगमडरै॥३६॥ मनवंछितफलजिनपदमांहि॥ मेंपूरवभवपू
जेनांहि॥ मायामगनफिर्‌योअग्यांन॥ करैरंकजनमुझअपमां
न॥३७॥ मोहतिमरछायेदिगमांहि॥ जनमांतरदेष्योनहितोहि॥
ज्यौंदुरजनमुझिसंगतिगहै॥ मरमछेदकेकुवचनकहै॥३८॥
सुन्यौकांनजसपूजेपांय॥ नैननदेष्योरूपअघाय॥ भक्तिहे
तनभयोचितचाव॥ दुषदायककिरियाविनभाव॥३९॥ महारा
जसरणागतिपाल॥ पतितउधारणदीनदयाल॥ सुमरणक
रूंनिवायंनिजसीस॥ मुझदुषहरिकरोजगदीस॥४०॥ करम
निकंदनमहिमासार॥ असरणसरणसुजसविसतार॥ नहि

सेयेप्रभुतुमसेपाय॥ तोमुकज नमस्कारयज्ञाय॥४१॥ सुरगण
वंदितदयानिधांन॥ जगतारणजगपतिजगजांनि॥ दुषसागर
तेंमोहिनिकासि॥ तिरन्नैथानदेकुसुषरासि॥४२॥ मैतुमचरण
कमलगुणगाय॥ बहुविधिभगतिकरीमनलाय॥ जनमजनम
प्रभुपाकलोहि॥ एहसेवाफलदीजेमोहि॥४३॥ छप्पयछंद॥ इ
हविधिश्रीभगवंतसुजसयेभविजनभासहि॥ तेनिजपुन्यभं
डारसंचिचिरपापपणासहि॥ रोमरायहुलसंतअंगअंगप्रभु
कगुनमहि॥ सुर्गसंपदाभुंजिवेगिपंचमगतिपावहि॥ इहकल्या
णमंदिरकियो॥ कुमुदचंदकीबुधि॥ भाषाकहतबणारसी॥ कार
णसमकितसुध॥४४॥ इतिश्रीकल्याणमिंदिरकीभाषासं
पूर्णं॥१॥ अथकल्याणमंदिरसंस्कृतलिष्यते॥ श्री॥ श्री॥:॥
॥अथनिर्वाणकांडगाथालिष्यते॥ अठावयम्मिउसहो॥ चंपाएवास
पुजजिणणाहो॥ उजंतेणेमिजिणो॥ पावाएणिव्वुदोमहावीरो॥१॥ बीसं
तुजिणवरिंदा॥ अमरासुरवंदिदधुदकिलेसा॥ सम्मेदेगिरिसिहरे णि
वाणगयाणमोतेसिं॥२॥ वरदत्तोयवरंगो॥ सायरदत्तोयतारवरणयरे॥
आहुठकोडिसहिया॥ णिव्वाणगयाणमोतेसिं॥३॥ णेमिसामिपज्जु
णो॥ संवुकुमारोतहेवअणिरुद्धो॥ वाहत्तरिकोडीउ॥ उज्जंतेसत्तसया
सिद्धा॥४॥ रामसुयाविणजणा॥ लाडणरिंदाणपंचकोडीउ॥ पावा
एगिरिसिहिरे॥ णिव्वाणगयाणमोतेसिं॥५॥ पंडुसुयातिणजणा॥ दविडण
रिंदाणअठकोडीउ॥ सेतुंजयगिरिसिहिरे॥ णिव्वाणगयाणमोतेसिं॥६॥
संतेजेबलभदा॥ जदवणरिंदाणअठकोडीउ॥ गजपंथेगिरिसिहिरे णि
व्वाणगयाणमोतेसिं॥७॥ रामहणूसुग्गीउ॥ गवगवारकेयणीलमहाणी
लो॥ णवणवदीकोडीउ॥ तुंगियगिरिणिव्वुदेवंदे॥८॥ णंगाणंगकु
मारा॥ कोडीपंचद्धमुणिवरेसहिया॥ सुवणगिरिवरसिहरे॥ णिव्वा
णगयाणमोतेसिं॥९॥ दहमुहरायस्ससुआ॥ कोडीपंचद्धमुणिव
रेसहिया॥ रेवाउहयतडंगो॥ णिव्वाणगयाणमोतेसिं॥१०॥ रेवाणइत
रे पच्छिमभायम्मिसिद्धवरकूडे॥ दोचक्कीदहकप्पे॥ आहुठयकोडि
णिव्वुदेवंदे॥११॥ वडवाणीवरणयरे॥ दक्षिणभायम्मिचूलगिरि

लपूरः कृत्स्नंजगत्त्रयमिदंप्रकटीकरोषि॥गम्योनजातुमरुतांच
लिताचलानांदीपोपरस्त्वमसिनाथजगत्प्रकाशः॥१६॥ना
स्तंकदाचिदुपयासिनराहुगम्यःस्पष्टीकरोषिसहसायुग
पज्जगंति॥नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावःसूर्यातिशायि
महिमासिमुनींद्रलोके॥१७॥नित्योदयंदलितमोहमहांध
कारं॥गम्यंनराहुवदनस्यनवारिदानां॥विभ्राजतेतवमुखा
ब्जमनल्पकांतिविद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं॥१८॥किंश
र्वरीषुशशिनान्हिविवस्वतावायुष्मन्मुखेंदुदलितेषुतम
स्सुनाथ॥निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोकेकार्यंकि
यज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥१९॥ज्ञानंयथात्वयिविभाति
कृतावकाशंनैवंतथाहरिहरादिषुनायकेषु॥तेजोमहामणि
षुयातियथामहत्वंनैवंतुकाचशकलेकिरणाकुलेपि॥२०॥
मन्येवरंहरिहरादयएवदृष्टा॥दृष्टेषुयेषुहृदयंत्वयितोषमे
ति॥किंवीक्षितेनभवताभुवियेननान्यः॥कश्चिन्मनोहरति
नाथभवांतरेपि॥२१॥स्त्रीणांशतानिशतशोजनयंतिपुत्रा
न्नान्यासुतंत्वदुपमंजननीप्रसूता॥सर्वादिशोदधतिभानि
सहस्ररश्मिंप्राच्येवदिग्जनयतिस्फुरदंशुजालं॥२२॥त्वामा
मनंतिमुनयःपरमंपु[illegible]मादित्यवर्णममलंतमसःपुरस्ता
त्॥त्वामेवसम्यगुपलभ्यजयंतिमृत्युंनान्यःशिवःशिवपदस्य
मुनींद्रपंथाः॥२३॥त्वामव्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं॥ब्रह्मा
णमीश्वरमनंतमनंगकेतुं॥योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलंप्रवदंतिसंत॥२४॥बुद्धस्त्वमेवविबुधार्चि
तबुद्धिबोधा॥त्वंशंकरोसिभुवनत्रयशंकरत्वात्॥धातासि
धीरशिवमार्गविधेर्विधाना॥व्यक्तंत्वमेवभगवन्पुरुषो
त्तमोसि॥२५॥तुभ्यंनमस्त्रिभुवनार्तिहरायनाथ॥तुभ्यंनमः
क्षितितलामलभूषणाय॥तुभ्यंनमस्त्रिजगतःपरमेश्वराय
तुभ्यंनमोजिनभवोदधिशोषणाय॥२६॥कोविस्मयोत्रयदि
नामगुणैरशेषैस्त्वंसंश्रितोनिरवकाशतयामुनीशदोषै
रुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैःस्वप्नांतरेपिनकदाचिदपीक्षितोसि॥२

८

स्तोष्येकिलाहमपितंप्रथमंजिनेंद्रं॥२॥युग्मं॥बुद्ध्याविनापिविबुधा
र्चितपादपीठ॥स्तोतुंसमुद्यतमतिर्विगतत्रपोहं॥बालंविहायजल
संस्थितमिंदुविंबमन्यःकइच्छतिजनःसहसाग्रहीतुं॥३॥वक्तुंगुणा
न्गुणसमुद्रशशांककांतान्॥कस्तेक्षमःसुरगुरुप्रतिमोपिबुद्ध्या॥
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं॥कोवातरीतुमलमंबुनिधिंभुजा
भ्यां॥४॥सोहंतथापितवभक्तिवशान्मुनीश॥कर्तुंस्तवंविगतशक्ति
रपिप्रवृत्तः॥प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्यमृगोमृगेंद्रं॥नाभ्येतिकिंनिज
शिशोःपरिपालनार्थं॥५॥अल्पश्रुतंश्रुतवतांपरिहासधामत्व
द्भक्तिरेवमुखरीकुरुतेबलान्मां॥यत्कोकिलःकिलमधौमधुरं
विरौति॥तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतु॥६॥त्वत्संस्तवेनभवसं
ततिसंनिबद्धं॥पापंक्षणात्क्षयमुपैतिशरीरभाजां॥आक्रांतलो
कमलिनीलमशेषमाशु॥सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरमं[illegible]धकारं॥७
मत्वेतिनाथतवसंस्तवनंमयेद॥मारभ्यतेतनुधियापितवप्रभावा
त्॥चेतोहरिष्यतिसतांनलिनीदलेषु॥मुक्ताफलद्युतिमुपैतिननू
दबिंदुः॥८॥आस्तांतवस्तवनमस्तसमस्तदोषं॥त्वत्संकथापिजग
तांदुरितानिहंति॥दूरेसहस्रकिरणःकुरुतेप्रभैव॥पद्माकरेषुज
लजानिविकाशभांजि॥९॥नात्यद्भुतंभुवनभूषणभूतनाथभूतै
र्गुणैर्भुविभवंतमभिष्टुवंतः॥तुल्याभवंतिभवतोननुतेनकिंवाभूत्या
श्रितंयइहनात्मसमंकरोति॥१०॥दृष्ट्वाभवंतमनिमेषविलोकनी
यंनान्यत्रतोषमुपयातिजनस्यचक्षुः॥पीत्वापयःशशिकरद्युतिदु
ग्धसिंधोःक्षारंजलंजलनिधेरसितुंकइच्छेत्॥११॥यैःशांतरागरुचि
भिःपरमाणुभिस्त्वं॥निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत॥तावंतएव
खलुतेप्यणवःपृथिव्यांयत्तेसमानमपरंनहिरूपमस्ति॥१२॥वक्त्रं
क्वतेसुरनरोरगनेत्रहारिनिःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं॥बिं
बंकलंकमलिनंक्वनिशाकरस्ययद्वासरेभवतिपांडुपलाशक
ल्पं॥१३॥संपूर्णमंडलशशांककलाकलापशुभ्रागुणास्त्रिभुवनं
तवलंघयंति॥येसंश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकंकस्तान्निवा
रयतिसंचरतोयथेष्टं॥१४॥चित्रंकिमत्रयदितेत्रिदशांगनाभिर्नी
तंमनागपिमनोनविकारमार्गं॥कल्पांतकालमरुताचलिताचले
न॥किंमंदराद्रिशिखरंचलितंकदाचित्॥१५॥निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततै

लपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि॥ गम्यो न जातु मरुतां च
लिताचलानां दीपोपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः॥१६॥ ना
स्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युग
पज्जगंति॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशायि
महिमासि मुनींद्र लोके॥१७॥ नित्योदयं दलितमोहमहांध
कारं॥ गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां॥ विभ्राजते तव मुखा
ब्जमनल्पकांति विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं॥१८॥ किं श
र्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तम (द)
स्सु नाथ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके कार्यं कि
यज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृ
तावकाशं नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु॥ तेजो महामणि
षु याति यथा महत्वं नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि॥२०॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा॥ दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमे
ति॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः कश्चिन्मनो हरति
नाथ भवांतरेपि॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रा
न् नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥ सर्वा दिशो दधति भानि
सहस्ररश्मिं प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालं॥२२॥ त्वामा
मनंति मुनयः परमं पु[illegible]॥ मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्ता (वीत्र)
त्॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं नान्यः शिवः शिवपदस्य
मुनींद्र पंथाः॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं ब्रह्मा
णमीश्वरमनंतमनंगकेतुं॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चि
तबुद्धिबोधा॥ त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात्॥ धातासि
धीर शिवमार्गविधेर्विधाना॥ व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषो
त्तमोसि॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ॥ तुभ्यं नमः
क्षितितलामलभूषणाय॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय॥२६॥ को विस्मयोत्र यदि
नाम गुणैरशेषैस्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश दोषै
रुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभातिरूपममलंभवतोनितांतं
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं॥बिंबंरवेरिवपयोधरपार्श्वव
र्त्ति॥२८॥सिंहासनेमणिमयूषशिखाविचित्रेविभ्राजतेतववपुःक
नकावदातं॥बिंबंवियद्विलसदंशुलतावितानंतुंगोदयाद्रिशिर
सीवसहस्ररश्मेः॥२९॥कुंदावदातचलचामरचारुशोभंविभ्राजते
तववपुःकलधौतकांतं॥उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चै
स्तटंसुरगिरेरिवशातकौंभं॥३०॥छत्रत्रयंतवविभातिशशांककां
तमुच्चैःस्थितंस्थगितभानुकरप्रतापं॥मुक्ताफलप्रकरजालवि
वृद्धशोभं॥प्रख्यापयत्त्रिजगतःपरमेश्वरत्वं॥३१॥गंभीरताररवपू
रितदिग्विभागस्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः॥सद्धर्म
राजजयघोषणघोषकःसन्॥खेदुंदुभिर्ध्वनतितेयशसःप्रवादी
॥३२॥मंदारसुंदरनमेरुसुपारिजातसंतानकादिकुसुमोत्करवृष्टि
रुद्धा॥गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रपाता॥दिव्यादिवःपततितेव
यसांततिर्वा॥३३॥शुंभत्प्रभावलयभूरिविभाविभोस्ते॥लोक
त्रयेद्युतिमतांद्युतिमाक्षिपंती॥प्रोद्यद्दिवाकरनिरंतरभूरिसंख्या
दीप्त्याजयत्यपिनिशामपिसोमसौम्यां॥३४॥स्वर्गापवर्गगममा
र्गविमार्गणेष्टःसद्धर्मतत्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः॥दिव्यध्वनि
र्भवतितेविशदार्थसर्वभाषास्वभावपरिणामगुणप्रयोज्यः॥३५॥
उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांतीपर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभि
रामौ॥पादौपदानितवयत्रजिनेंद्रधत्तःपद्मानितत्रविबुधाः
परिकल्पयंति॥३६॥इत्थंयथातवविभूतिरभूज्जिनेंद्रधर्मो
पदेशनविधौनतथापरस्य॥ ॥यादृक्प्रभादिनकृतःप्रहतांध
कारा॥तादृक्कुतोग्रहगणस्यविकाशिनोपि॥३७॥श्च्योतन्मदावि
विलोलकपोलमूल॥मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं॥ऐरावताभ
मिभमुद्धतमापतंतंदृष्ट्वाभयंभवतिनोभवदाश्रितानां॥३८॥भि
न्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्तमुक्ताफलप्रकरभूषितभूमि
भागः॥बद्धक्रमःक्रमगतंहरिणाधिपोपि॥नाक्रामतिक्रमयुगा
चलसंश्रितंते॥३९॥कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पंदाव
नलंज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगं॥विश्वंजिघत्सुमिवसंमुखमापतंतं
त्वन्नामकीर्तनजलंशमयत्यशेषं॥४०॥रक्तेक्षणंसमदकोकिलकं
ठनीलं॥क्रोधोद्धतंफणिनमुत्फणमापतंतं॥आक्रामतिक्रमयुगे
ननिरस्तशंकास्त्वन्नामनागदमनीहृदियस्यपुंसः॥४१॥वल्गत्तु
रंगगजगर्जितभीममनादमाजौबलंबलवतामपिभूपतीनां॥उद्यद्दि

वाकरमयूषशिखापविद्धं॥ त्वत्कीर्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति॥४२
कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह॥ वेगावतारतरणातुरयोध-
भीमे॥ युद्धेजयंविजितदुर्जयजेयपक्षास्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
लभंते॥४३॥ अंभोनिधौक्षुभितभीषणनक्रचक्रे॥ पाठीनपीठ
भयदोल्बणवाडवाग्नौ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रास्त्रा
संविहायभवतःस्मरणाद्व्रजंति॥४४॥ उद्भूतभीषणजलोदरभा
रभुग्नाः शोच्यांदशामुपगताश्च्युतजीविताशाः॥ त्वत्पादपंक
जरजोमृतदिग्धदेहामर्त्याभवंतिमकरध्वजतुल्यरूपाः॥४५॥ आ
पादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा॥ गाढंबृहन्निगडकोटिनिघृष्ट
जंघा॥ त्वन्नाममंत्रमनिशंमनुजाःस्मरंतः॥ सद्यःस्वयंविगत
बंधभयाभवंति॥४६॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि॥ संग्रामवारि
धिमहोदरबंधनोत्थं॥ तस्याशुनाशमुपयातिभयंभियेव यस्तावकं
स्तवमिमंमतिमानधीते॥४७॥ स्तोत्रस्रजंतवजिनेंद्रगुणैर्निबद्धां
भक्त्यामयारुचिरवर्णविचित्रपुष्पां॥ धत्तेजनोयइहकंठगताम
जस्रं॥ तंमानतुंगमवशासमुपैतिलक्ष्मी॥४८॥ इतिश्रीमानतुंग
आचार्यविरचितंश्रीभक्तामरस्तोत्रंसंपूर्णं॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
॥ॐ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥ अथदशसूत्रलिख्यते॥ अथस्वाध्याय॥
त्रैकाल्यंद्रव्यषट्कंनवपदसहितंजीवषट्कायलेश्याः॥ पंचान्येचास्ति
काया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः॥ इत्येतन्मोक्षमूलंत्रिभु
वनमहितैःप्रोक्तमर्हद्भिरीशैः॥ प्रत्येतिश्रद्दधातिस्पृशतिचमतिमा
न्यःसवैशुद्धदृष्टिः॥१॥ सिद्धेजयप्पसिद्धेचउव्विहआराहणाफलं
पत्ते॥ वंदित्ताअरहंतेवोच्छंआराहणाकमसो॥२॥ उज्जोवणमु
ज्जवणंणिव्वाहणंसाहणंचणिच्छरणं॥ दंसणणाणचरित्तंतवाणमारा
हणाभणिया॥३॥ इतिस्वाध्यायः॥ मोक्षमार्गस्यनेतारंभेत्तारं
कर्मभूभृतां॥ ज्ञातारंविश्वतत्त्वानां॥ वंदेतद्गुणलब्धये॥१॥ सम्य
ग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः॥१॥ तत्त्वार्थश्रद्धानंस
म्यग्दर्शनं॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा॥३॥ जीवाजीवास्रवबं
धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वं॥४॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्त

तत्त्व पा०
११२

॥३॥६॥प्रमाणनयैरधिगमः॥७॥निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरण
स्थितिविधानतः॥७॥सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्पब
हुत्वैश्च॥८॥मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानिज्ञानं॥९॥त
त्प्रमाणे॥१०॥आद्येपरोक्षं॥११॥प्रत्यक्षमन्यत्॥१२॥मतिस्मृतिसं
ज्ञाचिंताभिनिबोधइत्यनर्थांतरं॥१३॥तदिंद्रियानिंद्रियनिमि
त्तं॥१४॥अवग्रहेहावायधारणा॥१५॥बहुबहुविधक्षिप्रा
निःसृतानुक्तध्रुवाणांसेतराणां॥१६॥अर्थस्य॥१७॥व्यंजनस्यावग्रहः
॥१८॥नचक्षुरनिंद्रियाभ्यां॥१९॥श्रुतंमतिपूर्वंद्व्यनेकद्वादशभेदं
॥२०॥भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणां॥२१॥क्षयोपशमनिमित्तःष
ड्विकल्पःशेषाणां॥२२॥ऋजुविपुलमतीमनःपर्ययः॥२३॥विशुद्ध्यप्र
तिपाताभ्यांतद्विशेषः॥२४॥विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योवधिमनः
पर्ययोः॥२५॥मतिश्रुतयोर्निबंधोद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु॥२६॥
रूपिष्ववधेः॥२७॥तदनंतभागेमनःपर्ययस्य॥२८॥सर्वद्रव्य
पर्यायेषुकेवलस्य॥२९॥एकादीनिभाज्यानियुगपदेकस्मिन्नाच
तुर्भ्यः॥३०॥मतिश्रुतावधयोविपर्ययश्च॥३१॥सदसतोरविशेष
याद्दच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्॥३२॥नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसू
त्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानयाः॥३३॥ज्ञानदर्शनयोस्तत्वंनयं
नांचैवलक्षणं॥ज्ञानस्यचप्रमाणंमध्यायेस्मिन्निरूपितं॥१॥
॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेप्रथमोध्यायः॥१॥औपशमि
कक्षायिकौभावौमिश्रश्चजीवस्यस्वतत्वमौदयिकपारिणामिकौ
च॥१॥द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदायथाक्रमं॥२॥सम्यक्त्वचा
रित्रे॥३॥ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणिच॥४॥ज्ञा
नाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाःसम्यक्त्वचारित्रसं
यमासंयमाश्च॥५॥गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयत
सिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः॥६॥जीवभव्याभ
व्यत्वानिच॥७॥उपयोगोलक्षणं॥८॥सद्विविधोष्टचतुर्भेदः॥९॥
संसारिणोमुक्ताश्च॥१०॥समनस्कामनस्काः॥११॥संसारिणस्त्र
सस्थावराः॥१२॥पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयःस्थावराः॥१३॥
द्वींद्रियादयस्त्रसाः॥१४॥पंचेंद्रियाणि॥१५॥द्विविधानि॥१६॥निर्वृत्यु

पकरणेद्रव्येंद्रियं॥१७॥लब्ध्युपयोगौभावेंद्रियं॥१८॥स्पर्शनरसनघ्राण
चक्षुःश्रोत्राणि॥१९॥स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः॥२०॥श्रुतमनि
न्द्रियस्य॥२१॥वनस्पत्यंतानामेकं॥२२॥कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्या
दीनामेकैकवृद्धानि॥२३॥संज्ञिनःसमनस्काः॥२४॥विग्रहगतौ
कर्मयोगः॥२५॥अनुश्रेणिगतिः॥२६॥अविग्रहाजीवस्य॥२७॥
विग्रहवतीचसंसारिणःप्राक्चतुर्भ्यः॥२८॥एकसमयाविग्रहा॥२९॥
एकंद्वौत्रीन्वानाहारकः॥३०॥सम्मूर्छनगर्भोपपादाज्जन्म॥३१॥
सचित्तशीतसंवृताःसेतरामिश्राश्चैकशस्तद्योनयः॥३२॥जरायु
जांडजपोतानांगर्भः॥३३॥देवनारकाणामुपपादः॥३४॥शेषा
णांसम्मूर्छनं॥३५॥औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणा
निशरीराणि॥३६॥परंपरंसूक्ष्मं॥३७॥प्रदेशतोसंख्येयगुणंप्राक्तै
जसात्॥३८॥अनंतगुणेपरे॥३९॥अप्रतीघाते॥४०॥अनादि
संबंधेच॥४१॥सर्वस्य॥४२॥तदादीनिभाज्यानियुगपदेक(स्मिन्ना) चतु
र्भ्यः॥४३॥निरुपभोगमंत्यं॥४४॥गर्भसम्मूर्छनजमाद्यं॥४५॥उप
पादिकंवैक्रियिकं॥४६॥लब्धिप्रत्ययंच॥४७॥तैजसमपि॥४८॥शु
भंविशुद्धमव्याघातिचाहारकंप्रमत्तसंयतस्यैव॥४९॥नारक
सम्मूर्छिनोनपुंसकानि॥५०॥नदेवाः॥५१॥शेषास्त्रिवेदाः॥५२॥औ
पपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोनपवर्त्यायुषः॥५
३॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेद्वितीयोध्यायः॥२॥रत्नश
र्कराबालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयोघनांबुवाताकाश
प्रतिष्ठाःसप्ताधोधः॥१॥तासुत्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रि
पंचोनैकनरकशतसहस्राणिपंचचैवयथाक्रमं॥२॥नारकानि
त्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः॥३॥परस्परोदीरित
दुःखाः॥४॥संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्चप्राक्चतुर्थ्याः॥५॥तेष्वे
कत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमासत्वा
नांपरास्थितिः॥६॥जंबूद्वीपलवणोदादयःशुभनामानोद्वीपस
मुद्राः॥७॥द्विर्द्विर्विष्कंभाःपूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवलयाकृतयः॥८॥
तन्मध्येमेरुनाभिर्वृत्तोयोजनशतसहस्रविष्कंभोजंबूद्वीपः॥९॥
भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाःक्षेत्राणि

१०।तद्विभाजनःपूर्व्वापरायताहिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मि
शिखरिणोवर्षधरपर्वताः।।११।।हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरज
तहेममयाः।।१२।।मणिविचित्रपार्श्वाःउपरिमूलेचतुल्यविस्ता
राः।।१३।।पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकाह्र
दास्तेषामुपरि।।१४।।प्रथमोयोजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कं
भोह्रदः।।१५।।दशयोजनावगाहः।।१६।। तन्मध्येयोजनंपुष्करं।१७
तद्द्विगुणद्विगुणाह्रदाःपुष्कराणिच।।१८।।तन्निवासिन्योदे
व्यःश्रीह्रीधृतिकीर्त्तिबुद्धिलक्ष्म्यःपल्योपमस्थितयःससामा
निकपरिषत्काः।।१९।।गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरि
कान्तासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तो
दाःसरितस्तन्मध्यगाः।।२०।।द्वयोर्द्वयोःपूर्वाःपूर्वगाः।।२१।।शे
षास्त्वपरगाः।।२२।। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृतागंगासिंध्वाद
योनद्यः।।२३।।भरतःषड्विंशतिपंचयोजनशतविस्तारःषट्चैको
नविंशतिभागायोजनस्य।।२४।।तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारावर्षध
रवर्षाविदेहांताः।।२५।।उत्तरादक्षिणतुल्याः।।२६।।भरतैराव
तयोर्वृद्धिह्रासौषट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्यां।।२७
ताभ्यामपराभूमयोवस्थिताः।।२८।।एकद्वित्रिपल्योपमस्थित
योहैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः।।२९।।तथोत्तराः।।३०।।
विदेहेषुसंख्येयकालाः।।३१।।भरतस्यविष्कंभोजंबूद्वीपस्यनवति
शतभागः।।३२।।द्विर्धातकीखंडे।।३३।।पुष्करार्द्धेच।।३४।।प्राग्मा
नुषोत्तरान्मनुष्याः।।३५।।आर्याम्लेच्छाश्च।।३६।।भरतैरावतवि
देहाःकर्मभूमयोन्यत्रदेवकुरूत्तरकुरुभ्यः।।३७।।नृस्थितीपरावरेत्रिप
ल्योपमांतर्मुहूर्ते।।३८।।तिर्यग्योनिजानांच।।३९।।इतितत्त्
वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेतृतीयोध्यायः।।३।।देवाश्चतुर्णि
कायाः।।१।।आदितस्त्रिषुपीतान्तलेश्याः।।२।।दशाष्टपंचद्वादशविक
ल्पाःकल्पोपपन्नपर्यंताः।।३।।इंद्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिष
दात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चै
कशः।।४।।त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्याव्यंतरज्योतिष्काः।।५।।पूर्व
योर्द्वीन्द्राः।।६।।कायप्रवीचाराआऐशानात्।।७।।शेषाःस्पर्शरूप

शब्दमनःप्रवीचाराः॥८॥परेप्रवीचाराः॥९॥भवनवासिनोसुरनाग
विद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः॥१०॥व्यंतराःकिं
नरकिंपुरुषमहोरगगांधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः॥११॥ज्योतिष्काः
सूर्याचंद्रमसौग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च॥१२॥मेरुप्रदक्षिणा
नित्यगतयोनृलोके॥१३॥तत्कृतःकालविभागः॥१४॥बहिरवस्थि
ताः॥१५॥वैमानिकाः॥१६॥कल्पोपपन्नाःकल्पातीताश्च॥१७॥उ
पर्युपरि॥१८॥सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांत
वकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरार
णाच्युतयोर्नवसुग्रैवेयकेषुविजयवैजयंतजयंतापराजितेषुस
र्वार्थसिद्धौच॥१९॥स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धींद्रिया
वधिविषयतोधिकाः॥२०॥गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतोहीन
२१॥पीतपद्मशुक्ललेश्याद्वित्रिशेषेषु॥२२॥प्राग्ग्रैवेयकेभ्यःक
ल्पाः॥२३॥ब्रह्मलोकालयालौकांतिकाः॥२४॥सारस्वतादित्यव
ह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च॥२५॥विजयादिषुद्वि
चरमाः॥२६॥औपपादिकमनुष्येभ्यःशेषास्तिर्यग्योनयः॥२७॥स्थि
तिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणांसागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमि
ताः॥२८॥सौधर्मैशानयोःसागरोपमेधिके॥२९॥सानत्कुमारमा
हेंद्रयोःसप्त॥३०॥त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधि
कानितु॥३१॥आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेननवसुग्रैवेयकेषुविज
यादिषुसर्वार्थसिद्धौच॥३२॥अपरापल्योपममधिकं॥३३॥पर
तःपरतःपूर्वापूर्वानंतराः॥३४॥नारकाणांचद्वितीयादिषु॥
दशवर्षसहस्राणिप्रथमायां॥३६॥भवनेषुच॥३७॥व्यंतराणां
च॥३८॥परापल्योपममधिकं॥४०॥ज्योतिष्काणांच॥४१॥तदष्टभा
गोपरा॥४२॥लौकांतिकानामष्टौसागरोपमाणिसर्वेषां॥४३॥
॥इतितत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेचतुर्थोध्यायः॥४॥अजी
वकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः॥१॥द्रव्याणि॥२॥जीवाश्च॥३॥नि
त्यावस्थितान्यरूपाणि॥४॥रूपिणःपुद्गलाः॥५॥आआकाशादेक
द्रव्याणि॥६॥निःक्रियाणिच॥७॥असंख्येयाःप्रदेशाधर्माधर्मैकजी
वानां॥८॥आकाशस्यानंताः॥९॥संख्येयासंख्येयाश्चपुद्गलानां॥१०॥

शास्त्रपा
११५

नाणोः॥११॥लोकाकाशेवगाहः॥१२॥धर्माधर्मयोःकृत्स्ने॥१३॥एक
प्रदेशादिषुभाज्यःपुद्गलानां॥१४॥असंख्येयभागादिषुजीवा
नां॥१५॥प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यांप्रदीपवत्॥१६॥गतिस्थित्युपग्र
हौधर्माधर्मयोरुपकारः॥१७॥आकाशस्यावगाहः॥१८॥शरीर
वाङ्मनःप्राणापानाःपुद्गलानां॥१९॥सुखदुःखजीवितमर
णोपग्रहाश्च॥२०॥परस्परोपग्रहोजीवानां॥२१॥वर्त्तनापरिण
मक्रियापरत्वापरत्वेचकालस्य॥२२॥स्पर्शरसगंधवर्णवंतपु
द्गलाः॥२३॥शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायात
पोद्योतवंतश्च॥२४॥अणवःस्कंधाश्च॥२५॥भेदसंघातेभ्यःउत्पद्यंते॥२६
भेदादणुः॥२७॥भेदसंघाताभ्यांचाक्षुषः॥२८॥सद्द्रव्यलक्षणं॥२९॥उ
त्पादव्ययध्रौव्ययुक्तंसत्॥३०॥तद्भावाव्ययंनित्यं॥३१॥अर्पितान
र्पितसिद्धेः॥३२॥स्निग्धरूक्षत्वाद्बंधः॥३३॥नजघन्यगुणानां॥३४
गुणसाम्येसदृशानां॥३५॥द्व्यधिकादिगुणानांतु॥३६॥बंधेधिकौ
पारिणामिकौच॥३७॥गुणपर्ययवद्द्रव्यं॥३८॥कालश्च॥३९॥सोनं
तसमयः॥४०॥द्रव्याश्रयानिर्गुणागुणाः॥४१॥तद्भावःपरिणामः
॥४२॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेपंचमोध्यायः॥५॥ छ॥
कायवाङ्मनःकर्मयोगः॥१॥सआस्रवः॥२॥शुभःपुण्यस्याशुभःपा
पस्य॥३॥सकषायाकषाययोःसांपरायिकेर्यापथयोः॥४॥इंद्रिय
कषायाव्रतक्रियाःपंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याःपूर्वस्यभेदा
ः॥५॥तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशे
षः॥६॥अधिकरणंजीवाजीवाः॥७॥आद्यंसंरंभसमारंभारंभयो
गकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः
॥८॥निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्द्वित्रिभेदाःपरं॥९॥त
त्प्रदोषनिह्नवमात्स
रायो॥१०॥दुःखशोकतापाक्रंदन
यस्थानान्यसद्वेद्यस्य॥११॥भूतव्रत्यनुकंपादानसरागसंय
दियोगःक्षांतिशौचमितिसद्वेद्यस्य॥१२॥केव
देवावर्णवादोदर्शनमोहस्य॥१३॥
चारित्रमोहस्य॥१४॥बह्वारंभपरिग्रहत्वंनारकस्यायुषः

मायातैर्यग्योनस्य॥१६॥अल्पारंभपरिग्रहत्वंमानुषस्य॥१७॥स्वभाव
मार्दवंच॥१८॥निःशीलव्रतत्वंचसर्वेषां॥१९॥सरागसंयमासंयम
कामनिर्जराबालतपांसिदैवस्य॥२०॥सम्यक्त्वंच॥२१॥योगवक्रता
विसंवादनंच॥२२॥अशुभस्यनाम्नः॥तद्विपरीतंशुभस्य॥२३॥दर्शन
विशुद्धिर्विनयसंपन्नताशीलव्रतेष्वनतीचारोभीक्ष्णज्ञानोपयो
गसंवेगौशक्तितस्त्यागतपसीसाधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणम
र्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्ग
प्रभावनाप्रवचनवत्सलत्वमितितीर्थकरत्वस्य॥२४॥परात्मनि
दाप्रशंसेसदसद्गुणोच्छादनोद्भावनेचनीचैर्गोत्रस्य॥२५॥तद्विप
र्ययोनीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौचोत्तरस्य॥२६॥विघ्नकरणमंतरायस्य॥२७
इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेषष्ठोध्यायः॥६॥हिंसानृतस्ते
याब्रह्मपरिग्रहेभ्योविरतिर्व्रतं॥१॥देशसर्वतोणुमहती॥२॥तत्स्थै
र्यार्थंभावनाःपंचपंच॥३॥वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमि
त्यालोकितपानभोजनानिपंच॥४॥क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्र
त्याख्यानान्यनुवीचीभाषणंचपंच॥५॥शून्यागारविमोचिताव
सपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसंवादाःपंच॥६॥स्त्री
रागकथाश्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरण
वृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाःपंच॥७॥मनोज्ञामनोज्ञेंद्रिय
विषयरागद्वेषवर्जनानिपंच॥८॥हिंसादिष्विहामुत्रापायाव
द्यदर्शनं॥९॥दुःखमेवा॥१०॥मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि
चसत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु॥११॥जगत्कायस्वभावौ
वासंवेगवैराग्यार्थं॥१२॥प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणंहिंसा॥१३
असदभिधानमनृतं॥१४॥अदत्तादानंस्तेयं॥१५॥मैथुनमब्रह्म
१६॥मूर्छापरिग्रहः॥१७॥निःशल्योव्रती॥१८॥अगार्यनगारश्च
१९॥ अणुव्रतोगारी॥२०॥दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायि
कप्रोषधोपवासोपभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसंप
न्नश्च॥२१॥मारणांतिकींसल्लेखनांजोषिता॥२२॥शंकाकांक्षा
विचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः॥सम्यग्दृष्टेरतीचाराः॥२३
व्रतशीलेषुपंचपंचयथाक्रमं॥२४॥बंधवधच्छेदातिभारारोप

णान्नपाननिरोधाः ॥२५॥ मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटले
खक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः ॥२६॥ स्तेनप्रयोगतदा
हृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूप
कव्यवहाराः ॥२७॥ परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताअ
परिगृहीतागमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥ क्षे
त्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्र
माः ॥२९॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्य्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यंतराधाना
नि ॥३०॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥३१॥ कं
दर्पकौत्कुच्यमौखर्य्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थ
क्यानि ॥३२॥ योगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३३॥
अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादर
स्मृत्यनुपस्थानानि ॥३४॥ सचित्तसंबंधसन्मिश्राभिषवदुः
पक्वाहाराः ॥३५॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशकरण
मात्सर्य्यकालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुरा
गसुखानुबंधनिदानानि ॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दा
नं ॥३८॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥ इति
तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥ मिथ्याद
र्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जी
वः कर्म्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बंधः ॥२॥ प्रकृतिस्थित्यनु
भागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनी
यमोहनीयायुर्नामगोत्रांतरायाः ॥४॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशति
चतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमं ॥५॥ मतिश्रुतावधि
मनःपर्ययकेवलानां ॥६॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां नि
द्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ स
दसद्वेद्ये ॥८॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेद
नीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः ॥ सम्यक्त्वमि
थ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगु
प्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः ॥ अनंतानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान
संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥ नारक

नैर्ग्योनिमानुषदैवानि॥१०॥ गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माण
वंधणसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शगंधवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूप
घातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः॥ प्रत्येकशरीरत्र-
सशुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशस्कीर्त्तिसेतरा
णि तीर्थकरत्वंच॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च॥१२॥ दानलाभभोगोपभोग
वीर्याणां॥१३॥ आदितस्तिसृणामंतरायस्यचत्रिंशत्सागरोप
मकोटीकोट्यः परास्थितिः॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य॥१५॥ विंश
तिर्नामगोत्रयोः॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः॥१७॥
अपराद्वादशमुहूर्त्तावेदनीयस्य॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ॥१९॥
शेषाणामंतर्मुहूर्त्ता॥२०॥ विपाकोनुभवः॥२१॥ सयथानामः
॥२२॥ ततश्चनिर्ज्जरा॥२३॥ नामप्रत्ययाःसर्वतोयोगविशेषात्सू
क्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः॥२४॥ सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंतप्रदे
शाः॥२५॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणिपुण्यं॥२६॥ अतोन्यत
पापं॥२७॥ इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेऽष्टमोध्यायः॥८॥
॥ आस्रवनिरोधःसंवरः॥१॥ सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषह
जयचारित्रैः॥२॥ तपसानिर्ज्जराच॥३॥ सम्यग्योगनिग्रहोगुप्तिः
॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाःसमितयः॥५॥ उत्तमक्षम
मार्द्दवार्ज्जवसत्यशौचसंवरनिर्ज्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्व
ख्यातत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षा॥७॥ मार्ग्गाच्यवननिर्ज्जरार्थंपरि
षोढव्याःपरीषहाः॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्य
अरतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनालाभरोगतृ
णस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि॥९॥ सूक्ष्
मसांपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्द्दश॥१०॥ एकादशजिने
॥११॥ बादरसांपरायेसर्वे॥१२॥ ज्ञानावरणेप्रज्ञाज्ञाने॥१३॥ दर्श
नमोहांतराययोरदर्शनालाभौ॥१४॥ चारित्रमोहेनाग्न्यारतिस्त्री
निषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः॥१५॥ वेदनीयेशेषाः॥
१६॥ एकादयोभाज्यायुगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतिः॥१७॥ सा
मायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथा

ख्यातमिति चारित्रं॥१८॥अनसनावमोदर्य्यवृत्तिपरिसंख्यार
सपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशावाह्यंतपः॥१९॥
प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं॥२०॥
नवचतुर्दशपंचद्विभेदायथाक्रमंप्राग्ध्यानात्॥२१॥आलो
चनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारो
पस्थापनाः॥२२॥ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः॥२३॥आचार्योपा
ध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां॥२
४॥वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्म्मोपदेशाः॥२५॥वाह्याभ्य
तरोपध्योः॥२६॥उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधोध्यांन
मांतर्मुहूर्त्तात्॥२७॥आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लानि॥२८॥परेमोक्ष
हेतु॥२९॥आर्त्तममनोज्ञस्यसंप्रयोगेतद्विप्रयोगायस्मृतिस
मन्वाहारः॥३०॥विपरीतंमनोज्ञस्य॥३१॥वेदनायाश्च॥३२॥
निदानंच॥३४॥तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां॥३५॥हिं
सानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्योरौद्रमविरतिदेशविरतयोः॥३६॥
आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयायधर्म्म॥३७॥शुक्लेचाद्येपू
र्वविदः॥३८॥परेकेवलिनः॥३९॥पृथक्त्वैकत्ववितर्क्कविचार
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्त्तीनी॥४०॥त्र्येकयोग
काययोगयोगानां॥४१॥एकाश्रयेसवितर्क्कवीचारेपूर्वे॥४२॥अवी
चारंद्वितीयंवितर्क्कश्रुतं॥४३॥विचारोर्थव्यंजनयोगसंक्रां
तिः॥४४॥सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्ष
पकोपशांतमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाःक्रमशोसंख्येयगुण
निर्ज्जराः॥४५॥पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकानिग्रंथ
थाः॥इतितत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेनवमोध्यायः॥९॥मोह
क्षयाद्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्चकेवलं॥१॥वंधहेत्वभावनि
र्ज्जराभ्यांकृत्स्नकर्म्मविप्रमोक्षोमोक्षः॥२॥औपशमिकादिभ
व्यत्वानांच॥३॥अन्यत्रकेवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वे
भ्यः॥४॥तदनंतरमूर्ध्वंगच्छत्यालोकांतात्॥पूर्वप्रयोगादसंगत्वा
द्बंधच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च॥६॥आविद्धकुलालचक्रव
द्व्यपगतलेपालांववदेरंडवीजवदग्निशिखावच्च॥७॥धर्म्मास्तिका

॥:॥ अथ नवग्रह पूजन लिखिते ॥ श्लोक ॥ प्रणमाद्यंत-
तीर्थेशं धर्मतीर्थप्रवर्तकं ॥ भव्यविघ्नोपशांत्यर्थं ग्रहार्चा व-
र्णते मया ॥१॥ मार्तंड इंदु कुज्ज: सौम्य: सूरि शुक्र कर्तांतक
:राहुश्च केतु संयुक्ता ग्रहशांति करा नव: ॥ दोहा ॥ आदि
अंत जिनवर नमूं ॥ धर्म प्रकाशन हार ॥ भव्य विघ्न उपशां-
ति कौं ॥ ग्रहपूजा चित धार ॥१॥ काल दोष परभाव सौं ॥ वि-
कल्प छूटै नांहि ॥ जिनपूजा मैं ग्रहन की ॥ पूजा मिथ्या नां-
हि ॥२॥ इस ही जंबूद्वीप मैं ॥ रवि शशि मिथुन प्रमांन ॥ ग्रहन-
क्षत्र तारा सहित ॥ जोतिक चक्र प्रमांन ॥३॥ तिनही के अनु-
सार सैं ॥ कर्म चक्र की चाल ॥ सुख दुख जानैं जीव कौं ॥ जिन
वच नेत्र विशाल ॥४॥ ज्ञान प्रश्न व्याकर्ण मैं ॥ प्रश्न अंग हैं
आठ ॥ भद्रबाहु मुख जनित जो ॥ सुनंत कीयो मुख पाठ
॥५॥ अवधिधार मुनिराज जी कहैं पूर्वकृत कर्म उनही-
वच अनुसार सौं ॥ हरि हृदय का भर्म ॥६॥ सोरठा ॥ पूज्यौं व-
सु जिनंद ॥ गोचर लगन विषैं यदा ॥ सूर्य करैं दुख दंद सु-
ख होवैं सब जीव कौं ॥७॥ अडिल्ल ॥ पंच कल्यांनक सहि-
त पांन पंचम लहैं ॥ समोसरण सुख साधि मुक्ति मांही
वसैं ॥ आह्वानन करि तिष्ठ संनिधि कीजिये ॥ सूर्य ग्रह
के स्हांति जगत सुख लीजिये ॥८॥ ॐ ह्रीं श्री सूर्य मांलि-
क्यालमति ग्रहशांति निमत्तये ॥ अत्र अवतर अवतर सं-
वौषट् ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: संनिधापनं ॥ अत्र मम
संनिहितो भव भव वषट् संन्निधापनं ॥ छंद त्रिभंगी ॥
सोनें की झारी सब सुखकारी छीरोदधि जल भरि ल-
आं ॥ भवताप मिटारी त्रखा नसाई धारा जिनचरनन
दीजे ॥ पद्मप्रभु स्वांमी शिवमग गांमी भवि कमोरस्हे नै-
गूंजत हैं ॥ दिनकर दुष नाशी ॥ पापन साशी सब सुष दाई
पूजत हैं ॥ ॐ ह्रीं सूर्यारिष्ट निवारकाय पद्मप्रभु जिनें-
द्राय ॥ जलं ॥१॥ मलयागिर चंदन दाह निकंदन जिनपद

वंदनसुषकारी॥ॐकमजुतलीजेचरननकीजेतापहरी
ॐडषदारी॥पदमप्र०॥दिनकर०॥ॐह्रीं०॥चंदनं॥४॥तंडुल
गुनमंडितसोरनिअषंडितपूजितपंडितहितकारी०
अक्षयपदपावेंअधितचढावेंगावेंगुनसिवसुखकार
पदमप्रभुस्वामीसिवसुखगामीनविकमोरसुंमिकूजत
हैं॥दिनकरडषजारी॥पापनसाडीसवसुषदारीपूजतहैं
ॐह्रीं॥सू०॥अक्षतं॥५॥मचकुंदमगावोकमलचंदाकें
वकुलवेलिईसचिनहारी॥मंदारलेआवेमदननसावे
सिवसुषपावेहितकारी॥पदम०दिनकर०॥ॐह्रीं पुष्पं
६॥ग्रोघृतलेघरियेषाजेकरियेंनरियेहाटकमयथारी
व्यंजनवजलीजेंपूजाकीजेंदोषषुधादिकअघहारी
पदमप्रभुस्वामीसिवमगगामीनविकमोरसुनिकूज
तहैं॥दिनकरडषजारीपापनसाडीसवसुषदारीपू
जतहैं॥ॐह्रींसूर्य०॥नैवेद्यं॥७॥मणिदीपकलीजेघीव
नरिजेकीजेघनसारकीवाती॥जगजोतिजगामगल
गमगजगममोहतिमरकोहैंघाती पदम०॥दिन०॥ॐ
ह्रींसूर्य॥दीपं॥८॥कालागुरुकपंअघिकअनूपे
निर्मलरूपेघनसारं॥षेवोप्रभुआगेंपातिकभागेंजा
गेंगुनडरवमवहारं॥पद्मप्र०स्वामीसिवमगगामन
नविकमोरसुनिकुंजतहैं॥दिनकरडषजारीपापन
साडीसवसुषदारीपूजतहैं॥ॐह्रींसू०॥धूपं॥९॥श्री
फललैंआवोसेवचढावोंअवअमृतफलआदिवरं
वांछितफलपावोंजिनगुनगावोंडषदारीसवकर्महरं
पदमप्र०॥दिनक०॥ॐह्रींसू०॥फलं॥१०॥जलचंदनला
यासुमनसुहायातंडुलमुक्तासमकहिये॥चरुदीपकल
नेधूपषेवीजेफललेंवसुक्रमनेंदहिये॥पदमप्र०॥दि
नकर०॥ॐह्रींसू०॥अर्घं॥११॥अडिल्ल॥सलिलगंधलेफू
लसुगंधितलीजिये तंडुललेचरुदीपकधूपषेवीजियें॥

फललेअर्घवनायपदमप्रभुपूजियें॥कमलमोहकौ।
दोषवुरत्तहीपुजियें॥पूर्णार्घं॥२०॥अथजयमालालिष्यते॥
जेहैंसुषकारीसवदुषहारीमारीरोगादिकहरनें॥इंद्रादि
कआवें॥प्रभुगुनगावेंमंदिरगिरमंजनकरनें॥नृपसा
दिकसाजेंइंद्रनीवाजैंतीनलोकसेवतचरणं॥पदम
प्रभुपूजतपातिकधूजतनवनवनविमांगतसरणं॥
१॥पद्धडीछंद॥जयपदमप्रभूपूजाकराय॥सूरज
ग्रहदुषनतुरतजाय॥नोजोजनसमोसरणविषानं॰
घंटाकाहरिमोनेंवितान॥१॥सतइंद्रनमतजिसचर
नआय॥दससमसगणधरसौंनाघराय॥वांनीघनघो
रघटाजुघोर॥घतसवदसुनतनवितचहंमोर॥२॥भा
मंडलसोनालषतनूर॥इंद्रादिककोटिकलजतसूर
तहांछत्रअसोकमहानतंग॥सवजीवनसोकहरेंअ
नंग॥३॥सुमनादिकसुरवर्षाकराय॥वेदोगचमरचोस
ठिढुराय॥सिंघासनतीनत्रिलोकईस॥त्रयछत्रफिरे
नगजडितसीस॥४॥मणिमईअवनिमुकुरंदसार॥त्र
यधुलिसालसुंदरअपार॥कल्याणकपांचूंसुषनिधे
न॥पंचमगतिदाताहेसुजान॥५॥साढेवारहकोडीजुस
र॥वाजाविनषेदवजेअपार॥धरनेंद्रनरेंद्रसुरेंद्रईस त्र
यलोकनमतकरधारसीस॥६॥मुनमुकरमावरनस
सकार॥दोनेंहाथजोरकरवारवार॥जाकेपदनमत
आनंदहोत॥इतिआगेदिनकरछिपतजोति॥७॥मन
सुद्धसमुद्रहृदयविचार॥सुषदातासवतनकोंअपार
मनवचतनचितपूजानिहार॥कीजेंसुषदायकजगत
सार॥८॥घत्ता॥सवजनहितकारीसुषअतिभारीमारी
रोगादिकहरणं॥पापादिकटारेंग्रहनिवारेंनविजीवसु
वसुषकरणं॥ईसासीवादि॥अथचंद्रारिशनिवारकचं
द्रप्रभुपूजालिख्यते॥सोरठा॥निसपतिपीडावानि॥गोच

रलगनविषेंजेवैवसुंविधिचउरसुजांन॥चंद्रप्रभूपूजाक
रों॥४॥अडिल्ल॥चंद्रपुरीकेंवीचिचंद्रप्रभुअवतरे॥लछिनसो
हैंचंदसवतनकोमनहरैं॥नविजीवसुषकारदविश्वधरस
हों॥सोमदोषकेहेतधापमोकरतहों॥ॐह्रींश्रीचंद्रारिष्ट
निवारणायअत्रावतरावतरसंवौषट्॥कंचनझारीजटित॥
जडाउछीरोदकभरलिनहिचढाउ॥जगतगुरुहों॥जैजै
नाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभपूजोंमनलाय॥सोमदोष॥
तातैमिटजाय॥जगतगुरु०॥१॥ॐह्रींश्रीचंद्रारिष्टनिवा
रकचंद्रप्रभुजिनेंद्राय॥जलं॥मलयागिरकेसरघनस॥
रचरचितजिनमवतापनिवार॥जगतगुरुहो॥जैजैना
थ०॥२॥चंदनं॥कमलउंदकेतकीअनंग॥कलसतरु
जसवहरैंअनंग॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथ०॥पुष्पं॥अ॥
खंडरहितसअछतसमसिरूप॥पुंजचढायहोयशिवा॥
रूप॥जगतगुरुहोजैजैनाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभु
पूजोंमनलाय॥सोमदोषतातैमिटजायजगतगुरु
हो॥३॥अछतं॥घेवरबावरमोदकलेउं॥दोषछुधाहर
थालभरेउं॥जगतगुरुहोजैजैनाथजगतगुरुहो०॥
नैवेद्यं॥मणिमयदीपकघृतभरेउं॥बातीवरतमु
तिमरहरेउं॥जगतगुरुहो०॥६॥दीपं॥कालागुरकी
कणीधीधाय॥वसुंविधिकर्मजुंतुरतनशाय॥जगत
गुरुहो०॥धूपं॥श्रीफलअंवसदाफलसेतेथोचमो
चअंमृतफललेउंजगतगुरुहो॥फलं॥जलगंध
पुष्पमालिनैवेद्य॥दीपधूपफलअर्घअनिंद्य॥जग
तगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभुपूजोंमन
लाय॥सोमदोषतातैमिटिजाय॥जगतगुरुहो०॥अ
र्घं॥९॥जलचंदनवरफूलजुतेउललीजियें॥उग्घ
सर्करासहितसुंव्यंजनकीजियें॥दीपधूपफलअर्घ
बनायधरीजियें॥जउउषपूजें॥सोमजिनेंद्रहरीजिये

९॥पूर्णार्घं॥ अथ जयमाला॥ चंद्रप्रभु चरनें सब सुष भरनें क
रनें आनंद हित अतुलं॥ दुष दंद जहरनें भवजल तरनें मन
हुमरं सुलकर विपुलं॥१॥ मन भ्रमन कृदयं मिथ्या तत तम
नाशक॥ केवलज्ञान सूर्य प्रतिभासक॥ चंद्रप्रभुवर मन
हरन सब सुष करं॥ जाकि तीन्हूं तग्रह सोमंडप सब हरं॥२॥
वर्द्धनं चंद्रमां धर्म जलनिधि महा जगत सुषकार सिवमा
र्ग प्रभुन ग्रह्या॥ चंद्रप्रभ चरन मन हरन सब०॥३॥ पांनगं
नी अतिधीर वरवीर हैं॥ तीन हूं लोक सब जगत के नी
र हैं॥ चंद्रप्रभन०॥४॥ विकट कंदर्प को दर्प छिन में हरा क
र्म वसु पाप सब आपही तें कह्या॥ चंद्रप्रभ०॥५॥ सोमपुर
नगर में जनम प्रभु नें लह्या॥ क्रोध छल लोभ मद मोन मा
या दह्या॥ चंद्रप्रभ चरन मन हरन सब सुष करं॥ जांकि ती
न्हू तग्रह सोमंडप सब हरं॥५॥ देह जिनराज की सर्वशोभा
धरे॥ स्फटिक मणि कांति तिहि देषि लज्या करे॥ हो चंद्र आ
व औरा कहजार लक्षन महा दाहिनें॥ चरन कोनि साप ते
ग हरह्या॥ चंद्रप्रभ०॥७॥ कहत मन सुष जलधि चंद्रप्रभु
जिये॥ सोमंडव तासि कें जगत नय पूजिये॥ चंद्रप्रभ० दे
षा॥ पाप ताप कें॥ हरन कों धर्म मिसतर स पूर॥ चंद्रप्रभु जि
न पूजिये॥ होय जआनंद पूर॥ ६॥ इति चंद्रप्रभ पूजा॥ अ
थ नेमी रिष्ट निर्वारक वासुपूज्य पूजा॥ दोहा॥ वासपू
ज्य पूजन चरन॥ मूसुत दोषफ नाय॥ तातें नवि पूजा क
रो॥ मन में अति हरषाय॥१॥ अडिल्ल वासवजा के जनम
समय हरषाईये॥ आयो गज लें साजि महा सुष पाईये
ले मंदिरगिर जाय सु न्हवण कराईकैं॥ सो त्यो माता गे
ह सुतां व धराय कें॥ तें ज्यों नेमारिष्ट निवारक वासपू
जि जिनें ज्ञाय॥ अत्रावतर०॥ अत्र तिष्ठ०॥ अत्र मम०॥२॥
स्थापनं गीता छंद॥ कनक झारी अधिक उत्तिम रतन
जटित सुं लीजिये॥ परम उह को जल सुगंधित धार चरन

नदीजिये।घृतनय०उपदरितामेहरषहिरदेंधारिकें।वास
पूजिजिनेंद्रपूजोंसकलआरतहारिकें।ॐह्रीं नोमारिशुनि
वारकवासपूज्यजिनेंद्राय।।जलं।१।श्रीखंडमलयजुमहा
सीतलसुरभिचंदकपसिधरों।जिनचरनचरचोंनविक
हितसोंपापतापसबेंहरों।।नूतनय०।वास०ॐह्रीं चंदनं
२।।अवखंडखंडितसुरभिमंडितथालभरिकरमेंगहों
अछितपुंजदिवायजिनपदअषयपदसहजेंलहों०
नूतनय०।।वास०।नैं।।अछितं०।कमलकुंदगुलावबे
यापारजातिकअतिघनेंपुष्पपूजितचरनप्रभुकेकुसु
मसरतवहीहनेंनूतनयदूषदरितासेंहारषहिरदेंधा
रिहकें।वासुपूज्यजिनेंदपूजोंसकलआरितहारिकेंघ
पुष्पं।गोसर्प्पेसद्यमगायनविजनउग्धामिश्रितशर्करा
चरुचारुलेकरिजजोंजिनपदक्षुधावेदनसवहरा नू
तनय०।५।नैवेद्यं।मणिजडितचंदनदीपसुंदरसद्य
घृतनामेंनरोंतद्योतकरिजिनवरनआगेंहृदयमिथ्या
तमहरों।नूतनय०।६।दीपं।।कालाअगरघनसारमिश्रि
तदेवदेवसकफूलसुंहावनें खेवतधूवामेंस्वर्गमोदित
करतवसुकर्मनिहतें।नूतनयन०।धूपं।७।।श्रीफलअ
नारजुआंवनीवुंचोचमोचसदाफलें।।जिनचरनचर
चतफलनसेतीमोक्षफलदातारलें।।नूतनयन०।फ
लं।जलगंधअक्षतसुफूलव्यंजनदीपधूपफलो
तमं।जिनराजअर्घचढायनविजनलेऊंमुक्तिसुरश्री
तमं।नूतनयन०।अर्घं।अडिल्ल।सुरभितजलश्रीखंड
कुसुमतंडुलनलें।व्यंजनदीपकधूपसदाफलसोरनिवा
सपूज्यजिनचरनअरघसुनदीजिये।।मंगलग्रहउपदारे
सुमंगललीजिये।१०।पूर्णार्घं।।अथजयमाला।लिख्यते।।
मंगलग्रहहरनंमंगलकरनंसुषकरसिवपनीवरनं०
आतमहितकरनंभवजलतिरनंवासपूज्यसेवतचरनं१

इंद्रनरेंद्रषगेंद्रजुदेवं आपकेरजिनवरकीसेवं वासपूज्य
जिनपूजकरौं मंगलदोषसहजपरिहरौं २ विजयाजननीम
नहरमायेजनकजुवसुपूज्यपहिसुषदायें वासपूज्य० मंगल
भुनलछिनकरिलछितकाय चंपापुरजनमेजिनराय०
वासपूज्य० मंगल० महिषाअंकचरनमेंपरयो देषतसव
कोसंसयहरौं वासपूज्य० मंगल० ५ फागुनअसितजु
चौदसिजानौंकेवैरागपसुघरियोंध्यानौं वास० मंगलई
घातिघातियाकेवलपाया जेनधर्मजिगमेंप्रगटाय वा
सपूज्यजिनपूजाकरौ मंगलदोषसवैपरिहरौ ८ षटा
सतएकमुनिसरथयो गिरमंदारसिवालेगयो वास०
मंग० ८ मंगलहेतजजोजिनराय मंगलग्रहदूषनमि
टजाय वास० मंग० ९ पूजनअर्घंकीजेदोषहरीजे
कीजेंपातिकजनमजरा सुषकेअधिकारीग्रहदुषह
रीनारीनवदधिनीरतरा १० ईसाजुगीवदि॥ अथबुद्धग्र
हारिष्टनिवारकअष्टजिनपूजा लिष्यते॥ दोहा॥ बुद्धग्रह
पीडाकरेजोंआवजिनेस आगेगुनजिनमेंलहेसैंनाव
तसीससुरेस १ छप्पय विमलनाथजिन नमोंअनंत
नाथजिन धर्मनाथजिनवंदिवंदिहोसांतिसांतिकरि
कुंथुअरहजिनसुमरिसुमरिनमिवर्द्धमानजिन ईनअ
वोजिनजजोंनजोसुषकरनचरनतिन बुद्धमहाग्रहअ
सुनताधरतकरतजोरजव आक्ष्ानकरतिष्टिसंनि
धीकरिऊंतवें २ ॐह्रीं बुद्धग्रहारिष्टनिवारकअष्टजि
नाय अत० अत्राति० अत्रम० स्थापनं गीताछंद०
हिमकारीजडिसमनिजलनरौहीरोदकतनो घरसे
जिनचरनआगैपायतापजुंनासनो विमलनाथअनं
तनाथसुधर्मनाथजेसातये कुंथअरहंजुनमियजिन
महावीरआवजितजयें ॐह्रीं सोम्यग्रहारिष्टनिवारक
अष्टजिनाये जलं १ सुरभिसुरभितलेऊंचंदनघसोंके

कर्मसंगही। जिनचरनचरचित मिटै ग्रीषम मोहताप जु अंग
ही। विमल०ॐ ह्रीं०चंदनं। अछत अखंडित तनय कोटिसम
नसु अरु अतिघनो। लै कनक थाल भराय नवि जिनवृंद जह
वसु हावनो। विमलनाथ अनंतनाथ सु धर्मनाथ जु संत
ये।। कुंथु अरह जु नमिये जिन महावीर अष्ट जिनं जयै ॐ
ह्रीं०। अछतं। मंदार मल्ली मालती मचकुंद मरवा मोत
या।। कमल कुंद कदंब नकरनां कामबाण जु घातिया। विम
ल०। ॐ ह्रीं०। पुष्पं। घृत सद्य मिश्रत सर्करा मृतक
रुकुवंजन नावसे। ग्रहै सौम्य सांति जु होत जिनके चरनचर
चौं नावसौं। विम०ॐ ह्रीं०। नैवेद्यं। मनिजडित ही
टकदीप सुंदर वर्तिका घनसार हैं। सर्पिसहित सिषा प्रका
सित आरती तमहार हैं। विम०ॐ ह्रीं०। दीपं। लौंवान
अगर कपूर चंदन लौंग चूरन लीजियै। अगनि धूम विव
र्जित जिन चरन आगे षेइये। विम०ॐ ह्रीं०। धूपं। क
लपपादप जनित श्रीफल फल समूह बदाईयें। नत्तिभाव
व दायकरि केसरस श्रीफल पाईये। विम०ॐ ह्रीं०
फलं। सुन सलिल चंदन अछत सुमन जु चरु या हर चच
रु लीजियें। मणिदीप धूप फल सहित वसु रवि अर्घ देन
विधि दीजियें। विमल०ॐ ह्रीं०। अर्घं। दोहा।। जल
चंदन आदिक दर्व पूजो वसु जिनराय।। सो मम तन हू घन मे
टैं पूर्व अर्घ चढाय १०। पूर्णार्घं। छप्पय। विमलनाथ जि
न नमों नमों जु अनंतनाथ जिन। धर्मनाथ फुनि नमों न
मों सांतिकरता जिन। कुंथ मो थप द वंदि वंदिहौं अरह
जिन।। नमि अणमि जिन पाय पाय नमि वर्धमान नमि ए
आनौं जिनराज कुं हाथ जोरि सिर धरत हो सो मम नय ष
हरन कौं मंगल आरति करत हौं।। छंद पद्धडी।। जय विम
ल विमल आतम प्रकास। षट्द्रव्य चराचर लोकनास।। जय
जय अनंत गुन हैं अनंत। सुरनर जस गावें लहें अनंत।

॥जयधर्मधुराधरधर्मनाथजगजीवउधारनमुक्तिसाथ०
जयसांतिनाथजगशांतिकरन॥नविजीवनकेदुखदुरित-
हरन॥३॥जयकुंथुजिनकुंथ्वादिजीव॥प्रतिपालनकरिसु
षदेअतीव॥जयअरहजिनेस्वरअष्टकर्मरिपुनासिली
यौसमरमतिसमोध॥जयनमिनमियेसुरनरषगेसइंद्रादि
चंद्रस्तुतिकरतसेस॥जयवर्द्धमानजयवर्द्धमानउपदेसदे
यलहिमुक्तिथांन॥५॥जयवसुजिनपूजितमनलगायस
सिसुनअरिष्टसवहरिजाय॥मनवचतनकरिजुगजोर
होय॥घत्ता॥एआवजिनेस्वरनमतसुरेसरनभ्रजीवमं
गलकरनं॥मनवंछितपूरेपोतिकचूरैजनममरनसा
गरतिरनं॥७॥आसीरवाद॥अथगुरुअरिष्टनिवारकअ
ष्टजिनपूजन॥दोहा॥मनवचकायासुद्धकरि॥पूजौंआठ॥
जिनेस॥गुरुअरिष्टसवनासके॥उपजैसौख्यअसेस॥१॥छ
प्पय॥रिषभनाथजिनराजअजितसंभवस्वांमी॥अभि
नंदनजिनसुमतिसुपारसशीतलनामी॥श्रीश्रेयांसजे
नदेवसेवसवकरतसुरासुर॥मनवंछितदातारसारजे
ततीनलोकगुर॥सेनवषट॥वः वः तिष्टसंनिधीकुंजी
ये॥गुरुअरिष्टकेनासकौंआवजिनेस्वरपूजियें॥ॐह्रीं
सुरगुरुअरिष्टनिवारकअष्टजिनाय॥अत्र०॥अत्रति
अत्रमम०॥स्थापनं॥त्रिभंगीछंद॥जलउज्जललीजे
मनसुचिकीजेहाटकमयभृंगारभरं॥जिनधारदिवाई
त्रिषांनसाईनवजलतिधिलेपारपरे॥रिषभअजितसं
भवअभिनंदनसुमतिसुपारसनाथवरं॥सीतलनाथ
श्रेयांसजिनेस्वरपूजतसुरगुरदोषहरं॥ॐह्रींसुरगुरु
अरिष्टनिवारकअष्टजिनाय॥जलं॥१॥मलयागिर॥
चंदनदाहनिकंदनकुंकुमसुमलेघनसारं॥चर्चौजि
नकरनेनवतपहरनेमनवंछितसवसौख्यकरं॥रिष
भ०॥सीतल०॥ॐह्रीं०॥चंदनं॥सरलसालिककिसनजीर

कवांसमतीयजुमनहरं।३।जयकोटिकअरुअषंडितअ
षयगुनसिवपदधरं रिषभ० सीतल०तें०ज्ञौ।अछतं।३।चंप
कचवेलीकरकेतकीमालतीमरवोवोलसरं कमलकुं
मुदगुलांवकुंदकुसुमनकुहीसेवतीयपरं रिष०।सीत०तें०
पुष्पं।४।घेवरहिसुंवावरपुपपुरियमोदकफेनीपीयवरे
सुरहीघृतपयसरकरापुतविवधिचरुसुतसयकरे
रिष०।सीत०तै०।नैवेद्यं।५।मनिकेजडितसुवनेथाल
लेकदलीसुतघृतमांहितरे।दीपकउद्योतेनमछय।
होतनिजगुनलषिनामारनरं।रिष०।सीत०तें०।दी
पं।६।चंदनअगरलौगसुतगरंविवधिदर्विलेसुरलि
तरं।येवतजिनआगेंपातिकनागेधूवामिसिवसुंकर्म
जरें।रिष०।तें०।धूपं।७।वादांमसुपारीश्रीफलनारीचोव
मोचकमरषसुवरं।लेकेफलनानाजिनपदपूजितसे
वसुषध्यानोदेतवरं।रि०।तें०।फलं।८।जलचंदनफल
तंडलतुलचरुदीपकलेधूपफलं।वसुविधिमेंअर
चिवसुविधिविरचेंकीजेअविचलमुक्तिघरं।रिष०
सीत०।तें०।अर्घं।९।अडिल।मनवचकायासुरूपवि
तरकेंजिये।लेकरिआवोंदर्विआवजिनपूजिये।मंग
लीकवकंवस्तुपूर्णसवलीजिये।पूरणअरघचढाय
आरतीकीजियें।१०।पूर्णार्घं।छंद।सुरुगुरुउषनास
नकल्पषआसववसुजिनवसुविधिपुजकरें।नवनघ
अघहरणंसवसुषकरणंनअजीवशिवधामधरें।१।ज
यरूपनदेववृषभोकसार।जयधर्मधुरंधरधीरसार०
जयअजितकर्मअरिप्रकलजोनि।जयजीतिलीयौं
वसुंगुंनलिघ्रांन।२।जयसंभवसंभवदंनछेद।जयमु
क्तिरमालहियौअषेद।जयजगजनसुषकरताअप
रा।३।जयसुमतिदेवदेवाधिदेवजयसुंनमतिज्ञतकरहे
सेव।जयजयसुहिकंपारमस्वपरमोना।जयसौलोकअ

लोकप्रकासमानाध॥जयश्रीतलजिनजगसांतिकर्नजि।
यजनमजरामरसुदहनहनं॥जयश्रेयकरश्रेयांसनाथ
जयेश्रेयसुपंथदेमुक्तिसथ॥५॥जयजयगुनगिरमाजगसु
धांत॥जयसुरनरसेसकरेंवषांन॥जयमनसुषसागरन
मतसीस॥जयसुरगुरुस्तवनमेदिईसाहि॥घत्ता॥आवजिने
स्वरपूजतो॥आठकर्मउपजाय॥आवसिधिनवविधिल
हो॥सुरगुरुहोयसहाय॥आसीरवाद॥७॥अथसुक्रअरि
ष्टनिवारकपुष्पदंतजिनपूजनं दोहा॥पुष्पदंतजिनरा
जकौंनविपूजौंमनलाय॥मनवचकायासुधसौं कवि।
अरिष्टमिटिजाय॥अडिष्टगोचरमैंग्रहसुक्रआयज
बदुषकरें॥पुष्पदंतजिननाममंत्रमनमैंधरेंआह्वानन
करतिष्टसंनिधीकरिजिये॥ॐह्रींसुक्रग्रहअरिष्ट
निवारकपुष्पदंतजिनायअत्रआ०सोरठा॥नीरमलस
तसुनाय॥गंगाजलझारीभरौ॥कविअरिष्टमोटिजायपु
ष्पदंतपूजाकरौ॥ॐह्रींसुक्रग्रहअरिष्टनिवारकपुष्प
दंतजिनेंद्राय॥जलं॥कुंकुममलयघसाय॥कनककटो
रीमैंधरौ॥कवि०॥२॥चंदनं॥तंदुलअछतलाय॥नवस
हिततुसपरिहरौ॥कवि॥३॥अछतं॥कमलबेलजा
य॥जुहीकुंदसुकेवडौकवि०॥४॥पुष्पं॥ब्यंजनविविधि
बनाय॥मधुरस्वादजुतआचरौकविअ०॥५॥नैवेद्यं॥
कंचनदीपकराय॥कदलीसुतबातीकरौ॥कविअ०
पुष्पदंतपूजाकरौ॥६॥दीपं॥अगरकपुरमिटिजाय०॥
लौंगधूपवकुंविसरौ॥कवि॥धूपं॥फलं॥नीरादिकलैआ
ठ॥अर्घदेतपातिकटरै॥कवि०॥८॥अर्घं॥अडिल॥जल
चंदनलैअछतऔरफूलधनै॥चरुदीपकवकुंधूप
फलआतिसौहनै॥गीतनृत्यगुनगायअनर्घपूरनक
रौं॥पुष्पदंतजिनपूजिसुक्रदुषनहरौं॥पूर्णार्घं॥अथ
जयमालालिख्यते॥मनवचतनध्यावौपापनसावौ॥स

तसुषपावै।अघहरणं।यहदुषनआईहरषचढायपुष्प
दंतपूजनचरणं।१।जयपुष्पदंतजिनराजदेव।सुरअसुर
सकलमिलिकरहिसेव।जयफागुनवदिनोमीवषान
सुरपतिसुगर्भकल्याणवान।२।जयमागसीर्षसितद
यपत्त।नोमितिथिजनमेंनयेप्रतत।जयजन्ममहोत्सव
इंद्रआय।सुरगिरलेनवनकीयोसुन्हये।३।जयवज्रवृष
भनाराचदेह।दसमतवसुलछणसुगुनगेह।जयरा
जनीतकरराजकीन।मगसिरसितपरिवासुतपली
न।४।जयघातघातियाकर्मधीर।निजआतमशक्ति
प्रकासवीर।जयकातिकसुदिद्वतियामहांन।लहिकै
वलज्ञानतछोतमांन।५।जयभव्यजीवनउपदेसदेन
भवजालनिघनतारणसुजसलेन।जयभादोसुदिआठै
प्रसिद्ध।हनिअष्टकर्मजुगयेसिद्ध।६।जयजयजगदी
स्वरनरदेवनगुनतनपरषेबहुरकरतसेव।जयमनवं
छितसुमकरतईसयतसुषजलधितुमननमतसीसं
ई।घता।सषगुनअधिकारी।दुषनहारीमारीरोगादि
कहरने।नगसुसंडषजारीपापमिटाईपुष्पदंतपूजत
चरने।७।इत्याशीर्वादः।अथशांतिअरिष्टनिवारक
तिसुहंतनाथपूजा।दोहा जनमलगनगोचरसमैंरवि
सुतपीडादेय।तवमुनिसुव्रतपूजिये।पातिकनासक
रेय।१।अडिल्ल।मुनिसुव्रतजिनराजकाजनिजक
रनके।सूर्यपुत्रग्रहकुरअरिष्टंहरनकौंआन
नकरतिष्टत्रिष्ठ ठः ठः करौं।सन्निधिजिनराजनमस्
कारकरौं।२।ॐह्रींशांतिअरिष्टनिवारकमुनिसुव्रत
नाथाय।अत्रअवतर।अत्र०।अत्रममसं०।स्थापनं।रोगसो
गादिकलेसीपरोनिरमलप्रासुकनीरहो।सोनीका
रीलारित्रयधारदे।जासेंकर्मकलंकमिटिजाय।हो
जोनीमुनिसुव्रतजिनपूजियें।एजीरविसुतदुष्टमिटि

जाय॥ हो प्राणी मुनिसुव्रतजि०॥ ॐ ह्रीं०॥ जलं०॥१॥ प्राणी चंद
न घसि मलियागिरी॥ और कुंकम तामें डारि हो प्राणी॥ जिनं
पदचरचौ नावसौं॥ जासौ जन्मजराज्वर जाय हो प्राणी मु॥
निसुव्र०॥ रवि सुत डष मिटि जाय हो प्रा०॥ ॐ ह्रीं०॥ चंदनं॥२
प्राणी उज्जल ससि सम लीजिये तंडल कोटि समान हो
प्राणी पाच पूंज दे नावसौं॥ अषय पद सुष पाय हो प्राणी
मुनिसुव्रत०॥ रवि०॥ ॐ म०॥ अक्षतं॥३॥ प्राणी वेलि चमेल
केवरो॥ करुनां कुमद गुलाव हो प्राणी केतकी कदल
ले पूजिये॥ तब कामअसति मिटि जाय हो य प्राणी मुने
सुव्र०॥ रवि सुत०॥ ॐ ह्रीं॥ पुष्पं॥४॥ प्राणी व्यंजन नाना जाति
के॥ षट् रस कर संजुत हो प्राणी॥ जिनपद पूजौं नावसौं
तब जाय क्षुधादिक रोग हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ ॐ०॥ नै
वेद्यं॥५॥ प्राणी रतन जोति तम नासनी॥ दीपक कंचन॥
थार हो प्राणी जिन आगें आरती करौं॥ नव आरति
म जाय हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ ॐ०॥ दीपं॥६॥ प्राणी चंदन
अगर कपूर ले सब षेवौं पावक मोहि हो प्राणी॥ अष्ट
करम जरि अरहै॥ जिन पूजन सब सुष होय हो प्राणी॥
मुनि०॥ रवि०॥ ॐ०॥ धूपं॥७॥ प्राणी अवअनार पिस्ता फल
मोच चोच बिदाम हो प्राणी फल सैं जिनपद पूजिये पा
वे सिवफल सार हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ ॐ०॥ फलं॥८॥ प्रा
णी नीरादिक वसु दर्व ले॥ मन वच काय लगाय हो प्राण
अष्ट करम कौं नासहै॥ अष्ट महा गुन पाय हो प्राणी मुने
रवि०॥ ॐ०॥ अर्घं॥९॥ चौपड़िल॥ जल चंदन ले फूल और
अक्षत घनें॥ चरु दीपक वर धूप महा फल सोहनें॥ स्यौं
अरघ बणाय जिनाग्रे पूजिये॥ मुनि सुव्रत जिनराय नाव
सौं पूजिये॥ पूर्णार्घं॥१०॥ जयमाल लिखते॥ दोहा॥ मुनि
सुव्रत सुव्रत धरन॥ त्याग करन जगजाल॥ सनि ग्रह पीडा
हरन कौं॥ पढो हरष जयमाल॥१॥ छंद पद्धडी॥ जय जय मुने

पृ० ३

मुक्तित्रिजगतराय॥सतईंद्रआयकेनमतपाय॥जयजय
पद्मावतीगर्भआय॥श्रावणवदिदुतियाहर्षदाय॥२॥जयज
यसुमित्रग्रहजन्मलीन॥वैसाषकृष्णदसमीप्रवीन॥जय
जयदसप्रतिसयलसबकायत्रयग्यानसहितहितमि
तकहांय॥३॥जयजयतनलछिनसैहसुआवा॥नवीजी॥
वनमैंमुलिकैपाय॥४॥जयजयसौधर्मसुरेसआय॥जन्म
कल्याणककैसुनाय॥५॥जयजयतपलैवैसाषमास
सुदिदसमीकर्मकलकनास जयजयवैसाषकृष्णसे
तपक्ष॥नौमीकेवललहिजगप्रतक्ष॥६॥जयजयरचि॥
योतवसमोसर्न॥सुरनरषगमुनिसब चितहर्नजयज
यछ्यालीसगुनसहितदेव॥सतईंद्रआयतहांकरत॥
सेव॥६॥जयजयफागणवदिद्वादसीष॥सिवथांनव॥
सेगुनसिद्धलीय॥जयजयग्रहनिपीडाहरनहेत॥मनसु
षसागरकरसुषनिकेत॥७॥घत्ता॥सुनिसुव्रतस्वामीसव
जगनामीभविजीवनकूसुषंकरनं॥मनवंछितपूरैपाते
कचूरैरविसुतग्रहपीडाहरनं॥८॥आसीर्वाद॥अथराऊं
अरिष्टनिवारकनेमनाथपूजन॥अडिल्ल॥गोचरमेंज
कआयराहुपीडाधरैं॥नेमनाथजिनरायजवैपूजाक
रैं॥आवदरविलैसुद्धभावहियआंनिकैं॥स्यांमपुस्प॥
मनलायभक्तिकौंवानिकैं॥१॥पूजौनेमजिनेसजन्यम
नलायकैं॥राहुदेयदुषरासिमेरवऊंआयकैं॥आ[illegible]
ननकरितिष्टतिष्टवःवःतबवैरैंहोयसंन्निधीनतिसलै
पूजाकैरैं॥२॥ॐह्रींराहुअरिष्टनिवारकायनेमनाथ
जिनेंद्रायअत्रा०॥गीतानंद॥कनककारीमणिजडित
लसीतनदकभरायकैं॥प्रभुनेमजिनकेचरनआगेंध
रदेमनलायकैं॥जवैंराहुगोचररांसिमहदुषदेईदुषबहु॥
भावसौतबनेमिजिनकैंभावसेतीचरणपूजौंभावसौं
१॥ॐह्रींराहुअरि०जलं॥श्रीखंडमलयमिलायकै॥

सरकदलीसुतनामेंघसौ जिनचरणचरचितभाव।
धरिकेंपापतापतवेनसौ॥जव०॥चंदनं॥अछतअनु
पमसालिसंनवकनकभाजनलेरीकें॥जिनअग्र।
पूंजचढायभाविजनराकमनचितदेईकें॥जव०॥३॥
अछतं॥कमलकुंदगुलावकुंजाकेतकीकरनीन
ते॥सुमनलेकैसुमनसेती॥पूजितेंजिनअघटलेज।
वराकुगोचरासितेंडषदेईडहसुनावसों॥तवकेमज
नके॥भावसेतीचरनपूजोंभावसों॥ध॥४॥पुष्पं॥विविधिअ
जनरसाजिनतमनहरक्षुधाडषनकोहरें॥भरियाल
कंचनभावसेतीनेमजिनआगेधरें॥जव०॥नैवेद्यं०
मणिमयदीपकतपनरिकेंचंडज्योतिसुंजगमगेने
जहातलेप्रभुआरतीकेरैमोहतमतवहीभगें॥निज
हांतलेप्रभुपआरतीकेरैमोहतमतवहीभगें॥जव
राकुं०॥६॥दीपं॥कृस्नाअगरलेबांनलोंगओरउअ
सुगंधमें॥निजचरनआगेंअग्निधरेंधूपधूपसुरले
वमें॥जवराकुं०॥७॥धूपं॥अंबाविजोरानारियरअरी।
फलसुंपारीसवकी॥फललेमनोहरसरसमीवेपू
जिलेजिनदेवकों॥जवराकुं०॥८॥फलं॥जलगंधअ
छतपुष्पसुरनितचरुमनोहरलीजियें॥दीपधूपफ
लोघसुंदरअर्घजिनपददीजियें॥जवराकुंगोचरासे
मेंडषदेईडहसुंनावसों॥तवनेमजिनकेभावसेती
चरनपूजोंभावसों॥अर्घं॥अडिल्ल॥भावदरवलेसार
नेमप्रभुपूजियेराकुंहोरी॥यहशांतिपापसवधूजियें
मनवंछितफलपायहोयवडभागसों॥जोपूजेजिन
देववडेअनुरागसों॥पूर्णार्घं॥अथजयमाला॥श्रीनेमे
जिनेस्वरजगपरमेस्वरजीवदयाधुरधारधरा॥मेंसर।
णआयोंसीसनवायोसिंहासनसुतरूषहरहरे॥१॥जय
जयजिननेमसुंनेमधारकरूणांकरजगजननजेलधिल

२॥जैजैकातिकसुदिछठिगर्भधानसिवदेवीउरअवतरेश्रो
न॥३॥जैजैश्रावनसुदिछठिदेवइंद्रादिन्हवनविधिकरिये
सेव॥जैजैजदुकुलमंडनदिनेस॥सुरनरषगअस्तुतिकरत
सेस॥४॥जैजैसुचिसुक्रउदासहोय॥छतिकौतपकरिनित
आलजोय॥जैजैनिर्मलतननिर्विकारभामंडलछवि
सोभाअपार॥जैजैअस्वतिसुदिपांतनोता॥तियप्रथम
पहरजगसुषतिधांत॥जैजैनविजनउपदेसादेईसुते
पंचमिगतिसाधनकरेई॥५॥जैजैछविसावनसुक्रप
त्तसवलोकालोककीयोप्रतत्त॥जैजैवसुविधिविधि
सकलनास॥लहिसुषअनंतसिवलोकवास॥६॥जैजै
अजरामरपदप्रघसन॥कैत्रिभुवनपतिलोकाग्रथान
जैजैछायासुतपीरहंत॥मनसुरुसमुझसुगहियसन्नेह
घत्ता॥नविजनसुषदाई॥सेउसुहाईमनवचकायागो।
वतहीं॥सवदूषनजाईपापनसांईनिमिसहाईध्यावत
हो॥७॥इस्याशीर्वादः॥अथकेतुअरिष्टनिवारकनजि
पार्श्वजिनपूजन॥दोहा॥केतुअयागोचरविषैंकरैअरि।
ष्टकीहो॥ता॥महिपार्श्वजिनपूजियेमनवंछितसुदानि
१॥अडिल्ल॥महिपार्श्वजिनदेवसेवकजेकीजियेनित्ति
न्यावसुद्रव्यसुंधकरलीजियेंआह्वाननकरतिष्टति
ष्ठ ठः ठः करो॥ममसंन्निधीकरघजिहरषहियमैंधरो।
१॥ॐह्रींकेतुअरिष्टनिवारकायमहिपार्श्वजिनेंद्राय।
अत्रावतरा०उतमगंगाजलल्यायमणिमयभरिझा
री॥जिनचरनधारदेसाजनमजराहारी॥मैंपूजोंमहि
जिनेंद्रापापसमसुषकारी॥ग्रहकेतुअरिष्टनिवारकमन
सुषहितकारी॥१॥ॐह्रींकेतुअरिष्टनिवारिकमहिपा
र्श्वजिनेंद्रा०जलं॥श्रीषंडमलयतरुल्यायेकदलीसुतक
रीघसिकेशरिचरननल्यायेनवअघतपहारी॥मैंपूजोंम
लजिनेंद्रापापसमसुषकारी॥ग्रहकेतुअरिष्टनिवारमनसुष

हितकारी॥१॥चंदनतंदुलअक्षतअविकारसुकतासम
सोहैं॥नरिलेंहोकमेंथारसुरनरमनमोहैं॥मैंपूजौमल्लिजि
नेशपारससुषकारी॥ग्रहकेतुअरिष्टनिवारकमनसुष
हितकारी॥२॥अक्षतं॥लेफूलसुगंधसमारअलिगुंजा
करैं॥मदर्पकजजिनहिचदायकोमनवियाजुहरैं॥मैंपूजौ
०॥पुष्पं॥षोजननवऊविधिपरकारषटरससवादमईचरु
जिनचरनचढायकंचनथारलईमैंपूजौ०॥नैवेद्यं॥मणि
दीपकतमपनरायचंडककीवातीजवजोतिजहोलह
कायमोहतिमरघाती॥मैंपूजौमल्लिजिनेसपारससुष
कारी॥ग्रहकेतुअरिष्टनिवारकमनसुषहितकारी॥दी
दीपं॥कृष्णागरचंदनल्यायेधूपदहनषेईमोदितसुरगण
नच्चेजायकचिसेतीलेई॥मैंपूजौ०॥धूपं॥वऊचोचमोच
वादांमश्रीफलफलदाई॥अमृतफलवऊसुषधाम
लीजेमननलाई॥मैंपूजौं०॥फलं॥जलचंदनसुलेईतंदुल
अघहारी॥चरुदीपधूपफलदेईअर्घकरौंभारी॥मैंपूजौं
०॥८॥अर्घं॥अडिल्ल॥लेवसुद्रव्यविशेषसुमंगलगाई
कैंगीतनृत्यकरवायजुतुरवजाईकें॥मनमेंहरषवढा
यअर्घपूरणकरौं॥केतुदोषकूंमेटिपापसवपरिहरौं॥१
पूर्णार्घं॥जयमल्लिजिनेसरसेवकरौं॥सुरपार्श्वनाथजि
नचरणनमोंमनवचतनलाईअरजुतगाईकरोआर
तीपापवसौं॥१॥जैजैत्रिभुवनपतिदेवदेवइंद्रादिक
सुरनरकरईसेव॥जैजैनिजगुनगणायकमहंतगुनव
रननकरतनलहैंअंतरा॥१॥जैजैपरमातमगुनगरिष्ठ
नवपदतिनासनपरमइष्ट॥जैजैअष्टादशदोषनास०
करकेवलसमलोकालोकभास॥२॥जैजैवसुकर्मकलंक
हीनसमकितआदिवसुगुननलीन॥जैजैवसुप्रतिहार
जअनूपवसुईशअवनभूमिकोनरांमृप॥३॥जैजैअदेह
तुंमदेहधारवरणादिरहितहैरूपसार॥जैजैअजरामर

पदपूराण।।गुनथ्यांनअलोकालोकमांना।जैसैंसुषसता।
बोधरूपी।निजगुनजुतपरगुननांहिपरसैजैंजैचितसुद्ध
सुजसारकरजोरनमतहैवारवार।प।घत्ता।मनवंछितदा
ईक।सेवसहाईक।जोमनिनिजमनध्यांनधरै।ग्रहउष।
मिटिजाई।सोफलहाईजिनचौवीसपूजकरैं।६।इतिन
वग्रहपूजासंपूर्णं।।:।। ।।श्री।। ।।श्री।। ।।श्री।। ।:
अथवारांभावनोलिष्यते।।दोहा।।राजाराणांछत्रपति०
हंथिनकेअसवार।मरनांसवकूंएकदिन।अपनीअप
नीवार।१।दलवलदेईदेवता।मातपितापरिवार।मरती
वेलांजीवकूं।कोईनराषनहार।२।दांमविनांनिरधन
दुषी।त्रिष्णावसिधनवांन।कहीनसुषीसंसारमैंसवज
गदेष्यांछांन।३।आपअकेलोअवतरैमरैअकेलोहाय
युं।ष्यधमीविनांयाजीवकौ।साथीसगौनकोयाध।जहां
देहअपनीनहीं।औरनअपनंकोय।घरसंपतिपर।
गटयह।परिहैपरियणलोय।५।दिपैंचांमचांदरमदी
हांटयीजरादेह।भीतरयासवजगतमैं।औरनहीघि
नगेह।६।सोरठा।मोहनींदकैंजोरजगवासीघूंमैंसदा
करमचोरचऊंवोरसरवसलूटैंसुधिनहीं।७।सतगुरदे
हजगाय।मोहनींदजवउपसमैं।तवकछूवनैंउपावक
रमचोरआवतरूकै।पौ।ज्ञांनदीपतपतेलभरिघर।
सोधेभ्रमछोर याविधिविननिकसैंनहीं।वेपूरवचो
रा।ा।चौदहराजेउतंगनमःलोकपुरुषसंठांन।यामैं
जीवअनादिकौं।भरमतहैंविनज्ञांन।१०।जांचैंसुरत
रुदेवसुषचिंतामणिचितरैंति विनजांचेविनचितयैं।
धर्मसुकलसुषदेन।११।धनकनकंचनराजसुषसवे।
सुलभहैंकरजांन।दुलभहैंसंसारमैं।एकजियारथग्यं
न।१२।।इति०वारांभावनासंपूर्णं।।रागसोरठबि।
लावल।।करमगतिकाहूंसोंनटरैटिकविकलपलाष

कोटिकरतेरहो॥कोमनयेकसरे।करम०॥अंतरायमेयो
रिषभजिनेसुरचक्रीमोनगेरे।साठिसहससुतसगरस
पकेयो॥

पदराग सोरठा॥जीयारेयादेहविरा
णीमतिअपणावे॥टेक॥सातधातमयअरमलमूत्र
नोंवलीयाघनिआवे॥जीया०॥१॥यासेंप्रीतिकरेमति
नाई।दुरगतिमांहिरुलावे।आयेजोंनिजनोंनिजसा
हिव।ज्योंसिवपुरदरसावें।जियारेयादेहविराणीमते
अपणावे॥राग काफी॥सुज्ञानीडोरेमारिगअपणौ
जोय॥टेक॥आयकायथिरनारहेगी॥जांनतहेसव
कोय।कुंवीकीसांचीकरिमांनता॥क्रमवधेनितसतोय
सुज्ञा०॥१॥आपापरकोंभेदलष्येविना॥भरमतहेंपद
षोय॥तूंनिश्चेकरिदेषिसयानें॥जनममरणदुषहोय
सुज्ञा०॥२॥नरभवकुलश्रावककौंपायो॥सोविरथा
मतिषोय॥औसरवीतिगयेपिछतेहें॥कहेदेमहूंतोहि
सुज्ञा०॥३॥येहसुतिछोडिलागिसुनमारग॥रागादिक
मलधोय॥जिनवाणीधारेतेसाहिवमुक्तिवधूवरहो
य॥सुज्ञांनी॥४॥पदराग॥प्रभूतेरेसांकडेथ॥कोयार०
प्रभु॥टेक॥लषिनगरिकीनीरथीरजातुरतसुनतपु
कार॥प्रभू०॥१॥जांनकीकूंदिअदीनीरघीरामविचारे
आगनिकुंडप्रचंडसासततनयोजलविसतार॥प्रभूते०
॥२॥चंदनबालासतीकूंजवनयोंसेकटभार॥महावीरजि
नवरआपआये॥हूंवोजेजेंकार॥प्रभूमेरेसांकडेकों॥
यार॥३॥ईतिसंपूर्ण॥रेषता॥जगतयेहेरेनिकासुपना
समकिदिलदेषिकेंअपना॥कविनयामोहकीधारा
नयासवजातसंसारा॥१॥घडाज्योंनीरकाफूटा॥पा
तजैसेंडालकाटूटा॥ऐसीनरजोनिजिनगांनी॥अ
जोकिनचेतअभिमांनी॥२॥भूलोमतिदेषितनगोरा

जगतमैंजीवनोंथोरा॥तजोंमघलोभचतुराई॥रहोंनै
निसंकजगमांही॥३॥सजनपरवारसुतदारा सवैंजसरो
जहैंप्यारा॥निकसिजवप्राणजावेगा॥कोईनहिंकांमि
आवेगा॥४॥सदामतिजाणियादेहा॥लगावोंनांवहु
नेहां।कटैंजमकालकाघेरा॥कहैसिवचंदजननेरा॥
जगतयेंरैनिकासपनां॥समझिदिलदेषिकेअपनां॥
५॥इतिसंपूर्णं॥ रूपडी॥अवमननमेरावेसुंनिसुनिसी
षसयानी०॥जिनवरचरनोंवेकरिकरिप्रीतिसुंज्ञांनी
करिप्रीतसुंज्ञांनीसिवसुषदांनीधनिजीतवहैंपंचा
दिनो।॥कोटिवरसजीवोंकिसलेषैं॥जिनचरणांमुज
नक्तिविनी॥नरपरजायपायअतिउतिमग्रहवसि
यहलाहोलैरे॥समझसमझिवोलैंगुरज्ञांनीसीष
सयानीमनमेरा॥१॥तन तितरसेवैंसंपतिदेषिपरा
ई॥वोयाखुंनियावेयहनिजपूर्वकुंमाई॥पूर्वकिमाई
संपतिपाई॥देषिदेषिमतझूरिमरैंवोयवमूलसलत
रूनूंरकोंआमनकीआसकरैं॥अवकछुसमझिवा
घिनरचोंसाजोंफिरपरमवसुषदरसें करिनिजधं
नदोनतपसंजमदेषिविनोपरिमतितरसैं॥२॥जोजग
दीसैवसुंदरअरसुषदाईसोसवफलेपावेंधरमकल
पद्रुमन्यारी॥सोसवफलियाधर्मकलपद्रुमरघप
यकवकुंरिधिसही॥तेजतुरंगतुंगगजनवविधिकें
वोदहरतनछषंडमही॥रतिउणियारुरूपकीसीमां
सहंसछ्याणवैंनारिवरैं॥सोसवजोनिधरमफलम
ईजीजगसुंदरदिष्टिपरैं॥३॥लगेंअसुंदरवेकंटकवो
नयनेरे॥तिवरनगयेंगुनपलटैं॥अवनहिंदेषेनावे॥
धमोटामहीकांतिकल्पिअरुं॥ करिअपनोंसलजेउ
भ्रांतिआगिमेंरंघनहोयगी॥मूधरसमझिसमेरा०॥च
रमघावलतांनोंहिवे॥चरघाभयापुरांनों०॥ ॥श्री

पदराग॥कालसकलजगजीतावे कोईकालजीता॥अ
कसमात्तईम आनिदबीवैजैसैंमृगकूंजीता।वे कोईका
लनजीता॥१॥वलधरिपूरिमहाभडजोदातिनसववा
सिकरिलीता॥ताकोउरराषतनहिंकवहूंयहदेषो॥
विपरीता॥कालनं०॥र॥फूंवीमायासोंजलभाया।मोनि
रावीअपनीता।देवपेटग्रहछांडिवलावन हाथजु
लावदरीता०॥वे कोईकालनं०॥यासेंलीजीताहेतेही
नयाहैंमुक्तिकामीता॥वारूवारजोडिकरितिनकूंन
वलनमोसतकीनो॥कालसकलजगजीतावेको
ईकालनजीता १॥इतीसं०॥ हृ० हरा० फं० फोटी॥जैनू
नांमजपितूंजीवडानरजन्मउलभपाईया॥टेक॥लष
जोनिचोरासीतणोंउषमूढतूविसराईया॥१॥लषिभ्र
मततीनूंलोकमैंयोकालअनंताछाईया॥कोईनदें
अवभागकेंतूनीवतीरआईया॥सवजांनिस्वार
थकेसगेतितहेतमूरिषधाईया॥जिन०॥२॥जेहैंसे
रोमणिधनितेअरहंतकेगुणगाईया॥संपत्तिचहो
अचिचलसदापरनेहतजिभ्रजिसाईया॥जिननां
मजपितूंजीवडानरजन्मउलभपाईया॥३॥संपूर्णं
॥अथ अगानि होलवा कापद लिख्यते॥ जिनदेवयेक
हीजपनां॥उसराक्याकरनां क्या करना॥अनदेवतें
काजनसरनांकोमिथ्यामैंपडनां॥उसराक्याकरनां
१॥टेक॥भवहोमैंभ्रमणकरणकाकारणछांडिछांडिप
रिसरणां॥वीतरागसरवज्ञपायकेंविधिसैंपारउत
रणां॥उसराक्याकरनां॥२॥जवलौमैंदसावनहीजो
लणां॥मतिगतिमैंउषभरणां॥सिद्धिसरूपमिलेमो
क्षिसाहिव॥फेरिनअगमैंफिरणां॥उसराक्याकर
नां॥अथपदसंपूर्णं॥अथरागजैकमैंलिष्यतेमुर
त्तिकैसीराजेनिरषतमननर तीर्थंकरकरध्यांनधरत

हैं परमातमपरकाजैं निरषमन सों सांआगें दिष्ट कुंथा
रे मुषमुंलकंलमांतुलाजैं॥ अनंनवरसफिलकसमो
नुं ऐसें आसनसुयविराजे निरषमनः अयनुतरूप
अनुपममेंहैमांतीनलोकमेंछाजैं॥ जाकीछविदेषत
इंद्रादिक चंदसूरयमनलाजैं॥ निरषमनः धरिअनुरा
गविलोकतजाकूं असुभ करमतजिनागें॥ ज्योंजगा
रांमवनैंसुमरणतें अनहदवाजावाजैं॥ निरषमनअनु
रतिकेसीराजैं॥३॥ संपूर्णं॥ पदअमातिलिषतें॥ चंदजि
नराजकेचरननचिंतवनकरतरोगडषसोकअघ
हरिनाजैंः॥टेक॥ जवैंमरैंनीरतवध्यानहियमैंधरूं अ
सुनसबजायसुनकाजसाजैं॥ चंदजिनराजकेचरण
पापसबहीगयेपुंन्यपरगटनयेभक्तिकेजोगतेंरा
जराजैं॥ कांमअरमांतुआसिचरनछविनिरषिकरै
तिदिनएकसीदेषलाजैं॥ चंद्रजिन०॥१॥ चमरवरु
सोकसुरपुष्पवर्षाकरैं॥ तीनसिरछत्रआसनसुंछा
जैंदेहकीकांतिकुंनिडंडमिवजतहैं॥ निजसुषसरूप
लिषिपांनगपाजैं॥ चंदजिनराजकेचरनचितवनक
रतरोगडषसोकअघहरिनाजैं॥२॥ संपूर्णं॥ पदऔरवह
नुरिमेंलिषते॥ मनवातुप्रभुजीसुंध्यांनलगाय॥ औ
नऔरआंसहीडरासऔरडरमति॥ हारेंप्रांणीकुंवा
धईकांमहटाय॥ मनवातु॥१॥ नाईऔरचंदसवकटूं
वकंकवीलौनेरे॥ हारेंप्रांणीकुंवंधेईकांमहटाय॥ मन
वातु॥२॥ हाथजोडिवीनतीकरूंछुप्रभुतमहीसुं॥ हा
रेंवंदेसुधरआवेंसोजोय॥ मनवासुप्रभुजीसुंध्यां
नलगाय॥३॥ संपूर्णं॥ रेषतालिषते॥ घरिघनिआ
जकीयेही॥ सेरिसवहोकाजमोमनके॥ गयेअघ॥
दूरिसवनजिकैं॥ लषाप्रभुषआदिजिनवरका१
विपतिनांसिसकलमेरी॥ जिरैनेंडारसेपतिका॥०॥

सुधाके मेघऊं वरसे॥ लष्या०॥४॥ नरी परतीत ए मेरे सा-
हा हो देवदेवन कों॥ टरी मिथ्यात की मोरी:॥ लष्या०॥ तु
रतै अैसा सुन्यो मैं तो:॥ जगत के पार परनै का॥ नवल
आनंदऊं पाया:॥ लष्या०॥ संपूर्ण:॥ कीये आरोधनों॥
तेरी॥ हीये आनंद व्यापत हैं॥ तिहारे दरस कूं देषै॥ स
कल ही पापनासत हैं॥१॥ भली विधि पूजि ऊं कीनी॥
व हो रिखुं न दीन दीना हैं॥ करो जिनभक्ति हित तैं ही
जमारा सुध कीना हैं॥२॥ घ क्यों मैं दृष्टि कैं सगरे लषे
में सुर विश्रो षा हैं॥ नहीं कोरी तुम तुल देवा जगत स
व हेरि देष्या हैं॥३॥ सही हो जगतपति तुमही॥ उधार
क विरद न्यारा हैं॥ कहां लो कीजिये महिमा॥ करत ज
जस इंद्र हार्या हैं:॥४॥ हरो उषमो लषों अवहीं॥ लगे
औ संग सारा हैं॥ प्रभुजी या अरज चित धरिये॥ नव
ल चेरा तिहारा हैं॥ इति संपूर्ण॥ विषैं त्याग भजन कारे
ज लागौ॥ प्रभु सुमरन दी वार वे॥ जगनायक जग वे
दन करिये॥ ये ही जगत में सार वे॥ विषैं त्यागि०॥१॥ दी
न उधित स वही कै रिछक॥ तिरधारा आधार वे॥ म
मछोडि गृह अैर कटक सव ये वांछा मन न धारवे
लग्या रहो जिन चरनन सेती॥ ज्यों सुष हो य अपार
वे॥ विषैं त्यागि०॥२॥ नवल कहय ह अरज कीजि
ये॥ नव दधि पार उतार वे॥ विषैं त्याग॥ २ ३॥ पद से पूर्ण
पद नेह की चाल में लिषते॥ प्रभु चरणारविंदनों मि ने
द केरा॥ टिक॥ कोटि नों तुम दति हो न घन का कजे राए॥
तीन लोक व्यापित हैं प्रताप है घनेरा॥ पूजूं चरणारविं
द०॥१॥ मूरति के देषे पाप भ्राव तन हीं ते रा॥ सेवत चर
णारविंद कर्म हो तजेरा॥ पूजूं चरणारविंद०॥२॥ जो
धा परिम हरि की ज्यां लावों मति वेरा॥ स्वामी अरदा
सियेही दीजे मोक्ष डेरा॥ पूजूं चरणार॥ हेंद ३॥ संपूर्णः

राग तिल्लावल मैं ॥ षोयो रंग वार तै सारो दिन यो हि षोयो० टेक ॥ सामायक पुजा नहिं कीनी ॥ रैनि नई डग छाया ॥ लेन देन रि षोयो ॥ सोयो रंग वार तैं सारो दिन यो हि षोयो ॥ १ वालपन कछू गुपां न कीयो नहीं ॥ जोवन वणि चालार तें सुमन वीजन वोयो ॥ षोयो० २ ॥ द्रिष्टि पणें तसनां अति परणी ॥ सव घर कों डषनार तै निजि हातम दोयो ॥ षोयो० नूं ॥ सुगुरु वचन दरियाव में रे ॥ आयो आप सम हारि० तें विषदा मन छोयो ॥ षोयो रंग वार० ॥४॥ संपूर्णं ॥ अथै पदलावणी में लिषते ॥ अरज हमारी सुणों दीनपते कौं नमों ति तिरनों ॥ हमधूवी फिरत संसार चतुरगां तिसो तुं मसुं तिरणां ॥ टेक ॥ घोरा घोर नरक केनी तरे नानां ऊ कम रणां ॥ नाऊ न मा रणा छेदण भेदणं ॥ ओर देहधरणां ॥ अरज हमारी १ ॥ कवऊं कतिर जेव जो ने पायकें ॥ गले पा सिधरणां ॥ षुधा तिरषा अरसीत सह सनता: ॥ मारि मांरि करणां ॥ अरज हमारि २ ॥ मित पाजनम पायकें विसर्यो: ॥ विषैं नो गचरणां ॥ रांवर्कं कछिन मांहि दीषत: ॥ कहूं नां ही सरणां ॥ अरज हमारि ३ ॥ देव विभूति पायकें सुंदर अदिक देषि फरणा: ॥ तव मालामुरफाणीं लागी ॥ सोच कीयो मरणां० अरज हमारि ४ ॥ ऐसें अनंत वार मैं नट क्यौं ॥ कहूं नांहि सरणां ॥ साहिव मों सरणां गति राषो ॥ जनम मरण हरणां ॥ अरज हमारी सुणों दीनपति कौं नंमां ति तिरणां ॥५॥ संपूर्णं ॥ पद राग महूर टी में लिष्यते ॥ चतुर नर मन कुं समफांणां ॥ विघट घाट पाषंड जग सिरवर पार उतर आंणां ॥ टेक ॥ मधु वुध धरन मिथ्या जल जैंडा ॥ इंद कठ नमांनां ॥ पाव धरै तौ पकरि डवो वैं कुगुर सुगुर दानां ॥ चतुर नर मन कुं समफा णां ॥ १ ॥ न कट जाय सौं जलधी वसौं होय है राणां जल षारो अति रोग वडावै ॥ राग दोष

मानो॥ चतुरनर मन कूं समझाणो॥४॥ कुं घर मनु जो डेगेला
हे मोह भ्रम छानो॥ कोमलोभ दोउ चोर लुटेरा करे व होत अ
नो॥ चतुरनर॥ ५॥ कुवदि यो न ता व फक को लेंअलाजक
स्राणो॥ बरची लार विमलना व नो ली जे सुनमानो॥ चतु
रनर॥ ६॥ मुनदपोन सत्तगुर षेवटया॥ अनके संग आणो
देव कहे सिवपुर जो चाले॥ सावधान स्याणो॥ चतुरनरम
न कूं समझाणो॥ ७॥ संपूर्णं॥ पद [illegible] ॥ आयक
य थिर नही रहगी जाणत हे सब कोय॥ फंठी कू सोचीक
रमोनः॥ करम वंदे न तेतो य॥ सुरनरष्पोनीडारे मारग अ
पणो जोय॥ आपा पुरका नेदल ष्पावन नरमत हे पद
मोय॥ तुन सुकरि देषिसया नो जनम मरण उपदेई सुर
ष्पोनीडारें॥ १॥ उत्तम कुल सरावग कौं पायो॥ सो अवर
या मति षोवो॥ अवसर वीत्या पर पछितावे कहदेत हर
तो य है॥ सुरष्पोनीडारे॥ २॥ परमति छोडि लागि सुवमा
रग॥ रागादिक मल धोय॥ जिणवाणी धारी ने साहिव
मुक्ति वंउवर होय॥ सुरष्पोनीडारें॥ ३॥ संपूर्णं॥ [illegible]
[illegible]॥ कोई नही मेंता तेरा जुग में टेक॥ समझ सोच करे
देष सयाना सुतो फर स अकेला॥ जुग मे कोई नही मेंताते
रा॥ १॥ सुपनें दा से सार रच्या हैं हट वाडे दा मेला॥ विन सिज
य अंजुलि का जल ज्युं तो गरन गहेला॥ जुग में कोई ष्व
र सिदा माता कुमति कु माता मोह लोभ करि भूला॥ येते
रे सव हें उपदारी तु लिरहो नं जी मेला॥ जुग म॥ २॥ पातै
सो च समा लग्यो न करि फेरिं मैं ले नहिं बेला॥ ३॥ जैनवा
णी साहिव नर धारो पावे मोषि महेला॥ जुग में कोई न
ही मेंता तेरा॥ ४॥ संपूर्णं॥ वीत गई सारी रैनि प्राणी लारे
टेक॥ दोय घडी कौं तडको रह्यो॥ छांडि देह सव फेमः प्रा
णी लारे वीत॥ १॥ उत्तम नर भव संगति आत्मा॥ मति षो
लयो सव जैन॥ प्राणी लारे॥ २॥ जो कछु करणी हो सो ही

करि सुगसतमुरकेवैन॥३॥ इतिसंपूर्ण

॥अथ नेमिनाथजी का दसभव लिख्यते॥ महेधावालाहो
प्रभुनावस्योजी॥ मेहधावालानेमकवार॥ गदीराजलवि
नवेजी॥ अरजकराछावारवार॥ थेतोप्रभुदयालहोजी॥थ
जायचढ्याछोगढगिरनारि॥ महेतीसंजमहोप्रभुलेय॥
स्याजी॥ संजम रलेस्याथाकीसाथ॥ बारामास्यांहो प्रभुमा
वनांजी॥ नानाविधितेंजीतपसार॥ नवसमुद्रहोप्रभुकं
डियाजी॥ गह्योहमारोजीतुमहोथ॥ अवमोहिस्यारोप्र
भुजीतुमघणीजी॥१॥ नवभवकीमैंथांकीचरचांजी॥द
नुवेंभवमीरासोसाथि॥ पहलेंभवतोंप्रभुजीमीलछा
जी॥ मेंजीलाणीथाकीसाथि॥ मुनिवरकेंतोमारणताव
याजी॥ हवकरिराषामेहजिणवार॥ मुनिवरकुंतोथेवंद
नाकरीजी॥ सुभगतिबांधीथेजीवार॥ अवमोहेस्यारो॥प्र
भुजेभवतोंकवासेवहीजी॥ नामधरायोतपदनकेतकं
रे वाणीथांकीसंगरहीजी॥ तपमिलिकीयोदोन्यासाथ
अवमोहेस्यारो॥२॥ तीजेंभवतोंसुरपहलासुर्गमेंजी॥व
रीअपछराथेप्रभुमोही॥ नानाविधितेंजीसुषभोगवाजी
वेचिबिमादाहमतुमदोयदेव॥ तीर्थंकरदहे प्रभुवंदियां
जी॥ चेत्रविदेहाहेप्रभुजाय॥ पहलाभवसुंबांध्योंटोकडे
जी॥ पायोसरमजेहअपार॥ अवमोहे०॥३॥ चोथेभवतो
होप्रभुआईयाजी॥ वीद्याधरकाहेकुलमांहि॥ चिंतागत
वीनांमधरायोजी॥ विजयारधगिरहिरमांहि॥ वेडावस
मेंहो प्रभुउपन्योजी॥ जदवीमेंछीथ्याकीलार॥ अवमोहे
स्यारो॥४॥ पंचमभवतोचोथासुर्गमेंजी॥ मोटादेवजइउ
जहोय॥ औरदेवतोसवसेवाकरेजी॥ सीसनवावेंसवहो
तोय॥ अव०॥ छटेभवतोअपराजितऊवाजी॥ राजाउत्त
जीकोईसार॥ वरतजपाल्योहेसुरावगतणोजी॥ पुंन्यज

पजायो दोस्पासाग्र मुनषादे ही को लाहो लह्यो जी॥ धर्मजनेसु
रहैं कोई पाय॥ अव मो है सारो॥७॥ अच्युत इंद्र कवास वसा तैं
जी॥ स्वर्ग सोलवें उपन्या जाय॥ तिथ सागर तो हि वाईस की जी
वी नहस तकी कोई क्काय॥ वा का सुष को जी कोई अंत नही॥
जी॥ कह्यो किनी सें हैं कोई जाय॥ अव मो हि सारो॥८॥ सुरप
ति असे कन वआवे जी॥ राजुल कुल में में हैं अवतार धारी
परणी प्रभु अति घणी जी॥ मैं पटराणी छी जिह वार सा धर्मु
नीम्बर हो प्रभु पोषियो जी॥ दान दज दीयो च्यार प्रकार॥ व
रतज पाल्या है आवगतणो जी॥ धर्म जिनेसुर हो प्रभु पोषि
यो जी॥ तिर्थंकर प्रभु जी तव वंध्या जी॥ जो तुम जाणो सव नि
रधार॥ अव मो है सारो॥९॥ अहमिंदर को जी पद पाई पोई
जी॥ नव नव कीऊं जियछें वात वाका सुष को जी कोई अंत न
ही जी॥ कह्यो किनी सें है कोई जाय॥ अव मो य॥ दसमां नवतैं
हे प्रभु आईया जी॥ जो उकुल मे है अवतार सेवा देवी मा
तान रघस्या जी॥ नगर द्वारिका कही कोई सार॥१०॥ समद
विजै जी राहे लाडीला जी॥ कुल में चंदज वंद समो ना मा त
पिता तो है हरष तनया जी॥ तीर्थंकर सुत हैं कोई जांण ज
नमस में तो सुंरी ति आईया जी॥ मेरगिरा परि हैले ज्याय के
जलन्पाय के जी सहस्र अठोतर कलस ढलाये॥११॥ ज
नमस में को वरनन कर सके जी॥ सुरपति के हेत नै या वप
र॥ वाजा वाज्या प्रभु जी अति घणो जी॥ उच्छव विस वद अपा
र॥ जनम महोत्सव देवा सो धिकै जी॥ तान मातनैं सो प्यो आ
य॥ जनम सुंफल सुं रअपनों जो निकै जी॥ सिद्ध स्थांनका
पो हच्या जाय॥ अव मो है॥१२॥ निसिदो यजि की प्रभु जी च
ढि रही जी क्रिडा करि हैं आंगण मो हि॥ बालपणो सो प्रभु जी
रमत है जी॥ ईस विधि दिवजरणगुमांय॥ यक दिन तो वेत्र १
जा माहाराज है जी सुन क्रीडा की करवा जाय॥ रतिवसंत तो
है आई मिली जी जलक्रीडा नी सव ही कराय॥ अव मो है॥१३

केरूपयाउ वहलधरजादवाजी॥मतो मतो छे हेजी हवार सा
रामे ही वलकुंणमेघणोजी जी कोअ वही करोवीचार॥कोई
वतावेयोउव महावलीजी॥कोईवतावे केसिवराय॥सार
ही कोहेवल तोलियोजी॥षडासनामेंसवही आया॥नेम
नाथकीसरभरकोनहीजी॥वदनरहेसवही विलषाय॥
अव०॥२४॥केसिवकेंमनसंसोउपनोजी॥निमतजम्पोनी
पुंछणजाय॥व्याहकरावोनेमकुंवारकोजी॥मनमें वेराग्य
हेउपजाय॥उग्रसेणकोंटीकोनेजियोजी॥राजलदेनोथी
नमगाय॥समदविजेजीराहेतनंदनजी॥उग्रसेनवीमनह
रषाय॥वडी वधाईसवघरवारमेंजी॥सजेनगरवाहेकोरी॥
पाय॥अव०॥२६॥लगनलिषायोसुभदिनसोधिकेजीदी
नोवधजललगनपठाया॥समदविजेजी कलससो पिये
जी॥पोहजकहजषीदाय॥जोनदिगंवरप्रभुकीहदवनीजी
छपनकोडिसवही सिरदार॥जादववंसीसारासंगलीपा
जी॥चदयाव्याहजनेमकुमार॥अव०॥२६॥जुग्यांगदनी
डरलभआईयाजी॥तोरनवदियानेमकुंमार॥पसुंवन
कोमीहिवाडोभयोजी॥पंजीवोकरीपुकार॥सुणीपुका
रजीवां तणीजी मनवेराग्यहेउपजाय तोरणसेतीरथफे
रियोजी जायचढ्याछेगढगिरनार॥मावरयांप्रभुमेसुणल
हीजी॥तोडागेणांनो सरहार अ०॥२८॥ तातमाततनी योसम
जाईयाजी मेहमी आरीथांकीलार॥अरज करूं प्रभुथेचित
धरोजी॥येकवातकीवातहजार॥नवसमुझलप्रभुजी
रहेजी॥तुमहीउतारोजलसेपार॥सेवकुंगाडोहेप्रभुवीन
वेजी॥नविजीवनकोहेआधार अ०॥२९॥राजलतवहीहे
अरजकानईजी॥उछेरतपहतहेकोईधार सुगसोलेवे
सुरललतांगमयोजी॥अस्त्रीलिंगछेदिकोईसारनेम
नाथजीकोमुकगयाजी॥सीछिसथांनकपहोव्याजायगो
सीसुणसीपदसीनावसोजी॥सोपंचमगतिहेकोईपाय०
अव०॥३०॥ईतिदसनवनेमनाथजीकासंपूर्णं॥

अथनेमनाथजीकोबारमासोलीखते।।सहलोहेआयोछेसा(
वणमासंषेलाणचालोनीजडीजी।सहलोहेराजलंकीपेछेसी(
गारनेमनमनावणकारणजी।सहलोहेनेमजीलीयोछेवैरागफी
रीपाछोचोघबीजी।१।सहलोहेनाडुंगरांपानलावमहीक्व
लवीगासीपाजी।सहलोहेनेमजीनकहजोजायकेलष्ककरो
नेवाहडोजी।सहलोहेमाहनेनहीलगारा।।पेहेनासजमले
पस्याजी।२।सहलोहेआसोजीआथीकारउसराहोयेघरांकरो(
जी।सहलोहेनेमजीकीपकडीफटेहाथजोडाबीनतीकराजे
सहलोहेनेमनमानवानाराजलमनवीलीषोगयोजी।३।सहले
हेकातीमंकोणवीचार।नेमनरांषवासतोजी।सहलोहेघरांघर(
दीवलाजोपरूदीवलावीनकारोहोजी।सहलोहेकामणकी
योछेसीगाररूनेमवीहणोमोरह्याजी।४।सहलोहेमागीआमंर
जाद।रूनेमनीणोकोरहजी।सहलोहेवामणआपडगवार।।
कुडोलगनेलाष्यायोजी।सहलोहेमाहामकारेचुकवीणश्रो
वगणरूकोअरीहरीजी।सहलोहेपोसमपुरीआसीसं।रूजीनर
सीकोरेहजी।सहलोहेचालोसषीदससाथी।पहरीपटमंरसव
टोजी।सहलोहेनेमजीनकहजोजायेराजलआवआसनजी
।६।सहलोहेमाहामासंकीरानी।रूनेमनीणोकोरेहजी।सहले
हेनेहननोडआजापआछनवनकीआरतडीजी।सहलोहेवा(
मणनकारेदोसकरमलाषोसोपायेयोजी।७।सहलोहेआयो
छेफागणमासहोलीपुजणचालायजी।सहलोहेषेलसषीव
संत।षेलवामणवाणभाजी।सहलोहेषेलसाहुपोणीरूवाणषे
लीकोरहजी।८।सहलोहेआपोछेचेतमास।ममतानाजीमनंग
णीजी।सहलोहेसनामसमकाय ओरनेलावरआणीस्याजी
सहलोहेनेमवीनाओरकोनहीपानावरावराजाणीस्याजी।९।स
हलोहेवसाषावनमाहीदषतलतुम्नारहाजी।सहलोहेराजलदो
सोवोलकडवामीठसहकोहोजी।सहलोहेदेषीचीतवीचार

सासोना गोमनतणोजी।१०।सहलो हे आयो छै जेठमास राजल

मनगा छो कीयोजी।सहलो हे तो आ छै नो सरहारंभंन सं तोषो

आपणुजी।सं हलो हे ने मजी सुकहजो जाप्या मेहा ना सडामले

मीलाजी।११।स हलो हे आसा छा आथा कारगी रना सा च छीवा

लीस्याजी। स हलो हे राजल नेमकवार दो न्यामीली करानपला

पीजी।सहलो हे योह आ छै मोषा ड वा राजन मसुधारो आपणो जी

१२।स हलो हे जवा छै जनका र पुज ण आ मा देव।।ताजी।। सह

लो हे राजल नेमकवारजी ही की लूह रागा पस्याजी। सहलो हे

पासी सुष आपार यासी सपती आती यनीजी।।सहलो हे देषस वंस

मारसु जाणवाणी गा वमनतणीजी। सहलो हे गा वस वनरीना

रीनारी आप सु दरागा यस्या जी सपुरण। दस कनली हमी राम

गो धाम।।।१।। आ बेने राये ध्यान वो पैच तेरापीष को चलायो तीमे एती

वस्त डरिकरणी ठहराई ती को कागद कामाका साहिमी नाथा न स

पा ने रिका गो दी कां लिषि चलायो ती को उवाजु बा बआयो नी की

नकलका गद कर। रमिती फागण सुदि ४ संबत १७४८ णा कीस

गा ने रिका महाजनां ने कानावत जला सरहंसि धि आसाग निरसु

नमथानें कजनेकशोपमाजोगपना रजी श्री मुकंददासजी नाह

जी श्री दयाचदजी नाह जी श्री महासंघजी नाह जी श्री छाजुसा

हजी वाकील्याणदासजी वासुदरदासजी वा बीहारीलालजी स्म

ससाहिमाजोग पलिषतकामधि हरकीसनदास चिंतामणि देवी

दास नंदलाल जगनाथ केन्स श्री सबद बचा आ वा कासमाचा

रभला छै थाका सदा भला चाहिजे अर्पचि कागदथा को आ

यो समाचार जाएमा आगे इहबिधि हो य छी ती म रतना हा

लमे टीमा त जलपाचाचा अजबराम गोदा का काडेरा मैं

छीना सुतकल छौ॥

।।१।। श्री प्रतिमाजी आगस्नानरण हो ती अबै नी रानरण हे

।।२।। छै। श्री भगवानजी की पुजा ब गिकार ताअबै वना हे पक

वा।।र छै। श्री देहराजी मने डारर हे छी सो अबे नेमार उरिक

कर्मो आगासे नीजे मारग षिवाने पावे निरमायल वहरायो ।।

४।। आनी जलीट परिपथ एय कलसटा ल तसो अबे मा जी का प्रति।।
मा तो बेद्रा उपरि वा राजे जेवा की ते वे ही रहे अरमु वा आगे अंला ह।।
दा कलसटा ले अै से तो या विधि छे आगा ये ता उमेद मारग्राजो पु।।
जीरा तिन होय :

५।। आरसो तिक विधि बेत्र पा लनो वग्रह की पुजा होय छी सोम नेकरा

६।। आरसी देहराजी मे जुवा षेल ता सोमने ।। :।।

७।। देहराजी मे बीड़ा णावगैसे ती बहा लिखे ता सोमने :।।

८।। श्री जी की पुजा करता आरसा मप ड साधा ल ता सोमने ।।

९।। देहराजी मे माल लेता सोमने :।।

१०।। देहराजी मे नो जिमजाता सो अबे दरवाजा बारे रह माहि पसि
वा नै पवे :।।

११।। देहराजी म जुत्या को जोडो लेजाता सो अबे मनेकरा दरवा(
जा बारे रहे।।

१२।। लोग वगे को आगे नो छुपि पोंचा रामे या लिच रहे मत्ता सोमने
+।। रा छुपहली मो जिगमा जता सोमन कमा।।

१३।। अबे महाजन हा रा छमा ज छे पाणी पुजने म्हाजन हा ल्यवे

१४ नाहवण मे जिग घर घर से ती ल्यावता सो अबे म।।
ने कमो अरएक सरावगी हा एक घर से ती ल्यावे :।।

१५।। कुलिगा वगे· निरमा यल को आगी कार करे तो नमा ना नहा

१६।। ताल का लरि ने जाग कसा वट बजाव ता सोमने :।।

१७।। रांधो ना ज चढाव ता सोमने ।।

१८।। थाली मी चढती सोमने :।।

१९।। देहराजी मे आपस मे को इकहीने उठि उन्नो न हो य रा क
भगवानजी की बैठगी मे रहे ।।

२०।। नाद वा सुदि १४ के दिन लुगाइ आजा की भेरी चो गिरदा
फेरा आपस मे कूटका लेर सोमने :।।

रातिपुजाजी नकरे दिन ही करे॥
२२॥ रथजात्रा नकरै जो अजजीवकी उतपतिघणी ती सुं दया नस धे सो दयाए बिकामकरणु॥
२३॥ श्री देजराजी मे सो वे नही॥
२४॥ लुगा इगोली दालती सो मने॥ सो
२५॥ श्री प्रतिमाजी घराघरा ले जाता अ समाकने सोम ने॥
२६॥ श्रासिकाने इलिषोसो जुवा बली बणरदलबदलछे
२७॥ निरमायलसहरमे बिकबा ने पावे॥
पञ्चारो चवटे सो नो जिमले छु सो॥ स्वाहा सवदको अरथ हो म करिबाको छे॥ नीरमायलको जे जी कुभोगी कार करे छे सो वे जीव नरक निगोदमे जाय छे सो चिनाम णि के मेरे पुजाजी हो य छे तीवे हो म की जे छे अरु पंचायतिरे जे जा हो म को करि बाको नमे दूषे छे और निरमायलबिसु सा॥ सो विषमाय सो मरे
॥२१॥ श्री जिना पनमा सहर बडे लेषडे लवालण लाकम्या तिथ यीसा मे आधी मे नोबडे लवालवा साण॥ अरु आधी मे बडे लवा लम हाजन ति ह आ धी मे पाव न्या ति बडे लवा लवा लम हे श्री अ गवन्या ति बडे लवा ल आ च गा ति ह आ वग पां को मोरा क रु श्री सहर बडे ले षडे लगि स्वो हां एराजकरे॥ सो सहर को सा २ ९ वा ई सके फेरि बसै॥ अस्कोडि धजसाहा कोट मे॥ २२०००१ बसे॥ अर ९ ९ १ देजराजे नका॥ सो एकसमै म लवा ईको दूषल हवो॥ अ षि के स बराजा पडिता नै बुलाय बुझ्यो जो पो दषल कादि मिटे॥ तदि प डिता कहि वारा चा रस तां इरहसी॥ तब राजा क ही उजा बीज॥॥॥ ८ तासा को ईपूल को उपाय करो॥ तदि हो बांम्हणां कही जन न मे द जग पकरी राजा कही कुं ण न्रहा॥ तदि ब्राम्हण कहीजएकसो एक र आदमी हो मि हो मिजे॥ तदि हो मकी तयारी करी राष॥ सो देई जोग करिजती॥ ५० ०पांच सै नगन मुरा धास्वानजस्याय ज्ञान सां को अ पाडो बाग मे आय उतस्यो॥ तदि प डितराजा का बिना उकम॥ १०१ एकसो एक जती हो मां ति ह पा पकरि सहेरमे मलवा

री॥६॥ छठो बिक्रमसोसंबत३ मोत्रछहंकारा॥ बंससोमकू
लचऊंवांण॥ उतनछहंकार्यो॥ राजिश्री छेरामजी कूलदे
व्याचक्रेस्वरी॥ मासकेती॥७॥ सातवो बिक्रमसोसंबत४(
गोत्र नरपति हेला॥ वंससोमकूलचऊंवांण॥ उतननरपते
राजिश्री नरोतमगिरकूलदेव्याचक्रेस्वरी॥८॥ बिक्रमसुसं
वत४ बैसाषगोत्र पावडे किधस्या॥ बंससोमकूलचऊं
वांण॥ उतनकीधस्यो॥ राजिश्री काकारामकूलदेव्याचक्रे
स्वरी॥९॥ नवमो बिक्रमसोसंबत४ मासजेष्टगोत्रजल
वाण॥ बंससोमकूलचऊंवांण॥ उतनजलवण॥ राजिश्री
जसोमयकूलदेव्याचक्रेस्वरी॥१०॥ दसमो बिक्रमसोसं
बत५ मासआसाढगोत्र सुलण॥ बंससोमकूलचऊंवां
ण॥ उतनसूलाण॥ राजिश्री धुधरमलकूलदेव्याचक्रे(
स्वरी॥११॥ ग्यारवो बिक्रमसोसंबत५ मासकातीगोत्र
दरडोया॥ बंससोमकूलचऊंवांण॥ उतपनडरडोयो रा(
जा दमतारिकूलदेव्याचक्रेस्वरी॥१२॥ बारहो बिक्रम(
सोसंबत६ मासफागुणगोत्र राजनद॥ बंससोमकुल
चऊंवांण॥ उतपनराजनदराजा रामस्पघकूलदेव्या(
चक्रेस्वरी॥१३॥ तेहरमो बिक्रमसोसंबत६ मासजेष्टगो
त्र उकडा॥ बंससोमकलचऊंवांण॥ उतपनउकडो रा
जा उदजनस्पघजी कूलदेव्याचक्रेस्वरी॥१४॥ चोदवो गोत्र बि(
क्रमसोसंबत॥

१३३

~~रीनमुणांजीआ सतसहजार १७००० सोकोडीधनमुधासांके~~
पांणीदेवीनरह्यो तबनागनगरसीतटारकाश्रयसजितजीपसके
तनांमतसोनइजीजिनसेनजीचेलानेविदाकीयेकहीजषंडेले
पधोपाय[illegible]तदेमासमागिश्रिगोत्रसाहबडावंससोमकूलचू
[illegible]वाण उतनसाहबडोराजासाहिमतजी।कूलदेव्याचक्रेस्वरी
आठैवीदसिचाकीफेरिजेनहा।१५गोत्रविक्रमसीसंवत१७मास
बैसाषगोत्रपाटणीवंससोमकूलतूवरउतनपाटणिराजाउम
रांमजीकूलदेव्याश्रीमणिबाहणवलधलाटैनौहसीहोयगा।
पुर्बचैतोहसीहोयाइहत्रहजिनसेनजीयानैजैनीकीया।आगे
घगखवतपति।जसोभद्रजीकेवारेसरबएकछासोआजमोभ
द्रजीजैनधर्मकोबिद्यमांनजांणिकरिसरबसिष्यजताजना।
मेकहीजुषंडेलैउतपातऊवोसोअबकोईजावोतबसगल
कहोजज्याहनेश्रीगुरुआपअ्रापाकरैसोजावेसीघागुरुआ
ग्यानोओरहीनेकरीछाअरजिनसेनजीउतमतपकोहो
यकरिकहीषंडेलेऊजासु।तदिसबलपअ्राग्याविनांहा।
गमनकीयो।तदिसिष्यछास्योबिचारीजोमोतोउतमतहो।
यअ्रगयोसोजिनसेनजीषंडेलेजायअरषंडेलवालमहा।
जनछाश्रेष्टास्यांमेआपवाकीरष्याकरीरष्याकरीअरए।
जाषंडेलगिरकीगोलीमेटासोषंडेलेगिरआदिनारी१४चौरासी
जैनीकीयांनैठापछैजिनसेनजीकालवसिऊवांतैठायछैगोतन
वांध्योषंडेलगिरआदिचौदानारतोजैनीकीयागोतबांध्योयछै
बाकीगोतओरओरांआचार्यांप्रतिबोध्यागोत्र७४चौरासीपर
जंतषंडेलाकागांवांपुआवकतहारकांआयणकीया।जसोभद्र
जीपछैजिनसेनपुहागांवमेरह्या।जलीसोमहाजनांनैप्रतिबो
धिअरगांवमेजिनसेनजीरह्या।जसोभद्रजीताईतोबनवास
छायाछैभद्रबाऊजीपाटिबैठासगला।जस्यांआणमोनां।
अरंआयनम्यापणिजिनसेनजीआगयानोमोनायणिहजू
रिनमया।तैठास्युगछबिरुद्रहोतागया।पणिभद्रबाऊजी
ताईतोबनबासारह्या।आगेतांबरजीघणादिनतांईबनमै

लेजाप्रग्रहारकीयो। जेठापा छेग्नढ बाऊजी डरसी सदीजनुगुरू ले
पीछे यारी बांह्यां सिछिमतिहोह तैठासुन्या दिसुसुणजीनो कीये
ग्रांस्त्रोरष्णुरारणपुरा नपस्त्रा। जिनसेनजी कालबुसिजवा ग्रर
ग्रेठा हीसु याकापंष्यां केमागयीग्राषा छुटतीगइया। ठवरलि।
ग्रोरपकडा तेठापा छेग छुग्रापग्रापणा वाध्यां समो थिकोर
ग्रापणानगरकग्रावककीयाग्रावगाकेग्रग्रहकीयो। पम्हे
कासोषंडेलवाल ग्रावकाकावंसकीया। जाति गोतचोरासात
कोतपसीलछे। १ प्रथमगोत्रसाहवंससोमकूलचोहाणाउतन।
षडेलो। राजाषंडेलगिरकूलदेव्याचक्केस्वुरी विक्रमसोसंब
त१को। २ गोत्रनवसोवंससोमकूलचोहाणाउतनग्रावसो।
राजाग्रावस्पंघकूलदेव्याचक्केस्वुरी विक्रमसोसंबत१। ३ गो
त्रपहाड्याउवससोमकूलचऊंवाणउतनपहाडयो। राजापूर।
णचेरकूलदेव्याचक्केस्वुरी विक्रमसोसंबत१। ४ गोत्रपापडी
वालवंससोमकूलचऊंवांणउतनपापडिराजापोमस्पंघकूं
लदेव्याचक्केस्वुरी। एकसूर्य्यमाता विक्रमसुसंबत१। ५ गोत्रग्र
रडकावंससोमकूलचऊंवांणउतनग्ररडकोराजाग्रजब।
स्पघकूलदेव्याचक्केस्वुरी। ग्राठैचोरसिपीसेनहीचाकांकोग्र
पमानकरेनही। ६ गोत्रग्रहंकास्याबंससोमकूलचऊंवांण
उतनग्रहंकास्योराजाग्रनेरामकूलदेव्याचक्केस्वरी सांमसके
ली विक्रमसोसंबत१। ७ गोत्रनरपस्यावंससोमकूलचऊंवांण
उतननरयस्योराजा नरोतमगिरकूलदेव्याचक्के■स्वरी वि
क्रमसुसंबत१। ८ गोत्रपाडेक्रियसावंससोमकूलचऊंवांण
उतनकीयस्योराजाकाकायंमजीकूलदेव्याचक्केस्वुरी बिक्र
मसोसंबत१। मास बैसाष। ९ गोत्रजलवांणवंससोमकूल
चहुंवांणउतनजलवाणो। राजाजसोपपकुलदेव्याचक्केस्व
री विक्रमसुसंबत१। मासजेष्ट। १० गोत्रलुलणवंससोमकू
लचऊंवांण। उतनलुलाणो राजालुधरमलकूलदेव्याच
क्केस्वुरी। बिक्रमसुसंबत१। मासग्रसाढ। ११ गोत्रदरगेद

बंससोमकूलचहूवांणउतननदरजेहो।राजादमनारिकूलदेव्या
चक्रेस्वरी।बिक्रमसुसंबत्५मासकाती।१४गोत्रराजनघबंससो
मकूलचऊंवांणउतनराजनईराजारांमस्यंघकूलदेव्याचक्रे
स्वरीबिक्रमसैंसंबत्ईमासफागुण।१२गोत्रहकडाबंससो
मकूलचोहाणउतनहकड्रो।राजाहरजनस्यंघकूलदेव्याच
क्रेस्वरी।बिक्रमसैंसंबत्ईमासजेष्ट।१५गोत्रसाहबडाबंस
सोमकूलचऊंवांणउतनसा[illegible]हबडो।राजासाहिमलजीकू
लजीकूलदेव्याचक्रेस्वरी।बिक्रमसैंमेंबत्ईमासचैत्रसाटाश्र
ठेचोदसीचाकीफेरिजेनहो।सोश्राठकेदानचाकीफेरातब
हाघसोहाघलोलागाभेलिबालागाकहीजेम्हारोहादि
नघुजिनीकसोयांमुनेफेराश्रबजदिछेउ।जोऊजोसाहब
डोम्हाराबंसकौ।श्रोरकूलदेव्यायुजेतदिसौश्रौरलपुजे
लागासबत्।१५५५कासौचक्रेस्वरीबजनाकहुईहत्र
हषडेलगिरवंगेरहुआई।१७जातिचोहाणछासोजिनसे
नजीनेजेनीकीयाचक्रेस्वरीषंडेलगिरिकोगोलिमिटाल
सुपादेबाकूलदेव्याचाहराजिनसेनजीपछे।श्रोरश्रोश्रा
चार्य्यगोबापुयोतबाप्योसाकौनपसील।११गोत्रपाटणी
बंससोमकूलउँवरसोलषीउतनपाटणीराजापरसरांमजी
कूलदेव्याश्रामणिबाह्मणबलधलादेतोहषीहोयगायबे
चेतोहषीहोयबिक्रमसैसंबत्एमीतीबैसाषसुदि७पा
छैसंबत्१२०१वारैधरमचंदसिंधालाकेबछराजवासर
जपाटणीऊवासुकानीश्रालेमेएकनाईबोजिमेएकभाई
सांमरिकूमावैवासोबोजिमेमुकातीकादांमपऊंतानहांत
दिश्रजमूरतिलिषिहेरमपातिसाहासुंश्ररजपऊंचायकु
डायेबेटोकरिराख्योमुसलमांनहुवोफेरिहाकिमछेसांम
रिायोजोभाईसेरामुसलमांनकरूं।सोधिजायनायानेपका
ड्या।जोथेमुसलमांनहोहतदिवासराजवैसारानाईमसत
तिकरीश्रापसमेजोफलोधिश्रीपार्श्वनाथजीकीजातकोत

~~तेजापत्रेहारकीयो जेतमाहैमहुवाऊकीउरसासदीजनुसुरं~~
~~लेपाछेप्यारीवांजं[illegible]मतिहेह तेतसुत्रारिसुसुणनाते~~
~~कीयोच्यवञ्जोरमुराणापुरानपड़ा जिनसेनजीकालवृ[illegible]जत्स~~
~~त्रस्येनहीसुपाकायंम्येवैमामधीनम्माछुटलीमर्यपाठचर~~
~~तिञ्जेरपकरा तैतमाहैमछ्याप त्रापसमवाम्भी समोक्षिक~~
क्षिक्ष वलेरछ्टासोजोकह्यमेहपार्श्वनाथजीकीजातबोल
छाजोम्हांकोनाईवछराजनैञ्चाण्यादेषोतदिजात्राञ्चोवोसो
ञ्चबमेहथांस्योमिल्याम नोरथसिघिऊवोसोमुसलमानजा
त्राकरित्राबोतदिहाला। ञ्चबमुसलमोनक्षंतोजात्रालागै
नहीतीसुजात्राकरिञ्चावोछातदिवछराजकहोमैंतीचालु
गा। सोयेसाराफलोधीमैचालनागैलामेमसलतिकारीसा
जोवछराजनेदिनाईदेमारिजे। सोगैलामेदि नाईदेमाञोसो
सोपीरऊवोसो सारोमापानैदषलदेवालागया। तदिसारक
हिजोञ्चबऊंईसोहोपणईञ्चनथेसहाईकरोतदिपीरकहि
जो तदिषांनैक्षोउेमाहासुदि २ नैकुंडामेषायसोवासापा
टणीकायराकापीरनैमांनेजायुयीरणपाकुंडमेषापसंवत
१३२३ वासाकोसोटोयंडसी। १६ गोत्रगरांउननगरोबंसपा
मेचाकूलदेम्याञ्चोरला। १७ गोत्रराउकाउतनराठकोबंसपा
मेचाकूलदेव्याञ्चोरल। १८ गोत्रमोदाठतनमोछोबंसपामें
चाकुलदेमाञ्चोरल। १९ गोत्रमोछ्राउतनमोछ्राबंसपाम्ये
चाकूलदेम्याञ्चोरला। २० गोत्र[illegible]रावतंउतनरावस्योबं
सपामेचाकूलदेव्याञ्चोरल। २१ गोत्रबिलालाउतनबिलासे
बंसपामेचाकूलदिव्योञ्चोरल। २२ गोत्रजगराजउतनजग
जबंसनादेचाकूलदेमासोनल। २३ गोत्रछाहडाउतनछाह
डाबंसनादेचाकूलदेव्यासोनल। २४ गोत्रश्रीमूलराजतन
मूलराजबंसमोहिलकूंलदेमांञ्चादेबी। २५ गोत्रलटावात
टावालउतनलटावालबंसमोहिलकूलदेमांञ्चादवी। २६
गोत्रगोतबंसउतनगोतबंस बंसबेसदेनडाकूलदेव्याहंम
२७ गोत्रकूलनारणउतनकूलनारोबंसदेवडाकूलदेव्याहे

मा।२६।गोत्रबोरषंड्याउतनबोरषंड्योबंसगेहेलोतकूलदेव्या।
श्री।२७।गोत्रमोहनीउतनसोहनाबंससोलषीकूलदेव्याश्चाम
णि।२८।उतनसोरईजीगांवकैनाईसोरईगीनछैसोनानाषाछै
कूलदेव्याश्चामणि। अरसागरसोनापातिष्या।२५।सासूअगि
कराईसींबत।५५५।बैसाषसुदि३वारैमाथवेदकैअरषड
गुसोनीषंकेलामैसत्तुकारवरस।१२चाईदायो।संवत।११२
कासालमें।३१।गोत्रपावड्योउतनमाबड्यो बंससोलंषीकुल
देव्याश्चामणि।३१।गोत्रबूज्नहथ्याउतनषंडेलोबंससुदारहा
यमैहथ्योड्योउदिसुबज्रहथ्याकहांयाबजआषाछैकू
लदेव्याश्चामणि।२३।गोत्रश्चापत्याउतनश्चापत्योबंससो
लषीकूलदेव्याश्चामणि।२४।गोत्रगधीयाउतनधयोबंस
सोलषीकूलदेव्याश्चामणि।२५।गोत्र लोहगपाउतनलोहे
ग्योबंससोलषीकूलदेव्याश्चामणि।२६।गोत्रयापल्याउत
नपापल्योबंससोलषीकूलदेव्याश्चामणि।२७।गोत्रनोछउ
तनछूछेबंससोलषीकूलदेव्याश्चामणि।२८।गोत्रवाउवा
डउतनवाउवाउबेसचंदेलेकूलदेव्यामातणि।२९।गोत्र
मोलसस्याउतनमोलसस्याबंसचदेलकूलदेव्यामातणि
।३०।गोत्रनंगध्याउतनगंध्यागोकूलदेव्यानाहणि।३१।गोत्र
त्रगोत्रनगध्याउतननंगध्योबंसगोडकूलदेव्यानारणिसोया
दिहाडीरूपाकीछीसोगलायरसियासणघडायोश्चरदिहा
डीसोनाकीघणाई।अरयातिजगालागासोगोथामैसाहनंदगे
थोसिरदारछांनीहवरितहारात्रिपेडोपडेसोसाहनंदकोमा
थाकाहिदिहाडासमेतलेगयातदिसोगोथाहायो[illegible]देरपू
जबालाग्याम्रलीबरगैनीकजईहायेपूजनानारनादणिको
लितोहषपावैउदिनसूहरिपडिगईजोम्हाकैलोसा।तिनाघर
जीदिहाडीछैसोसांतिनाथजीतोतिर्थकरछैसोयेकहैछै।सो
नोलिसुकहेछै।संवत।१२५२।ईहत्रहपूजेलागानारणिमो
थाकैमभैछै।बंसगोथामैबेकठोल्यानीसस्यासंवत।१२०५के
सालमैंस्याकोश्चोरोसहदेवकोबेटोजिणदेवमणिदेवसो।

जिणदेवकातोगोथाहीकहावैअमणिदेवकाछोल्याकहावैसे
संवत१२७०कासुंकालपड्योसवत१२४२तांईबिरस१२लोंईसे
सतुकारदीयोछोलरासंवत१२४३देऊरोकरायोचौलटारकसुन
कीर्तीकै।६२गोत्रअजमेराउतनअजमेराउतनअजमेरीबंस
गोडकूलदेव्यानादणी।६३गोत्रचोधरीउतनचोधर्योबंसगोहिल
कूलदेव्यापद्मावती।६४गोत्रसेठीउतनसेठ्योबंसगोहिलकू
लदेव्यापद्मावती।६५गोत्रपाटोधीउतनपाटोध्योबंसगोहिल
कूलदेव्यापद्मावती।६६दुकसेठिगोत्रउतनडसेठ्योबंस
मेरछाकूलदेव्यालोहसली।६७गोत्रलुहाड्याउतणि।७५गो
त्रनरपाल्याउतननरपाल्योबंसधयाकूलदेव्यानादणि।७६गोत्र
सरबाड्याउतनसरबाड्योबंसधयाकूलदेव्यानादणि।७७गोत्र
दोसीउतनदोस्योबंसपडियारकूलदेव्याचावड्या।७८गोत्र
कडवागिरउतनकडवागिरबंसपडियारकूलदेव्याचारव
ड्या।७९गोत्रबंदायकाउतनबंदायकोबंसोलोतकूलदेव्या
बौथिचिदायकप्रतमाहोनंपूजै।८०गोत्रमोल्याउतनमोल्या
बंसपडियारकूलदेव्यानांदणि।८१गोत्रबडसालिउतनब
डसाल्योबंसपडियारकूलदेव्यानांदणि।८२गोत्रपाड्याउ
तनपांड्योबंसनिरबाणकूलदेव्यासरसल।८३गोत्रहरिकप
ड्याअमणपाउतनपावड्योकूलदेव्याअमणिअछैचोद
सिमायदेहिजेवहीबलधबेचेनही।८४गोत्रबजमाहण
उतनषंडेल्योबजरहथोसुदारकूलदेव्यामोहिणि॥ ॥
इत्रहैचोरासीजातिकाबंसगावउतनकूलदेव्यासुधालि
ख्याछै॥:॥:॥ ॥मत्तमथनसुरदासकृतजषडीलषते।
मनमांहिलारैसीषसुगुरकीमानिलेरै टेक ।यासंसारअसा
गरबिचिकालअनंतगुमायो। मनुषजनमरतनचिंतामणि
नागिउदेकरिपायो।सन [illegible] कुलअरसंगतिअछी।सम
किदेषिमनमांही। सबबिधिनलीबणीबिलाई मोलबणता

माही॥मन०॥२॥ इसऐसो सरमै घरमनसे पा॥ विषपनसूं रतिमां
णी॥ इस विधिघाटसु हेला जाण्या॥ क्यासमझ्या बेश्राणि॥मन०॥३॥
कंचननाजन गंगाजल बिचि॥ वलरंधो क्या कीया॥ नरभव पा
यविषसुषसेया॥ फिरि तुम्हा टाजीया॥मन०॥४॥ ऐसा ऐसोसर
या पत्र नागण्या॥ सुषदाबीजन बोया॥ विषेविषादजुवा विजमटे
जनमजोक्या रजुषोया॥मन०॥५॥ औचपहरमैं कहर करी तैं॥ सा
रोघडीगुमाई को ड्या॥ मस्याहाथिन आवै॥ पावूडा चतरांडू
मन०॥६॥ पापधतुरा वीयन जो ड॥ मानिक सानू मेराफल चव
दी बारहो पजव तोवैगा॥ बहोतेरा॥मन०॥७॥ ऐजू समझिसमझि
मिहलूं करिलै कछू न लाई॥ मजि जगवं ननगई सगई अब ए
गिरही को नाई॥मन०॥८॥ ऐसे कहु करि गुरु समझावै॥ जो गरमै
नन नहि धारै॥ प्यासूं अधिक कहा कोई कूं॥ लाठी लेकरि मारै
मन०॥९॥ भरदी आ पिउ यार नवा लाबे रन मिलि या कोई मू
धरन लिवलिसतगुर की॥ दिल री विदन पोई॥मन०॥

अब मन मेरे वेसुनि सुनि सीष सुग्यानी॥ जिनवरचरनां वे करि
करि प्रीति सुग्यानी॥ करि प्रीति सुग्यानी॥ शिवसुष दानी छै नजा॥
न वहै पंच विहूंना॥ कोडि वरष जीव भौ किस लेषै जिनचरणांबुज
न किवना॥ नरपरजा पुण्या पत्र तिउ तिम गर्भ सफल ता हो लह
वे॥ समझिसमझि प्राणी गुरग्यांनी सीषसयांनी मन मेरे थानूं म
नितर सेवे संपति दे विपराइ आवो पानूं नी पांवे जो निज पूर्व कु
माई॥ पूर्व कुमाई संपति पाई देषि देषि मति झूरि मेरे॥ वोपव
बोल मूल न तजो हं कों आवन की [illegible] सकै॥ अवनर
समझि बांधि कछू मो राज्यो पछि नव सुष इरसे॥ करि जिन धर्म र
ननपसंजम देषि विनै परमति नरसै॥२॥ जो जगदासे वे सुंदर
हे सुषदाई सो सुष न फलि पावै धर्म कल्प दुम भाई॥ सो
सब धर्म कैलप दुमफलिया रतिपायकज्जवरिद्धि सहीं [illegible]
जतुरंग तुरंग गजनो निधि चौदह रतन छषंड मही॥ रतन नि

पापरूपकीधर्मफलपाईजैजगसूंदरदिष्टवैरी॥नू॥लगोअसुंदर
वेकंटकवानषनेये॥तेरसवेरसवेपापकनकतरकेरेतेसबस
पकतकनरककेवैरोगसोगउपनित्तनशा॥कछूनसरास्वारतह
तनपरघरयरफिरतफकीरतण॥नूषण्णासंपीडाउत्केंनरहै॥
नअनादरपमपगमैंएसबजानिपापफलनाई॥लगेअसुंदर
जेजगमें॥४॥इसतनक्षनमैंबिरदोजंतुरनैंजानी॥अबजोना
वेवैसोईसीषसूपानी॥सीषसपानीजोमनमानी॥बेरबेरअब
कोनकहै॥सूकरतातूहीफलनुगता॥ : ॥आपनासुषड
अपापसहै॥धन्यधन्यजिनमारग॥सूंदरसेवपन॥जोगतिरूप
नमे याकेसमकिपरीसबनूंदरमरासरनईसनबबनमें॥५॥इतिं
पूर्ण॥अथवीनतीलषते॥ परममाहाउत्तकपुआदिसुगुण बीनती
बरधमांनजिनपासि हमारी बीनती॥ जिणचौबीसुपापनमो सरि
नायके॥अरजकरोंप्रभूसेवगओसरपाइके॥१॥अगतभम
तसारचतुरगतिदुषसह्या॥ तिनिसमप्पामिथ्यातवरसुष
नालह्या॥मंअजाणमुतिहीणजेदनहीपाईपीक्रवऊनगन
न॥हो पसुजसतुमगाईयो॥२॥गुन्हगारकौगून्हेंमाफअब
कीजिये॥ तुमहौदीनदयालदयाचितदीजीये॥ यकवारकौ
बारहजारजुगानीये॥लीजेमोहिनबा रिजअपनौंजानीये॥३॥मु
बबपुतिउदप्रभुमेरोआईयो॥मिथ्यातमरगयोतुमद
ईयो॥जनमसफलनमैंयोआजिआजिप्रभुनेदरिया॥जन्मज
न्मकेपापआजिसबमेटिया॥४॥जन्मकृतारथअजिजुंअ
पनौंजानिये॥नामकलंकरहितपदअपतुमानिये॥
बरदतुम्हारोअबमोहिस्यारिये॥भवसमुद्रतप्रभुजी
रिये॥५॥तुमसमओरनकोमदेवन्हादषिया॥उघहारसुष
कारीनमूहीमया॥इधनरंजधनेजसबतुमपावहीं॥तुम
रतनाघपरमरन्यावहीं॥६॥गुपाधरमुनीवरनेष
दिही॥सबहीकोप्रभुतुमसवपथलगाईया॥ताअरूदेमदो

नघ[illegible]तेवर्धानकौ। तुमप्रसादनहरिषप्रयोनिजथ्यानको॥७॥
तुपरमातमदेषितुपदंअपनोलिष्यो॥आतमअनमोसअ
पूरबगुणचष्यो॥सांसोसबमेटिगयोम्हाआनंदपयोअल॥
अषिंडतनिजपदनोजथटमलयो॥८॥नमोनमोप्रभुदेव
हरिषअरिआनिकै॥मगनभयोतुमानिरषतजिनप्रभुजाने
कै।योहमलिगतिनरनारीजोमनिथरिगावही॥अजराजक
हसुषमुकतिसुषपावही॥९॥ ॥ ॥इतिवीनतीसंपूर्ण॥
अथअजितनाथजीकीबीनतीटालगीनाथडीकीम
देवधरमगूरबदकैजी॥सारवलागुपाई॥अजितजणराज
जीमोहिप्यारालागाजी॥प्याराजोलागोवालिहावी॥सोअर
तीपेमेह॥अजित॥१॥बिजयारेतुराणीतणाप्रभूकंषिलीपो
अवतार॥अजित॥२॥नगर॥तुअजोध्याकेविषे॥राजाजि
तसत्रुकुमार॥अजित॥३॥इंद्रमहोछवआईया॥कीयो
जन्मतणोरछाहे॥अजित॥४॥इंद्रइंद्राणीबीनवाप्रभु
तुमत्रिभवनकराय॥अजित॥५॥हेमबरणकायादिपे॥प्र
भूकोटिसूर्यछुपिजाय॥अजित॥६॥लछिणसहसअठो
तरा प्रभूदेषतअघमटिजाई॥अजित॥७॥सुषनानाविधे
भोगयाप्रभूकहतनआवपापर॥अजित॥८॥तवमनमेयो
चिंतयो॥प्रभूछोडिपरिग्रहभार॥अजित॥९॥तपधरिक
रिनिजकाजकोप्रभूघातीयाकर्मप्रजारि॥अजित॥१०॥
तवसुरपतिमलिआईयाप्रभूसतूतिकीरीमनलाय॥अ
जित॥११॥केवलज्ञानतुपापको॥प्रभूसिद्धसरूपसम्हारी॥
अजित॥१२॥जेनविजनसरणेलीयो॥तुयोअजुस्वअमरप
दसार॥अजित॥१३॥म्हारेआनरणडिहाजहैप्रभूभवसमु
द्रकौपार॥अजित॥१४॥लेनरनारीमायणप्रभूसुणिसीमन
रविच्यारि॥अजित॥१५॥चंदकर[illegible]वीनतीप्रभूराषो
आधार॥अजित॥१६॥संपूर्ण॥॥श्री॥ ॥ ॥ ॥श्री॥

नगर तहां देवपूजा आदि श्रावक के षट्कर्मनि मैं साव-
धान अरहा धिक सम्यक्त्व रूप सूर्य के प्रकाश करि समूल
तैं नष्ट कीयो है मिथ्यात्व अनंतानुबंधी कषाय रूप घो-
मो है अंधकार जानैं ऐसो विमलवाहन नामां वैश्य। अर ता-
के रति का रूप के जीतनहारे है रूप जाके अरहंत देव की पर-
म भक्ति की धरणहारी लक्ष्मीमती नामां स्त्री सो पंचेंद्रि-
य संबंधी मनोहर भोगनि भोगतें जे दोऊ सेवाणी तिन-
के वे तेरे दोऊ भाई निकेती व अरिंजय अमितंजय
नामां पुत्र भये। बहुरि पिता नैं सप्त वर्ष के अनंतर जैनो-
पाध्याय के समीप हम दोऊनि कूं च्यारूं अनुयोग के
समस्त शास्त्र पढाये। बहुरि पिता नैं विद्याध्ययन की-
ये पीछे हम दोऊनि कौ विवाह करनौं विचार्‍या सो ह-
म नैं गृहवास मैं के दहोनें का कारण जो विवाह सो नां-
ही कीया। बहुरि कुमार काल विषैं ही आकाशतल मैं
जल करि निरै जे मेघनि के पटल तिनका विलय कहे
एं तत्काल विनाश देखि संयम धरि गुरु कैं समीप ह-
म समस्त बाह्य अभ्यंतर परिग्रह कौ त्याग करि जामैं
काऊ प्रकार ही आवरण कहिए च्यारि प्रकार के स्त्रक-
रि अंग का आच्छादन नांही। ऐसी निरावरणी भगवत
दीक्षा अंगीकार करी। बहुरि नैं दीक्षा रहत अंगीकार क-
रि अर चतुर पुरुषनि के चित्त कूं चमत्कार के करनैं
वाले ऐसे महा उग्र तपश्चरणनि के प्रभाव करि हम
चारण रिषि भये। जो सार्वभौम षट्खंड की समस्त ध-
रा का एकछत्र नायक हमारे ऊपरि स्नेह का कारण
अपनैं पूर्व भव का संबंध जाणि भावार्थ। हम दोऊ पूर्व-
भव मैं तेरे लघु भाई थे। तातैं तेरा हमारे ऊपरि अत्यंत
स्नेह भया है। बहुरि चक्रवर्ति कहै है हो तपोधन मोहि कौं
कछु अद्वितीय सत्यार्थ उपदेश देहु। मुनि कहै हैं भो राजन

ऐसें भी नंदीस्वरव्रत की विधि सहित सिद्धचक्र कौं पू
रि चक्रवर्ति कही। जो आप कृपा करी कि तूं नंदीस्वरव्रत
कार करि सो तो मेरे उपरि आपका वडा प्रसाद भया। परंतु भो
पती ऐसो व्रत किण सी विधि करिये सो विधि कृपा करि क
हो। तव मुनि कहै हे भो राजन इस जंबूद्वीपतें आठमो नंदी
स्वर नामा द्वीप है। ता का अर्थ प्रथम जंबूद्वीप है।१। द्वितीयद्व
प धातकीखंड है।२। तृतीय द्वीप पुष्करवर है।३। चतुर्थ
द्वीप वरुणवर है।४। पंचम द्वीप क्षीरवर है।५। षष्टम द्वीप
घृतवर है।६। सप्तम द्वीप ईक्षुवर है।७। अर अष्टम द्वीप नं
दीस्वरवर है।८। तिस नंदीस्वर द्वीप विषैं अर्हंत देव के चै
त्यालय है तिन कौं स्वरूप कहूं हूं सो तूं सुणि। तिस नंदी
स्वर द्वीप के मध्य पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशा विषैं इ
न्हीं नाम के धारक तेरह तेरह पर्वत हैं सब मिलि च्यारूं दि
सा के बावन ॥५२॥ पर्वत हैं। तिनि पर्वतनि के शिखर परि
एक एक चैत्यालय है॥ ते चैत्यालय सौ सौ योजन के लां
बे हैं॥ अर पचास पंचास योजन के चौडे हैं। अर पिचे
त्तरि पिचेत्तरि योजन ऊंचा प्रमाण हैं। अर पंच वर्ण मणि
नि के समूह करि जडित सुवर्णमई जिन के पीठ हैं उरस
हैं। तिन चैत्यालयनि मैं श्रीमंडप मैं गंधकुटी कैं मध्य रा
कसो आवरतननि के सिंहासन हैं॥ तिन एक एक सिंहास
न उपरि अष्ट प्रातिहार्यनि करि शोभायमान पंच सै धनु
ष की उत्तम ऊंची अर अपनी प्रचूर प्रभा करि जीती हैं सू
र्य चंद्रमा निकी कांति जिन नैं। ऐसी अर्हंत देव की रत्न
मई मयी एक एक प्रतिमा विराजै हैं। ते प्रतिमा भी एक
चैत्यालय मैं एक सौ आठ हैं। अर तीसही नंदीस्वर द्वीप के
च्यारूं दिशानि मैं लाख योजन की चौडी लांबी समचौकौ
र हजार योजन की ऊंडी अर वन उपवननि करि मंडित
च्यारि च्यारि बावडी हैं। तहां असाढ कातिग फागुण ई तीनौ

मांसशुक्लपक्षकेअंतकेअष्टमीतैंलेयपूर्णमासीलौंआ
ठदिनपर्यंतनिरंतरचौसठीप्रहरचैत्यालयनिमैंइंद्रादिका
देवजिनप्रतिमानिकौंपूजनकरैहैं।तहांसौधर्मस्वर्गकौइं
द्रहैप्रधानजाकैऐसैजिनमैंऐसेचतुर्णिकायकेदेवदशप्रका
रभवनवासीदेवअरआठप्रकारकेव्यंतरदेवपांचप्रकार
केज्योतिषीदेवसोलास्वर्गसंबंधीसोलाप्रकारकेकल्पवा
सीदेवगजतुरंगसिंहशार्दूलवृषभहंसकूकडेआदिआ
पनेंअपनेंवाहनउपरिचढे।अरमृदंगढोलबंसरीवीण
दुंदुभीआदिअनेकप्रकारकेवादित्रनिकानादकरिआ
छादितकीयाहैदिशानिकामध्यभागजिननैं॥अरअपनीदे
वांगनाआदिपरिवारकरिवेष्टितचतुर्णिकायकेदेवते
नकरिजिनमंदिरनिमैंआयकरिवहुरिएकसौंआठसुव
र्णकेकलसनिमैंपंचमांक्षीरसमुद्रकौंजललायप्रति
प्रतिमानिकौंअभिषेककरतेभये॥वहुरिजलचंदनअ
क्षतपुष्पनैवेद्यदीपधूपफलइनअष्टद्रव्यनितैंपूजना
करिअर्घचढायवहुरिजिनेंद्रदेवकेगुणानुवादकरिग
र्भितस्तोत्रपाठपढिकरिवतीसइंद्रनिकरिसहितचतु
र्णिकायकेदेवअपनैंस्थानकजायहैं॥ऐसैंयेनौंमजो
विधिदेवनिनैंआचरनकरीसोविधितूंभीकरिसोविधि
जैसेहैतैसेंतोहिकहूंसोतूंसुणि॥असाढमैंकातीमैंफा
गुणमैंइनतीनमासकीशुक्लपक्षविषैंअष्टदिनपर्यंत
यहव्रतकरिएहैसोकेसेंकरिएहैसोंतूंसुणि॥सप्तमीकैं
दिनस्नानकरिअष्टद्रव्यनितैजिनेंद्रदेवकौंपूजनकरिए
कवारभोजनकरै॥वहुरिपवित्रहोयदेवशास्त्रगुरुनि
कौपूजनकरिपीछैसंध्यासमयकीसामायिककरिव
हुरिगुरुनिकैंसमीपअष्टदिनलौंब्रह्मचर्यव्रतअरभू
मिपरिशायनअरपत्रशाकादिकनिकात्यागअंगीका
रकरिअरअष्टमीकौंउपवासग्रहणकरिधर्मध्यानतैंस

अ० १६।२

सप्तमीकीरात्रिव्यतीतकरै।वक्ररिअष्टमीकैदिनप्रभातत
जिनेंद्रदेवकेमंदिरमेंमंडपरचनांकरै।अरमंडपकें
चूनादिपांड़ेमेरनिकास्थापनांकरै।अरतिनपंचमे
ननिकीकटनीनिपरिजिनबिंबनिकूंस्थापनकरै।
ताकेंअनंतरस्नानकरिअष्टविधिपूजानकीप्रासुकसा
सहितचैत्यालयमेंजाय।अरजिनेंद्रदेवकेप्रतिबिंबनि
कौंअभिषेककरिपीछेजलचंदनअक्षतपुष्पनैवेद्यदी
पधूपफलईनअष्टद्रव्यनितेंजिनेंद्रदेवकौंपूजनकरिम
अरमहार्घसहिततीनप्रदक्षिणांदेयकरिजिनेंद्रदेवनिके
चरणनिकेंअग्रभागमेंमहाअर्घचढायपीछेंयहचौईस
तीर्थंकरदेवनिकीजयमालाकौंपाठपढिये।सोसंस्कृत
कथाकारकेहैं।यहयावहमारेगुरुनिकरिविरचितहैं
॥अथजयमालालिष्यते॥ ईकतीसा॥२२॥ॐनमःसिद्धे॥
कांमकौकठिनघातकारूपेनसहैंजातताकूंमूलतैं
विघातिनरूपोलूममनकौं।जिनकेनांमसमरणतेंअने
कभवकेसंचितपापआपदविनशासवनके।रजनी
कहौंआधसरह्यायोअतिउनिवारऊगतदिवसकारन
सोजेनसेनकौं॥१॥पद्धडीछंद॥वृषभदेवकंचनछबिछां
जौं।धनुषपांचसैतुंगविराजैं।वृषभचिह्नपादनितलसे
हैं।वंशइक्ष्वाकजिनगमनसोहैं॥२॥अजितजिनेश्वकनत
नराजैंसदाच्यारिसैंधनुषविराजैं।गजलक्षनमनआ
नंदकारी।वंशइक्ष्वाककियोअविकारी॥३॥संभवजिन
तनहेमसमानं।धनुषच्यारिसैंतुंगप्रमानं।तुरंगचिह्न
सबकौंसुखदाता।वंशइक्ष्वाककियोजगख्याता॥४॥अं
तकूंनतनजितअभिनंदन।साढातीनसैंईसुअघभंज॥
न।बांदरलक्षणमदतलराजै।वंशइक्ष्वाकतिलकछबिछा
जैं॥५॥सुमतिजिनेंश्वहेमतनभासै।धनुषतीनसैंतुंग॥
प्रकासैं।कोकचिह्नसबजनसुखदाई।वंशइक्ष्वाकसिर

॥अथआरतीदसकलिख्यते।इहविधमंगलआरतीकीजे।पंचपरम
पदभजनसुषलीजे इहिविधिमंगलआरतीकीजे॥प्रथमआरतीश्रीजि
नराजा॥भवजलपारउतारजिहाजा॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे।१॥दूजी
आरतीसिद्धनकेरी॥सुमिरनकरतमिटैभवफेरी॥इहिविधिमंगलआरत
कीजे॥२॥तीजीआरतीसूरिमुनिंद॥जनमजनमदुषदूरिकरिंद॥इहिवि
धिमंगलआरतीकीजै॥३॥चौथीआरतीश्रीउवझाय॥दरसनदेषतपा
पपलाय॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे॥पांचमीआरतीसाधतुमारी॥कु
मतिविनासनसिवअधिकारी॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे॥छठीग्या
रेप्रतिमांधारी॥श्रावकवंदौआनंदकारी॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे
सातमीआरतीश्रीजिनवांणी॥द्यानतसुरगमुकतसुषदांनी॥इहिवि
धिमंगलआरतीकीजे॥१॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥करमदलनसं
तनिहितकारी॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥सुरनरअसुरकरततुम
सेवा॥तुमहिदेवदेवनिकेदेवा॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥पंचमहा
व्रतदुद्धरधारे॥रागदोषपरनांमविडारे॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी।
भवभयभीतसरणजेआये॥तेपरमारथपंथलगाये॥आरतीश्रीजि
नराजतुम्हारी॥जोतुमनामजपेमनमांही॥जनममरनभयताकौंना
ही॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥समोसरणसंपूरणसोभा॥जीतेक्रो
धमांनछललोभा॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥तुमगुणहमकैसैंक
हिगावै॥गणधरकहतपारनहिपावै॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी
करुणासागरकरुणाकीजे॥द्यानतसेवककौंसुषदीजे॥आरतीश्री
जिनराजतुम्हारी॥२॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥अधमउधार
णआतमकाजकी॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥जालछीकेसबअ
भिलाषी॥सोसाधनकरदमवतनाही॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी।
सबजगजीतिलियोजिननारी॥सोसाधननागनिवतछारी॥आरती
कीजेश्रीमुनिराजकी॥विषयनसबजियचोरेकीने॥तेसाधनविषव
ततजदीने॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥भूकौराजचहतसबप्राणी
जीरनतिणवतत्यागतध्यानी॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥शत्रुमित्रदु
षसुषसममानै॥लाभअलाभबराबरजानै॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥छ
हौकायपीहरव्रतधारै॥सबकौंआपसमाननिहारै॥आरतीकीजैश्री॥

मुनिराजकी॥ इह आरती पढै जो गावै॥ द्यानत मनवंछित फल पावै॥ ३॥
किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ आगम अकथ जस बुद्धन मेरी॥ किह
विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ समुद्र विजै सुत रजमत छारी॥ यौं कहि थु
ति नहि होय तुमारी॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ कोटि पंन वेदी
छ विसारी॥ समोसरण थुत तुम तैं न्यारी॥ किह विध आरती करौ प्रभु
तेरी॥ चार ज्ञान जुत तिनके स्वामी॥ सेवक के प्रभु ॥ इह वच षामी॥ कि
ह विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ सुनि के वचन न विकसित जांही॥ सो पुद
गल मैं तुम गुण नांही॥ किह विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ आतम जोत समा
न वताके॥ रवि ससि दीपक मूढ कर्के॥ किह विधि आरती करौ प्रभु तेरी।
नमत त्रिजगपति सोभा उनकी॥ तुम सोभा तुम मैं निज गुन की॥ किह विध
आरती करौ प्रभु तेरी॥ मान सिंघ महाराजा गावै॥ तुम महिमां तुम ही वा
वनि आवै॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अथ निश्चय आर॰ इह वि
ध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अमल अवाधित निज गुण केरी॥ इह विध
आरती करौ प्रभु तेरी ज्ञान दरस सुष वल गुण धारी॥ परिमातम अवे
कल अविकारी॥ इहि विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ क्रोध आदि रागादि
न तेरी॥ जनम जरा मृत कर्म न नैरे॥ इहे विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अवपु
अवंध करण सुष नाही॥ अन पअनाकुल सिवपद वासी॥ इहि विध आ
रती करौ प्रभु तेरी॥ रूप न रेष न भेष न कोइ॥ चिन मूरति मूरति नहि होइ
इहि विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अलष अनादि अनंत अरोगी॥ सिद्ध वि
सुद्ध सु आतम जोगी॥ गुन अनंत किम वचन वतावै॥ दीपचंद न्यों विभ
वन न्यावै॥ इहि विधि आरती करौं प्रभु तेरी॥५॥ आगे आत्मा की आरती
॥ करौ आरती आतम देवा॥ गुण परजाय अनंत अभेवा॥ करू आरती आ
तम देवा॥ जामैं सव जग वह जग मांहि॥ वसत जगत मैं जग सम नांही॥ क
रू आरती आतम देवा॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ध्यावे॥ साथ सकल जिहको गुण
गावें॥ करू आरती आतमदेवा॥ विन जानें जिय चिर भव डोले॥ जिह जानैं छि
न सिवपद षोलें॥ शिष्य अजेचवचन किरि कहिये॥ वचनातीत दसा तिस
लहिये॥ करू आरती आतम देवा॥ सुपर भेद को षेद न छेदा॥ आप
आपमैं आप निवेदा॥ करू आरती आतमदेवा॥ सो परमातम पद सुष

दा॥ करू आरती आतमदेवा॥ इती अवली विधि मोहारी॥ सो तिकुकाल करम सूंगारा

ता॥होहिविहारीदासविख्याता॥करौआरतीआतमदेवा॥६॥गोरी॥
गआरती॥कहांलैपूजाभगतचढावैजोगावस्तुकहांतैंलैआवै।
कहांलैपूजाभगतचढावै॥छीरउदधिजलमेरुकुलावै॥सोगिरिनी
रकहांहमपावै॥१॥कहांलैपूजाभगतचढावै॥समोसरणविधसर्वव
नावै॥सोनवनैंमुखकादिखलावै॥२॥कहांलैपूजाभगतचढावै॥जलफ
सुरगलोकतैंलावै॥सोहमैंनाहिंकहांचढावै॥कहांलैपूजाभगतचढ
वै॥नाचैगावैवीनवजावै॥सोनसकतिकिमपुन्नउपावै॥४॥कहांलैपू
जाभगतचढावै॥द्वादशांगश्रुतजोश्रुतगावै॥सोहमबुद्धिनकहांवता
वै॥आरध्यांनधरगानधरध्यावै॥सोथिरतानहिंचपलकहावै॥ध्यांनत
नीतसहितसिरनावै॥जनमनमनमयलक्ककमावै॥५॥इतिरागगोरी॥
करौआरतीवर्द्धमानकी॥पावापुरनिरवांनथांनकी॥करौआरतीव
र्द्धमानकी॥रागविनासकजगजनतारे॥दोषविनासककर्मविदारे॥क
रौआरतीवर्द्धमानकी॥२॥सीलधुरंधरसिवतियभोगी॥मनवचका
यनकहियेजोगी॥३॥करौआरतीवर्द्धमानकी॥रतनत्रयनिधिपर
महकारी॥ग्यानसुनैजनबुतधारी॥४॥करौआरतीवर्द्धमानकी॥लोक
अलोकव्यापनिजमांही॥सुषमैंइंद्रीसुषदुषनांही॥५॥करौआरत
वर्द्धमानकी॥पंचकल्याणकपूज्यविरागी॥विमलदिगंबरअंबरसा
गी॥६॥करौआरतीवर्द्धमानकी॥गुनमनिभूषनभूषनस्वामी॥जगत
उदासजगंतरजांमी॥७॥करौआरतीवर्द्धमानकी॥कहैकहांलौतु
मसबजानै॥द्यांनतकीअनलाषप्रमानै॥८॥करौआरतीवर्द्धमान
की॥इतिश्रीमहावीरजीकीआरतीसंपूर्ण॥कहांलैआरतीभगत
करैजी॥तुमलायकनहिंहाथपरैजी॥कहांलैआरतीभगतकरैजी॥
छीरउदधिकोनीरचढायो॥कहांनयोमैंजललायो॥कहांलैआ
रतीभगतकरैजी॥१॥उज्जलमुक्ताफलसूंपूजे॥हमपैतंदुलओरनदूजे॥
कहांलैआरतीभगतकरैजी॥कल्पवृक्षफलफूलतुम्हारे॥सेवककै
लेभगतविथारे॥तनसुंदरआगारनलागे॥कौणसुगंधधरैतुमआगे॥
कहांलैआरतीभगतकरैजी॥नषसमकोटिचंदरविनांही॥दीपका
जोतिकहौंकिंहमांही॥ग्यानसुधाभोजनवृतधारी॥नैवजकहांकरे
संसारी॥कहांलैआरतीभगतकरैजी॥ध्यानैंसकलसमानचढा

क्रियातिहारीतैंसुषपावै।कहा लैंआरतीनगतकेरैजी॥इतिसंपूर्ण॥आरती
मंगलआरतीआतमरांम।तनमंदिरमनउत्तमठाम॥समरसज[illegible]
लचंदनआनंद।तंदुलतत्वस्वरूपअमंद॥यसमैंसारफूलनिकीमाल।
अनलौसुषनैवजअरियाल॥[illegible]॥मंगलआरतीआतमरामम।दीपक
ग्यानध्यांनकीधूप।निरमलभावमहाफलरूप॥मंगलआरती॥आत
मराम॥सुगुनभविकजनइकरंगलीन।निहचैनौधांनगतप्रवीन॥४॥मंग
लआरतीआतमराम।धर्मउत्तमसाहसुहृनहदांन।परमसमाधिनि
रतपरधांन॥५॥मंगलआरतीआतमरांम।बाहजआतमभावबहाय
अंतरह्वैपरमातमध्यावै॥६॥मंगलआरतीआतमरांम।साहवसेवकभेदमि
टाय।ध्यांनतएकमेकह्वेजाय॥७॥मंगलआरतीआतमराम॥इतिआर
तीसंपूर्ण॥अथपार्श्वनाथजीकीस्तवनभुयंगप्रयातछंद॥॥
नरेंदंफुनिंदंसुरिंदंअधीसं।सतइंस्वपूजैनजेनायसीसं॥मुनिइंगनिंद
नमैजोरहाथं॥नमोदेवदेवंसदापार्श्वनाथं॥१॥जिंहंमगमांझांलौतूषु
डावै॥महाआगतैंनागतैंतूवचावै॥महानीरतैंजुद्धतैंतूवचावै॥म
हारोगतैंवंधतैंतूषुलावै॥२॥दुषीदुषहरता,सुषीसुषकरता॥सदेवसे
वताकोमहानंदभरता॥हरैजलधरादिसमूतापिसाचं॥विषंडाकनी
विघनकेभैअवाचं॥३॥दलिद्रीनिकोंदर्वकेदांनदीनौ॥अपुत्रीनिको
तैंभलेपुत्रकीनै महासंकटौतैंनिकालैविद्याता सवैसंपदासर्वकौ
टेहदाता॥४॥महाचोरकौवज्रकौंभैनिवारै।महापौनकेपुंजमैंतूउवारै।
महाक्रोधकीआगकौंमेघधारा।महालोभसैलस्हीवज्रभारा॥५॥
महामोहअंधेरकौंग्यानभानं।महाकर्मकंतारकौदौषप्रधानं।कि
येनागनागी।अधोलोकस्वामी॥हस्यौमानतैंदैतकीकैअकामी॥तु
तुही कल्पवृक्षंतुहीकामधेनं।तुहीदिव्यचिंतामनंनागएनं॥पसुन
र्ककेदुषसेतीछुडावै।महास्वर्गमैंमोक्षमैंतूवसावै॥७॥करैलोहके
हेमपांषांननांमी।रटैनामसोक्योंनहोयमोक्षगामी॥करैसेवता
कीकरैदेवसेवा।सुनैवैनसेईलहैज्ञानमेवा॥८॥जपैजापताको
कहापापलागै॥धरैध्यांनताकेसवैदोषभागे॥विनांतोहिजानै
धरैनौलौयनेरातिहारैक्रपातैं सरेकाजमेरे॥९॥दोहा॥ ॥गणधर
इंद्रनकरसके।तुमवीनतीभगवान।द्यानतप्रीतिनिहारकैं।कीजे।
आपसमान॥१०॥इतिश्रीपार्श्वनाथस्तवनसंपूर्ण॥छंद[illegible]हि॥

ॐ नमः सिद्धान नमस्कार:　　अथ श्रीजिनभगवानदेवाधिदेवकौपूजन

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ श्रीजिनपूजाविधि

कामअर्थमूलसंयुक्तकरिएहैवालीअएहै　|　परमात्मादेवजोभगवानसोनमस्का २

नमोस्तुश्री। जिनाय। परमात्मानमः। श्री

जोजिनतुमजयवंताहोऊ जयवंताहोऊ जयवंताहोऊ ऐसेतीनवारकेहासर्वोत्कृष्ट प्रणामि　|　जोजिनतुमकौ नमस्कारहोऊ ऐसेतीनबार　|　कर्मआतिजनति जाधनिकेप्राट　|　तेनिमित्तेनमस्कार

तेजयजयजयनमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

नमस्कारहोऊअरिहंतनिकौ　|　नमस्कारहोऊसिद्धनिकूं　|　नमस्कारहोऊआचार्यनिकौ

नमोअरहंताणं। णमोसिद्धाणं। णमोआय

नमस्कारहोऊउपाध्यायनिकौ　|　नमस्कारहोऊलोकविषेसम

रियाणं। णमोउवज्झायाणं। णमोलोएसव

स्तसाधुनिकौ　|　च्यारिपदार्थहैमंगलरूपहै　|　अरिहंतमंगलकारीहै

साहूणं। चत्तारिमंगलं। अरहंतमंगलं।

सिद्धमंगलरूपहै　|　सर्वमुनिराजमंगलरूपहै　|　केवलीसर्वज्ञकरिकह्याहै

सिद्धमंगलं। साहूमंगलं। केवलिपण्णं

धर्ममांगलकारी है | मांहि उत्कृष्ट उत्तम है | अरहंत लोकविषैउत्तम है

मो मंगलं॥ ४॥ चत्तारलोगुत्तमा॥ अरहंत लोगु

सिद्धलोकविषैउत्तमहै | मुनिलोकविषैउत्तमहै | सर्वज्ञ

त्तमा॥ सिद्धलोगुत्तमा॥ साहूलोगुत्तमा॥ केव

करिकह्या | धर्मलोकविषैउत्तमहै | च्यारिपदार्थनिहीकेसर

लिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा॥ ५॥ चत्तारिसरणं

णमेंप्राप्तिहोतहै | अरहंतनिकेसरणप्राप्तहोऊ | सिद्धनिके

पव्वज्जामि॥ अरहंतसरणंपव्वज्जामि॥ सिद्ध

सरणप्राप्तहोऊ | साधुमुनिनिकेसरणप्राप्तहोऊ | केवल

सरणंपव्वज्जामि॥ साहूसरणंपव्वज्जामि॥ केव

लीकरिभाषितधर्म | केसरणप्राप्तहोहो | ऊ | अरिहं

लिपण्णत्तोधम्मोसरणंपव्वज्जामि॥ ६॥ ॐ नं

तकोंनमस्कारहोहो | वा सरीरकरिपवित्रहोऊ अथवा अपवित्रहोहु अथवाअस्थिरहोऊ | और एकं तअवस्थ

मोऽर्हते स्वाहा॥ अपवित्रःपवित्रोवा॥ सुस्थितो

करिथिरहोउ।।यवाअ थिरहोऊ	जोकोईपुरुषपंचनमसकार मंत्रध्यावैहै	सोसर्वपाप

उ स्थितोपिवा ।। ध्यायेत्पंचनमस्कारान् ।। सर्वपा

निकरिछुटतहैफेर छूकहैहै	४	जलादिकवात्रातिकेअनावतेंअ पवित्रहोऊवापवित्रहोऊ	औरसमलते

पैः प्रमुच्यते ।। ४ ।। अपवित्रः पवित्रोवा ।। सर्वा

गांदिअवस्थाकोंप्राप्तहोऊ	जोजीवपरमात्माकेवलीअरहंतनका सुमरणकरैहै	सोबाहेरअरु

स्थांगतोपिवा ।। यः स्मरेत्परमात्मानं ।। सबाह्या

दोवितहीदेसवपवितातिस क्रमई	५	किसीअन्यकरिजीतानजायहै ऐसानमसकारमंत्र	समस्तदुष

भ्यंतरः शुचिः ।। ५ ।। अपराजितमंत्रोयं ।। सर्वविघ्न

केविघनकरणवारेकार णनिकाविनासकहै	औरसमस्तसुषदायकपाप कानासकमंगलकापविहै	प्रथममुख्यमंगलय हीकहोहै

घनविनाशनं ।। मंगलेषुचसर्वेषु ।। प्रथमंमंगल

	६	पंचपरमेष्ठीकानमस्काररूपमं त्र	समस्तपापनिकानाशकर णहाराहै

मत ।। ६ ।। एसोपंचणमोयारो ।। सव्वपावप्पणा

	औरसमस्तमंगलकार्यनिवि षै	प्रथममुख्यहीमंगलहै

सणो ।। मंगलाणंचसर्वेसिं ।। पढमहोइमंगलं ।। ७ ।।

अर्ह नित्य ... इत्यर्थः | आदि देवकी का अर्थ कामना ... | शिवसुख का ...

ज्ञाद० अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्र

१५ इस नाम मनमें ... हो प्रत्येक हूं | सोऽहं देव ... अर्थ ... निकौ त्रियोग करि मैं नमस्कार करौं हूं | ७ | ज्ञानावरणादि

स्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥ कर्माष्टक

दि अष्ट कर्म तिक रहित ... है | कर्मन रहित आत्मस्वरूप मोक्ष तिस की ज्ञानादि लक्ष्मी सो ही है चिह्न जाके | सम्यक्त्वादि अष्ट

विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं सम्यक्त्वादि

गुणन करि संयुक्त है | ऐसे सिद्ध समूह निकौ मन नमस्कार करो हौं | ८ | बाह्य अभ्यंतर लक्ष्मी युक्त जे तीर्थंकर

गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥ ९ ॥ श्रीमज्जिनेंद्र

तिन कौं त्रियोग करि नमस्कार करि के से हैं तीर्थंकर त्रिलोक का स्वामी है | अनेकांतमत का नायक स्वामी है | अनंत ज्ञानादि चतुष्टय करि पूज्य है

मभिवंद्य जगत्त्रयेशं स्याद्वादनायकमनंतचतुष्ट

उत्कृष्ट मूलसंघ संबंधी पे सम्यक्दृष्टी तिनकौ पुण्य उपजावण के कारण है | तिनकौं न

यार्हं ॥ श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु जैनेंद्र

मस्कार करि तीर्थंकर निकी पूजा का विधान यथ सज्ज मो करि की जिए है | १० | कल्याण होउ | तीन लोक कौ शिक्षा दायक बडे गुरु ऐसे

यज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ॥ १० ॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे

गुणधरादिपूज्यतीर्थंकर | कल्याण हो | आपणा जो चेतन्य निज स्वरूप की जो अद्भुत महिमा का प्रगटनाति स विषै भलाप्रकार स्थिररूप भया तिन निमित्त

जिनपुंगवाय॥स्वस्तिस्वभावमहिमोदयसुस्थिताय

कल्याण होऊ | केवलज्ञानप्रकाशके निजस्वभाव और उज्वल कृष्टकेवलदर्शनस्वरूप हैतिनि निमित्त | कल्याण होऊ आनंदासपूर्ण

स्वस्तिप्रकाशसहजोर्जितदृग्मयाय स्वस्तिप्रसन्न

मनोहर आश्चर्यकारी केवलज्ञान वा समवसरणादि चिन्हयुक्त है | ११ | कल्याण करऊ | आपनै प्रदेशनिसौं उगल करममलरहितकेवल

ललिताद्भुतवैभवाय॥११॥स्वस्तिउच्छलद्विमलबो

ज्ञान तिस अमृत का आवीचं प्रमाण मानहै तिन निमति | कल्याण करऊ | आपना निजस्वरूप | परद्रव्य का स्वरूप तिसकै प्रतिबिंबपानकरि | प्रकाश कोकरै है

धसुधाप्लवाय स्वस्तिस्वभावपरभावविभासक

कल्याण करऊ | तीनलोकविषै फैल्या है चेतन्य ज्ञान भाव का उपजना जिनके | कल्याण करऊ

यास्वस्तित्रिलोकवितलैकचिदुद्गमाय॥स्वस्तित्रि

तीनकालसंबंधी सकल भावनि विषै ज्ञान करि विस्तार पायो है | १२ | बाह्य द्रव्य क्रिया की शुद्धता को अंगीकार

कालसकलायतविस्तृताय॥१२॥द्रव्यस्यशुद्धि

करि कैसी है जैसी जिन देवनै कही है | अंतरंग परणामन की शुद्धता को

मधि[illegible]ग्म्यथानरूपं॥भावस्यशुद्धिमधि

बहुत शुद्धता को प्राप्त होनै का है अभिलाषा जामैं ऐसा जानना | सो बाह्य साधन उपकारण आलंबननि कै | नानाप्रकारनि कौं आलंबन करि

कामधिगन्तुकाम॥आलंबनानिविविधान्यवलंब

१५१

हे पुराण पुरुष। निमंप वित्र उत्तम | जो रस्तुतिनकौं निश्चै करि | समस्तनिकै यह मैं एक ही

पुरान पु निःयस्तनिनूतमखिलामय

	यह प्रत्यक्ष प्रकाशरूप निर्मल केवलज्ञान रूप अग्नि विषै	पवित्र पु

मैं कुणेवा अस्मिनज्वलद्विमलकेवलबोधवन्हौ॥पु

होइतौ	समस्त हू एकमन होयकरि होम करै ॐ	१५	विधिपूर्वक पूजन की

ण्यं समग्रमहमेकमनाजुहोमि॥१५॥नैष्ठी विधिपद्धस्

प्रतिष्ठा निमित्त	जिनबिंब आगै	फूलनिकी अंजुली क्षेपणी सोलह उ त्तेलक्ष्मी युक्त	धरम

लिङ्गा नाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत॥श्री

करि शोभायमानतिनि स्वामी	कल्याण करौ	कामक्रोधादिक रिजीते जगत श्रेष्ठ स्वामी	सुखकारी है उत्तपति जिनकैसें कल्याण कारक	सर्वांग पूर्ण

वृषभ स्वस्ति। स्वस्ति श्री अजितः। श्री संभवस्वस्ति। स्वस्ति

करै आनंदकारी	उत्तम कष्ट चेतन परि लिन कैं जोतिर	कमलनिकी सी कांति है जिनकी ५

श्री अभिनंदनः। श्री सुमतिस्वस्ति। स्वस्ति श्री पद्मप्रभ:

जलाहै निकट जिनका श्री स्वामी	चंद्रमा की सी कांति है जिनकी उज्वल	फूलबनहै सुगंध उज्वल दंत जिनके

श्री सुपार्श्वः स्वस्ति। स्वस्ति श्रीचंद्रप्रभ। श्री पुष्पदंतः।

दानुसारी ॥ चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः ॥ स्वस्ति ० ॥ ४ ॥ संस्पर्शनं

संश्रवणं च दूरा । दास्वादनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिज्ञ
नबलाद्वहंतः ॥ स्वस्ति ० ॥ ५ ॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रवणा समृद्धा ॥ प्रत्येकबुद्धा
दशसर्वपूर्वैः ॥ प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञा ॥ स्वस्ति क्रियाः ॥ ६ ॥ अ

णिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि ॥ लघिम्नि सक्ताः कृतिनो गरीम्नि

मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं ॥ स्वस्ति क्रि० ॥ ७ ॥ सकामरूपित्व
वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमंतर्धिमथाप्तिमाप्ता ॥ जंघावलिश्रेणिफ
लांबुतंतु ॥ प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वा ॥ नभोऽगणस्वैरविहारिण

श्च ॥ स्वस्ति ० ॥ ८ ॥ दीप्तं च तप्तं च महातपो ॥ ग्र ॥ घोरं तपो घोरपरा
क्रमस्था ॥ ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः ॥ स्वस्ति ० ॥ ९ ॥ आमर्ष

सर्वौषधयस्तथाशी ॥ विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च सखिल्लवि
ड्जल्लमलौषधीशा ॥ स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥ १० ॥ क्षीरं स्र
वन्तोत्र घृतं स्रवन्तो मधु स्रवन्तोप्यमृतं स्रवंतः अक्षीणसंवास

महानसाश्च ॥ स्वस्ति ० ॥ ११ ॥ इति स्वस्ति मंगलविधानं ॥ अथ दे
अथ देवशास्त्रगुरुपूजा का प्रारंभ करिये समस्त पुण्य पापपुंजनि के सर्वज्ञ के जा

वशास्त्रगुरुपूजा प्रारभ्यते ॥ सारदः सर्वज्ञनाथः सकलतनु

नितहारे ऐसे ० ॥ [illegible]	और समस्त प्राणी निका पाप का ताप ज्याजु आतापति	के हरण हारे है । तीन लोक विषै फैल्या है यश जिनका

भृतां ॥ पापसंतापहर्ता ॥ त्रैलोक्याक्रांतकीर्तिः क्ष

नाश कीया है काम रूप वैरी जिनका	घातीया कर्मका नाश कीया है जिन	लक्ष्मी करि यु क्त है	मोक्ष की जु संपदा सो ही भई उत्कृष्ट स्त्री तिसके हस्त करि उपआदे कंठ

तमदनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशः ॥ श्रीमान्निर्वाणसंपद्य

जिनूका	और मनले है कंठ जिनके	ऐसे जे इन्द्रादि क	तिनकरि वंदनी क है चरण जिनका	ऐसे जिन जयवंत हो कुगण धर्दिकनि को

युवतिकरालीढकंठः सुकंठैः देवेंद्रैर्वंद्यपादो जयति

स्वामी है	पाई है पंचकल्याण निविषै पूजा जिनूने ऐसे हैं		जयवंत हो ऊ । २ ।	जो सो जायमान आत्मा की व शरीर की कांति के स्वामी है

जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूज्यः ॥ १ ॥ जय जय जय श्रीसत्कांति

आस्त्रपूजनकीप्रतिज्ञाकरी | भलेपुजतहो पुज

प्याजलिक्षिपेताक्षतपुंज

१५३

गुरुनिकेचरणकमलका जुगलं गुरुनिका | कैसेहैगुरुतप नैगंभीरहै

उपस्य॥ पादपद्मयुगंगुरोःगलपः श्रीमत्प्रतिष्ठयाधारिह

उत्कृष्टहैस्वरूपजिनका ऐसाकहिकरिगुरुनचरणआगेफूलक्षेपे

१

हात्मनः॥ इत्युच्चार्यगुरुचरणाग्रेपरिपुष्पा

गुरुनचरणपुजनेकीप्रतिज्ञाकरि ईद्र | धरणेंद्र

द्वपत्त॥ गुरुनचरणपुजनप्रतिज्ञाय॥ देवेंद्र

राजातिनिकरिवंदनीकहै | उत्कृष्टहैचरणकमलपद जिनकी | सोसायमानउत्कृष्ट आक्रतिस्वरूप जिनका तिनको

नरजवंद्यानुस्पुरनसदानुसोभितशारवर्णाना उपाधिं

एजि | ऐसेजलसंमूहनकरि | देवशास्त्र तीर्थंकर | गुरु | पूजतहोमै

विगुणेर्जलोघैः॥ जिनेंद्रसिद्धांतयतीनयजे ॥१॥

श्रीयमानपरमब्रह्मअनंतानंतज्ञानशक्तिकेधारकतिनकोनमस्कारकरौहो

ईश्रीपर | ॐह्रीश्रीं परब्रह्मणेऽनंतानंतज्ञानशक्तयेनमःज

लुकेनाशनिमित्ति | अर्हंतनिकोंजलचढावोहैं | इतिमंत्रः

मत्क नाशनायश्रीअर्हत्जलंनिर्वपामीतिस्वाहा

औरअना तकानाथ | हे जिन तुमही है ना | थ हो स्वामी हो | संसार समुद्र मैं डुबता प्राणनि के

त्रनोऽनाताप्ते॥ जयजय॥ भवान्स्वामी भवांनसि मज्जतां॥

मोरा मोह अंधकार मैं ठ निनिमति प्रनातकारी सूर्जो | हे जिन नाथ तुम कूं

जय जय महामोहध्वांत प्रभातकृते र्चनं॥ जयजय जिनेशत

हो स्वामी पूजा मैं करौ हो | ऐसै पद कारि देवचरण आगै फूलनि

नाथ प्रसीद करोम्यहं॥ इत्युच्चारि जे जिनचरणाग्रे पु

की अंजलि क्षेपणी | देवचरण पूजन की प्रतिज्ञा करी

ष्पांजलिं क्षिपेत्॥ जिनचरण पूजन प्रतिज्ञा॥

हे देव | हे सोभायमान सरस्वती देवी | हे भगवती भावानक रि उपजी | तुमारे चरण सो ई कमल जुग तिनका जुगल विषै | प्राप्त होऊं

देवि श्रीश्रुत देवते भगवति त्वत्पाद पंकेरुह द्वंद्वे यो

सो तुम राणपणा कौं प्राप्त होऊं | और कह न है | भक्ति क रि | मै यह प्रार्थना करो हो | हे माता मेरे हृदय विषै

मि सिलीमुखत्वमपरं भक्त्या मया प्रार्थ्यते मातश्चेतसि

तुम वास करो मेरे मैं | जिनमुख करि उपजे हो ऐसे तुम निरंतर | रक्षा करो मुझ को | सम्यक के देनेकरि | मुझ विश्रम है

तिष्ठ मे जिनमुखोद्भूते सदा त्रायस्व मां॥ दृग्दानेन मयि प्रसि

न्न होऊ इयां ने पूजन हो | अव | ५ | ऐसैं कहि करि पुस्तक सास्त्र आगै फूल खेपण

दन्नवती मपूजया मोयकना॥ पाठ्य सुस्वाप्य पुस्तकाग्रे ड पारि पु

दानुसारी॥ चतुर्विधंचुसेवलंदधाना॥ स्वस्ति॰ ॥२॥ संस्पर्शनं

संश्रवणंच दूरा। दास्वादनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिज्ञा
नबलाद्वहंतः॥ स्वस्ति॰ ॥३॥ प्रज्ञाप्रधानाश्रवणासमृद्धा॥ प्रत्येकबुद्धा
दशसर्वपूर्वैः प्रवादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञा॥ स्वस्तिक्रियावः॥४॥ ज

निमिदक्षाःकुशला महिम्नि॥ लघिम्निसक्ताः कृतिनोगरीम्णि

मनोवपूर्वाग्बलिनश्चनित्यं॥ स्वस्तिक्रि॰॥५॥ सकामरूपित्व
वशित्वमैश्य प्रकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ता॥ जंघावलिश्रेणिफ
लांबुतंतु॥ प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वा॥ नभोगणस्वैरविहारिण

श्च॥ स्वस्ति॰॥७॥ दीप्तंचतप्तंचमहातपोग्र॥ घोरंतपोघोरपरा
क्रमस्थ॥ ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरं तः॥ स्वस्ति॰॥८॥ आमर्षा

सर्वौषधयस्तथाशी॥ विषंविषाहष्टिविषंविषाश्च सखिल्लवि
जल्लमलौषधीशा॥ स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयोनः॥ क्षीरंस्र
वंतोत्रघृतंस्रवंतोमधुस्रवंतोप्यमृतंस्रवंतः॥ अक्षीणसंवास

महानसाश्च॥ स्वस्ति॰॥१०॥ इतिस्वस्तिमंगलविधानं॥ अथदे
अबदेवसास्त्रगुरुपूजाकाआरंभकरिये समस्तगुणपर्यायपुरुषोंकरि साधनकेज्ञा

वशास्त्रगुरुपूजाप्रारंभ्यते॥ सारदः सर्वज्ञनाथः सकलतनु

नुतहारेऐसेअनसा — और समस्तप्राणीनिकापापकरिउपज्याजुआतापतिस — किहरणहारे है तीनलोकविषेकेल्याहेयशजिनका

भृतांपापसंतापहंता॥ त्रैलोक्याक्रांतकीर्त्तिः क्ष

नाशकीयाहैकामरूपवैरीजिनको — घातीयाकर्म्मकानाशकीयाहैजिन — लक्ष्मीकरियुक्तहै — मोक्षकीजुसंपदासोहीभईछ लक्ष्मीतिसकेहस्तकरिउपआहेकंव

तमदनरिपुघातकर्म्मप्रणाशः॥ श्रीमान्निर्वाणसंपद्ध

जिनका — औरमलेहैकंठजिनके — ऐसेजे इंद्रादिक — तिनकरिवंदनीकहैचरणजिनका — ऐसेजिन जयवंतहो कुगणधरादिकतिनका

युवतिकरालोलरत्नसुकंठः देवेंद्रैर्वंद्यपादोजयति

स्वामीहै — पाईहैपंचकल्याणनिविषेपूजाजिननेऐसेहै — जयवंतहोऊ२ — जोसोज्ञायमानआत्माकीवशरीरकीकांतिकेस्वामीहै

जिनपतिःप्राप्तकल्याणपूजः॥१॥ जयजयजयश्रीसत्कांति

सिद्धनिकों	आचार्यनिकों	उपाध्यायनिकों	सर्वसाधुनिकों

सिद्धेभ्यः॥ आचार्येभ्यः॥ उपाध्यायेभ्यः॥ सर्वसाधु

	प्रथमानुयोगायनिकों	करणानुयोगकों	चरणानु

भ्यः॥ प्रथमानुयोगाय॥ करणानुयोगाय॥ चरण

योगकों	द्रव्यानुयोगकौं एधव रत्वतीके गुण	सम्यग्दर्शनकों	सम्यग्

नुयोगाय॥ द्रव्यानुयोगाय॥ सम्यग्दर्शनाय॥ सम्यग्

ज्ञानकों	सम्यक्चारित्रकौं ए तीन गुरु के गुण	इनिकौं जलचढावौंहौं ऐसें इन्द्र

ज्ञानाय॥ सम्यक्चारित्राय॥ जलं निर्वपामीति स्वा

इतिमंत्र	जलं	लडफडावते	ऐसीतीनलोकका उदरमें अरहंते	समस्तजीवनि निकाआहितह

हा॥ जलं॥ ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्त्ति॥ समस्त

रिकरणहारे है वचनजिनका तिनिकौं	बावनाचंदन करि	केसाहै बासना कालौंभीऊवा

सत्वाहितहारिवाक्यान्॥ श्रीचंदनैर्गंधविलुब्ध

हैंभ्रमरजहां	तिसकरि देवगुरुशास्त्र कौंपूजोंहों	संसारआतापदूरिकरणनिमित्त	चंदनं औरे

भृंगैः॥ जिनेंद्र० ॐ ह्रीं श्री संसारतापविनाशाय

सर्वथाहिलीकीनाई पटण नाहैपारजिनका ऐसासंसार सोईमहावडासमुद्र २	तिसकेपार उतारणेकौं वडे

चंदनं॥ २॥ अपारसंसारमहासमुद्र॥ प्रोत्तारणे

मलीमक्ति करि | लावा अखंडित हैं अगजिनका | ऐसें उजलचावलनिका सिमुहंति नकरिदेवगुरु

ज्मतरीन्मुनन्ता ॥ दीर्घादतं । लान्दतोघे

पूजौहो निकों | अखंडितमोदपदप्राप्तिनिमित्तिअक्षतचढाऊहूं

३

जिनेंद्र० ॥ अखंडितपदप्राप्तये ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ निवौ

विनयपुक्तजेपनेजअजीवतेईसेयेकमलतिनिकेविकासनेकोसूर्यसमानहै | उत्कृष्टलीजेनैंदीताके

४

विनीतनमाज्वविवोधसूर्यान ॥ वर्ग्यासुचर्ग्या

कहनेकाएकथोरीतिनकों | कुंदोकमलआदि | फुलनिकरिदेवगुरुशास्त्र

कथनैकधूर्यान ॥ कुंदरविंदप्रमुखैःप्रसूनै ॥ जिनें

पूजौहै | कामरूपीबांणकानाशनिमित्तिफूलचढावौहौ पुष्पं | ४ | योटाहैगर्वजाके

द्र० ॥ कुसमवांणविध्वंसनाय ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ कुंदर्प

ऐसाकाम | सोईहुवाफैला | स्वछंदसर्प | तिसकोंसावधानहोइकरिनाशनेकोंकुंडस | मानतितिनिकों

कंदर्पविसर्पसर्प ॥ प्रसत्यनिर्णाशनवैनतेयान

उत्कृष्टसारवस्तुनकरिउपजे | ऐसेंनेवेद्यनकरिकेसोहैरसपूर्णहि | तिनिकरिदेवगुरुशास्त्रपूजौहो | क्षुधादिकवेदकेरोग

प्राज्याज्यसारैश्चरूभीरसाढ्यै ॥ जिनेंद्र ॥ क्षुधावेद

दूरिकरिणनिमित्ति | ५ | नेवेद्यचढावौ | दूरकीयाहैउद्यमजिसमैं

नीरोगविनाशाय ॥ ५ ॥ नैवेद्यं ॥ ध्वस्तोद्यमांधीकृत

फलचढावौ हौ		८	जलजलचंदनअक्षतपुष्पनिके समूहनिकरि

फलं नि०॥ फलं॥ ८॥ सद्वारीगंधाक्षतपुष्पजातै॥

नैवेद्यदीपनिर्मलधूपकीधूवांनिकरि	नानाप्रकारकेफलनिकरि निवड

नैवेद्यदीपामलधूपधूमै॥ फलैर्विचित्रैर्घनपुन्य

पुन्यरूपजलकौं जोय	देवगुरुशास्त्रकौपूजौ	अर्घचढावौ ९	जेजीव पूजन	तीर्थंकर	सास्त्र

योगपान॥ जिनेंद्र०॥ अर्घं॥ ९॥ येपूजाजिननाथ

मुनिनिनकी भक्तिकरि	नित्यकरैहै	तीनकाल विषै	नानाप्रका

शास्त्रयमिनानित्यासदाकुर्वते॥ त्रैसंध्यासुवि

रकाव्यादिरचनाकेंविषै	पढतासंता मुनि	तेपुन्यपूर्णमुनिराजके

त्रकाव्यरचनांमुच्चारयंतोनराः॥ पुन्याढ्यामुनिरा

वंधीयसकरिसंयुक्तहोइ	कैसैहैतपजिनकैगहणाहै	ऐसेवेजनजीव

जकीर्तिसहितानूत्वातपोभूषणाः॥ स्तेनसमक

केवलज्ञानकीरमनोहर	मुक्तिकौंपावैहैअतकष्टको	१	फूलनिकीअंजुलीक्षेपणी

लावबोधहृचिरांसिद्धिंलंभंतेपरां॥ १॥ पुष्पांजलि

अथ या ग्रंथ की टीका है समस्त जी ऐसे समस्त मोहरूप अंध दैदीप्य कार तामनेको दीपक समान तिनको ऐसे है:

विस्फु विस्फु॥मोहांधकारप्रतिघातिदीपान् दीपैः

मानसुवर्ण के पात्र ति धरया देदीप्य तिनकरि | देवगुरु समा स्वरूप जो है | मोहांधकार विनाश नाय निमत्ते

नकांचनपात्रसंस्थैः॥जिनेंद्र०॥मोहांधकारविन

दीपकं चढावो है ६ | धनति सकापुष्प है तिनके माल ने विषै धूप करि

शाय ६॥ दीपं॥ दुष्टाष्टकर्मेधनपुष्टज्वालसंधूप

देदीप्यमान | धूपनि करि कैसा है हरि कीये है और वस्तु की सुगंध अपनी वासना करि | देवगुरुआ

नैनाम्बरधूमकेतैः धूपैर्विधूतान्यसुगंधगंधैः॥जिनें

स्वरूप जो | अष्टकर्मदहनाति मति धूप चढावो है | ७ | दोसरूप न्याशा ति रूप न्या

द्र०॥अष्टकर्मदहनाय धूपं॥७॥ क्षुभ्यद्विलुब्ध

मना ही तिनकी अन्यमतीनिके वादनि सैं नाहीं स्खलित है प्रभाव जिनका तिनको

मनसामगम्यान् कुवादिवादास्खलितप्रभावान् फलै

फलैनिकरि अत्यर्थपणें करि कैसे है मोक्षफलके दाता है तिनकरि | देवगुरुशा स्वरूप जो | मोक्षफलप्राप्ति निमि

ला रलं मोक्षफलाभिसारैः॥जिनेंद्र०॥मोक्षफलप्राप्तये

ऋषभ अजितहैनामजिनका | संभव | बहुरिअभिनंदन | सुमतिनाथ

रिषभोजितनाथाश्च॥ संभवश्चाभिनंदनः॥सुमतिःप

पद्मप्रभ | बहुरि | सुपार्श्वः | जिनजिमैंउत्कृष्ट | १ | चंद्रप्रभ | पुष्पदंत

द्मनामश्च॥सुपार्श्वोजिनसत्तम॥१॥चंद्राभःपुष्प

बहुसीतल ज्ञानादिकतिकरियुल कस्वरूपकेज्ञाता | श्रेयोनाथ | वासुपूज्य

दंतश्च॥शीतलोभगवान्मुनिः॥श्रेयांसोवासु

बहुरि | विमलकैसेंहै निर्मलहैकांतिजिनकी | अनंतहैमहिमाजिनकी

पूज्यश्च॥विमलोविमलद्युति॥अनंतोधर्मना

धर्मकाधोरी | शांतिकाकरणहारा जिनोत्तम | अरुसेंअरहनाथस्वामीवाम

थाश्च॥शांतिकुंथुर्जिनोत्तमः॥अरश्चमल्लि

जिनाथमैंयवेता रहो | हरिवंसविषैउपजे

नाथश्च॥सुव्रतोनमितीर्थकृत॥हरिवंशसमुद्भु

अरुसेंअरिष्टनेमिजिनवर | दूरिकीयाहैकर्ममलजिन | कमठदैसवैरी

तो॥रिष्टनेमिजिनेश्वरः॥ध्वस्तोपसर्गदैत्यारी॥प।

२६

श्रीसपार्श्वनाथधरणेंद्रक रिपूजनीक	४	कर्मनाशने हारे	महावीरतीर्थंकर	सिद्धार्थ

श्रीनागेंद्रपूजित ॥४॥ कर्मांतकृन्महावीरः सिद्धार्थ

ज्ञातिकुलमहत्तपनेसए एतेतीर्थंकरहैसब सुरनिकेसमूहाकी	पूजितीकहै निर्मलहैआकृति जिनकी

कुलसंभवः एतेसुरासुरौघेण ॥ पूजिताविमलत्विषः

५	पूजनीकहैनरतादिक	राजानिकरिकैंसिहैसकृ विभूतियुक्तहै	तेतीर्थंकर

५॥ पूजितानरताद्यैश्च ॥ नृपेंद्रैर्भूतिभूरिभिः चतुर्विध

चारिप्रकारकेसंघ को	शांतिकौंकरहुकरतीहैशा तिसांश्वतीहै	६	तीर्थंकरविषैभ क्ति

स्यसंघस्य ॥ शांतिकुर्वंतुशाश्वतीं ॥ ६॥ जिनेभक्तिर्जि

फेरिदोय वारप्रीति	प्रगटने निमल करहो	निरंतर	होऊमेरै	एहीसम्यक्त्व एहै	संसारका नासकहै

नेभक्तिः ॥ जिनेभक्तिः ॥ सदास्तुमे ॥ सम्यक्त्वमेवसंसारे

अरमोक्षकाकारणहै	७	साधुविषैभक्तिदोयवार फेरिकहना

वारणंमोक्षकारणं ॥ ७॥ श्रुतेभक्तिः श्रुतेभक्तिः श्रु

प्रीतिप्रग टनेनिमहि	निरंतरहोऊ मेरै	एहीसम्यग्ज्ञानहैसंसार	कानाशकअरमो क्षकाकारण

तेभक्तिः सदास्तुमे ॥ सम्यक्त्वमेवसंसार वारणंमोक्षका

८	विषै गुरुभक्ति	फेरिदोयवारप्रीतिप्रगटनेंनिमहि	निरंतरहोऊमेरै

रणं ॥ गुरौभक्तिर्गुरौभक्तिः ॥ गुरौभक्तिः सदास्तुमे ॥ चा

एहीचारित्रहैसंसार का नासक	मोक्षकाकारणहै	ए	अवेजयमालकहि एहै

रित्रमेवसंसार ॥ वारणंमोक्षकारं ॥ ९॥ अथजेयमाल

॥र्नैनमसिद्धेभ्यः॥गाथा॥

	गति॥४कौन	इंद्रियजातिभे.५		कायभेद॥तिनकेनाम॥६	
१	एकेंद्रीजाति	नरकगति	१	पृथ्वीकाय	१
२	बेंद्रीजाति	तिर्यंचगति	२	अपकाय	२
३	तेंद्रीजाति	मनुष्यगति	३	तेजसकाय	३
४	चोइंद्रीजा॰	देवगति	४	वाउकाय	४
५	पंचेंद्रीजा॰	वेद तेकौन		वनस्पतीकाय	५
				त्रसकाय	६

१५	जोगपज्ञा१५	स्त्रीवेद	१
४	मनकाजो	पुरुषवेद	२
१	सत्यमनजो॰	नपुंसकवेद	३
२	असत्यमन	अनंतानुबंधी॰चो॰	४
३	उभयमन॰	अनंतानुबंधीक्रो॰पाषा॰	१
४	अनुभयमनो	अनंतानुबंधीमानपाषान॰	२
४	वचनके४	अनंतानबंधीमायाबंस॰	३
१	सत्यवचन	अनंतानुबंधीलोभक्रम॰	४
२	असत्यवच	अप्रत्याख्यानकीचौकडी	४
३	उभयवचजो	अप्रत्याख्यानक्रोधहलद॰	१
४	अनुभयवच	प्रत्याख्यानमानअस्थि	२
७	कायकेजोग	अप्रत्याख्यानमायामृग	३
		शृंग	
१	औदारिककाय	अप्रत्याख्यानलोभमज्ञी॰	४
२	औदारिकमिश्र	प्रत्याख्यानकीचौ॰	४
३	वैक्रियककाय	प्रत्याख्यानकीचौ॰	४
४	वैक्रियकमिश्र	प्रत्याख्यानक्रोधधूलरे॰	१
५	आहारककाय	प्रत्या॰मा॰काष्टस्तंभ	२
६	आहारकमिश्र	प्रत्या॰मायागोमूत्रव॰	३
	कायपोग	प्रत्याख्यानलो॰कसुंभ	४
७	कार्माणकाय	रागसम	

संज्वलनकीचौकडी४	
संज्वलनक्रोधजलरेष	१
संज्वलनमानवेलस्थंभ	२
संज्वलनमायाचवरवत	३
संज्वलनलोभहरिद्राराग	४
हास्यादिकनोकषाय९	९

हास्य	१	सोग	१	स्त्रीवे	१
रति	२	भय	२	पुरुष	२
अरति	३	जुगप्स	३	नपुंस	३

ज्ञानसुज्ञा॰		कुज्ञान	
मतिज्ञान	१	कुमतिज्ञ	६
श्रुतज्ञान	२	कुश्रुति	७
अवधिज्ञा	३	कुअवधि	८
मनपर्यय॰	४	८ वंभगान	
केवलज्ञा॰	५	८	८

७ संयमभेद ७ तिकोन :१

१ सामायकसंयम
२ छेदोपस्थापनसंयम
३ परिहारविसुद्धि संयम
४ सूक्ष्मसांपरायसंयम:
५ जथाख्यातसंयम
६ संजमासंयतासंजम
७ असंजतासंयम: एवं संजम ७

४ दर्शनभेद तेकोन ॥४॥

चक्षुदर्शन १	अचक्षुदर्शन २
अवधिदर्शन ३	केवलदर्शन ४

भव्यभेद २ तेकौन ॥

भव्य १ अभव्य २ एवं २

सम्यक्तभेद ॥६॥ तेकोन

मिथ्यातसम्य	१	उपसम	४
समयमिथ्यात	२	वेदक	५
समयप्रकृति	३	क्षायक	६

संयमीभेद ॥२॥ तेकोन

संज्ञी ॥१	असंज्ञी एवं ॥२॥

आहारकभेद ॥२॥ तेकोन

आहारक ॥१ ॥ अनाहारक एवं २

गुणस्थान १४ तेकोन ॥ गाथा ॥
गुनजीवापजत्तेपणासंयम
गानाउवाउवगोभियकमनो
वीसंतुपदूपनाज्ञणिपा१॥

१	मिथ्यात ॥	८	अपूर्वकरण ॥
२	सासादन ॥	९	अनिवृतिक
३	मिश्र ॥	१०	सूक्ष्मसांपराय
४	अव्रत ॥	११	उपसातकषाय
५	देसविरत	१२	क्षीनमोह ॥
६	प्रमत्त ॥	१३	संजोगकेवली
७	अप्रमत्त ॥	१४	अयोगकेवली

जीवसमासभेद १४ तेकोन

गाथा ॥ अडविहधातेणिच्चेयरविम
ल असणिसणींण सुपयडियअ
पयडियतिकुगुणियाजीवसमास १
अस्याअर्थ ॥ तिगुने ५७ ॥

१९ जीवसमास प्रजापते: अप्रजापते अन
ब्धिप्रजापते ५७ ॥

२ पृथ्वीकायसूक्ष्मबादर ॥
२ अप्पकायसूक्ष्मबादर ॥
२ तेजकायसूक्ष्मबादर
२ वायुकायसूक्ष्मबादर ॥
२ नित्यनिगोदसूक्ष्मबादर ॥
२ इतरनिगोदसूक्ष्मबादर ॥
२ वनस्पतीकायसुप्रतिष्टितअप्रतिष्टित ॥
२ पंचेंद्रीसेनी १ असेनी २ एवं ॥
३ वेइंद्री १ तेंद्री २ चउइंद्री ३ ॥

प्रजापतेभेद तेकोन ॥

गाथा ॥ आहारसरीरिंदियपज्जत्ती
आणपाणभासमणो ॥ चत्तारिपंचव
च्छिय इंदियवियलाअसणिसणी णं १

१	आहारपरजाप्ति	शरीरपर्जाप्ति	४ ॥
२	इंद्रियपर्याप्ति ॥	स्वासउस्वासपर्जाप्ति	५ ॥
३	भाषापर्याप्ति ॥	मनपर्याप्ति एवं ६	६ ॥

१० प्राणभेद १० तेकोन

गाथा पंचविइंद्रियपाणा ॥ मणवय
कायणतिणिवलपाणा ॥ आण पा
णपाणा ॥ आउगपाणेणहोंतिदह पाण १

५ स्पर्स रस घ्राण नेत्र वर्ण श्रोत्र
३ बल ३ मन वचन काय ३ स्वास
१ उस्वास प्राण १ आयुप्राण १ ॥

४ संज्ञातेकोन ४

१	आहारसंज्ञा	३	मैथुनसंज्ञा
२	भयसंज्ञा	४	परिग्रहसंज्ञा

१२ उपयोगदर्शन ४ ज्ञान ८ उपयो.
गाथा ॥ णाणंवियप्पविवयजाइयकुलको
डिसंयुयासचेगाहातिणहिंजणिय ॥
कमणचोवीसगाणणिण अर्थ

[illegible] ध्यानकेभेदसोलातेकोनकोनसेसोकहिए है ॥ १६ ॥

आरतध्यानकेभेद ४		रौद्रध्यानकेभेद ४	
इष्टवियोग १ अनिष्टसंयोग २ पीडाचिंतवन ३ निदानबंधन ४	२ ४	हिंसानंद १ अनृतानंदी २ स्तेयानंदी ३ विषयानंदी ४	
धर्मध्यानकेभेद ४	४	सुक्लध्यानकेभेद ४	४
आग्याविचय १ अपायविचय २ विपाकविचय ३ संस्थानविचै ४	२ ४	पृथक्तवितर्कविचार १ एकत्ववितर्कविचार २ सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति ३ व्युपरतक्रियानिवृत्ति ४	१ २ ३ ४
प्रत्ययलिष्यतेतेकौन ५७	५७	मिथ्यात्वतेकौन	५
गाथा॥ मिछात्वाविरदातह कसायजोगायपच्चयाचेवा पणउदहवंधहेइपणवी संपणरसाकुं॥ अर्थ॥	गाथा	एयंतवुद्धदरसी विवरीउवंभ तावसोविणउ इंदोवियसं सयदो मक्कडिर्वचेवअणाणी १ अर्थ	
मिथ्यातनाम॥		अविरतबारातेकौन	
एकांतमिथ्यात॥ विपरीतिमिथ्यात॥ विनयमिथ्यात॥ संसयमिथ्यात॥ अज्ञानमिथ्यात॥	१ २ ३ ४ ५	पंचस्थावरकीरक्षानहीं ५ त्रसकीरक्षानहीं १ पंचइंद्रीकौनिरोधनहीं ५ मनकौनिरोधनहीं १	१ २ ३ ४
कसायपचीसअर्थमकही॥	२५	जोगपंद्रयमकहिआएहे एव ५७ प्रत्ये	५७
जातिभेदलक्षचौरासी ८४॥			
गाथा णिच्चियरधादुसत्तय तरुदस वियलिंदियेसु छच्चेव सुरणिरयतिरियचउरो चउदसमणुएसु दसहस्सा १ याकाअर्थ तेलिषते			५२०००० एकइंद्रीलाष
निल्यनिगोद ७००००००॥ इतरनिगो० ७००००००॥ पृथ्वीकाय ७००००००॥ आपकाय ७००००००॥ तेजकाय ७००००००॥ वायुकाय ७००००००॥ वनसतिकाय १००००००॥ दसलाष		वेइंद्रीलाष॥२००००००॥ तेइंद्रीलाष॥२००००००॥ चौइंद्रीलाष॥२००००००॥ देवगतिलाष ४००००००॥ नरकगतिलाष ४००००००॥ तिर्यंचगतिलाष ४००००००॥ मनुष्यगतिलाष १४००००००॥	
८४००००००एवंएकजा॥	जाति	कुलकोडिएकसौसाडासतानवेलाष	
८४००००००॥		॥१९७॥	

२२	पृथ्वीकायके ॥	२५ ॥ विकलत्रयकके ॥	पंचेंद्रीके एकत्र कुडी ॥ १०८ ॥
७	अपकायके ॥	॥ ७ ॥ बेंद्रीके ॥	॥ २५ ॥ नरकगतिके
३	तेजकायके ॥	॥ ८ ॥ तेंद्रीयके ॥	॥ २६ ॥ देवगतिके
७	वाउकायके ॥	॥ ९ ॥ चौइंद्रीयके ॥	॥ ५३ ॥ तिर्यंचगतिके
२८	वनस्पतिकायके ॥		॥ १२ ॥ मनुष्यगतिके
	इतिसंपूर्ण ॥		॥ एवं १९७ ॥ कुलकोडिजाननी

अथ सोलासुपनाचंद्रगुपतिराजानैं आयासो लिष्यते ॥

१ ॥ पैहलै अकालजसूरज आंथियो ॥ तीकोफलरायजी बोलैजी ॥ जायाजी पंचमकालका ॥ केवलज्ञानी नहीं होसीजी ॥ चंद्रगुप्त २ ॥ तजैजी चं
चंद्रमा चालनी ॥ तीकोफलराजा देषोजी ॥ जिनमतरथमें जिनेस्वरो नी
मेंपाषंडी घणा लेषोजी चंद्रगुप्त ३ ॥ म्पारजी म्पारी समाचारी ॥ अष्टादेष
मैं चलसीजी ॥ सीमदीयाजी कुरैमानसी गुरुकागी हीहोसीजी ॥ चंद्रगु
५ ॥ चौथोसुपनोजी बारा फणो ॥ नागदेष्यो विकरालोजी ॥ केतायकवरस
कों आन्तरोजी ॥ पडसी बारा वरसको कालोजी ॥ चंद्र ६ ॥ देवविमाने
पाछौफिस्योजी ॥ सुपनो पंचमहेगोजी ॥ देवविद्याधर नैं आसीजी हो
सी लब्धविछेटीजी ॥ चंद्र ७ ॥ छठै सुपनैंजी रोडी परै ॥ कमलविकस
तो देष्योजी ॥ वरणजी च्यारूं मायला ॥ वाण्याकेजिनधर्म लेषोजी
चंद्र० ॥ ८ ॥ भूतनृत्यपादेषानाचता ॥ सुपनो सातवोजासीजी ॥ मिथ्या
तीधर्मकी मानता ॥ अधिकी अधिकी होसी ॥ चंद्र० ॥ सुपनैं देष्योज
राजा आगवो ॥ आज्ञा कों विमकारोजी ॥ उद्योत होसीजी नधर्मके
विचविचमांचे अंधेरोजी ॥ चंद्र० १० ॥ तलावसुकोजाती नोदिसा
दिषणदिसामें थोडोजी ॥ तीनोदिसाजीधर्मनाहोसी ॥ दिक्षिण
देसाधर्मजोडोसी ॥ चंद्र ० ॥ सोनाकाथाल में कुकर ॥ देष्योछैषी
रषाउषालोजी ॥ दसमें सुपनामें राजासव ॥ होजासी अनमतम
तोजी ॥ चंद्र० ॥ १२ ॥ हाथीजी ऊपरि वांदरो सुपनो ग्यारवोरासीज
मलेछराजानचा होसी ॥ हिंदुएकलो पासीजी ॥ चंद्र० ॥ १२ ॥ नीच
तनैलछमीवासा होसी ॥ उतमाघर फरसीजी ॥ वटसीजी चुगलीचो
रटा ॥ साउकार मनमें डरसीजी ॥ १४ ॥ चंद्र० ॥ छोडसी कारसमुद्र नैं सुपने
तेरमो कूडोजी ॥ छत्रीजीव वचनलोपसी ॥ ताकोवीसवासथोडो र
हसीजी ॥ १५ ॥ चंद्र० ॥ वछडाजुत्याजी रथ ऊपरै ॥ सुपनो चोदवोदीसै
जी ॥ तरुनपुरुषधर्म पालिसी ॥ वृद्धिसपलधरमघोसीजी ॥ चंद्र० ॥ १६ ॥ राज
जी ॥ राजाजी समकितलेनहीं मि
कवारच्यारोटटो ॥ सुपनो पंद्रवो रचासीजी ॥

मिथ्यातमेपडतासी॥चंद०२७॥विनामहावतहाथीलडे॥सुपनोथ
लवोदेख्योजी॥केतायकवरसाकेआतेरे॥मारगमेहेनहीमिल
सीजी॥चंद०२८॥विपाकसुत्रकीचूलिका॥मुनिवरइवाकुकि
योनीचोडोजी॥वीनतीआणमारेप्रमाणते॥जेमालकीनीछेजे
डोजी॥२९॥इतिसोलेखपन

अथ पद्दली पते ॥१॥ अथ समाधिमरन लिष्यते ॥ जोगीरास
की चाल गौतमस्वामी वंदौ नामी मरन समाधि भला है। मैं कव
पो करनि सि दिन पाऊं गाऊं वन कला है। देव धरम गुरु प्रीति
महां दृढ सात विसनन हि जानैं। त्यागि वाईसौं अनिष संजमी
वो ख्रत नित वानैं। २ चक्की उषरी चूल्ह बुहारी पानी त्रस न वि
राधै। वनज करै पर द्रव्य हरैं नहि कर्म छ हों इम साधै। पूजा सास्त्र
गुरु की सेवा संजम तप चहुं दांनी। पर उपगारी अलप अहारी
सामो पक विध ग्यांनी। ३। जाप जपै तिहुं जोग धरै थिर तनकी म
मता टारै। अंत समै वैराग संभारै ध्यान समाधि विचारै। आग
लगै अरु नाव डुबै तब धर्म विघन जब आवै। च्यार प्रकार अ
हार त्यागि कैं मंत्र सुमन मैं ध्यावै। ४। रोग असाध्य जरा बहु देखै
कारण और निहारै। बात बडी है जो बनि आवै भार भ
वन कौं टारै। जो न बनै तो घर मैं रहि कैं सब सौं होय निराला। मात पि
ता सुत तिय कौं सौंपै निज परिग्रह अहि काला। ५। कुछ चैत्याले
कुछ श्रावक जन कुछ दुखिया धन देई। छिमां छिमां सब सौं क
हि आछै मन कौ सल्य हनेई। सत्रुनि सौं मिलि निज कर जोरै मैं बहु
करी बुराई। तुम से प्रीतम कौं दुख दीने ते सब बकसौ भाई। ६। धन
धरती जो मुख तैं मांगै सो सब दे संतोषै। छहौं काय के प्रानी ऊप
र करुना भाव न रोषै। नीचे धर वेदे इक जागै कुछ भोजन कुछ
पेले। दूधाधारी क्रम क्रम तजि कै छाछ अहार पहेलै। ७। छाछि
त्यागि कैं पानी राखै पानी तजि संथारा। भूमि मांहि थिर आसन मां
डै साधरमी ढिग प्यारा। जब तुम जानौ यह न जपै है तब जिनवांनी
कहिये। यौं कहि मौन लियो सन्यासी पंच परम मन गहिये। ८। च्या
यो आराधन मन ध्यावै बारै भावन भावै। दस लछन मुनधर्म विच
रै रतनत्रय मन ल्यावै। पैंतिस सोलै षट पन च्यारो दोय कवर न विचा
रे। काया तेरी दुख की ढेरी ग्यान मई तूं सारे। ९। अजर अमर निज गु
न पूरौ परमानंद सुभावै। आनंद कंद चिदानंद साहिब तीन जग
पति ध्यावै। छुधा त्रषादिक होंहि परीसै सहै भाव सम राषै।
अतिचार पांचौं सब त्यागै ग्यान सुधारस चाषै। १०। हाड चांम रहि सूक जा

यसवथमैलीनतनत्यागै॥अदत्तुतपुंन्यउपायसुरगमैंसेजउवेजै
जागै॥तहांसोंआवेसिवपदपावेविलसेसुषअनंता॥ द्यानतयह
गतिहोहिहमारीजैनधरमजैवंता॥२०॥इतिसंपूर्णं॥ ॥
॥अथ॥ ॥प्रथमनमोंअरिहंतानंदुतियनमोसिद्धांनंजी॥त्रि
तयनमौंआइरियानंनमोउवझ्झायानंजी॥पंचमनमोलोएसव
साहूनंगुनगाऊंजी॥च्यारौंमंगलअरिहंतसिद्धसाधधर्मध्याऊंजी॥
चारोंउत्तमलोकमैंजिनसिधसाधसुधर्मजी॥चारोंसुरनगहौंजिनवर
सिधसाधधर्मपर्यंजी॥रिषभचंदप्रभुसांतजिनंवर्द्धमानमनवंदौंजी॥अ
ईहौंहिंगीचौवीसीसबनमपापनिकंदौंजी॥श्रीजिनवचनसुहा
वनेस्यादवादअविरुद्धजी॥तीनभवनमेदीपकावंदौंत्रिकरणसु
द्धजी॥प्रतिमाश्रीभगवंतकीसबगमस्यपातालंजी॥कृत्यअकृत्य
उभेदसौंवंदकरौंत्रिकालजी॥पूरवपापजुमैंकीयोकृतकारत
अनमोदंजी॥मनवचकायत्रिभेदसौंसोसबमिथ्याहोदंजी॥आगै
पापजुहोयगौउनत्यासविधिनासोजी॥वर्तमानअयक्षेकरौंतुम
आगैपरकासोजी॥धसर्वजीवसौंमित्रतागुनीदेषहरषाऊंजी॥दी
नदयासमसौंसमताचारोंभावनभाऊंजी॥प्रभूपूजोंजुगभेदसौंगुर
पदपंकजसेऊंजी॥आगमअभ्यासौंसदाउत्तमजपनितवेऊंजी
पअभ्यरमानअरयअनमिलनूलिकह्योसुषमांऊजी॥धान
रोयहरसांफकोंअचरजमेंनाऊजी॥द्यानतदानदयारमौंजो
भोगतसुदीजेजी॥अंतसमाधिमरनकरौंरागविरोधहरीजे
जी॥इति संपूर्णं॥ अथ॥
वंदौंश्रीजिनराजपदरिद्धसिद्धदातारविघनहरनमंगलकर
नदारिददलिनअपार॥१॥चोपई॥मिथ्यातावकरमबंधनपोउ
रिनिवारनवनवनवउभदयै॥सोसबनासभगतितैहोइ रहै
नप्रभुउभकारनकोय॥ज्ञानजोतआघनमछयकार॥अघट
प्रकासकहैंगणधार॥मोमनभवनवसैतुवनाम॥तहांनमर
मरकोंकामरूपजागदमनवचकाय॥करौंहर्षजलवंद
ऊवाय॥विषयमालचिरकालअपार॥नाजैतजतनवंध
ज्ञार॥धूपमकनकमैंमूसवकस्यो॥नविकामागसुरतै

अवतस्यौ॥ चितग्रह्यां नहार तुम आय। करो हेम तन चित्र न काय॥५॥ वे
नु स्वारथ सव जग मुषदाय। जांत्यौं सवी इमि पर जाय॥ भगति रची चि
त मस्या मोहि। तुम वस इषगन कैसे होहि॥६॥ तम्यौं जग लव न मैं चि
रकाल। नपज्यौं षट आगनि विकराल। तुम मन यसु धा सीतवा नरा सु
न्यनै देलहि सवतपहरी॥७॥ गमन प्रभाव कोमल कै देव। परमल
श्री जुत कनक कमलेव। मो मन परसै तुम सवकाय। क्यों मभि लैं मु
कसव सुष आय॥८॥ त्रिभुवन नजि सिवसुषयर कियौ। मदन मां
न छिन मैं हर लियौ। पीत पात्र वच सुधा पिवंत। विषे रोग रिसु त्रा
स हतंत॥९॥ तुम दिग मांन सथंभ जु रहै। रतन रासि वर्ण सोभा ल
है। देषत मांन रोग छय होय। जद्यपि है पाहन मय सोय॥१०॥ तुम मू
रत्ति गिर सपरस वाय। लगें कर्म रज पुंज पलाय। ध्यांन तौ हि उर
कमल मझार। होइ परम पद जग निसार॥११॥ नर नव पायौ उष
अपार। या दुक्कर तन सागर असथार। तुम सव जांन अथान कि
याल। करो नग तन अव होहि दयाल॥१२॥ या पी स्वांन अंत की वा
र। लह्यौ सुगी सुषसु न नो कार। जपैं अमल मन तुम नग वांन
अचरिज कहा वरो सिव थांन॥१३॥ तुम पद नु सुष रूपा न ग्यावंत
ना लीन गति विनां जो संत मोह जरे दिट मो षकि वार। षोलस
कैं न लहे सुष सार॥१४॥ मुकत पंथ अयं नमव रूनस्यौ। गटे
कलेस विषम लिसतस्यौ। सुष सौं सिवपद पुहचै कोय। जो तुम
वचन नदापत होय॥१५॥ कर्म धरा आतम निथि भूरि दवीक
वीय हि वैन हि कूर। जगत कुदाल षोरलें संत। विलसै परमानं
द तुरंत॥१६॥ स्याद्वाद हिमगिरि सौं चली। तुम पद परस उदधि
शिव रली। जगत गंग मै सोमन न्हाय। क्यों न पाप मल कलुषि
त जाइ॥१७॥ परमातम पथि रपद सुषमई। मैं सद्दोष तुम सव बुधय
ई। यद्यपि असत यह ध्यांन तुम्हार। तदपि सुवांछत फल दात
र॥१८॥ वचन न इदथि सव जग विस्तस्यौ। स्यादल हरि मिथ्यामल ह
स्यौ। थिर मन ग्रह दृढ़ां गमन धौं। ग्यांन सुधापा जमनै हरै॥१९॥
भूषण वसन कुसुम असि गहै। सो नास्वक देवन लहै। तुम नि
परिग्रह अव सैम नोग। कौंन काज भूषण आसि जोग॥२०॥ तुम से

मानहिंइंद्रतुमपै॥१॥कामअवतारीसोनयो॥लोकनाथमोराशि
धिपोत॥सुकृतकंसइद्विपथुतहोत॥२१॥थुतवचनसुपुद
गलरूप॥नहिव्यापैंतुमगुनचिद्रूप॥तदपिनगतदिद्रसुथाजुग
है॥मनवंछितफलसुरतरुलहै॥२२॥रागदोषविनपरमउदा
स॥वाहरहतिअरुसवजगदास॥तुवमतिलकतुमहिमारिपु
नसे॥यहअनुताकहिंआननलसे॥२३॥जसगावेसुरनरित्रिया
र॥गपांतरूपगपायकसंसार॥द्वादशांगपरिमोहनरहै॥थुतिक
रसुगमपंथसिवलहै॥२४॥अनंतचतुष्टयरूपनिहाल॥आवे
मतरुचिसहिततिकालंपुंन्यवानसुजमारगहोइ॥तीर्थंकरप
दविलसेसोइ॥२५॥इंद्रसेवकरिपारनलहै॥गणधरादिसवगु
णनहिकहैं॥हममतेंतनककियोकछुएऊ॥भगतनिमित्तवसु
रनसमदेऊ॥२६॥दोहा॥सवदकामहिततनकमेवादराजम
हराज॥एकीनववपरगटकियोध्यानतनमहतजिहाज॥२७॥इति
स्तु॥अथपदलिख्यते॥ राजविषैजुगलि
निसुषकियाराजत्याजभवसिवपदलिया॥स्वयंवोधस्वंभू
भगवांन॥वंदोआदिनाथगुणषांन॥१॥इंद्रक्षीरसागरजलल
यमेरन्हवायगायवजाय॥मदनविनासिकसुषकरतार॥वं
दोअजितपदकार॥१॥सकलध्यानकरिकरमरागवसंत॥मो
हतारोहोदेवाधिदेवमैंमनवचनकरिकरौंसेव॥मोहितारो
होदेवाधिदेव॥तुमदीनदयालअनाथनाथ॥हमकौंराषो
आपसाथ॥२॥मोहतारोहोदेवाधिदेवयहमारावारसंसारदे
स॥तुमचरनकमलपतसहरकलेस॥३॥मोहतारोहो॥देवाधिदे
व॥तुमनामरसायनजीयपीयध्याननिजजरामरनभवटली
य॥४॥मोहतारोहोदेवाधिदेव॥६२॥इति॥ केदारोरेजियक्रोध
काहेकरे॥देषिकेअविवेकप्रांनी॥क्यौंविवेकनधरे॥रेजि
यक्रोधकाहेकोंकरे॥जिसेजेसीउदैआवै॥सोक्रियाआचरै
सहजतूंआपनौंविगारे॥जायडरगतपरै॥१॥रेजियक्रोधक
हेकोंकरेंहो॥इसंगतिगुनसवनिकोंसवजगउचरै॥तुम
नलेकरमलेसवकौं॥तुरेलषमनजरै॥२॥रेजियक्रोधक

हेकौंकरे॥२॥वेदपरविषहरसकननहिआपनपकोंमरे॥वकक
बायनिगोदवासाछिमांद्यांननतनरे॥जियकोथकाहेकोंकरे॥रि
८॥६॥तिऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥विषैविलाससमकनहियार
को॥यपांनथांनअधिकारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥१॥पल
चलावैसोफलपावैआवरीनगहिसारी॥दीननहींअनिमां
नीनांहींमध्यदसाअवहारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥२॥पूजा
दांनकरैनहिचाहैसुरगतकीरतनारी॥जीवनदसामनकर
जांनीरागदोषपरहारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥३॥चंदननृम
नदीतरूरविससिवारदसेउपगारी॥हेमराजनितहीपुरष
निकरवस्कधानीरयधारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥४॥५८॥
औरकौंविसारप्यारनेमपेमसार॥रोगसोगकौंविजोगजोगहै
अपार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौंविसार॥१॥उभजायसुषुपायधं
नकौंनिवार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौंविसार॥२॥पर्मछीतधर्म
नीनसमरीनकार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौंविसार॥३॥नींदना
सकांमत्रासक्रोधलोभहार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौंविसा
र॥४॥पापहांनआपग्यांनजायकोकरार॥प्यारनेमपेमसार
औरकौंविसार॥दीनतानहींनलानस्वर्गमोषद्वारहेमरा
जजीसनाथमधर्मकार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौंविसार
॥५॥५९॥तिहैचेतनसवहीमेंघाटवाटनहिऔर॥दीपमांट
मंदिरपरगासैज्योंतनमेंसिरमोर॥चेतनसवहीमेंघाटवाटन
हिऔर॥१॥उत्तममनीचकरमसोजैमेंनिजमुकतकीगोर॥काहे
आपथोकाहिविराधोकाहिविरोधोयहमिथ्याकीटेर॥चे
तनसवहीमेंघाटवाटनहिऔर॥२॥जकुंथवावरावज
नैमानैसोनाबोर॥कौंनपुरुषकीनिंदाकीजैकाकीकीजै
गोर॥चेतनसवहीमेंघाटवाटनहिऔर॥३॥केवलग्यानम
ईसवराजैयहसरधासिवपोर॥हेमराजआस्वादेजानेंअनुभै
अमृतकोर॥चेतनसवहीमेंघाटवाटनहिऔर॥४॥६०॥फू
लीवसंत॥जन्मआदीसरसिवपुरगए॥भरतनृपवहतरजिन
मूरतकमईसवनिरमए॥फूलीवसंतफूलीवसंत॥१॥तीनचौ॥

वीसरतननमैंद्रतिमोंश्रंगरंगजेजेनए।।सिद्धसमांनसीससम(
सवकेश्रदनुतसोंनापरनए।।फूलीवसंतफूलीवसंता।२।बाल
श्रादिश्रा हृदकोरमुनिसवनिमुकतसुषश्रनुनए तीनश्रठा
ईफागनिषगमिलना।वेगीतनरान।।फूलीवसंतफुलीवसंत
३।वसुजोजनवसुपेडीगंगा।फिरावृकतसुरश्रालए।।द्यांनत
सोकैलासनमोहेगुनकापैंजांवरनए।।फूलीवसंतफूलीव
संत।४।।इति।।ई६।।तुमग्यांनविभोफूलीवसंत।।यहमनुमध
करसुचसोरमंत।। तुमग्यानविभोफूलीवसंत।१।दिनवडे(
नएवैरागभाव।।मिथ्यामतिरजनीकोघटाव।।तुमज्ञानविभे
फूलीवसंत।२।वहफूलीफैलीसुरुचिवेल।।ग्याताजनसमत
संगकेल।तुमज्ञानविभोफूलीवसंत।३।द्यानतवांनीपिकम
धरस्वरूप।सुरनरपसुश्रानंदघनस्वरूप।तुमज्ञानविभोफूलीव
संत।४।।इति।।ई७।।ग्यांनीजीवदयानितपाले।।श्रारंभतेपर
यातहोतहैं।क्रोधघातनिजटालेहिंसात्यागदयाकहावेज
लेकषायवदनमें।बाहिरत्यागीश्रंतरदागी।।यहकेनरकम
रनमैं।।ग्यांनीजीवदयानितपाले।करैदयापरश्रालसभाव
ताकोंकहियेपाप।।सांतसुभावप्रमादनजाके।।सोपरमारथ
श्रापी।ग्यांनीजीवदयानितपाले।२।मिथ्याचारनिरुद्दि
मरहनासहतावहुङषदाता।।द्यानतवोलविमोलनिजीम
निकैरेजगतनसैंग्याता।।ग्यानीजीवदयानितपालै।४।।इति।।ई
७वेकाजएकब्रह्महीसेती।।श्रंगसंगनहिवहिरभूतसव
धनहारासामग्रीतेती।।काजएकब्रह्महीसेती।।सोलहसुरग(
नवकमेंदुष।।सुषतरसातमैंतनकावेती।।जासिवकारनमु
निगनध्यावे।।सोतेरेघटश्रांनंदसेती।।काजएकब्रह्महीसे
ती।२।दांनसीलजयतपव्रतपूजा।श्रफलग्यानविनकिरिया
केती।।पंचदरवतोंवैंनितन्यारे।।न्यारीरागविधजेती।।काज
एकब्रह्महीसेती।३।जूत्र वनामीजगपरगासी।द्यानतभा(
सीसुकलावेती।।तजोलालतनकेविकलपसव।श्रनुभौमग
नसुविद्याएती।।काजएकब्रह्महीसेती।४।।इति।।ई९ होरीखेल

नषेलैहोरी॥ सत्तानूमिछमावसंतमैं॥ समनाशांनषिमासंगगोरी॥ चे
तनषेलैहोरी॥ मनकोमटपेमकोपांनीतामेंकरुनाकेसरघोरी॥ ध्यां
नध्यांनपिचकारीनरिआपसमैछोरैहोरी॥ चेतनषेलैहोरी॥ ३॥ गु
रुकेवचनमृदंगवजतहै॥ नैंदोनौंडफतालटकोरीसंजमअ
तरविमलव्रतचूकानावगुलालभरेरंगझोरी॥ चेतनषेलैहो
री॥ ४॥ धरममिठाईतपवरूमेवासमरसआनंदअमलकटोरी॥
ध्यांनमुमनकहैसषियनसौंचिरजीवोयहजुगजुगजोरी॥ चे
तनषेलैहोरी॥ ५॥ ६९॥ ७२॥ औरनयोंनजआ जिनराज॥ सफ
लहोंहितेरेसवकाजधनसंपतिमनवंछितभोग॥ सवविध
आनवनैसंजोग॥ औरनयोंनजआ जिनराज॥ १॥ कलपवृ
छताकेघरहैकांमधेनुनितसेवाचहै॥ पारसचिंतामनिस
मुदाय॥ हितसोंआयमिलैसुषदाय॥ औरनयोंआ जिनराज
॥ २॥ दुर्लभतैसुलभहैजाय॥ रोगसोगदुषदूरपलायसेवादेवकरे
मनलाय॥ विघनउलटमंगलवहराय॥ औरनयोंनविआ जिन
राज॥ ३॥ डायनभूतपिसाचनवलै॥ राजचोरकोजोरनचलैंज
सआदरसौंजागप्रकासा॥ ध्यांनतिसरगमुकतपदवास॥ औरन
योंनजिआ जिनराज॥ ४॥ ६९॥ ७३॥ जिनकेहिरदेभगवांनव
सेतिन॥ आंनकौध्यांनकियानकिया॥ चक्री एकमिलापभ
एतैऔरतरनमिलियामिलया॥ जिनकैहिरदेभगवांनवसे॥
तिनआंनकोध्यानकियानकीया॥ १॥ कचिंतमनवंछित
दायकऔरनगनगहिया॥ पारसएककनीकरआवेऔर
धननलहियालहिया॥ जिनकेहिरदेभगवांनवसेतिन
आंनकौध्यांनकीयानकीया॥ २॥ एकमानदसदिसगजिय
राऔरग्रहनउदियाउदिया॥ एककलपतरुसवसुषदात
औरतरुनउगियाउगिया॥ जिनकैहिरदेभगवांनवसेति
नआंनकौध्यांनकियानकिया॥ ३॥ एकअनेमहादांनदेय
कै॥ औरसुदांनदियानदिया॥ ध्यांनतपांनसुधारसचाख्यो
अमृतऔरपियानपिया॥ जिनकेहिरदेभगवांनवसेतिन
आंनकौध्यांनकीयाकीया॥ ४॥ ६९॥ ७४॥ आयोसहजवसंतषेलो

सव होरी होरी हो उत वुध दया छमा वऊ चा दद इति जिपरतन त्रैगुन जोरी हो ग्यांन ध्यांन मफ लाल व ननहे अत हित सवद होत्त घन घोरा ।धरम सुराग गुलाल उडत हे समता रंग डओ घोरी हो ।२। परसन उछरन रे पिचकारी छोरत दोनौ कर तोरी इत तै कुहै नार तुम काकी उत तेक है कौंन छोरा ।३। अउका अरु तु अपावक मे जल तु कसो ?न ईसु वउरा ग्यांन तासिव आनंद सुचंद लषि दि देषे सजन नैन चकोरा ।४। इति ७५

अजतनाथ सौं मन लावो रे ।कर सौं ताल वचन मुष नाथ में चित्त लगावो रे ।अजतनाथ सौं मन लावो रे ।ग्यांन दरस सुष लगुन धारी ।अनंत चतुष्ट पध्यावो रे ।अवगाहना अवाध मूरत अगुरु अलष वत लावो रे ।१। अजतनाथ सौं मन लावो रे ।करना सागर गुन रतनागर जोति उजागर गावो रे ।त्रिभवन नायक मदन पछायक आनंद दायक गावो रे ।अजतनाथ सौं मन लावो रे ।२। परम निरंजन पातक भंजन नविरंजन वहावो रे ।ग्यानत जैसा सहि व सेवौ तैसा पद पावो रे ।अजतनाथ सौं मन लावो रे ।४। इति ७६

राग आसावरी ।अव हम अमर भए न मरेंगे ।तन कारन मिथ्यात दीयो तज कौं करि देह धरेंगे ।अव हम अमर भए न मरेंगे ।उपजे मरे काल तै प्रानी ।ताते काल हरेंगे ।राग दोष जग वंध करत है इनको नास करेंगे ।अव हम अमर भए न मरेंगे ।देह विनासी मै अविनासी ।भेद ग्यांन करेंगे ।नासी जासी हम थिर वासी चोषे हो निषरेंगे ।अव हम अमर भए न मरेंगे ।मैं अनंत वार विनु समझे अव सव दुष विसरेंगे ।? ग्यांनत निपट निकट अषर दो ।चित सुमरै सुमरेंगे ।अव हम अमर भए न मरेंगे ।अव हम अमर भए न मरेंगे ।७। इति ७७

सातरी ।ग्यांनी सोई कहिये करमन दे सुष दुष नीग तै राग विरोध न लहियै ।ना ई ग्यानी सोई कहिये ।कोक ग्यांन क्रिया तै कोक सिव मारग वतलावै ।नि निहचै विवहार साधि कै दोनौ चित्त रिझावै ।ग्यान ई ग्यांनी सो कहिये ।२। कोई कहै जीव छिन नंमुर कोई नित

वषांनै॥ परजयदरवतनयपरमानैं॥ तेनूंसमताआनैंभाई॥
ग्यानीसोंकहियेः॥ कोईकहैगदेहैसोईकोईहिमबोलै॥ ग्यांन
तस्यादसुतुलामैंदोनोंवलैतोलै ताईग्यानीसोंकहियेः॥४॥ इति
श्री॥ नाईकौनधरमहमचालै॥ एककहैजिहकुलमैंआएताकु
लकोकुलगावैं॥ नाईकौनधरमहमचालै॥१॥ सिवमतबोधसुवे
दनैयायकमीमांसकअरुजैनां॥ आपसरीहैंआगममाहैं॥
काकीसरधाऐनां॥ नाईकौनधरमहमचालै॥२॥ परमेसरपैं
आयाहो ताकीवानसुनीजै॥ पूछेबहुतनबोलैबहुविधिकर
क्याकीजै॥ नाईकौनधरमहमचालै॥३॥ जिनसंबमतकेन्यायसे
चकरिमारगएकबतायो॥ द्यानतसोगुरुपूरापायाआगहमार
आया॥ नाईकौनधरमहमचालै॥४॥३॥ रागगौरी॥ हमारोकारज
कैसेहोय॥ कारणपंचमुकतमारगकेतिनमैंकेहैंदोय॥ हमा
रोकारजकैसेहोय॥ हीनसंघननलघुआउषाअलपमनी॥
षाजोइ॥ कालेनावनसबैसाथीसबनगरदेख्योटोइ॥ हमारोका
रजकैसेहोय॥१॥ इंद्रीपंचसुविषयनदौरैमानेकह्यानकोइ
साधारनचिरकालबस्यौमैंधरमविनाफिरसोअ॥ हमारोका
रजकैसेहोय॥२॥ चिंताबमीनकछुबनआवैअबसबचिंता
खोइ॥ द्यानतएकसुधनिजपदलखिआपमैंआपसमोइ॥
हमरोकारजकैसेहोय॥४॥६॥ रागगौरी॥ हमारोकारजऐ
सेहोइ॥ आतमआतमपरपरजानैतीनोंसमैसोय॥१॥ हमारो
कारजऐसेहोइ॥ अंतसमाधिमरनकरितनतजिहोंहिसक्र
सुरलोइ॥ विविधिभोगउपभोगभोगवैधरमतनोंफलसोइ॥ ह
मारोकारजऐसेहोय॥२॥ पूरीआवविदेहनृपकैराजसंपदा
भोइ॥ कारणपंचलहैगहैदुद्धरपंचमहाव्रतजोइ॥ हमारोका
रजऐसेहोय॥३॥ तीनजोगथिरसहैपरीसहआवकरममल
धोय॥ द्यांनतसुखअनंतसिवबिलसैजनमैंमरैनकोइ हमा
रोकारजऐसेहोइ॥४॥७॥ देख्योनाईंआजिनराजविराजेकं
चनमणिमयसिंहासनपरिअंतरीछप्रभुछाजे॥ देख्योनाईंआ
जिनराजविराजे॥ तीनछत्रत्रिभुवनजसमानेंपैचौसठचमरस

मानै॥ वांनीजोजनयोरमोरसुनिदरऋहिपानगनाजे देषोमाई
श्री जिनराजविराजे॥१॥ सादेवारहकोमंडभीआदिकवाजेव
जे॥ छत्रअशोकदिपतिनामंडलकोमिसूरससिलाजे॥ देषोम
ईश्री जिनराजविराजे॥२॥ पुहपवृष्टिजलकनकमंदपवनइंद
सेवनितसाजे॥ प्रभुनचुलावेद्यानतआवेसुरनरपसुनिजकाजे
देषोमाईश्रीजिनराजविराजे॥३॥ ॥पं॥ देषोमाईआतमराम
विराजे॥ छहोदरवनववतलोयहेआपसुग्पायछाजे देषोमा
ईआतमरामविराजे॥१॥ अरिहंतसिद्धसूरिगुरुमुनिवरयांचों
पदजिहमांही॥ दरसनग्यानचरनतपजिहमेंपटतरकोऊनां
ही॥ देषोमाईआतमरामविराजे॥२॥ [illegible]ग्यांनचेतनकहियै
जाकीवाकीपुदगलकेरी केवलग्यानविभूतिजासकेआ
नविनोभ्रमचेरी॥ देषोमाईआतमरामविराजे॥३॥ एकेंद्रीपंचें
द्रीपुदगलजीवअतिंद्रीग्यांता॥ द्यांनतताहीसुद्धदरवकों
जांनपनोसुषदाता॥ देषोमाईआतमरामविराजे॥४॥ गोरी॥ १॥
अवमोहतारलेऊमहावीर॥ सिधारथनंदनजगवंदनपापा
निकंदनधीर॥ अवहमतारलेऊमहावीर॥ ग्यांनीध्यांनीदा
नीजांनी॥ वांनीगहरगंभीर॥ मोषकेकारनदोषनिवारनरोगवे
दारनवीर॥१॥ अवमोहितारलेऊमहावीर॥ आनंदपूरतस
मतासूरतचूरतआपदपीर॥ वालजतीदृढव्रतीसमकतीडु
षदावानलनीर॥ अवमोहितारलेऊमहावीर॥२॥ गुनअनं
तभगवंतअंतनहीससिकपूरहिमधीर॥ द्यानतएक
ऊगुनहमपावेंदूरकरैभवभीर॥ अवमोहतारलेऊमहा
वीर॥३॥ गोरी॥ ६॥ जैजैनेमनाथपरमेस्वर॥ उत्तमपुरुषने
कोंअतिउच्छवनाल्यानीलधरनेस्वर॥ जैजैनेम[illegible]नाथ
परमेस्वर॥ नारायपूर्वजन्मपसेपकरिजेअयतिमरदिनेस्वर
॥१॥ तुमजसमहिमांहमकहाजानेंनाषनसकतसुरेस्वर॥
इंद्रसवैमिलपूजैजैअमततरेस्वर॥ गुनअनंतहमअंतन
पावेंवरननसकतगनेस्वर॥ जैजैनेमनाथपरमेस्वर॥२॥ गु
नधरसकलकेंपुनवाटेजैनभजनलपोतेस्वर द्यांनतह

मछदमस्तुकहाकैकहत सकतसरवेस्वर।जैजैनेमनाथपर।
मेस्वरा।४।गौरी।छपा।आदिनाथतारनतरना।नाभिरायमरुदेव्या।
नंदाजनमआजोध्याआहरनं।आदिनाथतारनतरना।१।सकल
मही छमाजुगलउधितमए।करमभूमिविधिसुषकरनं।आप
छवनृसमतलपचेतै।भगतननोगजोगधरने।आदिनाथतार
ना।२।कायोत्सर्गछमासथस्यौ।दिढवनषगमगपूजनचरना।धी
रजधारी वरषअहारीसहसवरसतपआचरनं।आदिनाथतार
नतरना।३।करमनासिपरकासग्यांनकौसुरपतिकियोसमोसर
नं सवजनसुषदेसिवपुरपुहचे।ध्यानअनविनुमपदसरने आ
दिनाथतारनतरना।४।गोरी।पदी।आदिदेवपद।सेलीजेवंती
यहरूजी।सिवमारगकौराहचलावे औरनकौई रूजी।सेली
जे सेलीजेवंतीयहरूजी।देवधरमगुरसांचेजांनेकुरौमार
गत्यागियो।सेलीकेपरसाद हमारो जिनचरननचितलागियो।से
लीजेवंतीयहरूजी।१।चिरकालसहोअतिभारीसोअवस
हजविलायौ।३।रिनहरनसुषकरनमनोहरधरमपदारथ
पायौ।सेलीजेवंतीयहरूजी।२।ध्यांनतिकहेसकलसंतनि
कौंनितनप्रति अनुगुनगावौ।जैनधरमपरधांनध्यांनसौंसव
हीसिवसुषपावौ सेलीजेवंतीयहरूजी॥३॥राग सोरठा।दे
ष्योनेकफूललेनिकस्यौविनुपूजाफलपायो।हरषतभाव
मस्योगजपगतलसुरगतअमरकहायो।देषोनेकफूल
लेनिकस्यौविनुपूजाफ[illegible]लपायौ।१।मालनिसुतादेहलीपू
जीअपछरइंद्रकिपौ।दृहीचरसौंहिरदैवनघालेसौदारि
दतुरततसायो।देष्योनेकफूललेनिकस्यौविनुपूजाफल
पायौ।२।पूजारहलकरजिनपुरुषनितिनसुरनवनवन
यो।चक्रीभरतननयोजिनवरकौअवधिग्यांनउपजायो।देषोने
कफूललेनिकस्यौविनपूजाफलपायो।३।आरदरवलेपू
नुपूजोतापूजनसुरपतआयो।ध्यानअनआपसमांनकरनहें
मरध्यासौंसिरनायो।देषोनेकफूललेनिकस्यौविनपूजाफ
लपायो।४।इति पद।रागमारगा।म्हाईआपनपापाकमाए

ननकीछे विवेकनईगतिलंकनईहै।।कमिरहीघरकीघरनीअतिरंकन
कोपरिजंकलईहै।।कंपतिनारिवहेमुखलारमहामतिसंगातिछारि
गईहै।।अगउपगपुरानपेरतिमनोनुरऔरनवीनमईहै।।उढास्वै
यारूं।।रूपकोनघोजरसोतरूपतुसारदहोजयोपतिफरकिथे
रहीफारसनीसी।।कुंवरीनईहैकटिईवरीनईदेदेहकवरीईतिकअ
यसेरमाहिपूंनीसी।।जोवनने [illegible]
[illegible] विदालीनीजरनेजुहार
कीनी

ओहैऽनअपनेअनागउदैनाहिजांनी चीतरागवांनीसारदयारस
नीनीहै।।जोवनकेजोरीथिरजंगमअनेकजीवजानैजेसंतापेकछु
करुनांनकीनीहे।।लईअवजीवराशिआपेपुरलोकपासलेगावै
रहैगोउधनईनौंनवीनीहै।।उनहीकेनपकोनरोसोजांनकांपतहै
वाकुरमोकरानेंलाठीहाथलीनीहै।।४०।।जाकोंइंउचाहेअमिड
सेउमांहै।।जासजीवमुक्तमाहेजाइनोमलवहावेहै।।असोनज
नमपायविषयविषयाबोयेजेसेंकाचसाटेमूढमांनिकगावावे
मायानदीबूडग्रीजाकायावलतेजछीजाआयापलतीजाअव
कहावनिआवेहै।।तातैंनिजसीसटालेनीचेनैनकीयफोलेक
हावटिवोलैंघ्रछिवचनउरावेहै।।४१।।देषकुजोरजमनटकोज
महीपतिकेपहतेआगवांनी।।उजलकेसनिसांनधरेवकुरोग
निकीसंगिफोजपलांनी।।कायपुरीतजिभाजिचल्योजिहिंआव
तजोवनभूपगुमांनी।।लूटिलईनगारीसगारीदिनदोयमेंघोइहै
नावनिसांनी।।४२।।दोहा।।सुमतीहितजोवनसमैं।।सेवोविषेविक
राल।।सांटेनहिंघोडयेजनमजवाहसार।।४३।।कर्त्तमअदे
वगुरुसांचेमानिसांचोधर्महियेआनिसांचोहीवषानसुनिसं
चेपंथआवेरा।।जीवनकीदयापालिकूवतजिचोरीटालदेषनिंदे
रांनीचालत्रिसनाघटावेरा।।अपनीवडाईपरनिंदामतिकरेना
ईरहीचतुराईमदमासकोवचावेरा।।साधिषटकर्मसाधसंग
तिमेंवैठिवीरजोहैधर्मसाधनकोतेरोचितचावेरा।।४४।।साचे

देवसो ईजामैं दोस कोन लेसकोई है गुरु जाके उरका हू कीन चा ह
है सही धर्म चहीजहां करुणा प्रधान कही ग्रंथ जहां आदि अंत
क सो निवाह है॥ एई जगत रत्न सारिय तकौं परषि यार सांच ले कुंड
वडारि नरत्न कोला ह है॥ मानुष विवेक विना पसु की समान
तातें यह वात ठीक पारनी सलाह है॥ ५५॥ देव लक्षण मत
विरोध निराकरण॥ छप्पै॥ जो जग वस्तु समस्त हस्त तल जेम निहारै॥ जगजन कौं संसार सिंधु के पार उतारै॥ आदि अंत अविरुद्ध वचन सबकौं सुष दानी॥ गुन अनंत जिस मांहि दोष की नांहि निसानी॥ माधो महेस ब्रह्मा किधौं वर्द्धमान के बुद्ध हैं पेहचित नजा सतिस के चरन नमो सुभ देव वहै॥ ५६॥ यज्ञ निंदा सवया॥ ३१॥ कहै पसु दीन सु निजाप के करैया मोहि हो मत कुला सन मैं कौन सी वडाई है॥ स्वर्ग सुष मैं न चहौं देहु मुझे यो न कहूं घास षाय रहूं मेरे यही मनि नाई है॥ जो तू यह जानत है वेद यों वषानत है जग्य जलो जीव पावै स्वर्ग सुखदाई है॥ डारैं क्यों न वीर यामैं अपने कुटंव ही कुं मोहि जिन जारै जगदीस की दुहाई है॥ ५७॥ सातौं वार का नाम॥ छप्पै॥ अघ अंधेर आदित्य नित्य स्वाध्याय करिज्जै॥ सोम सम संसार ताप हर तप करि लिज्जै॥ जिनवर पूजा नियम करौ नित मंगल दायन॥ बुध संजम आदरौ धरौ श्री गुरु पायन॥ निज वित समांन अभिमांन विन सुकर सुपत्त हि दान कर॥ यौं सुनि सुधर्म षट कर्म भनि जिन रत्न व लाह लेह नर॥ यौं सुनि सुधर्म षट कर्म भनि जिन रत्न व लाह लेह नर॥ ५८॥ दोहा॥ एई छह विधि कर्म भजि सात विसन तजि वीर॥ इस ही पैंड चले हैं॥ क्रम क्रम भव जल तीर॥ ५९॥ सात विसन नाम दोहा॥ जुवा षेलन मांस मद वेश्या विसन सिकार॥ चोरी पर रमनी रमन सातौं पाप निवार॥ ६०॥ जुवा निषेध॥ सकल पाप संकेत आपदा हेत कुलछन॥ कलह षेत दारिद देत दीसत निज अछन॥ गुण समेत जस सेत केतरवि रोकत जैसें॥ औगुन निकर निकेत लेत लखि
बुधजन ऐसैं॥ जूवा समान इस लोक मैं आन अनीति न पेषि

रं॥ इस विसन रायके षेलको कोतिक इनहि देषिए॥ ५१॥ मांस निषेध
छप्पै॥ जंगम जियको नांस होय तव मांस कहावै॥ सपरस आकृ
ति नाम गंध ऊरघन उपजावे नरक जोगनि रद ईषां हि नर नीची
अधरमी॥ नाम लेत तजि देत असन उत्तम कुलकरमी॥ इसनि
ठ निद्य अपवित्र अतिक्रमि कुलरामिति निवासनित॥ आमिष अ
त इसके सदा वरजो दोषदयाल चित॥ ५२॥ मद निषेध सवैया
का मिरा सकुवास सराय दैदै सुचिता सव छीवत जाय सही॥
जि सपान कीये सुधि जात हियें जननी जन जानत नारिय
ही॥ मदिरा सम और निषद्ध कहां यह जांनि भलेकुल मैं न गृ
ही॥ ग्रहै वनकौ वह जीवन लौ जिन मूढ हि निके मतलीन क
ही॥ ५३॥ वेस्या निषेध सवैया॥ धन कारन पापनि प्रीति क
रे नहि तोरत नेह यथा तनको॥ लव चाषत नीच नके मुहको सु
चिता सव जाय छिये जिनको॥ मद मांस वजारन षाय सदा अंध
लो विसनी न करै घिनको॥ गनिका सग ले सव लीन तये धिग है
धिग है धिग है तिनको॥ ५४॥ आषेड निषेद सवैया॥ रथ कानन मे
वसै ऐसो आनन गरीव जीव प्रानन सों प्यार जांन पूंजी जिस
ये है है काय रसुभाव धरे का कोदीन जोह करै सव ही सो डरै दां
त लियें तन रहै है॥ काहू सों न रोष निका हू पेन पोष चहे है काह
को परोषपर दोष नांही कहै है॥ नेक स्वाद सारिवेकों ऐसी मृगीम
रिवे कों कुहा हार कंठोरनि के मोकर वहै है॥ चोरी निषेध छप्पै॥
चिंता तजै न चोर रहत चौकायत मारै॥ पीटैं धनी विलोकि लो
क निर दै करि मारै॥ प्रजापाल करि कोय तोपसो रोप उडावै म
रे मह इष दोष फिरि अति नीची गति पावे॥ अति विपति मूल चोरी
विसन प्रगट त्रास आवै नजरि॥ परिवित अदत्त अंगार गनि नि
ति पुन परसैं न करि॥ ५६॥ परस्त्री निषेध॥ कुगति वहन गुण
गहन दहन दावानल सी है॥ सुजस चंद घन घटा देह कृस
रन छई है॥ धन सर सोषन धूप धर्म दिन सांझ समानी॥ विपति भुयंग मव
सवाई वेद वषानी॥ इह विधि अनेक औगुन भरी प्रान हरन फांस
प्रवल॥ ५७॥ परस्त्री त्याग सवया॥ दिव दीपक लोय वनी वनिताज

इजीवपतंगतिहांपरते॥ ६८॥ षपावतप्राणीमावलहै॥ वसेजनरहै
रुगसेजरते॥ ईसभांतिविचछनआंषिनकेवसिहोयअ
नीतिनहीकरते परतीलषिजेधरतीपरषेंधनिहेधते
हेधनिहेनरते॥ ६९॥ दिढसीलसिषिरोमनकारिजमें
जगमेंजसआरजतेईलहेंतिनकेजुगलोचनवारिजहै
ईसनीतिअवारजआपकहें॥ परकामिनिकोंमुषचंद
चितेंमुदिजोहिसदायहटेवगहें॥ धनिजीवनहैतिनजीव
नकोंधनिमायउनेंउरमोंकिषहै॥ ७०॥ कुसीलनिंदा
सवैया॥ जेपरनारिनिहारिनिलज्जहसेंविकसेंवुधि
हीनवडेरेकूं विनकीजिमपातलिदेषिषुसीउरकूंक
रहोतघनेरेहि जिनकीयहटेववहें तिनकोंईसमों
आपकीरतिहेरीं किपरलोकविषेंविजुरीकरिहेंसता
षंडमुखाचलकेरे॥ ७१॥ एक एकव्यसनसोनष्टभ
येतिनकेनांम॥ छंद॥ छप्पै॥ प्रथमपंडवानृपषेलिज
वांसवषोयो॥ मांसषायवकरायपायविपदावहु
रोयो॥ विनुजांनेमदपांनजोगजादोगनदज्जै॥ चारु
दत्तदुषसहेविसिवाविसनअरकेहतवुह्मदत्तआ
षेटसोंछिजसिवभूतिअदत्तरतिपररमनिरांचिरांव
लगयोंसातोसेवतकोंनगति॥ ७२॥ दोहा॥ पापनंमन
नरपतिकैंनरकनगरमेंराज॥ तिनिपठयेपांयक
विसनतनिजपुरवसतीकाज॥ ७३॥ जिनकेजिनकेव
चनकी॥ वसीहियेपरतीति॥ विसनप्रीतितेनरतजे॥
नरकवासभयभीत॥ ७४॥ कुकविनिंदा॥ सवैया॥ ३१॥
रागउदैजगअंधभयोसहजैसवलोगनलाजगमा
ई॥ सीषविनानरसीषिरहेविसनोदिकसेवनकीसु
घराई॥ तापरिऔरिकिरचेसवकाव्यवडेनिरदेंकुमती
कविनाईं॥ औरअसूजनकीअषियोनमुवीनरिये
हलितेरतआमाई॥ ईध॥ कंचनकूंतनिकीउपमांक

जैनश०
५२

हिदेतउरोजनुकोकविवारै॥ परिणांमविलोकिनिकेम
ति॥ नीलककीटकनीदकिद्वारै॥ योमततवेनकहेनकुंप
डितयेजुगअंमिषपिंडउघारै साधनकारदईमुखछा
रनयेईहहेतकिधौकुंचकारै॥ ६४॥ येबुधिमलिनरदु
वतैसमक्योनकहोकिसतरिवनाई॥ दीनकुरंगनिके
तनमेंतिनदंतधरैंकरूनांकिनिआई॥ क्यौंनकरीति
नजीवनकेजेकामकरैपरकौंउबदोई॥ साधुअनुग्रह
डरजनदंडउवेसधतेविसरीचतुराई॥ ६६॥ मदहस्तीव
र्ननं॥ छ॥ ग्यांनमहावतडारिसुमतिसांकलगहिखंडे
गुरुअंकुसनहिंगिनैब्रह्मव्रतविरषविहंडै करिसि
द्धांतसिरन्होंनकेलिअघरजसोठांनैं॥ करनचपल
ताधरैकुमतिकरणीरतिमांनैं॥ डोलतसुछंदमदमत
वअतिगुणपथिकनआवतउरैं॥ वैरागषंभवांधे
नुसहिमनमतंगविचरतवुरैं॥ ६७॥ गुरुउपकारवर्ननं॥
सवैया॥ ढहींसीसरायकापर्थीजियवसोआयरत
नत्रयनिधिजीमेंमोषिजाकौंघरहैं॥ मिथ्यानिसिकारी
जहांमोहअंधकारभारीकामादिकतस्करसमूहन
कौघरहैं॥ सोवेजोअचेतसोईखोवैनिजसंपदाकों॥
तहांगुरुपाहरूपुकारेंदयाकरिहैं॥ गाफिलनहूजेभ्रा
तऐसीहैअंधेरीरातिजागिरेवटोहीइहांचोरनकोडर
हैं॥ ६८॥ कषायजीतनउपाय॥ सवैया॥ छेमनिवासछि
मांधुवनी॥ विनुक्रोधपिसाचउरैंनटरैगो॥ कोमलभा
वउपावविनोयहमांनमहामदकोनहरैगो॥ आरज
सारकुठारविनाछलवेलिनिकंदनकौनकरैगो॥ तो
षसिरोमनिमंत्रपदैविनुलोभफणीविषक्योंउतरै
गो॥ ६९॥ मिष्टवाक्य॥ सवैया॥ काहेकौंवोलवुरे
नरनाहककौंजसधर्मगमावैं॥ कोमलवैनचवैकि
नऐनलगैकछुहैनसवैमनभावै॥ तालुछिदैरसनां

नमिटैनघटैकछुअंकदारिदनआवैजीवकहैजियहां
ननहिंसुक्रजीमवजीवनकौंसुषपावैं।७०।धीरजदिढ
वन।सवैया।आयौहेअचांनकनयौनकअसाताकर्म
ताकेहरिकरिवेकौंवलीकाहूहहिये।जेजेमननायेभ
तेकुंमायेपुन्नपापआपतेईअवआयेनिजवदेका
ललहियें।येरेमेरेवीरकहेहौतहैंअधीरयामैंकाहूं।
कौंनसीरतेंअकेलौयेकसहिये।नयेदलगीरकछूपीर
नविननिजायपाहीतेंमयानेंनंतमांसगीररहिये।७१।
होनहारउनिवार।कैसेकैसेवलीनपरिविष्यातनये
अरिकुलकांपैनेकमोहकेविकारसौं।लंघेगिरसायर
दिवायकरमेदियेजिनुंकायरकीयेहेंनटकोरनहका
रसौं।ऐसेमहामांनीमोतीआयेंरूनहांरिमांनीक्यौंहे
नउतरेनेकमांनकेपहारसौं।देवसौंनहारेकुंनिदांनेसें
नहारेंऔरकाहूंसौंनहारेपरिहारेहोनहारसौं।७२।का
लसामर्थवर्नन।लोहमईकेईकोटनिकीवोटकरोकं
गुरेनतौपरोपरावोपटनेरिकैं।इंद्रचंदवौकापतचौक
मकैचौकीदेऊंचावरंगचमुंचऊंवौररहौघेरिकै।नहौ
येकजोहरावनायवीचिवेवोकुंनिवोलोमतिकोऊजो
बुलावेनावटेरिकै।ऐसेपरपंचपोंतिरचौकौंननौति
जोतिकैसैंरूनछोरेकालदेष्योंहमहेरिकैं।७३।गपानी
जीवउषीकपनाम।सवैयाईकतीसा०।अंतकसौनछूटे
निहचैपरिमरिवजीवनिरंतरयूजें।चाहतहैचितमैंनि
तिहीसुषाहोयनलाभमनोरथपूजें।तौपनिमूढवंधौ
नयआसवपांवउषदोनलजैं।छोडिविचछिनता
जडलषिनधीरजधारिसुषीकिनहूजें।७४।धीरजधा
रण।सवैया।वोधनलाननिलाररिष्यौलघुदीरघसुं
कनकेअनुसारैंसोलहिहैकछूफेरनहीमरुदेसकेहेर
सुमेरसिधारेपघटनिवाधिकहीवहहोयकहांकरिआ

चतसोंयाविचारै कूंपकिधौंभवसागरमैंनरगागरमांन
मिलैजलसोरै ७५ आसनदीव मोहसेमहांनतुंग
चैतसोंटरिआईतिहूंजगजूतलकौपायविसमरीहैं
विविधिमनोरथमैंनृरिजलनरीवहैं तिसनातरंगा
तिसौंआकुलनांघरीहैं परिभ्रमनोरजहांरागसोंम
करतहोंचिंतातटतुंगहेषधर्मद्रुहिटरीहैं ऐसीयु
हाआसानांमनदीहैं अगाधताकौंधन्यसाधधीरज
जिहांनचढितरीहैं ७६ महामूढवर्नन सवैया ३१ अ
जीवनिकितेकतामेंकहांवातीरह्यौतापैंअघकौंन
कौंनकौंरिफेरीही आपकौचतुजांनैऔरनकौंम
दमांनैंसारूहोतआडीहैंविचारतसवैरही वांमही
केचषनसोंचितवैंसकलबालतरुनसौनचौंधेकरै
राख्यौहैंअंधेरही बाहेवांनतानिकेअचौनकहीऐ
सौजमदिसिहैंमसांनथांनहोरनिकौंटेरही ७७ के
तीबारख्वाजसंघसांवरसियालसोंपसिधुरसारंग
समांसरीतदैरैपस्यौ केतीबारचिहूंचिमगादरबके
रघिराचक्रवाकचातकचंडूलतनजीधस्यौ केतीबार
कच्छमच्छमेंडकगिडोलामीनसंखसीपकोडीव्हैजलौं
कौंजलेमेतिस्यौ कोऊकहैंजाहरेतिनोवरतौबुरोम
नैयोनमूढजानैमैंअनेकबारव्हैमस्यौ ७८ डष्टवर्ण
न छप्पै करिगुणअमृतपांनदोषविषविषमसम
र्पे वंकचालनहिंतजैंजुगलजिह्वामुषथप्पें तप्पे
निरंतरछिद्रदेंपररीपनक्वचें विनुकारनउखकरै
वैर कौंकरैंकबऊंनमुचें वरमौंनमंत्रसोंहोयबसि
गतिकीयेहांनिहैं वऊमिलवाननातेंसहीडरजन
रपसमांनहैं ७९ विषमताकीसोवितकी सज्जनजो
रचेतीसुधारससौंकौंनकाजडष्टजीवकीयेंकालकूट
सोंकहेरहीसतातिरमोप्पेफेरियापेक्योंकलपहष

ज्ञाचिक विचार लघु तिनहूं तैं हैं सही।८६ के संजोग सो नभ
सी रोय नसार कछू जगत कौं ष्याल इंद्रजाल सम है वही।श्रे
सें दोय दाय वा तदी से विधि येक सी ही काहे कूं वनाईये वे
छेषे मन हैं यही।८७।चौवीस तीर्थंकरां के चिह्न नाम।गऊ
पुत्र गजराज वाज वानर मन मोहैं कोक कंवल सांथि
या सोम सफरी पति सो है।सुरत रु गेंडा महिष सुर कूं
ति सेहा जौं ने वज्र हरिण अ मीन कलस कछुप नरस्रा
नो।सत पत्र संखा अहिराज हरि रिषव देव जिन आदि
ये।श्री वर्द्धमान लौं जानि येच हन चारु चौवीस ये।८८।श्र
आदिनाथ जी के भवांतर नाम।आदि जयवरमा दूजें म
हाबल भूपती जैं सुरगई ईसान ललितांग देव थाये
हे।चौथें वज्रजंघ राइ पांचमैं जुगल देव सम्यक लैं ह्वै
देवलोक फिरि गये हैं।सातवें सु बुद्धि राम आठवें अ
च्युत इंद्र नौमैं नोनरैंद्र वज्रनाभि नो प्रन ये हैं।१० सें अ
हिमिंद्र जो लिग्यार हैं रिषभ नाथ नाभि वंश नभ घरवैं भ
मी सजन्म लीयो है।८९।चंद्रप्रभ जी के भवांतर नां।श्री भ
धर्म नृपति पालि पद कूं मी सुर गि पहलें सुरयो।कूं भि
अजित सेन छेइ नायक इंद्र अच्युत मैं थयो।वर पद
म नाभि नरेस निज्जीर वैजयंत विमान मैं चंद्रप्रभ स्वाम २
सातवें नौन ये पुरव पुरी न मैं।९०।श्रांतिनाथ जी के
भवांतर।श्रीषेन आरज कुंनि सुरग अमित तेज षेच
र पद पायो।सुरर विचूल सुरग आंनत मैं अपराजित
व लिन्द्र कहायो।अच्युत इंद्र वज्रायुध चक्री फिरि अ
हिमिंद्र मेघरथ रायो।सरवारथ सिद्ध संतिजिन ये प्र
भु कीहा दसा परजायो।९१।नेमनाथ जी के भवांतर।
पहिलें नव वनभील दुतिय अग्नि केत सेव घय।तीजैं
सुर सौधर्म चक्र मविंता मति नभ वचर।पंचम चौथे सु

अदत्तगहै वनितान चहैं लवलोभनजानै मौनिवहै य
टिवे दलहै नहिं नेमजहै हतरीतिपिछानै जौनिवहैवि
निपानइहैं परिमोषतहैजिन वीरवषानै ॥८०॥ अनुभव
प्रगासमणि ॥ जीवतत्त्व अलप आयबुधिबलहि नतामैं अ
गमअगाधसिंधुकौं सैंताहिडांकहैं ॥ द्वादशांगमूलये
कअनुभौ अपूर्वकलाजनमदाघहारीघनसारकीस
लाकहैं यहैं कसीषलीजे याहीकौं अभ्यासकीजे याकै
रसपीजे ऐसो वीरजिनवाकहैं ॥ यतनोहीसारयही आ
तमकौं हितकारयही लौमदार औरआगें ढूकढाकहैं
॥८१॥ श्रीभगवानसंअर्थनो आगमअभ्यासहोउ सेवा
सरवज्ञकेरी संगतिसदैव मिलैसाधरमीजनकी संतने
केगुनकौ वषानयहैं वानिपरौ मिटौ देवदेवपर औगु
नकथनकी सबहीसौं ऐनमुषदैनमुषवैन ॥ नाषोभाव
नो त्रिकालराबो आतमाकथनकी जौलौ कर्मकाटवै
लौ मोहनकेकपाटतौलौ येतीवातहूजे प्रनपूजौं आसम
नकी ॥८२॥ जिनमतउसंसा ॥ दोहा ॥ छयेअनादिअज्ञा
नसौं जगजीवनकेनैन ॥ सबमतमूंदीधूरिकी अंजन ॥
मतहैजैन ॥८३॥ भूलिनदीकेतीरकौं औरजतनकछु
हैन ॥ सबमतघाटकुंघाटहैं ॥ राजघाटहैजैन ॥८४॥ ती
ननवतमैं नरिरहा ॥ यांवरजैगमजीवसमवमतनदे
कदेषिये ॥ ग्रन्थक जैनसदीव ॥८५॥ यसअपारजगज
लधिमें ॥ नहिं नहिं औरइलाज ॥ पाहनवोहनधर्मसब ॥
जिनवरधर्मजिहाज ॥८६॥ मिथ्यामतमदिराछके सब
मतवारेलोय सबमतवालेजानियें ॥ जिनमतमतनहो
य ॥८७॥ मतगुमानगिरवरटलो ॥ वडेनयेमनमांहि लघुदे
षैं सबलोककौं कोहूं ततरतनाहिं ॥८८॥ चामदृतसौं सब
मती चितवकरतीनवेर ॥ ज्ञाननैनसौं जैनही ॥ जोवनईत
नो फिर ॥८९॥ जौ वजाजटिगराषिकेपटपरषैं परवीन

जैन०
५५

सोंतुमसोंमतकीपरषपावैंपुरषअमीत॥१४॥दोयपक्ष
जिनमतविषैं॥नयनिहचैव्यवहार॥तिनिविनुलहैसयह॥
शिवसरवरकीपार॥३॥सीकेसीकेसीकिहैं॥तीनलोकति
हुंकाल॥जिनमतकोंउपगारसबजिनभ्रमकरोंदयाल॥२॥
महिमाजिनवरवचनकी॥नहींवचनवलहोयज्ञुजवलसों
सागरअगम॥तिरैनताहकोयाध॥अपनेंअपनेंपंथकोंपो
षतसकलजिहान॥तैसेंयहमतपोषनां॥मतिसमकोंमति
वास॥५॥ईससागरसंसारमें॥औरनसरनउपाय॥जनमज
नमहूजोहमें॥जिनवरधर्मसहाय॥६॥अथयोग्रंथक्रवोती
काव्योरोस॥आगरामेंवालबुद्धिनूपरबंडेलवालककेष
लसेकवितककरिजांनहें॥औसेंहीकरतनयेंजैसंघस॥
बाईसवाहाकिमगुलावचंदआयेंतिहिथांनहोंहरीसंघ
साहकेसुवंधम्मरागीनरतिनकेकहेसोंजोडकीनां॥एकवां॥
नहें॥फेरिफेरिअरेमेरेआलसकोंअंतआयोजिनकीसहाय
यहमेरेमनमांनहैं॥दोहा॥सत्रहसैंईक्यासिये॥पोसमासत
मलीन॥तिथितेरसिरविवारकोंसकलसमरूरनकीन॥७॥
॥अथ॥इतिश्रीजिनसतकसंपूर्णं॥अथपदलिषते॥:॥
मेरेमनमेंरेंयहआरीयानिसचोरसुभगजिनकीमूरतिपरि
रहूंलुभारी॥मन०॥परमसांतिचिद्रूपसुषलषि॥रागवुद्धिविन
साय०॥मन०॥गुनसनमुषअरविमुषदोउपरि॥समतादिष्टि
धराई॥तुमसेतुमहीहोप्रभुतातुत॥आनयहनिधिपाई॥०॥म
न०॥अरजकरतहैचरननचेरो॥आपनकाजजमांई॥लहूं०
देनिजपदलनलोरहों॥तुमगुणानकिसहाई॥मन०॥अ
रागईमन॥आणीमेंनिसिदिनध्यावांणीयादितुसाईरह॥
हीमनमें॥आणी०॥तुजविनमनुऔरनहिंसदा॥चितरहद
रसणमें॥आणी॥१॥तेनुविनवेष्यामेंडासाडी॥भ्रमतफि॥
होनववनमें॥आणी॥२॥देंनपोंसुखकोंअवमेरेंप्रभु
दीवानेननमें॥आणी॥३॥अथसंबोधिपंचासिकालिष्यते॥

तैं कारम जारा पंचपरमगुरु संत हैं। तीन भवन में सार वंदौ म-
न वच काय सौं॥१॥ अंतरज्ञान नमोंहि छंद भेद समझौं नहीं। बु-
धि थोरी किम होय भाषा अक्षरबावनी॥२॥ आतम कविनउ पा-
य पायो नरभव क्यों तजो। राई उदधि समां न फिरि ढूंढी नहिं पा-
ईये॥३॥ इंविधि नरभव कोय पाय विषैसुष सौं रमैं। सो सठ अं-
मृत षोइ हलाहल विष आचरै॥४॥ ईस्वर भाषे एह नरभव म-
ति षोवे वृथा फिरि न मिलै ईह देह। पिछतायो बहु होईगौ॥५॥ उ-
त्तम नरअवतार। पायो उषकर जगतमें ईजियसौंच विचार।
कछू तो तासा संग लीजिये॥६॥ जैरघ गति कौं बीज धरमीजों
तरआचरै। मांनुषजो निलहंत कूंप परैं कर दीप लै॥७॥ रिस-
तजि कै सुनि वैन सार मनुष्य भवजो निमें ज्यौ मुष उपरि मैन
ना नुदिपै आकास में॥८॥ दो ढाल॥ री फेरी फेरै नरभव पायाऊ-
लजाति विमल तें आयो। जो जैनधरम नहिं धारा। सव ला-
भ विषैं संग हारा॥९॥ लषि वात ही ये गहि लीजे। जिन कथि-
त धरम नित कीजे। भव उषसागर कौं तरिये। सुषसों नौका
जो चरिये॥१०॥ अरि लीन विषैं मंकभरिया। भ्रम मोहि जमो-
हित करिया। विधिनाज वदई घुमरिया। तव नरकभूमि तें परे-
या॥११॥ रा नरक रिधरम अगाऊं। जवलों धन जोवन चाऊं। भ-
ज वलों नहि रोग सतावै। तोहि काल अचानक पावै॥१२॥ एनाते-
र आसन नैंना। जवलों तेरी दिष्टि फिरैंना। जवलौं तेरी बुधिस-
वारी। करि धर्म अगाऊं नारी॥१३॥ वो म जलज्यों जोवन जे है। करि
धम जरा पनो अहै। ज्यों बूढा वैल थकै है। कछू कारिज करि न
सकै है॥१४॥ अमिण संयोग वियोगा। छिण जीव षिणा मृत रोगा।
षिण में धन जोवन जावै। किहि विधि जग में सुष पावै॥१५॥ अंव-
र घन जीव तजे हो। गजकरण चपल धनएहा। तन दर्पण छ-
या जांणों। एवात सचै उर आणों॥१६॥ ढाल राग चंद के वाग वे-
यो मोरियौं॥ जय जमिले नित आरी। कोनहीं धरम सुणीजे
जैन तिमर नित हीना। आसन जोवन छीजै॥१॥ कमला चलै

बुटा१
५६

नपैड सुषदा के पारा। देह थकै व हो पोषि। क्यों न लषै संसार
२। षिन न हिं छोडै काल। जो पाताल सिधारे वैसे उदधि केवी
च जो वऊं हरि पधारे। ३। गण सुर राषैं तो हि। राषै उदधि मथई
या। तो व न छोडै काल। दीप पर्वत पर ईया। ४। स्वर्ग सो नो
दो न। मो णि औषदि सव यो ही। मंत्र जंत्र करि तंत्रा। काल मे
टै नहीं क्यों न हीं। ५। नरक तणा डष भूरि। जे तें जीय सं महो रे
तन वन रूचै आहार। ३। वस व परि गि हडारें। है चेत नगरम
मझारि। नरक अधिक डष पायो। बाल पणां को षेल। स वजा
प्रगट ही गायो। ७। छिन में धन को सोच। छिन में विरह सता
वैं। छिन में ईष्ट वियोग। तरूण कमल सुष पावै। ८। राग सोर
ठा। जुरा पैणां डष जे सह्या। मन नाई रे। सो क्यों भूल्यो तो हि चेत
मन नाई रे। ज्यो तूं विषयां स्यों लग्यों मन नाई रे। आत्म हित न
हिं होय चेति मन नाई रे। १। ऊं व पाप करि तै पड्यो मन नाई रें
गर्भ न वस्यों वसि पाप चेति मन नाई रे। सात घात लहि पायें
मन नाई रे। अज हो या पर वत आप चेति मन नाई रे। २। नहिं
जरा गद आई हैं। मन नाई रे। ३। नहि न कहां गयों जम्म जन
चेति मन नाई रे। जो न चिंत तूं के रह्यो। मन नाई रे। ये सब है
पर तन। चेति मन नाई रे। ४। उप सुष कों न व दधि पर्यो मन
न नाई रे। पाप लहरि उर व देई। चेति मन नाई रे। पक ह्या धर्म
जिहां जनो। मन नाई रे। सुष सो पार करे हि। चेति मन नाई
रे। ५। गी करहें धन सासतो मन नाई रें। होई न रोग न काल
चेति मन नाई रे। जब लग धर्म न छांडिये। मन नाई रे। धर्म
कथित जिन धर्म रि। चेति मन नाई रे। ६। डर प तजो पर लो
क तें। चेति मन नाई रे। चाहत सिव सुष कार। चेति मन नाई
रे। क्रोध लोभ विषया तजो। चेत मन नाई रे। को टि क है अ
घ जाल चेति मन नाई रे। ७। दील न करि आरंभ तजो। मन
नाई रें। आरंभ मैं जीव घाव। चेति मन नाई रे। जीव घात मैं अ
घ वढै। मन नाई रे। अघ सों नरक निपात चेति मन नाई रे। ८।

नरक आदि तिर्जंचो कमी॥ मन भाई रे॥ ये परम वड प्रगसि चे
तिमन भाई रे॥ सो सब पूरब पाप तैं॥ मन भाई रे॥ जीव सहे बसि आ
स०॥ चेति मन भाई रे॥ ढाल वीर जिनंद की॥ तेह जग में सुर
आदि देव जी॥ सो सुफल मसार सुंदर ता मन मोहनी जी॥ सो
देय मी विचारि रे भाई॥ तत्व धर्म अब विचारि॥१॥ थिरता जस सु
ष धरम सो जी पावे रतन भंडार॥ धरम विनां प्राणी लहे जी दु
ष नाना परकार रे भाई॥ तत्व अब धरम विचार॥२॥ दान धर
म ते सुर लहे जी॥ नरक लहे करि पाप॥ ई विधि जांणों को प
डे जी॥ नरक विषें तूं आप रे भाई॥ अब तू धरम विचारि॥३॥ दा
न धरम तैं सुर लहें जी॥ नरक लहे करि पाप॥ ईहि विधि जां
णो को पडे जी॥ नरक विषें तूं आप रे भाई॥ तत्व अब धरम वि
चारि॥४॥ धरम के रतन सो भाल हे जी॥ हय गय रथ सब साज प
त्तुक दांन घना वस्यो जी॥ घरि आवें मुनिराज रे भाई॥ तत्व अ
व धर्म विचारि॥५॥ नवल सुनग मन मोहनो जी॥ सुजनी क
र जग मांहि॥ रूप मधुर वच धर्म स्यो जी॥ उपक्यो मायें नांहि
रे भाई॥ तत्व अब धर्म विचारि॥६॥ परमारथ रा वात हे जी॥ सुन
को समदा रे रे भाई॥ तत्व अब धर्म विचारि॥७॥ कि रिसुं निकलं
णां धरम सो जी॥ गुर कहिये निरग्रंथ॥ देव अठारा दोष विनां जी
ए सद्दो सिव पंथ रे भाई॥ तत्व अब धर्म विचारि॥८॥ विन धन घर
सोभा नही जी दांन विनां घर जेह॥ जैसे बिषया तापसी जी॥०
धर्म दया विन तेह रे भाई॥ तत्व अब धर्म विचारि॥ दोहा॥९॥ मोह
ध नहि तन करत अघ करत अघ सो धन नहिं होय॥ धरम करत धं
न पाईये॥ मन वच जांणो सोय॥१॥ मति जीव सोचे किं वृथा हो ण
हार सो होय॥ जे अक्षर विधिनां लिषे॥ ताहि न मेटे कोय॥२॥ ण
ह वह वातें वक कहें॥ पैठे सागर मांहि॥ सिषर चढे वसि लोमके
अधिको पावे नांहि॥३॥ राति दिवस चित तें चिंता॥ मांहि जरे मन
जीव॥ सो दीयो सो पाईयो॥ और न लहें सदीव॥४॥ लांगि धरम
जिन पूजिये॥ सांच कहो सब कोई॥ चित तप मूं चरण वल गाई

लुधा तृषा हिम उनत डंसमसक उक भारी॥ निराभरन तन अर
ती ले द अपजावल नारी॥ चर्य्या आसन सैन उपदायक व ध वंध
न॥ जाचें नहीं अलाभ रोग तिन फरस निवंधन॥ मल जिनस
मांन सतमांन वसि प्रग्या औरु अग्यांन करु॥ दरसण मलीन।
वाईस सब साधु परीसह जीते तिन रा॥ दोहा॥ सूत्र पाव अनु
सार सो कहे परीसह नांम॥ इन के उपजे मूल न सहैं तिन प्रति।
स दा प्रनांम॥ १॥ अथ वरवीर नांम छंद॥ लुधा परीसह वरनन॥
अनसन उनोदर तप पोषें। तं पाष मास दिन वीति गये हैं औ
नहीं वनें जो गविध्या विधि सूं कि अंग सब सिथल भये हैं॥ त
वे तहें उसह भुष की वेदन सहत साधु नहीं नेक न ये हैं॥ तिन।
के चरन कमल प्रति प्रति दिन हाथ जोर हम सीस नये हैं॥ त्रि।
षा परीसह॥ पराधीन मूनि वर की भिषा पर घर ले हि कहें का।
छु नांही प्रकृति विरोध पारनें भुंजत वधु त षा की आस
जहां ही॥ ग्रीषम काल पित अति कोपें लोचन दोय फिरे जव
जां ही नीर न च है स है तिसि ते मुनिजे वंते वरते जग मांही॥ २
सीत परीसह॥ सीत काल सब ही जन कांपें षडे जहां वन विषें
रहे हैं कांकां वाय व हैं वरषा रति वरषत वां दल कुंमिर हे हैं॰
तहां धीर त टनी त ट चौ सठ ताल षाल ये कर्म द हे हैं॥ स हे स भा
ल सीत की वाधा ते मूनी तो र न त र न कहे हैं॥ ३॥ उसन परीसह
भुष प्यास पीडे उर अंतर प्रज ले अंत देह सब दागें। अगनी स
रूप धुप सों षस की ताती वाली काल सी लागे। तपें पहार ता।
प तन उपजे के पें पित अुरजा गें॥ इत्यादी ममर मी की धा यास
ह त साधु धीर जिनें ही ता गें॥ ४॥ डंस मंस परीसह॥ डंस मंस मा
षी तन कांटे॥ पीडें वज पंछी व ऊ ते रों डसें माल विसपाल वी॥
छू लगे षजुरे आनीघ नेरे सिघ स्याल सुंडा व लस त्ता वे रो छ।
री उ ड ष देहि वडे रो॥ ऐसे कस सहें सं प भान नि ते मूनि राज हरों
अघ मेरो॥ ५॥ नगन परीसह॥ तपसी षे वासन निवर तें वाहिर ले।
कलाज भय भारी॥ ता तें परम दिगंवर मूद्रा न घरि नही सकें दीन

संसारी॥ऐसीउघरनंगनपरीसहजीतेसाधसीलव्रितधारी॥निर
विकारबालकवतनिरभैंतिनकेपायनढोकहमारी॥६॥अरति
नपरीसहदेसकालकौकारणलहिकैहोतअचैनअनेकप्र
कारे तबतेंषिन्नहोहिजगवासीकलमलायथिरतापनछा
रे॥ऐसीअरतिपरीसहउपजततहांधीरधीरजउरधारे॥ऐसे
साधनकोउरअंतरवसोनिरंतरनामहमारे॥अस्त्रीपरीसह
तेप्रधिनकेहरिकौंपकरेपन्नगपाकरिपावसौचंपत॥तिन
कोतनकदेषिभौंहवांकीकोटीकसूरदीनताजंपत॥ऐसे
पुरषपहारउडांवनप्रलयपावनतीयवेदपयंपत॥धन्य
धनासाधसाहसीमेजसमेरतिनकौनहीकंपत॥८॥चर्या
परीसह॥चारिहाथपरवानपरषिपथचलतदृष्टिइतउत
नहोतानैं॥कोमलपायकठिनधरापरिधरतधीरवाधान
हीमानैं॥नागतुरंगपालकीचढतेतेसवादउरयादिनघो
ली॥योंमुनिराजसहचर्याडषतवदिढिकरमकुलाचलभैं
नै॥९॥आसनपरीसह॥गुफामसाणसैलसिलकोटर
निवसततहांसुधउरहेरे॥परमितकालरहेनिश्चलतनवारवा
रआसननहीफेरे॥मनुषदेवअचेतनपसुकितवैठेविपतर
आनिजवधेरे॥ठौरनतजनभजेथिरतापदतेगुरसदावसो
उरमेरे॥सेनपरीसह॥जेमहानसोनेकेमहलनिसुंदरसेजसो
यसुषजोवैं॥तेअवअचलअंगएकासनकोमलकठिन॥
भुंमिपरिसोवैं॥ऐसीपाहनषंडककोरकांकरीगडत — —
सेनपरीसहजीततमुनिकरमकोलिमाधोवैं॥११॥उक्रोस
यकपरीसह॥जगतजीवजावंतचराचरसबकेहितसब
कोसुषदानी॥ताहिदेषिदुरवचनकहैदुष्टपाषंडीठगयह
अभिमानी॥मारोयाहयेकरीपापीकोतपसीभेषचोरहै
छानी॥ऐसेवचनवांनकीविरषाछिमाढालओढेमुनिज्ञा
नी॥१२॥वधबंधनपरीसह॥निरपराधनिरवैरमहामुनि
तिनकौदुष्टलोकमिलिमारैंकेईषैंचिषंभसोंबांधतकेई

पाटकमेंपरजालौ तहांकायनहीकोरेकदांचितपूरवकमीवि
पाकविचारो समरथहोयसहैंवधवंधनतेगुरसदासहायह
मारें॥२२॥जाचनपरीसह॥घोरवीरतपकरमतपोधंनतनयोषी
नसूकीगलवांही॥अस्तिज्ञांनअवमेषरहेतननसांजालं
कलकेतिसमांही॥औषदीअसनपांनइत्यादिकदांनजा
कंपरिजांचतनांही॥२३॥अजाचीकठिनधारेकरैहिनमलि
नधर्मपरछांही॥२४॥अलाभपरीसह॥एकवारभोजनकी
विरयातेमुनिसाधवसतीमेंआवैं॥जोनहीवसैंजोगकीवे
रषाविधितोमहंतमनषेदनलावैं॥ऐसोभ्रमतवहुतदीन
वीते॥तवतपवृद्धिभावनाभावें॥योंअलाभकीपरमपरी
सासहेसाधसोहीसीवपावैं॥२५॥रोगपरीस्या॥लीषते॥वातपि
तकफश्रोणतच्यारोयेजववधेघटेतनमांही॥रोगसंजोगसो
गतनजेपरिजेजगतजीवकायरहोईजाही॥ऐसीविधिवेद
नांदारुननसहेतुरतेपवारनचाहैं॥आतमलीनदेहसौविर
कतजेनजतीनिजनेमनिवाहैं॥२६॥तिनसपपरीसह॥सुके
तिनअरतीषनकांटेकोविनमांसरीपायविदारोरजउडिआ
यपडेलोचनमेंतनकूपासतनपीरविथारेतौयहपरसि
हायनहीवंछतअपनेकरसौंकाढिनडारैंयोंतीनपरीसपरी
सावीतेगुरुतीमोतरनिहथारे॥२७॥मलपरीसह॥जावनि
वनिलनहांवलउपो॥विननगनरूपवनथांनथरेहैं॥चलेप
सेवधुपकीवरषांतेउडजधुलीसवअंगपरेहैं॥मलिनदेहकों
देषिमहांमुनिमलिननावउरनांहीकरैहैं॥योमलजनति
परीसहजांतितिनैंहांथजोरिसीसधरेहैं॥२८॥सतकारपु
रसकारपरीसह॥जेमहांनकिघ्यानिधिविजईचिरतपसी
गुनअतुलधरेहैं॥तिनकीविनयवचनसौंअथवाउविघ
णांमजननांहिमरेहैं॥तोमुनितहांषेदनहींमानगेंउरम
लीनताभावहरेहैं॥ऐसेंपरमसाधकेअहनिसिहांथजो
रिहमपायपरेहैं॥२९॥अज्ञांनपरीसहतकपरीसालिषतेः

वि॰
५८

तर्कछंदव्याकरणकलानिधिआगमअलंकारपढिजानैं॥जाकीसु
मतिदेषिपरवादीबिलषेहोयलाजकरआंनै॥जैसेंसुनतसमुद्रके
हरिकौमलगयंदनागनअपमानें॥ऐसेंमाहाबुधिकेभाजन
येमुंनीमदरंचनगानें॥२०॥अज्ञानपरीसह॥सांमधांनवर
तेनिसवांसरसंजमअरपरमवैरागी॥पालतगुपतगयेहिं
नदीरघसकलसंघममतापरित्यागी॥अवधिज्ञानअथवा
मनपरजैकेवलकिरणअकनहींजागी॥योवीललपन॥
हींकरैंतपोधनसोअज्ञानविजायेवडभागी॥२१॥अदरसन
परीसह॥मैंचीरघोरघोरतपकीजो॥अजोरिधिअतिस
यनहींजागै॥तपबलसिधिहोहिसबमुनिसुनतसोनोवात
फंवसीलागैं॥योकदाचिमनमेंनहींचिंततसमकतिसुध
सांतरसपागैं॥सोईसाधअदरसनविजईताकेदरसन
सोअघनागैं॥२२॥इतीवाईसपरीसासंपूर्णं॥अथधरम॥
दोहा॥येहरीतीसेसारकीजीनेजांणोंसबकोय॥तातेंधरमस
नेहकरीईममरतासंगीहोई॥२७॥धरमसारसंसारमेंधर
मकरससबहोई॥धरमबिनांचारूंगतीरूलें॥धरमकरों
सवकोई॥२८॥ओरमिथ्यातसवहीपरिहरोयेनाहीरे॥२०॥श्री
॥अथसंमेदसिषरविलासभाषालिषते॥निर्वाणकांडलि॰
श्रीजिनवरकेपूजिपदसरस्वतिमीमनवाय॥गणधरमुनिके
चरणनमिभाषाकरौंवनाय॥चोपई॥श्रीसंमेदसिषरसुष
धांम॥तापरिवीसकूंटअभिरांम॥तिनतेंतीर्थंकरमुनि॰
राज॥मुक्तिगयेवेधर्मजिहाज॥२॥तिनकीसंष्याकहौंवनां
य॥अरकूटनकौनांमसुनाय॥जिनकेदरसणकौफल॰
कहौं॥याकेकहेमहासुषलहौं॥३॥प्रथमसिद्धवरकूंट॰
जितीस॥अजितनाथदेआदिमुनीस॥येकअडवअरु
असीकोडि॥चौवनलाषकूंकरजोडि॥येसबमोसग
येधरिध्यान॥तिनकौंनमौंछोडिअभिमान॥कूंटदरसे
दरसणफलयेहकोटिवतीसउपवासकहा॥५॥धवलसु

तजेरिषराजतीर्थंकरसंभवमाहाराजः।नौकोडाकोडीगुण
मालां।लक्षवहत्तरिसहसविंयाला।६।पांचसैंत्रिंवपुरकोंग
येतिनकोंध्यांनधरेसुषये।कुंदरसफलषौषधजा।७।वी
यालीसलाषयेमोंनि।८।अभिनंदनकोंआनंदकें॥

॥अथ चरचा स्तकथान तरा अजीकृतिभाषा कै वत लिष्यते॥
जेसरवगपत्र लोकलोक इकंनेडवत देषे हसतांमलज्यूं हाथ लीक
ज्यूं सरव विसेष॥ छहौ दर्वगुणपरजकाल त्रयवर्तमानसम॥ दर्पण
जेमप्रकासना समल कर्ममहातप॥ परमेष्टी पांचो विघनहरन मंग
लकारी लोकमें॥ मन वचन काय मिरलाय गुण आणंद सौंदेषौ कमें
१॥ वंदौ नेम जिनंद चंद सबकौ सुषदाई॥ बलनारायण वंद सुकठ
मण सोनापाई॥ अंतर इंद्रवतीसन वन चालीसोंआवैं॥ रविससे
चकी सिंघसुरग चौबीसौं ध्यावै॥ सबदेव निकेदेव जिन सुगुरु नि
केगुरु रायहो॥ कहैजे दयाल ममहाल पेगुनअनंत सम सुदाय है॥२॥
अथअकृत मंचैत्याले प्रतिमा संष्या स्तुति छप्पय॥ वंदौं आठकं
रोर लाष छप्पन सत्तानूं॥ सहस च्यारसैं असी एक जिनमंदिर जा
नूं॥ नौसे पचीस कोरलाष त्रेप्पन सताईस॥ वंदौ प्रतिमा सरब सह
स नौसे अठतालीस॥ व्यंतर ज्योतिक अगिनतसकल चैत्याले प्रते
मां नमौं॥ आनंदकार दुष हार सब फेरिन ही भव वन भमौं॥३॥ अ
थ सिद्ध नमस्कार छप्पय॥ लोकईसतनवातनसीमजगदीसचि
रजै॥ एकरूपबसुरूपगुन अनंतातम छाजै॥ अलवस्त परमेय
अगरलघु दरब प्रदेसी॥ चेतन अमूर्तीक आठ गुन अमल सुदे
सी॥ नलकिधजय अपअवगाह य दमासन पंरगासन लसे॥ सव गप
यकलोक अलोक विधि नमौं सिद्ध जनपन से॥४॥ अथ आ
चार्य उपाध्याय मुनि तीनौं साध में तातैं साधकौं वंदना छप्पय॥ अ
चार जेतव फायसाध नतीनौ मन आकं गुण छतीस पचीस अवीस
अरु आठ मनाक्रांतीनौ कौ पद साय मुकतनकौ मारग साधे मैं
ननैंगविराग राग सिवध्या नअराधे॥ गुनसागर अविचलमेर
समथीरजसें परिसहै॥ मैं नमौं पाय जुगलाय मन मेरौं जीवं छि
तलहै॥५॥ अथ लोकअलोक सरूप छप्पय॥ अम अनंता स्त्र
नंतअकृत अनमित अषंडसम॥ अचल अजीव अरूप पंचन
हिं इक अलोक नगनि एकार अविकार अनंत प्रदेस विराजे॥

सुद्दसुगुनअवगाहइसोदिसअंतनपांऊं॥यामइलोकनअतीनवि
धअरुतआमिटआईसरो॥अविचलिनअनादिअनंतसवआथ्य
मआदीसरो॥१॥लोकसरूपसवेध्यात१पूरवपछिमसातनर
कतलेरजूसातआगेंयझ॥मध्यलोकराजूएकस्याहे॥ऊंचेव
ढिगयाब्रह्मलोकराजूपांचनपाआगेंघटाअंतएकराजूसरदह
है॥दछनउत्तरआदि॥मध्यअंतराजूसातऊंचाचोदेराजूषट
द्रव्यमस्यालहाहे॥असंष्यातपरदेसमूरतीककियोनस[illegible]ये
रेखैहरैकोनस्वयंसिद्धकह्याहै॥७॥पुनःतीनोलोकतीनोवात
वलैवेढेसवगेरहनुऊअंडजालनतनचांमदेषियै॥अधो
लोकवेत्रासनिमझिलोकथालीमनिऊरधमदंगमनिअैसो
ही विशेषियै॥करकटिधारिपावकोपसारिनराकारभेदमु
रजआकारअविनासीपेषियै॥यरमांहिंज्योंकाजैसेंलोकहैअ
लोकवीचछीकेकोअधारपहनिराधारलेषिये॥८॥पुनःती
नसेंतितालराजूघनाकारसवलोकयनोदधियनतनवातके
अधारहै॥तामेंचौदैचौकूंटात्रसनाडीत्रसथावरपरैतीनसेंउ
नतीसथावरसदारहै॥दछनउत्तरफेरीवीयालीसराजूसव
पूरवपछिमउ नतालीकेविचारहै॥राजूअंसवीसासोतैता
लीसअधिककहेलोकसीसिद्धनिकोमेरोनमोकारहै॥९॥
पुनःकेवलमेंछेकवंसनालछेकत्रसनाभिऊंचीचोदेचो
एकराजूत्रसनरीहे॥यामेंत्रसवहिरथावरआव[illegible]थाका[illegible]
मनेसोअगाऊगयोत्रसवालकरी है॥[illegible]
[illegible]वाहे
रथावरकोपत्रमआववांधीहोयमनेसमेकारमानत्रसरातथ
रीहे॥केवलसमुद्घातत्रसरूपतहांजानतीनोभांतिगहात्र
सजिनवानीषरीहे॥१०॥अथसमुच्चयतीनसेतेतालीसराजू
घनाकारकसावेउकथन॥छप्पय॥पूर्वपछिमतलेसात
मधिएकवषांनी॥पंचसुरगमेंपांचअंतमेंएकपवानीच

ऊमिलापचऊंश्रंसतीनसाटापरवानौ॥दछुनउतरसात[illegible]साटवे
वीसवषानौ॥ऊंचाचौदैराजूगुनौश्रधिकतितालीसतीनसै॥यह[illegible]
घनाकारतिह्लोककौकेवलग्यानविषैलसै॥२१॥अथ[illegible]ओले
कएकसौछातवैराजू॥छप्पय॥पूरवपछमतलैसातमथिएकैगा
ऽ॥उत्तयमिलेसौंश्राउश्रारयकरिन्मारिवताऽ॥दछुनउतरसात
गुनौश्रठाईसराजू॥ऊंचाराजूसातसतकछातवेत्तयाजूयहश्र
धोलोककासरवकहायनाकारजिनधरममैं॥मतिपरौनरकमे
पापकरिरहौसुमारगपरममै॥२२॥अथऊरधलोकएकसौसैता
लीसराजूकथन॥छप्पै॥मध्यलोकरकदृहपांचऊंमेलनइब
रा॥पूरवपछिमदिसाआईकरितीनराजूरद॥दछुनउत्तरसागु
नीइकईसवषानौ॥ऊचासाढेतीनसाढतेहत्तरजांनौ॥साटेचे(
हतरिविथियेहीलोकऋंतसौब्रह्मलग॥राजूइकसौसैतालस
वधर्मकौरपावैसुमग॥२३॥अथ[illegible]नसैतेतालीसलोकमेजुदा(
जुदा[illegible]छप्पय॥छियालीसचालीसश्रौरवौतीसश्रवाईवा
ईससोलेदसउनीससाटेवतलाई॥साटैचैतिससाटसोलसाटेसो
लैजानि॥आगेदेदोहांनिश्रतपाँरैराजूगनि॥इमसातनरक(
श्रावेजुगलऊपरसौलेथानमैं॥राजूतेतालीसतीनसैघनाका(
रकहियानमैं॥२४॥अथतीनलोककेतीनवातवलैकाजुदाजु
दाप्रमाणकथन॥तलैवातवलैमोटजोजनसहससाठऊंचेइ
कराजूलौंसाठसहसधारनै॥आगेसातपांचचारतीनोसोलैजोज
नकेमधिपांचचारतीनवारैकेचितारनै॥ऊर्ध्वलोकतीनोसोलैश्रं
तमांहितीनोवारैसीसदोयकोसएककोसकोविचारनै॥तनवा
तथनुषपौनेसोलेसैताकेनागपंद्रैसैसिद्धएकनागमेनिहारनै
२५॥तीनलोककेपटलएकसौवारैकोर॥एकातीनपनसात(
श्रौरनौगपारतेरजिय॥इकतीससातसुचारदोयइकएकतीन
तिय तीनतीनश्ररतीनएकइकपटलवताए॥इकसोवारस
रववीसथानिककोगा[illegible]रा॥सवसांतनरकश्रावैजुगलश्रयर्ग

वंकउपजनेरे।उनवासनरकतेसवमुरायन दोनौंसमकितमे
२ हि।छहौसंघननवनरकसगर्भजसंनिकथन।छहौतीसरेओटियं
चचौथेपंचमलगच्यारसंघननछठेएकसातएंनरकमग छेरे
च्यारमेंसुरगपंचवारमसुरजावे।च्यारसो लमेंलोकतीनमेंग्री
वकपावे।दोनोंसंघननउतरेएकपंचपंचोत्तरे।इकवरमसरी
रीसिवनहेवदोजिनवचनमेंरे।२७।अथछहोंकालचौदेगुण
थानकसंघननओराकथन।छप्पै।प्रथमद्वतियअरुत्रितिय
कालमेंपहिलाजानो चौथेषटसंघननपंचमेंतीनवृषांनो क
रमभूमितियवीनएकछठेकेमांहीविकलचतुकमेंएक
करवीकेनांही षटकहेसानगुणथांनलगतीनइहोरेलो
लहैं इकषिपकसेनगुनठेरहेंथनजिनवानीमेंकहे।२६।चौ
वीसोंजिनअंतरकथन।सवैया।२। पचासलीसदसनोकिरो
रलाषनछेनोसहसकोरनोमेंकोरनछेनोकोरहे।सोसागरव
षिलाषछासवसहसछवीयाइकोरसागरचौवतीसव
रहें।नवच्यारतीनघाटपोनपल्यअद्दीयावघाटलाषोंला
षवर्षलाषोलाषजोरहे।चौवनछपावलाषसहसपोनेचौ
रासीमावेंअंतरजिनेसगावेंनिसभोरहे।२९।अथएकसौअ
डतालीसप्रकृतिकिसकिसगुनथांनछिपीछप्पय।सातव
प्रकृतिकोघातदीकसायमगुनथानैंजानिआवनहिंहोयन
वमछतीसोजानें।इसमेंलोभविचारवारहेसोलमिदोचे
चौदहेमेंकेअंतवहत्तरतेरहपावे।इमसोरककमेंअउताल
सोगुनमांहसुषकरतहे।सुहमोहिवुलावोआपटिगहम
कंपापनिपरतहे।२०।अथमानवोतरमांन।कवित्तमांनषोत्र
परवतचौराईसूपरएकसहसवाईस।मध्यमानसेतेईसजोज
नउपरच्यारसतकचौवीस।सतरेसेइकईसउचाईजडच्यारसै
मावअरुतीसरिजुविमानकिंह जंतिमिल्योंहैजोजनलाष
कहीजगदीसा।२१।अथदेवलोकनारीसंजोगजेहादोयवु

गमैंकायजोगहै।दोयसुरगमैंफरसनिहारा।चारिसुरगमैंरूपनि
हारै।च्यारिसुरगमैंसबदविचार।चारसुरगमैंरूपनिहारैच्यारिसु
रगमैंसबदविचार।चारसुरगमैंमनसूंविकलपनआगैसहजसी
लनिरधार।आहिमिंदरसबमहासुषीहै।बंदोसिद्धसुषीअवि
कार॥२४॥अथएकसोगुणहत्तरपुरुषकथन।छप्पय।चौवीसै
जिनरायपापबंदेसुषदायक।कामदेवचौवीसईससुमरैसिव
नायक।भरतआदिचक्रेसदोसबजसुरनरस्वामी।नारिदपदम
सुपारिआरप्रतिहरजगनामी।जिनतातमातकुलकरपुरुषसं
करउ नमजियधरौ।कुछ्रुनदनवकुछकमवधरजंगतिमुकति
रूपबंदनकरौ॥२५॥अथकर्मप्रकृति१४८काब्यौरा।छप्पै।ग्या
नावरनीपंचदरसनावरनीनौविध।दोयवेदनीजांनमोहनीअ
ठवीसनिधिआवच्यारिप्रकारनांमकीप्रकृतितिरांनूं।तघाए
कसोतीनगोतदोभेदबषांनू।कहिअंतरायकीपांचसबसो
अठतालीसजांनियै॥इमआठकरमअठतालिसौभिन्नरूप
निजमांनियै॥२६॥सवैया३१।वर्नादिकबीससंस्थानसंघनन
बारैबंधनसंघातदेहअंगोपांगबारैहै।अगुरुलघुआतप
उपघातपरघातनिर्मानपरतेकसाधारनसारैहै।अथिरसे
तथिरसुभअसुभवासठपुगालविपाकीभौविपाकीआच्यं
रैहै।षेत्रकीविपाकीचारआनपूर्वीअठतरवाकीजीवकीवि
पाकीधारैअघटारैहै॥२७॥सवैया॥३१॥केवलदरसज्ञानआ
वरनीताकीदोयमिथ्यातसमैंमिथ्याततिरपांचजांनियेतीं
नचौकरीकीबारैसर्वघातइकईसमेंजलनच्यारनवनोकषा
यमांनिये।ग्यानावरनीकीचारदर्शनावरनीतीनअंतरायपां
चसम्यकमिथ्यातठानियेदेसघातिकीछवीसबाकीइक
सौअघातसीनौघातकर्मघातआपसुहजानिये॥२८॥वर्ना
दिकचारसोलैनांहिदेहआदिपंचबंधनाहिमिथ्याएकदे
यबंधनाहीहै।सोलेदराटोयबिनाबंधएकसनवीसमि

थ्याउदेतीन रोपवदैउदैपांही है॥उदैऔउदीरनाहै एकसत्व
इसकी सत्तासोऔवनालविसेषनांहीहै॥मिथ्यागुणसोद्वय
लकाइसतसताइसपांचोतिरऔगीसोऔसंगीआपमांहीहै॥२
छप्पै॥ बंधएकसोवीसउदैसोवाईसआवै॥सत्तासोऔववालप
पकीसोकहिलावै॥पुंनप्रकृतिऔरसठनरजीवविपाकीनाम
वदेहविपाकपंचननवचनवाकी॥इकईससरवघातीप्रकृतिदेश
घातिछबीसहै॥वाकीअघा॥इतिइकऔधिकसतभिंनभिन्नसे
वरसहै॥२पेंऔथपापप्रकृतिनामसवैया॥३१॥घातसैंताली
सऊषनीचनरकाच्यांचसंसथानसंघननववर्नरसमांनिये॥नर
नआनतिऔांनपूरवीफरसआठगंधदोयइंद्रीचारवुरीचालगानिये॥
औथिरऔपर्यापतिसूछमऔसाधारनऔपघातथावरऔसुनप
रवांनिपे॥दुर्भगउसरऔसौऔनादरऔजसरूपपापप्रकृतिसोमिटे
त्यागधर्मजांनियें॥२९॥ऐंऔथपुन्यकी॥छप्पै॥प्रकृतिवर्णनासवै
या॥३१॥सुरनरपसुआवसाता॥ऊंचनलीचालिसुरनरगतिऔं
ननिरमांनस्वासहै॥वंधनसघातदेहवर्नरसपंचत्रसतानऔग
सुनदोयगंधआठफासहै॥अगुरुलघुपरचिंदासंसथानसंघ
ननवादरप्रत्येकथिरपर्याप्तजसरासहै॥आतपउद्योतपरघात
सुसुरसुभगआदरतीर्थंकरकोवंदोअघनासहै॥२०॥अथजे
नमतऔघांनवर्णन॥छप्पय॥तिहूंकालषटद्रव्यपदारथनोउ
मआबेसाततत्तपंचास्तिकायषटकायकराये॥आठकर्मगुन
आठभेदलेस्याषटजांनें॥पंचरत्ननसमितचरितगतिज्ञानव
षांनेसरधेप्रतीतरुचिमनधरैमुकतिमूलसमकितयही पद
नमेजोरकरिसीसधरधनसरवगपरविधिकही॥२१॥अथाए
ग्।एए॥कुलकोडिकाकथनसवैया॥३१॥प्रथवीकायवीसदो
यजलसाततेजतीनवायुसाततरुवीसआठपरवांनिये॥वे
तेचउईसातआठनवषगवारेजलचरसाडेवारेचौपेदसजं
निये॥सिरिसरपनवनारिकीपचीसनरचौदेदेवताछवीसकु

ल लाष कोरि मांनिये। दोइ कोराकोरि मांहि आध लाष कोरि नो ही
न व कोंनि हारि कै रया लग्या वष्या निये। २१। अथ पोडे अंक को
नती नाम छप्पय ग्यारै अंक पद ए काअंक दस सवपद षांनी। पूर्व
ओ दे अंक वीस अछ जिन वांनी। गनति सअंक मनुष्य पद्म पेत
ली सअछ २। सरसो कुंड द्विपालके टसै थिति अछ रव १ इक ती
स अंक पलक लप के जंवु फला वट दस वरन। सववा नव लो पारै वर।
न धं निज्ञै न मंसै ह रन। २२। तेरहमै गुनस्थान क सात त्रिभंगी कथन।
छंद। छप्पय पासा जुन आसरव का र वंध इकसा ना कहिये। चौदह आ
व शुभां एण पचासी सतालहिये। असी चौ उगरासी य इक्यासी और पच्या
सी। यह सत्ता चो भेद विशेष जिनम्यु लासी। इकइम चालीस उदी
रणा उदै वियालीस मांनिये। यह तेरहमै गुनथांन मैं सात त्रिभंगी
जानिये। २४। अथ वंध दस क कथन। छप्पै। जीव करम मिलि
वंध देइ रस ता सउदै नगिण। उदीरण उपाय रहि जब लौ सत्ता गुण
उन्न करषन थिति वढै घटै अपकरषन कहिपन संक्रमन परा
रूप उदीरण विनु उपसममत। संक्रमन उदीरन विनु निधितध
ट वट उदि दिनि संक्रमन। वऊवि ना निकाच नवंध दस मिलत्या
प परज्ञां निमन। २५। अथ तीन लोक के विषे अकृत्रिम चैत्या
लो की संख्या कथन। सवैया २३। सात किरोड वहतर लाष
पताल विषे जिन मंदिर जांनि। मध्यहि लोक मैं च्यार से अठावन व्यंत
र जोतक के अधिका नै। लाष चौरासी हजार सतानवे तेईस उरध
लोक वषांनै। एकेक मैं प्रतिमा सत आठ नमै तिहु जोग त्रिकाल
सयानै। २६। अथ तीन याटि नव कोटि मुनि संख्या उक्तं सवैया
२३। पांच किरोड तिरानवै लाष हजार अठा नवे दो से छ जाने जी
व छठे गुन तै आधे सात मैं ग्यार मैं छा नवे च्यार वि का ने आ
नवे दस वारह चौदह सै उनतीस नवे परवांने। तेर मैं आठ हि
लाष हजार अठा नवे दस वारह चौदह सै उनतीस नवे परवां
ने। तेरमै आठ हि लाष हजार अठा नवे पांच सै दोइ वषांने। २७।
अथ अढाई द्वीप ज्योतिषी संख्या। कवित्त छंद।

सूरअगसीय हजार बाइस नषत वषांन। छासठ सहस पचहत्तर नवसै
कोडाकोडी तारे जांन। इकसौ बतीस चंद इही विधि ढाई दीप मध्य प
रवांन। सब चैत्याले प्रतिमा मंडित वंदन करौ जोरि जुग पांन ॥१६॥
अथ आयु कर्म के बंध के भेद ॥६॥ कवित्त। आउ अंसपै सब से इ
कसठ इकईस से सतासी जांन सात सत काउ न तीस दोइ सै तेता
लीस इक्यासीमां न सत्ताईस और नौ तीनै एक आव भेद वषांन
नौमी अंतकाल मे बांधे आगली गति की आउ निदांन ॥१८॥ अथ
सतावन जीव समास ॥ छप्पै। भूजल पावक वाय नित्त इतर साध
रण। सूक्षम बादर कर तहां न उदव तचारन सुप्रतिष्ठ अप्रतिष्ठ
मिल न चौदै परवांनौ। पज अपर्याप्त लब्ध गुन नव्यालीस वषांनौ गु
न वेले चौइंद्री त्रिविध सरव एक पंचास नौ। मन सहित रहित तिअ
ने इंद्री सत्तावन धर दया मन ल। अथ अठानवे जीव समास सवै
या॥३१ इक्यावन थानजां नथा वर विकलत्रै कै गनै जदो तीन
सन मूरछन गाए है। पांचौ सैनी और असैनी जल थल नभचारी
भोग भूमि भूचर षेचर दो दो पाए हैं। दोदो नारकी सुदेव नौ विध
मनुष्य नव भोग भू कुभोग भूम ले छ भूवताए है। दोइ दोइ दोय
नीन आरज मे रजत है अठानवे दयाकै रसाध ते कहाए है। ॥१९॥
अथ साढे सैतीस हजार प्रमाद भेद कथन। छप्पै। विकथा रू
प पचीस और पणवीस कषाय निगुन तै छसै सवा पांचइंद्री मन
सौ गुनि पूनै ग्यार हजार पंचनि जासो गुनिये। सहस पौन अठ नई
ने इन्द्र मोह सुगुनिये साढे सैतीस हजार सब भेद प्रमाद प्रमाद
ध्रुवांनिये। खट हेतु गुनथानक लौक है त्याग आप थिर वांनिये ॥२०॥
अथ ज्योतिक पटल कात लैंड परिअ तरक थन। छप्पै सात सत
का अरु नवै तास पर तारे राजे। ता ऊपरि दस जांन अस्सी पर चंद
विराजे। चार नषत बुध आरत्ती न पर शुक्र वतापै ॥ तीन गुरु कु
ज तीन पर शनि तिरह सये॥ इम नवसे जोजन भूमि तें ज्योतिष च
क्र वषांनिये। इकसौ दस जोजन गगन मै फैलि रह्यौ मो कथन ई
पानाभैमी लतौ है आक इकतालीस कोस परमांनिये। ध ३ अ

यगुनस्थानंकुउपसमीकेकिहिमारगआवैजावैसोकथन।छपै
मिथ्यासासादनमिश्र तीनचउपांचमानजानि॥ इतिपएकमिथ्यात
त तियचौथापहिलागनि॥ आठनमारगयांचतीनदोएकसातप।
नपंचमयंचसुमतज्ञा।तिपदेशएकमन॥ छठैषटइकपंचमअ
धिकमातआठनवदसमुनौतिपआयअरथचौथैमरनगपारवा।
वितुदोमुनौ॥ ४४॥ अथचौवीसतीर्थंकरवर्णकथन। छप्पै॥
पुहपदंतप्रभुचंदचंदसमसेतविराजै॥ पारसनाथसुपासहरि
तपन्नामयछाजै। वासुपूज्यअरूपदमरकतमाणिकउतिसो
है। मुनिसुव्रतअरूनेमसुरनरमनमोहै॥ वाकीसोलेकंचनव
रनयहविवहारसरीरथुति॥ निहचैअरूपचेतनविमलदर।
सगानचारित्रजुत॥ ४५॥ अथश्रीगोमटसारकाआदकानम
स्कारअष्टकसूचक॥ छप्पै॥ वंदौनेमजिणंदनमौंचौवीसजि
नेश्वर। महावीरवंदामिवंदसवसिद्धमहेश्वर॥ सुरुजावधा
मामिपंचपदप्रणामु। सुषअतिगोमटसारनमामिनेमिचंद्रआ
चारजनमि जिनसिद्धअकलंकवरगुनमनिभूषनिउदयधर
कहीमंगलप्रसनसोपहमंगलमवविघनहर॥ ४६॥ अथ
षटविधमंगल। छप्पै॥ नमऊंनामअरहंतथुनऊंजिनचिंव
कलंकहर। जिनमोदारिकदिव्यविवजनिर्वाणअवनिपर
कल्ह कल्यानककालजनजकेवलगुनपायक। यहषटवि
धनिक्षेपमहामंगलवरदायक। मंगलअन्नेकसवजाज्ञानमंगसु
मलहजीयरा। यहआदमध्यपरजंतमैमंगलराषोहीयरा॥ ४७
अथपांचप्ररूपणाचौदहमारगणामलगाईनहैसोकथ
न। सवैया॥ ३१॥ जीवसमासपरजापतिमनवचस्वासइंद्रीक
मांहिआवगतिमेंवषानियै। कायवलजोगमांहिइंद्रीपांच
ज्ञानमांहिआहारपरिग्रहएजोगमैप्रवांनियै। क्रोधमा
हिलपअरूवेदमांहिमैथुनहै। ग्यानग्यांनमांहिदरसंदर्गी
मांहिजांनियै॥ पांचौपरूपनाएचौदहमैगर्भितहैमा
नमारगनादोयकनेदमांनियै॥ ४८

ज्ञानन ९
८७

षतांम॥ छप्पै॥ वंदौ पारसनाथ नमौं वलरांम चंद्रवर। कांमदेव हनुमं-
त अगटराव नमांनी नर। द्वानेम्मूरम्मेयं समीलतैसीत्ता नांमी॥ तपवा-
रूवलराव ग्राबन्नर नेम्म स्वामी जगमहादेव हेरुद्रपद किम्र नांम
हरिजां नियै॥ द्यानत कुलकरमैं नामिन पतीमवलीमुवमां नियै
॥८०॥ सर्वेद्वीप समुद्रो के वंडमां की गणती कथन सवैया॥ जंबूद्वी-
प दोइ लवनांवुधि में च्यार चंद धातकषंड वारै कालोदधि वियाली-
स है॥ पुष्करके नाग दोइ ई घरवहतर है॥ ऊर्धवारै मे चौसठ आषे
जगदीस है॥ पुष्कर जलधि सार दोस तापारै हजार अगैचा आगै
चोगुने वषांने निसईस है॥ जेते लाषते तेवलेह ने अधिके हैस वर्ष॥
संष्यचित्याले वंदि तमुनीस है॥८१॥ अधोलोक चित्याले संष्या
कथन कवित॥ छंद॥ चौसठि लाष असुर जिनमंदिर लाषचवुर-
सी नागकुमार। हेमकुमार सुलाष वहत्तर छहत्ति यलाष छहत्त-
र धार॥ लाषवांनवै वातकुमार पताल लोक भावन दस सार॥ सा-
तकोरस वलाष वहत्तर चेत्याले वंदौ सुषकार॥८२॥ मध्य लोक
चेत्याले संष्या॥ छप्पै छंद॥ पंचमेर के असी असी वरकाय विरा-
जे॥ गजदंतनि पै वीस तीस कुलपरवत छाजे॥ गोसमर वैतारथा-
र कुरभूमदसोंतर॥ इष्वाकारपहार चार स्ववमांनषोत्रपर नंद-
सरवावनरुचिक मैं चार च्यारकुंडल सिषर॥ इम मध्यलोक सैंग-
वन वंदौं चियन हर॥८३॥ ऊर्धलोक चेत्याले संष्या कथन
सवैया॥ प्रथम वतीस हजे अठाईसती जे वारै चौथे आव-
पांचे छ छे च्यार लाष ष्यात है॥ सातै आठै में पचास नौ में दस-
मे चालिस गपोरे वारै छ हजार च्यारौं सत नस्यात है॥ अधो एक
सत गपोरे मध्य एक सतसात ऊर्ध इक्यान नवनवो तरे जा-
त है॥ पंचोत्तरे पांच चवरासी लाष सतानू हजार ते इस चित्या-
ले वंदौं अघघात है॥८४॥ अथ सोधर्म इंद्र के सेना सात प्रक-
रतिस की गनती॥ सवैया॥ इंद्रसेन सात हाथी घोरे रथ प्या-
दे वेल गंधरव नत्स सात सात परकारि है॥ आदि चौरासी॥
हजार आगे घट हूने हूने एक कोर छलाष अवसठ हजार

है। एतेगाजतेतेतेतेछहभेदसवकेतेसातकोरछयालीसला।
षनिरधारिहै॥सहसछहतअरुएकअवतारन्येगपुनकर्मनि
गभोगमोषकोंसिधारिहै॥५८॥अथएकेंद्रीआदिसैनीपरजंत।
पटभेदजीवनिजइंद्रीविषैषेत्रसीमाकथन॥छप्पै॥फरसचार।
सैधनुषअरूसैंनीलौंदुगनागनि॥रसनाचौसठिधनुषघ्रानसौंते
इंद्रीमनि॥चषजोजनउनतीससतकचौवनपरवानैं॥कांनअ
ठसैधनुषसुनैंसैनीजोजानैं॥नवजोजनघ्रानरसनिफरसवं
नउवारहसजोजना॥चववैसैंतालीससहसडसैतेसठदेषेजिन
नना॥५५॥इंद्रियकथनअध्यावसमैंतीनजोगपाईयेकिसकिसं
किसकिससमैंसोकथन॥सवैया॥यहलैसमैमैंकरैदंडअरुगाठमैसं
वरपरदेसअरुगाठमैंसरोदारिकमिश्रजानिये॥दूसरैकपाटहोयसा
तमैंसंवरैसोयसंवरैअंतरछठैमिश्रजोगजानिये॥तीसरेअंतरचौ
थेपूरनसरवलोकपूरनसंवरैपांचैकारमांनमांनिये॥आठस
मैंमांहिजानकेवलसमुदघातनिर्जराअसंख्यगुनीदेवसौवषा
निये॥५६॥मिथ्यातीथ्यातीमुकतनहोयसमकितीहोयमु
कतकथन॥सवैया॥एकसमैमांहिएकसमैंपरवढवंधैएकस
मैंपरवढफेरैहै॥वर्गनाजघन्यमैंअनन्तसोअनंतगुनीअन
किष्टसिद्धकौंअनंतभागधेरैहै॥जैसेएकग्रासषायसातषान
होयजायतैसैएकसातकर्मरूपअनुसरैहै॥योंनलहैमोषके
इजाकेउएपानहोयएकसमैवजषोयसोईसिववरेहै॥५७॥
भावकर्मकेअभावदृष्टांत॥सवैया॥देवपैपरयौदैपटरूपको
नरूपांनहोयजैसैंदरवांनरूपदेषनैंनिवारैहै॥सहतलपेटी
असिधारासुषदुषकारमदराज्योंजीवनिकौंमोहतीविधारै
है॥काठमैंदियौहैपावकरैथितकौंमुत्रावचित्रकारनानानां
मवीनकेसमारैहै॥चक्रीजैवनीचयरेंनूपदियोमकेकेरेए।
अभावकर्मदैरसोईहमैतारैहै॥५८॥कवित्त॥पच्चपनअच्चा
सनैंतालीसछयालीससैतिसचौविसजान॥वाइसवाइसमे

लैदसअरूनवनवसातअंतअंतनववांन।चौदैगुनथानकमै
इहविधआश्रवद्वारकहेभगवांन॥मूलवारउत्तरसत्तावउ
नासकरोधरिसंवरग्यांन॥५८॥इकसौसतरैएकएकसौचोह
तरसतहत्तरमांन॥सतसठतेसठउसठवावनवाइससतरैदस
मैंथांन॥ग्यारमवारमतेरमसातारकवंधनहिअंततनिदांन॥सव
गुनथांनकवधैप्रकृतिइमनिरचैपापअवंधपिछांन॥६०॥इक
सौसतरैइकसौग्यारैसौअरूसौचौसतासीय॥इक्यासीछेहत्तरवं
हत्तरछासठअरूसावनदीय॥उनसठसतावनविधालिसव
रैअकिनउदैहैजीय॥चौदैगुनथानककीरचनाउदैभिन्नतुव
सिद्धसुकीय॥६१॥इकसौसतरैइकसौग्यारैसौसौचोसतासी
जांन॥इक्यासीतेहत्तरछुतहत्तरतेसठसत्तावनमांन॥छपनचौ
पनउनतालीसतेरमैंअंतनहीपरवांन॥महउदीरनांज्यवेदे
थांनककैग्यांनवलसोतूंग्यांन॥६२॥पहलैसोअडतालदूजेसै
पैंतालतीजेमांहिसोसैतालचौथेअडतालसो॥पांचेगुनमैंसैताल
छवेसातैआठेनौमेदसमैग्यारमैंउपसमीहैछ्यालसो॥वारमैंनो
मैसोअरछतीसहूसमैंइकसोदोयवारमइकसोएकआगैंपछैटाल
सो॥तेरचोदमैंपिच्यासीसतानासअविनासीनमोलोकथनक
वधराजूसैतालसो॥६३॥भूजलपावकपौनसाधारनपंचभेदसू
छमवादरदसपरतेकग्यारहै॥छहजारवारैवौंजनममरन
धारैवेतेचौइंद्रीअसीसाठचालीसधारहै॥चौविसपंचेंद्रीसव
वासठसहसतीनसैछतीससैसैंतीसचेहत्तरसारहै॥छतीं
ससैपिच्यासीस्वासअधिकतीजाअसनमोनाथमोहिसव
दुखसौंउधारिहै॥६४॥घातियाकर्मकीप्रकृति॥मतिश्रुतअवध
मनपरजैकेवलग्यांनपंचआवरनग्यानावरनीपंचभेदहै॥च
छुअचछुअवधकेवलदरसचारआवरनचारनिद्रानिद्र
निद्रभेदहै॥प्रचलाप्रचलाप्रचलाथांनगृधनौभेददरसना
वनीमोहअठाईसवेदहै॥दांनलाभभोगउपभोगवलअंत

रायपंचसवसैंतालीसघातियानिषेदहै। ६५ मोहकर्मकीप्रक्र
ति २८ नाम। अनंतानवंधीक्रोधअप्रत्याख्यानीप्रत्याख्यान।
संजलनच्यारोंक्रोधमांनमायालोभहै। हासरतिअरतिसोकभै
जुगपसानारीनरषंढएपचीसीचारित्रकौंछोभहै। मिथ्यातसमैमि
थ्यातसमैप्रकृतिमिथ्यातहीनौंदरसनमोहदरसनकौंचोभहै
अठाईसमोहनीयजीयनिकौंमोहतहै। नांमैंजथाख्यातसम्य
कवायकसोभहै। ६९ अघातियाकीप्रकृति १०१ तिनमांअ
वकर्मकीथितितिनतिरिजंचनजथ्या। साताअसातादो
यवेदनीनरकपसुनरसुरआवच्यारऊचनीचगोतहैं। नांम
कीतिरानूंकसवएकायेंअघातआदित्तीनअंतरायथिति नी
सहीतहै। नामगोतवीसमोहनीसतरकोराकोरिदधिआव र
कीसागरतेतीसउदोतहै। वेदनिचौवीसघरीसोलैनांमगो
त पांचोंअंतरमहूरतविनासैंयापानजोनहै। ९७ नांमकीप्रकृ
ति ९३ नाम। तनवंधनसंघातवर्नरसजानपंचसंसथांनसंघ
ननघटअाठफासहै। गतिआंनपूरवीहैंचारदोविहायगंध
अंगतीनपैसठएत्रसथूलनामहै। पर्जापर्जप्रथिसुभसुभगस्व
रपेकजसुस्सुआदरदोदोनिरमांनस्वासहै। अपघात उप
घातअगुरलघुआतापउदोततीर्थंकरजीवदोअयनासहै
९८ जंबूद्वीपपूरवपछिमओर। जंबूद्वीपएकलाषमेरदसह
हजारनभसालदोवनसहसचवालीसको। वाकीछपालीस
अाधोअाधदोनोंहीविदेहदेवावनउनतीससैवाइसकेनी
नौंनदीपौनेच्यारसतआरौंहीविष्यारदोहजारअाबौंहीवि
देहवचनईसकोसटैसहससातसततीनजोजनकेनमों
चारतीर्थंकिस्वामीजगदीसको। ९९ दछिनउत्तरओर। जं
बूदीपदछिनउत्तरलाषजोजनकौमागएकसौनवैएकभर
तनाइयै। दोयहिमवनसैनचारहैमवतषेतमहाहिमवंत
आवसोलैहरगाइयै। वतीसनिषद्रएतरेसठसंघैतेसवदोच

मैं विदेह भाग चौसठ बताइये॥ भाग पांचसै छवीस कला छह ह
जार की अवहत्तरि छियालेस दासी सत्ताइये॥७०॥ अथो लो
कसै नीवध बिलेसंख्या॥ सातनर्कभूमि उनंचास पाथरे निवास
इंद्रक जीउनचास वीचमांहि विलेहै॥ पहिलोसीमंतचार दिस
सेन उनंचास चार विदसा मैं अठताली नयनि लेहै॥ आवदिसमै
नीव छतान सै अचासी जि आगै आव आव घटै अंतचार भि
लेहै॥ सब छान वै सैचार जोजन असंषधार द्याधौ धर्म करैति
नौं इषमिलहै॥७१॥ ऊर्द्ध लोकसैनीवद्ध विमान संख्या॥ ऊर्द्धस
रेसठ पटलकहे आगम मैं त्रेसठ ही इंद्रक विमान वीच जानिये॥
पहिलो ऋजु गल नाकैं पहले कौ रिजु नाम जाकी चार दिसा सेन वा
सठ श्रेवंतिये॥ चारौ दीसै अठताली आगै घटै चार वार अंतर
है चार ऊवे चार टीक वांनिये॥ सेनीव श्व तरसै सोले जोजन
असंष सिद्ध वारे जोजन पैंथ्यांन मांहि आंनिये॥७२॥ लोनोंदधिके
मांहि १००८ कलस जथा॥ लोनोदधि वीच चार दिसा मांहि चा
रकूप कहे है॥ मृदंग जेम तिनकौं प्रवांन है॥ पेट और ऊंचे ए
क एक लाष जोजन के नीचे औ मुष ता कौ दस हजार मान है॥
चार विदसा मैं चार पेट और ऊंचे दस हजार एक नीचे औ मुष
कौ वषांन है॥ अंतर दिसा हजार पेट ऊंचे है हजार नीचे औ र
मुष सौ के धन्न जेन गपांन है॥७३॥ त्रेसठ इंद्रक विमान कौ मान
पैंतालीस लाष कौ है इंद्रक रिजु विमान सर्वार्थ सिद्ध सु तए
क लाषका कह्या॥ चवालीस घटै है त्रेसठ मैं वासठ वीर ऊंचे
ऊंचे एक एक के ता घटती लह्या॥ सतर हजार नेसै सततमठजे
जन है॥ तेईस अधिक भाग इकतीस का गह्या॥ त्रेसठ इंद्रक
नाम त्रेसठ ही जिनधाम वंदौं मन वचकाय तिनकी सो नाम ह
॥७४॥ आवष कृतिज परकै गुनथ्यान वषैं नीचै उदै आवे सुवै
सपकृति जहां वंधै तहां वीज उदै आवै ताकी नीचै गुनस्थान॥
वंधि केऊ चै उदै आवै॥ ताको चोरा॥ सवैईया॥ देवगते॥

आवर्यान पूर्वी उकृतनीत वेकूपक अंग आहारक अंग चा
र हैं अजसए आंगोपंग वेधेनीचें उदे हैं हिसंज लनसेमवि
नापदै है निहार है। हासरतनेगिलाननखेदनरआंनसूनमअ
पर्याप्तसाधारनयारहै॥ आतपमिथ्यानए छवीसप्रथउदै
साथनीचेवेफउचेकदै छीयासीविचारहै॥ ७४॥ नावपरा
वर्तनिअनंतनागनवकालनवपरावर्तनिअनंतनागकाल
परावर्तनिअनंतनागषेतकहौषेतकोअनंतनागपुग्गल
निसानहै। ताकोआधनामआईपुग्गलपरावर्तनिफिरनों
सोहै या छिपानीस्यानमालहै॥ नाहीसमेसम्यकउपजवेको
जोगनयो ओरकहासम्यकतानरकोकास्यानहै॥ ७६॥ भा
वपरावर्तनिअनंततेकरैहै जीवएकभावतेअनंतनोकै
परावर्तकरनहै॥ एकजीवमतीअनंतकालपरावर्तकरैका
लतैअनंतषेतपरावर्तकरनहै॥ एकषेततैअनंतपुग्गल
परावर्तपंचफेरीविषेआयमिथ्यात्वसपर्तहै॥ सातकोवि
नासजिनकैसम्यकप्रकासतेइ द्रव्यषेतकालभवभावते
निवर्त्तहै॥ ७७॥ अथपांचलब्धकथन॥ भावर्त्तमेंनीहोयप
हीषेउपसमहै॥ दांनपूजाउछलविसोहीउपयोगहै गुरुउप
देसमनतग्यानसोईदेसनाहै॥ अंतकोराकोरीकर्मकीथिति
प्रायोगहै॥ जगमेंअनंतवारचारलब्धपाईइनिकानेलब्धिवि
नासमकितकोनजोगहै॥ अथोअपूरव॥ अनिवृत्तकर्नतीन
करैमिथ्यामांहिपीछेचोथासम्यकनियमहै॥ ७८॥ नंदीसर
दीपजथा॥ एकसोतरेसठकिरोड़चवरासीलाष
जोरादीपवावनपहारहै॥ दिसाचारअंजन
हजारसोलेदैधिमुषजोजनदसहजारहै॥ रतिकरहैंव
तीसजोजनहजारएकलंतचौरेऊंचेसवदोलकेअहार
हैं। सवपरजिनभौनवावनविराजतहै॥ वर्षतीनवार
कोजेजेकारहै॥ ७९॥ मेरजथा॥ मे

लानू हजार चूलका चालीस वालग्रंतर विमान है।नवैम दु(
सालवन हिसा चार जिनभौंन पांचसै पैनंदनविसालै चारवा
नहै।साटेवासठ हजार सोमनसवन चार चिस्याले अंचेस हस्
छातीसवषानहै।तहांवन पंडुकविस्यालेवारसवसोलैमं
नच्चकायसेती वंदौ पापहांनहै।।प०।पुनमेरुगोलअंतत
लेदसहजारनचैकौमूममैहनारदसनंदनपेलहा है।।नो(
हजारनवसैचौवनभाग कहे वहाँ सोमनसवियालासे वह
तररह्या है।।पंडक हजारएक वीचवालीसचूलका है चोसैचोरानू
वनपंडकसरदह्या है।।सोमनसनंदन है पांचसै केन हसा लवा
ईस हजार पूर्वपछिममैं कह्या है।प१चौदैगुनथांनकल्याण(
ठस्पाति।छप्पे।।मिथ्यादृष्टीएासंजोगसीनमैं मरणनपावै।सातअ
वनच दसमसगपारमरचौथैआवै।प्रथमच हुंगति जा मडति(
यविननरकतीनगतिचौथेपूरवअआवबंयतेचजंगतिप्राप्
ति।पंचमतैंपारमसातगुनमैं रैसुरगमैंत्र्योतरे।वंदौइकचौ
दसथांनतजिअजरअमरसिवपदवरै।छं०२।नवमगुणथां(
न प्रकृतिचपा२६नांम।सवैया।२१अप्रत्यारूपानी चार अप्र
त्यारूपांनी चार अरु संजलन तीन नव नोकषाय जानिये।ए(
केंद्री विकलत्रैथावर आतपउदोत सूक्ष्म औसाधारन(
जीवन कौं मानिये।।निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचला अरु थीनगृध
नीती नौंम हाथोटीकवहूं नवाणिये नर्कपसुगति आनपू
रवीप्रकृतचारनोमैं गुनथानकमैं एछतीसमानिये।छं०३।अ
यजिनवांनीकेपदौंकीसंख्या कथन सौलेसै चोतीसकोरै।
रलाषतेरासी ठतरसयपचअठासी।।अछरएलेषियेइक्यावन।
कोरआठलाषसहसचौरासी छहसैसाढेइकीस एसिलो।।
कपेषिये।ताकौपदइकसौकिरोर तेरासी लाषसहसअठा(
वनदेषिये।पंचपदएतेसवद्वादसांगजिनवांनीवंदौमनव
यनैदरपांनकौं विसेषिये।छं०४।चौदेगुनथांनकऊपरसा।त।

नआस्रवहारकथनपहलेपांचैमिथ्यातदूजेअनंतानुबं
धीगयारहअविरतअल्पारम्भीनीपांचैयाह।।विक्रयकओ
अल्पारम्भीनीत्रसबंधचौथैआहारकवहैपटहास्यआवले
लहै।।तीनवेदतीनसंज्वलननवेलीनदसैंअसतउजैवचन
मनवारहैकहे।।सतअनुभयवचनऔदारकतेरैमिश्रका
मीनचारिगुनथांनेसरदहे।।७५।।चौदेगुणथांनविषेचारि
आयुबंधतथाउदयविवरन।।नरकआवपहलेबंधेउदै।।
चौथैहीलौपसुआवदूजेबंधउदैपांचमैंकहीनरआवचौ
थेलगबंधउदैचौदहलौंसुरआवसातैंबंधउदैचारिमैंलहै
नरपसुजीवनकेपसुनरआववंधचौथेतैंआगैंचढवेकौ
नसकतनाही।।चारौंआवतीजेगुनथांनकमैंवंधेनांहिआ
वनासनएंसिथतिनकौंबंधौसही।।७६।।आगुणथांनक
निगोदनहीं।।चारथांनकसास्वादनजायनहीं।।तीर्थंकरस
ताजहांनपाईए।।सूक्षमऔरकामीनसरीरैंग।।मनपर्ययप
रमावधिसर्वावधिमोहजांहि।।सोकथन।।नृमैनीरआ
गियेनकेवलऔरआहारकनकैसुरगआवमैंनिगोदनां
हिपाईयै।।सूक्षमनरकतेजवायमैंनसास्वादनमौंनत्रिक
पसुमैंनतीर्थंकरपाईये।।सवहीसूक्षमअंगकहेहैकपोतरं
गकारमानदेहकौंसुपेदरूपनाइयै।।विपुलमनपर्जैऔपर्म
औधिसर्वऔधिविकलहैमोहतातैंऐसीसनाईये।।७७।
।।सातनरकसौंलैस्वर्गतथाअहमिंदउत्पतिकथनं।।
सातैंतैंनिकसपसुछठैनरभूतनांहि।।पांचैंमहाव्रतचौथैसे
तीमोषसारहै।।तीजैदूजेपहिलेतैंआयजिनराजहोयभौन
त्रिकसुरगादेवयाकैंहीधारहै।।वादशमैंसुरगसेतीपचेंद्रीपसु
यकपरकोंआयैएकनरकौंऔतारहै।।दषिंजसुधर्मरानीलो
कपाललौकांतकुमिंरसमचारौंनर्कमांहिलैधरै।।दूलीक
हाकथंजमेघसीरागाकरीमलक्रोधमांनमायालोभतिरजंचमैं
परेस्थलीककावयंजगौमूतदेहतेलसेकषायनेरजीवमांनु
षनिमैंऔतरै।।जलरेषवेतदंकधुरपाहलदरंगधांनतएचा

मोहलहेनमोकारहोयवसोलेकषायदृष्टांततथाफलं।।पाहनकीरेषायंजपापकौ[illegible]सविकाक्रोध

बरवाल
१

रभावसुगोहिक्कोकरौ॥ ८८॥ चौतीसभावचौदैगुनस्थानक
विषैकथन॥ पहिलैमिथ्यात्वनवदूसरेविनंगातीनलेश्प
तीनअव्रतनरकदेवचारमैंपसुपंचैलेस्यादोयसातैंलो
भदसैलगक्रोधमांनमायातीनवेदनौंविचारमैंसैंततैरेन
रनवजीवनअसिद्धचौदैपंचलखुपानवछअचछवारमैं
चौतीसोंभावकहेचौदैगुणथांनकमैंवेकतीसवारहमैंमैं
होअविकारमैं॥ ८०॥ उतीसभाववारहगुणथानकमैं॥ उ
पसमचौथेग्यारैवेदकहेचौथेसाछायकचौदैचौथेदसहृ
तपाचमैं॥ ग्यानतीनतीजैवारेमनपर्जैछ्ठैवेवारैचारितस
रागछ्ठैवेदशेकसोसांचमैं॥ उथितीजेवारेउपसमचारित्र
रेहीछायकचारितवारेचौदेकमैंवांचमैंपंचलब्धछायक
दरसगपानतैरेचौदैनमोंभावउनईसच्छूटोनर्कैआंचमैं॥ ८१॥
चौदगुनथानकमैत्रेपनभावविचारा॥ सवैया॥ चौतिसवतिस
तेतीसछतिसइकतिसइकतीसइकतीसमानअगाईसअव
ईसवाईसइकईसवीसवारमैंथान॥ चौदैतैरेअतमथानकपंच
भावसिद्धालेजांनासम्पकग्यानदरसवलजीवतनिहचैसो॥
नआपपिछांन॥ ८२॥ च्यारौंगतिमैंआश्रवद्वारमोरा॥ वेक्रि
यकदोयविनांनरपंचमतद्वारआहारकदोयविनांत्रेपनति
जंचहै॥ औदारिकदोयदोयआहारकषंडवेदपांचविना
देवनिकेवावनकोंसचहै॥ आहारकदोयदोयओदारकन
रनारवहेविनाइक्यावननर्कमैंउपंचहै॥ चारोंगतिमांहि
औसेंआश्रवसरूपजांननमोंमिथ्यत्वागवांनजहांनांहिवहै
॥ ८३॥ च्यारोंगतिमैंत्रेपनभावकौरासास्वतोस्वभावपंचम
वसिद्धवंदतहैं तीनौंगतिविनांनरकैपचासदीसहैं॥ छैम्स
केआगसमकिलविनंम्मनपर्जैचारितदोग्यारैविनयसुउ
नतालीसहै॥ सुभलेश्यातीननरनारवेददेसव्रतएईछहैं
भावविनांनारकतेतीसहै॥ हीनतीनलेश्याषंवेदचारि
भावनांहिसुभलेस्यानरनारसुरकैचौतीसहै॥ ८४॥ कर्मले
स्याबालेमिथ्यातगुनथांनवंधमोरा॥ विकलत्रैसत्त्वसाधा
रणअपर्जाप्तनर्कैगतिआनपूरवीनरकआवहै॥ मिथ्या

माहिलेस्पातीनवांधेइकसौसतरैनवौविनांयीतकेंअवोतर
सोजावहे॥इकिंदीथावरओंआतपइनतीनविनांपदमएक
सोपांचवंधकोजणावैहे॥ पसुगतिआवआंनपूरवीउदोतचार
विनासुककलसोएकवांधेपुन्यचावहे॥८५॥चौरासीलाषज
लोरा॥सातलाषपृथ्वीकाय॥सातलाषअपकाय॥ सातलाष
तेजकाय॥सातलाषवातहे॥सातलाषनित्यओइतरसातसा
धारण॥दसलाषपरतेकएकेंद्रीगातहै॥वेतेचवइंद्रीदोदोमानु
षचोदहलाषनर्कसुर्गपसुचारचारलाषजातहै॥चवरासी
लाषजातमोकपरछिमंकरोहमनेइछिमाकरीवैरकिय्य॥
घातहे॥८६॥त्रेसवप्रकृतिनांम॥ नरकपसुगतिआनपूरवी
प्रकृतिचारपंचदियविनांचरआतपउदोतहे॥ साधारणसक्ष
ओथावरप्रकृतितेरैनरआवविनांतीनमिलसोलेहोतहे॥से
तालीसघातियाकीत्रेसठप्रकृतसवनासनरातीर्थंकरएपान
मईजोतहे॥देवनिकेदेवअरिहेतहेपरमपूजतिनहीकोसंव
पूजहोहिकुंचगोतहे॥८७॥आरगतिविषैवंधप्रकृतिनांम॥औ
दारिकदोयआहारकदोयनर्कदेवगतिआवआनपूरवीदस॥
वषांनीहे॥विकलत्रेसछमसाधारनअपजोपतसोलेविन
सतचारदेवकेप्रवांनीहे॥एकेंद्रीथावरआतपतीनप्रकृतिवि
नांनकेएकसतएकवंधजोगजांनीहे॥तीर्थंकरआहारकविना
पसुमनुषनरकेवीसासोसवनासेसिवयांनीहे॥८८॥मइश्रम
वारेपरजूवाइसजलसातचाततीनततहकायकीदसहजा
रहे॥पषीकीवहत्तरसहसवीयालीससांपआगदिनतीन
दोइंद्रीवरसवारहे॥तेइंद्रीदिनउनचासचवइंद्रीछमासस
रीरसपपूरवांगनवआवधारहे॥मछकोरपूरवमनुषपसुती
नपल्यसागरतेतीसदेवनारकीकीसारहे॥८९॥षटपांचती
नएकषटतीनषटच्यारदोदोपांचएकएकचौषटतीनेंग
हे॥नवचोचौतीनतीनपांचएकसोगपारहदोयदोपचती॥
सपांचतीनतारेएलहे॥कल्पकादवाईसकेसवदोसेइकता
लीसकएककेगपारहसैगपारसरदहे॥दोयलाषसवसवह

नारन वसैं वाएं सव मैं थित्या लघु लिविं व वानी मैं कहे ॥१०१॥
ज्यहै त्रिकाल नाव आपें नर मुहै अस्त परकै च तुष्टैसेन
मास्त दरव है ॥ आपसेँ हे पर सेन एक समै ॥ अरतनाप
[illegible] जो केसैं नक है जो हि अवतव्य नव है अस्तकह
नास का अनाव अस्त अवतव्य नास कहै ॥ अस्त नां हि
नाहि नास अवतव है ॥ एक व कहे न जां हि ॥ अस्ते नास अव
तव्य स्याद् वाद सैं ती सात भंग ॥ सधै सव है ॥ जीव है अनंत
एक जीव के अनंत गुण एक गुण असंष परदेस मानियै ॥ एक
परदेस मैं अनंत कर्म वर्गणा है ॥ एक वर्गणा अनंत पर
मानू गं नियै अणु मैं अनंत गुण एक गुन मैं अनंत पर्याय
एक के अनंत भेद जानियै ॥ तिन तैं ऊपरे अनंत न तातैं हेय
मै अनंत सव जानें सवैं माहि देव सो वषानियै ॥ इ ऊपै चर
चा मुष सौं लनैं सुनै ग्यानी न हि कांनन ॥ केई मुनि घर जांहि
नांहि न घै फिर आनन ॥ तिन कौं लषि उपगार सार यह स
तक व नाई ॥ पढत सुनत है वुद्धि सुद्ध जिन वानी गाई ॥ इस
मैं अनेक सिद्धांत कौं मथन कथन द्यानत कहा ॥ सव मांहि
नां महै जीव नाव हम सरद हा ॥१०२॥ इति श्री चर
नंत राय जी कृत संपूर्ण ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ १
संपूर्ण ॥ अथ वारषडी सूरत की लिषते ॥ दोहा
मन मौं अरिहंत कौं ॥ नमौं सिद्ध आचार उपाध्याय सव सा
कौं ॥ नमौं पंच परकार ॥ १ ॥ मन जन करौ श्री आदि कौं अंत नाम म
हावीर ॥ तीर्थंकर चौवीस कौं ॥ नमौं ध्यान धर सीस ॥ २ ॥ तिन मु
ष ते उतरी संसार ॥ नमस्कार ताकौं करौं इक
जा वानी कि सुनत ही ॥ जडो परम ग्यान
द ॥ ३ ॥ कुं डी सुरत कछू कहन दी ॥ वारषडी के छंद ॥ ४ ॥ वारषडी कुं
डं द व नाऊ ये मेरे मन भाई ॥ जैन पुरान वषानी वानी सो मैं सु
नि पाई ॥ गुर प्रसाद नवि ग्यन की संगति यह रुपजी चतुराई सूर
त कहै वुद्धि है थोरी ॥ श्री जिन नाम सहाई ॥ ५ ॥ कका करत सद
फिरयो ॥ जाम न मरण अनेक ॥ लष चौरासी जोन मैं ॥ काज न सु
रोए क ॥ काज न सुधरो यक दिवानां ॥ तैं सुं जन अरु जन कुमाया

तेरीभूलतोहिदुषदाई॥वकूतेरासमझाया॥नटकिलफिरसौच
कुगतिकैभीतरि॥कालअनादिगमाया॥सुरतसतगुरसीषन
मांनीतातेजगमरमाया॥६॥षपापूवीमतलषे॥संसारीसुषजा
नि॥यहसुषदुषकामूलहै॥सतगुरुकहीवषानि॥सतगुरुकह
वषानिजांनयहहूमतिहोयअयानां॥विनासीषसुषदुषइंद्रन
कौतेमीठीकरेजानी॥इहसुषजांनिघानिहैदुषकी॥दृकमान
मेभूलानां॥सुरतपछिपछितावै॥जवहीहोयनरकजवथ
ना॥५॥गंम्यागुरुनिरग्रंथनै॥सतस्ववांनीमुषभाषे॥औरविकारस
कलतजै॥इहथिरतामनराषै॥यहथिरतामनराषै॥चाषरसजै
अपनोसुषचाहै॥औरसकलजंजालहरिकरिएवातेअवगा
हा॥पचइंद्रीवसराषअपनीकर्ममूलकौंदाहै॥सुरतचेतअचे
तहोहमतिऔसरवीताजाहै॥घाटघाटसुघाटमैं॥नावल
गीहैआयजेअवकेचेतेनही॥तोगहरेगोतषाइ॥गहरेगोते
षायजायवहकौंननिकासनहारा॥समेपायमानुषगतिपा
ई॥अजहूंनांहिसंभारा॥वारवारसमझाकचेतन॥मानौकहा
हमारा॥सुरतकहैपुकारगुरोनयोहोवैनिसतारो॥७॥ननांन
ताजगतमें॥आपस्वारथसवकोइ॥आनिगाढजिसदिनपरै
कोइनसंघातीहोइ॥कोइनसंघातीहोइनसाथीजादिनकाल
सरतावै॥सवपरिवारआपनेसुषका॥तेरेकामनआवै॥आगे
मदमैंछाकिरह्योहै॥मेमेंमेविरलावै॥सुरतसमझिहोयमति
वोला॥फिरियहैदावनआवै॥८॥चंचलचंचलविकलमनतिसम
नकौंवसआंन॥जवलगमनवसमैंनहीं॥काजनहोयनिदांनक
जनहोयनिदानजानयहवसनांहीमनतेरा॥पांचोइंद्रीछगो
चेरमनतूइनकाजयाचेरा॥रागदोषनरमोहसमीपीइनि
आनिमिलिघेरा॥सुरतजिसदिनमनथिरहोवैतिसदिनहै
इनिवेरा॥९॥छछाछकेरसस्वादमैं॥रह्योछकुरतिमानि॥छाकि
रह्योऔडिनहीसमझतनहीआपानि॥समझतनहीअज्ञान
पानध्यांनयाइनस्वादनमेराचो॥औरेचिंतालागिरहीहैमा
नध्यानमुकाचो॥जेसैंकर्मस्वावतयाकूं॥तेसीहीविधिनाचो

सूरत रह्यौ चऊं गति मैं भटकत मिल्यो न सतगुर सांचै ॥१०॥ ञ
ञाञा गिसु ज्ञान नर यह जागन की वार ॥ जौ अबकै जागौ न
ही ॥ तौ फेर न होइ संसार ॥ फेर नहीं होइ ससार सार यह जौ अ
बकै नही जागै ॥ जौ जागै निरभय पद पावै जरा मरन भव भ
गै ॥ ना तर फसै भव सागर हाथ कछु नही लागै ॥ सूरत होय प
ला जिव ते रा संसारी सुष त्यागै ॥११॥ झझा झारि पिछौरि कै ॥
कंहू तौ हि समझाय ॥ जा मैं तैं वासा कीया सो तेरी नही काय
सो तेरी नही काय जाय संग तु कै अकेला जा नां तैं नैं घर वकु
तेरची नै आवत जात भुलानां ॥ थावर पंच त्रस पंछी मन घ
नया देवे कहीदां ना ॥ सूरत वकुत काल तैं गते आया नहें
पिछानां ॥१२॥ नना नरपद है भलो ॥ अैसो औरन कौ इ जेय
संसार तें तरे ॥ भवजल पार जसो इ ॥ भवजल पार जसोइ
विज्ञ नातिर विचारै ॥ तीन काल तिन सही परीस्या कम मे दूर
करि भारे ॥ आवत जात जगत सो छूटत लोकालोक निह
रै ॥ सूरत जो अैसा सुषदा है चेतो वेगि सवार ॥ १३ ॥ टटा टा
ति न की तेवुडे संसार फिरे भटकत जगत मैं तिनकौ वार
न पार तिनकौं वार न पार कंही है फिरै विचारे ॥ नरतिरं अंच
नरक देवां गत चारौं भ्रमत निहारे जां मन मरन कीय वकु तेरे सहेम
हा दुष भारे ॥ सूरत कौ तन आप कमाये कि संपै जा इनवार ॥१४॥
वगाव वक्रि रह्यो कहा ॥ चेगो कौन संसार ॥ छोडि वाव संसार कौ
जो टूटे जग जाल ॥ ज्यौं टूटे जग जाल न होल नदेव कुरि रही दुष पावै ॥
सतगुर कही मानलै सिष्या फेर न जमैं आवै ॥ छोडै संग कुमति षद
कौं सो तुमकूं व हकावै ॥ सुरत संग सुमति कौ लीजे ॥ सिवपुर जाइ
दिषा दे बावै ॥ डडा डिग मति जाय तू ॥ अडिग होइ पद साधि दिढ
ला गहि परमातम की ॥ जो सुषल है समाधि जो सुषल है समाधि म
धित जि आपा पो ज्यो नाई सिद्ध रूप तेरे घट अंतर कहा दुदणं
जाई ॥ जड पुद्गल कूं भिन्न जांनि तू मिटै करम दुषदाई ॥ सूरत अ
प मैं आपा मो थौय हसु तगुरु फुरमाई ॥१५॥ ढढा ढोरी छोरि दे दि
ग इन की मति जाइ ॥ कुगुरु कुदेव कुरूपा नक्रा ॥ तुमति चित लगाय

कुमति चित्त लगाय न आवै। ते जिनराकु देव कुवासी॥ येतो कूं हग
तिदि खलावै सो दुषमूल निसांनी॥ इन तैं काज एक नहीं सुधरै कर्म भ
रम के दानी॥ सूरत तजि विपरीत इन्है को सतगुर आप वषांनी ७
धा णारण ऐसो करो॥ संवर सस्त्र सें नारि॥ कर्म दुष्पिया अरि वडौ
ताहि ताकि के मारि॥ ताहि ताकि के मारि वार कर कर्म रूप अरि मो
हो। है अनादि के दुषदाई तें रीजा ति विगो ही। नारायण प्रतिहर
अर चक्रीयानें वर्द्धमानको ही। सूरत ग्यानसु नंट तहां जाते तिन आक
जड षोई॥१८॥ तन तातन तेरा नहीं॥ ता मैं रह्यौ लुभाइ॥ तोडै नाता
तन कर्मो। ताहि कस्यो पति जाहि॥ ताहि कस्यो पति जाइ पाइ सु
ष के रह्यौ जांकौं वासी। छिन मैं मैर छिन कर्म उपजे होय जगत मैं
हासी॥ ताके संग वदै व कुममता परे मम हा दुषफासी॥ सूरत निं
न जांनि स्ततनकौं पासैर हौ न दासी॥१९॥ थथा थिरपदकौं व
सो थिरपद नहीं होइ॥ थिरता गहि परनाम की॥ थिरपद परसें सोय
होय सुषगति आरो सं छूटै॥ ग्यान ध्यान कौ करे हथ्यौ डो कर्म अरि
ज कौं कूटै॥ यह जगजाल अनादि काल कौ सो ऐसी विधि छूटै सूरत
थिरपद कै संपरसें सिवपुर का सुष लूटै॥२०॥ ददा दरव छउ कहै
प्रगट जगत के मांहि॥ और दरव सव षेल है। ग्यानी मानत नांहि
ग्यानी मानत नांहि दरव वे सो पातन के जानै॥ मो र्ट भूमि सघल के
जो धन जय मैं प्रगट वषांनै॥ पुदगल जीव धरम अधर्म काल अ
काम षूवांने॥ सूरत इन दरवान की चरचा ग्यानी गिनै बूजांनै
२१॥ धधा ध्यान जगत विषै प्रगट कहे है च्यारि॥ आरति रुद्र धरम
सुकल ये जिनमति कहे विचारि॥ जिनमति कहे विचारि च्यारि ये
ध्यान जगत के मांही॥ आरति रौद्र जगत के करता याते सुन ग्याते
नांही॥ धर्म ध्यान के प्रोन रधार का सुज सुष है तन सदा ही॥ सुरल सुक
ल ध्यान के करता ते सिवपुर कौं जाही॥२२॥ ननाना से कर मजव
नेह धरै निज मांहि॥ नट की कला जगत विषै नेह करै छिन मां
हि नेह करै छिन मांहि ते [illegible] ग आया नहीं फीसा वै ज्यो पानी मैं रहै
कमल नर जुनेट नहीं पावै॥ सुन अरु अरु अष्टन एक से दो करी फ्न
हां पिछतावै॥ सूरत निंन लषे ऐसी विधि कर मरु हा दिगा आवै

बारखडी स
७६

२३॥ए पाइनु अपनौ लषौ अर परसंगतिह्योतें राग परसंगतिश्रा
श्रव बंधै दिल्लकरम ॥ फफफौरादेहकर्मफफफौरतू जैश्रवफिरि
निकसन नहि होइ ॥ आश्रवबंध पडी है वेडी लगौ उपाव न कोइ
यालैंडी तिधरौ संवरसौ हितकरिकै दिलजोई ॥ सूरत संवर
कौ श्रादरियै कर्मनिर्जराहोई ॥२४॥ फफाफू ल्यौ ही फिरै॥
फौ कट देषि नतूल फासी फंद अनादिके ॥ कर तोडन का मूल
कर तोडन का मूल नूल मतिदा वन लौ तैपायो ॥ तुमतें अवसा
गर सौ मति आगतिसो पायो ॥ याही गति सै अनंत तीर्थंकर केव
ल ज्ञान उपायो ॥ सूरत जानि बूझ मति चूकै यह सतगुरु समझा
यो ॥२५॥ ववा विसन कु विसन है ॥ विसन वेगि तू त्यागि ॥ वस
करि पांचो इंद्री ॥ सुन कारे कौ लागि सुन्न कारिज कौ लागि स
गि कर विसन सीत ये न्नारी ॥ जुवंझा मिष सुरापांन मधु छेत्
नौ जुल धारी ॥ परधन चोरी अर वेस्या कौ त्याग करै परनारी ॥
सूरत इसन व मैं सुष पावै ॥ परन व सुष अधिकारी ॥ २६ ॥ मम्मा
मूल्यौ ही फिरै ॥ नरप्यो महा मिथ्या ॥ भेदन पावै ग्यान कौ ॥ या
तैं आवत जात ॥ यालें आवत वात सुनत नैं दाग पात नहीं पायो
क्रोध मान लोभ अर माया इन सौ नेह लगायो ॥ परमारथ क
री तिन जांती स्वारथ देषि न भूलाना ॥ सुरत तिनें दग्यान तिन जा
नि तामें पौति न मिथ्यात मिटायो ॥ २७ ॥ दोहा ॥ ममा मति तिन क
सही ॥ तिन मल की नीदूर ॥ मल वाले मल मुं नेरे ॥
२७ तिनकौं नहीं सहूरै तिन कौं नहीं सहूर हर है ॥ कुमति कु
मति विचारै ॥ तिनकै कुगरु तिनैं समझावै एक दै भव जल ज
र ॥ पुन्य पाप के भेद न जांनें जीव अनादक मारै ॥ सूरत तै नर
पैर कुसंगति कि सब विधि दोष निवारै ॥ २८ ॥ पाया यां निपन्नों बुरा
मा में हाय अकाज ॥ पर ममता मैं फसि रह्यौ ॥ या दिन आवेल
ज्या ॥ या दिन आवत लाज वाज न हि ॥ कहौ तेरौ ह्यौ कौ है ॥ तात म
त वांधव कांमनि सुत तिन इन कौ सुष मांहै ॥ आगे जांम प्रगन है
इ मन मैं यह तुम कौं न हीं सो है ॥ सूरत तजि अस्थान स्थान पत
न वसि वपुर सुष हो है ॥ २९ ॥ रारच्यौ अनादि कौ ॥ रचि वि षि

रनसोंधी।ति॥रस राचैं नहीं आतमा॥लषी नरसं की रीत
लषी नरस की रिति॥मी ते तैं विषयन संग सुष मान्या॥आतमी
क सुष है सिव दायक सो तैं नहीं पिछांनी॥जिन रस रीति ल
षी आतम की सो सिवपुर कौं रातां॥सूरत वे नव मुकति जा है
गति न आतम हित आना॥३२॥ललाल पढ़ो हीर है॥लगा
जत कैं जे षल ष्यौन आप सरूप कौं लषौ न सुध विवेक जन हो
न सुध विवेक एक तैं पर आप्यान हीं बूझा॥वस्त विनासी
नहीं॥अप्रकासी कटार मत में गक् फा॥सूरत वे भव पार न ये
हे ति न कौं अलमसूझा॥३३॥वावावा संगति बुरी॥तासों है रू
कूना च॥सासय ली संग तिन लीतामैं सहज सुभावै॥तामैं
सहज सुभाव है सो सहली मोष्यारी तत्वदरव की चरचा ति
नकौं तजे कुचरचा न्पारी॥नरमन जब सो उरि रहै तहै धरमध्य
नकी त्यारी॥सूरत यह वैब्बा मेरे मन चन मित्र न सो पारी॥३४॥
ससासो ई सुघर है॥सुन सुघर की सीष॥सदा रहैं सुन ध्यान
मैं॥सहीं जैन की टीक॥सहीं जैन की टीक तिन्हूं कैं अरकछु
नहीं नाचै॥आगम औरअध्यातम वानी॥सुनै सुनै वैगावै
कुकथा च्यारि विगार जगत की तिनकौं नाही सुहावै॥सर
त सो सजन मोन वितै सिव पंथ वतावै॥३५॥षषा षुंदुकनि
वारि के षिमा लाव चित लाय॥षुले कपाट अभ्यास के॥षेरकर
मदुषदायजाय॥षेर करम दुःषदाय जाय जब है षिमा लावचित
चित लावै होय अभ्यास लास जन भव कौं पानी जय जगा
सदा मगनता अपनें मन मैं रीरीक आप सुष पावै॥सूरत
न्यारा तिन्नसव निमें सो आतम हित लावै॥३६॥सोसाध
जगते है॥सो साधु जगत देना लैमै सोखिवारे॥सो षवात है [संतोष]
सेवसंसारी॥तिनकौं नहीं निहारा संकल्प विकलप जग के
जितनै तिन उसमन कैटारे॥सूरत सो साधू जन ऐसा॥सिवपुर
के पथ धारै॥३७॥ललाल छमी सिव वैराग्न लछन कौ चेवा
लषी सुलष अपरषप कै॥तजे कुलछिन देव॥तजे कुलछिन दे
व देवल षि मिथ्य रूप कौं धोवै॥अरहंत आचारिज उवझायसा

८ ससा सो ध्यानां सदा सुध वचन लष लेह सदा रहै संतोष मैं ३७८

नसीस नमावै॥ जिनमत देवि सिधगुन आरोय हृदि हलावमन लावे॥ सुरत इहपरतीत धरै मन सो सम्यकपद पावै॥ ३४॥ दोहा॥ हरते ही रहै॥ कैपर वसपुष पायके यों न आप वसिद्ध जिपै दोय परमसुषदाय॥ होयपरमसुषदायपायपद आनन्दपी अविनासी॥ केवलग्यांन दरसजहां केवलसिधपुरी सुषरासी॥ आगेकरम छिपावै जिनके आवैगुन परकासी॥ सुरत सिधमहा सुष पावै काल अनंते षोसी॥ ३७॥ ललालेकैपरमपद लषिलषिगए निरवांन॥ लोकसिषरऊपरचटे लयो सिधसिवथांन॥ लयो सिद्धसिवथान जिनो नैं सो ही सिद्ध कहाये॥ सुरतसिध कदे अैसें गुर जैनपुरानन गाये॥ ३८॥ दोहा॥ सम्यकपदको जेलहै॥ करै वेनगुनप्रीति॥ देवधरमगुरग्यानको परवसहै निजरीति॥ ३९॥ वारषडी हितसो कही॥ नहीं गुन इनकी रीस॥ दोहा तो चालीस है॥ छंदक है छतीस॥ ४०॥ इतिश्री सुरतजी की वारषडी संपूरणः॥ अथ दूसरी ककावतीसी लिष्यते॥ ककाकेवलपद निजरूलि मति मेरे मनवा भाई॥ केवलपद विन मेरे जी व जगतजर भाई॥ १॥ षषाषल अलष षोजै नही मेरे मनवा भाई॥ षलष अलषषोजै तो हैरे जीव अलषलगाई॥ २॥ गगागति गति नटकत तूं फिरो मेरे मनवा भाई॥ वहरूप आपै मेरे जीव सा गवगोई॥ ३॥ घघाघट घाट कुघाट मे मेरे मनवा भाई॥ अब नही चेत तो हैरे जीव गोसा षाई॥ ४॥ नना नावनगवनोकारकी मेरे चढेसमक ति मेरे जीव नार नराई॥ ५॥ चतुराई सब छोडि दे रे मनवा भाई॥ आतम दरसन मेरे जीव सम कितचतुराई॥ ६॥ छछा छलवल परपंच छोडि दे मेरे मन०॥ छलवल करि सो हैरे जीव आतम छलनलाई॥ ७॥ जोग सुगति जानी नहीं मेरे मन०॥ जोग जुगति विन हैरे जी व मुक्ति न थाई॥ ८॥ झझा झगरा पंको मूल है मेरे मनवा झूठ कुटतें वुड्यो है रे जीव वसत्र पराई॥ ९॥ याञा यो ही तेरी करि रह्यो मेरे मन०॥ यां नहीं तेरी है रे जीव युही लपटाई॥ १०॥ टटा मिथ्यात ज्ञान टेकत जि मेरे मनवा भाई॥ टेकति हारी है रे जीव अनादि लगाई॥ ११॥ ठठा ठगाकर्मनके वसिपरयो है रे मन वा भाई अव समि

कुवगा हे रे जीव अव मर आई॥१२॥ डडा डंड कचोई सु विषे हे रे म॥
आवत जावत हे रे जीव वो हो विधि नाई॥१३॥ ढढा ढोक दई अ
म देव ने रे मेरे मन वा नाई॥ कव कुन ढाके हे रे जीव जिनव
माई॥१४॥ णणा रण कर मन को नित्य वधे मेरे मन वा नाई॥ हो प
न चीतो हे रे मेरे जीव नीदल गाई॥१५॥ तता कत्तीत ही नो गतामे
रे मन वा नाई॥ तू न कसी को हे रे जीव तेरो न कहाई॥१६॥ थिर
नेर है थिर ना रही मेरे मन वा नाई॥ थिर नैरे हसी है मेरे जीव अ
थिर ज्यो छाई॥१७॥ दया धर्म को मूल है मेरे मन वा नाई॥ करि
करुणा हे रे जीव समकि षट्काई॥१८॥ धधा धर्म विनं धूक
जीव रो मेरे मन वा नाई॥ लष्मात रुणी हे रे जीव वदु षदाई
१९॥ नर नव रतन गुमाई यो मेरे मन वा नाई॥ फिर पछितासी हे रे
जीव ज्यो मूल गुमाई॥२०॥ पपा परंपुद्गल एम जिन्न है मेरे मन व
नाई॥ छ निरंजन हे रे जी अचेतन राई॥२१॥ फफा फिरि फं
दा विषे परे मेरे मन वा नाई॥ ज्यो दीपग मे हे रे जीव पतंग जरा
ई॥२२॥ वेवा वुद्ध विकलप नाउ रि हे रे मन वा नाई॥ निर्मल निज गुण करि
हे रे जीव सो धि सुष दाई॥२३॥ भभा भमना वहीय मे धरो मेरे
मन वा नाई॥ भावन भक्ति ते हे रे मेरे जीव भव उतराई॥२४॥ ममा
न मृग विषय न वन विषे मेरे मन वा नाई॥ दोर त इत उत हे रे जी
व लल चिल लचाई॥२५॥ ययो वन नदिया पुरि मे मेरे मन वा ना
ई पार न पायो हे रे जीव गार करहाई॥२६॥ ररा रतन पडे पर हा
थ मे मेरे मन वा नाई॥ लव क्या कर सी हे रे जीव उपाव न थाई
२७॥ लोन ल हे रि सिर तु परे मेरे मन वा नाई॥ वही जात है
मेरे जीव था गजना ही॥२८॥ ववा वडु पम ल्यो अव इहा मेरे म
न वा नाई॥ छिदन भेदन हे रे मेरे जीव फोरि फिर आई॥२९॥ ससा
सम ता सरिता स्नान करि मेरे मन वा नाई॥ पाप कलंक ज हे रे मेरे
जीव क्यो न धूपाई॥३०॥ हाहा हसि हसि करता हे मेरे जीव सव कल
आई॥३१॥ षषा षायक समकित के विना मेरे मन० मुक्ति न
पा वैसी हे रे मेरे जीव व कुइ षपाई॥३२॥ नेमकी नित्य की वीनती
मेरे मन वा नाई॥ सुनि हिरदै धरि मेरे जीव सदा सुष व दाई॥ इति
हाय हाय अव को कौ मेरे०॥६४॥

अथतीवारषडीवीजाकीढालवागोपीचंदकीढालमेंलिष्यते॥

७६ दोहा॥श्रीजिनवरनृषभकूं नमू॥ नमूजिनोतमवाणि॥वारषडीउपदेशमय॥रचुस्वपरहितजाणि॥ढालगोपीचंदकी॥ ककाकाईरेहुंकरतो फिरैतुंश्रालजंजाल॥सीषनमानीरेगुरांकीतोहिमानीजीव॥विषयजोगमेरेदेलियदोरहैतुंवांधेकर्म॥धर्मनजाणोरेकषायहोयसमे॥ग्यानीजीव॥१॥षषाषोरेग्रेषोकर्मोतणे तुजमेंश्रनादि॥षोटनदीमेरेफिरकोतोहि॥ग्यानीजीव॥षेमषागपुरिरेजेनाषिकेको इमिगलजाय॥सुषमेंहिमिरेघडीमदगपालजीव॥२॥गाग्योरेगरम्योतुंफिरेया॥विषयांमाहिनेदीलषछेरेश्रात्मरूप॥ग्यानीजी॥घीरनाछेरेघारीलाररनानाडःखमेंसमसायकरे॥गोरेश्रात्मरूप॥ग्यानीजीव॥३॥घघाघरतुरेसुल्योश्रापणोदुंदेपररूप॥जोघरजाणीरेसोतोनाहेग्यानीजीव॥जातेंयोरेरेनयसंकहेसदिसुषरूप जहांलषेसुषरेसोडुषकूप॥ग्यानीजीव॥४॥ननानानरभवरेदुलभपायकेतेंपकीनोना॥पुत्रादिकमेरेरच्यो तुंजाय॥ग्यानीजी॥येमुतलवकेतैरेनायहे तुंकरूं नरमाय॥विनमूतलेवतोरेहितुमनिराय॥ग्यानीजी॥५॥चचाचोरीरेचुगमेंतुंकरेश्रोरकषायश्रनंतानीचकर्मतुरेकरेपरतच्च॥ग्यानीजीव॥ चाहेसुषकुरेडुःखकुंनचहै॥होवेकिमजाय॥वोमधचुरोरेश्रमकीएदानीजी॥६॥छछाछेदोरहोनमफासीकुयोश्रमूपाय॥पलकपलकमेरेछीजेछेश्राय॥ग्यानीजीव॥याविनलीतुरेगतीमेंनायहे॥पतनश्रपरापता॥यगहोनेरेकरमवसाय॥ग्यानीजी॥७॥जजाजोवनरेषोदिनश्रारिकोयाश्रकायमलमुत्रादिकेरेभरयायामांय॥ग्यानीजीव॥ दगोदेयकेरेलोकूनाषसीडरगतिकेमांहि॥यांकारणरेमतिषणकमाय॥ग्यानीजी॥८॥झझाझगडोरेकरमनितयमोतिरजकिमथाय॥दुखदेवेगोरेतेहरकवनायाग्यानीजी॥नागश्रनंतारेश्रहारकोजितोयोरहसीग्यानफोरिनमीलसीरेश्रात्मगनाग्यानी॥९॥ननानमांनिरागयेरेकरीसौछातसु केनीयरसुद्धोय॥

यापरकूं त्याग्योरे निजलाग्यो ग्यानीजी॰ दावपड्यो छै रे यारी हृस

कैपीछे पिछितायफेरि न मीलसी रे आराधन माय ग्यानी वि

॥१०॥ घटटाटालोरे हे मिथ्यात कु जिन वचन रधारि राग द्वेष म

दरे मोहकूं मारि ग्यानीजी॥ त्रिभुवन हि मीलसी रे सुद्ध मुद्राय

र नस्मर माय॥ निज सुध्दि पामी पो रे त्रिव ल्ले जाय॥ ग्यानी॥

वं गागा कूं रे रे तु ति जुल्लोक को तुल्यो निज रूप॥ परवसि हो

य कैरे रूप आन वरूप ग्यानीजी देवि छाडी रे छेतरयो लज्जो॥ श्री

ज्या वरू रूप॥ ना हिल्ली घां छै रे आत्म रूप ग्यानीजी व॥१४॥ डड

डोरी रे श्री गुरु की गहे मति फिरो सुछंद मोह विटप यो रे ना षै गो

फंदा ग्यानी॥ तू ए का कीरि तो री साय जो कर सी को न्याय॥

फिर जिन बानी रियां मिलसी ना हिं॥ ग्यानी॥ ढढा ढूंढो रे बे

मल मुत्र को अंग मागे नाय॥ ढूंढो निज पद रे सिव पद दाय

ग्यानी॥ आतम या रो रे ढूंढो ग्यान दे उज्यो न्ही ओर तो तवि ग

यो रे उजी गोर ग्यानी॥२४॥ णाणा पायो रे मंत्र णोकार को या

जा के माहि॥ अवत काई रे चावें छै न्याय ग्यानीजी॥ ताता

३ घेरे कू करम करे काना स्यणि॥ आक ते नी ध्मा वो रे त्यागो

वा के ग्यानी॥२५॥ तता तो कूं रे तरण उपाय छो सो दियो बता

य॥ जो कच्छ लागै रे तो कूं दुषदाय ग्यानीजीव॥ थथा मति बोले

रे पर कूं मति कहे यो ये रे वी आराया तें मीलसी रे सिव नी

रधार॥ ग्यानी॥२६॥ दादा ध्यान था रो रे काज सुधारे ले या सुगति

पाय॥ पर पुद्गल मैं रे कहा रह्यो लूभाय ग्यानीजी॥ धधा चोइ

डी रे वसि कर जी त ले पची स कषाय॥ जिन मति मांही रे ए

त्रे त्रवताय ग्यानी॥२७॥ ददा देही रे देवल देव छै॥ यो आत्म

रूप॥ हम जो एपा रूरे त्यो रा जिन रूप ग्यानीजी॥ ये जिन प्रति

मा रे जिन मंदिर कहे ते है भव दारण तिछं दा ते रे पावनी र

ग्यानी॥२८॥ धधा धन तो रे पर अलार हे सो अवरू माय॥

जा तें दुरगति हि सो॥ त्यागो न्याय॥ ग्यानी॥ जो धन विन सैं रे सै

कि म ओर क अविनाशी दाय ग्यानी॥२९॥ नना नाही रे

जाणि पदारथ तद समो नहि नेय॥ ति न मैं नी अवे रूआ तम आ

आतम आदेय ॥ ग्यानीजी ॥ याही पिछाणो रे सो जाणे ना हि
वो न चतैय हनां हि ॥ सम्यक्दृष्टी रे जाणे न वमा ॥ ग्यान नी
२० पपा परणो रे मुक्ति वधू आवतो हि कहू उपाय ॥ जासे
गनागो रे सुष अथाय ॥ ग्यानीजी ॥ बा दश वेधतप रागा ह
णोप हरि स्यो व सतर व्रुत संवर ॥ सील स्वारी रे ना वन
पाच ग्यानीजी ॥ २२ ॥ फफा फेरनो रे जगमें तो हि कू वेरी
योकम सर्व विगाड्यो रे थारो जनमे ॥ ग्यानीजी ॥ दुरगति
मा हरि आरनि गोदिम पटके गो फेरि ॥ जातें सि वगति
क्षेसो वे गो हे रि ॥ ग्यानीजीव ॥ २३ ॥ ववा वरण्यो रे मेंहित
आपणो तु कौन हिया ॥ विर वरमें रै लो किहू मुका
रि ॥ ग्यानीजी ॥ जव जनम आमरित वतू जावसी मरसी न्ही
काज ॥ नाहि नरो सो रे करस्यो निज काज ग्यानी ॥ २४ ॥
नत्ता नरभो रे तु पामो हतें अवमो हिणपारि दो षरह
त तु रे मुनिपद धारि ॥ ग्यानीजी ॥ सुन्पव्रत दीषे रेलो कूं
कविनस्या श्रावकव्रतधारि ॥ नांहि मोह अवरे नासे गो म
रि ॥ ग्यानीजी ॥ २५ ॥ ममा म्हारी रे म्हारी करतो रहे नहि
हिये विवेक ॥ थारी लार नेरे कौ कू जासी एक ॥ ग्यानी
जीव ॥ अजातन करि मे मकरि रे लो न हि छोड नही अ
त्तातु न्ही छोडे रे षासी काल ॥ ग्यानीजी ॥ २६ ॥ [illegible]
~~[illegible] चिसन निवार [illegible] हे रे नरक~~
~~को डुवार ग्यानी धर्म सुनादि करे याजुलें लनही नेंसवज~~
पायाया ही रे नवमे देषता हो जाय वियोग ॥ कौ कारिस
रहे रे पर वसता संयोग ॥ ग्यानीजीव ॥ जोये आता रे आते
म लार वाचे जाता लारे तो नमरा षो रे न हित जिनर यां ग्या
नीजीव २८ ॥ ररा राग रे देषी होय के वाधे व ऊ कर्म नांहि
जाणो रे आतम धर्म ग्यानीजीव ॥ श्री गुरु पा हि रे करम की
रे ष ग्यानीजी व ॥ २९ ॥ लला ले स्यो रे लाभ सुथ मे कोअ
न्पलाज्ञ निज गुण जाते रे प्रगटसो ग्यान ग्यानीजीव ॥ नि
ज गुण जाते रे फ प कर्म ओछ मो वै रे न वरु पसा मति जाएपे

रला न सुषदुषा॥ग्यानीजीव॥३०॥वाचावाह वारधारी है रहीतुवी
सननिवारसा तुदी है नरक के द्वार ग्यानीजीवा॥ यमें सुता
ई करयाकु तलही है नीदापरम ई न के सागे रसो है वृतधमे
ग्यानी॥३१॥ससासारो अवत षोदीयो नीजका जन की न श्र
ओ पायो रगुरु वचन श्रवीना ग्यानजीव॥३२॥ अ च कू छी कर कर्म
रगरोथी लमलमती करी विलंब लो करि फावण रमती के
र वंड॥ ग्यानीजीव॥३३॥ अथ पाषट ही रदर व वताई यप्त्री जिन
वरतो हि [illegible] तिनमें आतमै रहो नीजजो ग्यानीजी॥ परवारी
तो रहु समजन्ही उन कूं कहे॥ दोयदिना के माहि [illegible] रहे
ही जो यां ग्यानीजीव॥३४॥ आत्रा अर्क जी रै पेडियो सुणि लिपो
नहीतजी कसायो [illegible] तिन के अनमीरम
वइ सदाय ग्यानीजीव॥ मांस लु सनी नरयो कलती गय सीव॥
जुति छु ती सतजो कषायो रे विसचा वीस ग्यानीजीव॥३६॥ दोहा
हाहा रे अवतुमलिकेरपायो जिनधर्म सु एप ज दे सुरकु ल नाति
रूपमी॥ ग्यानीजीव॥ सत संगति अफारे नकिगुरां तणी जिन
आगम मर्मना॥ निजवन धारौ रे जु है शिव रमण ज्ञानी॥२॥ दोहा॥
गारसे निरमाण वे रता सु समत के माय॥ पोस बुदि [illegible] वमीन
ली॥ तादिन पाव वनाय॥१॥ धा वारषडी की जे निपुनाय दे सु
नैं करि चित॥ तिनके मन वंछित फल होवै चित पवित्र॥२॥
हीरानंद जु घोषत पास स्वदा मयाकीन वी बुधि सुधि करि॥
दीजीये दोष सुगुण छीन॥ इति वारखडी वीजा की च [illegible] मे॥
संपूर्णः॥ अथ वाराजलजी की वतीसी लीष्यते॥ चाल राज [illegible]
सुनी राजमती है का ह्रसंपिन ने नेमकवार॥ तो हेरथमो रि [illegible]॥
गिरकु ध्याय॥१॥ सुपी डालो है कवरां जो लषि करुणा करी
विरकत भाव है की नें वडे गरफाई॥२॥ राजमती तो है सुनिके
आँवासैं जो वोलती सुनि माता मेरी वात परम सुषदाई॥३॥ अम
न्थ रहुं है अंवा जाउ पति नाथ कों॥ बावीना अनपस वजु न है ते
धरम के नाई॥४॥ संजम धरसू है अंवा रऊं संग नाथ दी सुनी है
नाथ लजि के द्वारा गिर कूं ध्याई॥५॥
अंवा जो वोलती कहा अजोगी है राजुल ते वात वनाई॥

राज•वती
७८

वरपरणाम्यूं हे तो कुं मैं नेमकवार सो दुषगुणा को देषारी कह
मन में म्हायी॥ ७॥ संयम नारी हे वेटी न संजम ष्याल हे॥ या वय मैं
तो हे वेटी न तपव णि आई॥ ८॥ तपकी तो वाता हे जोरी वनावो
दीम हज हे॥ तपधरवो तो हे वेटी यो दुधरनाई॥ ९॥ समुनि
हे वेरी हे राजुल अंवा मैं जो वोलती या मेरी देह जी तेजन मी सं
मरी नाही॥ १०॥ ये संनव ध हे अंवा जितम व देह के मैया देह तैम
री अवसु षिपाई॥ ११॥ मात पिता जो सुत परिवार धारम घने ते
नके नेह ते निज कज मी विसराई॥ १२॥ अव यो जोग हे माता
मे पाया पुन्य तें नाथ मी ले जो हे मो कुं जाउ पति राई॥ १३॥ वी
षय भोग सुं दे माता मो कुं न ही चाय हे वीषय घणे मैं हे भोगे
सुरग के माही॥ १४॥ तपधरवे कुं दे न रस न वसरा हे इ जु सोयो जे
ग हे माता मिल्यो सहजाई॥ १५॥ अव मैं तेरी हे अंवा जो चाकु सी
षडी॥ मेरे ही त कु हे मेरे नाथ मो तवनाही॥ १६॥ मात पिता सुन
ना घ जो वज सक लही सी षदीवा वो हे मोकुं षिमां करवाइ १७
इतनी सुनि कै पीला उग्रसेन जी वोलते वेटी रीत पलु वाल
के सें वनाय॥ १८॥ अंग तु मारो हे वेटी वडो सुकमाल हे तप
धरवो तो हे वेटी तमासो नाही॥ १९॥ केसें वो लैते लाकरेगी
वावरी भोजन वीस व वमी नाहि पर घर माई॥ २०॥ हासिक
रा सीष वेटी तु मोरी पेवा वरी या वय मैं तो हे वेटी न तप वा
णि आई॥ २१॥ समसुणि केजो हे राजुल वो वाणी वोलती सव
जव माय म ई कला जो व कुं उ षपाई॥ २२॥ नरक न णे जो हे म
रे तात मह दुष व कुं सही॥ ति निके ने दे हे मेरे तातें कहत न व
नाई॥ २३॥ तिरजंच गति मैं हे मेरे तात मैं नेट कीघ णी माता ही
हे त्रि जाय कोउ न ल्हायी॥ २४॥ देव मनुष मैं हे मेरे तात त्रास न
वसि करी दुष को ल हे मेरे तात कवुन लहायी॥ २५॥ कुलमज
म दि हे मेरे ताते सुष को दुष दे नेम कवरजी देत जिराज जोग ध
राई॥ २६॥ जे सी री ति हे पकरी हमारे नाय जी सो ही री ति र मा
कुं जो गपसो मादाई॥ २७॥ तप जी करस्यूं हे मेरे तात संजम धार
स्यूं धाव य कुं तू म पर सादस फल कराई॥ २८॥ हम हवजा नि हे प
रिवार सराजुल त णो धनि धनि धरि स व करते जो नमन कराई २

राजमतीजी हे त्रांविधा जो इ व स्या आचरी पूर्ण स पूर्ण॥ ११॥

ॐनमः॥अथद्रव्यसंग्रहजीकीभाषालिख्यते॥मंगलाचरन
अडिल्ल॥रिषभनाथजगनाथसुगुनमनधामहैं॥देवइंद्र
नरविंदवंदसुषदांनहैं॥मूलजीवनिरजीवदरबषट्विधक
हे॥वंदौंसीसनवायसदाहमसरदहैं॥१॥सतइंद्रसौमइंद्रवती
सज्ञवनचालीसहैं॥रविससिचक्रीसिंघसुरगचौवीसहैं॥स
तइंद्रनकरिवंदनीकअरिहंतहैं॥वंदौंचौवीसौंजिनराजम
हंतहैं॥२॥जीवनौंअधिकारनौमसवैया॥२३॥जीवसदाउ
पयोगमईनिरमूरतभावनिकौकरताहैं॥देहप्रवांनकहे
भुगतानववासवसैंसिवकौंनरताहैं॥ऊरधचालसुभा
वविराजततौअधिकारनिकौंधरताहैं॥सोसबनैदवषो
नकरोसरधांनधरोभ्रमकौंहरताहैं॥३॥जीवजथासवैया
२१इंद्रीपांचबलतीनस्वासआवदसप्रांनमूलचारइंद्री
बलस्वासआवमांनिये॥दरबजीवथावरजीवआगेज
वहगाईएईग्यानसेतीविवहारजीवजांनिये॥सुधसता
बोधऔरचेतननिहचैप्रांनसासतोसुभावतीनकालमैं
वषांनिये॥विवहारनिहचैसरूपजांनसरधांनऐसेजी
ववस्तलषैंसोसुषीपिछांनिये॥४॥उपयोगजथाकवित्त
इकउपजोगभेददोताकेदरसनग्यानदरसनविधचा
र॥चक्षुअचक्षुऔधअरुकेवलग्यानकह्यौहैंआठप्र
कार॥कुमतकुश्रुतकुऔधसुमतश्रुतऔधऔरमन
परजैधारकेवलग्यानसरवकौंनायकसोतुक्रमैंकि
नआपनिहार॥५॥सोरठा॥मतिश्रुतपरोक्षदक्ष॥मनपर
जैअरुऔध॥सुंनएकदेसपरतक्ष॥केवलसकलपर
तक्षहैं॥६॥चौपई॥दरसनचारआठविधग्यांन॥चेतन
केलक्षनसामांन॥नेव्यौहारकरमकृतजोग॥निहचैसुद्ध
सुद्धउपजोग॥७॥अमूर्तीकजथाकवित्त॥करनपंचरसपंच
गंधदोफरसआठकीमूरतहोय॥निहचैजीवअमूर
तीऔनौंवीसमांहिकौंएकनकोय॥कर्मबंधव्यौव्यौ॥हार

१०भा०

मूरती कालागोरा कहिवत लोय नै निहचै अणाहार समझ।
केसमता भाहे विचछन सोय ॥८॥ करता यथा ॥ दरव भो करम।
घटपट आदिक कौ जीव अणाहार वषांन ॥ भाव क्रोध आदि
क रागादिक नैं अशुद्ध निहचैं परवांन ॥ निहचैं सुद्ध सुद्ध
जगुतमैं केवल ग्यांन सरूप सुजान ॥ स्याद्वाद सौं सबै
साधै अनुभौ निरविकलप सुष षांन ॥९॥ देह प्रवांन जथा।
था ॥ छप्पै ॥ ज्यौं दीपक परकास एक सा घटवद नांही ॥ घटै
घटक नै मांहि बडे वट के के मांही ॥ त्यौं असंष परदेस वेत
जियनि हचै जांनौं ॥ समुदघात विन तन प्रवांन अणाहार व
षांन्यौं ॥ लघु काय पाय संकोच कै थूल देह लहि विस्त
रैं ॥ सब प्रांनी आप्प समांन है दया करैं सो वरतरैं ॥१०॥ समु
दघात सात नाम सरूप जथा ॥ सवैया ॥२१॥ मूल देह तैं छू
टै नांहि वाहिर प्रदेस जांहि कहौ है समुदघात सो अभि
दसा त है ॥ क्रोध सेती सत्रु नि पै वेदना सों अषद पै सुभ
सुभ तैजस कौ फुतला विष्यात है ॥ मरनां जगत मांहि
वैक्री वहु जीव करैं ॥ आहारक साधनि कैं संदेह विला
त है ॥ केवल समुदघात समैं मांहि चेत नही काय सेती
वाहिर निकल आप जात है ॥२१॥ दोहा ॥ लोक प्रवांन
प्रदेस सौं तन समांन अणाहार ॥ लोक अलोक सुग्यांन ॥
लो सुद्ध आप सम सार ॥२२॥ सुगता जथा कवित ॥ पुंग्य
दैतैं षांन पांन वहु पाप तै दैंत पसीत अपार पुदगल ॥
कर्मबंध तैं प्रांनी सुष दुष भुगता मैं अणाहार ॥ विषैं कषाय
दया समता निज भाव भोगता निहचै धार ॥ सुद्ध ग्यान सु
ष सिद्ध भोग वैं धरै ध्यांन भोगो सुष सार ॥२३॥ संसार ज
थ्या चौपई ॥ भूतल अगन पवन तरुकाय ॥ थावर एकें
द्री वहु भाय ॥ लट वेटी माषी नरदेह ॥ वेते चौ पन त्रस स ॥
वहु एह ॥२४॥ एकेंद्री सूछम अर थूल ॥ विकलत्रै सब ॥
भ्रम नै मूल ॥ समन अमन पंचेद्री मांहि ॥ परज अपरज ॥

चतुरदसमांहि॥१५॥चौदैमारगनांगुनथांन नैं असुद्ध सं
सारीजांन॥सवजियसुद्धसुद्धनैंमांहि॥आपसुद्धअनुभो
मोनांहि॥१६॥सिद्धसरूपघटमिथ्याबुधातिराकरनस
वैया॥२१॥करमनासमनए सिद्धसदासिवनांहिजीवअष्ट
गुनमई सिद्धनिगुननवावरे॥अविनासीसिद्धसमैंस
रेजीवैनांहिचलेजांहिनांहिलोकअंतवहरावरे देह
सेतीकछूहीनचेतनप्रदेससिद्धपरसेतीभिंनमिले
नांहिवावबावरे॥भावलहरहोजांहिसागरज्योंथिर
सिद्धसुनतासुभावनांहितीकेमनबावरे॥१७॥गैरथ
चालतथाषट्दिसाचालजथाप्रकतप्रदेस॥दोयवंध
जोगसेतीहोयथितअनुभागवंधकौंकषायकरैहैं॰
चारौवंधनासैंआगजेमचलेऊरधकौंवाकीतजिकौं
नघटदिसाकौंनिकरैहैं॥वक्रचालएकदोयतीनसमैं
अनाहारहाथलगऊमरतजेसैंविसतरेहैं॥सूधाचा
लएकसमैंबांनजेमआहारकमिथ्यावसजीवमरैस
म्यकसातरैहैं॥१८॥अजीवपंचभेदजथा॥अडिल्ल॥पुद
गलधरमअधरमगगनजमजांनियो॥पंचअजीव
दरवसवजडमैंमांनियो॥पुगलमूरतवंधवीसगुन
सहतिहैं॥चारअमूरतजोनजिनागमसहतहैं॥१९॥पु
दगलजथा॥ सवैया॥धूपछांहिचांदनीअंधेरसवद
अकारथूलसूछवंधपुजैंपरजायजांनियै॥सूछमसू
छमअनुसूछमहैंकारमोनसूछमताथूलचारइंद्री
विषैमांनियै॥थूलसूछमहैंधूपछांहथूलजलघीवा
थूलथूलपृथ्वीकादभेदएवषांनियैं॥दसपरजाय
छहोभेदसवपुगालकेन्यारोआपआपविषैंआपही
पिछांनियैं॥२०॥धरमदरवजथा॥चौपई॥मीनचलैनै
जजलकौंपायजियपुद्गलगतिधरमसिहायथिर

अ० भा०

न चलावै पेरक होय। चलते कौं सहकारी सोय॥ २४॥ अध
रम द्रव्य जथा॥ जिय पुद्गल कौं थित सहकार। अधरम
द्रव कह्यौ गनधार॥ पंथी वैठे छाया मांहि। चलें तिसें वे
वावे नांहि॥ २५॥ धरम अधरम॥ दोहा॥ पुंन्य पाप दोन्यौं न
हीं हैं अविनासी वस्त। तीन लोक मैं जर रहे ऊपर तले स
मस्त॥ २६॥ आकास दर्व जथा॥ कवित्त॥ सरव दरव कौं गे
र देत हैं दरव आकास सुगुन अवकास। ताके दोय भेद
नि तजांनो लोकाकास अलोकाकास॥ पुदगल धर
म अधरम जीव जम पंच जहां सो लोकाकास॥ ये च दर
व विन एक सुंनन नसो अलोक पांन मैं उकास॥ २८
काल दरव जथा॥ एक काल अनू सेती इजी काल अ
नू जाय॥ उगा लकी परमानें तहां समा होत हैं॥ जलक
क टोरी घरी सूरज सो दिन होय मास रित अैन वर्ष आ
द दे उदोत हैं॥ नई वस्त वो दी केरे परावर्त चाल धरें॥
सोई विवहार काल विनासी कग्गोत हैं॥ अतीत अना
गत वरतमान परजाय कालानें दरव लषें जाके उ
र जोत हैं॥ २५॥ पुनः एक दर्व है अकास ताके अनंत प्र
देस तामें लोकाकास के असंष्यात प्रदेस हैं॥ एक ए
क देस मांहि एक एक काल अनू रे न रासजें से थिर
न्यारी विनजे सहैं॥ सर्व दर्वे परनति सहाय निहचै का
ल असंष्यात सता अविनासी अकलेस हैं॥ एक वो
रध स्रो म्हचा कफिरे हैं अषंड सो अलोक कौ स
हाय काल ही असे सहैं॥ २६॥ पंचास्तकाया चौपई॥ जी
व दरव ईक चेतन सार। दरव अजीव पंच परकार॥ छ
हौं दरव जाबे समझाय॥ काल विनां पंचास्तकाय॥ २
७॥ काल अकाय जथा॥ सोरठा॥ बहुप्रदेस जिन मांहि
अगनि काय तेई कहैं याते काया नांहि काल एक पर

रूप कौं ॥२०॥ कवित ॥ धरम अधरम एक चेतन के असंष
त परदेस सु जांन ॥ व्योम अनंत प्रदेस विराजै लोक अलोक
सरवगत वांन ॥ पुदगल संष असंष अनंत प्रदेसी विछूरे
मिले प्रवांन ॥ काल एक प्रदेस अरूपी तातैं काल अकाय
वषांन ॥२१॥ परमांनू बहु प्रदेसी जथा कालांनू है एक प्रदे
सी मिलन सकत सो कछु ही नांहि ॥ तातैं काल अकाय व
ता यो अप्रदेस हैं छ दरव मांहि ॥ परमांनू है एक प्रदेसी मे
ल बहु भेद बंध हो जांहि ॥ तातैं काय वंत बहु देसी नैं उपचा
र होन की छांहि ॥२२॥ आकास के अवकास गुन महा व
मजथा ॥ अविनासी पुदगल परमांनू रोके जे तो षेत अक
स ॥ ताकौं नाम प्रदेस वषांनौं तामैं पूरन पुंन अवकास
धरम अधरम प्रदेस प्रमांनें कालांनू बहु बंध निवास ॥
जीव अनंत प्रदेस गौर देधन सरवग्य कियै छिनभास
रू ॥२३॥ सवैया ॥२४॥ अलवध सूछम निगोद ये की चअवा
ल पहिले समै मैं लंबा चौर होय जात हैं ॥ दूजे समै मांहि चो
रा तीजे समै मांहि गोल सौ डीस वै तैं जघन्य कौं पात हैं ॥
राघो नांम मछ साढ़े बारे को उजोजन कौं दोनौं रो के लो
क असंष्यात देस वात हैं ॥ छोटा वडा मध्य भेद कै सोडी
सरीर धरो एक परदेस एक जीव न समात हैं ॥२४॥ न व त
त्व थापना जथा ॥ कवित ॥ चार दर्वनि तनि न्न विराजैं पुद
गल जीव मिले जिह चार ॥ सात पदारथ तहां होत हैं दोय
आप सो नौं परकार आश्रव बंधन संवर निर्जर मोष पुंन
अरूपाप निहार ॥ सो सब भेद वषांन करत हौं कछु सरूप स
म्य क गुन कार ॥२५॥ जीव तत ॥ छप्पै ॥ एक चेतना सार दोय
नि हचै मो हारी ॥ रतनत्रै करि तीन अनंत चतुष्टै धारी पंच
परम पद रूप काय षट पालन हारो ॥ सात भंग सौं सधै आ
ठ कर्मनि तैं न्यारौं नौ लब्ध वंत दस धर्म धरि सो सरूप है

स०भा ८९

रेहै धरो ईम जीव तत्व सरधांन सो उतरनो सागर तरौं ॥५४
अथ जीव तत्व कवित ॥ पंच अजीव स्कंध है चारो जिन कैं का-
मी विना वन होय ॥ पुदगल मुरत अमुरत विराजैं मुरत अन गु-
न पाचे जोय ॥ सीत ताप रूप जे चिकन के दोरस वरन गंध अ-
व लोय वंध अस्कंध वीस गुन परगट देषैं जानैं चेतन सो-
य ॥ २५ ॥ आश्रव तत ॥ गीता छंद ॥ मिथ्यात पंच अविरत वा-
रे पंच वीस कषाय हैं ॥ परमोद पंद्रे जोग पंद्रे वहतर उषरा-
य हैं ॥ आतमा के परनाम एई भाव आश्रव नहिं लाव
स करम होनें जोग आवें दरव आश्रव पुदगला ॥ २६ ॥ वं-
ध तत ॥ जिम राग दोष विमोह अपनें भाव चिकने पग-
ल हैं ॥ ईस भाव वंध निमत सेती करम रज उवलग त हैं चे-
तन प्रदेस पुरांन करमन ए करम मिलि दिढन ऐं ॥ यह द-
रव वंध जथा भेद मंद भाव वहु विध परन ये ॥ २७ ॥ सित-
सवैया ॥ तथ जीव जैसा भाव करै तैसा कर्म वंध परैं तीव्र
मंद मध्य भेद लीनें विसतार सो ॥ वंधे जैसा भेद आवैं तै-
सा भाव उपजावै तैसा फिर वंधे किम छूटत संसार-
सो ॥ भाव सारू वंध होय ॥ वंध सारू भेद जो भेद भाव-
च वलंगी साधी चट सार सौं ॥ तीव्र मंद भेद तीव्र भाव
मूढ धारत हैं ॥ तीव्र मंद भेद मंद भाव दो विचार सौं ॥ २८ ॥
संवर तत ॥ छप्पै ॥ पंच पंच व्रत समति त्रिगुपति तीनो थिर ।
पालैं ॥ वारैं भावनना पधर्म हम भेद समो लैं ॥ दस आलो-
चनां सुरू पंच चारत व अनुभागी ॥ जित षुधादि वाईस भा-
व संवर वैरागी ॥ तिस कैं नहिं लगैं करम रज सौं संवर-
दरव तत हां यह भाव दरव संवर समझ दाजगत सो-
हो रहैं ॥ २९ ॥ निर्जरा तत ॥ तप निरवंछे क भाव निरज-
रा भाव तत सो ई ॥ वंधे करम तव षिरैं निरजरा दरव तत हो-
ई उदै देय करि षिरैं वुरी सविपाक निरजरा उदै देय वि-

षिरैंजलीअविपाकसुषकरा॥सरकेअकामनिर्जराजग॥
स्यानासकामनिर्जरा॥अविपाकसकामकरीतिनहोजिन
होग्यांनघटमैंधरा॥मोषतत्त॥सवैया॥४२॥रागदोषमोहनां
हिसम्यकसरूपमांहिसोईभावमोषआपसुद्धभावमईहैं
प्रक्रतिप्रदेसथितिअनुभागवंधचारसर्वथाविनासैंद
र्वमोषनईहैं॥परजायनैंविचारजीवमोषतयोसारदर्वत
नैंसदासिवनईनांहिनईहैं॥दर्वमोषभावमोषसिद्धजी
वराजतहैं॥सोमैंअवमेरीबुद्धिऐसीपरनईहैं॥४३॥सुभ
ततपापतततभावपुन्यसुभभावपूजादांनजपतपभाव
पापपरनांमविषैंओकषायहैं॥दर्वपुंनसाताअवसव
भेदपुग्गलकेदर्वपापसोंअभेदपुग्गलवजुभागहैं॥दर्वना
वपुंन्यपापसुर्गनर्ककोमिलापासवसोंनिरालाआप
यहीजीवरागहैं॥एरीषट्दर्वनवतत्तसरधांनहैं॥राग॥
दोषमोहहरैमोषकोउपायहैं॥४४॥रतनत्रै॥सोरठा॥स
म्यकदरसनग्यांन॥चारितसिवकारनकहे॥नैंव्यौहार
प्रवांन॥निहचैतिहुंमैंआतमा॥४५॥चौपई॥सम्यकरतन
त्रैजियमांहि॥निजतनओरदरवमैंनांहि॥तातैंतीनोंमैं
निहपाय॥सिवकारनचेतनयहआप॥४६॥दोहा॥आप
आपमैंआपकोंदेषैंदरसनजोय॥जांनपनांसोग्यांनहैं थि
रताचारतसोय॥४७॥दरसनग्यांनयथा॥कवित॥जी
वादिकभावनिकीसरधा॥सोसम्यकनिजरूपनिहार॥
जाविनमिथ्याग्यांनहोतहैं॥जाविनमिथ्याचारतधारउ
रनैंकोंपरवेसजहांनहिंसंसैविभ्रममोहनिवार॥सुपर
सरूपजथारथजानैं॥सम्यकग्यांनअनेकप्रकार॥४८॥
जोसांमान्यहैविसेषविननिराकारदरसनपरवांन॥जो॥
विसेषजानैंअर्थनिकोंसोआकारग्यांनपरवांनसंसा
रीछदमस्तजीवकोंएककालनहिंदरसनग्यांनएकस्ता

अ०प्रा० ८२

मैमैंदेषेजानैंकेवलरूपअनुपममांन॥४७॥चारतरूपअ
या॥दोहा॥असुभभावनिरवारकैंसुभउपयोगविसतार॥सु
धतिसमतिहृतमेदसौंसोचारित्रमोहार॥४८॥चौपई॥बाहि
रपरनतिचंचलजोग॥अंतरभावसमस्तउपयोग॥दोनौं
कियेवदेसंसार॥ते केनिहचेचारतसार॥४९॥ध्यानकारन
चारित्रनिहचेअरु मोहार॥तमेसुकरकारननिरधार॥०
होहिंध्यानतेंदोनौंयंस॥कीजेंध्यानजतनअभ्यास॥५०॥
ध्यानदसा॥सवैया॥३१॥ ईष्टओअनिष्टजेपदारथजगत
मांहितिनैंदेषरागदोषमोहनांहिकीजियै॥विषैसेतीअव
तापसागदीजियैंकषायचाहदाहध्येयएकदसामांहिली
जियैं॥ततरूपानकौंसंभारसमतासरूपधारजीतकैंपरी
सह आनंदसुधापीजियैं॥मनकौंसुवसआंननानाविध
ध्यानवानआपनीसुवासआपमांहिआपलीजियै॥५१
सतजापअछरमोहार॥अडिल्ल॥पैतिससोलैंषटपं
नचवजुगएककहें॥सातजापएंअछरओरअनेककहें॥
पंचपरमपदरूपसदामनध्याईये॥रिद्धसिद्धहैंकहांसु
कतपदपाईये॥५२॥जापअछररूप॥सवैया॥३१॥नमो
अरहंतानंसातनमोसिद्धानं॥पंचनमोआईरियानंसा
तवरनभावरे॥नमोउवझायानंसातनमोलोएवारस
बसाहूनं॥पंचैपैतिसनवलायरे॥अरिहंतसिद्धआचा
रजउवझायसाधुसुमसोलेअरिहंतसिद्धषटध्यावरे
असिआउसाएपंचअरिहंतचारसिद्ध दोयतैंएकसर
वअछरकौंगवरे॥५३॥पुनःपैतीसअछरसरूप॥कवित
सातनमोअरिहंतानंअरुपांचनमोसिद्धानंध्यांन॥सातन
मोआईरियानंअरुनमोउवझायानंसातचारनमोलो
मजांनौं॥पंचसबसाहूनंग्यांन॥पंचपरमपदपैतिस
अछरसुषकारीध्यांऊंदिनरात॥५४॥अरिहंतचौपई॥

चारघातियाकर्मविनास॥ग्यांनदरससुषवलपरकास॥
परमौदारकतनगुनवेत॥ध्यांऊंसुद्धसदांअरिहंत॥५०॥सि
धकरमपापनासेसवथोक॥देषैंजांनैंलोकअलोकलो
कसिषरथिरपुरुषाकार॥ध्यांऊंसिद्धसुषीअविकार॥५
१॥आचारज॥दरसनग्यांनप्रधांनवियार॥हतलपवीर
जपंचाचार॥धरैधरावैंऔरनिपास॥ध्यांऊंआचारजसु
षरास॥५२॥उपाध्याय॥सम्यकरतनत्रैगुनलीनसदा
धरमउपदेसप्रवीन॥साधनिमेंसुषकरतोधार॥ध्यांऊं
उपाध्यायहितकार॥५३॥दरसनग्यांनसुगुनभंडार॥प
रमदिगंवरमुद्राधार॥साधैसिवमारगआचार॥ध्यांऊं
साधसुगुनदातार॥५४॥उत्तमध्यांनजथा॥तनचेष्टात
जआसनमांड॥मौनधारिचिंतासवछांडि॥थिरकैमन
आपमैंआप॥यहउतकिष्टध्यांननिहपाप॥६०॥जा
वलौंमुकतचहैंमुनराज॥तवलौंनिहपावैंसिवकाज॥
सवचिंतातजिएकसरूप॥सोईनिहचैंध्यांनअनूप॥६१॥
दोहा॥षांनौचलनौसोवनौमिलनौवचनविलासजौ
ज्यौंपंचघटाईयेसौंत्यौंध्यांनप्रकास॥६२॥सवैया॥आग
मग्यांनसदाहुसवौनतपैतपजांनतिहुंगुनपूरा॥ध्यांन
महारथधारनकारनहोयधुरंधरसोनरसूरा॥ध्यांन
अभ्यासलहेसिववासविनांनवपासपरैदुषभूरा॥का
रमहादिढमैलचढेवजध्यांनसुवक्रकरैचकचूरा॥६२॥
पूरनता॥सवैया॥नेमचंदआचारजकहैंमैंअलपश्रुत
कीनौदर्वसंग्रहकौंसोधौमुनिराजजी॥दूषनरहितगुन
भूषनसहितनुमसुततसवपूरनहौंचूरनअकाजजी॥यां
नततनकवुधतापरवषानकरीवालरीतधरीढकिल
जौगुनसाजजी॥कुंकथाकेनासनकौंवुधकेप्रकासनै
कौंनाषायहग्रंथनयौसम्पकसमांजजी॥६४॥ईतिश्री॥

दर्शनगुनमा ज्ञान संपूर्ण ॥ राग सोरठ ॥ प्रांणी आत्म रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल। प्रांणी ॥१॥ यह सब कर्म निपाध है राग दोष भ्रम जाल ॥ प्रांणी आतम रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥२॥ कहा भयो कांई लिगी आत्म दर्पन मांहि। प्रांणी आतम रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥३॥ पर की कै पर रहै अंतर पैठी नांहि। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥४॥ भूलि नेवरी अहि मुलौं भूत लख्यौ नर रूप। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिका ल ॥५॥ त्यौं तें पर निज मानियो वह जड़ तूं चिद्रूप। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥६॥ जीव कर्म तन मिल के भिन्न भिन्न परदेस। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥७॥ मांहै मांहै संघ है मिलैं नहीं लवलेस। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥८॥ घन कर्म नि आछादियो भांन परकास। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥९॥ है ज्यौं का त्यौं सासतौ स्वक दोय न नास। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥१०॥ लाली रूख कैं फटक मैं फटक न लाली होय। प्रांणी आतम रूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥११॥ पर संगति परनाव है सुध स्वरूप न कोय। प्रांणी आतम रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥१२॥ त्रस थावर नर नारकी देव आदि बहु भेद। प्रांणी आतम रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥१३॥ गुण ज्ञानादि अनंत हैं पर जैसे कर्त्ता मत। प्रांणी आतम रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥१४॥ निहचै एक सरूप है ज्यौं पट सहज सुपेद। प्रांणी आतम रूप अनूप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥१५॥ ध्यान तत्त्व अनुभौ की जियै या कौ यह सिद्धांत। प्रांणी आतम रूप अनुप है पर तें भिन्न त्रिकाल ॥१६॥ इति पद संपूर्ण ॥

॥अथस्वयंभूस्तोत्रभाषालिख्यते॥चौपई॥राजविषैंजुगलनिसुषकि
यौ॥राजत्यागभवसिवपददियौ॥स्वयंबोधस्वयंभूभगवांन॥वंदौं
आदिनाथगुणषांन॥१॥इंद्रषीरसागरजललाय॥मेरुन्हवायग
यबजाय॥मदनविनासिकसुषकरतार॥वंदौंअजितअजित
पदकार॥२॥सुकलध्यानकरिकरमविनास॥घातिअघातिस
कलदुषरास॥लह्यौमुकतिपदसुषअविकार॥वंदौंसंभवभव
दुषटार॥३॥मातापछिमरैनमंझार॥सुपिनैंसोलेदेषेसार॥भूपपू
छफलसुनहरषाय॥वंदौंअभिनंदनमनलाय॥४॥सबकुवा
दवादीसिरदार॥जीतेस्यादवादधुनधार॥जैनधरमपरका
सकस्वांम॥सुमतिदेवपदकरौंप्रनांम॥५॥गरभअगाऊध
नपतिआय॥करीनगरसोभाअधिकाय॥बरषेरतनपंद्रै
मांस॥नमौंपदमप्रभुसुषकीरासि॥६॥इंद्रफनिंद्रनरिंद्रत्रि
काल॥वांनीसुनसुनहोंहिषुस्याल॥बारैसभाग्यांनदातार॥
नमौंसुपारसनाथनिहार॥७॥सुगनछियालीसहैंतुममां
हि॥दोषअठारैकोईनांहि॥मोहमहातमनासकदीप॥नमौं
चंद्रप्रभुराषसमीप॥८॥बारैविधतपकरमविनास॥तेरैभे
दचारितपरकास॥निजअनिछभविइछकदांन॥वंदौंपु
हपदंतमनिआंन॥९॥भविसुषदायसुरगतैंआय॥दसवि
धधरमकह्यौजिनराय॥आपसमांनसबनिसुषदेह॥वंदौंसी
तलधरमसनेह॥१०॥समतासुधाकोपविषनांस॥द्वादसां
गवांनीपरकास॥च्यारसंघआनंददातार॥नमौंश्रीश्रेंसजि॥
नेश्वरसार॥११॥रतनत्रयसिरमुकटविसाल॥सोभैंकंठसुगु
नमनमाल॥मुकतिनारिभरताभगवांन॥वासपूज्यवंदौंध
रध्यांन॥१२॥परमसमाधिसरूपजिनेस॥ग्यांनीध्यांनीहि
तउपदेस॥करम~~नासस्वरताभगवांन॥वासपूज्यवंदौंध~~
~~रध्यांन॥१२॥~~नाससिवसुषविलसंत॥वंदौंविमलनाथभ
गवंत॥१३॥अंतरबाहिरपरगहटारि॥परमदिगंबरव्रतकौं

स्वयंभुस्तो

८५

धार सरवनांमणि वसुषविलसंत॥ वंदौं विमलनाथ भगवंत
१३॥ अंनरवां हिरपरगहभार॥ परमदिगंवररूप कौधार॥ सरव
जीवहितराहदिषाय॥ नमौं अनंत वचनमनकाय॥१४॥ सातत
त्व पंचासत्तकाय॥ अनथन वौं छदरवऊनाय॥ लोकअलोकस
कलपरकास॥ वंदौ धर्मनाथ अघनास॥१५॥ पंचमचक्रवर्तिनि
धभोग॥ कांमदेव द्वादशम मनोग॥ सांतकरन सोलम जिनरा
य॥ सांतनाथ वंदौ हरषाय॥१६॥ वहुथुत करे हरष नहिं होइ
निंदें दोष गहैं नहिं सोय॥ सीलवांन परव्रह्मसरूप॥ वंदौं कुं
थनाथ सिवभूप॥१७॥ वारैं गुन पूजैं सुषदाय॥ थुत वंदनां करैं
अधिकाय॥ जाकी निजथुत कवऊ न होय॥ वंदौं अरजिनव
रपद दोय॥१८॥ परभौ रतनत्रै अनुसार॥ ईसभौं ब्याहसमैं वै
राग॥ वालब्रह्म पूरन व्रतधार॥ वंदौं मल्लिनाथ जितमार॥१९॥
विनउपदेस स्वयं वैराग॥ थुत लौकांत करें पगलाग॥ नमः
सिद्ध कहि सव व्रत लेहि॥ वंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहि॥२०॥ आ
वक विद्यावंत निहार॥ भगसम्भाव सौं दियौं अहार॥ वरषे
रतनरासि तत्काल॥ वंदौं नमि प्रभु दीनदयाल॥२१॥ सव
जीवनि के वंदीछोर॥ राग दोष दौ वंधन तोर॥ रजमत तजि
सिवतियकौं मिलै॥ नेमनाथ वंदौ सुषमिलै॥२२॥ दैतकि
यौ उपसर्ग अपार॥ ध्यांन देषि आयो फनिधार॥ गयो कम
व सव मुष करस्यांम॥ नमौं मेरसम पारसस्वांम॥२३॥ भौसा
गरतैं जीव अपार॥ धरम योग मैं धरैं निहार॥ न्हवत का देद
या विचार॥ वरधमांन वऊं वंदौं वार॥२४॥ दोहा॥ चौवीसौं
पदकमलजुग वंदौं मन वच काय॥ द्यांनत पढैं सुनैं सदा
सौ प्रभु क्यौं न सुहाय॥२५॥ इति स्वयंभुस्तोत्र भाषा संपूर्ण॥ ३॥
अथ ग्यारसैं छह जीवसमास॥ दोहा॥ वंदौ नेमिजिनंदपद स
व जीवन सुषदाय॥ वालव्रह्मचारी नये पसुगन वंध छुड़ाय॥१॥
जीवसमांस अनेक विधि भाषे गौमहसार॥ नेमचंद गुरु वंदिकैं

कहूं एक अधिकाय ॥४॥ चौपई ॥ पृथ्वी काय छभेद वषांन । कौ
मल माटी कठिन वषांन ॥ पांनी पावक पौंन विचार । नित्य इ
तर साधारन धार ॥५॥ सातौं सूछम सातौं थूल ॥ इन के चौदै
भेद कबूल ॥ कहीं उसेक काय दो जात । परतिष्टत अप्रतिष्ट
त ख्यात ॥६॥ दोहा ॥ रूष वेल छोटा विरष बडा ह्रष अरु कंद । ये
वनभेद परतेक के लषत नांहि मतमंद ॥७॥ जव ईन मांहि नि
गोद हैं तव परतिष्टत जांनि ॥ जव निगोद नहि पाईयें अपर
तिष्टत वमांहि ॥८॥ जात दसौं परतेक की वे चौदै हैं चौबीस ॥
परजअपरजअलवध सौं भेद वहत्तर दीस ॥९॥ वे ते चौइंद्र
त्रिविध परजअपरजअलब्ध विकलत्रै के भेद नव हिंसा
के टेनिषद्ध ॥१०॥ चौपई ॥ कर्मभूमि तिरजंच विष्यात । गर्भज
सनमूर्छन दो जात ॥ गरभज परजअपरज दोवीन ॥ अल
वधि हू सनमूर्छन तीन ॥११॥ सैनी पंच असैनी पंच । दसौं भेद ज
लचर तिरजंच ॥ दसौं भेद थलचर पसु काय । दसौं औ नभचर
नभे सुनाय ॥१२॥ करमभूमि तिरजंच प्रकार । तीस भेद आषे
निरधार ॥ भोगभूमि अव सुनो सुजान ॥ थलचर नभचर
दो सरधांन ॥१३॥ परजअपर्यापत दो भेद ॥ चार भेद जांनो
विनु षेद ॥ उतम मध्यम जघन्य भूतनै ॥ वारे भेद जिनागम
भनै ॥१४॥ दोहा ॥ पंचेंद्री तिरजंच के कहे वियालीस भेद । ते
रे भेद मनुष्य के समझौ नर मत छेद ॥१५॥ चौपई ॥ उतम ॥
भोगभूमि सुष षांनि ॥ उतम पात्र दांन फल जांनि ॥ मध्यम ज
घन्य भोग भुव दोय ॥ चौथें कुंभोग भूमि नर जोय ॥१६॥ पंचम म
लेछ षंड प्रकार ॥ छठै आचारज गरभ प्रकार ॥ परजअपर ॥
ज उषादस जांनि ॥ अलवधि नर ईन मैं नहि मांनि ॥१७॥ आ
त्रिछत्र ॥ न्यारि इंद्री न थन नांभि कांष मैं पाईये ॥ नर नारी के ॥
मलमूत्र मैं गाईये ॥ मुरदे मैं संमूर्छन मैं नीजी घरा ॥ अल
वध परजाय तेद याध रही परा ॥१८॥ सोरठा ॥ नरक पटल उन

वास।परजअपरजापतकहे।जीवसमासप्रकास।सातामें
अवानवें॥२७॥चौपई॥असवपटलसुरगकेपाव।भुवनय
तीदसअंतरआव।जोतिकपाचछियासीनये॥परजअ
परजापतितिनलये॥२८॥दोहा॥नरकमांहिअगवनेय।
सुईकसौतेईस॥नरतेंरैसवदेसकेसतकवहत्तरदीसा॥
र्ए अडिहत्र॥परजापतएकसौंछियासीजांनिये॥अप्रज
पतेंइकसौंछ्यासीमांनिये॥अलवधपरजापतेंजीवचौ
तीसहैं।चवसतघटपरकारनांकौंरेमुनीसहैं॥२९॥दोहा
नियतयेकचेतनमइभेदसरवव्योहार।निहचैंअरु
व्योहारकाजांननहारासार॥३१॥सुदयासमताआप
मेंयहपरदयाविचार।द्यांनतसुपरदयाकरैतेविरलै
संसार।३२॥इतिच्यारसैंघटजीवसमाससंपूर्ण:॥अथ
दराथांनचौबीसीलिषतें॥रिषवदेवरिषदेववीरलौंभी
रधीरकनि।च्यारबीसजगदीसईसतेईससुगुनगुन
सुरगवांमनिजनांममातपुरतांमचंदनतन॥आयु
कायसुंभचिन्हसुंकतआसनदसवरनन॥जसगाय
पुंन्यउपजायबुद्धिपापकरोंमंगलअमर॥सिरनाय
नमोंजुतजोरकरजोजिनंदनवतायहर॥रिषभदेववि
षननाथवृषभलछ्नतनसोहैं।नाभिरायकुलकम
लमातमरुदेव्यासोहैं।चौरासीलषपुब्बआवसतपं
चधनुषतन।नगरअजोध्याजनमकनकवसुंवरम
नहरनमन॥सर्वार्थसिद्धतेंगमनपदमासन॥केव
लग्यांनवरसिरसिरअजितअजितअजितरिपुअ
जितहेमवरनगजलछ्ननअम।पितारायजितसत्रुअ
रवरगासन॥आसन॥लषवहत्तरपुब्बआवपुरज
मअयोध्या॥धनुषच्यारसैंसाढगढवचवज्रप्रतिवोध
ध्या॥तजिविजयथांनपरथांनपदवसेविजेसेनांउदर

सिर०॥३॥संभवनाथ॥संभवसंभवहरनपुरी सावत्थीजांनौं
मातसुषेनांरूपभूपदिढराजउचानौं॥सरगांसनसुषत्याद
आयग्रैवेयकतैंआये॥चिन्हतुरंगउतंगरंग कंचनकंचन
मैंगाए॥थितिसाठलाषपूरवधनुगिरिधनुषच्यारसैंलषि॥
चतुर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरिजोजिनंदभवतापहर
४॥अभिनंदन॥अभिनंदनअभिनंदकंदसुषरूपस्वयं
वर॥मातासिद्धारथा कथासुंवरनतनमनहर॥तीनसक
लपंचासधनुषतननगरविनाता॥पुव्वलाषपंचासतास
कपिलछनमीता॥सरगासनविजयविमांनतैंकरमं
तासपरकासकर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरजोजिनं
दभवतापहर॥५॥सुमतिनाथ॥सुमतिसुमतिदातार॥
सारवससवैजयंतमना॥भूपमेघरथतातमातमंगला
करनकतना॥पुव्वलाषचालीसईसतनधनुषतीनसैं
चक्रवाकलषिचित्रपरग आसनसुषविलसैं छह॥
मासअमांऊगर्भतैंभयोविनतीसुरनगर॥सिरनाय॥
नमौंजुतजोरकरजोजिनंदभवतापहर॥६॥पद्मप्रभु
पदमपदमभविनवरपदमलछनसुषदाई॥धर॥
नभूपगुनकूंपसकूंपसुसीमांमाई॥अंतमग्रैवेय॥
कवासऊसैंपंचासचापतनसरगासना॥वजसकतर
कवतनहरषकरममना॥थितितीसलाषपूरवपुरीकौं
संवीसवसनसुषधर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरजोजिनं
दभवतापहर॥७॥सुपारस॥देतसुपाससुपासचवग्रीव
कतैंआए॥सुप्रतिष्ठभूपालपृथ्वीषेनांमनभाए॥नगर॥
वनारसधामस्वामधरगामनराजैं॥चिन्हसाथियावी
सलाषपूरवथितिराजैंतनहरनवरनदोसैधनुषसु
रधरैचौसव्वमर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरजोजि॥
नंदभवतापहर॥८॥चंद्रप्रभु॥चंद्रप्रभुप्रभचंदचंदपुर॥
वेदेविकमन॥महासेनविष्यातमातलछमनासेततन॥

विजयंततैं आयकायवरगांसनधारी॥ आवपुत्वदसलाष
नयेसवकौंसुषकारी॥ फेटसैंघनषतनमविकजनहंसपाव
तुममांनसर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमोजिनंदभवताप
हर॥ ९॥ सुवधिनाथ॥ सुविधिसुंविधिकरतारसारज्ञानतके
यांनी॥ महान्नूपसुग्रीवजीवजयरामांरांनी॥ उज्जलवरन
सरीरधीरषरगांसनधारो॥ का।कंदीपुरसाषलाषदोपूर
वमोनो॥ ननघनुषएकसोमोरहतसहतचिन्हंजलचरम
कर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमोजिनंदभवतापहर१०
॥ सीतलनाथ॥ सीतलसीतलवचननयपुरआरनस
वरवरदिढरथतातविष्यातसुनंदामाताअवतरनवेंध
नुषसरीरधीरकंचनमैंगायौ॥ आवपुब्बईकलाषषरगा
आसनसुषपायो॥ श्रीहस्तचिन्हकेवलप्रगटभिन्नभिन्न
नाष्योसुपर॥ सिरनाथनमौंजुतजोरकरमोजिनंदभवताप
हर॥ ११॥ श्रेयांसनाथ॥ नजश्रेयांसश्रेअंससर्वगसोलनके
वासी॥ विष्णुराजमहाराजमातनंदापरकासी॥ असीचाप
ततमायआपगेंडेकोलंछनापरगासनभगवांनसिंघपु
रकनकवरनतन॥ चोरासीलाषवरसजुगतिउषदावान
तमेघझर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमोजिनंदभवतापह
र॥ १२॥ वासपूज्यनाथ॥ वासपूज्यसवभूजभूपवसुविधि
सोंपूजौं॥ दसमलोकसैंआपकरतसुभकायनदूजौं॥ सतर
चापसरीरधीरचंपापुरआएं॥ लछनमहिषमनोगजोगय
दसासनगाये॥ थितिलाषवहतरिवरसकीजयावतीमाता
सुमर॥ सिरनायनमौंजुतजोरकरमोजिनंदभवतापहर१३
विमलनाथ। विमलविमलअदलोकिलोकदादसवस।
स्वांमी॥ कपिलापुरआयकायकंचनजगनांमी॥ कृतवर्मा
भूपालवालजपस्यासामाता॥ सूकरचिन्हंनिसोनसावध
भुवनअतिसाता॥ थितिसाठलाषवरसनिसुषीषरगास
नतेंजवर॥ सिरनायनमौंजुगजोरकरमोजिनंदभवतापहर

१४॥अनंतनांथ॥सुगुनअनंतअनंतअंतसुरसोलजि
नेस्वर॥सिंघसेननृपरायमायजपस्यामाकेघर॥कनकवरन
परग॥सतासपंचासतापतन॥आवलायहैंतीसईसकौसेही॥
लछन॥परगासनकोसलपुरजनमकुलतहांआगैपह
र॥सिरनायनमौंजुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥१४॥
धर्मनाथधर्मसुंधर्मप्रकासनासरवारथसिघसुथभा
नराजजसव्यातमातसुव्रतादेवीजये॥परगासनविंज
पापचापचालीसपंचतन॥आवलीषदसवरससरस
कंचनतनहैमनां॥लषिवरगचिंक्रसुमरतनपुरपारम
पावैंसुरतिकर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरनोजिनंद
नवतापहर॥१५॥सांतिनाथसांतिजगतसवसांतिमो
गसरवारथसिघरिघ॥कांमदेवतनकनकतनचोद
हैंनचौनिधिविस्वसेननृपतातमांतअपरामतलं
छन॥हथनांपुरमैंआपकायचालीसधनतन॥थिति
लाषवरसआसनपदमनांमरटैंअघजायटर॥सिर
नायनमौंजुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥१६॥कुं
थनाथ॥कुंथुकुंथुरषवारसारसवरिथवस॥हस्तिनां
गपुरआयचामीकरहरससरिसैंननृपजैनश्रैतश्री
कांतासुतमन॥पच्चानवैंहजारवरसपैंतीसधनुषतन
षरगासनलछनगांससुनतारेजनवैरागपधर॥सिर
नायनमौंजुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥१७॥अर
अरिकरिहरिसिघजयंतविमांनजांनजन॥रूपसुंदर
सनसारमित्रसेनांमातामनि॥हस्तिनांगपुरआयचा
पतनतीसविराजैं॥थितिचौरासीसहसवरसकंचनछ
विछजैं॥षरगासनलंछनमीनसुभवैनजलदसरस
विकनर॥सिरनायनमौंजुतजोरकरनोजिनंदनवताप
हर॥१८॥मल्लिनाथमल्लिकरमरिपुमल्लयानअपराजे
तजांनैं॥मिथलापुरअवतारसारघटचिंकपिछांनैं॥कुं

ध्यान०
८७

नराजमहाराजषरगआसनसरदहिये।धनुषपचीसस
रीरसहसपच्चपनथितिलहियें।देवीप्रजावतीकनक
तनअमलअचलअविकलअजर।सिरनायनमोंजु
गजोरकरमोजिनंदनवत्तापहर।२०।मुनिसुव्रतनां
थ।मुनिसुव्रतवरस्वर्गप्रांनतकेथांनी।नृपसुमि
त्रपवित्रमित्रसुतसोमांरांनी।राजग्रहीमेंआयकाय
कज्जलछविछाजे।वरससहसथितितीसवीसतन
चापविराजे।लंछनकछूवाआसनषरगदीनदया
लदयानजर।सिरनायनमोंजुगजोरकरमोजिनंद
नवतापहर।२१।नमनाथ।नमिनमिसुरनरराजरा
जसरवारथसिधकर।विजयराजमाहाराजविप्र
लारांनीउरधर।आववरसदससहपुरीमिथुलासु
षदाई।पंद्रधनुषसरीरषरगआसनलौलाई।तन
कनकवरनलंछनकमलप्रांनजांनहरिभ्रमतिमर
सिरनायनमोंजुगजोरिकरिमोजिनंदनवतापहर
२२।नेमिनाथ।नेमिधरमरथनेमजयंतविमानवास
कियसमदविजेमहाराजसिवादेवीजांनौं।जियनग
रद्वारिकानांमस्यांमतनजनमनहारी।आववरसइ
कसहसचापदसरजमतधारी।षरगासनआसनमो
षकौंसंषचिन्हहरिवंसनर।सिरनायनमोंजुगजोरि
करमोजिनंदनवतापहर।२३।पारसनाथपासप्रा
अयतोसवासप्रानतकरिआए।अस्वसेनअवद
तमातब्रह्मीमनभाए।नगरबनारसथांनजांनफ
नलंछननांमी।आवएकसौंवरसषरगआसनसु
वगांमी।तनहरितवरननकरघरनवज्रप्रगटसंक
रसिषर।सिरनायनमोंजुगजोरिकमोजिनंदनवत
पहर।२४।वर्द्धमानवर्द्धमांनजसवर्द्धमांनअच्युतविमां

नगति नगरकुं नपुरधरसारमिवारथमूप॥ रांनीप्रियक
रनीवनीकंचनछविकाया॥ आवव हलरव रसजोगषरग
सनधाया॥ ततसात हाथ मृगनाथपत्तितुमतैं अवलोंध
रमजर॥ सिरनायनमोंजुगजरिकरजोजिनंदभवतापह
र२५॥ रिषभअजितसंभवअभिनंदनसुमतिपदमसम
जिनसुपासप्रभुचंदसुंविधिसीतलश्रेयांसनम॥ वास
पूज्यजीविमलअनंतधरमपदरमां॥ सांतकुंथुअरिम
ल्लसुमुनसो विरतवीसमां॥ नमिनेमपासवीरेसपदअ
छसिद्धनौनिधघव॥ सिरनायनमोंजुगजोरिकरजोजिनं
दभवतापहर२६॥ पंचकुंमारनांमवासपुज्यसूरपूज्यम
ल्लविधमल्लजयंकर॥ नेमिदेहजमनेमिपासजोपांसछ
यंकरु॥ महावीरमहावीरधीरपरपीरनिवारन॥ वडेप्रस
षसंसारसारसंपतसुषकारन॥ ए पंचकुमरपदशीसुम
रकविनसीलवालकउमर॥ सिरनायनमोंजुगजोरिक
रजोजिनंदभवभयहरन॥२७॥ कलपवछ्छकलपतेंचिं
ततेंचिंतामनिमन॥ पारसरुंपरसतेंकरतहितएकज
नमजन॥ नगतअलकलपअचिंतअसरसनिहारि
नोमी॥ नोनोसवसुषदेहिंकोंनउपमांदेस्वां॥ मी॥ होनि
पटसिथलताकेविषैंचपलचिततनिसदिनफिकरसि
रनांयनमोंजुगजोरिकरजोजिनंदभवभयहरन॥२८॥ मह
पुरांनप्रवांनजांनआगेविधुवरनन॥ वासववांनवषां
नजांनदोलछनआसन॥ होपकोपसंदेहनेहकरितहों॥
तिहारेंसुद्धछंदसोसुधफेरिकोकवित्तसमारोहो॥ अलप
बुद्धिबुद्धितविषैंएेकवाललीनीपकर सिरनायनमोंजुग
जोरिकरजोजिनंदभवभयहरन॥२९॥ जेजेंमलव्रह्म
चरिजअटलवलसकलवनाय॥ एेकयेकजिनस्वांम
नोमदसदसगुनगाएं॥ सुनतसुनतचित्तचुनतधनतउ
षसंतत प्रांनी॥ द्यांनतरायभपायगायजिनपापकहांवी

गादजनमजरामरतनहिंभगतनगतिएकतपदविराग॥सिरनाय
नमौंजुगजरकरिमोजिनदनोतापहरा॥२०॥ ईतिदसथांनचौवीसी
संपूर्णं॥१॥ अथदसवोलपचीसीलिषते॥ छंद॥ एकसम
यअभेददोयविधिविधितिसेदमें॥रतनत्रैकरितीनचारविध
वीदितमें॥पंचमगतिसुंचिगेरआपषट्कारकराजें॥सातोंभे
करिभिन्नआठगुनसहितविराजें॥नवनोकषायदसवंध
हरितासरूपहिरदेधरो॥पूजोध्याऊंगाऊंसदाजिहविह
विघमवजलतरो॥१॥ अथयेकवोलकेचौवीसभेद॥वंदो
वांनीएकएकध्यांनीअघनासक॥येकदरवआकासए
ककेवलसवभासक॥परमांनूयेकचलेंएककालानंप
रसैं॥एकसमेंनिरग्रंथएकतीर्थंकरदरसैं॥ईकियुकनिर
गथंजहांजसमएकदयामारगभला॥ईकसमेंजीवजि
गतिकरेयेकआपअनुभौंकला॥२॥पुनः॥येकआंनचोद
हेवंधईकतेरयजिनवर॥एकमेरमरजादयेकमिथ्यात
घातकर॥जघनदेहईकसमैंराजचोदैंअनुजावें॥धर्मअध
र्मविमांनएकवससिवपदपावैं॥सुलभपांनकरमविनईक
समैंजीवततलोपरनमें॥ईकनभप्रदेसावकदेसकौंवेर
देतजिनवचनमें॥३॥ अथदोयवोलकेचौवीसभेद॥न
मौंडविधजिनरायजीवनिरजीववषांनैं॥सिद्धअौरसं
सारभेदत्रसथावरजानैं॥कहींप्रत्येकनिगोदनितइत
रसाधारन॥सूछमथूलवषांनपंचइंद्रीमनविनमिन
आगमअध्यातमकथनसुनसुपरभेदकौंपरनएथि
रकलपत्यागजिनकलपधरकेवलज्ञांनदरसनएंध
पुनः॥वंदोवंदसरूपसाधश्रावकसुषदायकनितअ
नितप्रवांनगुनीगुनसवकेग्यायक॥पुंनपापपरकास
तासफलसुषदुषभाषें॥रूपअरूपनिहारदोयपरिग
हनहिंराषें॥दोभेदपांनवरननिकरेंदरवभावसरूपजि
[illegible]॥निहच्वैव्योहारसंसारमनदोयदयामेंहूंजियें॥५॥अथ

थ तीन बोल के चौवीस भेद॥ तीन साध आराध वचन
मन काय लाय करि॥ तीन पात्र सरधांन तीन विध आ
तम मनध॥ तीन लोक कौं जांन कापती मौ अवधारे
संष असंष अनंत दरवगुन परजै विचारो॥ संसै विमो
ह विभ्रम रहित ध्यान ध्येय ध्याता सु नौं॥ करता कर्म कि
रिया सम रूपांन गेरागपाला सुं नौं॥ ६॥ पुनः॥ सामायक
ति ऊं वार तीन सव सल्य नसा कें॥ तीनौं दरसन मोह ज
न मम तज रा मिटा कें॥ तज तीनौं अग्यांन तीन समकि
त मन आंनौं॥ तीन समैं अनहार देव गुरु धर्म प्रवा
नौं॥ लष भाव पार गांमी त्रिविध तीन करम सौं भिन्न
हैं॥ तज रा दोष अरु मोह कौं तीन चेतना चिन्न हैं॥ ७॥
अथ च्यार बोल के चौवीस भेद॥ चतुरानन भगवान
दांन विध चार बतावैं॥ च्यार आराधन च्यार अर्थ नि
कौं पावैं॥ चार संघ आधार च्यार विध वेद बषांनैं न
मैं चार विध देव च्यार निछेपे जांनैं॥ चऊं घाति करम
गिर चूर करि जर संग पा चारो भरी॥ चव ध्यांन वषांन वे
ध्यांन सो चार भावनां मन भरी॥ ८॥ पुनः॥ सहित अनंत
चतुष्टय चार चौक विनासी॥ च्यार कषाय जलाय चार
विकथा न हिंनासी॥ ग्यांन च्यार प्रकार चार दरसन
परकासक॥ पुंदगल के गुन चार नांरिव ऊं सील वि
नासक॥ सहि चार जात उपसर्ग कौं च्यार भेद मनव
स किया॥ तिन वंध चार परकार हरि सिव गति कौं पा
नी दिया॥ ९॥ अथ पंच बोल के चौवीस भेद॥ नमौं
पंच पद सार पंच इंद्री वस कीजैं॥ पंच लवध कौं पाय
पंच स्वाध्याय पढीजैं॥ चारत पंच विचार पंच परमाद
विसारैं॥ अंतराय विध पंच पंच मिथ्यात निवारो पं
चो सरीर सम तजौं नींद पंच न हिं कीजिये॥ धर पंचम

।बो०
८५

हादसभावसौं पंचसमितिचितदीजिये॥२०॥पुनः॥सिद्धपंच
हीनावपांचपैतालीजांनी॥पंचाचारविचारपंचसिवका
रनमांनौं॥पंचजोतिकीदेवपंचगोलेसाधारनपटपं
चासतकायमूलकेभावपंचगननवपंचपरावरतन
तिकलपंचनरकदुषसोंडरो॥बहुभेदपंचथावरसम
कपंचकल्यांनकपददारो॥२०॥अथषट्बोलकेचौवी
सभेद॥ नमौंछमततैंसारदर्वषट्भेदजकामक वाह
जतपषट्भेदभावतपषट्उषनांसकाषट्अनाय
तनतजोहो॥निषट्हषअगुरलघापुदगलकेषट्भे
दक्रियाषट्गेहमोहअघाषट्नरकजायतारीकुमते
षट्विधसमकितवरनया॥पूजादिकर्मषट्पांषहर
षटआवसकसोंसुबनया॥२१॥पुनः॥षट्मंगलवं
दामछहौंपरजापतिजांनी॥षट्सेनांचक्रेसरंघन
नषट्परवांनी॥संसथांनषट्जांनछविधपरजैतैं
धारौं॥छहोकालपरनांमकायषट्दयाविचारौं॥
जियमरनवेदषट्दिसिचलेषट्लेस्याजोधारिहैं॥ष
टअविधपांनकेभेदषटविधनिहचैआहारहैं॥२२॥
अथसातबोलकेचौवीसभेद॥सातनरकनयका
रमसनसातौतजजाउ॥सातषेतधनषरचप्रकृत
सातोंउषदाई॥सत्रुसातविधसैनरतनसवसात॥
किअधरसातअचेतनरतन॥सातचेतनचक्रेस
रलषसातधातमैंतन॥अनुचिमोनसातविधध
रकैंदातागुनसातौसातविधअंतरायकौंमारिकैं
१४॥पुनः॥सातभंगसरधांनजांनतन॥जोगसात
हैं॥समुदघातहैसातसातसंजमविष्यातहैं॥तीन
जोगविधसातसाततनमैंलंवषांने॥सातस्वरनके
भेदसीलछतसातौजांनौं॥निजनांमसवादसातौंउद

घरईहांसातहीषेतहैं॥प्रभुनांमईतसातौटलैंसाततत
सिवहेतहैं॥२५॥अथआववोलकेचोवीसभेद आवमू
लगुनपालआवमदतजौंसयानैं॥सम्पकआठौअंग
गपांनकेआववषांनैं॥आठवौरतनिगोदआवगुनस
रगनराजैं आवजुगलमेंदेवआवविधअंतरछांऐं
पूजियेंआवविधदेवजिनआगेंअंगनिवाईयें॥देऊरें
आवमंगलदरवआवपहरलौलाईयें॥२६॥पुनः॥आ
वौप्रवचनधारजोगकेआवअंगहैं॥आवरिद्धदातार
फरसकेआवभेगहैं॥आवसमेंमदादिआवकपमांनव
षांनें॥आवभेदसतआदआवलोकांतकजांनें॥अंग
लभुतसगुवरीसवसआवप्रातहारजभलेसवआव
पांनपावकविषेंकावकरमआवौंजलैं॥२७॥अथन
ववोलकेचोवीसभेद॥नवौपदारथधारदरसनांवर
नीनौविध॥नौनैनगमआदसक्रधारीकैंनौनिधि॥नौ
नारायनजांनमांनमौहैंवलभद्र॥प्रतिनारायणनवैं
नवोंनारदहरिहितकर॥नौनैंगुनपरजैंदरवकीआव
वंधनौवारिहैं॥नौगुनथांनककेभेदनौसमकितनौं
परकारहैं॥२८॥पुनः॥छायकगुननौनमौंसीलनौवारे
संभारैं॥प्रायचितनौभेदसातरसनौमेंधारौं॥नौग्रैवेय
कनरधारनौनतत्तरेभरेवुध॥जोनभेदनौजांनपांच
मंगलनौपदसुध॥नौगुनथांनकनौकोरमुनिनौ॥
गुरुअछरअंकसवनौदोनतनीविधजांनकेनौधराम
गतिविनोमरन॥२९॥अथदसवोलकेचोवीसभेद॥
पूजौंदसअवतारजनमदसगुनजिनसाहव॥घात
घातदससुगुनदसौसमकितभाषेसव॥ईजआदद
सभेदभवनवासीदसजांनैं॥पुद्गलदसपरजायस
त्रुदसभेदवषांनैं॥दसदोषरहतिआलोचना॥कोमकुं

८०
५५०

चेष्टा दसतजो॥ जुव आदि जीवके भेद दस वईया ष्टतदसवे
धानजो॥ २७॥ पुन्य॥ दसौ दिसा मनरोकजांनदसभिन्नचेत
नौ॥ दावतनैं दस भेद संगदस साधलेतनौ॥ दसविधहैं दि
गपालनिरजरा दसविधजांनी॥ दसौ विशेषसुभावआ
कदसस्वपदवांनी॥ दसविध कूंदांनफलनरकइष्टद
ससामांनिकगुनदरव॥ सुनसमोसरनमैं दसधुजाधर
मध्यांनदसविधसरव॥ २१॥ अथ घट्नवजथा॥ असत
कथनउपचारजीवकौंजनमनजांनौ॥ असतविनांउ
पचारकायआतमकौंमांनौ॥ सांच कथनउपचार हंस
कौ रागविचारौं॥ सांचविनांउपचारग्यांनचेतनकौं धा
रौं॥ निहचैं असुद्ध निरभेद नैं रागसरूपीआतमौ॥ आद
यसुद्धनिहचैं समग्यांनरूपपरमातमौ॥ २२॥ अथ दर
वकरम भावकरमसुद्धभावकौं करता पुदगलजीव॥
व्योहारनिहचै॥ यथा॥ दरवकरम कौं करैंजीवव्योहा
रवतावैं॥ दरवकरम पुदगलसरूपनिहचैनैं गावैं भा
वकरमकरतार धारव्योहार सुपुदगल भावकरमआ
तमारूपनिहचैनैकौवल॥ दोनोंअसुद्धजियमोहमैं
पुदगलबंधलगावनौ॥ अनंतवौंसुद्धपुदगलअनु
जीवग्यांनमैं भावनौ॥ २३॥ अथ मिथ्यारूपसरधांनजथा॥
नरलोविषयनिमांहिकरौपरचौं हनमैं नरा॥ परचौ दरव॥
सुपेतसदा अरचौ श्रीजिनवरा॥ चरचौ वारंवार अतरचैं
मनसुषदायक॥ पुदगलधरमअधरमव्योमजगजडजा
गपायक॥ सवअरूस अनादिकअजरअमरगुनपर
जायदरवमई॥ इतिनासैं केवल आरसीमांहिमोहेस
रधांनई॥ २४॥ अथ कविलघुता॥ अरु ममतासारप
अयहृषभसेनगुनसेनगोतममरोतमगनधरा॥ सक
लपापसिरनोयपुंनउपजायपुष्पवर॥ कहे कवित हित

कारमाखजहेहीनअधिकअति॥छमावरोंसुद्धकरौंदोष
मतिधरोंविपलमतियहसबदहेनवारिधलहरगतन
पारकौंपायहै॥ध्यांनतज्ञांनीआतममगनयहपुदगल
परजायहै॥२५॥इतिदसबोलपचीसीसंपूर्ण॥२५॥श्री॥
अथजिनगुणमालाछिलमीसंपूर्ण॥असोकपुहपमंजरी॥
छंदसवैया॥३१॥समोसरनथुतिमांनथंभदेवओसरोव
रीनलीविशेषषातकागंभीरपेषपुःपवाररा्जही रूप
कोटनाटसालवागदोयनैंविसालवेदकाधुजासतास
सालआदिछ्राजही॥हेमकोटकल्पवृछवागसोहनैअ
तछरत्नपुंजधांमआवलीमनोग्पराजही॥वज्रकोट
चारपोलवारसेवसोलनीतवीचवेदकात्रिपीवसेढु
जीविराजही॥१॥दसगुनजनमतनथा॥वलतोअतु
लवीरश्रमकैनहोयनीरहितमितमीठीवांनीप्रांनी
कौंसुहावनी॥आदिसंसथानहैगंभीरसंघननधीररूपकी
सोभाअनूपसबकोटिपावनी॥सहसआवलछनसरी
रलोहूहेषीरदेहकीसुगंधऔरगंधकौंलजावनी॥मल
कौंनलेसलीयेतपजेदसोजिनेसमेरकरैंकोमसोसुरे
समनकनावनी॥२॥घातकर्मनासेतेदसगुनजथा॥
जोजनसौसौसुभिक्षगौमचलैअंतरिछचारोंमुखचारो
दिसबविद्यापतिहैं॥जीवकौंनवंधहोपउपसर्गनांहि
कोयकौलाहारलेतनांहिग्पोनसुधारतिहैं निर्मलसरू
पमांहिमनकीनपरैंछांहिनयकेसबढेनांहि आषनो
लगतेहैं॥घातियाकरमनासदसोंगुनपरगासजिनकी
जगतिकियेपापजैनगतहैं॥३॥चौदेंगुनदेवकृतजथा
अरधमागधीनाषा॥खैरितफलफूलषिंहस्यालप्रीत
रीतआरसीआवनिहैं॥पौनउहारेमेघजलकनसुगंध
फेरेपापतलैकंजधरेआनंदसवनिहैं॥तिर्मलगगनऔ

२०
१५२

रदसोदिसातज्जलहेफलेषेतसोनेभूमिधर्मचक्रमनि॥
हे॥आगेमंगलीकसारसुरकीजेजेकारचौदेंअतिसय॥
तेरेदेवकृतधनिहैं॥६॥आठप्रातहारजजथा॥फूलसव
सुषवरषतमांनोंचंदनिकोदेवदुंदभीकेवाजेनाजेंपा
पलारजी॥सिंघासनतीनसेतीतीनलोकसांहिवहैंती
नछत्रकेहेरतनअपदातारजी॥जानोंअवरसुपेदचौस
वचमरढरेंऔरकहांसोकहछत्रंअसोकधारजी॥भा
मंडलआरसीहैंवनीसुधाधारसीहैनमोंआठप्रातहा
रजकेसेरदारजी॥५॥अथअनंतचतुष्टयजथा॥लोका
लोकदर्वगुनपरजायतिहूंकालहोकीज्ञेंयकेरषाषे
पानमेंप्रकासहैं॥चंदनोंनअसंष्यातसेंअनंतगुनीजो
तसोकैंनाहिलगेंअसेंदर्सनकीरासिहैं॥निरावाधसा
स्वतीअनाकुलअनंतसुखअंसहूंनलोकमांहिऔ
डीसुषजासहैं॥सतइंद्रसेतीजोरवलकोंनहीहैंरअ
नंतचतुष्टैंनाथवेदोंअघनांहैं॥६॥छियालीसगुनजथ
दसोंजनमतसारदसोंघातघातकारचौदेंसुरकृतपा
तहारजआगेंगहैं॥अनंतचतुष्टेकहिवतकोंछयाल
लीसहैं॥गुनहैंअनंततेतैंग्यांनीनमेंलहैं॥तारनकों
मोनमेघधारकोंप्रवांनऔरसंन्रमनिलहरतातें
अधिककेकहै॥कोनतोतिनाषेजोहिधिरताऔवुधि
नाहियांनतसेवकनेंप्यारेप्यारेसरदहैं॥७॥इतिश्रीजि
नगुनमालअसमीसमाप्ता॥अथपदलिषते॥रागवसंत
मोहतारोहोदेवाधिदेवमेंमनवचतनकरिकरोंसेव॥मो
हितारोहोदेवाधिदेव॥तुमदीनदयालअनाथनाथ ह
महूंकोराषोआपसाथ॥मोहितारोहोदेवाधिदेवय
हमारवारसंसारदेस॥तुमचरनकमलपतहरकलेस
२॥मोहितारोहोदेवाधिदेव॥तुमनामरसायनजीवपी

याद्यांनतिअजरामरननवरतीयाधमोहतारोहोदेवाधे
देवा।ईम।इति ०।केदारोरेजियक्रोधकाहेकेरो।देषिकेअ
विवेकजोनी।क्यौंविवेकनधरे।१।रेजियक्रोधकाहेकौं।
करे।जिमेजेसीतदेआवें।सोक्तिपाआवेरेंसहजनतें।अप
नोविगारे।जायउरगनपरे।२।रेजियक्रोधकाहेकोक
रे।होईसंगतिगुनसवनिकोंसवजगतदरें।तुमनलेक
रनलेसवकौं।चुरेलषमतजरें।३।रेजियक्रोधकाहे।
कोकरे।४।वेदपरविषहरसकतनहिंआयनयको
मरे।वक्रकषायनिगोदवासाछिमोद्यानतनरे।रेजि
यक्रोधकाहेकोंकरे।६ध।इति।ऐसेमित्रसोंकरि
प्यारी।विषैविलाससमकनहियाकौं।ध्यानध्यानअ
धिकारी।ऐसेमित्रसोंकरिप्यारी।१।उपलचलावेसें
कलपावेंआंवरीतगहिमारी।दीननहीअनिमोनीन
हीमध्यदसाव्यवहारी।ऐसेमित्रसोंकरिप्यारी।२।श
जादोनकरेंनहिंचाहैंसुरगतकीरतमारी।जीवतद
सामतकरतोनीरागदोषपरहारी।ऐसेमित्रसोंक
रिप्यारी।३।चेदननूमनदीतरुरविससिवारदसेउप
गारी।हेमराजतिनहीपुरुषनिकरवसुंधातीरथथ
री।ऐसेमित्रसोंकरिप्यारी।६५।इति।औरकौंवि
सारपारनेमपेमसार।रोगसोगकोंविजोगजोगहीं
अपार।पारनेमपेमसारऔरकोंविसार।१।उपजा
यसुषुपायध्यांनकोंनिवार।पारनेमपेमसारऔर
कोंविसार।२।धर्मजीतधर्मतीतसर्मरीतकार।पार
नेमपेमसारऔरकोंविसार।३।मोदनांसकामञ्जा।
सक्रोधलोभहार।पारनेमपेमसारऔरकोंविसार
।४।पापहांनआपग्यांनजायकौंकरार।पारनेमपेम
सारऔरकोंविसार।६।दीनवानहीनतानस्वर्गमोष।

पद२०
९८२

कारहेमराजजी॥ संचारघूमधांमकार॥ धारनेमपेमसार॥१०॥
औरकौविसार॥७॥ इति॥ ह्री॥ चेतनसवहीमैंघाटवाटन
हिंओर॥ दीपमांहमेदिरपरगांसेंसों तनमैंसिरमोर॥ चेत
नसवहीमैंघातवाटनहिंओर॥१॥ उतमनीचकरमसो
जगमैंभिन्नमुकतकीवोर॥ काहिंअराधोंकाहिविरा
धोयहमिथ्याकीदौर॥ चेतनसवहीमैंघाटवाटनहिंओ
र॥२॥ गजकुंथवावरावजांनोमांनोसोनाचोरकौनचु
कलकीनिंदाकीजैकाकीकीजेगौर॥ चेतनसवहीमैंघ
टवाटनहिंओर॥३॥ केवलज्ञानमईसवराजैयहसर
धासिवओर॥ हेमराजआस्वादेंजांनैंअनुमोंअंमृतकौ
र॥ चेतनसवहीमैंघाटवाटनहिंओर॥४॥ इति॥ ह्री॥ फू
लीवसंतफूलीवसंत॥ जहआदीस्वरसिवपुरगए॥ भर
तभूपबहतरजिनग्रहकवकमईसवनिरमए॥ फूली
वसंतफूलीवसंत॥१॥ तीनचोवीसरतनमैंप्रतिमांअं
गरंगजैजैनए॥ सिद्धसमांनतीससमसवकेअदभुत
सोभापरनए॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥२॥ वालआदे
आहूंवकौंसुनिसवनिमुकतसुषअनुनए॥ तीनअ
ठाईफागनिषगमिलगावेंगीततएनए॥ फूलीवसंत
फूलीवसंत॥३॥ वसुजोजनवसुंपेडीगंगा॥ फिरीवज
तसुरआलए॥ द्यांनतसोकैलासनमोहेगुनकांथेंजा
वरनए॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥५॥ इति॥ ह्री॥ तुमग्यांन
नविनोंफूलीवसंत॥ पऊ मनमधुकरसुषसोरमंत॥
तुमग्यांनविषैंनौंफूलीवसंत॥१॥ दिनवडेभएवैराग॥
भाव॥ मिथ्यामतिरजनीकौंघटाव॥ तुमग्यांनविषैंफू
लीवसंत॥२॥ वऊफूलीफेलीसुरुचिवेल॥ ग्याताज
नसमतासंगकेल॥ तुमज्ञानविषैंफूलीवसंत॥३॥
द्यांनतवांनीपिंकमधुररूप सुरनरपसुआनंदप

नरूप॥ तुम ज्ञान विरौ फूली वसंत॥४॥ ईति॥ ईहीं ग्यानी जीव द
या नित पालै॥ आरंभतें पर घात होत है क्रोध घात निज टालै॥
हिंसा त्याग दया कही जैंन लैं कषाय वदन मैं॥ बाहिर त्यागी॥
अंतर दागी॥ पडूपैं नरक सदन मैं॥१॥ ग्यानी जीव दया नित
पालै॥ करैं दया पर आलस भावी ताकौं कहियें पापी॥ सांत
सुभाव प्रमाद न जाकैं॥ सो परमारथ आपी॥ ग्यानी जीव दया
नित पालै॥२॥ सिथलाचार निरूहिम रहनौ सहनौ व्रऊ
डष त्रास॥ द्यांनत वोलत डोलत जीमन करैं जतन सौं
पास॥ ग्यानी जीव दया नित पालैं॥३॥ ईति॥७०॥ कारज
एक ब्रह्म ही सेती॥ अंग संग नहिं वहिर भूत सब॥ धन हार
साम ग्री तेती॥ कारज ब्रह्म एक ही सेती॥ सो लह सुरग न
व ग्रैवेयक मैं डुषी॥ सुष तेसा तमें तत कावेती॥ जा सिव
कारन मुनि गन ध्यावैं॥ सो तेरे घट आनंद सेती॥ कारज
एक ब्रह्म ही सेती॥१॥ दांन सील जप तप व्रत पूजा अफ
ल ग्यांन विन किरिया केती॥ पंच दरब तौ तैं नित न्यारे न्या
री रोग विध जेती॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती॥२॥ तूं अवनो
सी जग पर गांसी॥ द्यांनत नासी सुक लावेती॥ तजौ ला
लन के विकलप सव॥ अनुभौं मगन सुविद्या एती॥
कारज एक ब्रह्म ही सेती॥३॥ ईति॥७१॥ होरी चेतन षे
लै होरी॥ सता भूमि छमा वसंत मैं॥ समता प्रांन प्रिया सं
ग गोरी॥ चेतन षेलैं होरी मन कौं मट पेम कौं पांनी ता
मैं करुना केसर घोरी॥ ग्यांन ध्यांन पिचकारी भरि भरि
आप स मैं छोरै होरा होरी॥ चेतन षेले होरी॥१॥ गुरू
के वचन मदंग वजत है॥ नै दोनौं डफ टाल टकोरी॥ स
जम अंतर विमल व्रत चूका भाव गुलाल भरें भर झौ
री॥ चेतन षेलै होरी॥२॥ धरम मिठाई तप वऊ मेवा स
मरस आनंद अमल कटोरी॥ द्यांनत सुंमत कहैं सषि
यन सौं चिरजी वौं यह जुग जुग जोरी॥ चेतन षेले होरी॥

२८०
५२

इति॥७२॥नौरतनयोंनजश्रीजिनराजसफलहोहिंतेरेसबकैं
म॥धनसंपतिमनवंछितनोग॥सबविधआनबनैंसंजोग॥
नौरतनयोंनजश्रीजिनराज॥१॥कलपवृक्षताकेघररहैं॥
कामधेनुनितसेवाचहैं॥पारसचिंतामनिसमुदायहि
तसौंआयमिलैंसुषदाय॥नौरतनयोंश्रीजिनराज॥२॥दुर्ल
नतैंसुलभकैंजाय॥रोगसोगदुषदूरपलाय॥सेवादेव॥
करैंमनलाय॥विघनटलैमंगलवहुराय॥नौरतनयों
नजिश्रीजिनराज॥३॥डायनभूतपिसाचनवलैं॥राज
चोरकौंजोरनचलैं॥जसआदरसौंनागप्रकास॥हो॥
नतिस्वरगमुकतपदवास॥नौरतनयोंनजिश्रीजिन॥
राज॥४॥इति॥७३॥जिनकैंहिरदैंनगवांनवसैंतिनआं
नकौंध्यांनकियानकिया॥चक्रीएकमिलापनएतैं॥
औरनरनमिलियामिलया॥जिनकेंहिरदैंनगवांन॥
वसैंतिनआंनकौंध्यांनकियानकीया॥ इकचिंतमन॥
वंछितदायकऔरनगांनगहिया॥पारसएककनीकर
आवैंऔरधननलहिफलहिया॥जिनकैं हिरदैंनगवां
नवसैंतिनआंनकौंध्यांनकीयानकीया॥१॥एकनांवद
सदिसउजियाराऔरगृहनउदियाउदिया॥येककां
मतरुसवसुषदाता॥औरतरुनउगियाउगिया॥जि
नकैंहिरदैंनगवांनवसैंतिनआंनकौंध्यांनकियान
किया॥एकअंनैंमहादांनदेयकैं॥औरसुंदांनदिया
नदिया॥ग्यांनतम्पांनसुधारसचाष्यौ॥अंमनऔरपे
यानपिया॥जिनकेंहिरदैंनगवांनवसैंतिनआंनकौं
ध्यांनकीयानकीया॥३॥इति॥७४॥आयौंसहजवसं
तयेलोसबहोरीहोरीहो॥उतबुधदयाछमांबहुठाढी
इतजियरतनजैगुनजोरी॥होग्यांनध्यांनडफताल॥
बजतहैं॥अनहितसबदहोतघनघोरा॥धरमसुराग॥
गुलालउडतहैंसमतारंगदुहूंनैंघोराहो॥२॥परसन

सुतरनरे पिचकारी छोरत दोनों करि तोरा॥ ईतनें कहै नार
तुम काकी उनतें कहैं कोन छोरा ३॥ आव का अनुनौ।
पावक मैं जल बुझ सांतन ऊ सुवरौं॥ द्यानत सिव आ
नंद चंद छवि देषें सजन नैन चकोरा॥४॥ ईति ७५॥ अजत
नाथ सौं मन लावौ रे करसौं ताल वचन मुष नाथौ मैं चे
तल गावौ रे॥ अजतनाथ सौं मन लावौ रे॥ ग्यान दरस
सुष बल गुन धारी॥ अनंत चतुष्टय ध्यावौ रे॥ अवगाह
ना अवाध मूरत अगुरु अलक वतलावौ रे॥१॥ अज
तनाथ सौं मन लावौ रे॥ करुना सागर गुन रतनागर०
जोति उजागर भावौ रे॥ त्रिभवन नायक भव भय घायक
आनंद दायक गावौ रे॥ अजतनाथ सौं मन लावौ रे
२॥ परम निरंजन पातक भंजन भव विरंजन बहरावौ रे
द्यानत जैसा साहिब सेवो तैसी पदवी पावौ रे॥ अजतनं
थ सौं मन लावौ रे॥३॥ ईति ७६॥ राग आसावरी॥ अव
हम अमर भए न मरेंगे॥ तनकारन मिथ्या तकी यो तज
क्यों करि देह धरेंगे॥ अव हम अमर भए न मरेंगे॥ उप
जै मरे काल तैं प्रानी॥ ता तैं काल हरेंगे॥ राग दोष जग
वंध करत हैं ईनकों नास करेंगे॥ अव हम अमर भए
न मरेंगे॥ देह विनासी मैं अविनासी भेद ग्यान करैंगे
नासी जासी हम थिरवासी चोषे हो निषरेंगे॥ अव ह
म अमर भए न मरेंगे॥ मरे अनंतवार विन समझे अ
व सव दुष विसरेंगे॥ द्यानत निपट निकट अक्षर दो
विन सुमरे सुमरेंगे॥ अव हम अमर भए न मरेंगे॥ अ
व हम अमर भए न मरेंगे॥४७॥ ईति॥ आसावरी॥ सा
रीग्यानी सोई कहिये करम उदे सुष दुष भोग तैं राग
विरोध न लहियें॥ भाई ग्यानी सोई कहिये॥ कोउ ग्या
ग्यान क्रिया तें कोउ सिवमारग वतलावै॥ नै निहचै वि
वहार साधिके दोनों चित्त रिझावै गा भाई ग्यानी सोक

हियै॥४॥कोईकहैजीवछिनमेंगुरकोई।निरपवषांनैंपरजय
दरवतनयपरमांनैं।दोनूंसमताआनैं॥नारीग्यांनीसोकहि
ये॥२॥कोईकहैंतदेहसोईकोई।तहूमवोलैं।ग्यांनतस्वा
दसुतुलामेंदोनोंवस्तैंतोलैं॥नारीग्यांनीसोंकहियेघ॥इ
ति॥७दी।नारीकौंनधरमहमचालैं।एककहैंजिहकुल
मेंआएंताकुरकौकुलपावैं।नारीकौंनधरमहमचालैं१
सिवमतवौधसुवेदनैंप्यायकामीमांसकअरुजैनां।आ
यसराहैंआगमगाहेकाकीसरधाआनैं।नारीकौंन
धरमहमचालैं॥२॥परमेसरपैंआयाहौंताकीवातसु
नीजैं॥सूवेंवजलनवोलैंकवजवकीफिकरक्याकीजैं
नारीकौंनधरमहमचालैं॥३॥जिनसवमतकेन्यायसों
चकरिमारगएकवताया॥द्यांनतसौंगुरपूरापायासोम
हमाराआया॥नारीकौंनधरमहमचालैं॥४॥इति रा
गगौरी॥हमारोकारजकैसैंहोय॥कारणपंचउकतम
रमकेतिनमेंकेहैंदोय॥हमारोकारजकैसैंहोय॥हीन
संघननलघुआउघाअलपमनीषाजोई।कछेभाव
नसच्चेसाथीसवजगदेख्योदोई॥हमारोकारजकैसैं
होय॥१॥इंद्रीपंचसुविषयनदौरैंमानैंकह्यानकोईसा
धारनचिरकालवस्योमेंधरमविनोंफिरसोय॥हमा
रोकारजकैसैंहोय॥२॥चिंतावडीनकछुवनआवैअ
वसवचिंताषोई॥द्यांनतएकसुद्धनिजपदलषिआ
पमेंआपसमोई॥हमारोकारजकैसैंहोय॥३॥इति०
रागगौरी॥हमारोंकारजऐसैंहोई॥आतमआतमपरप
रजांनैं॥तीनोंसंसैषोय॥१॥हमारोंकारजऐसैंहोई॥अं
तसमाधिमरनकरितनतजिहौंहिसक्रसुरलोई॥वि
वधिभोगउपभोगभोगवैंधरमतनोफलसोई॥हमा
रोंकारजऐसैंहोय॥२॥पूरीआवविदेहनृपकैंराजसं
पदाभोई॥कारणपंचलहैंगहेउधरपंचमहाव्रतजोई

॥ अथसहस्रनामजिनसेनकृतलिख्यते॥ स्वयंभुवेनमस्तुभ
मुत्पाद्यात्मानमात्मनि॥ स्वात्मनैवतथोद्भूतवृत्तयेचिंत्यवृत्तये॥१
नमस्तेजगतांपत्येलक्ष्मीभर्त्रेनमोस्तुते॥ विदांवरनमस्तुभ्यं
नमस्तेवदतांवर॥२॥ कामशत्रुहणंदेवमामनंतिमनीषिणः॥ त्वा
मानमत्सुरेणमौलिभामालाभ्यर्चितक्रमं॥३॥ ध्यानदुर्घणनिर्भिन्न
घनघातिमहातरुः॥ अनंतभवसंतानजयादासीरनंतजित्॥४
त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तदुर्दर्पमतिदुर्जयं॥ मृत्युराजंविजित्यासी
ज्जिनमृत्युंजयोभवान्॥५॥ विधुताशेषसंसारबंधनोभव्यबां
धवः त्रिपुरारिस्त्वमीशोसि॥ जन्ममृत्युजरांतकृत्॥६॥ त्रिका
लविषयाशेषतत्त्वभेदात्त्रिधोत्थितं॥ केवलाख्यंदधच्चक्षुस्त्रि
नेत्रोसित्वमीशितः॥७॥ त्वामंधकांतकंप्राहुर्मोहांधासुरमर्द
नात्॥ अर्द्धंतेनारयोयस्मादर्द्धनारीश्वरोस्यतः॥८॥ शिवःशिव
पदाध्यासाद्दुरितारिहरोहरः॥ शंकरः॥ कृतशंलोकेशंभव॥
स्त्वंभवन्सुखे॥९॥ वृषभोसिजगज्ज्येष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः
नाभेयोनाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदनः॥१०॥ त्वमेकःपुरु
षस्कंधस्त्वंद्वेलोकस्यलोचने त्वंत्रिधाबुद्धसन्मार्गस्त्रिज्ञ॥
स्त्रिज्ञानधारकः॥११॥ चतुःशरणमांगल्यमूर्तिस्त्वंचतुरस्रधी
पंचब्रह्ममयोदेवःपावनस्त्वंपुनीहिमां॥१२॥ स्वर्गावतरणेतु
भ्यंसद्योजातात्मनेनमः जन्माभिषेकवामाय वामदेवनमो
स्तुते॥१३॥ सुनिःक्रांतावघोराय॥ परंप्रशममीयुषे केवल
ज्ञानसंसिद्धावीशानायनमोस्तुते॥१४॥ पुरस्तत्पुरुषत्वे
न॥ विमुक्तिपदभागिने॥ नमस्तत्पुरुषावस्थांभाविनीं
तेद्यबिभ्रते॥१५॥ ज्ञानावरणनिर्ह्रासान्नमस्तेनंतचक्षुषेदर्श
नावरणोच्छेदन्नमस्तेविश्वदृश्वने॥१६॥ नमोदर्शनमोहघ्ने
क्षायिकामलदृष्टयेनमश्चारित्रमोहघ्ने॥ विरागायमहौज
से॥१७॥ नमस्तेनंतवीर्यायनमोनंतसुखात्मने॥ नमस्तेनंत
लोकाय॥ लोकालोकविलोकिने॥१८॥ नमस्तेनंतदानाय
नमस्तेनंतलब्धयेनमस्तेनंतभोगाय॥ नमोनंतोपभोगिने
१९॥ नमःपरमयोगायनमस्तुभ्यमयोनये॥ नमःपरमपूतायन

मस्तेपरमर्षये॥२०॥नमःपरमविद्याय।नमःपरमतच्छिदे नमः
परमतत्त्वाय।नमस्तेपरमात्मने॥२१॥ नमःपरमरूपायनमःपर
मतेजसे॥नमःपरममार्गाय॥नमस्तेपरमेष्ठिने॥२२॥परमं
जुषेधामपरमज्योतिषेनमः॥नमःपारेतमःप्राप्तधाम्नेप
रतमात्मने॥२३॥नमःक्षीणकलंकाय।क्षीणबंधनमोस्तुते
नमस्तेक्षीणमोहाय।क्षीणदोषायतेनमः॥२४॥नमःसुगत
येतुभ्यंशोभनांगतिमीयुषे।नमस्तेतींद्रियज्ञानसुखायानिं
द्रियात्मने॥२५॥कायबंधननिर्मोक्षादकायायनमोस्तुतेन
मस्तुभ्यमयोगाययोगिनामधियोगिने॥२६॥अवेदायन
मस्तुभ्यमकषायायतेनमः।परमविज्ञाननमःपरमसंयम
नमःपरमदृग्दृष्टपरमार्थायतायिने॥२७॥नमस्तुभ्यमलेश्याय
शुक्ललेश्यांशकस्पृशे।नमोभव्येतरावस्थाव्यतीतायवि
मोक्षिणे॥२८॥संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने
नमस्तेवीतसंज्ञायनमःक्षायिकदृष्टये॥२९॥अनाहाराय
तृप्तायनमःपरमभाजुषे।व्यतीताशेषदोषायभवाब्धेःपा
रमीयुषे॥३०॥अजरायनमस्तुभ्यंनमस्तेस्तादजन्मने॥अमृत
वेनमस्तुभ्य।मचलायाक्षरात्मने॥३१॥अलमास्तांगुणस्तो
त्रमनंतास्तावकागुणाः।त्वांनामस्मृतिमात्रेणपर्युपासि
सिषामहे॥३२॥प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणंत्वांगिरांपतिं।ना
म्नामष्टसहस्रेणतोष्टुमोभीष्टसिद्धये॥३३॥इतिस्तुतिः॥
श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभःशंभवःशंभुरात्मभूः।स्वयंप्रभःप्रभुर्भो
क्ताविश्वभूरपुनर्भवः॥३४॥विश्वात्माविश्वलोकेशोविश्वत
श्चक्षुरक्षरः॥विश्वविद्विश्वविद्येशोविश्वयोनिरनश्वरः॥
३५॥विश्वदृश्वाविभुर्धाताविश्वेशोविश्वलोचनः।विश्वव्याप
विधुर्वेधाःशाश्वतोविश्वतोमुखः॥३६॥विश्वकर्माजगज्ज्ये
ष्ठोविश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः।विश्वदृग्विश्वभूतेशोविश्वज्योति
रनीश्वरः॥३७॥जिनोजिष्णुरमेयात्माविश्वरीशोजगत्पति
अनंतजिदचिंत्यात्माभव्यबंधुरबंधनः॥३८॥युगादिपुरुषो

ब्रह्मा पंचब्रह्ममयः शिवः परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः।
स्वयंज्योतिरजोजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः। मोहारिविजयीजेता
धर्म्मचक्री दयाध्वजः॥४१॥ प्रशांतारिरनंतात्मा योगी योगीश्व
रार्चितः। ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः॥४२॥ सिद्धो
बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः। सिद्धसिद्धांतविद्ध्येयः
सिद्धसाध्यो जगद्धितः॥४३॥ सहिष्णुरच्युतोनंतः प्रभविष्णु
र्भवोद्भवः प्रभूष्णुरजरोयज्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोव्ययः॥४४॥ वि
भावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः। परमात्मा परंज्योति
स्त्रिजगत्परमेश्वरः॥४५॥ इति श्रीमच्छतं॥१॥ दिव्यभाषापति
र्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः। पूतात्मा परमज्योतिर्धर्म्माध्यक्षो
दमीश्वरः॥४६॥ श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः। ती
र्थकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोमलः॥४७॥ अनंतदी
प्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः मुक्तः शक्तो निराबाधो नि
ष्कलो भुवनेश्वरः॥४८॥ निरंजनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिरनाम
यः अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः॥४९॥ अग्रणी
र्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत्। शास्ता धर्म्मपतिर्धर्म्म्यो
धर्म्मो धर्म्मतीर्थकृत्॥५०॥ वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः
वृषो वृषपतिर्भर्त्ता वृषभांको वृषोद्भवः॥५१॥ हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृ
द्भूतभावनः प्रभवो विभवो भास्वान्भवो भावो भवांतकः॥५२॥ हिरण्य
गर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोभवः स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो
जगत्प्रभुः॥५३॥ सर्वादिः सर्वदृक्सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः सर्वात्म
सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित्॥५४॥ सुगतिः सुश्रुतः सुश्रु
त्सुवाक्सूरिर्बहुश्रुतः विश्रुतो विश्वतःपादो विश्वशीर्षः शुचिश्र
वाः॥५५॥ सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात्। भूतभव्यभ
वद्भर्त्ता॥ विश्वविद्यामहेश्वरः॥५६॥ इति दिव्यशतं॥२॥ स्थवि
ष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठो
णिष्ठो गरिष्ठगी॥५७॥ विश्वमुड्विश्वसृड्विश्वेड्विश्वभुग्विश्वना
यकः विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितांतकः॥५८॥ विभयो
विभवो वीरो विशोको विजरो जरन् विरागो विरतोसंगो वि

वीतमत्सरः ॥५९॥ विनेयजनताबंधुर्विलीनाशेषकल्मषः वियो
गो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधीः ॥६०॥ क्षांतिभाक्पृथ्वी
वीमूर्त्तिः शांतिभाक्सलिलात्मकः वायुमूर्त्तिरसंगात्मा व
ह्निमूर्त्तिरधर्मधक् ॥६१॥ सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजि
तः ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञांगममृतं हविः ॥६२॥ व्योममूर्त्ति
रमूर्त्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः ॥ सोममूर्त्तिः
मूर्त्तिर्महाप्रभः ॥६३॥ मंत्रविन्मंत्रकृन्मंत्री मंत्रमूर्त्तिरनंतगः स्व
तंत्रस्तंत्रकृत्स्वंतः कृतांतांतः कृतांतकृत् ॥६४॥ कृती कृतार्थः स
त्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतु
ऋचः ॥६५॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसंभवः महाब्रह्म
पतिर्ब्रह्मेड् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥६
धर्म्मेदमप्रभुः प्रशमात्मा प्रशांतात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥६७॥
॥ इति स्थविष्ठशतं ॥७॥ महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टा पद्म
विष्टरः पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥६८॥ पद्मयोनिर्ज
गद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृ
तक्रियः ॥६९॥ गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः गु
णाकरो गुणांभोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥७०॥ गुणादरी गुणो
च्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पु
ण्यनायकः ॥७१॥ अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः
धर्म्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥७२
पात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः निर्द्वंद्वो निर्मदः शांतो निर्मोहो
निरुपद्रवः ॥७३॥ निर्निमेषो निराहारो निःक्रियो निरुपप्लवः
निःकलंको निरस्तैना निर्धूतागो निरास्रवः ॥७४॥ विशालो वि
पुलज्योतिरतुलोऽचिंत्यवैभवः सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुबुत्सुन
यतत्ववित् ॥७५॥ एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः धी
शो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतांतकः ॥७६॥ पिता पि
तामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परम
पुमान् ॥७७॥ कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः
वा हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥७८॥ इति महाशतं ॥८॥ श्री वृक्षल

क्षणः सल्लक्षणो लक्षण्यः शुभलक्षणः निरक्षः पुंडरीकाक्षः पु-
ष्कलः पुष्करेक्षणः ॥७९॥ सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्द्धमानो महर्द्धिकः ॥८०॥ वेदांगो वेदवि-
द्वेद्यो जातरूपो विदांवरः वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतां-
वरः ॥८१॥ अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः यु-
गादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥८२॥ अतींद्रो तींद्रि-
योधींद्रो महेंद्रोतींद्रियार्थदृक् अनिंद्रियो हमिंद्रार्च्यो महेंद्रम-
हितो महान् ॥८३॥ उद्भवः कारणं कर्त्ता पारगो भवतारकः अ-
गाह्यो गहनं गुह्यं परार्ध्यः परमेश्वरः ॥८४॥ अनंतर्द्धिरमेयर्द्धि-
समग्रधीः प्राग्र्यः प्राग्रहरोभ्यग्रः प्रत्यग्रोग्र्यो ग्रिमोग्रजः ॥८५॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः महायशा महाधामा
महासत्त्वो महाधृतिः ॥८६॥ महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्म-
हाबलः महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥८-
७॥ महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महादयः महाप्राज्ञो म-
हानंदो महाभागो महाकविः ॥८८॥ महामहा महाकीर्त्ति-
र्महाकांतिर्महावपुः महादानो महाज्ञानो महायोगो म-
हागुणः ॥८९॥ महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः म-
हाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥९०॥ इतिश्रीवृद्ध
शतं ॥ महामुनिर्महाध्यानो महामौनी महादमः महाक्षमो
महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥९१॥ महाव्रतपतिर्मह्यो महा
कांतिधरोधिपः महामैत्रीमयोमेयो महोपायो महोमयः ॥९२॥
महाकारुणिको मंता महामंत्रो महायतिः महानादो महाघो
षो महेज्यो महसांपतिः ॥९३॥ महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो
महिष्ठवाक् महात्मा महसांधाम महर्षिर्महितोदयः ॥९४॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः महापराक्र-
मोनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥९५॥ महाभवाब्धिसंतारी
महामोहाद्रिसूदनः महागुणाकरः क्षांतो महायोगीश्व-
रः शमी ॥९६॥ महाध्यानपतिर्ध्यातमहाधर्मो महाव्रतःम

हाकर्म्मारिहात्मज्ञो॥महादेवोमहेशिता॥९७॥सर्व्वक्लेशापहः
साधुःसर्व्वदोषहरोहरः॥असंख्येयोप्रमेयात्मा॥शमात्माप्रश
माकरः॥९८॥सर्व्वयोगीश्वरोचिंत्यःश्रुतात्माविष्टरश्रवाः॥दा
तात्मादमतीर्थेशो॥योगात्माज्ञानसर्व्वगः॥९९॥प्रधानमा
त्माप्रकृतिःपरमःपरमोदयः॥प्रक्षीणबंधःकामारिःक्षेमकृ
त्क्षेमशासनः॥१००॥प्रणवःप्रणयःप्राणःप्राणदःप्राणतेश्व
रः॥प्रमाणंप्रणिधिर्दक्षोदक्षिणोध्वर्युरध्वरः॥१०१॥आनं
दोनंदनोनंदोवंद्योनिंद्योभिनंदकः॥कामहाकामदःकाम्य
कामधेनुररिंजयः॥१०२॥इतिमहामुन्यष्टोत्तरशतं॥असंस्कृतसु
संस्कारोप्राकृतोवैकृतांतकृत्॥अंतकृत्कांतगुःकांति
श्चिंतामणिरभीष्टदः॥१०३॥अजितोजितकामारिरमितो
मितशासनः॥जितक्रोधोजितामित्रोजितक्लेशोजितांत
कः॥१०४॥जिनेंद्रःपरमानंदोमुनींद्रोदुंदुभिस्वनः॥महेंद्रवंद्यो
योगींद्रोयतींद्रोनाभिनंदनः॥१०५॥नाभेयोनाभिजोजा
तसुव्रतोमनुरुत्तमः॥अभेद्योनत्ययोनाश्वानधिकोधिगुरुः
सुगीः॥१०६॥सुमेधाविक्रमीस्वामीदुराधर्षोनिरुत्सुकः॥वि
शिष्टःशिष्टभुक्शिष्टःप्रत्ययःकामनोनघः॥१०७॥क्षेमीक्षे
मंकरोक्षय्यःक्षेमधर्म्मपतिःक्षमी॥अग्राह्योज्ञाननिग्रा
ह्योध्यानगम्योनिरुत्तरः॥१०८॥सुकृतीधातुरिज्यार्हःसु
नयश्चतुराननः॥श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतु
र्मुखः॥१०९॥सत्यात्मासत्यविज्ञानःसत्यवाक्सत्यशा
सनः॥सत्याशीःसत्यसंधानःसत्यःसत्यपरायणः॥११
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः॥अणो
रणीयाननणुर्गुरुराद्योगरीयसां॥१११॥सदायोगःस
दाभोगःसदातृप्तःसदाशिवः॥सदागतिःसदासौख्यः
सदाविद्यःसदोदयः॥११२॥सुघोषःसुमुखःसौम्यःसु
खदःसुहितःसुहृत्॥सुगुप्तोगुप्तिभृद्गोप्तालोकाध्यक्षो
दमेश्वरः॥११३॥इतिअसंस्कृताष्टोत्तरशतं॥बृहद्बृहस्पतिर्वाग्मी

वाचस्पतिरुदारधीःमनीषीधिषणोधीमान्शेमुषीशोगिरांपतिः
११४॥ नैकरूपोनयोत्तुंगोनैकात्मानेकधर्मकृत्॥ अविज्ञेयोप्रत
र्क्यात्माकृतज्ञःकृतलक्षणः॥११५॥ ज्ञानगर्भोदयागर्भोरत्नगर्भो
प्रभास्वरः॥ पद्मगर्भोजगद्गर्भोहेमगर्भःसुदर्शनः॥११६॥ लक्ष्मीवां
स्त्रिदशाध्यक्षो॥ दृढीयानिनईशिता॥ मनोहरोमनोज्ञांगोधीरो
गंभीरशासनः॥११७॥ धर्मयूपोदयायागो॥ धर्मनेमिर्मुनीश्वरः
धर्मचक्रायुधोदेवःकर्महाधर्मघोषणः॥११८॥ अमोघवाग
मोघाज्ञोनिर्मलोमोघशासनः॥ सुरूपःसुभगस्त्यागीसमयज्ञःस
माहितः॥११९॥ सुस्थितःस्वास्थ्यभाक्स्वस्थोनीरजस्कोनिरुद्धवः
अलेपोनिःकलंकात्मावीतरागोगतस्पृहः॥१२०॥ वश्येंद्रियोवि
मुक्तात्मानिःसपत्नोजितेंद्रियः॥ प्रशांतोनंतधामर्षिर्मंगलंम
लहानघः॥१२१॥ अनीदृगुपमाभूतो॥ दृष्टिर्दैवमगोचरः॥ अमू
र्तोमूर्तिमानेकोनैकोनानेकतत्त्वदृक्॥१२२॥ अध्यात्मगम्यो
गम्यात्मायोगविद्योगिवंदितः॥ सर्वत्रगःसदाभावीत्रिका
लविषयार्थदृक्॥१२३॥ शंकरःशंवदोदांतोदमीक्षांतिपरायणः
अधिपःपरमानंदोपरात्मज्ञःपरात्परः॥१२४॥ त्रिजगद्व
ल्लभोभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः॥ त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिस्त्रिलो
काग्रशिखामणिः॥१२५॥ इति दृढव्रतं॥८००॥ त्रिकालदर्शीलो
केशोलोकधाताढव्रतःसर्वलोकातिगःपूज्यःसर्वलोकैकसा
रथिः॥१२६॥ पुराणःपुरुषःपूर्वःकृतपूर्वांगविस्तरः॥ आदिदे
वःपुराणाद्यःपुरुदेवोधिदेवता॥१२७॥ युगमुख्योयुगज्येष्ठोयु
गादिस्थितिदेशकःकल्याणवर्णःकल्याणःकल्यःकल्याण
लक्षणः॥१२८॥ कल्याणप्रकृतिर्दीप्तःकल्याणात्माविकल्मषः
विकलंकःकलातीतःकलिलघ्नःकलाधरः॥१२९॥ देवदेवो
जगन्नाथो॥ जगद्बंधुर्जगद्विभुःजगद्धितैषीलोकज्ञःसर्वगोज
गदग्रजः॥१३०॥ चराचरगुरुर्गोप्यो॥ गूढात्मागूढगोचरःसद्योजा
तःप्रकाशात्माज्वलज्ज्वलनसप्रभः॥१३१॥ आदित्यवर्णोभ
र्माभःसुप्रभःकनकप्रभःसुवर्णवर्णोरुक्माभःसूर्यकोटिसमप्र

प्रभः॥१२२॥तपनीयनिभस्तुंगोबालार्काभोनलप्रभः॥संध्याभ्र
बभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरछविः॥१२३॥निष्टप्तकनकछायःकनत्कां
चनसन्निभः॥हिरण्यवर्णःस्वर्णाभःशातकुंभनिभप्रभः॥१२४॥द्यु
म्नाभोजातरूपाभोदीप्तजांबूनदद्युतिःसुधौतकलधौतश्रीप्रदीप्तो
हाटकद्युतिः॥१२५॥शिष्टेष्टःपुष्टिदःपुष्टःस्पष्टःस्पष्टाक्षरःक्षमःशत्रु
घ्नोप्रतिघोमोघःप्रशास्ताशासितास्वभूः॥१२६॥शांतिनिष्ठोमुनि
ज्येष्ठःशिवतातिःशिवप्रदःशांतिदःशांतिकृच्छांतिःकांतिमा
न्कामितप्रदः॥१२७॥श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठःप्रतिष्ठितः
सुस्थिरःस्थावरस्थाणुःप्रथीयान्प्रथितःपृथुः॥१२८॥इतित्रिका
लज्ञशतम्॥९॥दिग्वासावातरसनोनिर्ग्रंथेशोदिगंबरःनिःकिं
चनोनिराशंसोज्ञानचक्षुरमोमुहः॥१३९॥तेजोराशिरनंतौजा
ज्ञानाब्धिःशीलसागरः॥तेजोमयोमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्त
मोपहः॥१४०॥जगच्चूडामणिर्दीप्तःशंवान्विघ्नविनाशकःक
लिघ्नःकर्मशत्रुघ्नोलोकालोकप्रकाशकः॥१४१॥अनिद्रालु
रतंद्रालुर्जागरूकःप्रमामयःलक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मरा
जःप्रजाहितः॥१४२॥मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञोजिताक्षोजितमन्मथः
प्रशांतरसशैलूषोभव्यपेटकनायकः॥१४३॥मूलकर्त्ताखिल
ज्योतिर्मलघ्नोमूलकारणं॥आप्तोवागीश्वरःश्रेयान्श्रायसोक्तिर्नि
रुक्तिवाक्॥१४४॥प्रवक्तावचसामीशोमारजिद्विश्वभाववित्सुत
नुस्तनुनिर्मुक्तःसुगतोहतदुर्नयः॥१४५॥श्रीशःश्रीश्रितपादाब्जो
वीतभीरभयंकरःउत्सन्नदोषोनिर्विघ्नोनिश्चलोलोकवत्सलः
॥१४६॥लोकोत्तरोलोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीःधीरधीर्बुद्धसन्मा
र्गःशुद्धःसूनृतपूतवाक्॥१४७॥प्रज्ञापारमितःप्राज्ञोयतिर्नि
यमितेंद्रियः॥भदंतोभद्रकृद्भद्रःकल्पवृक्षोवरप्रदः॥१४८॥समुन्मू
लितकर्मारिःकर्मकाष्ठाशुशुक्षणिःकर्मण्यःकर्मठःप्रांशुर्हे
यादेयविचक्षणः॥१४९॥अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रि
लोचनः॥त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षःकेवलज्ञानवीक्षणः॥१५०॥समं
तभद्रःशांतारिर्धर्माचार्योदयानिधिःसूक्ष्मदर्शीजितानंगः

कृपालुर्धर्मदेशकः॥१५१॥इतिदिग्वाससांशतं॥शुभंयुःसुख
साद्भूतःपुण्यराशिर्निरामयः धर्मपालोजगत्पालो॥धर्मसा
म्राज्यनायकः॥१५२॥इतिअसत्पंतकच्छलं॥१००८॥धाम्नांपते
तवामूनिनामान्यागमकोविदैः समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्
पूतस्मृतिर्भवेत्॥१५३॥गोचरोपिगिरामासांत्वमवाग्गोचरोम
तः स्तोतातथाप्यसंदिग्धंत्वत्तोभीष्टफलंभजेत्॥१५४॥त्वमतो
सिजगद्बंधुस्त्वमतोसिजगद्भिषक्त्वमतोसिजगद्धातात्वम
तोसिजगद्धितः॥१५५॥त्वमेकंजगतांज्योतिस्त्वंद्विरूपोपयो
गभाक् त्वंत्रिरूपैकमुक्त्यंगःस्वोत्थानंतचतुष्टयः॥१५६॥त्वं
पंचब्रह्मतत्वात्मापंचकल्याणनायकः॥षड्भेदभावतत्वज्ञस्त्वं
सप्तनयसंग्रहः॥१५७॥दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वंनवकेवललब्धिक
दशावतारनिर्धार्यो॥मांपाहिपरमेश्वर॥१५८॥युष्मन्नामाव
लीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया॥भवंतंवरिवस्यामःप्रसी
दानुगृहाणनः॥१५९॥इदंस्तोत्रमनुस्मृत्यपूतोभवति
भाक्तिकः॥यःसंपाठंपठत्येनंसस्यात्कल्याणभाजनं
१६०॥ततःसदेदंपुण्यार्थीपुमान्पठतुपुण्यधीः॥पौरुहू
तींश्रियंप्राप्तुंपरमामभिलाषुकः॥१६१॥स्तुत्वेतिम
घवादेवंचराचरजगद्गुरुं॥ततस्तीर्थविहारस्य॥व्यधात्प्रस्तावनामि
मां॥१६२॥भगवन्भव्यसस्यानांपापावग्रहशोषिणां॥धर्मामृतप्रसेके
नत्वमेवशरणंविभो॥१६३॥भव्यसार्थाधिपप्रोद्यद्दयाध्वजविरा
जित॥धर्मचक्रमिदंसज्जंत्वज्जयोद्योगसाधनं॥१६४॥निर्धूयमो
हपृतनांमुक्तिमार्गोपरोधिनीं॥तवोपदेष्टुंसन्मार्गंकालोयं
समुपस्थितः॥१६५॥इतिप्रबुद्धतत्वस्यस्वयंभर्तुर्जिगीषतः॥
पुनरुक्ततरावाचः॥प्रादुरासन्शतक्रतोः॥१६६॥तंदेवंत्रिद
शाधिपार्चितपदंघातिक्षयानंतरंप्रोक्तानंतचतुष्टयंजिन
मिमंभव्याब्जिनीनामिनं॥मानस्तंभविलोकिनानतजग
न्मान्यंत्रिलोकीपतिं॥प्राप्तानंतचतुष्टयंजिनमिमंभक्त्याप्र
बंधामहे॥१६७॥इतिश्रीजिनसेनाचार्यविरचितंजिनसहस्र नाम
नामस्तवनंसमाप्तं॥ॐह्रींश्रीअष्टोत्तरसहस्रनामधारकश्री
जिनेन्द्रायअर्घंमहार्घंनिर्वपा०

॥ ६० ॥ ॐ नमः ॥ अथ सहस्रनाम आसाधरजीकृत लिख्यते
। श्रीसारदायेनमः ॥ प्रभो भवांगभोगेषु निर्विण्णो दुःखभीरु
कः ॥ एष विज्ञापयामि त्वां शरण्यं करुणार्णवं ॥ १ ॥ सुखलालस
यामोहाद्भ्राम्यन्बहिरितस्ततः ॥ सुखैकहेतोर्नामापि तव न।
ज्ञातवान्पुरा ॥ २ ॥ अद्य मोहग्रहावेशशैथिल्यात्किंचिदुन्मुखः
अनंतगुणमाप्तेभ्यः त्वां श्रुत्वा स्तोतुमुद्यतः ॥ ३ ॥ भक्त्या प्रोत्सा
ह्यमाणोपि दूरं शक्त्या तिरस्कृतः ॥ त्वां नामाष्टसहस्रेण स्तुत्वा
त्मानं पुनाम्यहं ॥ ४ ॥ जिनसर्वज्ञयज्ञार्हत्तीर्थकृन्नाथयोगिनां
निर्वाणब्रह्मबुद्धांतकृतां चाष्टोत्तरैः शतैः ॥ ५ ॥ तद्यथा ॥ जिनो ॥
जिनेंद्रो जिनराट् जिनपृष्ठो जिनोत्तमः ॥ जिनाधिपो जिनाधी
शो जिनस्वामि जिनेश्वरः ॥ ६ ॥ जिननाथो जिनपतिर्जिनराजो जि
नाधिराट् ॥ जिनप्रभुर्जिनविभुर्जिनभर्ता जिनाधिभूः ॥ ७ ॥ जि
ननेता जिनेशानो जिनेनो जिननायकः ॥ जिनेट् जिनपरिवृढो
जिनदेवो जिनेशिता ॥ ८ ॥ जिनाधिराजो जिनपो जिनेशी जिनश
सिता ॥ जिननाथोपि जिनाधिपतिर्जिनपालकः ॥ ९ ॥ जिनचं
द्रो जिनादित्यो जिनार्को जिनकुंजरः ॥ जिनेंदुर्जिनधौरेयो
जिनधुर्यो जिनोत्तरः ॥ १० ॥ जिनवर्यो जिनवरो जिनसिंहो जि
नोद्वहः ॥ जिनर्षभो जिनवृषो जिनरत्नं जिनोरसं ॥ ११ ॥ जिनेश
विकस्य जिनग्रामणी जिनसत्तमः ॥ जिनप्रवर्हः परमजिनो जिन
पुरोगमः ॥ १२ ॥ जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो जिनमुख्यो जिनाग्रिमः ॥ श्रीजि
नश्चोत्तमजिनो जिनवृंदारकोरजेत् ॥ १४ ॥ निर्विघ्नो विरजाः शु
द्धो निस्तमस्को निरंजनः ॥ घातिकर्मांतकः कर्ममर्मावित्क
र्महानघः ॥ १५ ॥ वीतरागोक्षुद्द्वेषो निर्मोहो निर्मदोगदः ॥ वै
तृष्णो निर्ममोसंगो निर्भयो वीतविस्मयः ॥ १६ ॥ अस्वप्नो
श्रमोजन्मा निःस्वेदो निर्जरोमरः ॥ अरत्यतीतो निश्चिंतो निर्वि
षादस्त्रिषष्टिजित् ॥ १७ ॥ छ ॥ इति श्री जिनशतं ॥ १ ॥ छ ॥
सर्वज्ञः सर्ववित्सर्वदर्शी सर्वावलोकनः ॥ अनंतविक्रमो।
नंतवीर्योनंतसुखात्मकः ॥ १ ॥ अनंतसौख्यो विश्वज्ञो विश्व
दृश्वाखिलार्थदृक् ॥ न्यक्षदृग्विश्वतश्चक्षुर्विश्वचक्षुरशेष।

वित्॥२॥आनंदः परमानंदः सदानंदः सदोदयः नित्यानंदो म
हानंदः परानंदः परोदयः॥३॥ परमोजः परंतेजः परंधाम परम
हः प्रत्यग्ज्योतिः परंज्योतिः परंब्रह्म परंमहः॥४॥ प्रत्यगात्मा प्र
बुद्धात्मा महात्मात्ममहोदयः॥ परमात्मा प्रशांतात्मा परात्मात्म
निकेतनः॥५॥ परमेष्ठी महिष्ठात्मा श्रेष्ठात्मा स्वात्मनिष्ठितः॥
ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो निरूढात्मा दृढात्मदृक्॥६॥ एकविद्यो
महाविद्यो महाब्रह्मपदेश्वरः॥ पंचब्रह्ममयः सार्वः सर्वविद्येश्व
रः स्वभूः॥७॥ अनंतधीरनंतात्मानंतशक्तिरनंतदृक्॥ अनंता
नंतधीशक्तिरनंतचिदनंतमुत्॥८॥ सदाप्रकाशः सर्वार्थसा
क्षात्कारी समग्रधीः॥ कर्मसाक्षी जगच्चक्षुरलक्ष्यात्माचलस्थि
तिः॥९॥ निराबाधोऽप्रतर्क्यात्मा धर्मचक्री विदांवरः॥ भूतात्मा स
हजज्योतिर्विश्वज्योतिरतींद्रियः॥१०॥ केवली केवलालोको
लोकालोकावलोकनः॥ विविक्तः केवलोऽव्यक्तः शरण्योऽचिंत्य
वैभवः॥ विश्वभृद्विश्वरूपात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः॥ विश्व
व्यापी स्वयंज्योतिरचिंत्यात्माऽमितप्रभः॥११॥ महौदार्यो महाबो
धिर्महालाभो महोदयः॥ महोपभोगः सुगतिर्महाभोगो महा
भोगो महाबलः॥१२॥ इति श्रीसर्वज्ञशतं॥२॥ यज्ञार्हो भगवान
र्हन्महार्हो मघवार्चितः॥ भूतार्थयज्ञपुरुषो भूतार्थः क्रतुपौ
रुषः॥१॥ पूज्यो भट्टारकस्तत्रभवानत्रभवान्महान्॥ महाम
हार्हस्तत्रायुस्ततो दीर्घायुरर्घ्यवाक्॥२॥ आराध्यः परमारा
ध्यः पंचकल्याणपूजितः॥ दृग्विशुद्धिगुणोदग्रो वसुधाराचि
तास्पदः॥३॥ सुस्वप्नदर्शी दिव्यौजाः शचीसेवितमातृकः॥ स्या
द्रत्नगर्भः श्रीपूतगर्भो गर्भोत्सवोच्छ्रितः॥४॥ दिव्योपचा
रोपचितः पद्मभूर्निष्कलः स्वजः॥ सर्वीयजन्मा पुण्यांगो भा
स्वानद्भूतदैवतः॥५॥ विश्वविज्ञातसंभूतिर्विश्वदेवागमाद्भु
तः॥ शचीसृष्टप्रतिच्छंदः सहस्राक्षदृगुत्सवः॥६॥ नृत्यदैराव
तासीनः सर्वशक्रनमस्कृतः॥ हर्षाकुलामरखगश्चारणर्षि
मतोत्सवः॥७॥ व्योमविष्णुपदारक्षी स्नानपीठायिताद्रिराट्

ब्धिस्नानांबुस्नातवासवः॥८॥गंधांबुपूतत्रैलो
सूचीशुचिश्रवा॥कृतार्थितशचीहस्तः॥शक्रो
ष्टनामकः॥९॥शक्रारब्धानंदनृत्यःशचीविस्मापितांबिक
इन्द्रनृत्यंतपितृकोरैदपूर्णमनोरथः॥१०॥आज्ञार्थींद्रकृतासेवोदे
वर्षीष्टशिवोद्यमः॥दीक्षाक्षणक्षुब्धजगत्भूर्भुवःस्वःपतीडि
तः॥११॥कुबेरनिर्मितास्थानः॥श्रीयुग्योगीश्वरार्चितः॥ब्रह्म
ड्योब्रह्मविद्वेद्योयाज्योयज्ञपतिःक्रतुः॥१२॥यज्ञांगममृतंयज्ञो
हविः॥स्तुत्यःस्तुतीश्वरः॥भावोमहामहपतिर्महायज्ञोग्रया
जकः॥१३॥दयायागोजगत्पूज्यःपूजार्होजगदर्चितः॥देवाधिदेव
शक्रार्च्योदेवदेवोजगद्गुरुः॥१४॥संहूतदेवसंघार्च्योपद्म
यानोजयध्वजी॥भामंडलीचतुःषष्टिचामरोदेवदुंदुभिः॥१५॥वा
गस्पृष्टासनश्छत्रत्रयराट्पुष्पवृष्टिभाक्॥दिव्याशोकोमान
मर्दीसंगीतार्होष्टमंगलः॥१६॥इतिश्रीयज्ञार्हशतं॥३॥
तीर्थकृत्तीर्थसृट्तीर्थंकरस्तीर्थंकरःसुदृक्॥तीर्थकर्तातीर्थभर्ता
तीर्थेशस्तीर्थनायकः॥१॥धर्मतीर्थकरस्तीर्थप्रणेतातीर्थका
रकः॥तीर्थप्रवर्तकस्तीर्थसेव्यस्तीर्थितारकः॥सत्यवाक्याधि
पः॥सत्यशासनोऽप्रतिशासनः॥२॥स्याद्वादीदिव्यगीर्दिव्यध्वनि
रव्याहतार्थवाक्॥पुण्यवागर्थ्य॥वागर्धमागधीयोक्तिरिद्धवाक्
॥अनेकांतदिगेकांतध्वांतभिद्दुर्णयांतकृत्॥सार्थवाग
यत्नोक्तिःप्रतितीर्थमदघ्नवाक्॥३॥स्यात्कारध्वजवागी
हापेतवागचलौष्ठवाक्॥अपौरुषेयवाक्शास्तारुद्धवा
क्सप्तभंगिवाक्॥४॥अवर्णगीः॥सर्वभाषामयगीर्व्यक्त
वर्णगीः॥अमोघवागक्रमवागवाच्यानंतवागवागि
वाक्॥५॥अद्वैतगीःसूनृतगीःसत्यानुभयगीःसुगीः
योजनव्यापिगीःक्षीरगौरगीस्तीर्थकृत्त्वगीः॥६॥भव्यैक
श्रव्यगुःसद्गुश्चित्रगुःपरमार्थगुःप्रशांतगुः॥प्राश्निगुःश्रु
तिर्नियतकालगुः॥७॥सुश्रुतिःसुश्रुतोजप्यश्रुतिःसु
श्रुन्महाश्रुतिः॥धर्मश्रुतिःश्रुतिपतिःश्रुत्युद्धर्ताध्रुव
श्रुतिः॥८॥निर्वाणमार्गोदिग्मार्गदेशकः॥सर्वमार्गोदि

दिक्॥ सारस्वतपथस्तीर्थः परमोत्तमतीर्थकृत्॥११॥ देष्टा वागीश्व
रो धर्मशासको धर्मदेशकः॥ वागीश्वरस्त्रयीनाथस्त्रिभंगीशो
गिरांपतिः॥१२॥ सिद्धाज्ञः सिद्धवाक् सिद्धः सिद्धैकशासनः ज
गत्प्रसिद्धसिद्धांतः सिद्धमंत्रः सुसिद्धवाक्॥१३॥ शुचिश्रवा नि
रुक्तोक्तिस्तंत्रकृन्न्यायशास्त्रकृत्॥ महिष्ठवाग्महानादः क
वींद्रो दुंदुभिस्वनः॥१४॥ इति श्रीतीर्थकृच्छतं॥४॥ नाथः पतिः
परिवृढः स्वामी भर्ता विभुः प्रभुः॥ ईश्वरोधीश्वरोधीशोधीशानो
धीशितेशिता॥१॥ ईशोधिपतिरीशान इनइंद्रोधिपोधिभूः॥
महेश्वरो महेशानो महेशः परमेष्ठिता॥२॥ अधिदेवो महादे
वो देवस्त्रिभुवनेश्वरः॥ विश्वेशो विश्वभूतेशो विश्वेट् विश्वेश्व
रोधिराट्॥३॥ लोकेश्वरो लोकपतिर्लोकनाथो जगत्पतिः
त्रैलोक्यनाथो लोकेशो जगन्नाथो जगत्प्रभुः॥४॥ पिता प
रः परतरो जेता जिष्णुरनीश्वरः॥ कर्ता प्रभूष्णुर्भ्राजिष्णुः प्र
भविष्णुः स्वयंप्रभुः॥५॥ लोकजिद्विश्वजिद्विश्वविजेता वि
श्वजित्वरः॥ जगज्जेता जगज्जैत्रो जगज्जिष्णुर्जगज्जयी॥६॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता भूर्भुवःस्वरधीश्वरः॥ धर्मनायक ऋद्धी
शो भूतनाथश्च भूतभृत्॥७॥ गतिः पाता वृषो वर्यो मंत्रकृत्
शुभलक्षणः॥ लोकाध्यक्षो दुराधर्षो भव्यबंधुर्निरुत्सुकः॥८॥
धीरो जगद्धितोजय्यस्त्रिजगत्परमेश्वरः॥ विश्वाशीः सर्वलोके
शो विभवो भुवनेश्वरः॥९॥ त्रिजगद्वल्लभस्तुंगस्त्रिजगन्मंगलो
दयः॥ धर्मचक्रायुधः सद्योजातस्त्रैलोक्यमंगलं॥१०॥ वरदोऽ
प्रतिघोच्छेद्यो दृढीयानभयंकरः॥ महाभागो निरौपम्यो धर्मसा
म्राज्यनायकः॥११॥ इति श्रीनाथशतं॥५॥ योगी प्रव्यक्तनिर्वेद
ः साम्यारोहणतत्परः॥ सामायिकी सामयिको निःप्रमादोप्रतिक्र
मः॥१॥ यमः प्रधाननियमः स्वभ्यस्तपरमासनः॥ प्राणायामचण
स्सिद्धप्रत्याहारो जितेंद्रियः॥२॥ धारणाधीश्वरो धर्मध्याननिष्ठः॥
समाधिराट्॥ स्फुरत्समरसीभावः एकीकरणनायकः॥३॥
निर्ग्रंथनाथो योगींद्र ऋषिः साधुर्यतिर्मुनिः॥ महर्षिः साधुधौ
रेयो यतिनाथो मुनीश्वरः॥४॥ महामुनिर्महामौनी महाध्यानी म

हावृती॥ महाद्रमोमहाशीलोमहाशांतोमहादमः॥५॥निर्लेपो
निर्भ्रमस्वांतोधर्माध्यक्षोदयाध्वजः॥ब्रह्मयोनिः॥स्वयंबुद्धोब्रह्म
ज्ञोब्रह्मतत्त्ववित्॥पूतात्मास्नातकोदांतोभदंतोवीतमत्सरः
धर्मवृक्षायुधोक्षोभ्यःप्रपूतात्मामृतोद्भवः॥७॥मंत्रमूर्तिः॥स्वसौम्य
त्मा स्वतंत्रोब्रह्मसंभवः॥सुप्रसन्नोगुणांभोधिःपुण्यापुण्यनिरोधकः
॥सुसंवृतःसुगुप्तात्मासिद्धात्मानिरुपप्लवः॥महोदर्कोमहोपायोज
गदेकपितामहः॥८॥महाकारुणिकोगुण्योमहाक्लेशांकुशःशुचिः
अरिंजयःसदायोगःसदाभोगःसदाधृतिः॥१०॥परमौदासितानाश्व
नःसत्याशीःशांतिनायकः॥अपूर्ववैद्योयोगज्ञोधर्ममूर्तिरधर्मधृक्
॥ब्रह्मेशोमहाब्रह्मपतिःकृतकृत्यः॥कृतक्रतुः॥गुणाकरोगुणो
च्छेदीनिर्निमेषोनिराश्रयः॥११॥सूरिःसुनयतत्त्वज्ञोमहामैत्रीम
यः॥शमी॥प्रक्षीणबंधोनिर्द्वंद्वः॥परमर्षिरनंतगः॥१२॥इतिश्री
योगशतं॥ ॥निर्वाणःसागरःप्राज्ञःमहासाधुरुदाहृतः॥वि
मलाभोथसुद्धाभः॥श्रीधरोदत्तइत्यपि॥१॥अमलाभोप्युद्धरोग्नि
संयमश्चशिवस्तथा॥पुष्पांजलिःशिवगणः॥उत्साहोज्ञानसंज्ञ
कः॥२॥परमेश्वरइत्युक्तोविमलेशोयशोधरः॥कृष्णज्ञानमतिः
शुद्धमति॥श्रीभद्रशांतियुक्॥३॥वृषभस्तदजितःसंभवश्चा
भिनंदनः॥सुमतिःपद्मप्रभःप्रोक्तःसुपार्श्वकः॥४॥चंद्रप्रभः
पुष्पदंतःशीतलश्रेयसाह्वयः॥वासुपूज्यश्चविमलोनंतजिद्धर्म
इत्यपि॥५॥शांतिःकुंथुररोमल्लिःसुव्रतोनमिरप्यतः॥नेमिःपा
र्श्वोवर्द्धमानोमहावीरःसुवीरकः॥६॥सन्मतिश्चाकथिमहति
महावीरइत्यथो॥महापद्मःसुरदेवःसुप्रभश्चस्वयंप्रभः॥७॥स
र्वायुधोजयदेवोभवेदुदयदेवकः॥प्रभादेवउदंकश्चप्रश्न
कीर्तिर्जयाभिधः॥८॥पूर्णबुद्धिर्निःकषायोविज्ञेयोविमलप्रभ
वहलोनिर्मलश्चित्रगुप्तः॥समाधिगुप्तकः॥९॥स्वयंभूश्चापिकं
दर्पोजयनाथइतीरितः॥श्रीविमलोदिव्यवादोनंतवीर्योप्युदी
रितः॥१०॥पुरुदेवोथसुविधिःप्रज्ञापारमितोव्ययः॥पुराणपु
रुषोधर्मसारथिः॥शिवकीर्तनः॥११॥विश्वकर्माक्षरोछद्मा
विश्वभूर्विश्वनायकः॥दिगंबरोनिरातंकोनिरारेकोभवांतकः॥१२

इदवृतोनयतुंगोतिःकलंकोकलाधरः॥सर्वक्लेशापहोदांतःशांतश्च
कृतलक्षणः॥२५॥इतिश्रीनिर्वाणकांडं॥ः॥ब्रह्माचतुर्मुखोधाता
विधाताकमलासनः॥अब्जभूरात्मभूःस्रष्टासुरज्येष्ठःप्रजापतिः॥१॥
हिरण्यगर्भोवेदज्ञोवेदांगोवेदपारगः॥अजोमनुः॥शतानंदोहंसय
नस्त्रयीमयः॥२॥विष्णुस्त्रिविक्रमःशौरिः॥श्रीपतिःपुरुषोत्तमः॥वै
कुंठः॥पुंडरीकाक्षोहृषीकेशोहरिः॥स्वभूः॥३॥विश्वंभरोसुरध्वं
सीमधुर्वोवलिबंधनः॥अधोक्षजोमधुद्वेषीकेशवोविष्टरश्रवाः
४॥श्रीवत्सलांछनःश्रीमानच्युतोनरकांतकः॥विष्वक्सेनश्चक्रपा
णिःपद्मनाभोजनार्दनः॥५॥श्रीकंठःशंकरःशंभुःकपालीवृषके
तनः॥मृत्युंजयोविरूपाक्षोवामदेवः॥त्रिलोचनः॥६॥उमाप
तिः॥पशुपतिः॥स्मरारिस्त्रिपुरांतकः॥अर्धनारीश्वरोरुद्रो
भवोभर्गःसदाशिवः॥७॥जगत्कर्तांधकारातिरनादिनि
धनोहरः॥महासेनस्तारकजिद्गणनाथोविनायकः॥८॥वि
रोचनोविपजन्तेषादशात्माविभावसुः॥द्विजाराध्योदहनस्तु
स्त्रिभानुस्तनूनपात्॥९॥द्विजराजःसुधांशुश्चचिरौषधी
शः॥कलानिधिः॥नक्षत्रनाथः॥शुभ्रांशुः॥सोमः॥कुमुदवां
धवः॥१०॥लेखर्षभोनिलः॥पुण्यजनः॥पुण्यजनेश्वरः॥धर्म
राजोभोगिराजः॥प्रचेतास्तुमिनंदनः॥११॥सिंहकांतनयश्चा
यानंदनोहलांपतिः॥पूर्वदेवोपदेष्टाचद्विजराजसमुद्भवः॥
१२॥इतिश्रीब्रह्मकांडं॥छ॥बुद्धोदशबलःशाक्यः॥षडभिज्ञस्तथा
गतः॥समंतभद्रःसुगतः॥श्रीघनोमृतकोटिकः॥१॥सिद्धार्थोमा
रजित्शास्ताक्षणकैकसुलक्षणः॥बोधिसत्वोनिर्विकल्पदर्शनो
द्वयवाद्यपि॥२॥महाकृपालुर्नैरात्म्यवादीसंतानशासकः॥साम
न्यलक्षणचणः॥पंचस्कंधमयात्मदृक्॥३॥भूतार्थभावना॥
सिद्धश्चतुर्भूमिकशासनः॥चतुरार्यसत्यवक्तानिराश्रयचिद
न्वयः॥४॥योगोवैशेषिकस्तुल्यानानिषट्पदार्थदिक्॥नैयाय
कःषोडशार्थवादीपंचार्थवर्णकः॥५॥ज्ञानांतराध्यक्षबोधः॥
समवायवशार्थभित्॥भुक्त्येकसाध्यवर्णोतोनिचित्रेषगु
णमतः॥६॥सांख्यःसमीक्ष्यकपिलः॥पंचविंशतितत्ववित्

हि॰स्र॰नाम
१८२

मक्तामकज्ञविज्ञानाज्ञानचैतन्यनेदहक्॥७॥अस्वसंविदिता
ज्ञानःवादीसत्कार्यवादसात्॥त्रिप्रमाणोक्षप्रमाणःसादाहे
कारिकाहृदिक्॥८॥क्षेत्रज्ञआत्मापुरुषोनरोनाचेतनपुमान्।
अकर्त्तानिर्गुणोमूर्त्तोनोकासद्भोगेतोक्रियः॥९॥द्रष्टातटस्थः
कूटस्थोज्ञातानिर्बंधनोभवः॥बहिर्विकारोनिर्मोक्षः॥प्रधानंबहुधा
नकं॥१०॥प्रकृतिःख्यातिरादृष्टप्रकृतिःप्रकृतिप्रियः॥प्रधानभो
ज्योप्रकृतिर्विरम्योविकृतिःकृती॥११॥मीमांसकोस्तसर्वज्ञः॥
श्रुतिपूतःसिवोत्सवः॥परोक्षज्ञानवादीष्टपावकःसिद्धकर्मकं
॥१२॥चार्वाकोभौतिकज्ञानोभूताभिव्यक्तचेतनः॥प्रत्यक्षैकप्रमा
णोस्तपरलोकोगुरुश्रुति॥१३॥पुरंदरविद्धकर्मोविदातीसंवि
तद्वयी॥शाब्दाद्वैतीस्फोटवादीपाषंडघ्नोनयौघयुक्॥१४॥इति
श्रीबृहन्नालं॥९॥अंतकृत्पारकृत्तीरप्राप्तःपारेतमःस्थितः।त्रि
दंडीदंडितारातिर्ज्ञानकर्मसमुच्चयी॥१॥संकृतध्वनिरुच्छिन्न
योगःसुप्तात्मेवोत्तमः॥योगस्नेहापहोयोगकिट्टनिर्लेपनोद्य
त॥२॥स्थितस्थूलवपुर्योगोगीर्मनोयोगकार्श्यकः॥सूक्ष्मका
यक्रियास्थायीसूक्ष्मवाक्चित्तयोगहा॥एकदंडीचपरमहंसः
परमसंवरः॥३॥नैःकर्म्यसिद्धःपरमनिर्ज्जरःप्रज्वलत्प्रभः॥मोघ
कर्मात्रुटत्कर्मपाशःशैलेशलंकृतः॥४॥एकाकारसास्वाद
विश्वाकारसाकुलः॥अजीवन्नमृतोजागरदसुप्तः॥सुप्तलाभ
ध्वेयानयोगीचतुरशीतिलक्षगुणोगुणः॥निपीतानंतपर्यायो
विद्यासंस्कारनाशकः॥५॥वैनिर्वचनीयोणुरणीयाननणुप्रे
यः॥प्रेष्ठः॥स्थेयान्स्थिरोनिष्ठःश्रेष्ठोज्येष्ठःसुनिष्ठितः॥६॥भूता
र्थशूरोभूतार्थदूरः॥परमनिर्गुणः॥व्यवहारसुषुप्तोतिजागरू
कोतिसुस्थितः॥७॥उदितोदितमाहात्म्योनिरुपाधिरकृत्रिमः
अमेयमहिमात्यंतशुद्धः॥सिद्धस्वयंवरः॥८॥सिद्धानुजः॥सिद्धि
पुरीपांथःसिद्धिगुणातिथिः॥सिद्धिसंगोन्मुखः॥सिद्धलिंग्य
सिद्धोपगूहकः॥९॥पुष्टोष्टादशसहस्रशीलाश्वःपुण्यसंबलः॥
वृत्ताग्र्यसुगपः॥परमशुक्ललेश्योपचारतःकृतः॥१०॥द्वेपिष्टोंतद
णोसंख्यात्वलवसरस्थितिः॥तासप्रकृत्यासत्रिपोद्धाक
लिप्रणुत॥११॥अवेद्योयाजकोयज्ञोयाज्योयज्ञपरिग्रहः॥अग्निहो॥

त्रीचपरमनिस्पृहो संतनिर्द्वंद्वः ।।१४।। अग्निहोत्री ग्रामको दीक्षेदीक्षको
दीक्षितोऽक्षयः ।। अगम्योगमको रम्यो रमको ज्ञाननिर्भरः ।।१५।। इति
श्री अंतकृच्छतं ।।१०।। महायोगीश्वरो द्रव्यसिद्धो देहो पुनर्भवः ।। ज्ञानै
कचिज्जीवघनः ।। सिद्धो लोकाग्रगामुकः ।।१।। इति श्री अंत्या
ष्टकं ।।११।। इदमष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं भक्तितोर्हतां ।। योनंतानामधी
ते सो मुक्त्यंतां भुक्तिमश्नुते ।।१।। इदं लोकोत्तमं पुंसामिदं शरण
मुत्वणं इदं मंगलमग्रीयमिदं परमपावनं ।।२।। इदमेव परं तीर्थ
मिदमेवाष्टसाधनं इदमेवाखिलक्लेशसंक्लेशक्षयकारणं ।।३।। ए
तेषामेकमप्यर्हन् नाम्नामुच्चारयन्नघैः ।। मुच्यते किं पुनः सर्वा
ण्यर्थज्ञस्तु जिनायते ।।४।। इति श्री आशाधरसूरि विरचिते जि
नसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णं ।। ।।श्री।। श्री
।। अथ अकलंकाष्टक लिख्यते ।। काव्यं ।। त्रैलोक्यं सकलं त्रिका
लविषयं सालोकमालोकितं साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्र
यं सांगुलिं ।। रागद्वेषभयामयांतकजरालोलत्वलोभादयो ।। नालं य
त्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते ।।१।। दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा
तीव्रार्चिषा वह्निना ।। यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गु
हः ।। सोयं किं मम शंकरो भयतृषारोषार्तिमोहक्षयं कृत्वा यः स तु सर्व
वित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः ।।२।। यत्नाद्येन विदारितं कररुहैर्दैत्ये
वक्षस्थलं ।। सारथ्येन धनंजयस्य समरे यो मारयत्कौरवान् ।। नासौ वि
ष्णुरनेककालविषयं यद्ज्ञानमव्याहतं विश्वं व्याप्य विजृंभते स तु
महाविष्णुः विशिष्टो मम ।।३।। उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो य
दीयं पुनः ।। पात्री दंडकमंडलुप्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिं ।।
आविर्भावयितुं भवंति स कथं ब्रह्मा भवेन्मादृशां ।। क्षुत्तृष्णाश्रम
रागरोगरहितो ब्रह्मा कृतार्थोस्तु नः ।।४।। यो ज[illegible]ग्धा पिशितं
समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन् कर्ता कर्मफलं न भुंक्त इति यो व
क्ता स बुद्धः कथं ।। यज्ज्ञानं क्षणवर्तिवस्तु सकलं ज्ञातुं न शक्तं सदा
यो जानन् युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ।।५।। ईशः किं छिन्नलिं
गो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्यान्नाथः किं भैक्षचारी य
तिरिति स कथं सांगनः सात्मजश्च ।। आर्द्रजः किं त्वजन्मा सकलवि

ह॰ अकलंका: १०३

दितिकिंवेत्तिनात्मांतरायंसंद्वेपात्समग्रुक्तंपशुपतिमयस्तु:को
नधीमानुपास्ते॥६॥ भुक्त्वाचर्म्मोदनस्त्रीसुरयुवतिरमावेत्राविज्ञोतवे
नाद्यंत्नु:षट्वांगधारीगिरिपतितनयापांगलीलानुविद्ध:विष्णुश्चक्र
धिप:सन्दुहितरमगमत्गोपनाथस्यमोहादर्हन्विद्धस्तरागोजि
तसकलनय:कोयमेषामनाथ:॥७॥ एकोनृत्यतिविप्रसार्यककु
भांचक्रेसहस्रंभुजानेक:शेषभुजंगभोगशयनेव्यादायनिद्राय
ते॥ दृष्टुंचारुतिलोत्तमामुखमगादेकश्चतुर्वक्रतामेतेमुक्तिप
थंवदंतिविदुषामित्येतदत्यद्भुतं॥८॥ योविश्वंवेद्यवेद्यंजननजल
निधेर्भंगिन:पारदृश्वापूर्वापर्याविरुद्धंवचनमनुपमंनिष्कलंकंय
दीयंतंवंदेसाधुवंद्यंसकलगुणनिधिंध्वस्तदोषंद्विषंतंबुद्धंवाव
र्द्धमानंशतदलनिलयंकेशवंवाशिवंवा॥९॥ मायानास्तिजटा
कपालमुकुटंचंद्रोनमूर्द्धावलीषट्वांगंनचवासुकिर्नचधनु:शू
लंनचोग्रंमुखंकामोयस्यनकामिनीनचवृषोगीतंननृत्यंपुन:
सोस्मान्पातुनिरंजनोजिनपति:सर्वत्रसूक्ष्म:शिव:॥१०॥ नोब्रह्मां
कितभूतलंनचहरे:शंभोर्नमुद्रांकितंनोचंद्रार्ककरांकितं
सुरपतेर्वज्रांकितंनैवच।षट्वक्रांकितबोधदेवहुतभुक्यक्षो
रगैर्नांकितंनग्नंपश्यतवादिनोजगदिदंजैनेंद्रमुद्रांकितं॥११॥ मौंजीदं
डकमंडलुप्रभृतयोनोलांछनंब्रह्मणोरुद्रस्यापिजटाकपालमु
कुटंकौपीनषट्वांगना विष्णोश्चक्रगदादिशंखमतुलंबौधस्यरक्तां
बरंनग्नंपश्यतवादिनोजगदिदंजैनेंद्रमुद्रांकितं॥१२॥ नाहंकार
वशीकृतेनमनसानद्वेषिणाकेवलंनैरात्म्यंप्रतिपद्यनश्यतिजने
कारुण्यबुद्ध्यामयाराज्ञ:श्रीहिमशीतलस्यसदसिप्रायोविद
ग्धात्मनोबौद्धौघान्सकलान्विजित्यसुगत:पादेनविस्फालि
त:॥१३॥ षट्वांगंनैवहस्तेनहृदिरचितालंबितानैवमालाभस्मांगनै
वशूलंनचगिरिदुहितानैवहस्तेकपालंचंद्रार्द्धंनैवमूर्द्धिनचवृषगम
नंनैवकंठेफणींद्रा तंवंदेत्यक्तदोषंभवभयमथनंईश्वरंदेवदेवं॥१४॥
किंवादोभगवानमेयमहिमादेवोकलंक:कलौकालेयोजनतासुधर्म
निहितोदेवोकलंकोजिन:यस्यस्फारविवेकमुद्रलहरीजालेप्रमेयाकु
लानिर्मग्नातनुतेतरांभगवतीताराशिर:कंपनं॥१५॥ सातारा खलु देवताभ
गवतीमन्यापितन्यामहेषण्मासावधिजाड्यसांख्यभगवान्भट्टाकलंकप्रभो
वाक्कल्लोलपरंपराभिरमतेनूनंजनोमज्जनंव्यापारंसहतेस्मविस्मितम
ति:संताडितेतस्तत:॥१६॥ इतिअकलंकाष्टकसंपूर्णं॥

॥अथ मंगलपंचूस्रो लिष्यते॥ ॥पणविवि पंचपरमगुरुगुरु
जिनसासणो॥ सकलइसिद्धिदातारतिविघनविनासणो॥ सा
रदअरुगुरगोतमसुमतिप्रकासणो॥ मंगलकरचउसंघहपा
पपणासणो॥ पापपणासणगुणहगरुवादोषअष्टादसरहीओ
धरिध्यानकर्मविनाशिकेवलज्ञानअविचलजिनलह्यो॥ प्रभु
पंचकल्याणकविराजितसकलसुरनरध्याईये॥ त्रैलोक्यना
थसुदेवजिनवरजगतमंगलगाइये॥ १॥ जाकेगर्भकल्याणक
धनपतिआइयो॥ अवधिज्ञानपरिमाणसुइंद्रपठाइयो॥ रचि
नवबारहजोजननयरसुहावनी॥ कनकरयणमणिमंडितमं
दिरअतिवणी॥ अतिवणीपोरिपगारपरिषासुवनउपवनसो
हए॥ नरनारिसुंदरचतुरवेषसुदेषिजनमनमोहिये॥ सहांजन
कगृहछहमासप्रथमहिरतनधारावरषियो॥ पुनिरुचिकिवा
सिनिजननितिसेवाकरहिसवविधिहरषियो॥ २॥ सुरकुंजरस
मकुंजरधवलधुरंधरो॥ केसरिकेसरिसोभितनषसिषसुंदरो॥
कमलाकमलनयनदोयदामसुहावनी॥ रविससिमंडलम
धुरमीनजुगपावनी॥ पावनीकनकघटजुगमपुरनकमला
कलितसरोवरो॥ कल्लोलमालाकुलितसागरसिंहपीठमनो
हरो॥ रमणीकअमरविमानफुनिपतिभुवनभविछविछाजए
रुचिरलरासिदिपंतिदहनसुतेजपुंजविराजए॥ ३॥ एसषिसो
लहसुपनासुतीसैनही॥ देषिमायामनोहरपछिमरैनही॥ उ
ठिपरभातिपियपुछियोअवधिप्रकासियो॥ त्रिभुवनपतिसु
तहोसीयोफलतिहभासियो॥ भासियोफलतहाचितदंपति
परमआनंदितभए॥ छहमासपरिनवमासफुनिलहांरय
निदिनसुखसूंगए॥ गर्भावतारमहंतमहिमासुनतसबसु
षपावए॥ त्रैलोकनाथसुदेवजिनवरजगतमंगलगाइ
ये॥ ४॥ इतिप्रथममंगलसंपूर्ण॥ १॥ अथद्वितीयमंगलिष्यते
मतिश्रुतअवधिविराजितजिनजवजनमिया॥ तिहुंलो

नयोहोतितसुरगननरमियो॥कलपवासिघरघंटअनाहदवजि।
या॥ज्योतिकघरिहरिनादसहजगलगाजिया॥गाजियासहु।
नहिसंखनावननवनगृहसुहावनें॥मंतरनिलयपटुपट।
हवाजे॥कहतेंमहिमाकोंवनें॥कंपितसुरासनअवधिवलजे।
नजनमनिश्चैजानियो॥धनराजतवगजराजमायामईनिरमिय
आनियो॥५॥योजनलदगयंदवदनसोनिरमये॥वदनवदन।
वसुदंतदंतसरसंवणे॥सरसरसोपणवीसकमलनीछाजहीं॥
कमलिनिकमलिनिकमलपचीससविराजहीं॥राजयतिक।
कमलकमलअठोतरसो॥मनोहरदलवनें॥दलदलअपछरा।
नटहिनाटकहावभावसुहावनें॥तहांकनककिंकिणि
वरविचित्रसुअमरमंडितसोहणे॥घनघंटचमरधुजापताका।
देषित्रिभुवनमोहणे॥६॥तिहकरिहरिचढिआइयोसुरपरिवू
नारियो॥पुरहिप्रदछिणदेतहजिनजयकारियो॥गुपतजा।
यजिनजननीहसुखनिद्रारची॥मायामईशिशुराषिन्नु।
जिनआन्योशची॥आन्योशचीजिनरूपदेषतनयनतृप।
तिनहूजये॥तवपरमहरषितहृदयहरिणासहसलोचनहु।
जये॥पुनिकरिप्रणामसुप्रथमइंद्रउछंगधरिप्रभुलीनहो॥इसां
नइंद्रसुचंदछविकरिछत्रप्रभुशिरदीनहो॥७॥सनतकुमारम
हेंद्रचमरयुगढारणे॥शेषशक्रजयजीवशबदउचारणे॥उ।
छवसहितचतुरविधसुरहरषितभये॥योजनसहसनमाणे
गगनउलंघिगए॥लंघिगएसुरगिरिजहांपांडुकवनविचि
त्रविराजिए॥पांडुकशिलातहांअर्धचंदसमानमणिछवि
छाजिए॥योजनपचासविशालदुगुणीआयामवसुउंचीगं
णी॥वरअष्टमंगलकमलकलशनिसिंहपीठसुहावणी॥प
रचिमणिमंडपशोभितमध्यसिंहासणे॥थाप्योपूरवमुख
तहांप्रभुकमलासणे॥वाजहितालमृदंगवीणवीनाधुनी॥
दुंदुभिप्रमुखमधुरधुनिअवरजुवाजनी॥वाजनीवाजैसची
सवमिलिधवलमंगलगावहीं॥अतिकरहिंनृत्यसुरांगना

सबदेवकौतुकआवही।।नरिषीरसागरजलजुहाथहिहाथसुरगि
रिलावही।।सौधर्मअरुईसानइंद्रसुकलशलैप्रभुन्हावही।।ऐ
वदनउदरअवगाहकलसगतजानिये।।एकचारिवसुजोजन
मानप्रमानिये।।सहसअठोत्तरकलसप्रभूकेसिरढरै।।फुनिसिं
गारप्रमुखआचारसवैकरै।।करिप्रगटप्रभुमहिमामहोत्सव
आनिफुनिमातैंदयौ।।धनपतिहिंसेवाराषिसुरपति।।आपसुर
लोकहगयो।।जन्माभिषेकमहंतमहिमासुनतसवसुषपा।।
ईयो।।त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरजगतमंगलगाईयो।।२०।।इति।।
श्रीजन्ममंगल।।अथतपत्री।।श्रमजलरहितसरीरसदासवमलर
ह्यो।।षीरवरणवररुधिरप्रथमआकृतिसह्यो।।प्रथमसारसंह
ननस्वरूपविराजए।।सहजसुगंधसुलछनमंडितछाजए।।छा
जैअतुलबलपरमप्रियहितमधुरवचनसुहावने।।दशसहज
अतिसयसुभगमूरतिवाललीलकहावने।।आवालकालत्रै
लोकपतिमनिरुचितउचितजुनितनये।।अमरोपुनीतपुनी
तअनुपमसकलभोगविभोगये।।२१।।भवतनुभोगविरत्तक
दाचितचिंतये।।धनजोवनपियपुत्रकलित्रअनित्तये।।कोउन
सरनमरनदिनदुषचहुंगतिभरयो।।दुषसुषएकहीभुगतैजी
वविधिवसिपरयो।।परयोविधिवसिआनचेतनआनजडजुक
लेवरो।।तनअसुचिपरतैंहोइआस्रवपरपरहरेसंवरो।।निरज
रातपवलहोइसमकितविनुसदात्रिभुवनभम्यौ।।दुर्लभविव
वेकविनानकवहूंपरमधर्मविषैरम्यौ।।२२।।एप्रभुवारहपाव
नभावनभाइया।।लोकांतिकवरदेवनियोगैंआइया।।कुसुमां
जलेदेचरनकमलसिरनाइयौ।।स्वयंबुद्धप्रभुथुतिकरितिन
समुझाइयो।।समुझायप्रभुकोंगएनिजपदफुनिमहोछौहरि
कियो।।रचिरुचिरचित्रविचित्रसिविकाकरिसुनंदनवनलि
यो।।तहंपंचमुष्ठीलौंचकीनौंप्रथमसिद्धनुतिकरी।।मंडि
यमहाव्रतपंचदुर्धरसकलपरिग्रहपरिहरे।।२३।।मणिमयभा
जनकेशपरिठियसुरपती।।षीरसमुद्रजलषिपिकरिगयोअम

रावती॥तपसंजमबलप्रभुकेमनपरजैसयो॥ मोनसहिततपकर
तकालकछूतहांगयो॥गयोतहंकछूकालतपबलरिद्धिवसुबे
द्धिसिद्धिया॥जिसुधर्मध्यानवलेनषयगयससप्रकृतिप्रसिद्धि
या॥षिपिसातवैगुणजतनविनुलहां॥तीनप्रकृतिजुबुद्धवैषु
करिकरणतीनप्रथमसुकलबलतपकर्मणीप्रभुचढ्यो॥१
॥प्रकृतिछतीसनवैगुणथांनविनासिए॥दसमैसूषिमलो
नप्रकृतितिहिनासियो॥सुकलध्यानपदद्जोफुनिप्रभुपू
रियो॥बारहमैंगुणसोरहप्रकृतिजुचूरियो॥चूरियोत्रेसठिप्र
कृतिइहविधिघातियाकर्म्मतणी॥तपकियोध्यानपर्यंतबा
रहविधित्रिलोकसिरोमनी॥निःक्रमनकल्याणकसुमहि
मांसुनतसवसुषपाईये॥त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरजग
तमंगलगाइये॥२५॥इतितृतियमंगल॥३॥तेरहमैंगुणथा
नसजोगिजिनेश्वरो॥अनंतचतुष्टयमंडितभयोपरमेश्व
रो॥समोसरणतवधनपतिवहुविधिनिरमियो॥आगमज
जुगतिप्रमाणगगनतलिपरिवयो॥परिवयोचित्रविचित्रम
णिमयसभामंडपसोहए॥तहांमध्यबारहवनेकोठेवनक
सुरनरमोहए॥मुनिकलपवासिनिअर्जिकातहांजोतिसभौम
भवनतिया॥फुनिभूमगोमसुकल्पसुरनरपसुतिकोठनिबे
ठिया॥२६॥मध्यप्रदेशतीनमणिपीठतहांबनें॥गंधकुटीसिं
घासनकमलसुहावनें॥तीनछत्रसिरसोभितत्रिभुवनमो
हए॥अंतरीषकमलासनप्रभुतनसोहए॥सोहएचोसठिचम
रढुरतहांअसोकतरुतलिछाजए॥फुनिदिव्यध्वनिप्रतिश
ब्दजनतहदेवदुंदुभिवाजए॥सुरपुष्पवृष्टिसुप्रभामंडलकोटि
रविछविछाजए॥इमअष्टअनुपमप्रातिहार्यसुवरविभूति
विराजए॥२७॥जोजनसतइकमानसुभिखचहुदिसिगग
नगमनअरुप्रानीवधनहोनिसि॥निरुपसर्गनिराहा
रसदाजगदीसए॥आननचारिचहुदिससोभितदीसए॥दी
सेहअसेसविद्याषविद्याबिनवधरईश्वरपते॥ छायाबिव

वर्जितस्फटिकसमानतनउनुकोवनो॥नहिनयनपलक
पतनकदाचितकेसनखमबाजणहघातियाषयजनितअति
सयदसविचित्रविराजनि॥२८॥सकलअरथमागधियाभाषाज्ञा
नियै॥सकलजीवप्रातिमैत्रीभावविषजानियै॥सवरतिकेफल
फूलवनस्पतिमनहरै॥दर्पणसमतहअवनिपवनगतिअ
नुसरै॥अनुसरैपरमानंदसवको॥नारिनरजेसेषता॥जोज
नप्रमाणधरातिजज्जलमारजहिमारुतदेवता॥फुनिक
रहिमेघकुमारगंधोदकसुवृष्टिसुहावनी॥पदकमलत
लिसुरषिपहिंकमलसुधरनिससिसोभावनी॥२९॥अम
लगगनतलिअरुदिसितहअनुसारही॥चतुरनिकायदेव
तिसुरहिकारही॥धर्म्मचक्रचलैआगेरविजिहिंलाजही॥फु
निभृंगारप्रमुखवसुमंगलराजही॥राजहितिचौदहचारुअ
तिसयदेवरचितसुहावने॥जिनराजकेवलज्ञानमहिमा
औरकहतकहावने॥तहांइंद्रआयकियोमहोछोसभा
सोभितअतिवनी॥धर्मोपदेसकियोतहांउचलियवाजी
जिनतनी॥३०॥क्षुधातृषाअरुरागद्वेषअसुहावनें॥जन्मज
राअरुमरणत्रिदोषभयावनें॥रोगसोगभयविस्मयअरुनिद्रायनी॥
खेदस्वेदमदमोहअरतिचिंतागनी॥गनिएअठारहदोषतिनिकरि
रहितदेवनिरंजनो॥नवपरमकेवललब्धिमंडितसिवरमनि
मनरंजनो॥श्रीज्ञानकल्याणकसुमहिमासुनतसवसुषपाइये॥
त्रैलोकनाथसुदेवजिनवरजगतमंगलगाइये॥इतिचौथोमं
गलसंपूर्ण॥४॥केवलदृष्टिचराचरदेष्योजारिसो॥भव्यनि
प्रतिउपदेस्योजिनवरतारिसो॥भवभयभीतभविकजनसर
नेजुआइया॥रत्नत्रयलछननिवपंथलगाइया॥लाइयापंथे
जुभव्यफुनिप्रभुत्रितियसुकलजुपूरियो॥तजितेरहैगुनथा
नप्रभुतहप्रकृतिवहत्तरचूरियो॥फुनिचौदहैगुणप्रकृति
तेरहतुरियसुकलवलेहनी॥इमघातिवसुविधिकर्मपहुंचेस
मयमैंपंचमगती॥२१॥लोकसिषरतनुवातवलैमहिसंठियो

यो धर्मद्रव्यतिनुगम ननजिहिंआगोकियो॥मदनरहितमूखोद्यं॥
अंबरजारिसो॥किमपिहीननिजतनुतैंनयो॥अनुतारिसो तारे॥
रिजुपर्यायनिल्पअ विचल॥अर्थपर्यायषिनुषई॥नियतदृष्टि
अनंतगुणमवहारनयवसुगुणमई॥वस्तुस्वभावविभाव
विरहितसुद्धपरिणतिपरिनयो॥चिद्रूपपरमानंदमंदिरसुद्धपर
मातमनयो॥२३॥तनुपरिमाणदीपिनिपरिसवषिरिगए रहेसे
षनषकेसरूपजेपरिनये॥तवहरिप्रमुषचतुरविधिसुरगनसु
नसच्यो॥मायामईनखकेससहितजिनतनुरच्यो॥रचिअग
रचंदनप्रमुषपरिमलद्रव्य जिनजेकारियो॥पदपसितअगनि
कुमारमुकुटानलसुविधिसंस्कारियो॥निर्वाणकल्याणकसु
नहिमासुतनसवमुषपाईयो॥त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरज
गतमेंगलगाइये॥इतिश्रीपंचमंगलरूपचंदकृतसंपूर्ण॥५:॥
मैमतिहीनभगतिवसुभावनभाइया॥मंगलगीतप्रबंधसुजि
नगुनगाईया॥जोइसुसुनइवषानइसुरधरिगावइ॥मनवंछि
तफलसोनरनिश्चैपावइ॥पावइसुअष्टेसिद्धिनवनिधिमन
प्रतीतिकुमानए॥भ्रमभावछूटैसकलमनकेजिनस्वरूपसु
जानए॥फुनिहरिहिपातिकटरहिविघनसुहोयमंगलनित
नयो॥भनिरूपचंदत्रिलोकपतुजिनदेवचौसंघइजयो॥२५॥इ
तिश्रीपंचमकल्याणकमंगलसमासम्‌तस्वाध्यायसंपूर्णः॥:॥
अथविषापहारुभाषालीष्यते॥चौपई॥श्रीरिषभनाथविमल
गुणईस॥वर्द्धमानवंदौचौवीस॥गणधरगौतमसारदमायावरदीजे
सुद्धिवुद्धिसहाय॥१॥सिद्धसाधसतगुरअवधार॥करुंकवितआत
मउपगार॥विषापहारसंतवनउद्धार॥सर्वऔषधीअमृतधार॥२॥मैरे
मंत्रतुम्हारोनाम॥तुमहीगारुडगारुडसमान॥तुमसमवैद्यनकोसं
सार॥तुमसमानेतिकुलोकमझार॥३॥तुमविषहरणकरणजगसंत
नमोनमोनितदेवअनंत॥तुमगुणमहिमाअगमअपार॥सुरगुरसे
सलहैनहीपार॥४॥तुमपरमातमापरमानंद॥कलपवृक्षसवसुष
केकंद॥मुदितमेरुमहिमंडलधीर॥विद्यासागरगहरगंभीर॥५॥तुम
दधिमथनमहावलवीर॥संकटविकटभयभंजननीर॥तुमजगतार

तुमजगदीस॥ वेदउचारणविस्वावीस॥ धारतनचिंतामणितुंमगुण
रास॥ चित्रावेलिचितहरनविलास॥ उपसर्गहरणतुंमनामसतल
मं॥ मंत्रतंत्रतुमहीमनमूल॥७॥ जैसैंवजूपरवतपरिहार॥ ज्यौंतुमनं
मविषापहार॥ नागदमनितुंमनामकहाहि॥ विसहरविषमदमें
छिंनमांहि॥८॥ तुमसुमरणचितैमनमांहि॥ विषयिवतईमृतकैंज
हि॥ नांमसुधारसवरषैजहां॥ पापमलरहैनाहीतहां॥९॥ ज्यौंपार
सकोपरसैलोह॥ निजगुणतजिकंचनसमहोइ॥ स्यौंतुंमसुमरण
साधैमूंच॥ नीचजपावैपदईकंच॥१०॥ जेतुमनामंत्रमनकूलमह
मंत्रसरजीवनमूल॥ मूरिषमरमनजानैंभेव॥ करमकलंकदहनतु
मदेव॥११॥ जेतुमनामगरुडकागहैं॥ कालभुजंगमकैसैंरहै॥ तुम
धनंतरजहाजिनराय॥ मरतनपावैकोतिहिंगाय॥१२॥ तुम्हारोजस
उदयोघटजास॥ सांसोसीतनव्यापैतास॥ जीवैदादरवरषैलो
य॥ सुनिवांनीसरजीवनहोय॥१३॥ तुंमविनकौनकरैमुहिसारतु
मविनकौनउतारैपार॥ दयावंततुमदीनदयाल॥ तुमकरताहरत
करपाल॥१४॥ सरणैंआयोश्रीजिनराय॥ अवमुहिकाजसुधारो
आय॥ मैंरेयहपूंजीधनपूत॥ साहकहैरायोघरसूर॥१५॥ कहं
वीनतीवारंवार॥ तुंमविनकौंनकरैउपगार॥ तुमपैगंवरतुम
हीपीर॥ तुमविनकोकाटैपरपीर॥१६॥ विग्रहग्रहदुषविपतिवि
योग॥ पेलाघोलजलंधररोग॥ चरणकमलरजतनकौंलाय॥ उ
ष्टमाधिखुरगंधमिटाय॥१७॥ मैंअनाथतुमत्रिभुवननाथ॥ मात
पितातुमसजनसंगात॥ तुमसमदाताकौंउनदांन॥ औरकहांजा
चौजगमांन॥१८॥ प्रभुतुमपतितउधारनआहि॥ वाहगहेंकीला
जनिवाहि॥ जहांदेषौतहांतुमहीआय॥ घटघटजोतिरहीवह
राय॥१९॥ वाटघाटविषमभयजहां॥ तुमविनकोंनसहाईतहां॥
विकटविथांमंतरजलवाय॥ नांमलेतछिंनमांहिविलाय॥२०
आचारिजमांनतुगअवसांन॥ संकटतुमस्यौंनामनिधांन॥ न
कांमरतुमनक्तिसहाय॥ पणरायोद्रुगरैतिहिंगाय॥२१॥

॥वादराजनपरदेषनगायो॥ एकीभावकिये॥

संदेह॥ कुष्टगयोकंचनसमदेह॥ २३॥ कल्याणमंदिरकुमदचंदवये
राजा विक्रमविस्मैनयो सेवकजो नितुम करीसहाय॥ पार्श्वनाथप्र
गटेतिहिंगाय॥ २४॥ नसमम्माथिसुमंतनजनई॥ संन्नूस्कतिजि
नस्तुति वई॥ गई आधिविमलमतिनई॥ तहांपनिसहायतुम
हीवई॥ २५॥ नवंसदेतंश्रीपालनरेस॥ सांससंकटजलसूवेस
तहांपनितुमहीनयेसहाय॥ आनंदसौंधरिपकुंचेजाय॥ २६॥ स
नाडुसासनपकस्योचीर॥ द्रोपतिपनराप्योकरिधीर॥ सीतालं
छिमनदीनोसांच॥ रावणजीतिनलीषणराज॥ २६॥ सेवसुदर
त्राणसहायकीयो॥ सूलीसिंघासणतुमहीदीयो॥ आषाढभू
तथस्योतुंमध्यान॥ नाटिकनाचेकेवलग्यांन॥ २७॥ सिंहसपी
दिकजीवअनेक॥ तुमसुमरंताराषीटेक॥ ऐसीकेईइककजन
कीसाषि॥ साहकहैसरणागतराषि॥ २८॥ यहऔसरजीचैयोव
ल॥ मेरोसंदेहमिटैततकाल॥ वंदीछोडविडदमहाराज॥ अपनोंवि
ड दनिवाहोलाज॥ २९॥ औरआलंवनमेरैनाहि॥ मेंनिहचोक
नोमनमांहि॥ ३०॥ चरणकमलछांडौंनहीसेव॥ मेरैतौतुंमसद
गुरदेव॥ ३१॥ तुंमहीसूरिजतुंमहीचंद॥ मिथ्यामोहनिकंदन
कंद॥ धरमचक्रतुमधारनधीर॥ विसहरचक्रविदारनवीर॥ ३२॥
चोरआगनिजलभूतपिसाच॥ जलजंगलअटवीउदास॥ डरउ
ग्रामनराजावसिहोय॥ तुमप्रसादगंनैनहिकोय॥ ३३॥ दयेगयेर
यसवलसावंत॥ सिंघसाईलमहामयवंत॥ दिढवंधनविग्रह
विकराल॥ तुमसुमरनछूटैततकाल॥ ३४॥ पयपन्नगहीनकन
नाज॥ ताकोंतुम[illegible]वकसोगजराज॥ एकरथ्यापियसोफिरिराज
तुंमप्रभुवडेगरीवनवाज॥ ३५॥ पानीसोपयदा नकरोजस्याछ
रतुंमरीताकरो॥ तुमकरताहरताकरतार॥ कीरीकुंजरकरत
नवार॥ ३५॥ गुनअनंतअलपमोहिग्यान॥ कहांलगप्रभुके
करूंवषांनि॥ आगमपंथसकैनहीमोहि॥ तुम्हारोचरीत्रवनि
आवैतोहि॥ ३८॥ नयोसपरससाहंसकीयो॥ दयावंतआयदर
साणदीयो॥ साहपूतसचेतंननयो॥ हस्तहस्तसोघरकुंगयो॥ ३९
धनिदरसणदेष्योभगवंत॥ आजिधनिसुषनैनंपवित्रप्रभुके

केचरणकमलहूनयो॥ जनमसुकारथमेरोभयो॥ नृप कर पंकज
करनाऊंसीस॥ मुझिअपराधछमौजगदीस॥ संवतसतरासैंसुन
थान॥ नारनौलतिथिचौदसिजांन॥ ३९॥ पढैसुणैंतहांपरमानंद
कल्पवृक्षसमसुषकेकंद॥ अष्टसिद्धिनवनिधितिलहै॥ अचल
कीर्तिआचारजकहै॥ ४०॥ दोहा॥ नयनजंननरंजिनजगतविष
पहारगनाम॥ सांसोतजिसुमरोसदा॥ सतिसाहिबकानाम॥ ४१॥
इतिश्रीविषापहारभाषासंपूर्ण॥ श्री॥ अथपरमजोतिलि
ष्यते॥ दोहा॥ परमजोतिपरमातमा॥ परमज्ञांनपरवी
न॥ वंदौपरमांनंदमय॥ घटघटअंतरलीन॥ १॥ चौपई॥ निरभैक
रणपरमपरधांन॥ भवसमुद्रजलतारणजांन॥ शिवमंदिरअ
घहरणअनंद॥ वंदौपासचरणअरिविंद॥ २॥ कमठमांनभंज
नवरवीर॥ गरमासागरगुणगंभीर॥ सुरगुरपारलहैनजि
समैंअजांनजपूंजसतास॥ ३॥ तुमसरूपअतिअगमअपा
र॥ क्यौंहमसैंपैहोयनिवाह॥ ज्यौंदिनअंधउलूकौपूत॥ क
हनसकैरविकिरणउद्योत॥ ४॥ मोहहीनजांणैमनमाहिं॥ त
ऊनतुमगुणवरणेजांहि॥ प्रलयपयोधकरैजलवौन॥ प्रगटै
रतनगिनैतिहिकौन॥ ५॥ तुमअसंखनिरमलगुणषांनि॥ मैंम
तिहीनकहूनिजवांनि॥ ज्यौंबालकनिजवांहपसारि॥ सागरप
रमितकहैविचारि॥ ६॥ जेजोगीइंद्रकरैतपषेद॥ तेऊनजांणै
तुमगुणभेद॥ भगतिभावमुझिमनअभिलाष॥ ज्यौंपंषीबोलै
निजभाष॥ ७॥ तुमजसमहिमाअगमअपार॥ नामएकत्रि
भुवनआधार॥ आवैपवनपदमसरहोय॥ ग्रीषमतपतनि
वारैसोय॥ ८॥ तुमआवतभविजनघटमांहि॥ करमनिबं
धसिथलहैजांहि॥ ज्यौंचंदनतरुबोलैमोर॥ डरैभुयंगलगैंच
हुंवोर॥ ९॥ तुमनिरषतजिनदीनदयालसंकटतेंछु
काल॥ ज्यौंपसुघेरलीएनिसिचोर॥ तेतजिभागैंदे
र॥ १०॥ तुमभविजनतारककिमहोय॥ तेचितधारितिरै
तोहि॥ यहऐसोकरिजांणिसुभाव॥ तिरैमसकज्यौंगरभित

वाव॥११॥जिनसवदेवकियेवसिचांमतेछिनमेजीतेसकुका
मज्योजलकरैआगनिकलहानवडवानलपीवैसोपांन॥१२॥
तुमअनंतगरवागुणलिये॥क्यौंकरिभक्तिधरौंनिजहिये॥कै
लघुरूपतिरेसंसार॥यहअनुमहिमांअगमअपार॥१३॥क्रोधवै
रीकियोमनसांति॥करमसुभटजीतेकहिभांति॥यहपटंतर
देष्योसंसार॥नीलवृक्षज्यौंदहैतुषार॥१४॥मुनिजनहिये
कमलनिजटोय॥सिद्धरूपसमध्यावैतोय॥कमलकरणिका
वनंनहैंऔरकमलवीजउपजनकीठौर॥१५॥जवतुमध्यां
नधरैमुनिकोय॥तवविदेहपरमातमहोय॥जैसेंधातुसिल
तनुत्याग॥कनकसरूपधवैजवआग॥१६॥जाकेमनतुंम
करोनिवासविनसिजायसवविग्रहतास॥१७॥करैविवुधजेआ
तमध्यांन॥तुमप्रभावतेंहोयनिदांन॥जैसेंनीरसुधाअनुमां
न॥पीवतविषयविकारकीहांन॥१८॥तुंमभगवंतविमलगु
णलीन॥समलरूपमानेंमतिहीन॥ज्यौंनीलियारोगदृगगा
है॥वर्णविवर्णसंषसोंकहे॥१९॥दोहा॥निकटरहितउपदे
शसुनि॥तरवरभयेअसोक॥ज्योंरविऊगतजीवसवप्रग
टहोतभवलोक॥२०॥सुमनवृष्टिजोसुरकरैहेटवीटमुषसे
य॥सोतुमसेवतसुमनजन॥वंधअधोमुषहोय॥२१॥उपजीतु
मह्रिदयउदधितैं॥वांणीसुधासमांन॥जहांपीवतभविजनलहैं
अजरअमरपदथांन॥२२॥करैदुसारतिलोककोसुरचांम
ढोयभावसहितजोजननमैंतसुगतिउरधजहोय॥२३॥सिंघा
सनगिरमेरूसमप्रभुधनगरजितघोर॥स्यामसुतनयनरूपल
षि॥नाचतभविजनमोर॥२४॥छविहितहोयअसोकदल॥
तुमभामंडलदेषि॥वीतरागकेनिकटतेंरहतनरागविशे
ष॥२५॥सीषकहैतिहुंलोककूं॥एसुरदुंदभिनाद॥सिवप
सारथवाहजिन॥भजोतजोपरमाद॥२६॥तीनछत्रत्रिभुव
नउदितमुक्तागनछविदेत॥त्रिविधिरूपधरिमनहुंशशि
सेवततनषतसमेत॥२७॥पधडीछंदः॥प्रभुतुमशरीरतिर

रत्नजेम। परताप पुंज जे सुद्ध हेम॥ अतिधवल सुजस रूपा समान।
तिनके गढ तीन विराजमान॥२०॥ सेवैं सुरिंद करि नमत भाल। ति
न सीस मुकट तजि देवमाल॥ तुम चरण लागत लहलहै प्रीति। न
ही रमैं और वर जिन सुमन रीति॥२१॥ प्रभु भोग विमुष तन कर्म दाह।
जिन पार करत भवजल निवाह॥ ज्यों माटी कलस सुपक्क होय।
ले भार अधोमुख तिरहि सोय॥ तुम महाराज निरधन निरास।
तजि विभौ विभौ सब जग विकास॥ अक्षर सुभाव सौं लिषन को
य। महिमा अनंत भगवंत सोय॥२२॥ कोपियो कमठ निज वैर दे
र देषि। तिन करी धूलि वरषा विशेष॥ प्रभु तुम छाया नयो हीन से
न यो पापलंपट मलीन॥२३॥ गरजंत घोर घन अंधकार। चमकं
त वीज्जु जल मुशलधार॥ वरषंत कमठ धर ध्यान रूप। दुस्तर करं
त निज भवकूप॥२४॥ वस्तु छंद॥ मेघमाली मेघमाली आप व
ल फेरि भेजे तुरत पिसाच॥ गणनाथ पास उपसर्ग कारण॥ आ
गि ज्वाल भभूकंत मुष धुनि करत जिमि मत्त वारण॥ काल रूप वि
कराल तन रुंडमाल तिन कंठ॥ वहे निसंक वाहरंक निज करे
करम दिढ गांठि॥२५॥ चौपई॥ जे तुम चरण कमल तिहुं काल।
सेवैं तजि माया जंजाल॥ भाव भगति मन हरषि अपार॥ धन्य धन्य
जग तिन अवतार॥२६॥ भवसागर मैं फिरत अजान। मैं तुम सुजस
सुन्यो नहिं कान॥ जे प्रभु नाम मंत्र मन धरै। ता सौं विपति
भुजंगम डरै॥२७॥ मनवांछित फल जिनपद माहिं। मैं पूरव भव पू
जे नांहि॥ माया मगन फिरयो अग्यान। करैं रंक जन मुझ अपमा
न॥२८॥ मोह तिमर छायो दिग मोहि। जन्मांतर देष्यो नहिं तोहि।
ज्यो दुरजन मुझ संगति गहैं। मरम छेदके कुवचन कहैं॥२९॥
सुन्यो कान जस पूजे पाय। नैनन देष्यो रूप अघाय॥ भक्ति हे
त न यो चितचाव। दुषदायक किरिया विन भाव॥३०॥ महारा
ज सरणागतिपाल। पतितउधारण दीनदयाल॥ सुमरण क
रूं नवाय निज सीस। मुझ दुष दूरि करो जगदीस॥३१॥ करम
निकंदन महिमा सार। असरण सरण सुजस विसतार। नहिं

सेयेप्रभु तुम सेयाय॥ तो मुक्ष नम अकार यज्ञाय॥४१॥ सुरगण
वंदित दयानिधान॥ जगतारण जगपति जगजानि॥ दुखसागर
तें मोहि निकासि॥ निरभै थान देहु सुखरासि॥४२॥ मैं तुम चरण
कमल गुणगाय॥ बहुविधि भगति करी मन लाय॥ जनम जनम
प्रभु पाऊं तोहि॥ एह सेवा फल दीजे मोहि॥४३॥ छप्पय छंद॥ इ
ह विधि श्री भगवंत सुजस ये जे विजन भाषहि॥ ते निजपुन्य भं
डार संचि चिर पाप प्रणासहि॥ रोमराय हुलसंत अंग अंग प्रभु
के गुन मन हि॥ सुर्ग संपदा भुंजि वेगि पंचम गति पावहि॥ इह कल्या
ण मंदिर कियो॥ कुमुदचंद की बुधि॥ भाषा कहत बणारसी॥ कार
ण समकित सुध॥४४॥ इति श्री कल्याण मंदिर की भाषा सं
पूर्णं॥१॥ अथ कल्याण मंदिर संस्कृत लिख्यते॥ श्री॥ श्री॥ :॥
॥ अथ निर्वाणकांड गाथा लिख्यते॥ अठावय म्मि उसहो॥ चंपाए वास
पुज जिणणाहो॥ उज्जंते णेमिजिणो॥ पावाए णिव्वुदो महावीरो॥१॥ वीसं
तु जिणवरिंदा॥ अमरासुर वंदिदा धुदकिलेसा॥ सम्मेदे गिरसिहरे णि
व्वाणगया णमो तेसिं॥२॥ वरदत्तो य वरंगो॥ सायरदत्तो य तावरणयरे॥
आहुट्ठ कोडि सहिया॥ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥३॥ णेमिसामि पज्जु
ण्णो॥ संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो॥ वाहत्तरि कोडीओ॥ उज्जंते सत्तसया
सिद्धा॥४॥ रामसुया वि णि जणा॥ लाडणरिंदाण पंच कोडीओ॥ पावा
एगिरिसिहरे॥ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥५॥ पंडुसया तिण्णि जणा॥ दविडण
रिंदाण अट्ठकोडीओ॥ सेत्तुंजय गिरिसिहरे॥ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥६॥
संते जे बलभद्दा॥ जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ॥ गजपंथे गिरिसिहरे णि
व्वाणगया णमो तेसिं॥७॥ रामहणू सुग्गीओ॥ गवयगवाक्खे य णील महाणी
लो॥ णवणवदी कोडीओ॥ तुंगीय गिरि णिव्वुदे वंदे॥८॥ णंगाणंगकु
मारा॥ कोडी पंचद्ध मुणिवरे सहिया॥ सवण गिरिवरसिहरे॥ णिव्वा
णगया णमो तेसिं॥९॥ दहमुह रायस्स सुआ॥ कोडी पंचद्ध मुणिव
र सहिया॥ रेवाणइतडग्गे॥ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥१०॥ रेवाणइत
रे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे॥ दो चक्की दह कप्पे॥ आहुट्ठय कोडि
णिव्वुदे वंदे॥११॥ बडवाणी वरणयरे॥ दक्खिणभायम्मि चूलगिरि

लपूरः कृत्स्नंजगत्त्रयमिदंप्रकटीकरोषि॥गम्योनजातुमरुतांच
लिताचलानांदीपोपरस्त्वमसिनाथजगत्प्रकाशः॥१६॥ना
स्तंकदाचिदुपयासिनराहुगम्यः स्पष्टीकरोषिसहसायुग
पज्जगंति॥नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशायि
महिमासिमुनींद्रलोके॥१७॥नित्योदयंदलितमोहमहांध
कारं॥गम्यंनराहुवदनस्यनवारिदानां॥विभ्राजतेतवमुखा
ब्जमनल्पकांतिविद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं॥१८॥किंश
र्वरीषुशशिनाह्निविवस्वतावायुष्मन्मुखेंदुदलितेषुतम
स्सुनाथ॥निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके कार्यंकि
यज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥१९॥ज्ञानंयथात्वयिविभातिकृ
तावकाशंनैवंतथाहरिहरादिषुनायकेषु॥तेजोमहामणि
षुयातियथामहत्वंनैवंतुकाचशकलेकिरणाकुलेपि॥२०॥
मन्येवरंहरिहरादयएवदृष्टा॥दृष्टेषुयेषुहृदयंत्वयितोषमे
ति॥किंवीक्षितेनभवताभुवियेननान्यः॥कश्चिन्मनोहरति
नाथभवांतरेपि॥२१॥स्त्रीणांशतानिशतशोजनयंतिपुत्रा
न्नान्यासुतंत्वदुपमंजननीप्रसूता॥सर्वादिशोदधतिभानि
सहस्ररश्मिंप्राच्येवदिग्जनयतिस्फुरदंशुजालं॥२२॥त्वामा
मनंतिमुनयःपरमंप[illegible]मादित्यवर्णममलंतमसःपुरस्ता
त्॥त्वामेवसम्यगुपलभ्यजयंतिमृत्युंनान्यःशिवःशिवपदस्य
मुनींद्रपंथाः॥२३॥त्वामव्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यंब्रह्मा
णमीश्वरमनंतमनंगकेतुं॥योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलंप्रवदंतिसंतः॥२४॥बुद्धस्त्वमेवविबुधार्चि
तबुद्धिबोधा॥त्वंशंकरोसिभुवनत्रयशंकरत्वात्॥धातासि
धीरशिवमार्गविधेर्विधानात्॥व्यक्तंत्वमेवभगवन्पुरुषो
त्तमोसि॥२५॥तुभ्यंनमस्त्रिभुवनार्तिहरायनाथ॥तुभ्यंनमः
क्षितितलामलभूषणाय॥तुभ्यंनमस्त्रिजगतःपरमेश्वराय
तुभ्यंनमोजिनभवोदधिशोषणाय॥२६॥कोविस्मयोत्रयदि
नामगुणैरशेषैस्त्वंसंश्रितोनिरवकाशतयामुनीश॥दोषै
रुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैःस्वप्नांतरेपिनकदाचिदपीक्षितोसि॥२७

स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥३॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधा
र्चितपादपीठ स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोहं ॥ बालं विहाय जल
संस्थितमिंदुबिंबं मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥४॥ वक्तुं गुणा
न्गुणसमुद्र शशांककांतान् ॥ कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं ॥ को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजा
भ्यां ॥५॥ सोहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश ॥ कर्तुं स्तवं विगतशक्ति
रपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं ॥ नाभ्येति किं निज
शिशोः परिपालनार्थं ॥६॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम त्व
द्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं
विरौति ॥ तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतु ॥७॥ त्वत्संस्तवेन भवसं
ततिसंनिबद्धं ॥ पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां ॥ आक्रांतलो
कमलिनीलमशेषमाशु ॥ सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥८॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद ॥ मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावा
त् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु ॥ मुक्ताफलद्युतिमुपैति नन्
दबिंदुः ॥९॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं ॥ त्वत्संकथापि जग
तां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव ॥ पद्माकरेषु ज
लजानि विकाशभांजि ॥१०॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ भूतै
र्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा भूत्या
श्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥११॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनी
यं नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदु
ग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ॥१२॥ यैः शांतरागरुचि
भिः परमाणुभिस्त्वं ॥ निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव
खलु तेप्यणवः पृथिव्यां यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१३॥ वक्त्रं
क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं ॥ बिं
बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य यद्वासरे भवति पांडुपलाशक
ल्पं ॥१४॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलापशुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं
तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवा
रयति संचरतो यथेष्टं ॥१५॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि र्नी
तं मनागपि मनो न विकारमार्गं ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचले
न ॥ किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१६॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततै

लपूरःकृत्स्नंजगत्त्रयमिदंप्रकटीकरोषि॥गम्योनजातुमरुतांच
लिताचलानांदीपोपरस्त्वमसिनाथजगत्प्रकाशः॥१६॥ना
स्तंकदाचिदुपयासिनराहुगम्यःस्पष्टीकरोषिसहसायुग
पज्जगंति॥नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावःसूर्यातिशायि
महिमासिमुनींद्रलोके॥१७॥नित्योदयंदलितमोहमहांध
कारं॥गम्यंनराहुवदनस्यनवारिदानां॥विभ्राजतेतवमुखा
ब्जमनल्पकांतिविद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं॥१८॥किंश
र्वरीषुशशिनान्हिविवस्वतावायुष्मन्मुखेंदुदलितेषुतम
स्सुनाथ॥निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके कार्यंकि
यज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥१९॥ज्ञानंयथात्वयिविभातिकृ
तावकाशंनैवंतथाहरिहरादिषुनायकेषु॥तेजोमहामणि
षुयातियथामहत्वंनैवंतुकाचशकलेकिरणाकुलेपि॥२०॥
मन्येवरंहरिहरादयएवदृष्टा॥दृष्टेषुयेषुहृदयंत्वयितोषमे
ति॥किंवीक्षितेनभवताभुवियेननान्यः॥कश्चिन्मनोहरति
नाथभवांतरेपि॥२१॥स्त्रीणांशतानिशतशोजनयंतिपुत्रा
न्नान्यासुतंत्वदुपमंजननीप्रसूता॥सर्वादिशोदधतिभानि
सहस्ररश्मिंप्राच्येवदिग्जनयतिस्फुरदंशुजालं॥२२॥त्वामा
मनंतिमुनयःपरमंपु[illegible]॥मादित्यवर्णममलंतमसःपुरस्ता
त्॥त्वामेवसम्यगुपलभ्यजयंतिमृत्युंनान्यःशिवःशिवपदस्य
मुनींद्रपंथाः॥२३॥त्वामव्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं॥ब्रह्मा
णमीश्वरमनंतमनंगकेतुं॥योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलंप्रवदंतिसं त॥२४॥बुद्धस्त्वमेवविबुधार्चि
तबुद्धिबोधा॥त्वंशंकरोसिभुवनत्रयशंकरत्वात्॥धातासि
धीरशिवमार्गविधेर्विधाना ॥व्यक्तंत्वमेवभगवन्पुरुषो
त्तमोसि॥२५॥तुभ्यंनमस्त्रिभुवनार्तिहरायनाथ॥तुभ्यंनमः
क्षितितलामलभूषणाय॥तुभ्यंनमस्त्रिजगतःपरमेश्वराय
तुभ्यंनमोजिनभवोदधिशोषणाय॥२६॥कोविस्मयोत्रयदि
नामगुणैरशेषैस्त्वंसंश्रितोनिरवकाशतयामुनीशदोषै
रुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैःस्वप्नांतरेपिनकदाचिदपीक्षितोसि॥२७॥

८

बीत्र

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखमाभातिरूपममलंभवतोनितांतं
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं॥ बिंबंरवेरिवपयोधरपार्श्वव
र्ति॥२८॥ सिंहासनेमणिमयूखशिखाविचित्रे विभ्राजतेतववपुःक
नकावदातं॥ बिंबंवियद्विलसदंशुलतावितानं तुंगोदयाद्रिशिर
सीवसहस्ररश्मे॥२९॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभंविभ्राजते
तववपुःकलधौतकांतं॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चै
स्तटंसुरगिरेरिवशातकौंभं॥३०॥ छत्रत्रयंतवविभातिशशांककां
तमुच्चैःस्थितंस्थगितभानुकरप्रतापं॥ मुक्ताफलप्रकरजालवि
वृद्धशोभं॥ प्रख्यापयत्त्रिजगतःपरमेश्वरत्वं॥३१॥ गंभीरताररवपू
रितदिग्विभागस्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः॥ सद्धर्म
राजजयघोषणघोषकःसन् खेदुंदुभिर्ध्वनतितेयशसःप्रवादी
॥३२॥ मंदारसुंदरनमेरुसुपारिजातसंतानकादिकुसुमोत्करवृष्टि
रुद्धा॥ गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रपाता दिव्यादिवःपततितेव
चसांततिर्वा॥३३॥ शुंभत्प्रभावलयभूरिविभाविभोस्ते॥ लोक
त्रयेद्युतिमतांद्युतिमाक्षिपंती॥ प्रोद्यद्दिवाकरनिरंतरभूरिसंख्या
दीप्त्याजयत्यपिनिशामपिसोमसौम्या॥३४॥ स्वर्गापवर्गगमम
र्गविमार्गणेष्टःसद्धर्मतत्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः॥ दिव्यध्वनि
र्भवतितेविशदार्थसर्वभाषास्वभावपरिणामगुणप्रयोज्यः॥३५॥
उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांतीपर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभि
रामौ॥ पादौपदानितवयत्रजिनेंद्रधत्तःपद्मानितत्रविबुधाः
परिकल्पयंति॥३६॥ इत्थंयथातवविभूतिरभूज्जिनेंद्रः॥ धर्मो
पदेशनविधौनतथापरस्य॥ ॥ यादृक्प्रभादिनकृतःप्रहतांध
कारा॥ तादृक्कुतोग्रहगणस्यविकाशिनोपि॥३७॥ श्च्योतन्मदावि
लविलोलकपोलमूल॥ मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं ऐरावताभ
मिभमुद्धतमापतंतंदृष्ट्वाभयंभवतिनोभवदाश्रितानां॥३८॥ भि
न्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्तमुक्ताफलप्रकरभूषितभूमि
भागः॥ बद्धक्रमःक्रमगतंहरिणाधिपोपि॥ नाक्रामतिक्रमयुगा
चलसंश्रितंते॥३९॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं दाव
नलंज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगं॥ विश्वंजिघत्सुमिवसंमुखमापतंतं
त्वन्नामकीर्तनजलंशमयत्यशेषं॥४०॥ रक्तेक्षणंसमदकोकिलकं
ठनीलं क्रोधोद्धतंफणिनमुत्फणमापतंतं॥ आक्रामतिक्रमयुगे
ननिरस्तशंकस्त्वन्नामनागदमनीहृदियस्यपुंसः॥४१॥ वल्गत्तुरं
गगजगर्जितभीमनादमाजौबलंबलवतामपिभूपतीनां॥ उद्यद्दि

वाकरमयूषशिखापविद्धं। त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति॥४२॥
कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह। वेगावतारतरणातुरयोध-
भीमे॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा। स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
लभंते॥४३॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्रे। पाठीनपीठ
भयदोल्वणवाडवाग्नौ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा। स्त्रा
सं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति॥४४॥ उद्भूतभीषणजलोदरभा
रभुग्नाः। शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः। त्वत्पादपंक
जरजोमृतदिग्धदेहा। मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः॥४५॥ आ
पादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा। गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्ट
जंघा॥ त्वं नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः। सद्यः स्वयं विगत
बंधभया भवंति॥४६॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि। संग्रामवारि
धिमहोदरबंधनोत्थं॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव। यस्तावकं
स्तवमिमं मतिमानधीते॥४७॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामज
स्रं। तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः॥४८॥ इति श्रीमानतुंग
आचार्यविरचितं श्रीभक्तामरस्तोत्रं संपूर्णं॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
॥६०॥ श्रीसरस्वत्यै नमः॥ अथ दशसूत्र लिख्यते॥ अथ स्वाध्याय॥
त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः। पंचान्ये चास्ति
काया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः॥ इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभु
वनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः। प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमा
न् यः स वै शुद्धदृष्टिः॥१॥ सिद्धे जयप्पसिद्धे चउव्विहाराहणाफलं
पत्ते। वंदित्ता अरहंते वोच्छं आराहणा कमसो॥२॥ उज्जोवणमु
ज्जवणं णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं। दंसणणाणचरित्तं तवाणमारा
हणा भणिया॥३॥ इति स्वाध्याय॥ मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं
कर्मभूभृतां। ज्ञातारं विश्वतत्वानां॥ वंदे तद्गुणलब्धये॥१॥ सम्य
ग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः॥२॥ तत्वार्थश्रद्धानं स
म्यग्दर्शनं॥३॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा॥४॥ जीवाजीवास्रवबं
धसंवरनिर्ज्जरामोक्षास्तत्वं॥५॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्त

न्याः॥६॥प्रमाणनयैरधिगमः॥७॥निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरण
स्थितिविधानतः॥८॥सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्पब
हुत्वैश्च॥९॥मतिश्रुतावधिमनःपर्य्ययकेवलानि ज्ञानं॥१०॥त
त्प्रमाणे॥११॥आद्ये परोक्षं॥१२॥प्रत्यक्षमन्यत्॥१३॥मतिस्मृतिसं
ज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरं॥१४॥तदिंद्रियानिंद्रियनिमि
त्तं॥१५॥अवग्रहेहावायधारणाः॥१६॥बहुबहुविधक्षिप्रा
निःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां॥१७॥अर्थस्य॥१८॥व्यंजनस्यावग्रहः
॥१९॥न चक्षुरनिंद्रियाभ्यां॥२०॥श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदं
॥२१॥भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणां॥२२॥क्षयोपशमनिमित्तः ष
ड्विकल्पः शेषाणां॥२३॥ऋजुविपुलमती मनःपर्य्ययः॥२४॥विशुद्ध्यप्र
तिपाताभ्यां तद्विशेषः॥२५॥विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योवधिमनः
पर्य्यययोः॥२६॥मतिश्रुतयोर्निबंधो द्रव्येष्वसर्वपर्य्यायेषु॥२७
रूपिष्ववधेः॥२८॥तदनंतभागे मनःपर्य्ययस्य॥२९॥सर्वद्रव्य
पर्य्यायेषु केवलस्य॥३०॥एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाच
तुर्भ्यः॥३१॥मतिश्रुतावधयो विपर्य्ययश्च॥३२॥सदसतोरविशेषा
द्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्॥३३॥नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसू
त्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः॥३४॥ज्ञानदर्शनयोस्तत्त्वं नया
नां चैव लक्षणं।ज्ञानस्य च प्रमाणत्वमध्यायेस्मिन्निरूपितं॥१॥
॥इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोध्यायः॥१॥औपशमि
कक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ
च॥१॥द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमं॥२॥सम्यक्त्वचा
रित्रे॥३॥ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च॥४॥ज्ञा
नाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसं
यमासंयमाश्च॥५॥गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयत
सिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः॥६॥जीवभव्याभ
व्यत्वानि च॥७॥उपयोगो लक्षणं॥८॥स द्विविधोष्टचतुर्भेदः॥९॥
संसारिणो मुक्ताश्च॥१०॥समनस्कामनस्काः॥११॥संसारिणस्त्रस
स्थावराः॥१२॥पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः॥१३॥
द्वींद्रियादयस्त्रसाः॥१४॥पंचेंद्रियाणि॥१५॥द्विविधानि॥१६॥निर्वृत्त्यु

पकरणेद्रव्येंद्रियं॥१७॥लब्ध्युपयोगोभावेंद्रियं॥१८॥स्पर्शनरसनघ्राण
चक्षुःश्रोत्राणि॥१९॥स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः॥२०॥श्रुतमनि
द्रियस्य॥२१॥वनस्पत्यंतानामेकं॥२२॥कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्या
दीनामेकैकवृद्धानि॥२३॥संज्ञिनःसमनस्काः॥२४॥विग्रहगतौ
कर्मयोगः॥२५॥अनुश्रेणिगतिः॥२६॥अविग्रहाजीवस्य॥२७॥
विग्रहवतीचसंसारिणःप्राक्चतुर्भ्यः॥२८॥एकसमयाविग्रहा॥२९॥
एकंद्वौत्रीन्वानाहारकः॥३०॥सम्मूर्छनगर्भोपपादाजन्म॥३१॥
सचित्तशीतसंवृताःसेतरामिश्राश्चैकशस्तद्योनयः॥३२॥जरायु
जांडजपोतानांगर्भः॥३३॥देवनारकाणामुपपादः॥३४॥शेषा
णांसम्मूर्छनं॥३५॥औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्म्मणा
निशरीराणि॥३६॥परंपरंसूक्ष्मं॥३७॥प्रदेशतोसंख्येयगुणंप्राक्तै
जसात्॥३८॥अनंतगुणेपरे॥३९॥अप्रतीघाते॥४०॥अनादि
संबंधेच॥४१॥सर्वस्य॥४२॥तदादीनिभाज्यानियुगपदेक (भिन्ना) चतु
र्भ्यः॥४३॥निरुपभोगमंत्यं॥४४॥गर्भसम्मूर्छनजमाद्यं॥४५॥उप
पादिकंवैक्रियिकं॥४६॥लब्धिप्रत्ययंच॥४७॥तैजसमपि॥४८॥शु
भंविशुद्धमव्याघातिचाहारकंप्रमत्तसंयतस्यैव॥४९॥नारक
सम्मूर्छिनोनपुंसकानि॥५०॥नदेवाः॥५१॥शेषास्त्रिवेदाः॥५२॥औ
पपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोनपवर्त्यायुषः॥५
३॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेद्वितीयोध्यायः॥२॥रत्नश
र्करावालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयोघनांबुवाताकाशप्र
तिष्ठाःसप्ताधोधः॥१॥तासुत्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रि
पंचोनैकनरकशतसहस्राणिपंचचैवयथाक्रमं॥२॥नारकानि
त्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः॥३॥परस्परोदीरित
दुःखाः॥४॥संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्चप्राक्चतुर्थ्याः॥५॥तेष्वे
कत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमासत्वा
नांपरास्थितिः॥६॥जंबूद्वीपलवणोदादयःशुभनामानोद्वीपस
मुद्राः॥७॥द्विर्द्विर्विष्कंभाःपूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवलयाकृतयः॥८॥
तन्मध्येमेरुनाभिर्वृत्तोयोजनशतसहस्रविष्कंभोजंबूद्वीपः॥९॥
भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाःक्षेत्राणि ॥१०

१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मि
शिखरिणो वर्षधरपर्वताः॥११॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरज
तहेममयाः॥१२॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ता
राः॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीका ह्र
दास्तेषामुपरि॥१४॥ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कं
भो ह्रदः॥१५॥ दशयोजनावगाहः॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करं॥१७
तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च॥१८॥ तन्निवासिन्यो दे
व्यः श्रीह्रीधृतिकीर्त्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससाम
निकपरिषत्काः॥१९॥ गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरि
कांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तो
दाः सरितस्तन्मध्यगाः॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः॥२१॥ शे
षास्त्वपरगाः॥२२॥ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिंध्वाद
यो नद्यः॥२३॥ भरतः षड्विंशतिपंचयोजनशतविस्तारः षट्चैको
नविंशतिभागा योजनस्य॥२४॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षध
रवर्षा विदेहांताः॥२५॥ उत्तरा दक्षिणतुल्याः॥२६॥ भरतैरावत
योर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्यां॥२७
ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः॥२८॥ एकद्वित्रिपल्योपमस्थित
यो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः॥२९॥ तथोत्तराः॥३०॥
विदेहेषु संख्येयकालाः॥३१॥ भरतस्य विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवति
शतभागः॥३२॥ द्विर्धातकीखंडे॥३३॥ पुष्करार्द्धे च॥३४॥ प्राङ्मा
नुषोत्तरान्मनुष्याः॥३५॥ आर्या म्लेच्छाश्च॥३६॥ भरतैरावतवि
देहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिप
ल्योपमांतर्मुहूर्त्ते॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च॥३९॥ इति तत्त्
वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः॥३॥ देवाश्चतुर्णि
कायाः॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतांतलेश्याः॥२॥ दशाष्टपंचद्वादशविक
ल्पाः कल्पोपपन्नपर्यंताः॥३॥ इंद्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिष
दात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चै
कशः॥४॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्काः॥५॥ पूर्व
योर्द्वींद्राः॥६॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात्॥७॥ शेषाः स्पर्शरूप

त्राद्ब्दमनःप्रवीचाराः॥८॥परेप्रवीचाराः॥९॥भवनवासिनोसुरनाग
विद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः॥१०॥व्यंतराःकि
नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः॥११॥ज्योतिष्काः
सूर्याचंद्रमसौग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च॥१२॥मेरुप्रदक्षिणा
नित्यगतयोनृलोके॥१३॥तत्कृतःकालविभागः॥१४॥बहिरवस्थि
ताः॥१५॥वैमानिकाः॥१६॥कल्पोपपन्नाःकल्पातीताश्च॥१७॥उ
पर्युपरि॥१८॥सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांत
वकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरार
णाच्युतयोर्नवसुग्रैवेयकेषुविजयवैजयंतजयंतापराजितेषुस
र्वार्थसिद्धौच॥१९॥स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धींद्रिया
वधिविषयतोधिकाः॥२०॥गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतोहीन
॥२१॥पीतपद्मशुक्ललेश्याद्वित्रिशेषेषु॥२२॥प्राग्ग्रैवेयकेभ्यःक
ल्पाः॥२३॥ब्रह्मलोकालयालौकांतिकाः॥२४॥सारस्वतादित्यव
ह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च॥२५॥विजयादिषुद्वि
चरमाः॥२६॥औपपादिकमनुष्येभ्यःशेषास्तिर्यग्योनयः॥२७॥स्थि
तिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणांसागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमि
ताः॥२८॥सौधर्मैशानयोःसागरोपमेधिके॥२९॥सानत्कुमारमा
हेंद्रयोःसप्त॥३०॥त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधि
कानितु॥३१॥आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेननवसुग्रैवेयकेषुविज
यादिषुसर्वार्थसिद्धौच॥३२॥अपरापल्योपममधिकं॥३३॥पर
तःपरतःपूर्वापूर्वानंतराः॥३४॥नारकाणांचद्वितीयादिषु॥
दशवर्षसहस्राणिप्रथमायां॥३६॥भवनेषुच॥३७॥व्यंतराणां
च॥३८॥परापल्योपममधिकं॥३९॥ज्योतिष्काणांच॥४०॥तदष्टभा
गोपरा॥४१॥लौकांतिकानामष्टौसागरोपमाणिसर्वेषां॥४२॥
॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेचतुर्थोध्यायः॥४॥अजी
वकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः॥१॥द्रव्याणि॥२॥जीवाश्च॥३॥नि
त्यावस्थितान्यरूपाणि॥४॥रूपिणःपुद्गलाः॥५॥आआकाशादेक
द्रव्याणि॥६॥निःक्रियाणिच॥७॥असंख्येयाःप्रदेशाधर्माधर्मैकजी
वानां॥८॥आकाशस्यानंताः॥९॥संख्येयासंख्येयाश्चपुद्गलानां॥१०॥

त्रासूत्रपा
११४

नाणीं॥१५॥लोकाकाशेवगाहः॥१२॥धर्माधर्मयोःकृत्स्ने॥१३॥एक
प्रदेशादिषुभाज्यःपुद्गलानां॥१४॥असंख्येयभागादिषुजीवा
नां॥१५॥प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यांप्रदीपवत्॥१६॥गतिस्थित्युपग्र
हौधर्माधर्मयोरुपकारः॥१७॥आकाशस्यावगाहः॥१८॥शरीर
वाङ्मनःप्राणापानाःपुद्गलानां॥१९॥सुखदुःखजीवितमर
णोपग्रहाश्च॥२०॥परस्परोपग्रहोजीवानां॥२१॥वर्त्तनापरिण
मक्रियापरत्वापरत्वेचकालस्य॥२२॥स्पर्शरसगंधवर्णवंतःपु
द्गलाः॥२३॥शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायात
पोद्योतवंतश्च॥२४॥अणवःस्कंधाश्च॥२५॥भेदसंघातेभ्यःउत्पद्यंते॥२६
भेदादणुः॥२७॥भेदसंघाताभ्यांचाक्षुषः॥२८॥सद्द्रव्यलक्षणं॥२९॥उ
त्पादव्ययध्रौव्ययुक्तंसत्॥३०॥तद्भावाव्ययंनित्यं॥३१॥अर्पितान
र्पितसिद्धेः॥३२॥स्निग्धरूक्षत्वाद्बंधः॥३३॥नजघन्यगुणानां॥३४
गुणसाम्येसदृशानां॥३५॥द्व्यधिकादिगुणानांतु॥३६॥बंधेधिकौ
पारिणामिकौच॥३७॥गुणपर्ययवद्द्रव्यं॥३८॥कालश्च॥३९॥सोनं
तसमयः॥४०॥द्रव्याश्रयानिर्गुणागुणाः॥४१॥तद्भावःपरिणाम
॥४२॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेपंचमोध्यायः॥५॥छ॥
कायवाङ्मनःकर्मयोगः॥१॥सआस्रवः॥२॥शुभःपुण्यस्याशुभःपा
पस्य॥३॥सकषायाकषाययोःसांपरायिकेर्यापथयोः॥४॥इंद्रिय
कषायाव्रतक्रियाःपंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याःपूर्वस्यभेदा
ः॥५॥तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशे
षः॥६॥अधिकरणंजीवाजीवाः॥७॥आद्यंसंरंभसमारंभारंभयो
गकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः
॥८॥निवर्त्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्द्वित्रिभेदाःपरं॥९॥त
त्प्रदोषनिह्नवमात्स
णायो॥१०॥दुःखशोकतापाक्रंदन
यस्थानान्यसद्वेद्यस्य॥११॥भूतव्रत्यनुकंपादानसरागसंय
दियोगःक्षांतिःशौचमितिसद्वेद्यस्य॥१२॥केव
देवावर्णवादोदर्शनमोहस्य॥१३॥
चारित्रमोहस्य॥१४॥बह्वारंभपरिग्रहत्वंनारकस्यायुषः

मायातैर्यग्योनस्य॥१६॥ अल्पारंभपरिग्रहत्वं मानुषस्य॥१७॥ स्वभाव
मार्दवं च॥१८॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषां॥१९॥ सरागसंयमासंयमा
कामनिर्ज्जरा॥ बालतपांसि दैवस्य॥२०॥ सम्यक्त्वं च॥२१॥ योगवक्रता
विसंवादनं च॥२२॥ अशुभस्य नाम्नः॥ तद्विपरीतं शुभस्य॥२३॥ दर्शन
विशुद्धिर्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयो
गसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी संघसाधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणम
र्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्ग
प्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य॥२४॥ परात्मनि
दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य॥२५॥ तद्विप
र्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य॥२६॥ विघ्नकरणमंतरायस्य॥२७
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः॥६॥ हिंसानृतस्ते
याब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतं॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती॥२॥ तत्स्थै
र्यार्थं भावनाः पंच पंच॥३॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमि
त्यालोकितपानभोजनानि पंच॥४॥ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्र
त्याख्यानान्यनुवीचीभाषणं च पंच॥५॥ शून्यागारविमोचिताव
सपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसंवादाः पंच॥६॥ स्त्री
रागकथाश्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरण
वृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच॥७॥ मनोज्ञामनोज्ञेंद्रिय
विषयरागद्वेषवर्ज्जनानि पंच॥८॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायाव
द्यदर्शनं॥९॥ दुःखमेव वा॥१०॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि
च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु॥११॥ जगत्कायस्वभावौ
वा संवेगवैराग्यार्थं॥१२॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा॥१३॥
असदभिधानमनृतं॥१४॥ अदत्तादानं स्तेयं॥१५॥ मैथुनमब्रह्म
१६॥ मूर्छा परिग्रहः॥१७॥ निःशल्यो व्रती॥१८॥ अगार्यनगारश्च
१९॥ अणुव्रतोऽगारी॥२०॥ दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायि
कप्रोषधोपवासोपभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसंप
न्नश्च॥२१॥ मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता॥२२॥ शंकाकांक्षा
विचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः॥२३॥ अ
व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमं॥२४॥ बंधवधच्छेदातिभारारोप

णान्नपाननिरोधाः॥२५॥मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटले
खक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः॥२६॥स्तेनप्रयोगतदा
हृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूप
कव्यवहाराः॥२७॥परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताप्र
पगृहीतागमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः॥२८॥क्षे
त्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्र
माः॥२९॥ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यंतराधाना
नि॥३०॥आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः॥३१॥कं
दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थ
क्यानि॥३२॥योगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि॥३३॥
अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादर
स्मृत्यनुपस्थानानि॥३४॥सचित्तसंबंधसन्मिश्राभिषवदुः
पक्वाहाराः॥३५॥सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशकरण
मात्सर्यकालातिक्रमाः॥३६॥जीवितमरणाशंसामित्रानुरा
गसुखानुबंधनिदानानि॥३७॥अनुग्रहार्थंस्वस्यातिसर्गोदा
नं॥३८॥विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः॥३९॥इति
तत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेसप्तमोध्यायः॥७॥मिथ्याद
र्शनाविरतिप्रमादकषाययोगाबंधहेतवः॥१॥सकषायत्वाज्जी
वः कर्मणोयोग्यान्पुद्गलानादत्तेसबंधः॥२॥प्रकृतिस्थित्यनु
भागप्रदेशास्तद्विधयः॥३॥आद्योज्ञानदर्शनावरणवेदनी
यमोहनीयायुर्नामगोत्रांतरायाः॥४॥पंचनवद्व्यष्टाविंशति
चतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदायथाक्रमं॥५॥मतिश्रुतावधि
मनःपर्ययकेवलानां॥६॥चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां॥७॥नि
द्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च॥८॥स
दसद्वेद्ये॥९॥दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेद
नीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः॥अनंतानुबं॥सम्यक्त्वमि
थ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौहास्यरत्यरतिशोकभयजुगु
प्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः॥अनंतानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान
संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः॥१०॥नारक

तैर्यग्योनिमानुषदैवानि॥१०॥गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माण
बंधनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शगंधवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूप
घातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः॥प्रत्येकशरीरत्र-
सशुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशस्कीर्त्तिसेतरा
णि तीर्थकरत्वंच॥१२॥उच्चैर्नीचैश्च॥१३॥दानलाभभोगोपभोग
वीर्याणां॥१४॥आदितस्तिसृणामंतरायस्यचत्रिंसत्सागरोप
मकोटीकोट्यःपरास्थितिः॥१५॥सप्ततिर्मोहनीयस्य॥१६॥विंश
तिनामगोत्रयोः॥१७॥त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः॥१८॥
अपराद्वादशमुहूर्त्तावेदनीयस्य॥१९॥नामगोत्रयोरष्टौ॥२०॥
शेषाणांमंतर्मुहूर्त्ता॥२१॥विपाकोनुभवः॥२२॥सयथानामः
२३॥ततश्चनिर्ज्जरा॥२४॥नामप्रत्ययाःसर्वतोयोगविशेषात्सू
क्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः॥२५॥सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंतप्रदे
शाः॥२६॥सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणिपुण्यं॥२७॥अतोन्यत
पापं॥२८॥इतितत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेअष्टमोध्यायः॥८
॥आस्रवनिरोधःसंवरः॥१॥सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषह
जयचारित्रैः॥२॥तपसानिर्ज्जराच॥३॥सम्यग्योगनिग्रहोगुप्तिः
॥४॥ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाःसमितयः॥५॥उत्तमक्षम
मार्द्दवार्ज्जवसत्यशौचसंवरनिर्ज्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्व
ख्याततत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षा॥७॥मार्ग्गाच्यवननिर्ज्जरार्थंपरि
षोढव्याःपरीषहाः॥८॥क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमसकनाग्न्य
अरतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनालाभरोगतृ
णस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि॥९॥सूक्ष्म
सांपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्द्दश॥१०॥एकादशजिने
॥११॥वादरसांपरायसर्वे॥१२॥ज्ञानावरणेप्रज्ञाज्ञाने॥१३॥दर्श
नमोहांतराययोरदर्शनालाभौ॥१४॥चारित्रमोहेनाग्न्यारतिस्त्री
निषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः॥१५॥वेदनीयेशेषाः॥
१६॥एकादयोभाज्यायुगपदेकस्मिन्नेकोनविंशतिः॥१७॥सा
मायिकछेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथा

ण्यौतमलिचारित्रे ॥१८॥ अनसनावमोदर्य्यवृत्तिपरिसंख्यार
सपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशावाह्यंतपः ॥१९॥
प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं ॥२०॥
नवचतुर्दशपंचद्विभेदायथाक्रमंप्राग्ध्यानात् ॥२१॥ आलो
चनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारो
पस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपा
ध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां ॥२
४॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥ वाह्याभ्यं
तरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधोध्यान
मांतर्मुहूर्त्तात् ॥२७॥ आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परेमोक्ष
हेतु ॥२९॥ आर्त्तममनोज्ञस्यसंप्रयोगेतद्विप्रयोगायस्मृतिस
मन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतंमनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥
निदानंच ॥३३॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां ॥३४॥ हिं
सानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्योरौद्रमविरतिदेशविरतयोः ॥३५॥
आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयायधर्म्यं ॥३६॥ शुक्लेचाद्येपू
र्वविदः ॥३७॥ परेकेवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कविचार
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्त्तीनी ॥४०॥ त्र्येकयोग
काययोगयोगानां ॥४१॥ एकाश्रयेसवितर्केवीचारेपूर्वे ॥४२॥ अवी
चारंद्वितीयं ॥ वितर्कश्रुतं ॥४३॥ विचारोर्थव्यंजनयोगसंक्रां
तिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्ष
पकोपशमकोपशांतमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोसंख्येयगुण
निर्ज्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकानिर्ग्रंथ
थाः ॥ इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेनवमोध्यायः ॥९॥ मोह
क्षयाद्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्चकेवलं ॥१॥ वंधहेत्वभावनि
र्जराभ्यांकृत्स्नकर्मविप्रमोक्षोमोक्षः ॥२॥ औपशमिकादिभ
व्यत्वानांच ॥३॥ अन्यत्रकेवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वे
भ्यः ॥४॥ तदनंतरमूर्ध्वंगच्छत्यालोकांतात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वा
द्बंधच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रव
द्व्यपगतलेपालांबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिका

॥:॥ अथ नवग्रह पूजन लिखिते॥ श्लोक॥ प्रणम्याद्यंत
तीर्थेशं धर्मतीर्थप्रवर्तकं। भव्यविघ्नोपशांत्यर्थं ग्रहार्चा व
र्ण्यते मया॥१॥ मार्तंड इंदु कुज्ज: सौम्य: सूरि शुक्र कृतांतक
: राहुश्च केतु संयुक्त: ग्रह शांतिकरा नव:॥ दोहा॥ आदि
अंत जिनवर नमौं। धर्मप्रकाशन हार। भव्य विघ्न उपशां
ति कौं। ग्रह पूजा चित धार॥२॥ काल दोष परभाव सौं। वि
कल्प छूटै नांहि। जिन पूजा मैं ग्रहन की। पूजा मिथ्या नां
हि॥३॥ इस ही जंबूद्वीप मैं। रवि शशि मिथुन प्रमान। ग्रह न
क्षत्र तारा सहित। जोतिक चक्र प्रमान॥४॥ तिनही के अनु
सार सें। कर्मचक्र की चाल। सुख दुख जानै जीव कौं। जिन
वच नेत्र विशाल॥५॥ ग्यान प्रश्न व्याकर्ण मैं। प्रश्न अंग है
आत। भद्रबाहु मुख जनित जो। सुनंत की ये सुख पाव
॥६॥ अवधिधार मुनिराज जो। कहै पूर्वकृत कर्म। उनही
वच अनुसार सौं। हरि हृदय का भर्म॥७॥ सोरठा॥ पूज्यौं प
द्म जिनिंद। गोचर लगन विषैं यदा। सूर्य करै दुख द्वंद। सु
ख होवै सब जीव कों॥८॥ अडिल्ल। पंच कल्यांनक सहि
त पांन पंचम लहै। समोसरण सुख साधि मुक्ति मांही
वसै। आव्हानन करि तिष्ठ सन्निधी कीजिये। सूर्य ग्रह
के स्हांति जगत सुख लीजिये॥१०॥ ॐ ह्रीं श्री सूर्य मालि
क्या अमनि ग्रह शांति निमत्तये। अत्र अवतर अवतर सं
वौषट्॥ अत्र तिष्ठ: ठ: ठ: संनिधापनं। अत्र मम
संनिहितो भव भव वषट् सन्निधापनं॥ छंद त्रिभंगी॥
सोनें की झारी सब सुखकारी क्षीरोदधि जल भरि ल
॥ नव ताप मिटाई अखान माई धारा जिन चरनन
दीजे। पद्म प्रभु स्वामी शिवमगगामी नवि क मोर स्है ते
गूंजत हैं॥ दिनकर दुख नाशी॥ पापन सांई सब सुख दाई
पूजत हैं॥ ॐ ह्रीं सूर्यारिष्ट निवारकाय पद्मप्रभजिने
न्द्राय। जलं॥१॥ मलयागिर चंदन दाह निकंदन जिनपद

नवग्र०
११७

वेदनसुषकारी॥ उँकमजुतलीजेचरनन कीजेतापहरी
ॐ डषदारी॥पदम प्र०॥दिनकर०॥ॐ ह्रीं०॥चंदनं॥१॥तंडुल
गुनमंडिलसोरलिअषंडितपूजितपंडितहितकारी०
अक्षयपदपावेंअघितचढावेंगावेंगुनसिवसुखकारं
पदमप्रभुस्वामीसिवसुखगामीभविकमोरसुंमिकूजत
हें॥दिनकरडषजारी॥पापनसोंरीसवसुषदारीपूजतहें
ॐ ह्रीं॥सू०॥अक्षतं॥२॥मचकुंदमगावोकमलचढाके
वकुलवेलिरंगचितहारी॥मंदारलेआवेमदननसांवे
सिवसुषपांवेहितकारी॥पदम०॥दिनकर०॥ॐ ह्रीं पुष्पं
॥३॥ग्रैघृतलेघरियेसाजेकरियेंभरियेहाटकमयथारी
व्यंजनवकलीजेंपूजाकीजेंदोषषुध्यादिकअघहारी
पदमप्रभुस्वामीसिवमगगामीभविकमोरसुंमिकूंज
तहें॥दिनकरडखजारीपापनसोंरीसवसुषदारीपू
जतहें॥ॐ ह्रीं सू०र्घ०॥नैवेद्यं॥४॥मणिदीपकलीजेघीव
भरिजेकीजेघनसारकीबाती॥जगजोतिजगामगल
गमगजगममोहतिमरकोहेंघाती पदम०॥दिन०॥ॐ
ह्रींसू०र्घ०॥दीपं॥५॥कालागुरुकपंअधिकअनूपे
निर्मलरूपेघनसारं॥षेवोप्रभुआगेंपातिकभागेंजा
गेंसुनडषमवहारं॥पद्मप्रभुस्वामीसिवमगगामभ
विकमोरसुनिभुजतहें॥दिनकरडषजारीपापनसो
सोरीसवसुषदारीपूजतहें॥ॐ ह्रीं सू०॥धूपं॥७॥श्री
फललेंआवोसेवचढावेंअवअमरतफलआदिवरं
वाछितफलपावेंभजिनगुनगावेंडषदारीसवकर्महरं
पदमप्र०॥दिनकर०॥ॐ ह्रीं सू०॥फलं॥७॥जलचंदनल्या
यासुमनसुहाया तंडुलमुक्तासमकहिये॥चरुदीपकल्ल
लेधूपचवीजेंफललेंवसुक्रमनेंदहिये॥पदमप्र०॥दि
नकर०॥ॐ ह्रीं सू०॥अर्घं॥९॥अडिल॥सलिलगंधलेफू
लसुगंधितलीजिये तंडुललेचरुदीपकधूपषेवीजियें॥

फललेअर्घवनोयपदमप्रभुपूजियै।कमलमोहकौ।
दोषवुरत्तहीपुजियै॥पूर्णार्घं॥१०॥अथजयमालालिष्यते॥
जेहैसुषकारीसवदुषहारीमारीरोगादिकहरनं॥इंद्रादि
कआवैं॥प्रभुगुनगावैंमंदिरगिरमंजनकरनं॥नृपसा
दिकसाजेइंद्रनीवाजेंतीनलोकसेवतचरणं॥पदम
प्रभुपूजतपातिकधूजतनवनवनविमांगतसरणं
॥१॥पद्धडीछंद॥जयपदमप्रभूपूजाकराय॥सुरजा
गृहधनदुरतजाय॥जोजीजनसमोसरणीवषानें
घंटाकालरिसोनेंविहान॥१॥सतइंद्रनमतजिसचरा
नआय॥द्वससमगणधरसोंनाघराय॥वांनीधनयो
रघटाजुघोर॥घतसवद्रसुनतनविनचहमोर॥२॥मा
मंडलसोनालपतलूर॥इंद्रादिककोटिकलजतसूर
तहांदुक्षअसोकमहानुतंग॥सवजीवनसोकहरेंअ
नेग॥३॥सुमनादिकसुरवर्षाकराय॥वेदोगचमरचोस
ठिढुराय॥सिंघासनतीनत्रिलोकईस॥त्रयछत्रफिरे
नगजडितसीस॥४॥मणिमईअवनिमुकुरंदसार॥त्र
यधुलिसालसुंदरअपार॥कसोंणकपोंचूंसुषनिधे
न॥पंचमगतिदातारहैसुजान॥५॥सादेवारहकोडीजुस
र॥वाजाविनषेदवजेंअपार॥धरनेंद्रनरेंद्रसुरेंद्रईस त्र
यलोकनमतकरधारसीस॥६॥सुनमुक्तरमावरनस
सकार॥दोनेंहाथजोरकरवारवार॥जाकेपदनमत
आनंदहोत॥इतिआगेंदिनकरछिपतजोति॥७॥मन
सुद्धसमुद्रहृदयविचार॥सुषदातासवतनकोंअपार
मनवचतनचितपूजानिहार॥कीजेसुषदायकजगत
सार॥८॥घता॥सवजनहितकारीसुषअतिभारीमारी
रोगादिकहरणं॥पापादिकटारैंअहनितवारैंनविजीवनसु
वसुषकरणं॥ईसासीवाद॥अथवंजारिशनिवारकवें
ड्यप्रभुपूजालिख्यते॥सोरठा॥नृपतिपीडावांनिगोच

नव०
११८

रलगनविषैंजैवैवसुंविधिचतुरसुजांन॥चंद्रप्रभपूजाक
रो॥१॥अडिल्ल॥चंद्रपुरीकेवीचिचंद्रप्रभअवतरें॥लछिनसो
हैंचंदसवतकोमनहरें॥नखिजीवसुषकारदविसेषधरत
हों॥सोमदोषकेहेतथापमोकरतहों॥ॐह्रींश्रीचंद्रारिष्ट
निवारणायअत्रावतरावतर०॥१॥कंचनझारीजटित॥
जडाउंसीरोदकभरिनहिचढाउं॥जगतगुरुहो॥जैजै
नाथजगतगुरुहो॥चंद्रप्रभपूजोंमनलाय॥सोमदोष॥
तातैंमिटजाय॥जगतगुरु०॥१॥ॐह्रींश्रीचंद्रारिष्टनिवा
रकचंद्रप्रभुजिनेंद्राय॥जलं॥मलयागिरकेसरघनसा
रचरचितजिनभवतापनिवार॥जगतगुरुहो॥जैजैना
थ०॥२॥चंदनं॥कमलकुंदकेतकीअनंग॥कल्पतरु
जसवहरैंअनंग॥जगतगुरुहो॥जैजैनाथ०॥पुष्पं॥अ॥
खंडरहितसअक्षतससिरूप॥पुंजचढायहोयशिवा
रूप॥जगतगुरुहोजैजैनाथजगतगुरुहो॥चंद्रप्रभ
पूजोंमनलाय॥सोमदोषतातैंमिटजायजगतगुरु
हो॥४॥अक्षतं॥घेवरबावरमोदकलेउं॥षटरसयुतहर
थालभरेउं॥जगतगुरुहोजैजैनाथजगतगुरुहो०॥५
नैवेद्यं॥मणिमयदीपकघृतजुभरेउं॥वातीवरतजु
तिमरहरेउं॥जगतगुरुहो०॥६॥दीपं॥कालागुरुकी
कणीषीवाय॥वसुंविधिकर्मजुंदुरतनसाय॥जगत
गुरुहो०॥धूपं॥श्रीफलअंवसदाफलसेवोचमो
चअंमतफललेंउंजगतगुरुहो॥८॥फलं॥जलगंध
पुष्पसालिनैवेद्य॥दीपधूपफलअर्घअनिंद्य॥जग
तगुरुहो॥जैजैनाथजगतगुरुहो॥चंद्रप्रभुपूजोंमन
लाय॥सोमदोषतातैंमिटिजाय॥जगतगुरुहो०॥अ
र्घं॥९॥जलचंदनवरफूलजुतंदुललीजियें॥उग्य
सर्करासहितसुंव्यंजनकीजिये॥दीपधूपफलअर्घ
वुभायधरीजिमें॥जउंउषपूजें॥सोमजिनेंद्रहरीजिये

॥१॥ पूर्णार्घं ॥ अथ जयमाला ॥ चंद्रप्रभुचरनं सब सुषकरनं क
रनं आनंद हित अतुलं ॥ दुष दंद हरनं भव जल तरनं मन
हरनं सुषकर विपुलं ॥१॥ भ्रम मन कृदय मिथ्या ततम
नाशक ॥ केवलज्ञान सूर्य प्रति भासकं ॥ चंद्रप्रभु वर मन
हरन सब सुषकरं ॥ आकिनी भूत ग्रह सोम डष सब हरं ॥२॥
वर्द्धनं चंद्रमां धर्म जल निधि महा जगत सुषकार सिव मा
र्ग प्रभु न ग्रह्यो ॥ चंद्रप्रभ चरन मन हरन सब ०॥३॥ पांनगं
नीर अतिधीर वर वीर हो ॥ तीनहूं लोक सब जगत के नी
र हो ॥ चंद्रप्रभ ०॥४॥ विकट कंदर्प को दर्प छिन में हरा क
र्म वसुं पाप सब आप ही तें कह्यौ ॥ चंद्रप्रभ ०॥४॥ सोमपुर
नगर में जनम प्रभु नें लह्यौ ॥ क्रोध छल लोभ मद मोन मा
या दह्यौ ॥ चंद्रप्रभ चरन मन हरन सब सुष करं ॥ आकिनी
भूत ग्रह सोम डष सब हरं ॥५॥ देह जिनराज की सर्वशोभा
धरै ॥ स्फटक मणि कांति तिहि देषि लज्या करै ॥ होचंद्र अ
र्क और राक हजार लछन महा दाहिनें ॥ चरन कौं निसा पते
ग हर ह्यौ ॥ चंद्रप्रभ ०॥७॥ कहत मन नसु ष जल धि चंद्रप्रभ श
जिये ॥ सोम डष तासि कैं जगत नय पूजिये ॥ चंद्रप्रभ ० देष
ना ॥ पाप ताप कैं ॥ हरन कौं धर्म मिसतर सपूर ॥ चंद्रप्रभु जि
न पूजियें ॥ होय जं आनंद पूरा ॥९॥ इति चंद्रप्रभ पूजा ॥ अ
थ सोमारिष्ट निवारक वासुपूज्य पूजा ॥ दोहा ॥ वासपू
ज्य पूजन चरन ॥ सुत दोष फनाय ॥ तातें नवि पूजा क
रो ॥ मन में अति हरषाय ॥१॥ अडिल्ल ॥ वासव जा के जनम
समय हरषाइयें ॥ आयो गज लै साजि महा सुष पाइये
लै मंदिर गिरजाय सु न्हवण कराइकैं ॥ सो ल्यो माता गे
हजु तां व धराय कैं ॥ तैं जी सोमारिष्ट निवारक वासपू
जि जिनें ज्ञाय ॥ अत्र अवतर ० ॥ अत्र तिष्ठ ० ॥ अत्र मम ०॥२
स्थापनं ॥ गीता छंद ॥ कनककारी अधिक उत्तिम रतन
जटित सुं लीजियें ॥ परम द्रह कौ जल सुगंधित धार चरन

नदीजियें।घृत्तनय०प्रहरितांसे हरषहिरदैंधारिकैं।वास
पूजिजिनेंद्रपूजौंसकलआरतहारिकैं।ॐह्रीनोमोरिष्टनि
वारकवासपूज्यजिनेंद्राय॥जलं१॥श्रीखंडमलयजमहा
सीतलसुरनिचंदकघसिधरो।जिनचरनचरचौंनविक
हितसोंपापतापसवेंहरो॥नूतनय०।वास०ॐह्रीचंदनं
२॥अनखंडखंडितसुरनिमंडितथालनरिकरमेंयहौं
अदितपुंजदिवायजिनपदअषयपदसहजेंलहौं०
नूतनय०॥वास०।अं॥असतंतं०।कमलकुंदगुलाबवे
यापारजातिकअतिघनेंपुष्पपूजितचरनप्रभुकेकुसु
मसरतवहीहनेंनूतनयप्रहरितासेंहारषहिरदैंधा
रिहकें।वासुपूज्यजिनेंद्रपूजौंसकलआरितहारिकेंघ
पुष्पं।गोसर्प्पेंसद्यमगायमविजनउग्धामिश्रितअर्करा
चरुचारुलेंकरिजोंजिनपदक्षुधावेदनसवहरा नू
तनय०।५।नैवेद्यं।मणिजडितचंदनदीपसुंदरसद्य।
रतताभेंनरोंउद्योतकरिजिनचरनआगेंहृदयमिथ्या
तमहरौं।नूतनय०।६।दीपं।कालाअगरघनसारमिश्र
तदेवदेवसफलसुंहावनें षेवतधूवामेंस्वर्गमोदित
करतवसुकर्मनिहनें।नूतनयन०।धूपं।७॥श्रीफलअ
नारसुंआंवनीबुंचोचमोचसदाफलं।जिनवरनचर
नतफलनसेतीमोक्षफलदातारलं॥नूतनयन०।फ
फलं।जलगंधअक्षतसुंफूलअंजनदीपधूपफला
तमं।जिनराजअर्घचदायमविजनलेऊंमुक्तिसुरऔ
तमं।नूतनयन०।अर्घ।अडिल्ल।सुरनितजलश्रीखंड
कुसुमतंडुलनलें।अंजनदीपकधूपसदाफलसोरनिवा
सपूज्यजिनचरनअरघसुनदीजिये।मंगलग्रहउषदारे
सुमंगललीजियें।१०।पूर्णार्घं।अथजयमाला।लिख्यते॥
मंगलग्रहहरनंमंगलकरनंसुषकरसिवयनीवरनं०
आतमहितकरनंनवजलतिरनंवासपूज्यसेवतचरनं१

इंद्रनरेंद्रषगेंद्रजुदेवं आपकेरेजिनवरकीसेवं वासपूज्य
जिनपूजकरौं मंगलदोषसहजपरिहरौं २ विजयाजननीम
नहरषायेजनकजुवसुपूज्यहिसुषदाये वासपूज्य० मंगल
रुनलछिनकरिलछितकाय चंपापुरजनमेजिनराय०
वासपूज्य० मंगल० महिषोअंकचरनमेंपरयो देषेतसव
कोसंसयहरौं वासपूज्य० मंगल० ५ फागुनअसितजु
चोदसिजानोंछेवेरागपसुंघरियोंध्यानो वास० मंगल६
घातिघातियाकेवलपाया जैनधर्मजिगमेंप्रगटाय वा
सपूज्यजिनपूजाकरो मंगलदोषसवैपरिहरो ८ षटा
सतएकमुनिसरथयो गिरमंदारसिवालेगयो वास०
मंग० ८ मंगलहेतजजोजिनराय मंगलग्रहदूषनमि
टजाय वास० मंग० ९ पूजनअर्घकीजेदोषहरीजे।
कीजेंपातिकजनमजरा सुषकेअधिकारीग्रहदूषह
रीनारीनवदधितीरतरा १० इत्याशीर्वादः॥ अथबुद्धग्र
हारिष्टनिवारकअष्टजिनपूजा लिख्यते॥ दोहा॥ बुद्धग्रह
पीडाकरेजोंआवजिनेस आगेंगुनजिनमेंलहेंसेनाव
तसीससुरेस १ छप्पय विमलनाथजिन नमोंजुअनंत
नाथजिन धर्मनाथजिनवंदिवंदिहोसांतिसांतिकरि।
कुंथुअरहैजिनसुमरिसुमरिनमिवर्द्धमानजिन इनअ
ठोजिनजजोंनजोसुषकरनचरनतिन बुद्धमहाग्रहअ
सुभताधरतकरतजोरजव आह्वाननकरतिहिसंनि
धीकरिकेंतवें २ ॐह्रीं बुद्धग्रहारिष्टनिवारकअष्टजि।
नाय अत्र० अत्रति० अत्रमं० स्थापनं गीताछंद०
हिमफ़ारीजडिससमनिजलनरेहीरोदकतनो घारसे
जिनचरनआगेंपायतापज्ञनासनो विमलनाथअनं
तनाथसुधर्मनाथजुसांतये कुंथअरहजुनमियजिन
महावीरआवजितंजये ॐह्रीं सोम्यग्रहारिष्टनिवारक
अष्टजिनाये जलं १ सुरभिसुरभितलेऊंचंदनघसोंजु

कर्मसंगही। जिनचरनचरचित्तमिटैग्रीषममोहतापजुअंग
ही।विमल०ॐह्रीं०चंदनं।अक्षतअखंडितनयकौक्षिमै
नखअजुअतिघनौ।लेकनकथालभरायनविजवपूंजहो
वसुहावनौ।विमलनाथअनंतनाथसुधर्मनाथजुसांत
ये।।कुंथुअरहजुनमियेजिनमहावीरअष्टजिनंजयेॐ
ह्रीं०।अक्षतं।मंदारमल्लीमालतीमचकूंदमरवामोत
या।।कमलकुंदकसुंमकरनांकांमवोणजुघातिया।विम
ल०।ॐह्रीं०ह्रीं।पुष्पं।।घृतसघमिश्रतसर्करामृतक
रकुखंजननावसे।गहसौमपसांतिजुहोतजिनकेचरनचर
चौनावसौ।विम०ॐह्रीं०नैवेद्यं।पमनिजउतहो
टकदीपसेंदरवर्तिकाघनसारहैं।सर्पिसहितसिषाप्रका
सितआरतीतमहारहैं।विम०ॐह्रीं०दीपं।लौवान
अगरकपूरचंदनलौगचूरनलीजियै।अगनिधंमविव
र्जितजिनचरनआगेखेईयै।विम०ॐह्रीं०धूपं०।क
लपपादपजनितश्रीफलफलसमहचढाईयें।नत्तिभाव
वदायकरिकैसरसश्रीफलपाईयै।विम०ॐह्रीं०
फलं०।सुनसलिलचंदनअक्षतसुमनजुचरूयाहरचव
रुलीजियें।मणिदीपधूपफलसहितवसुविधअर्घईन
विधिदीजियें।विमल०।ॐह्रीं०।।अर्घं।।दोहा।।जल
चंदनआदिकदर्वपूजौवसुजिनराय।।सोम्पतनूंह्रवनमे
टैं पूर्नअर्घचढाय २०।पूर्णार्घं।।छप्पय।।विमलनाथजि
ननमौनमौजुअनंतनाथजिन।धर्मनाथफुनिनमौन
मौंसांतिकरताजिन।कुंथनाथपदवंदिवंदिहौंअरह
जिन।।नमिउणमिजिनपायपायनमिवर्धमाननमिए
आनौंजिनराजकुंहांथजोरिसिरधरतहोसोम्पनयउव
हरनकौंमंगलअरतिकरतहौं।।छंदपद्धडी।।जयविम
लविमलआतमप्रकास।षट्द्रव्यचराचरलोकभास।।जय
जयअनंतगुनहैंअनंत।सुरनरजसगावैलहेअनंत।

३॥जयधर्मधुराधरधर्मनाथजगजीवउधारनमुक्तिसाथ०
जयसांतिनाथजगशांतिकरना॥नविजीवनकेदुखदरित-
हरना॥३॥जयकुंथुजिनकुंथ्वादिजीव॥प्रतिपालनकरिसु
षदेअतीव॥जयअरहजिनेस्वरअष्टकर्मरिपुनासिली
योसमरमनिसर्म॥४॥जयनमिनमियेसुरनरषगीसइंद्रादि
चंद्रथुतिकरतसेस॥जयवर्द्धमानजयवर्द्धमानउपदेसदे
यलहिमुक्तिथांन॥५॥जयवसुजिनपूजितमनलगायस
सिसुनअरिष्टसबहरिजाय॥मनवचतनकरिजुगजोर
होय॥६॥घत्ता॥एअष्टजिनेस्वरनमतसुरेसरनरजीवमं
गलकरनं॥मनवंछितपूरेपातिकचूरैंजनममरनसा
गरतिरनं॥७॥आसीरवाद॥अथगुरुअरिष्टनिवारकअ
ष्टजिनपूजन॥दोहा॥मनवचकायासुद्धकरि॥पूजौंआठ
जिनेस॥गुरुअरिष्टसबनासकै॥उपजैसौष्यअसेस॥१॥छ
प्पय॥रिषभनाथजिनराजअजितसंभवस्वांमी॥अभि
नंदनजिनसुमतिसुपारसशीतलनांमी॥श्रीश्रेयांसजे
नदेवसेवसबकरतसुरासुर॥मनवंछितदातारसारजे
तीनलोकगुर॥सेनवषटाव:व:तिष्टसंन्निधाऊंजी
ये॥गुरुअरिष्टकेनासकौंआवजिनेस्वरपूजियें॥ओंह्रीं
सुरगुरुअरिष्टनिवारकअष्टजिनाय॥अत्र०अत्रति
अत्रमम०॥स्थापनं॥त्रिभंगीछंद॥जलउज्जललीजे॥
मनसुचिकीजेहाटकमयभृंगारभरं॥जिनधारदिवाई
त्रिषानसाईनवजलतिधिलेपारपरे॥रिषभअजितसं
भवअभिनंदनसुमतिसुपारसनाथवरं॥सीतलनाथ
श्रेयांसजिनेस्वरपूजतसुरगुरदोषहरं॥ओंह्रींसुरगुरु
अरिष्टनिवारकअष्टजिनाय॥जलं॥१॥मलयागिर॥
चंदनदाहनिकंदनकुंकुमसुनलेघनसारं॥चढौंजि
नकरनेभवतपहरनेमनवंछितसबसौष्यकरं॥रिष
भ०॥सीतल०॥ओंह्रीं०॥चंदनं॥सरलसालिककिसनजीर

कवांसमतीयजुमनहरं॥जयकोटिकअरुअषंडितअ
षयगुनसिवपदधरं रिषभ० सीतल०॥जै॥ अछतं॥४॥चंप
कचवेलीकरकेतकीमालतीमरवोवोलसरं कमलकुं
मुदगुलावकुंदजुमुनमुहीसेवतीयपरं रिषभ०॥सीतल०॥जै
पुष्पं॥५॥घेवरहिसुंवावरबुपबुरियमोदकफेनीपीयवरं
सुरहीघृतपयसरकरापुतविवधिचरुसुतसयकरं
रिषभ०॥सीतल०॥जै०॥नैवेद्यं॥६॥मनिकेजडितसुवनथाल
लेकदलीसुतघृतमांहितरं॥दीपकउद्योतनमछय।
होतनिजगुनलषिनानारनरं॥रिषभ०॥सीतल०॥जै०॥दी
पं॥७॥चंदनअगरलोगसुतगरंविवधिदर्विलेसुरलि
तरं॥येवतजिनआगेंपातिकनागेंधूवामिसिवसुंकर्म
जरैं॥रिषभ०॥जै०॥धूपं॥८॥वादामसुपारीश्रीफलनारीचोच
मोचकमरषसुवरं॥लेकेफलनानाजिनपदपूजितसे
वसुषपावानोदेतत्वरं॥रि०॥जै०॥फलं॥९॥जलचंदनफल
तंदुलतुलेचरुदीपकलेधूपफलं॥वसुविधिमेंअर
चेवसुविधिविरचेंकीजेअविचलमुक्तिघरं॥रिषभ०
सीतल०॥जै०॥अर्घं॥१०॥अडिल्ल॥मनवचकायासुधपवि
तरकरिजिये॥लेकरिआवौंदर्विआवजिनपूजिये॥मंग
लीकवरूवस्तुसुगंसवलीजिये॥पूरणअरघचढाय
आरतीकीजिये॥११॥पूर्णार्घं॥छंद॥सुरुगुरुउषनोस
नकलपषआसववसुजिनवसुविधिपुंजकरं॥नवनष्ट
जयहरणोसवसुषकरणोनकजीवशिवधामघरं॥१॥ज
यरिषभदेववृषभनोकसार॥जयधर्मधुरंधरधीरधार॥
जयअजितकर्मअरिप्रकलजोनि॥जयजीतिलीये॥
वसुगुंननिधान॥२॥जयसंभवसंभवदंनछेद॥जयअ
तिरमालहियेअषेद॥जयजगजनसुषकरताअप
ार॥३॥जयसुमतिदेवदेवाधिदेवजयसुमतिसुमतिकरहे
सेव॥जयजयमहिमापारसत्वपरमान॥जयसौलोकअ

लोकप्रकासमानाथ॥जयश्रीतलजिनजगसांतिकर्नजि॥
यजनमजरामरसुदहनहर्न॥जयश्रेयकरतश्रेयांसनाथ
जयश्रेयसुपंथदेमुक्तिसथ॥५॥जयजयगुनगिरमाजगगु
धांन॥जयसुरनरसेसकरेंवषांन॥जयमनसुषसागरन
मतसीस॥जयसुरगुरुरसनमेदिईसहीघरा॥आवजिने
स्वरपूजतो॥आवकर्मउपजाय॥आवसिघिनवविधिल
हासुरसुरहोयसहाय॥आसीरवाद॥७॥अथसुश्रीअरि
ष्टनिवारकपुष्पदंतजिनपूजनदोहा॥पुष्पदंतजिनरा
जकोंनविपूजोंमनलाय॥मनवचकायासुदसोकवि॥
अरिष्टमिटिजाय॥अष्टिदृष्टगोचरमेंग्रहसुक्रआयजु
वुडवकरें॥पुष्पदंतजिननाममंत्रमनमेंघरैंआह्वानन
करतिष्टसंन्निधीकरुजियें॥ॐह्रींसुक्रग्रहायअरिष्ट
निवारकपुष्पदंतजिनायअत्र॥०॥सोरठा॥नीरमलस
तसुनाय॥गंगाजलझारीभरो॥कविअरिष्टमोदिजायपु
ष्पदंतपूजाकरो॥ॐह्रींसुक्रग्रहअरिष्टनिवारकपुष्प
दंतजिनेंद्राय॥जलं॥कुंकुममलयघसाय॥कनककटो
रीमेंघरो॥कवि॥०॥२॥चंदनं॥तंदुलअछतलाय॥नवस
हितसुसपरिहरो॥कवि॥३॥अछतं॥कमलवेलवेलीजा
य॥जुहीकुंदसुकेवडो॥कवि॥०॥४॥पुष्पं॥व्यंजनविविध
वनाय॥मधुरस्वादजुतआचरो॥कवि॥अ०॥५॥नैवेद्यं॥
कंचनदीपकराय॥कदलीसुतवातीकरो॥कवि॥अ०
पुष्पदंतपूजाकरो॥६॥दीपं॥अगरकपुरमिटिजाय॥०
लोंगधूपवऊंविसरो॥कवि॥दोफलं॥नीरादिकलेआ
य॥अर्घदेतपातिकटरै॥कवि॥०॥८॥अर्घं॥अडिल्ल॥जल
चंदनलेअछतओरफूलघनें॥चरुदीपकवऊंधूपवु
फलआतिसोहनें॥गीतनृत्यगुनगायअनर्घपूरनक
रों॥पुष्पदंतजिनपूजिसुक्रउपदनहरों॥९॥पूर्णार्घं॥अथ
जयमाला॥[illegible]॥मनवचतनध्यावोपापनसावो॥स

नवग्र०
१२२

न सुषपावौ अघहरणं॥ यह दूषन आई हरष चढाय पुष्प
दंत पूजत चरणं॥१॥ जय पुष्पदंत जिनराज देव॥ सुर असुर
सकल मिलि करहि सेव॥ जय फागुन वदि नौमी वषान
सुरपति सुगर्भ कल्यान वान॥२॥ जय मागसीर्ष सित द
य पल॥ नौमि तिथि जनम मैं न ये अतल जय जन्म महोत्सव
इंद्र आय॥ सुरगिर लेन्हवन कीयो सु नये च॥ जय वज्र वृष
भ नाराच देह॥ दस सत वसु लछन सुगुन गेह॥ जय रा
जनीत कर राजकीन॥ मगसिर सित परिवा सुतपली
न॥३॥ जय घातक घातिया कर्म घाय निज आतम शक्ति
प्रकास वीर॥ जय कातिक सुदि द्वितिया महान॥ लहि के
वलज्ञान तज्यो तमो न॥४॥ जय जन अजीव उपदेस दे
म न भ्रम तिमिर तारण सुज स लेरी॥ जय भादो सुदि आठै
प्रसिद्ध॥ हनि अष्ट कर्म प्रभु गये सिद्ध॥५॥ जय जय जगदी
श्वर नर देव तुम तन पेष हरष करत सेव॥ जय मन वां
छित तुम करत ईस पयन सुध जल धितु मन मत सीस॥६
ई॥ घता॥ सब गुन अधिकारी॥ दूषन हारी मारी रोगादि
क हरने॥ जगगुरु उपकारी पाप मिटाई पुष्पदंत पूजत
चरने॥७॥ इत्याशीर्वादः॥ अथ शनि अरिष्ट निवारक मु
निसुव्रत नाथ पूजा॥ दोहा॥ जनम लगन गोचर समै रवि
सुत पीड़ा देय॥ तब मुनि सुव्रत पूजिये॥ पातिक नास क
रेय॥१॥ अडिल्ल॥ मुनि सुव्रत जिनराज काज निज क
रन के॥ सूर्य पुत्र ग्रह कूर अरिष्ट हरन कौं आन
न कर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः करौं॥ सन्निधि जिनराज नमस्
कारौं॥२॥ ॐ ह्रीं शनि अरिष्ट निवारक मुनिसुव्रत
नाथाय॥ अवतर॥ अत्र ठः अत्र मम ०॥ स्थापनं॥ उणीगो
गादि कलेसी परो निरमल प्रासुक नीर हो आणीजा
री झारि भरि पदधार दे॥ जासैं कर्म कलंक मिटि जाय॥ हो
प्राणी मुनि सुव्रत जिन पूजियें एजी रविसुत दुख मिटि

आय हो प्राणी मुनिसुव्रत जि०॥ॐ ह्रीं०जलं०॥१॥ प्राणी चंदन घसि मलिया गिरी॥ और कुंकम तामें डारि हो प्रा णी जिन पद चरचो भाव सों॥ जासो जन्म जराज्वर जाय हो प्राणी मुनिसुव्रत०॥ रविसुतकष्ट मिटि जाय हो प्रा०॥ॐ ह्रीं०॥ चंदनं॥२ प्राणी उज्जल ससि सम लीजिये तंदुल कोटि समान हो प्राणी पोच पूंज दे भाव सों॥ अषय पद सुष पाय हो प्राणी मुनिसुव्रत०॥ रवि०॥ॐ०अ॥ अक्षतं॥३ प्राणी बेलि चमेल केवरी॥ करनां कुमद गुलाब हो प्राणी केतकी केंदल ले पूजिये॥ सब काम असति मिटि जाय हो य प्राणी मुनिसुव्रत०॥ रविसुत०॥ॐ ह्रीं॥ पुष्पं॥४ प्राणी व्यंजन नाना जाति के॥ षट्रस कर संजुत हो प्राणी॥ जिन पद पूजो भाव सों नव जाय षुद्यादि क रोग हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ॐ०॥ नैवेद्यं॥५ प्राणी रतन जोति तम नासनी॥ दीपक कंचन थार हो प्राणी जिन आगें आरती करौं॥ नव आरति मजाय हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ॐ०॥ दीपं॥६॥ प्राणी चंदन अगर कपूर ले सब षेवो पावक मोहि हो प्राणी॥ अष्ट करम जरि अरके॥ जिन पूजन सब सुष होय हो प्राणी॥ मुनि०॥ रवि०॥ॐ॥ धूपं॥७॥ प्राणी अब अनार पि पूष फल मोच चोच बिदाम हो प्राणी फल सें जिन पद पूजिये पावे सिव फल सार हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ॐ०॥ फलं॥ ८॥ प्राणी नीरादिक वसु दर्व ले॥ मन वच काय लगाय हो प्राणी अष्ट करम को नासके॥ अष्ट महा गुन पाय हो प्राणी मुनि०॥ रवि०॥ॐ०॥ अर्घं०॥९॥ अडिल॥ जल चंदन ले फूल और अक्षत घनें॥ चरु दीपक वरु धुप महा फल सो हनें॥ इसौ अरघ बणाय जिनाधि पूजियें॥ मुनि सुव्रत जिनराय भाव सौं पूजिये॥ पूर्णार्घं॥१०॥ जयमाल लिष्यते॥ दोहा॥ मुनिसुव्रत सुव्रत धरन॥ त्याग करन जगजाल॥ सनिग्रह पीडा हरन को॥ पढो हरष जयमाल॥१॥ छंद पद्धडी॥ जय जय मुनि

पृ० ३

मुहूर्त त्रिजगतराय॥ सतइंद्र आप केनमत पाय॥ जयजय

पद्मावतीगर्भआय॥ श्रावण वदि दुतिया हर्षदाय॥२॥ जयज

य सुमित्र ग्रह जन्म लीन॥ वैसाष कृष्ण दसमी प्रवीन॥ जय

जयदसप्रतिसयलसहकाय त्रयग्यांनसहित हितमि

तकहांय॥३॥ जयजयतनलच्छिनसेहसु आवागवीजी॥

वनमैं मुनिकैरपा ग॥ जयजयसौधर्मसुरेस आय॥ जन्म

कल्याणक कैरै सुनाय॥४॥ जयजयतपलै वैसाषमास

सुदि दसमी कर्मकलकनांस जयजय वैसाष जुआसे

तपक्ष॥ नौमी केवलल हिजगप्रतक्ष॥५॥ जयजयरचि

यौंतव समोसनं॥ सुरनरषगमुनिसव चितहर्न जयज

य छ्यालीसगुनसहितदेव॥ सतइंद्र आयतहां करत

सेव॥६॥ जयजयफागणवदि द्वादसीष॥ सिवथांनव

सेगुनसिद्धलीय॥ जयजयग्रानिपीडाहरनहेत॥ मनसु

षसागरकरसुषनिकेत॥७॥ घता॥ सुंनिसुंव्रतस्वांमीसव

जगनांमीनवि जीव वकसुषंकरनं॥ मनवंछित पूरैपातै

कचूरैविसुनग्रहपीडाहरनं॥८॥ आसी वाद॥ अथराऊं

अरिष्टनिवारक नेमनाथ पूजनं॥ अडिल्ल॥ गोचरमैंज

कआयराऊंपीडाधरैं॥ नेमनांथजिनरायजवैं पूजाक

रैं॥ आवदरविलेसुहनावहियआंतिकैं॥ स्यांमपुस्प

मनलायभक्तिकौंधांतिकै॥१॥ पूजौ नेमजिनेसनव्यम

नलायकैं॥ राऊंदेयउषरासिमेरवडंआयकैं॥ आ ह्वा

ननकरितिष्टतिष्ट वः वः तवरैंहोयसंनिधीनतिमलै

पूजाकैरैं॥२॥ ॐ ह्रीं राऊं अरिष्टनिवारकायनेमनाथ

जिनेंद्राय अत्रा०॥ गीतांछंद॥ कनककारीमणिजडित

लिसीतजदकनरायकैं॥ प्रभुनेमजिनकेचरनआगेंध

रदेमनलायकैं॥ जवराऊंगोचरराांसिमइ षदेईडबडु॥

नावसौतववनेमिजिनकैंनावसेतीचरणपूजौंचावसौं

१॥ ॐ ह्रीं राऊं अरि० जलं॥ श्रीखंडमलयमिलायकै॥

सरकदलीसुतनामेंघसौ जिनचरणचरचितभाव।
धरिकैंपापतापतवेनसौ॥जव०॥चंदनं॥अक्षतअ
नुमसालिसंनवकनकभाजनलेरीकैं॥जिनअग्र
पूंजचढायभाविजनराकमनचितदेईकैं॥जव०॥२॥
अक्षतं॥कमलकुंदगुलाबकुंजाकेतकीकरूनांन
ने॥सुमनलेकैसुमनसेती॥पूजितेंजिनअघटलेज॥
वराऊंगोचरणासितेंउषडईडष्टसुभावसौं॥तवकेमज
नके॥भावसेतीचरनपूजोंभावसौं॥धा३ष्पं॥विविधिभं
जनरसाजिनतमनहरक्षुधाउषनकोहरें॥भरियाल
कंचतनभावसेतीनेमजिनआगेधरें॥जव०॥नैवेद्यं०
मणिमयदीपकनपमनरिकैंचंडज्योतिसुंजगमगेने
जहातलेप्रभुआरतीकरैमोहतमतवहीनगें॥निज
हांतलेप्रभुपआरतीकरैमोहतमतवहीनगें॥जव
राऊं०॥६॥दीपं॥कृष्णाअगरलोवांनलोगओरउअ
सुगंधमें॥निजचरनआगेंअग्निधरेधूपधूपसुरले
वुमें॥जवराऊं०॥७॥धूपं॥अंबाविजोरानारियरम्भी॥
फलसुंपारीसवकी॥फललेमनोहरसरसमीठेपू
जिलेजिनदेवकौं॥जवराऊं०॥८॥फलं॥जलगंधअ
क्षतपुष्पसुरभितचरुमनोहरलीजियें॥दीपधूपफ
लोघसुंदरअर्घजिनपददीजिये॥जवराऊंगोचरासे
मेंउषदेईउष्टसुंभावसौं॥तवनेमजिनकेभावसेती
चरनपूजोंचावसौं॥अर्घं॥अडिल्ल॥भावदरवलेसार
नेमप्रभुपूजियेराऊंहोरी॥ग्रहशांतिपापसवधूजियें
मनवंछितफलपायहोयवडभागसौं॥जोपूजेजिन
देववडेअनुरागसौंपूर्णार्घं॥अथजयमाला॥श्रीनेम
जिनेस्वरजग[illegible]परमेस्वरजीवदयाधुरधारधरांमेंसर॥
णआयोसीसनवायोसिंहासनसुतउषहरहरे॥१॥जय
जयजिननेमसुंनेमधारकरुणाकरजगजननजलधिल

२॥जैजैकातिकसुदिछठिविग्रभांनसिवदेवीउरअवतरेश्रो
ना॥२॥जैजैंश्रावनसुदिछठिदेव इंद्रादिन्हवनविधिकरिये
सेव॥जैजैंजदुकुलमंडनदिनेस॥सुरनरषगअस्तुतिकरत
सेस॥३॥जैजैंसुचिसुकरूतदासहोय॥छतिकौतपकरिनित
आलजोय॥जैजैनिर्मलतननिर्विकार भामंडलछबि
सोभाअपार॥जैजैंअस्वनिसुदिप्रपांतनौत॥तियप्रथम
पहरजगसुषतिष्ठांत॥जैजैनविजनउपदेसदेरीसुरे
पंचमिगतिसाधनकरेई॥५॥जैजैंछविसावनसुक्रप
ष्ट सवलोकालोककीयोउतन॥जैजैंवसुविधिविध्वं
सकलनास॥लहिसुषअनंतसिवलोकवास॥६॥जैजै
अजरामरपदप्रकास॥द्वैत्रिभुवनपतिलोकाग्रथांन
जैजैंछायासुतपीरहन॥मनसुरुसमुझगहियसरने इ
घरा॥नविजनसुषदाई॥सेउसुहाईमनवचकायागो॥
वतहीं॥सवदूषनजाईपापनसाईनेमिसहाईध्यावत
हो॥७॥इति शी वीं द॥अथकेतुअरिष्टनिवारकमलजि
पार्श्वजिनपूजन॥दोहा॥केतुअयागोचरविषें॥करेअरि॥
ष्टकीहो॥मल्लिपार्श्वजिनपूजियेमनवंछितसुदानि
१॥अडिल्ल॥मल्लिपार्श्वजिनदेवसेवकंकीजियेभक्ति
भावसुंद्रव्यसुंधकरलीजियेंआह्वाननकरतिष्ठति
ष्ठठःठःकरो॥ममसंन्निधीकरयजिहरषहियमेंधरो॥
१॥ॐह्रींकेतुअरिष्टनिवारकायमल्लिपार्श्वजिनेंद्राय॥
अत्रावतरा॥०उत्तमगंगाजललायमणिमयभरिझा
री॥जिनचरननधारदेसाजन्मजराहारी॥मेंपूजौंमल्लि
जिनेंद्रापाससुषकारी॥ग्रहकेतुअरिष्टनिवारकमन
सुषहितकारी॥१॥ॐह्रींकेतुअरिष्टनिवारकमल्लिपा
र्श्वजिनेंद्रा०जलं॥श्रीखंडमलयतरुलायेकदलीसुतफ
रीघसिकेशरिचरननलायेभवआतपहारी॥मेंपूजौंम
ल्लजिनेंद्रापारससुषकारी॥ग्रहकेतुअरिष्टनिवारमनसुष

हितकारी॥१॥ चंदन तंडल अछत अविकार मुकता सम
सोहैं॥ निरखैं होक मैं थार सुरनरमन मोहैं॥ मैं पूजौं मल्लिजि-
नेस पारससुषकारी॥ ग्रह केतु अरिष्ट निवारक मन सुष
हितकारी॥२॥ अछतं॥ ले फूल सुगंध सार अलि गुंजा-
करैं॥ पदपंकज जिनहि चढाय कांम विथा जु हरैं॥ मैं पूजैं
०॥ पुष्पं॥ व्यंजन वहु विधि परकार षट रस स्वादन ईचक।
जिनचरन चढाय कंचन थार लई मैं पूजौं॥ नैवेद्यं॥ मणि॥
दीपक तूपन राय चंडक की वाती जव जोति जहोलह-
काय मोहतिमर घाती॥ मैं पूजौं मल्लि जिनेस पारस सुष
कारी॥ ग्रह केतु अरिष्ट निवारक मन सुष हितकारी॥ दी-
पं॥ कृष्णागर चंदन ल्याये धूप दहन षेई॥ मो दिल सुरग-
न क्षै जाय रुचि सेती लेई॥ मैं पूजौं॥ धूपं॥ वहु चोच मोच
वादाम श्रीफल फल दारी॥ अमृत फल वहु सुषधाम-
ली जे मन लाई॥ मैं पूजौं॥ फलं॥ जल चंदन सु लेई तंडल
अघहारी॥ चरु दीप धूप फल देई अर्घ करौं भारी॥ मैं पूजौं
०॥ अर्घं॥ अडिल्ल॥ ले वसु द्रव्य विशेष सु मंगल गाई॥
कैं गीत नृत्य करवाय जु तुरव जाई कैं॥ मन मैं हरष वढा-
य अर्घ पूरण करौं॥ केतु दोष कूं मेटि पाप सव परिहरौं॥
पूर्णार्घं॥ जय मल्लि जिनेस्वर सेवक रौं सुर पार्श्वनाथ जि-
न चरणा नमौं मन वच तन लाई अरु तगारी करो आर-
ती पाप वसौं॥१॥ जै जै त्रिभुवन पति देव देव इंद्रादिक
सुरनर करई सेव॥ जै जै तिज गुन गायक महंत गुनव-
रनन करत न लहैं अंत॥२॥ जै जै परमात्म गुन गरिष्ट-
न वपद्धति नासन परम ईष्ट॥ जै जै अष्टादश दोषनास-
कर रवि सम लोकालोक नास॥३॥ जै जै वसुकर्म कलंक
छीन सम्यक्त्व आदि वसु गुन नलीन॥ जै जै वसु प्रतिहार
ज अनूप वसु ईश सु नमि कौन रूप॥ ४॥ जै जै अदेह-
तुंम देह धार सरणादि रहित हैं रूप सार जै जैं अजरामर

पदस्थ।६।गुनथ्यान अलोकालोक भान।जेजैं सुषसता
बोधदर्श।।निजगुन अनुत परगुन नांहि परसैजेजै चित सुध्द म
गुन सार कर जोर नमत है बार बार।५।घत्ता।मनवंछित दा
ईक।सेव सहाईक।जो मनि निज मन ध्यान धरैं।ग्रहउ स
मि दिजाई।सो फल हाई जिन चौवीस पूज करें।६।।इति
अग्रह पूजा संपूर्णं।।:।। ।।श्री।। ।।श्री।। ।।श्री।। ः
अथ बारा भावनों लिष्यते।।दोहा।।राजा राणां छत्रपति
हांथिन के असवार।मरनों सब कूं एक दिन।अपनी अप
नी वार।१।दल बल देई देवता।मात पिता परिवार।मरती
वेलां जीव कूं।कोई न राषन हार।२।दांम विनां निरधन
दुषी।त्रिष्णा वसि धनवांन।कहीं न सुषी संसार में।सब ज
ग देष्यां छांन।३।आय अकेलो अवतरें।मरै अकेलो होय
सुं न्यघमी विनां याजीव कौ।साथी सगो न कोय।४।जहां
देह अपनी नहीं।और न अपनें कोय।घर संपति पर
गट यह।पर है परियण लोय।५।दिपें चांम चादर मढी
हाड पींजरा देह।भीतरया सब जगत में।और नहीं घि
न गेह।६।सोरठा।मोहनींद कैं जोर जगवासी घूमें सदा
करम चोर चहुंवोर सरवस लूटैं सुधि नहीं।७।सत गुरु दे
ह जगाय।मोहनींद जब उपसमैं।तब कछु वनैं उपाव क
रम चोर आवत रुकें।८।ग्यांन दीप तप तेल भरि घर
सोधे भ्रम छोर यां विधि विन निकसैं नहीं।वैठे पूरव चो
र।९।चौदह राजे उतंग नभः लोक पुरुष संठांन।यामैं
जीव अनादि कौं।भरमत हैं विन ग्यांन।१०।जांचें सुरत
रु देव सुष चिंतामणि चिंतरेति विनजांचे विन चिंतये।
धर्म सु कल सुष देत।११।धन कन कंचन राज सुष।
सबहि सुलभ कर जांन।दुर्लभ है संसार मैं।एक जिथारथ ग्यां
न।१२।।इति बारा भावना संपूर्णं।।राग सोरठ वि
लावल।।करम गति कारू सौं न टरै रे टिक विकलप लाष

कोटिकरतेरहौ॥कांमनयेकसेरे।करम०॥अंतरायभयो
रिषभजिनेसुरचक्रीमोनगेरै।साटिसहससुभ्रसगरअ
पकेयो॥

पद राग सोरठा॥जीयारेयादेहविरां
णीमतिअपणावै।टेक।सातधातमयअरमलमूत्र:
नांवलीयांघनिआवै॥जीया०॥१॥यासेंप्रीतिकरैमति
भाई।डरगतिमांहिरुलावैं।आयोजांनिजोनिजसा
हिब।ज्योसिवपुरदरसावैं।जियारेयादेहविरांणीमते
अपणावे॥राग काफी॥सुंज्ञानीडारेमारिगअपणौ
जोय।टेक।आयकायथिरनांरहैगी॥जांनतहैसब
कोय।फंदीकीसांचीकरिमांनता॥कमवधैनिसतोय
सुज्ञा०॥१॥आपापरकोंभेदलष्येविना॥नरमतहैंपद
षोय।तूंनिश्चैकरिदेषिसयानें॥जनममरणदुषहोय
सुज्ञा०॥२॥नरभवउत्तमकुलश्रावककौंपायौ।सोविरथा
मतिषोय।औसरवीतिगयेपिछतैहैं।कहेदेसहंतोहे
सुज्ञा०॥३॥येहमुतिछोडिलागिसुनमारग॥रागादिक
मलधोय॥जिनवांणीधारैतेसाहिवमुक्तिवधूवरहो
य॥सुज्ञांनी॥४॥पद राग॥प्रभूतेरेसांकडे॥१॥कौयार०
प्रभु॥टेक॥लषिजगतिकीनीरधीरजातुरतसुंनतपु
कार॥प्रभू०॥१॥जांनकीकूंदिव्यदीनीरचीरामविचारे
आगनिकुंडप्रचंडसासतनयोजलविसतारा॥प्रभूते०
॥२॥चंदवालासतीकूंजवनयोंसंकटनार॥महावीरजि
नवरआपआये॥हूंवोजेजेंकार॥प्रभू मेरेसांकडे कौं
यार॥३॥ रैतिसंपूर्णी॥रेषता॥जगतयेहरैनिकासुपनां
समकितदिलदेषिकैंअपनां॥कविनयामोहकीघरा
नयासवजातसंसारा॥०॥१॥घडाज्योनीरकाफूटा॥पा
तजैसेंडालकाटूटा॥ऐसीनरजोनिजिनगांनी॥अ
जौ किनचेतअभिमांनी॥२॥भूलोमतिदेषितनगोरा

जगतमैंजीवनोंथोरा॥तजोंमघलोभचतुराई॥रहोंनै
निसंकजगमांही॥३॥सजनपरवारसुतदारा सबैंजसरो
जहैंप्यारा॥निकसिजवप्रांणजावेगा॥कोईनहिंकांमि
आवेगा॥४॥सदामतिजांणियादेहा॥लगावोंनांवसूं
नेहा॥कटेंजमकालकाघेरा॥कहैसिवचंदजनतेरा॥
जगतयेरैनिकासपनां॥समझिदिलदेषिकेअपनां॥
५॥ इतिसंपूर्णं॥ रूपडी॥अवमनमेरावेसुंनिसुनिसी
षसयानी०॥जिनवरचरनोंवेकरिकरिप्रीतिसुज्ञांनी
करिप्रीतसुज्ञांनीसिवसुषदांनीधनिजीतवहैंपंच
दिनां॥कोटिवरसजीवोंकिसलेषैं॥जिनवरणांमुज
नतिविनां॥नरपरजायपायअतिउत्तमग्रहवसि
यहलाहोलैरे॥समझसमझिबोलैंगुरज्ञांनीसीष
सयानीमनमेरा॥१॥तनतितरसेवैंसंपतिदेषिपरा
ई॥वोयाजुंनियावेयहनिजपूर्वकुंमाई॥पूर्वक्रिमाई
संपतिपाई॥देषिदेषिमतझूरिमरेवोयवमूलसलत
रूपूंहवोआमतकीआसकरें॥अवकछुसमझिवा
धिनरचोंसाज्यौंफिरपरमवसुषदरसें करिनिजध
नदांनतपसंजमदेषिविनोपरिमतितरसैं॥२॥जोजग
तीसेवसुंदरअरसुषदाईसोसवफलेपावेंधरमकल
पद्रुमन्याई॥सोसवफलियाधर्मकलपद्रुमरघप
युकवकूंरिधिसही॥तेजतुरंगतुंगगजनवविधिके
थ्रोदहरत्ननछखंडमही॥रतिउणियाररूपकीसीमां
सहंसछयांणवैंनारिवरैं॥सोसवक्योनिधरमफलना
ई जोजगसुंदरडिष्टिपरैं॥३॥लगेंअसुंदरवेकंटकवों
नघनेरे॥तिवरनगयेंगुनपलटैं॥अवनहिंदेषेनावै
ध[illegible]ोटामहीकांतिकरिअजल्लें॥करिअपनांसलजेउ
अंतिआगिमेंईंधनहोयगो॥भूधरसमजिसमेरा०॥च
र[illegible]पावलतांनांहिवे॥चरषाभयापुरांनां०॥ ॥श्री

पदराग॥कालसकलजगजीतावेकोईकालजीता॥अ
कसमातईमआनिदबोचैजैसैंमृगकूंचीता॥वेकोईका
लनजीता॥१॥बलथरिसूरिमहानडजोधातिनसबव
सिकरिलीता॥ताकोडरराषतनहिंकबहूंयहदेषो॥
विपरीता॥काल०॥अरुफूंबीमायासोजलभाया॥मोनि
राषीअपनीता॥देषिपेटग्रहछांडिचलावनहाथकुं
लावस्तरीता०॥वेकोईकाल०॥यासेंजीताहैतेही
नयाहैंमुक्तिकामीता॥वासूंवारजोडिकरितिनकूंन
वलनमोसतकीनो॥कालसकलजगजीतावेको
ईकालनजीता॥३॥इतीसं०॥अथरहारागफंजोटी॥जिन
नामजपितूंजीवडा॥नरजन्मउत्तमपाईया॥टेक॥लष
जोनिचोरासीतणोउषमूदूतविसराईया॥१॥लषित्र
मतीनूंलोकमैंयोकालअनंताछाईया॥कोईनिदे
अवभागिकेंतूंनीवतीरआईया॥सबजानिस्वार
थकेसगेतिनहेतमूरिषधाईया॥जिन०॥२॥जेहैंसे
रोमणिधनितेअरहंतकेगुणगाईया॥संपतिचहो
अविचलसदापरनेहतजिनजिसाईया॥जिनना
मजपितूंजीवडानरजन्मउत्तमपाईया॥३॥संपूर्णं
॥अथअध्यातमसौलवाकापदलिष्यते॥जिनदेवयेक
हीजपनो॥उसराक्याकरनोक्याकरमो॥ओनदेवतैं
काजनसरनोक्योमिथ्यामैंपडनो॥उसराक्याकरनो
१॥टेक॥भवहोमैंभ्रमणकरणकाकारणछांडिछांडिप
रिहरणो॥वीतरागसरवज्ञपायकैविधिसेंपारगत
णो॥उसराक्याकरनो॥२॥जबलौंभेदन्याननहींजा
ण्यो॥चतुर्गतिमैंउपजनमरणो॥सिद्धिसरूपमिलेमो
ह्निसाहिब॥फेरिनजगमैंफिरणो॥उसराक्याकर
नो॥अथपदसंपूर्णं॥अथरागनेकमैंलिष्यते॥सुर
तिकेसीराजेनिरषतमतना२तीर्थंकरकरध्यानधरत

हैं परमांत्मपरकाजैं निरषमन सां सांम्रागें दि ष्ट कुंथा
रे मुषमुंलकंलमां तुलाजैं॥ अननवरसफिलकलमां
नुं ऐसें आसनसुष विराजे निरषमन:॥ अघनुतरूप
अनूपममें हैं मांतीन लोकमें छाजैं॥ जा कीछवि देषत
इंद्रादिक चंद्रसूरघम लाजैं॥ निरषमन:॥ धरि अनुरा
ग विलोकत जाकूं असुभ करमतजि भागें॥ ज्यों जग
रां भवनैं सुमरणतें अनहद बाजा बाजैं॥ निरषमनतु
रति केसीराजैं॥ नु॥ संपूर्णं॥ पद छभाति लिषते॥ चंदजि
नराज के चरन न चिंतवन करत रोग ड षसोक अघ
हरिभाजैं:॥ टेक॥ जवैं मरैं नीरत वध्यान हियमैं धरू अ
सुनसवजायसुत काजसाजैं॥ चंदजिनराज के चरण
पापसव हीगये तुंन्य परगटनये भक्ति के जोगतें रा
ज राजैं॥ कांम अरमांनु रासिचरनछवि निरषि करै
नि दिन एक सी देषलाजैं॥ चंदजिन०॥१॥ चमर वरू
सो करुरसुण्य वर्षा करैं॥ तीन सिरछत्र आसन सुंभ्र
जैं॥ देहकी कांति कुंनिंड समिवजत हैं॥ निजसुषसरूप
लषिपांनगपाजैं॥ चंदजिनराज के चरन चितवन क
रत रोग ड षसोक अघहरि भाजैं॥२॥ संपूर्णं॥ पद और वह
नुरिमो लिषते॥ मन वातु प्रभुजी सुं ध्यांन लगाय॥ औ
न औरआंसंहीडरास ओरछरमति॥ हारें प्रांणी कुं वा
धईकांम हटाय॥ मनवातु॥१॥ नाइ औरवंदसव कटूं
व कबीलौ तेरे॥ हारें प्रांणी कुं वंधेर कांमहटाय॥ मन
वातु॥२॥ हाथजोडि वीनती करूं छू प्रभुतम हीसुं॥ हा
रें वंदे सुघर आवैं सोजोय॥ मनवासु प्रभुजी सुंध्यां
नलगाय॥ नु॥ संपूर्णं॥ रेषता लिषते॥ घरि घनि आ
जि कीयेही॥ मेरेसवहो काजमोमन के॥ गये अघ॥
हरि सवन जिकें॥ लष्या प्रमुष आदि जिन वरका॥१
विपति नासिसकल मेरी॥ मेरे मंडार सेपति का:॥०॥

सुधाके मेघऊंवरसे॥लष्या०॥४॥नरीपरतीतरामेरेस-
हाहोदेवदेवनकों॥दृष्टीमिथ्यातकीमोरी: लष्या०॥०॥वु-
रदअैसाअनुपोमैतो:॥जगतकेपारपरनेंका॥नवल
आनंदऊंपाया:॥लष्या०॥संपूर्णं:॥कीयेआरोधनो॥
तेरी॥हीयेआनंदव्यापतहैं॥तिहारेंदरसकूंदेषैं॥स
कलहीपापनासतहैं॥१॥भलीविधिपूजिऊंकीनी॥
वहोरिसुंभदांनदीनाहैं॥करोजिनभक्तिहितसेंही
जमारासुधकीनोहैं॥२॥यक्योमैंदृष्टिकेंसगरे लषे
मेंसुरविशेषाहैं॥नहीकोईतुमतुल्यदेवाजगतस
वहेरिदेष्याहैं॥३॥सहीहोजगतपतितुमही॥उधार
कविरदनाराहैं॥कहांलोकीजियेमहिमा॥करतभ
जसइंद्रहायाहैं:॥४॥हरोउषमोलगोंअवही॥लगे॥
औसंगसाराहैं॥प्रभुजीयाअरजचितधरिये॥नव॥
लचेरातिहाराहैं॥इतिस्तुति॥विषैत्यागश्रमकारे
जलागौ॥प्रभुसुमरनदीवारवे॥जगनायकजगवं
दनकरिये॥येहीजगतमेंसारवे॥विषैंत्यागि०॥१॥दी
नउधितसवहीकेरिछक॥तिरधाराअधारवे॥म
मछोडिग्रहअैरकटकसवयेवांछामनधारवे
लग्याहोजिनचरननसेती॥ज्योसुषहोयअपार
वे॥विषैत्यागि०॥२॥नवलकहयहअरजकीजि
योभवदधिपारउतारवे॥विषैंत्याग॥२॥३॥पदसंपूर्णं
पदनेककीचालमेंलिषते॥प्रभुचरणारहेंदनोमिने
दकेरा॥टेक॥कोटिनोंतुमेदतिहोनषनकाकजेरा॥
तीनलोकव्यापितहैंप्रतापहैघनेरा॥पूजेचरणारविं
द०॥१॥सूरतिकेदेषेपापआवतनहीनेरा॥सेवतचर
णारहेंदकरमहोतजेरा॥पूजूचरणारविंद०॥२॥जो
धापरिमहरिकीज्योलावोंमतिवेरा॥स्वामीअरदा
सियेहीदीजेमोकुडेरा॥पूजूचरणार॥हेंदनु॥संपूर्णं:

राग दिला वलमैं॥ षोयो रंग वार तैसा रो दिनयो हि षोयो० टेक॥ सामायक पुजा नहिं कीनी॥ रैनिम ईडग छाया॥ लेने दा न रि षोयो॥ सोयो रंग वार तें मारो दिन यो हि षोयो॥ १ वालपन कछु रूपा न कीयो नहीं॥ जोवन मतिसा नार तें सुन वीजन वोयो॥ षोयो० २ नृहिपणैं तसनां अतिप रणी॥ सवघर कोंडषनार तैं तिजिहा तनम दोयो॥ षोयो० नू॥ सुगुरु वचन दरियाव मैरें॥ आयो आप समहारि० तें विषदामन छोयो॥ षोयो रंग वार० ॥४॥ संपूर्ण॥ अ प दला वणी मैं लिषते॥ अरज हमारी सुणों दीनपते कीं नप्रोति तिरनों॥ हमधू वी फिरत संसार चतुरगा तिसो तुं मसुं तिरणों॥ टेक॥ घोराघोर नरकके मीतरे नानांडमनरणों॥ नाडनमारणछेद णभेदणा॥ औरे देहधरणां॥ अरज हमारी १॥ कवकं कति रजेव जोने पापकें॥ गले पासि धरणों॥ षुद्धा तिरषा अरसीत हुं सनता:॥ मारि मांरि करणों॥ अरज हमारि २॥ मिन बाजनम पायकें विसर्यो:॥ विषें नो गचरणों॥ रोवर्ब कछिनमांहि दीषत:॥ कहुं नांहीं सरणों॥ अरज हमा रि ३॥ देवविभूति पायकें सुंदर अदिक देषि कुरणा:॥ तवमाला मुरफाणों लागी॥ सोच कीयो मरणों० अर जहमारि॥ ४॥ ऐसें अनंत वार मैं नट क्यों॥ कहुं नांहि मरणों॥ साहिव मों सरणांगति राषो॥ जनम मरणहु रणों॥ अरज हमारी सुणों दीनपति कीं नप्रीति तिरणों ॥५॥ संपूर्णं॥ पद रागमल्हार टी मैं लिष्यते॥ चतुर नर मन कुं समफांणों॥ विघटघाट पाषंड जग सिरवर पारउतर आंणों॥ टेक॥ मधुवुघधर नमिथ्या जल लेंडा॥ इंद कुत नमांनो॥ पावक धरे तौंपक रिडवो वें कुगुर सुगुर दानों॥ चतुरनर मन कुं समफाणों॥ १॥ न कट जाय सौ जलधी वसौं होय है राणों जलषारो अतिरोग वडावे॥ रामदोष

मानो॥ चतुरनरमनकूंसमझाणो॥४॥कूं घरमनुंजांडेगेला
हेमोहअमछानो॥कोमलोभदोऊचोरलुटेरा करेवहोतअ
नो॥चतुरनर॥४॥कुवदिघोनतावफकफोलेंअलाजक
स्आणो॥ खरचीलारविमलनावनोलीजेमुनमानो॥चतु
रनराध॥ मुलदपीनसतगुरषेवटया॥अनकेसंगआणो
देवकहेसिवपुरजोचालो॥सावधानस्पाणो॥चतुरनरम
नकूंसमझाणो॥५॥संपूर्ण॥पद [illegible] ॥आयक
पथिरनहीरहगीजाणतहेसवकोय॥फंठीकूंसोचीक
रमोन:॥करमवंदेनतेतोय॥सुरनरप्पांनीडारेमारमअ
पणोजोय॥आपापुरकानेदलष्यावननरमतहेपद
मोय॥तुनम्बकरिदेषिसयानोंजनमसरणउपदेईसुर
प्पांनीडारें॥१॥उतमकुलसरावगकोंपायो॥सोअवर
यामतिषोवो॥अवसरवीत्पापरपछितावेकहदेसह
तोयहे॥सुरप्पांनीडारें॥२॥परमतिछोडिलागिसुवमा
रग॥रागादिकमलधोय॥जिणवाणीधारीतेसाहिव
मुक्तिवंडवरहोय॥सुरप्पांनीडारें॥३॥ [illegible]
[illegible] ॥कोईनहीमेंतातेराजुमेटेक॥समझसोचकरे
दषसयानातुतोफरसअकेला॥जुगमेंकोईनहीमेंताते
रा॥१॥सुपनेंदासेसाररच्याहेंहटवाडेदामेला॥विनसिज
यअंजुलिकाजलज्युतोगरसगहेला॥जुगमेंकोरीप
रसिदामाताकुमतिकुमातामोहलोभकरिखेला॥येते
रसवहेंउपदासीनुलिरहोनंजिगेला॥जुगम॥२॥पातै
सोचसमांलप्पोनकरिफेरिमिलेनहिंबेला॥जनिवा
णीसाहिवउरधारेपावेमोषिमहेला॥जुगमेंकोईन
हीमेंतातेरा॥३॥संपूर्ण॥वीतगईसारीरनिप्राणीलारे
टेक॥दोयघडीकोंतउक्योरह्यो॥छोडिदेहसवफेमःप्रा
णीलारेवीत॥१॥उतमनरभवसंगतिआत्म॥मतिषे
लयोसवजेन॥प्राणीलारे॥२॥जोकछुकरणीहोसोही

करि सुण सतगुरके वेन॥२॥ इति संपूर्ण

॥ अथ नेमिनाथजी का दसभव लिख्यते॥ महेलां वाला हो प्रभु नाव स्योजी॥ मेहलां वाला नेम कवार॥ गादी राजल वि नवे जी॥ अरज करां छां वारंवार॥ थे तो प्रभु दयाल हो जी॥१॥ जाय चढ्या छो गढ गिरनारि॥ महेली संजम हो प्रभु लीयो स्याजी॥ संजम ल्ले स्याथ्या की साथ॥ बारा मास्यां हो प्रभु मा वनोजी॥ नाना विधि तेजी तप सार॥ नव समुद्र हो प्रभु कं डियाजी॥ म्हांको हमारो जी तुम हो थ॥ अवमोहि स्यारो प्रभुजी तुम घणी जी॥२॥ नव नव की मैं थांकी चरयोजी॥ दानु वैम वनी राषो साथि॥ पहले भव तो प्रभुजी नील छो जी॥ मैं नीला णीथ्या की सोथि॥ मुनि वरक तो मारण ताव याजी॥ हव करि राषा मे हजिण वार॥ मुनिवरकुं तो थे वंद नो करी जी॥ सुभ गति बांधी थे जी वार॥ अवमोहे स्यारो॥३॥ दुजे भव तो कवासे व हीजी॥ नाम धरायो तपदन के तडं से वाणी थ्यांकी संगर हीजी॥ तप मिलि कीयो दोन्यां साथ॥ अवमोहे सारो॥४॥ तीजे भव तो सुर पहला सुरगमे जी॥ व री अपछरा थे प्रभुमो ही॥ नाना विधि तेजी सुष भोग याजी॥ वे विदिमादा हम तुम दो य देव॥ तीर्थंकर देहे प्रभु वंदियो जी॥ हेत्र विदेहा हे प्रभु जाय॥ पहला भव सुं बांध्यो दो कडे जी॥ पायो सर मजे ह अपार॥ अवमोहे०॥५॥ चोथे भव तो हो प्रभु आ ईया जी॥ वीघा घर का हे कुल मां हि॥ चिंताग त वी नाम धरायोजी॥ विजयारथ गिरहि रमां हि॥ वेडाव स मेंहो प्रभु ड पमोजी॥ जदवी में छीथ्या की लार॥ अवमोहे स्यारो॥६॥ पंचम भव तो चौथा सुरगमेंजी॥ मोटा देव जईड ज होय॥ और देव तो सव सेवा करे जी॥ सीसनवा वैस व ही तो य॥ अव०॥ छटे भव तो अपराजित कवाजी॥ राजा ज्ल्व जी को ई सार॥ व रत ज पाल्यो हे सुरा व गत णोजी॥ पुंम्न

पजायो दोस्पा सार॥मुनषादेही कौ लाहो लह्यौजी॥धर्मजिनेसु
रहैं कोइ पाय॥अब मो हे सारो॥७॥अच्युतइंद्र कवाम वसातैवे
जी॥स्वर्गसोलवे उपन्या जाय॥तिथ सागर तो हि वांईस की जी
वीन हसत की कोई काय॥वा का सुष कोजी कोई अंत नही॥
जी॥कह्यो किनी सै हैं कोई जाय॥अब मो हि सारो॥८॥सूरप
तिअसे कअवअवेजी॥राजुल कुल में मैं हैं अवतार धारी
परषी प्रभु अति घणीजी॥मैं पटराणी छी जिह वार॥सा प्रभु
नी म्हर हो प्रभु पोषियांजी॥दांन दज दीयो च्यार प्रकार॥व
रतज पाल्या हे म्हा वगतणौजी॥धर्मजिनेसुर हो प्रभु पोषि
योजी॥तिर्थंकर प्रभुजी तव वंध्याजी॥जो तुम जांणो सव नि
रधार॥अब मो हे सारो॥९॥अहमिंदर को नी पद पाई पोई
जी॥नव नव की ऊंजिय छै वात वा का सुष कोजी कोई अंत न
हीजी॥कह्यो किनी सै हे कोई जाय॥अब मो य॥दसमां नवतै
हे प्रभु आईयाजी॥जोउ कुल मे हे अवतार सेवा देवी मा
ता उरधरयाजी॥नगर द्वारिका कही कोई सार॥१०॥समद
विजेजी राहेलाडीलाजी।कुल मैं चंदज वेंदसमां नाम्या त
पिता तौ हे हरष तनयाजी॥तीर्थंकर सुत हे कोई जांण ज
नमस मे तो सुं छी ति आईयाजी॥मेरगिरा परि हे ले ज्याय॥
जल न्हाय के जी सहस्र अठोतर कलस ढलाये॥११॥ज
नमस मे को वरनन कर सके जी॥सुरपति कहे तने पाव प
र॥वाजा वाज्या उछवजी अति घणोजी॥उधविसवद अपा
र॥जनम महोछव देवा सो घि के जी॥तात मात ने सो प्यो आ
य॥जनम सुं फल सुं र अपनो जानि के जी॥सिद्धस्थान का
पो हच्या जाय॥अब मो हे॥१२॥निसिदीय जि की प्रभुजी च
ढिरही जी क्रिडा करि हैं आगणमो हि॥बालपणो सो प्रभुजी
रमत हे जी॥ईस विधि दिवज रणगुमां य॥एक दिन तौ वे प्र १
डा महाराज हे जी सुन क्रीडा की करवा जाय॥रति वसंत सो
हे आई निली जी जलक्रीडा नी सव ही कराय॥अब मो हे॥१३

मं०दस०
१२०

केरूपयाउं वहलधरजादवाजी॥मतो मतो छे हेजी हवार सा
रामेही वलकुंणमेंघलोजी जी कोत्र्र वही करो वी वार॥कोई
वतावेपांडव महावलीजी॥कोई वतावे केसि वराय॥सार
ही कोहे वल तोलियोजी॥षडास नामें सव ही आया॥नेम
नाथकी सरभरकोंनहीजी॥वदन रहे सव ही विलषाय॥
अव०॥२४॥केसिव कैं मन संसोउपनोजी॥निमत जम्पोनी
पुंछणजाय॥यांह करावो नेमकुं वारकोजी॥मनमें वेराग्य
हेउपजाय॥उग्रसेणकोटीकोनेजियोजी॥राजलदे नोयौ
नमगाय॥समदविजेजी राहेत नंदनजी॥उग्रसेनवी मनह
रषाय॥वडी वधाई सव घरवारमेंजी॥सजेनगर वाहें कोरी॥
पाय॥अव०॥२५॥लगन लिषायो सुभ दिन सोधि कैजी दी
नो व्रजलल लगन पठाय॥समदविजेजी कलससो पिये
जी॥पोहज कहज षी दाय॥जोंन ह्गिं वर प्रभुकी हदवनीजी
छपनकोड़ि सव ही सिरदार॥जादव वंसी सारा सेगलीया
जी॥चरया व्याहज नेमकुमार॥अव०॥२६॥उग्रसेंगदनी
उरलभ आईयाजी॥तोरन चढियानेमकुंमार॥पसुंवन
कोभी है वाडो भरयोजी॥पसुंजी वो करीपुकार॥सुणीपुका
रजीवां तणीजी मन वेराग्य हेउपजाय तोरणसे ती रथ फे
रियोजी जाय चढ्या छे गढ गिरनार॥पाचरवा प्रभु मे सुणल
हीजी॥तोडागेणांनो सरहार अ०॥आलातमात भी यो सम
जाईयाजी मे हभी आरी थांकीलार॥अरज करूं छू प्रभु थे चित
धरोजी॥येक वात की वात हजार॥न व समुझल प्रभुजी
रहेजी॥तुम ही उतारो जलसे पार॥सेवक आ० वाडो हे प्रभु वीन
वेजी॥भविजीवनको हो आधार वो॥२८॥राजल तव ही है॥
अरज करनईजी॥उन्हें त पहुत हे कोई धार सुगसो लंवै
सुरलल तांगनयोजी॥अस्त्री लिंग छेदि कोई सार॥नेम
नाथजी को मुकत गयाजी॥सी छिमधांन कप हो या जाय गौ
सी सुणसी पदसी भाव सोजी॥सो पंचम गति हे कोई पाय॥
अव०॥२९॥इति दसनव नेमनाथजी का संपूर्ण॥:॥

अथ नेमनाथजी को बारमासो लीजते ।। सहलो हे आयो छे सा
वणमास मेघला ण चालो तीजडीजी । सहलो हे राजल कीयो छे सी
गार नेम मनावण कारणजी । सहलो हे नेमजी लीयो छे वैराग फी
रीया छो चोघरीजी ।१। सहलो हे भादु भरीया नलाव महीकव
लवीगासीयाजी । सहलो हे नेमजी नकहजो जाय के लषकरो
नोवाहडोजी । सहलो हे माहने नही लगारा । पे हेनासज मले
पस्याजी ।२। सहलो हे आसोजी आयीका रडसरा हो थे घरीकंरा
जी । सहलो हे नेमजी की पकडा फटे हाथजोडा बीनती करजे
सहलो हे नेमन माननवा नाराजल मन वीलीषो गयोजी ।३। सहलो
हे कातीमें कोण वीचार । नेमन दीषवा सतोजी । सहलो हे घरी घर
दीवलाजो पकदीवलावी नका रोहोजी । सहलो हे कामण भकी
यो छे सीगार ऊ नेमवो हणो मोरह्याजी ।४। सहलो हे मागीसमंर
जाद । ऊ नेम नोण कोरहजी । सहलो हे वामण अपड गवार ।
कुडोल गनंलीष्यायोजी । सहलो हे माहा मकारे चुकवीणओ
वगणऊ को भरी हरजी । सहलो हे पोसम पुरी असी सं । ऊजी नर
सी कोरे हंजी । सहलो हे चालो सषीदस साथी । पहरी पटमंर सव
टोजी । सहलो हे नेमजी नकहजो जापे राजल आव अरजनजी
६ सहलो हे माहा मासकी रातीऊ नेम नोणे कोरेहजी सहलो
हे नेहन तोआ जाप आछनवन की आरतडीजी । सहलो हे वा
मण नकारे दोस करम लाषे सो पाये योजी ।७। सहलो हे आयो
छे फागण मास हेली पुजण चाल्यापजी । सहलो हे षेलसषीव
संत । षेलवामण वाण आजी । सहलो हे षेलसा तुपोणीऊ वाण षे
लीकोरहजी ।८। सहलो हे आयो छे चैत मास । ममता नाजी मनंरा
णीजी । सहलो हे सनामसम काय ओरनेला व रआणीस्याजी
सहलो हे नेमवीना ओर कोनही पानावरा वराजाणीस्याजी ।९। स
हलो हे वसाषावनमाहा दीषत लतुआ रह्याजी । सहलो हे राजल ब
सो वोलकडवामीठ सहको होजी । सहलो हे देषी चीत वीचार

सासोना गोमनलणोजी।१०।सहलोहेआपोछैजेठमासराजल
मनगा छोकीयोजी।सहलोहेतोछोबैनोसरहारंमंनसंतोषो
आपणुजीसंहलोहेनेमजीसुकहजोजाप्पामेहानासडामले
मीलाजी।१४।सहलोहेअसा छाअथाकारगीरनासाचछोवा
लीस्याजी।सहलोहेराजलनेमकवारदोन्यामीलीकरानपला
पोजी।सहलीहेयोहम्मा छैमोषाडवाराजनमसुधारोआपणोजी
१२।सहलोहेजवाछैजनकारसुजणआमादेवा।ताजा।सह
लोहेराजलनेमकवारजीहीकी लूहरागायस्याजी।सहलोहे
पासीसुषअपारयासीसपतीन्नतीयनीजी।सहलोहेदेषसवंस
मारसुजाणवाणीगावमननलीजी।सहलोहेगावसवनरीना
रीनारीआपसुहरागायस्याजीसपुरण।दसकनलीखुमीराम
गो घाम॥१॥अबेनेरायेथ्यानवोपेचलेरायेषकोचलायोतीमेएती
बस्तडरिकरणीवहराईतीकोकागदकामाकासाहिमीनायानस
पानेरिकागोदीकांलिषिचलायोतीकोजवाजुवाबआयोनीकी
नकलकागदकरारमितीफागणसुदि५संबत१७३४णकीसा
गानेरिकामहाजनांनेकानावतजलासरहंसिधिश्रीसगानिरिसु
जसथानेकअनेकवोपमाजोगपना २जीश्रीसुकंदरासजीना २
जीश्रीदयाचदजीना २जीश्रीमहासंघजीना २जीश्रीछाजुसा
हजीवाकील्याणदासजीन्नासुदरदासजीवाबाहारालालजीस्म
ससाहिमाजोगपलिषलकामधिहरकीसनदासचितामणिदेबी
दासनंदलालजगनाथकेनश्रीसबदबमाअवाकासमाचा
रलालाछेथाकासदानलाचाहिजेअर्प्रचिकागदथाकोआ
योसमाचारजाएमाआगेदहबिधिहोपछीतामरतनाहा
लमेटीमा-त-जलपाचाठाअजबरामगोदाकाकाडेरामें
छीनासुनकलछो॥

॥१॥ श्रीप्रतिमाजीआगस्नानरणहोतीअवैनीरानरणहोय
॥२॥ छै।श्रीभगवानजीकीपुजाबगिसरवाअवैवनाहोपक
॥३॥ रछै।श्रीदेजराजीमनेडारहेछोसोअबेनेमारउरिक

करनोआगासेश्रीजीमारगपिछानेपावेनिरमायलवहरायो॥
४॥श्रीजीनीतलोटपरिपथ्यएपकलसटालतासोअबेआजीकीप्रति॥
मातोबेदाउपरिबाणजेजैवाकीतैवेहीरहैअरमुदाआगेअलाह॥
दाकलसटालेजैसेतोयाबिधिछेआगासेताउमेदमारचाजोप॥
जीरीतिनहोय:
५॥अरसोतिकबिधिबेत्रपात्तनोवृहकीपुजाहोयछीसोमनेकरा
६॥अरआदेहराजीमेजुवाखेलतासोमनै॥:॥
७॥देहराजीमेबीड्यावगेसेतीबहालिखेतासोमनै:॥
८॥श्रीजीकीपुजाकरताआरसीमपडसायालतासोमनै॥
९॥देहराजीमेमालखेतासोमनै:॥
१०॥देहराजीमेश्रीजिणजातासोअबेदरवाजाबारेहमाहिपसि
बानेपसे:॥
११॥देहराजीमजुत्याकोजोडोलेजातासोअबेमनेकरोदरवा
जाबारेरहे॥
१२॥लोगवगेकोअगोत्रोछुपिपोचाराभेयालिचहोमतासोमनै
+॥राछयपहलीश्रीजिणमाजतासोमनकन्या॥
१३॥अबैमहाजनहारात्रमाजछैपाणीपुजनेमहाजनहील्यावै
१४॥नाहवणश्रीजिणघरघरसेतील्यावतासोअबेम॥
नेकरोअरएकसरावगीहाएकघरसेतील्यावे:॥
१५॥कुलिगीवगे·निरमायलकोअगीकारकरैतीनमानानहा
१६॥तालकातरिश्रीजाणकसावटबजावतासोमनै:॥
१७॥रांधोनाजचढावतासोमनै॥
१८॥पालोमीचढतीसोमनै:॥
१९॥देहराजीमेआपसमेकोइकहीनेउठिउठोनहोयराक
भगवान्जीकीबैठगीमेरहे॥
२०॥भादवासुदि१४केदिनभुगाइआजाकीबेरीचोगिरदा
फेरआपसमेकूटकालेरसोमनै:॥

तासी ... रातिपुजाजी नकरे दिन ही करे॥

१३२ २२॥ रथजात्रा नकरै जो अजजीवकी उतपत्ति घणी तासु दया नसधे सो दयारा धिकाम करणु॥

२३॥ श्री देजराजी मे सोवे नही॥

२४॥ जुगा इंगोली दाल ती सो मने॥ सो

२५॥ श्री प्रतिमाजी घराघरा लेजाता अस मा क ने सो मनै॥

२६॥ आसिका ने इ लिष्यो सो जुवाबली षणु रद लब दलंछे

२७॥ निरमायल सहर मे बिकबा ने पावे॥

पजचारो चढे सो नो जिग लेतु सो॥ स्वाहा सवद को अरथ हो म करिबा को छे॥ नीरमायल को जे जी कर्म्मं गा कार करे छे सो वे जीव नरक निगोद मे जाय छे सो चिताम णि के मैरे पुजाजी हो य छै ती वे होम कीजे छे अरु पंचायत इरेजा होम का करि बा को नमे दूषे छे और निरमायल बिनुसा॥ सो विषया य सो मरे॥

॥१॥ श्री जिना पनम॥ सहर षडे लै षडे लवाल एल एक न्या तिथपी ता मे आधी मे तो षडे लवाल वा सणा अर आधी मे षडे लवा लमहाजन न्याति हआ थी मे पाव न्याति षंडे लवाल वाल महे श्री आ वन्याति षंडे लवाल आच गाति हआ वगपा को अरो राक हुवे सहर षंडे लै षंडे लगिरस्वो हां ण राज करे॥ सो सहर को स २ रवा ई सके फेरि बसे॥ अर कोडि ध जसा हा कोट मे २२०००॥ बसे॥ अ ए ११ देजराजैनका॥ सो एक समै मल वा ई को दृषल हुवो॥ अ रि केसब राजा पंडिता ने बुलाय बुज्यो जो यो दृषल का दै मिटे॥ तदि प डिता कहि वा राचा रस ता ई रहसी॥ तब राजा कही उजा बी उ॥ ५ तासा को ई पून्य को उपाय करो॥ तदि होत्राहमणा कहीजन रमे द। जगप करी राजा कही कुं णा रह॥ तदि ब्राहमणा कहीजराक सो एक र आदमी हो मि हो मिजे॥ तदि होमकी तयारी करी राषा॥ सो दई जोग करिजती॥ ५०॥ पांच सैनग नमुराधा स्वान जस्याय जाजसा को अ डो वाग मे आयउत स्यो॥ तदि पंडिता राजा का बिनां हुकमा १ रा कसो एक जती हो मां तिहपा पकरि सहेर मे मलवा

री॥६॥ छठो बिक्रमसोसंबत३ मोत्रच्छ हंकारा॥ बंससोमकू
लचऊंवांण॥ उतनत्र हंकास्यौ॥ राजिश्री त्र्येरामंजी कूलदे
आचक्रेस्वरी॥ मासकेली॥७॥ सातवो बिक्रमसोसंबत४॥
गोत्र नरपति हेला॥ बंससोमकूलचऊंवांण॥ उतननरपस्पे
राजिश्री नरोतमगिरकूलदेआचक्रेस्वरी॥८॥ बिक्रमसुसं
वत५ बैसाषगोत्र पावडे किंयस्या॥ बंससोमकूलचऊं
वांण॥ उततनकीथस्यो॥ राजिश्री कालारामकूलदेआचक्रे
स्वरी॥९॥ नवमो बिक्रमसोसंबत६ मासजेष्टगोत्रजल
वा॥ बंससोमकूलचऊंवांण॥ उतनजलवण॥ राजिश्री
जसोमयकूलदेआचक्रेस्वरी॥१०॥ दसमो बिक्रमसोसं
बत७ मासआसाढ गोत्र सुलण॥ बंससोमकूलचऊंवां
ण॥ उतनमूलाण॥ राजिश्री धरमलकूलदेआचक्रे
स्वरी॥११॥ ग्यारवो बिक्रमसोसंबत८ मासकातीगोत्र
दडोया॥ बंससोमकूलचऊंवांण॥ उतपनडरडोयो रा
जा दमलारिकूलदेआचक्रेस्वरी॥१२॥ बारहो बिक्रम
सोसंबत९ मासफागुणगोत्र राजनद॥ बंससोमकुल
चऊंवांण॥ उतपनराजनद॥ राजारामस्पघकूलदेआ
चक्रेस्वरी॥१३॥ तेहरमो बिक्रमसोसंबत१० मासजेष्टगो
त्र डकडा॥ बंससोमकलचऊंवांण॥ उतपनडकडो रा
जा डरजनस्पंघजी कूलदेआचक्रेस्वरी॥१४॥ चोदवो गोत्र बि
क्रमसोसंब॥

१३२

रीबधुणां भीज्या सतसहजार १७००० ते मोकोडी धनमुवास्यांदे
पांणीदेवो नरह्यो तबनागनगरसोनटारकाश्रपसजितजापसके
तनांमनसोनङ्जाजिनसेनजीचेलानेविदाकीयेकाहीजषंडेले
धसेपाय [illegible] तूर्दमासमागिश्रिगोत्रसाहबडावंससोमकूलचू(
डंवाणए उतनसाहबडोराजासाहिमतजी। कूलदेव्याचक्रेस्वरी
श्राठैबीदसिचाकीफेरिजेनह्या।१५गोत्रविक्रमसीसंवत्।ए।मास
बेसाषगोत्रपाटणीवंससोमकूलतूंवरउतनपाटणिराजाश्रम
रांमजीकूलदेव्याश्रांमणिबाहणबलधलाटैनोहषीहोयगा(
पुबेचैतोहषीहोयाइहत्रहजिनसेनजीयानैजैनीकीया।श्राश्र
थग्रबउतपति।जसोनदीजीकेवारैसरबएकठासोश्राजमोन
दजीजैनधर्मकोबिद्यमांनजांणिकरिसरबसिष्यजताजना(
मैकहीजुषंडेलेउतपातऊवोसोश्रबकोईजावोतबसगल
कह्योजत्याहनेश्रागुरुश्रापश्रापाकरैसोजावेसीश्रागुरुश्रा
ग्यानेश्रोरहीनेकरीछाश्रजिनसेनजीउतमतपकोहो
यकरिकहीषंडेलेऊजासु।तदिसबतपश्रागयाविनाहो(
गमनकीयो।तदिसिष्यछास्योबिचाराजोबोतोउनमतहो(
यश्रगयोसोजिनसेनजीषंडेलेजायश्रारषंडेलवालमहा(
जनछाश्रेष्टास्यांमेश्रायवाकीरष्याकरीरष्याकराश्रएए(
जाषंडेलगिरकागोलीमेटासोषंडेलेगिरश्रादिनारी१४चोराती
जेनीकीयांतेठापछेजिनसेनजीकालवसिऊवातेछायछैगोतन
वांध्योषंडेलगिरश्रादिचौराताबैतोजेनीकीयागोतबांध्योयछै
बाकीगोतश्रारश्रोरांश्राचार्यांप्रतिबोध्यागोत्रा।८४चोरासीपर
जंतषंडेलाकागांवांपुश्रावकातहारकांश्रायणकीया।जसोभद्र
जीपछैजिनसेनपुहागांवमेरह्याजलीसोमहाजनानैप्रतिबो
धिश्रगांवमेजिनसेनजीरह्या।जसोभद्रजीताईतोबनवासी
रह्यापछैभद्रबाहूजीपाटिबैठ्यासगलाजस्याश्रापमोनो(
श्ररश्रायनग्यापछिजिनसेनजीश्रापणानोमांनायणिहजू
रिनगयातेठासुगछविरूद्धहोतागया।पछिभद्रबाहूजी
ताईतोबनबासारह्या।श्रसेतांबरजीघणादिनताईबनमै

लेजाप्रग्रहारकीयो।जेठापाछैजवाऊजाउरसीसदीजनगुरूले
पीछैयारीबांच्यांसिद्धिमतिहोइ।तेठासुम्राद्विसुसुएजीनोकीये
ग्रांम्रोरषुराणपुरनपस्या।जिनसेनजीकालबसिज्ञवा।ग्रर
ग्रैठाहीसुयाकापंच्यांकेमागथीग्राषाछुटतीगईयाठवरसि।
ग्रोरपकडा।तेठापाछैगछुग्रापग्रापणावाधां।समोधिकेर
ग्रापणानगरकग्रावककीया।ग्रावगाकैपग्रहकीयो।पर्म्है
कासोषंडेलवालग्रावकाकावंसकीया।जातिगोतचोरासीत
कोतपसीलछै।१प्रथमगोत्रसाहवंससोमकूलचोहाणउतन
षडेलो।राजाषंडेलगिरकूलदेव्याचक्रेस्वरीविक्रमसोसंब
त२कौ।२गोत्रनवसोवंससोमकूलचोहाणउतनग्रावसो।
राजाग्रावस्पधकूलदेव्याचक्रेस्वरीविक्रमसोसंबत२।३गो
त्रपहाड्याउवंससोमकूलचऊवांणउतनपहाड्यो।राजापूर।
णचंदकूलदेव्याचक्रेस्वरीविक्रमसोसंबत३।४।गोत्रपापडी
बालवंससोमकूलचऊवांणउतनपापडि।राजापोमस्पधकूं
लदेव्याचक्रेस्वरी।इकसूर्य्यमाता।विक्रमसुसंबत२।५।गोत्रग्र
रडकाबंससोमकूलचऊवांणउतनग्ररडकोराजाग्रजब।
स्पधकूलदेव्याचक्रेस्वरी।ग्राठेचोटसिपांसेनहीचाकीकोग्र
पमानकरैनहीं।६गोत्रग्रहंकास्याबंससोमकूलचऊवांण
उतनग्रहंकास्यो।राजाग्रनेरमकूलदेव्याचक्रेस्वरीसांमसके
लीविक्रमसोसंबत।७गोत्रनरपत्याबंससोमकूलचऊवांण
उतननरपत्यो।राजानरेतमगिरकूलदेव्याचक्रेस्वरीवि
क्रमसुसंबत।७।८गोत्रपाडेक्यासाबंससोमकूलचऊवांण
उतनकीयम्यो।राजाकाकायंमजीकूलदेव्याचक्रेस्वरीविक्र
मसोसंबत्।७।मासबैसाष।९गोत्रजलवांणबंससोमकूल
चहुवांणउतनजलवाणो।राजाजसोपपकुलदेव्याचक्रेस्व
रीविक्रमसुसंबत्।७।मासजेष्ठ।१०गोत्रबुलणांबससोमकू
लचऊवांण।उतनबुलाणो।राजाबुधरमलकूलदेव्याच
क्रेस्वरी।विक्रमसुसंबत्।५।मासग्रसाढ।११गोत्रदरंगोद

ओसीगो
१३५

बंससोमकूलचहूवांणभततनदरजे हो राजादमनारिकूलदेव्या
चक्रेस्वरी बिक्रमसुसंबत्५मासकाती १३गोत्र राजनदबंससो
मकूलचऊंवांणभत्तनराजनदे राजारांमस्यंघकूलदेव्याचक्रे
स्वरी बिक्रमसैंसंबत्द मासफागुण १४गोत्र हकंडा बंससो
मकूलचौहाणभतनम हकडो राजामहरजनस्यंघकूलदेव्याच
क्रेस्वरी बिक्रमसैं संबत् मासजेष्ठ २५गोत्र साहबडा बंस
सोमकूलचऊंवांणभततनसा [illegible] हबडे राजासाहिमलजीकू
लजीकूलदेव्याचक्रेस्वरी बिक्रमसैंमैंबतद मास्कंत्रसाटाञ्
ठेचोदसीचाकीफेरिजेनहा सोआठकैदानचाकाफेरानख
हापसोहा पलीलागीमेलिबा लागीकहीजेम्हारोहादि
नपुजि नीकसोयंमुनेफेरीञबजदिछेउ जोऊजो साहब
डोमाहारा बंसकौ औरकूलदेव्यापुजेनदिसौऔरलपुजे
लागासबत्१४५४ कासोचक्रेस्वरीबजनाकरूई हत्र
हषडेलगिरावगेरह्नाई २५ जातिचोहाण छामोजिनसे
नजीनेजेनीकीयाचक्रम्वरापंडेलगिरिकीगोलिमिटाना
सुपादेवाकूलदेव्याठाहराजिनसेनजीप छै औरओहत्रा
चार्य्यगोबापुयोतबाप्यो साकोनपसाल २६गोत्रपाटणी
यंससोमकूलउवससोलंषीभत्तनपाटणी राजापरसरामजी
कूलदेव्याआमणिबाह्याणबलधलादैतोहषाहोय गायबे
चैतोहषाहोयबिक्रमसैंसंबत्एभीतीबैसाषसुदि५पा
छैसंवत्१२८१ बारैधरमचंदसिंघाताकेबछराजवासर
जपाटणीऊवासुकानीआलमेंएकनाईबोतिमेएकभाई
सांमरिकूमावेवासोबोतिमैंसुकातीकादेमपऊंतानहांत
रिआरजमूरतिलिषिहरमपातिसाहासुंअरजपऊंचायछु
डायेबेटोकरिराष्यो मुसलमांनहुवो फेरिहा किमछै सांभ
रियोजोआईसरा मुसलमांनकरु सो धिजायनायातेपका
ड्या जोथेमुसलमांनहोहतदिवासरजवैसारानाईमसल
तिकरीआपसमेजोफलो धिश्रीपार्स्वनाथजीकीजातकोन

~~तेजापत्रमहारकीयो जैनपाछैमहूजाऊजीउरसासदीननुसुरं~~
~~तेपाछैपासीवांनांमिदिमनिहोह तैनसुत्रारितुसुराजाते~~
~~कीयोच्यवछोरसुरागापुरानपडरा मिलसेनजीकालवृकिजवा~~
~~करछेनहीसुयाकायंछांवैमामधीनामाछुटतीमर्यादनर~~
~~तिछोरपकडा नैनपाछैम वृन्मापत्रापसमवाम्यां समेविस~~
स्त्रिा वलेरवटासोजोकहामेहपार्श्वनाथजीकीजातबोल
छाजोम्हांकोनाईबछराजनैआंष्यादेषांतदिजात्राछोवेसो।
छवमेहथांस्यो मिल्पाम नोरथसिधिऊवेसोमुसलमानजा।
त्राकरित्रावांतदिछालाछवमुसलमोनकांतोजात्रालामे
नहीतीसुजात्राकरित्रावोछातदिबछराजकहोमेंतीचालु
गा।सोयेसाराफलोधीनैचालतागेलामेमसलतिकारासा।
जोबछराजनेदिनाईदेमारिजे।सोगेलामेदिनाईदेमाओसो।
सोपीरूवोसोसारोनापानेदषलदेबालागपा।तदिसाराक
हिजोछबऊंईसोहोपगईछनथेसहाईकरोतदिपीरकहि
जोतदिषांनैनोउमाहासुदि२नेकुंडामेषायसोवासापा
टणीकायराकापीरनेमांनेजायुपारणांकुंडमेषापसंबत
१३२३वासाकोसोटोयंडसी।१६गोत्रराठनतराठोबंसपा
मेचाकूलदेव्याओरल।१७गोत्रराठकाठतनराठकोबंसपा
मेचाकूलदेव्याओरल।१८गोत्रमोदाठतनमोदोबंसपामे
चाकुलदेव्याओरल।१९गोत्रमोठाठतनमोठाबंसपाम्ये
चाकूलदेव्याओरला।२०गोत्रराबतठतनराबत्योबं
सपामेचाकूलदेव्याओरल।२१गोत्रबिलालाठतनबिलाले
बंसपामेचाकूलदेव्याओरल।२२गोत्रजगराजठतनजग
राजबंसनादेचाकूलदेव्यासोनल।२३गोत्रछाहडाठतनछाह
डाबंसनादेचाकूलदेव्यासोनल।२४गोत्रश्रीमूलराजतन
मूलराजबंसमोहिलकूलदेव्याश्रादेवी।२५गोत्रलटावाल
टावालठतनलटावालबंसमोहिलकूलदेव्याश्रादेवी।२६
गोत्रगोतबंसठतनगोतबंसबंसबेसदेवडाकूलदेव्याहंम
२७गोत्रकूलनारायणठतनकूलनारायणबंसदेवडाकूलदेव्याहे

मा।१६। गोत्र वोरषंड्या। उतन बोरषंड्यो वेस गैहेलौत कूलदेव्या।
श्री।१७। गोत्र मोहनी। उतन सोहना वेस सोलषी कूलदेव्या आम
णी।२०। उतन सोरईजी गांव के नाई सोरईगीन छे सो नाना षांडे
कूलदेव्या आमणी। अरसागर सोना पातिष्टा।२५। मासांग्रि
कराई सिंवत ११११ वैसाष सुदि ३ वारे माघवे दूकै अरषड
गुसी नीषंकेलामेस तु कार वस।१२। वाईदायो। संवत ११२३
का सालमें।२१। गोत्र पावड्या। उतन मावड्यो वेस सोलंषी कुल
देव्या आमणी।२१। गोत्र हुल्लहर्या। उतन षंडेलो वेस सुदारहा
यमे हथोडो थ्यो उदि सु बज्रहथा कहांया बज आषा छे कू
लदेव्या आमणी।२३। गोत्र आपत्या। उतन आपस्यो वेस सो
लषी कूलदेव्या आमणी।२४। गोत्र गधीमा। उतन गधैयो वेस
सोलंषी कूलदेव्या आमणी।२५। गोत्र लोहग्या। उतन लोहा
ग्यो वेस सोलंषी कूलदेव्या आमणी।२६। गोत्र यापस्या। उत
न पापल्या वेस सोलषी कूलदेव्या आमणी।२७। गोत्र नोछड। उ
तन नृछे वेस सोलंषी कूलदेव्या आंमणी।२८। गोत्र वाउवा
ड। उतन मवाड वाड वेस चंदेले कूलदेव्या मानणी।२९। गोत्र
मोलसस्या। उतन मोलसस्या वेस चंदेल कूलदेव्या मानणी
।३०। गोत्र नगध्या। उतन गध्या गोड कूलदेव्या नाहणी।३१। गो
त्र गोत्र नगध्या उतन नंगध्यो वेस गोड कूलदेव्या नादणी सो या
दिहाडी रूपा की छी सो गला प ११ मिया सए घडा पोत्र अरदिहा
डी सोना की घडाई। अरवा तिज गाला गासे गोधा मे सा हने दरा
यो सिरदार षांतीह पारि तहारा त्रिपडो पडेरो सो हने दकोमा
थ्या का दिदिहाडास मेतले गया न दिसो गोधा हाथ्यो ■ देरपू
जबाला गया मरली बराने नी कजई हा थे पूजना व नादणी को
लि तो हूषपावे उदिन सूरू टिप डिगाई जो म्हाके तो सा। तिना घर
जी दिहाडी छे सो सां तिना यजी तो तिर्थंकर छे सो ये कहे छे। सो
नो लिसु कहे छे। संवत १२ पर ईहन्नह पूजेला गा नां दणी गो
धा के मभे छे। वस गोधा मे बेकतोल्या नीस स्या संवत १२०५ के
सालमें स्याको मोरो सद्देव को वेटो जिण देवमणि देव सा।

जिणदेवकातोगोथाहीकहावेअरमणिदेवकाछोल्याकहावेसे
संवत१२७०कासुंकालपड्योसंवत१२५४तांईबिरस१२तांईसे
सतुकारदीयोछोलरासंवत१२७३देऊरोकारायोचौलटारकसुन
कीतीके।७२गोत्रअजमेराउतनअजमेराउतनअजमेरीवंस
गोडकूलदेव्यानांदणी।७३गोत्रचोधरीतनचौधर्योबैसगोहिल
कूलदेव्यापद्मावती।७४गोत्रसेठीउतनसेठ्योबंसगोहिलकू
लदेव्यापद्मावती।७५गोत्रपाटोधीउतनपाटोध्योवंसगोहिल
कूलदेव्यापद्मावती।७६दूतिकसेठिगोत्रउतनडसेठ्योवंस
मेरछाकूलदेव्यालोहसली।७७गोत्रलुहाड्याउतणि।७८गो
त्रनरपत्याउतननरपालोबेसधयाकूलदेव्यानांदणि।७९गोत्र
सरबाड्याउतनसरबाड्योवेसधयाकूलदेमानांदणि।७७गोत्र
दोसीउतनदोस्योबंसपडियारकूलदेव्याचावड्या।७९गोत्र
कडवागिरउतनकडवागिरबंसपडियारकूलदेव्याचारव
डा।७९गोत्रवंदायकाउतनबंदायकोबंसोलोतकूलदेव्या
चौथिचिदायकव्रतमादोम्पूजे।८०गोत्रमोस्याउतनमोस्य
वंसपडियारकूलदेव्यानांदणि।८१गोत्रबडसालिउतनब
डसाल्योबंसपडियारकूलदेव्यानांदणि।८१गोत्रपाड्याउ
तनपांड्योबंसनिरबाणकूलदेव्यासरसल।८२गोत्रहूतिकप
ड्याआमणपाउतनपावड्योकूलदेआआमणिओछेचोद
सिमायदेहिजेवहोबलधबेचेनहीं।८७गोत्रबजमोहणप
उतनषंडेलोबजरहथोसुदारकूलदेव्यामोहिणि॥ ॥
इत्र है चोरासी जातिका बंस गाव उतन कूलदेव्या सुधा लि
ष्या है॥:॥:॥ ॥मनसूथपूरदासकृतजषडीलपते।
मनमांहिलारैसीषसुगुरकीमानिलेरे टेक॥संसारघारसा।
गरबिचिकालअनंतगुमायो॥ मनुषवनामरतनचिंतामणि
लागिउदेकरिमायो।सन ॥१॥ कथैकुलश्रावगतिस्याछौ।सम
किदेषिमनमांही॥ सबविधिनलीबणिवेलाई मोलवणोना

माही॥मन०।२।इसऔसरमैघरमनसेया।विषयनसूंरतिमां
णी॥इसविधिघाटसुहेलाजांन्या।व्यासमब्धाबेशांणि॥मन०३
कंचनताजनगंगाजलबिचिा।पलरंथाक्याकीया।नस्नवपा
पविषसुषसेया।फिदितुमाटाजीया॥मन०।४।औसांऔसर
यापऔनागया।सुषदाबाजनबाया।बिषेनिषादतुवाविजमटे
जनसजौह्वारजुषोया॥मन०५। औचपहरमैंकहरकरीसें।सा
सोघडीगुमाईकोडा।मस्याहाथिनआवे।पावूडीचतरांडूं
मन०६॥पापधहुरावीयनमौडामानिकसानूमेरायफलचत
दीबारहोपजलवेरावेगाबहोतेरा॥मन०७।औजूसमकिसमकि
सिहलूकरिलैकछूनलाई।मजिनगवंतनगईसगईऔवरा
विरहीकोनाई॥मन०८।औसैकहकरिगुदसमकावे।जोगरमे
ननवहियारे।यासूंअधिककहाकोईकूं।लाठालेकरिमारे
मन०९।अरदीआ।मिजयाडनवालाबेरनमिलिमाकोईम
धरवलिबलिसतगुरकी।दिलदीबिदनयोई।मन०॥

अबमनमेरेबेसुनिसुनिसीषसुयानी।जिनवरचरनांचेकरि
करिप्रीतिसुग्यानी।करिप्रीतिसुग्यानीशिवसुषदानछनजा
नवेहेपंचहूना।कोडिवररपजीवमोंकिसलेषेजिनचरणांवुज
नकिवला।नरपरजापयापऔतिउतिमगर्नसफललाहोलह
वे।समकिसमकिप्राणीगुरग्यांनीसीषसयांनीमनमेरेथनूम
तिनरसेबेसंपत्तिदेबिपराईआबोयानूनीपांवेजोनिजपूर्वकु
माई।पूर्वकुमाईसंपतिपाईदेषिदेषिमतिझूरिमेरे।वोपवं
बोलसूलननदनोहंकोंआबनकी [illegible] सकेरे अबनर
समकिबांधिकछूसोदाज्योपछिनवसुषदरसे।करिजितधर्मद
नतपसंजमदेषिबिनौपरमतिनरसै।२जोजगदीसेबेसुंदर
हेसुषदाईसोसुबनफलिपावेधर्मकलपडुमआईसो
सबधर्मकैलपडुमफलियारतिपायकनवरिडिसहीसो
जतुरंगतुरंगगजनौनिधिचौदहरतनछषंडमही।रतउनि

या रूप की धर्म फल पाई जै जग सूं दर दिष वै रै ॥ ३ ॥ लोगै सुंदर
वे कंटक बान षनै ये ॥ तेरस बेर स वे पाप कन कतर कै रे तेस बम
प कन क नरक कै रोग सोग उपति न नण कहु न सरी स्वारनह
तन पर घर घर फिरत फकीर नण ॥ तृष्णा सं पीडा उरझै नर हो
नन्र नादर पम पग मैं एस ब जानि पाय फल ना ई ॥ लगे सुंदर
जे जग मे ॥ ४ ॥ इस नन्र वन मै वि दो तुर तें जानी ॥ अब जो ना
वे वैसो ईसी षसपानी ॥ सी षसपानी जो मन मानी बेर बेर अब
कोन कहे ॥ सू कारता तू ही फल तु गता ॥ अपना सुषड
अपस है ॥ धन्य धन्य जिन मारग ॥ सूं दर सेवपन ॥ जो गति रूप
न मे या ते समकि परीस बनू दर सदा सरन ई सनब बनै मैं ॥ ५ ॥ इति
पूर्ण ॥ अथ वीनती लषते ॥ परममाहा उलक इन्नादि सुण वीनती
बरधमांन जिन पासि हमारी बीनती ॥ जिण चौबीसु पाप नमो मरि
नायके ॥ अरज करी प्रभू सेवग अगरपाप को ॥ १ ॥ अगततवम
तसारचतुरगति दुष सहया ॥ बिनि समकित मिथ्यात नर सुष
नालह्या ॥ म अज्ञा णमुति ही णजे दन ही पाई पीकु बऊ नम न
न हो पसुजस तुम गाईयो ॥ २ ॥ गुन्हगार को गुन्है माफ अब
कीजिये ॥ तुम हो दीन दयाल दया चित दीजीये ॥ पकवार को
बारह जार जुग्म नीये ॥ जै मोहि नबा रि ज अपनो जानीये ३ ॥ अ
ब पुनित दप्रभु मेरे आ ईयो ॥ मिथ्यात मरग यो तुम ट
ईयो ॥ जनमस फल भै यो आजि प्रभु ने ॥ टिया ॥ जन्म ज
न्म के पाप आजि सब मेटिया ॥ ४ ॥ जन्म कृतारथ आजि तुम अ
पनौं जानिये ॥ ना म क लंक रहित पद अपतु मानिये ॥
बरद तुम्हारो अब मो हिं तारिये ॥ भव समुद्र न प्रभु जी
रिये ॥ ५ ॥ तुम सम औरन कोम टेदुन्ह दरिया ॥ ६ ॥ हारं सुष
कारी नमू ही मया ॥ इन रंजु धनै उस ब तुम ध्याव ही ॥ तुम
दरसनाघपरम दन्या वही ॥ ६ ॥ गुपा धरमु नी वर ओष
टि ही ॥ सब ही को प्रभु तुम सव पथ लगा ईया ॥ ता तअर दे मदा

न छ[illegible]वंथानकौ॥ तुमप्रसादनहरिषम्रयोनिजथानकौ॥७॥
तुपरमातमदेषिजुपदअपनोलिष्यो॥आतमअनमोसअ
रूपगुणचष्यो॥सांसोसबमेटिगयोम्हाआनंदथयोमलः॥
अषिडतनिजपदनीजथटमलयो॥८॥नमोनमोप्रभुदेव
हरिषभरिआनिकै॥मगनभयोनुमानिरषतजिनप्रभूजानि
कै॥योहमलकिगतिनरनारीजोमनिथरिगावही॥अजराजक
हसुषमुकतिसुषपावही॥९॥ ॥ इतिबीनतीसंपूर्ण॥
अथअजितनाथजीकीबीनतीटालगीननाथडाकीम
देवधरमगूरबदकेजी॥सारवलागुपाई॥अजितजणराज
जीमोहिप्यारलागाजी॥प्यारत्नोलागोवालिहाबी॥मोध्र
तीपेमेह॥अजित॥१॥बिजयारेनुराणीतणाप्रभूकंषिलीपो
अवतार॥अजित॥२॥नगरनुअजोध्याकेविषै॥राजाजि
तसत्रकहार॥अजित॥३॥इंद्रमहोछववआईया॥कीयो
जन्मतणोरउछाहै॥अजित॥४॥इंद्रइंद्राणीबीनवाप्रभु
तुमत्रिभवनकराय॥अजित॥५॥हेमबरणकायादिपै॥प्र
भूकोटिसूर्यछिपिजाय॥अजित॥६॥लछिणसहसअठे
तरा प्रभूदेषतअघमटिजाई॥अजित॥७॥सुषनानाबिध
भोगयाप्रभूकहतनआवपापर॥अजित॥८॥तवमनमेंय
चिंतयो॥प्रभूछोडिपरिग्रहभार॥अजित॥९॥तपधरिक
रिनजिकाजकौप्रभूघातीयाकर्मप्रजारि॥अजित॥१०॥
तवसुरपतिमलिआईयाप्रभूसतूतिकीरीमनलाय॥अ
जित॥११॥केवलज्ञाननुपापकै॥प्रभूसिद्धसरूपसम्हारी॥
अजित॥१२॥जेनबिजनसरणोलीयो॥पायोअजुरअमरप
दसार॥अजित॥१३॥स्यावणतरणतिहाजहो॥प्रभूभवसमु
द्रकौपार॥अजित॥१४॥तेनरनारीमायरा॥प्रभूसुणिसीमन
रचिआणि॥अजित॥१५॥चंदकर[illegible]बीनतीप्रभूराषो
आधार॥अजित॥१६॥संपूर्ण॥॥श्री॥ ॥ ॥ ॥

नगरतहांदेवपूजाआदिश्रावककेषट्कर्मनिमेंसाव-
धानअरक्षायिकसम्यक्तरूपसूर्यकेप्रकासकरिसमूल
तैंनष्टकीयेहैंमिथ्यात्वअनंतानुवंधीकषायरूपघो-
मोहंधकारजानैंअैसोविमलवाहननामांवैश्य॥अरता
केरतिकारूपकेजीतनहारेहैरूपजाकेअरहंतदेवकीपर
मभक्तिकीधरणहारीलक्ष्मीमतीनामांस्त्रीसोपंचेंद्रि
यसंवंधीमनोहरभोगनीभोगतैंजेदोऊसेवाणीतिन
केवेतेरेदोऊभाईनिकेनीवज्रारिंजयअमितंजय
नामांपुत्रभये॥वज्रारिपितानेंसप्तवर्षकेंअनंतरजैनो
पाध्यायकेसमीपहमदोऊनिकूंच्यारूंअनुयोगके
समस्तशास्त्रपढाये॥वज्रारिपितानेंविद्याध्ययनकी-
येपीछेहमदोऊनिकोविवाहकरनोंविचार्यासोह-
मनैंगृहवासमेंकेदहोनेंकाकारणजोविवाहसोनां
हीकीया॥वज्रारिकुमारकालविषैंहीआकाशतलमें
जलकरिभरेजेमेघनिकेपटलतिनकाविलयकहे
एंतकालविनाशदेखिसंयमधरिगुरुकैंसमीपह-
मसमस्तवाह्यअभ्यंतरपरिग्रहकौंत्यागकरिजामें
काऊप्रकारहीआवरणकहिएंच्यारिप्रकारकेवस्त्रक
रिअंगकाआछादननांही॥अैसीनिरावरणीभगवत
दीक्षाअंगीकारकरी॥वज्रारिनेंदीर्घरहतअंगीकारक
रिअरचतुरपुरुषनिकेचित्तकूंचमत्कारकेकरनें
वालेअैसेंमहानउग्रतपश्चरणनिकेप्रभावकरिहम
चारित्रविषिभये॥भोसार्वभौमषटषंडकीसमस्तधा-
राकाईछकछत्रनायकहमारेउपरिस्नेहकाकारण
अपनेंपूर्वभवकासंबंधजाणि॥भावार्थ॥हमदोऊपूर्वे
भवमेंतेरेंलघुभाईथे॥तातेंतेराहमारेंऊपरिअत्यंत-
स्नेहभयाहै॥वज्रारिचक्रवर्तिकूंकहेहैं॥होतपोधनमोहिकें
कूंअद्वितीयसत्यार्थउपदेसदेउ॥मुनिकहेहैं॥भोराजन

अबैं मैं नंदीश्वरव्रत की विधि सहित सिद्धचक्र कौं पू
रि चक्रवर्ति कहौ जो आप फुरमाई कि तूं नंदीश्वरव्रत अं
गीकार करि सो तो मेरे उपरि आपका वडा प्रसाद भया। परंतु आ
पतीई सो व्रत किणसी विधि करिये सो विधि क्रपा करि क
हौ। तव मुनि कहै है भो राजन ईस जंबूद्वीपतैं आठमो नंदी
श्वर नामा द्वीप है। ता वाबै प्रथम जंबूद्वीप है। १। द्वितीय द्वी
प धातकीखंड है। २। तृतीय द्वीप पुष्करवर है। ३। चतुर्थ
द्वीप वरुणवर है। ४। पंचम द्वीप क्षीरवर है। ५। षष्टम द्वीप
घृतवर है। ६। सप्तम द्वीप ईक्षुवर है। ७। अर अष्टम द्वीप नं
दीश्वरवर है। ८। तिस नंदीश्वरद्वीप विषैं अर्हंतदेव के चै
त्यालय हैं तिन कौं स्वरूप कहूं हूं सो तूं सुणि। तिस नंदी
श्वरद्वीप के मध्य पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशा विषैं ई
नही नाम के धारक तेरह तेरह पर्वत हैं सब मिलि च्यारूं दि
शा के बांवन। ५२। पर्वत हैं। तिनि पर्वतनि के शिखर परि
एक एक चैत्यालय हैं। ते चैत्यालय शो शो योजन के लां
वे हैं। अर पचास पचास योजन के चौडे हैं। अर पिचे
तरि पिचेतरि योजन ऊंचा प्रमाण हैं। अर पंचवर्ण मणि
निके समूह करि जडित सुवर्णमई जिनके पीठ हैं उरस
हैं। तिन चैत्यालयनि में श्रीमंडप मैं गंधकुटी कैं मध्य ए
क सो आठ रतननि के सिंहासन हैं। तिन एक एक सिंहास
न उपरि अष्ट प्रातिहार्यनि करि शोभायमान पंचसै धनु
ष की उतंग मरकती अर अपनी प्रचूर प्रभा करि जीती है र
वि चंद्रमा तिकी कांति जिननें। ऐसी अर्हंतदेव की रत्न
मई मयी एक एक प्रतिमा विराजै हैं। ते प्रतिमा नी एक
चैत्यालय में एक सौ आठ हैं। अर तीसही नंदीश्वरद्वीप के
च्यारूं दिशानि में लाख योजन की चौडी लां वी समचौकौ
र हजार योजन की ऊंडी अर वन उपवननि करि मंडित
च्यारि च्यारि वावडी हैं। तहां अषाढ कातिग फागुण ईन ती

मांस शुक्लपक्षके अंतके अष्टमीतैं लेय पूर्णमासीलौं आ-
ठ दिन पर्यंत निरंतर चौसठी अहर चैत्यालयनिमैं इंद्रादिक
देव जिनप्रतिमानिकौं पूजन करै हैं। तहां सौधर्म स्वर्गकौ इं-
द्र है प्रधान अग्रेसर जिनमैं ऐसे चतुर्णिकायके देव दश प्रका-
रके भवनवासी देव अर आठ प्रकारके व्यंतर देव पांच प्रकार
के ज्योतिषी देव सोला स्वर्ग संबंधी सोला प्रकारके कल्पवा-
सी देव गज तुरंग सिंह शार्दूल वहल जैसें कूकडे आदि आ-
पनें आपनें वाहननिपरि चढे। अर मृदंग ढोल वंसरी वीण
कुंडली आदि अनेक प्रकारके वादित्रनिका नाद करि आ-
पूर्ण कीया है दिशानिका मध्य भाग जिनूनैं। अर अपनी दे-
वांगनां आदि परिवार करि वेष्टित चतुर्निकायके देव ते-
न करि जिनमंदिरनिमैं आय करि वहुरि एक सौ आठ सुव-
र्णके कलसनिमैं पंचमां क्षीरसमुद्रकौ जल ल्याय तिनि
प्रतिमानिकौं अभिषेक करते भये। वहुरि जल चंदन अ-
क्षत पुष्प नैवेद्य दीप धूप फल ईन अष्ट द्रव्यनितैं पूजन
करि अर्घ चढाय वहुरि जिनेंद्र देवके गुणानुवाद करि ग-
र्जित स्तोत्रपाठ पढि करि वतीस इंद्रनि करि सहित चतु-
र्निकायके देव अपनें स्थानक जाय हैं। ऐसो सर्वोत्तम जो
विधि देवनिनैं आचरन करी सो विधि तूं नीकैं करि सो विधि
जैसें है तैसें तोहि कहूं सो तूं सुणि। असाढमैं कातीमैं फा-
गुणमैं ईन तीन मासकी शुक्लपक्ष विषैं अष्ट दिन पर्यंत
यह व्रत करिए है सो कैसें करिए है सो तूं सुणि। सप्तमीकै
दिन स्नान करि अष्ट द्रव्यनितैं जिनेंद्र देवकौं पूजन करि ए-
क बार भोजन करै। वहुरि पवित्र होय देव शास्त्र गुरुनि-
कौ पूजन करि पीछै संध्या समयकी सामायिक करि व-
हुरि गुरुनिकैं समीप अष्ट दिनलौं ब्रह्मचर्य व्रत अर भू-
मि परि शयन अर पत्र शाकादिकनिका त्याग अंगीका-
र करि अर अष्टमीकौं उपवास ग्रहण करि धर्मध्यानतैं स-

१६।२

सप्तमीकीरात्रिव्यतीतकरै।वहुरिअष्टमीकैदिनप्रभातह
जिनेंद्रदेवकेमंदिरमेंमंडपरचनाकरै।अरमंडपकैं
रूनादिपांडुमेरनिकास्थापनाकरै।अरतिनपंचमे
रुनिकीकरनीनिपरिजिनबिंबनिकूंस्थापनकरै।
ताकैंअनंतरस्नानकरिअष्टविधिपूजानकीप्रासुकसा
महितचैत्यालयमेंजाय।अरजिनेंद्रदेवकेप्रतिबिंबनि
कौंअभिषेककरिपीछेजलचंदनअक्षतपुष्पनैवेद्यदी
पधूपफलईनअष्टद्रव्यनितैंजिनेंद्रदेवकौंपूजनकरिम
अरमहार्घसहिततीनप्रदक्षिणांदेयकरिजिनेंद्रदेवनिके
चरणनिकैंअग्रभागमेंमहाअर्घचढायपीछैंयहचौईस
तीर्थंकरदेवनिकीजयमालाकौंपावपढिये।सोसंस्कृत
कथाकारकेहेहैं।यहपावहमारेंगुरुनिकरिविरचितहैं
॥अथजयमालालिख्यते॥ इकतीसा॥२२॥जैनमस्कै॥
कांमकैकठिनघातकारूपैनसहैंजाततांकूंमूलतैं
विघातितनरूपोनमनकौं।जिनकेनांमसमरणतैंअने
कभवकेसंचितपापआपदविनशासबनकौ।रजनी
कहौआधारत्रायोअतिउनिवारजगतदिवसकारन
जोजेनतोनकौं॥१॥पद्धडीछंद॥ऋषभदेवकंचनछविछा
जै।धनुषपांचसैतुंगविराजै।वृषभचिह्नपादनितलसै
हैंवंशइक्ष्वाकजिनगमनसोहैं॥२॥अजितजिनेंद्रकनक
नराजेंसदाच्यारिसैंधनुषविराजैं।गजलक्षनमनआ
नंदकारी।वंशइक्ष्वाककियोअविकारी॥३॥संभवजिन
तनहेमसमानं।धनुषच्यारिसैंतुंगप्रमानं।तुरंगचिह्न
सबकौंसुखदाता।वंशइक्ष्वाककियोजगख्याता॥४॥अं
तकूंनतनलितअभिनंदन।साढातीनसैंईसुअघभंज॥
न।बोदरलक्षणमदतलराजै।वंशइक्ष्वाकतिलकछविछा
जै॥५॥सुमतिजिनेंद्रहेमतनजासै।धनुषतीनसैंतुंग
प्रकासैं।कौंकचिह्नसबजनसुखदाई।वंशइक्ष्वाकसि

॥अथआरतीदसकलिष्यते॥इहविधमंगलआरतीकीजै॥पंचपरम
पदभजनसुषफलीजे इहिविधिमंगलआरतीकीजै॥प्रथमआरतीश्रीजि
नराजा॥भवजलपारउतारजिहाजा॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे॥दूजी
आरतीसिद्धनकेरी॥सुमिरनकरतमिटैभवफेरी॥इहिविधिमंगलआरत
कीजे॥तीजीआरतीसूरिमुनिंद॥जनमजनमदुषदूरिकरिंद॥इहिवि
धिमंगलआरतीकीजै॥चौथीआरतीश्रीउवझाय॥दरसनदेषतपा
पपलाय॥इहिविधिमंगलआरतीकीजें॥पांचमीआरतीसाधतुमारीकु
मतिविनासनसिवअधिकारी॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे॥छठीग्या
रैप्रतिमांधारी॥श्रावकवंदौंआनंदकारी॥इहिविधिमंगलआरतीकीजे
सातमीआरतीश्रीजिनवांणी॥द्यानतसुरगमुकतसुषदानी॥इहिवि
धिमंगलआरतीकीजे॥१॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥करमदलनसं
तनिहितकारी॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥सुरनरअसुरकरततुम
सेवा॥तुमहिदेवदेवनिकेदेवा॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥पंचमहा
व्रतदुद्धरधारे॥रागदोषपरनांमविडारे॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥
भवभयभीतसरणजेआये॥तेपरमारथपंथलगाये॥आरतीश्रीजि
नराजतुम्हारी॥जोतुमनामजपैमनमांही॥जनममरनभयताकौंनां
ही॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥समोसरणसंपूरणसोभा॥जीतेक्रो
धमांनछललोभा॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी॥तुमगुणहमकैसेंक
रिगावें॥गणधरकहतपारनहिपावें॥आरतीश्रीजिनराजतुम्हारी
करुणासागरकरुणाकीजे॥द्यानतसेवककोंसुषदीजे॥आरतीश्री
जिनराजतुम्हारी॥२॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥अधमउधार
णआतमकाजकी॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥जालछीकेसबअ
भिलाषी॥सोसाधनकर्दमवतनाही॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥
सबजगजीतिलियोजिननारी॥सोसाधननागनिवतछारी॥आरती
कीजेश्रीमुनिराजकी॥विषयनसबजियचोरेकीने॥तेसाधनविषव
ततजदीने॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥भूकोराजचहतसबप्राणी
जीरनतिणवतत्यागतध्यानी॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी॥शत्रुमित्रदु
षसुषसममानैं॥लाभअलाभबराबरजानैं॥आरतीकीजेश्रीमुनिराजकी छ
होकायपीहरव्रतधारै॥सबकौंआपसमाननिहारै॥आरतीकीजैश्री॥

मुनिराजकी॥इह आरती पढै जो गावै॥ द्यांनत मनवंछित फल पावै॥३॥
किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अगम अकथ जस बुद्धन मेरी॥ किह
विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ समुद्रविजै सुत रजमत छारी॥ यौं कहि थु
ति नहि होय तुमारी॥ किह विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ कोटि पंन्नवेद
ही विसारी॥ समोसरण थुत तुमतें न्यारी॥ किह विध आरती करौ प्रभु
तेरी॥ चार ज्ञान जुत तिनके स्वामी॥ सेवक के प्रभु ॥ ह्व वचमामी॥ कि
ह विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ सुनिके वचन भविक सिव जाही॥ सो पुद
गल मैं तुम गुण नांही॥ किह विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ आतम जोत समा
न वतानें॥ रवि ससि दीपक मूढ कर्क॥ किह विधि आरती करौ प्रभु तेरी।
नमत त्रिजगपति सोभा उनकी॥ तुम सोभा तुम मैं निज गुनकी॥ किह विध
आरती करौ प्रभु तेरी॥ मांनसिंघ महाराजा गावै॥ तुम महिमां तुम ही व
वनि आवै॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अथ निश्चय आर०॥ इह वि
ध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अमल अवाधित निज गुण केरी॥ इह विध
आरती करौ प्रभु तेरी ज्ञान दरस सुख वल गुण धारी॥ परिमातम अवि
कल अविकारी॥ इहि विध आरती करौं प्रभु तेरी॥ क्रोध आदि रागादि
न तेरी॥ जनम जरा मृत कर्म न नैरे॥ इहे विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अवपु
अवंध करण सुख नाही॥ अनपअनाकुल सिव पद वासी॥ इहि विध आ
रती करौ प्रभु तेरी॥ रूप न रेष न भेष न कोइ॥ चिन मूरति प्रभु तिन हि होइ
इहि विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अलप अनादि अनंत अरोगी॥ सिद्ध वि
सुद्ध सु आतम जोगी॥ गुन अनंत किम वचन वतावै॥ दीपचंद भवि भा
वन भावै॥ इहि विधि आरती करौं प्रभु तेरी॥५॥ आगे आत्मा की आरती
॥ करौ आरती आतमदेवा॥ गुण परजाय अनंत अभेवा॥ करू आरती आ
तमदेवा॥ जामैं सब जग वह जग मांहि॥ वसत जगत मैं जग सम नांही॥ क
रू आरती आतमदेवा॥ ब्रह्मा विष्णु महेस्वर ध्यावै॥ साधु सकल जिह के गुण
गावै॥ करू आरती आतमदेवा॥ विन जानें जिय चिर भव डोले॥ जिह जानैं छि
न सिवपद षोलै॥ शिष्य अनिवचन किरि कहिये॥ वचनातीत दसा तिस
लहिये॥ करू आरती आतमदेवा॥ सुपर भेद को षेद न छेदा॥ आप
आपमें आप निवेदा॥ करू आरती आतमदेवा॥ सो परमातम पद सुख
दा॥ करू आरती आतमदेवा॥ वनी अबुधि विधि मोहारी॥ सो तिहु काल करम सूं न्यारा॥

ता।हो हि विहारी दास विख्याता। करौं आरती आतमदेवा।६। गौरी रा
ग आरती।। कहां लै पूजा जगात चढावै जो गाव सकल कहां तैं लै आवै।
कहां लै पूजा जगात चढावै। छीर उदधि जल मेर ढुलावै सो गिरि नी
र कहां हम पावै।१। कहां लै पूजा जगात चढावै समोसरण विध सर्व व
नावै सो न वनै मुख कहा दिखलावै।२। कहां लै पूजा जगात चढावै जलफ
सुरगलोक तैं लावै। सो हम नहिं कहां चढावै। कहां लै पूजा जगात चढा
वै नाचै गावै वीन वजावै सो न सकति किम पुन्य उपावै।४। कहां लै पू
जा जगात चढावै। द्वादशांग श्रुत जो श्रुत गावै। सो हम बुद्धि न कहां बता
वै। आरध्यांन धरा गानधर ध्यावै। सो थिरता नहि चित्त चल कहां वै। ध्यांन न
ती तस हित सिर नावै जनम मनन भय सकल कमावै।७। इति राग गौरी ७॥
करौं आरती वर्द्धमान की॥ पावापुर निरवांन थांन की॥ करौं आरती व
र्द्धमांन की॥ २॥ विनास सकल जगजन तारे॥ दोष विनास सकल कर्म विदारे क
रौं आरती वर्द्धमान की॥ ३॥ सील धुरंधर सिव तिय भोगी॥ मन वच का
य न कहिये जोगी॥ ३॥ करौं आरती वर्द्धमान की॥ रतनत्रय निधि पर
ग्रह हारी॥ ग्यान सुधा जन बुलधारी॥ ४॥ करौं आरती वर्द्धमान की। लोक
अलोक व्यापि निज मांही॥ सुख मैं इंद्री सुख दुख नांही॥ ५॥ करौं आरत
वर्द्धमान की॥ पंचकल्याणक पूज्य विरागी॥ विमल दिगंबर अंबर सा
गी॥ ६॥ करौं आरती वर्द्धमान की गुनमणि भूषन भूषन स्वामी॥ जगत
उदास जगांतरजांमी॥ ७॥ करौं आरती वर्द्धमान की॥ कहै कहां लौं तु
म सब जानै॥ द्यांनत की अभिलाष प्रमानै॥ ८॥ करौं आरती वर्द्धमान
की॥ इति श्री महावीर जी की आरती संपूर्ण॥ कहा लै आरती जगत
करै जी॥ तुम लायक नहिं हाथ परै जी। कहा लै आरती जगत करै जी।
छीर जलधि को नीर चढायो॥ कहा भयो मैंनी जल ल्यायो। कहा लै आ
रती जगत करै जी॥ ६॥ उज्जल मुक्ताफल स्रु पूजे॥ हम पै तंदुल और न हूजे
कहा लै आरती जगत करै जी॥ कल्पवृछ फल फूल तुम्हारे सिवक का
ले न गात विथारे। तत सुचंदन आगर न लागे कौण सुगंध धरै तुम आगे।
कहा लै आरती जगत करै जी॥ नषसम कोटि चंद रवि नांही॥ दीपक
जोति कहो किंह मांही॥ ग्यान सुधा भोजन व्रतधारी॥ नेवज कहा करै
संसारी॥ कहा लै आरती जगत करै जी॥ ध्यांनै सकल समान चढा

क्रियातिंहारीतैं सुषपावै। कहा लैं आरतीनगतकै रे जी ॥ इति संपूर्ण ॥ आरती
मंगलआरती आतमरांम। तनमंदिर मन उत्तम ठाम ॥ समरसज[illegible]
लचंदन आनंद। तंदुल तत्वस्वरूप अमंद ॥ यस मैं सार फूलनिकी माल।
अनत्तो सुष नैवज अरियाल। [illegible]थ मंगलआरती आतमराम मदीपक
ग्यानध्यांनकी धूप। निरमल भाव महा फल रूप ॥ मंगलआरती आत
मराम ॥ सुगुन अविकजन इक रंग लीन। निहचे नैंधा नंगत प्रवीन ॥ धमंग
लआरती आतमराम। धनत उत्साह सुहनहद ग्यान। परम समाधि नि
रत परधांन ॥ ५ ॥ मंगलआरती आतमरांम ॥ बाहज आतम भाव बहाव
अंतर है परमातम ध्याव ॥ ६ ॥ मंगलआरती आतमरांम ॥ साहब सेवक भेद मि
टाय। ध्यांनतएकमेक हो जाय ॥ ७ ॥ मंगलआरती आतमराम ॥ इति आर
ती संपूर्ण ॥ अथ पार्श्वनाथजी की स्तवन भुयंगप्रयाता छंद ॥ ॥
नरेंद्रं फुनिंद्रं सुरिंदं अधीसं सतइंद्र पूजें भजे नाय सीसं ॥ मुनिंद्रं गनिंद्रं
नमे जोरहाथं ॥ नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ जिंद्रं म[illegible] डगलो तू छु
डावै ॥ महा आगतैं नागतें तू बचावै ॥ महानीरतैं जुद्धतैं तू बचावै ॥ म
हारोगतैं वंधतैं तू षुलावै ॥ २ ॥ दुषी दुष हरता सुषी सुष करता ॥ सदा से
वताको महानंद भरता ॥ हरै जक्ष राक्षस भूतं पिसाचं ॥ विषं डाकनी
विघ्नन के अवाचं ॥ ३ ॥ दलिद्री निकों देव के दांन दीनो ॥ अपुत्री निकों
तें भले पुत्र कीने ॥ महासंकटों तें निकालें विधाता ॥ सबै संपदा सर्व कों
देहदाता ॥ ४ ॥ महाचोर कों बज्र कों भै निवारै ॥ महापौन के पुंज मैं तू उबारै ॥
महाक्रोधकी आग कों मेघधारा ॥ महालोभ सैले सहीवज्ज्रधारा ॥ ५ ॥
महामोह अंधेर कों ग्यान भानं ॥ महाकर्म कंतार कों दौंप्रधानं ॥ कि
ये नाग नागनि अधोलोक स्वामी ॥ हस्यौं मान तें दैत्य कों ह्वै अकामी ॥ ६ ॥
तुही कल्पवृक्षं तु ही कामधेनं ॥ तुही दिव्यचिंतामनं नाग एनं ॥ पसुन
र्क के दुष सेती छुडावै ॥ महास्वर्ग मैं मोक्ष मैं तू बसावै ॥ ७ ॥ करै लोह कें
हेमपाषांन नामी ॥ रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी ॥ करै सेव ता
की करै देव सेवा ॥ सुनै वैन सो ई लहै ग्यान मेवा ॥ ८ ॥ जपै जाप ताकों
कहा पाप लागै ॥ धरै ध्यांन ताके सवै दोष भागै ॥ विनां तोहि जानें
धरे मो लाय नेरा तिहारे कृपा तैं सरे काज मेरा ॥ ९ ॥ दोहा ॥ ॥ गणधर
इंद्र न कर सकें तुम बीनती भगवांन। द्यानत प्रीति निहार कैं कीजे
आपसमांन ॥ १० ॥ इति श्री पार्श्वनाथ स्तवन संपूर्ण ॥ छंद [illegible] हि ७ ॥

ॐनमःसिद्धाननमस्कारः अथश्रीजिनभगवानदेवाधिदेवकोपूजन

ॐनमःसिद्धेभ्यः॥अथश्रीजिनपूजाविध

काअर्थमूलसंयुक्तकरिएहैवालीअएहै | परमात्मादेवजोभगवानसोनमस्का २

नमश्रीअर्हते॥निभते॥परमात्मानेनमःश्री

जोजिनतुमजयवंताहोऊ जयवंताहोऊजयवंताहोऊ औसेतीनवारकह्यासर्वोत्कृष्ट पणानिमन | जोजिनतुमकौ नमस्कारहोऊ औसेतीनबार | कसोआतिनति नावनिकेप्रा[illegible] | नेनिमत्तेनमस्कार

नेजयजयजयनमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

नमस्कारहोऊअरिहंतनिकौ | नमस्कारहोऊसिद्धनिकूं | नमस्कारहोऊआचार्यनिकौ

नमोअरहंताणं॥णमोसिद्धाणं॥णमोआय

नमस्कारहोऊउपाध्यायनिकौ | नमस्कारहोऊलोकविषैसम

रियाणं॥णमोउवज्झायाणं॥णमोलोएसव

स्तसाधुनिकौ | च्यारिपदार्थहैमंगलरूपहै | अरिहंतमंगलकारीहै

साहूणं॥चत्तारिमंगलं॥अरहंतमंगलं॥

सिद्धमंगलरूपहै | सर्वमुनिराजमंगलकारीहै | केवलीसर्वज्ञकारकरिकह्याहै १

सिद्धमंगलं॥साहूमंगलं॥१॥केवलपण्णं

धर्ममंगलीकारी है | मोहिउत्कृष्टउत्तमहै | अरहंतलोकविषैउत्तमहै

मोमंगलं॥५॥चत्तारलोगुत्तमा॥अरहंतलोगु

सिद्धलोकविषैउत्तमहै | मुनिलोकविषैउत्तमहै | सर्वज्ञ

त्तमा॥सिद्धलोगुत्तमा॥साऊलोगुत्तमा॥केव

करिकह्या | धर्मलोकविषैउत्तमहै | च्यारिपदार्थनिहीकैसर

लेपएणत्तो॥धम्मोलोगुत्तमा॥६॥चत्तारिसरणं

णमेंप्राप्तिहोतहै | अरहंतनिकेसरणप्राप्तहोऊ | सिद्धनिके

पव्वज्जामि॥अरहंतसरणंपव्वज्जामि॥सिद्ध

सरणप्राप्तहोऊ | साधुमुनिनिकेसरणप्राप्तहोऊ | केवल

सरणंपव्वज्जामि॥साऊसरणंपव्वज्जामि॥केव

लीकरिभाषितधर्म | केसरणप्राप्तहोहै | ऊँ | अरिहं

लिपएणत्तोधम्मोसरणंपव्वज्जामि॥७॥ऊँनं

तकोनमस्कारहोहै | वासरीरकरिपवित्रहोऊअथवा अपवित्रहोहुअथवाअधिरहोऊ | औरएकं तअासन

मोर्हतेस्वाहा॥अपवित्रपवित्रोवा॥सुस्थिते।

करिथिरहोऊ।।यवाअ थिरहोऊ | जोकोईपुरुषपंचनमस्कार मंत्रध्यावैहै | सोसर्वपाप

ऊ।स्थितोपिवा।।ध्यायेत्पंचनमस्कारान्।।सर्वपा

निकरिछुटतहैफेर रुकहैहै | ४ | जलादिकवात्राक्तिकेअभावतेंअ पवित्रहोऊवापवित्रहोऊ | औरसमलते

पैःप्रमुच्यते।।४।।अपवित्रःपवित्रोवा।।सर्वाव

गादिअवस्थाकोंप्राप्तहोऊ | जोजीवपरमात्माकेवलीअरहंतनका सुमरणकरैहै | सोबाहेअभ्यं

स्थांगतोपिवा।।यःस्मरेत्परमात्मानं।।सबाह्या

हीवितहीदेसपवित्रातिस कुभई | ५ | किसीअन्यकरिजीतानजायहै ऐसानमस्कारमंत्र | समस्तवि

भ्यंतरोशुचिः।।५।।अपराजितमंत्रोयं।।सर्ववि

केविघनकरणकरिकार णनिकाविनासकहै | औरसमस्तसुषदायकपाप कानासकमंगलकोपविहै | प्रथममुख्यमंगलप हीकहोहै

घ्नविनाशनः।।मंगलेषुचसर्वेषु।।प्रथमंमंगल

६ | पंचपरमेष्ठीकानमस्काररूपमं त्र | समस्तपापनिकानासकर णहाराहै

मतः।।६।।एसोपंचणमोयारो।।सव्वपावप्पणा

औरसमस्तमंगलकार्यनिवि षे | प्रथममुख्यहीमंगलहै

सणो।।मंगलाणंचसव्वेसिं।।पढमहोइमंगलं ७

अरे निरुपम आवरण रहित है गर्भादिक | अरहंत केवली का अर्थ का अरु है | जिन सूत्र का उत्कृष्ट बीज है

ज्ञादि०१ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः सिद्धचक्र

१५

ऐसा नाम मंत्र में सिद्धचक्र होऊ | सोऽहं नदेव अर्थ संयुक्त तिनको त्रियोग करि मैं नमस्कार करोहू ६ | ज्ञानावरणादि

स्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥७॥ कर्माष्टक

दिअष्टकर्म तिनकरि सर्वथा रहित है | कर्मनि रहित आत्मस्वरूप मोक्ष तिस की ज्ञानादि लक्ष्मी सो ही है चिह्न जाके | सम्यक्त्वादि अष्ट

विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं सम्यक्त्वादि

गुणन करि संयुक्त है | ऐसे सिद्ध समूह तिनको मैं नमस्कार करो हौं ८ | बाह्य अभ्यंतर लक्ष्मी युक्त जे तीर्थंकर

गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥८॥ श्रीमज्जिनेंद्र

तिनकों त्रियोग करि नमस्कार करि के से है तीर्थंकर त्रिलोक का स्वामी है | अनेकांतमत का नायक स्वामी है | अनंतज्ञानादि चतुष्टय करि पूज्य है

मभिवंद्य जगत्त्रयेशं स्याद्वादनायकमनंतचतुष्ट

उत्कृष्ट मूलसंघ संबंधी ये सम्यक्त्व के दृष्टि तिनकौं पुण्य उपजावणे के कारण है | तिनकों न

यार्हं ॥ श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु जैनेंद्र

मस्कार करि तीर्थंकरनिकी पूजा का विधान यज्ञ संबंधी मो करि कीजिए है | १० | कल्याण होऊ | तीन लोक कौ शिक्षा दायक बडे गुरु ऐसे

यज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ॥१०॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे

गुणधरादिपूज्यतीर्थंकर | कल्याण होऊ | आपणा जो चेतन्य निज स्वरूप की ज्यो अद्भुत महिमा का प्रगट नाति सविशेष लाचि रह्यो ताकै याति न निमित्त

जिनपुंगवाय॥ स्वस्तिस्वभावमहिमोदयसुस्थिताय

कल्याण होऊ	केवलज्ञान प्रकासके निज स्वभाव अखल कृष्टकेवली दृष्टि न स्वरूप है तिनि निमित्त	कल्याण होऊ आनंदरसपूर्ण

स्वस्तिप्रकाससहजोर्जितदृङ्मयाय स्वस्तिप्रसन्न

मनोहर आश्चर्यकारी केवलज्ञान वा समवसरणादि चिन्ह युक्त है	११	कल्याण करऊ	अपने प्रदेशनि सो उज्ज्वल कर्ममलरहित केवल

ललिताद्भुतवैभवाय॥ १२॥ स्वस्तिच्छलद्विमलबो

ज्ञानति स अमृत का आ वीचि ज्यो ता समान है तिन निमति	कल्याण करऊ	आपना निज स्वरूप	पर द्रव्य का स्वरूप तिसके प्रतिसम्पीनकरि	प्रकास को करै है

धसुधाप्लवाय स्वस्तिस्वभावपरभावविभासक

कल्याण करऊ	तीन लोक विषैं फैल्या है चैतन्यज्ञान भावका उपजना जिनके	कल्याण करऊ

य॥ स्वस्तित्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय॥ स्वस्तित्रि

तीन काल संबंधी सकल भावनि विषै ज्ञान करि विस्तार पायो है	१३	वा सद्ध्म क्रियाकी शुद्धता को अंगीकार

कालसकलायतविस्तृताय॥ १२॥ द्रव्यस्य शुद्धि

करि कैसी है जैसी जिनदेवनै कही है	अंतरंग परिणमन की शुद्धता को

मधि[illegible]मुपेत्य यथानुरूपं भावस्य शुद्धिमधि

बहुत शुद्धता को प्राप्त होनै का है आमिलाषा मैं ऐसा जानना	सो बाह्य साधुथी उपकारण आलंबननिकै	नाना प्रकारि निको आलंबने करि

काममधिगन्तुकामः॥ आलंबनानि विविधान्यवलंब

हे पुराणपुरुष। नमे पवित्र उत्तम | जो वस्तु तिनकौं निश्चैकरि | समस्तनिकै यहमै एकही

पुरानपु   निःपस्तनिनूतमखिलामय

यह प्रत्यक्षप्रकासरूप निर्मल केवलज्ञानरूप अग्नि विषै | पवित्रजू

मेकएवात्मज्जिनज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ ॥ पु

होइसौ | समस्त हूं एकमन होय करि होम करौ हूं | १५ | विधिपूर्वक पूजन की

ण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ १५ ॥ नर्जो विधियज्ञ

प्रतिज्ञा निमित्त | जिनबिंब आगे | फूलनिकी अंजुली क्षेपणी सोलावु कोलक्ष्मी पुरूं | धरम

लिङ्गनाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत ॥ श्री

करि सोभायमानतिनि स्वामी | कल्याण करौ | कामक्रोधादिकरि जीते नाही असे स्वामी | सुखकारी है उतपति जिनकै सैं कल्याण कारक | सर्वां गपणै

वृषभः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः । श्री संभवः स्वस्ति स्वस्ति

कै आनंदकारी | उत्कृष्ट चेतन परिणति नकै ततर | कमलनिकीसी कांति है जिनकी ७

श्री अभिनंदनः श्री सुमतिः स्वस्ति । स्वस्ति श्री पद्मप्रभः

नला है निकट जिनका असे स्वामी | चंद्रमांकीसी कांति है जिनकी उज्जल | फूलवत है सुगंध उज्जल दंत जिनके

श्री सुपार्श्वः स्वस्ति । स्वस्ति श्री चंद्रप्रभः । श्री पुष्पदंतः ।

दनुसारी ॥ चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति०॥१॥ संस्पर्शनं

संश्रवणं च दूरा दास्वादनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिज्ञा
नबलाद्वहंतः स्वस्ति०॥२॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः ॥ प्रत्येकबुद्धा
दशसर्वपूर्वैः पूर्वादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्तिक्रियासुः ॥३॥ अ

णिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि ॥ लघिम्नि सक्ताः कृतिनो गरीम्णि

मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्तिक्रि०॥४॥ सकामरूपित्व
वशित्वमैश्य प्राकाम्यमंतर्धिमथाप्तिमाप्ताः ॥ जंघावलिश्रेणिफ
लांबुतंतु ॥ प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः नभोंगणस्वैरविहारिण

श्च स्वस्ति०॥६॥ दीप्तं च तप्तं च महाग्रतपो ॥ ग्रु घोरं तपो घोरपरा
क्रमस्थाः ॥ ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः ॥ स्वस्ति०॥७॥ आमर्श

सर्वोषधयस्तथाशी ॥ विषं विषाद्दृष्टिविषं विषाश्च सखिल्लवि
ड्जल्लमलौषधीशः ॥ स्वस्तिक्रियासु परमर्षयो नः ॥ क्षीरं स्र
वंतोत्र घृतं स्रवंतो मधु स्रवंतोप्यमृतं स्रवंतः अक्षीणसंवास

महानसाश्च ॥ स्वस्ति०॥१०॥ इति स्वस्तिमंगलविधानं ॥ अथ दे

अब देवशास्त्रगुरुपूजा का प्रारंभ करिये समस्तगुणपर्यायपूर्णोरे सर्वज्ञ केजा

वशास्त्रगुरुपूजा प्रारभ्यते ॥ प्रारब्धः सर्वज्ञनाथः सकलतनु

तनुधारे ऐसे ... जीव	और समस्त प्राणी निका पापका दिप ज्या जु आताप तिस	के हरण हारे है। तीन लोक विषै फैल्या है यश जिनका

भृतां ॥ पापसंतापहर्ता ॥ त्रैलोक्याक्रांतकीर्तिः क्ष

नाश कीया है काम रूप वैरी जिनका	घातीया कर्मका नाश कीया है जिन	लक्ष्मी करि युक्त है	मोक्षकी जु संपदा सो ही भई वल्लभ स्त्री तिसके हस्त करि उपगूढ है कंठ

तमदनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशः ॥ श्रीमान्निर्वाणसंपद्

जिनका	और भले है कंठ जिनके	ऐसे जे इंद्रादिक	तिन करि वंदनीक है चरण जिनका	ऐसे जिन जयवंत होहु गणधरादिक तिनका

युवतिकरालीढकंठः सुकंठैर्देवेंद्रैर्वंद्यपादो जयति

स्वामी है	पाई है पंचकल्याणनिविषै पूजा जिननै ऐसे हैं		जयवंत होहु	जो सो नायमान आत्माकी व शरीरकी कांति के स्वामी है

जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूजः॥१॥ जयजयजयश्रीसत्कांति

शास्त्रपूजनकीप्रतिज्ञाकरी || नलेपुजतहो पुज

ष्पाजलिंक्षिपेत्। अक्षतपुज

१५३

गुरुनिकेचरणकमलका जुगल गुरुनिका || कैसेहैगुरुतप नेगंभीरहै

ष्पम्॥ पादपद्मयुगंगुरोः। लपःश्रीप्रतिष्ठस्याग्रतरिष्ट

उत्कृष्टदेवरूपाजिन का ऐसाकहिकरिगुरुचरणआगेफूलक्षेपै

१

हात्मनः। धाइसुन्नार्घ्यंगुरुचरणाग्रेपरिक्षिप्या

गुरुचरणपुजवेकीप्रतिज्ञाकरि इंद्र || धरणेंद्र

दापता। गुरुचरणपुजनप्रतिज्ञाय॥ देवेंद्र

रजातितिनिकरिवंदनीक है || उत्कृष्टहैचर णकमलपद वीजिनकी || सोसायमानउत्कृष्ट आकृतिस्तरकुल जिनकातिनको

नरजवद्यानत्सुंनमदानुसोभितशारवणोनाग्रुग्पादि

णजि || ऐसेजलस मूहनकीर || देवशास्त्र तीर्थंकर || गुरु || पूजतहोमै

विगुरोर्जलोघैः॥ जिनेंद्रसिद्धांतयतीनयजे ॥ ॥३

श्रीघमानघेमब्रह्मअनंतानंतज्ञानशक्तिकेधारकतिनकोनमस्कारकरोहो

ईंश्रीघर क्लींश्रींश्रीमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्तयेनमःजं

लुकनाशनिमति || अरहंततनिकोंजलचढावोहो || इतिमंत्रः

मत्क नाशनाय अर्हत्जलं निर्वपामीतिस्वाहा

श्रोजगतकानाथ	हेजिनतुम हीहैना	नाथहो स्वामी हो	संसारसमुद्रमैंडुबताप्राणिनिके

उनोजगतापते॥ जयजय॥ नवानस्वामी नवाब्धिमज्जतां॥

मोरामोहअंधकारमेंटनिनिमतिप्रभातकारी पूजा	हेजिननाथतुमकूं

जयजयमहामोहध्वांतप्रभातकृतेर्चनं॥ जयजयजिनेश्वर

होस्वामीपूजामेंकरौंहौं	ऐसैंपदकरिदेवचरणआगेंफूलनि

नाथप्रसीदकरोम्यहं॥ इत्युच्चारि जिनचरणाग्रेप

कीअंजलिक्षेपणी	देवचरणपूजनकीप्रतिज्ञाकरी

रपुष्पांजलिंक्षिपेत॥ जिनचरणपूजनप्रतिज्ञा॥

हेदेव	हंसोमायमान सरस्वतीदेवी	हेभगवती आवानकरिपूजी	तुमारेचरणसोईकमलमणंतिनकाजुगल विषै	प्राप्त होऊ

देवि श्री श्रुतदेवत भगवति त्वत्पादपंकेरुह॥ द्वंद्वे यां

सोभ्रमरपणाकौंप्राप्त होऊ	औरकहनहैं	मनोकरि	मैंयहप्रार्थना करौहौं	हे मातामेरेहृदयविषै

मि सिलीमुखत्वमपरं भक्त्या मयाप्रार्थ्यते॥ मातश्चेतसि

तुमवास करोमेरैं	जिनमुखकरिउपजे होऐसेतुमनिरंतर	रक्षाकरोमुझ को	समस्तके देनेकरि	मुझविषै प्रस है

तिष्ठ मे जिनमुखोद्भूते सदा त्रायस्व मां॥ दृग्दानेन मयि प्रसी

होकृपानैपूजनहौं	अब	१	ऐसैंकहिकरि पुस्तकसास्त्रआगैं फूलखेपण

दनवति॥ सपूज्यपादमोधकना॥ थ॥ इत्युच्चार्य पुस्तकाग्रे परिपु

दानुसारी ॥ चतुर्विधं च सुस्वलं दधानाः स्वस्ति ० ॥ संस्पर्शनं

सश्रवणं च दूरा द्वास्वादनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिज्ञा
नवलाद्वहंतः स्वस्ति ० ॥ प्रज्ञाप्रधानाश्रवणासमृद्धा ॥ प्रत्येकबुद्धा
दशसर्वपूर्वैः प्रवादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियाद्धा ॥ ज

निमित्तदक्षाः कुशला महिम्नि ॥ लघिम्नि सक्ताः कृतिनो गरीम्

मनो वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रि० ॥ सकामरूपित्व
वशित्वमैश्यं प्रकाम्यमंतर्धिमथाप्तिमाप्ताः जंघावलिश्रेणिफ
लांबुतंतु प्रसूनबीजांकुरचारुणाश्च न भोंगणस्वैर विहारिण

श्च स्वस्ति ० ॥ दीप्तं च तप्तं च महातपो ॥ घोरं तपो घोरपरा
क्रमस्थाः ब्रह्मा परं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति ० ॥ आमर्ष

सर्वौषधयस्तथाशी विषं विषा दृष्टि विषं विषाश्च सखिल वि
जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥ क्षीरं स्र
वंतोत्र घृतं स्रवंतो मधु स्रवंतोप्यमृतं स्रवंतः अक्षीणसंवास

महानसाश्च स्वस्ति ० ॥ इति स्वस्तिमंगलविधानं ॥ अथ दे
अब देवशास्त्रगुरुपूजाका आरंभ करिये समस्त गुणपर्यायनि करि ... साधन केजा

वशास्त्रगुरुपूजा आरंभ्यते ॥ सार्वः सर्वज्ञनाथः सकलतनु

नुनहारे ऐसे ... सारे	और समस्त प्राणी निकाय पाप करि ... ज्या ... संताप ति	कि हरण हारे हैं तीन लोक विषे के स्वाहे यशजिनका

भृत्पापसंतापहर्त्ता त्रैलोक्याक्रांतकीर्तिः क्ष

नाश कीया है काम रूपवैरी जिनका	घातीया कर्मका नाश कीया है जिन	लक्ष्मी करियुक्त है	मोक्षकी जु संपदा सो ही ... तिनके हस्तकरि उपगाढ़ै कं व

तमदनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशः श्रीमान्निर्वाणसंपद्

जिनका	और मलें है कं जिनके	ऐसे जे ... क	तिनकरि वंदनी क है चरण जि नका	ऐसे जिन जयवंत हो ... गणधरा दिक तिनका

युवतिकरालीढकंठः सुकंठैर्देवेंद्रैर्वंद्यपादो जयति

स्वामी है	पाई है पंच कल्याणनिवि धि पूजा जिन्हैं ऐसे है	१	जयवंत होऊ	जो सो नाय ... आत्माकी वा ... रीरकी कांतिके स्वामी है

जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूजः ॥ जय जय जय श्रीसत्कांति

सिद्धनिकौं | आचार्यनिकौं | उपाध्यायनिकौ | सर्वसाधुनिकौं

सिद्धेभ्यः॥आचार्येभ्यः॥उपाध्यायेभ्यः॥सर्वसाधु

प्रथमानुयोगायनिकौं | करणानुयोगकौं | चरणानु

भ्यः॥प्रथमानुयोगाय॥करणानुयोगाय॥चरण

योगकौ | द्रव्यानुयोगकौं अब रत्नत्री के गुण | सम्यग्दर्शनकौं | सम्यग्

नुयोगाय॥द्रव्यानुयोगाय॥सम्यग्दर्शनाय॥सम्यग्

ज्ञानकौं | सम्यक्चारित्रकौं ए तीनगुरु के गुण | इनिकौं जलचढावौं हौं ऐसैं इन्द्र

ज्ञानाय॥सम्यक्चारित्राय॥जलं निर्वपामीति स्वा

इतिमंत्र | जलं | लडफडावत | ऐसी तीनलोककाउदर [illegible] अरहंते | समस्त जीवनि निका अहित ह

हा॥जलं॥ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्ति॥समस्त

रिकरणहारे हैं वचन जिनका तिनिकौं | बावनाचंदन करि | केसा है बासना कालौ भौ ऊपा

सत्वाहितहारिवाक्यान्॥श्रीचंदनैर्गंधविलुब्ध

हैं भ्रमर जहां | तिसकरि देवगुरुशास्त्र कौ पूजौं हौं | संसार आताप हरिकरण निमित्त | चंदन और

भृंगैः॥जिनेंद्र०॥ॐ ह्रीं श्री संसारतापविनाशाय

सर्वथाहि लीकी नाई पदणा नाईहै पार जिनका ऐसा संसार सम २ कोई महावडासमुद्र | तिसकेपार उतारणेकौं वडे

चंदनं॥२॥अपारसंसारमहासमुद्र॥प्रोत्तारणे

पूजा दे० १५४

नलीभक्ति करि	लावा अखंडित हे अगजिनक	ऐसें उजलचावलनि का सिमुह तिनकरिदेवगुरु

ज्यतरीन्मुनसत्वा ॥ दीर्घादला लादलतोघै

निकों पूजौंहों	अखंडितमोदायदप्राप्तिनिमित्ति अक्षतचढाऊं हूं ३

जिनेंद्र० ॥ अखंडितपदप्राप्तये ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ निर्वो

विनयपुक्तजेपंलेजज्जीवतेइसयेकमलतिनिकेविकासनेकोसूर्य्यसमानहैं	ज्ञत्कृष्टलीजेनैंदीनाके

विनीतनमाज्चविबोधसूर्यान ॥ वर्ण्यासुचर्ण्या

कहनेका एकथोरीतिनकों	कुंदोकमलआदि	फुलनिकरिदेवगुरुशा

कथनैकधूर्यान ॥ कुंदरविंदप्रमुखेःप्रसूनै ॥ जिन

पूजौंहों	कामरूपीवांणकानाशनिमित्तिफूलचढावोंहों पुष्पं	४	मोटाहेगर्वजाके

इ० ॥ कुसमवांणविध्वंसनाय ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ कुंदर्प्प

ऐसाकाम	सोईहूवाफैला	स्वछंदसर्प्प	तिसकोंसावधानहोइकरिनाशनेकोंकुंडल	मानतिनिको

कंदर्प्पविसर्प्पसर्प्प ॥ प्रसघ्नानिर्नाशनवैनतेयान

उत्कृष्टसारचसुनकनिजपजे	ऐसेंनेवेद्यनकरिकेसोहेरसपूर्णहि	तिनिकरिदेवगुरुशास्त्रपूजौंहों	क्षुधादिकवेदकेरोग

प्राज्याज्यसारैश्चरुभीरसाढ्यै ॥ जिनेंद्र ॥ क्षधावेद

दूरिकरिणनिमित्ति	५	नैवेद्यचढावों	दूरिकीयाहै उद्यमजिसमैं

नीरोगविनाशाय ॥ ५ ॥ नैवेद्यं ॥ ध्वस्तोद्यमांधीकृत

फलचढावो है	८	जलाजलचंदनअक्षतपुष्पनिके समूहतिनकरि

फलं॥नि०॥फलं॥ ८॥सद्वारीगंधाक्षतपुष्पजातै॥

नैवेद्यदीपनिर्मलधूपकीधूवांनिकरि	नानाप्रकारकेफलनिकरि निवड

नैवेद्यदीपामलधूपधूमैः॥फलैर्विचित्रैर्घनपुन्य

पुन्यरूपउज्वलजोकै जोग	देवगुरुशास्त्रकोपूजो	अर्घचढावो ९	जेजीव पूजन	तीर्थंकर	सास्त्र

योग्यान॥जिनेंद्र०॥अर्घं॥९॥येपूजांजिननाथ

मुनितिनकी भक्तिकरि	नित्यकरेहै	तीनकाल विषै	नानाप्रका

शास्त्रयमिनांभक्त्यासदाकुर्वते॥त्रैसंध्यासुविचि

रकाव्यादिरचनाकेविषे	पढतासंतामुनि	तेपुन्यपूर्णमुनिराजसं

त्रकाव्यरचनामुच्चारयंतोनराः॥पुन्याढ्यामुनिरा

बंधीयसकरिसंयुक्तहोइ	कैसेहैतपजिनकेगहणाहे	ऐसे वेजसजीव

जकीर्तिसहिताभूत्वातपोभूषणा॥स्तेनमस्क

केवलज्ञानकीरमनो हर	मुक्तिकोंपावेहैउत्कृष्ट को	१	फूलनिकीअंजुलीक्षेपणी

लावबोधमचिरात्सिद्धिंलभंतेपरां॥पुष्पांजलिं

ऐसा ग्रंथ की एं है समस्त जीव ऐसैं समस्त मोह अंधकार ता अर्नेकों दीपक समान तिनकों कैसें है : | देदीप

विस्र विस्रु ॥ मोहांधकाराऽतियातिदीपान् ॥ दीपैः

मानसुवर्णके पात्र तिधऱ्या है तिनकरि | देवगुरुसा स्त्रु जो है | औं मोहांधकारविनासनाय निमत्ते

न्कांचनपात्रसंस्थैः ॥ जिनेंद्र० ॥ मोहांधकारविन ।

दीपकं चढा वो है ६ | घन वि सकापुष्पसमूह है तिनके वाल ने विषै धूपकरि

शाय ॥ ६ ॥ दीपं ॥ दुष्टाष्टकर्मेधनपुष्पज्वालसंधूप

देदीप्यमान | | धूपनिकरि कैसा है हरि कीये है और व स्तु की सुगंध अपनी वासना करि | देवगुरुशा

नैराश्वरधूमकेतैः ॥ धूपैर्विधूतान्यसुगंधगंधैः ॥ जिनें

स्वरूप जो | अष्टकर्मदहनानिमत्ति धूप चढावो है | ७ | दोमरूप अन्याश्रित रूप अन्या

द्र० ॥ अष्टकर्मदहनाय ॥ धूपं ॥ ७ ॥ क्रमुके

मनांही तिनकी अन्यमतीनिके वादनिसैं नाहीं स्खलित है प्रभावजिनका तिनकों

मनस्ताम गम्यान् ॥ कुवादवादस्खलित प्रभावान् ॥ फले

फलैनिकरि अत्यंर्थपणेंकरि कैसे है मोक्षफलकेदाता है तिनकरि | देवगुरुसा स्त्रु रूप जो | मोक्षफलप्राप्ति निमि

ला | र्लं मोक्षफलैर्निसारे ॥ जिनेंद्र० ॥ मोक्षफलप्राप्ताये ।

ऋषभ अजित है नाम जिनका | संभव | बहुरि अभिनंदन | सुमतिनाथ

रिषभोजितनाथाश्च॥ संभवश्चाभिनंदनः॥ सुमतिःप

पद्मप्रभ | बहुरि | सुपार्श्वः | जिननिमें उत्कृष्ट | १ | चंद्रप्रभ | पुष्पदंत

द्मप्रभश्च॥ सुपार्श्वो जिनसत्तम॥ १॥ चंद्राभः पुष्प

बहुरि सीतल ज्ञानादिक लक्ष्मी करि युक्त स्वरूप के ज्ञाता | श्रेयोनाथ | वासुपूज्य

दंतश्च॥ शीतलो भगवान् मुनिः॥ श्रेयांसो वासु

बहुरि | विमल कैसें है निर्मल है कांति जिनकी | अनंत है महिमा जिनकी

पूज्यश्च॥ विमलो विमलद्युति॥ अनंतो धर्मना

धर्मका धोरी | शांतिका करणहारा जिनोत्तम | अरु सें अरहनाथ स्वामी वा

थाश्च॥ शांतिकुंथुर्जिनोत्तमः॥ अरहश्चमल्लि

नाथमें यवेता रहो | हरिवंस विषे उपजे

नाथश्च॥ सुव्रतो नमितीर्थकृत॥ हरिवंशसमुद्भू

अरु सें अरिष्टनेमि जिनवर | दूरि कीया है कर्ममल जिन | कमठदेसवेरी

तो रिष्टनेमिर्जिनेश्वरः॥ ध्वस्तोपसर्गदैत्यारी॥ प

२६

श्रेत पार्श्वनाथ धरणेंद्र करि पूजनीक	५	कर्मनाशने हारे	महावीर तीर्थंकर	सिद्धार्थ

श्रीनागेंद्रपूजित ॥ ५ ॥ कर्मांतकृन्महावीरः सिद्धार्थ

ज्ञातकुल मध्य उत्पन्नि भए ऐसेतीर्थंकर है सब सुरनिके समूहाकरी	पूजिनीक है निर्मल है आकृति जिनकी

कुलसंभवः एतेसुरासुरौघेण ॥ पूजिताविमलत्विषः

५	पूजनीक है भरतादिक	राजानिकरि कैसे है संपूर्ण विभूतियुक्त है	तेतीर्थंकर

५ ॥ पूजिताभरताद्यैश्च ॥ भूपेंद्रैर्भूतिभूरिभिः चतुर्विध

च्यारिप्रकारकेसंघ को	शांतिकौंकरहुकरती है शांतिसांश्वती है	६	तीर्थंकर विषैभक्ति

स्य संघस्य ॥ शांतिं कुर्वंतु शाश्वती ॥ ६ ॥ जिनेभक्तिर्जि

फेरिदोय वारप्रीति	प्रगटनें निमल कह्या	निरंतर	होउमेरै	एही सम्यक्त्व एहै	संसारका नासक है

नेभक्तिः ॥ जिनेभक्तिः ॥ सदास्तुमे ॥ सम्यक्त्वमेवसंसारे

मोक्षकाकारण है	७	सास्त्र विषैभक्ति दोयवार फेरिकहना

वारणंमोक्षकारणं ॥ ७ ॥ श्रुतेभक्तिः श्रुतेभक्तिः श्रु

प्रीतिप्रगटनेंनिमित्त	निरंतरहोउ मेरै	एही सम्यग्ज्ञान है संसार	का नासक मोक्षकाकारण

तेभक्तिः सदास्तुमे ॥ सम्यक्त्वमेवसंसार वारणंमोक्षका

	विषै गुरुभक्ति	फेरिदोयवार प्रीतिप्रगटनेंनिमित्त	निरंतरहोउमेरै
८			

रणं ॥ ८ ॥ गुरौभक्तिर्गुरौभक्तिः ॥ गुरौभक्तिः सदास्तुमे ॥ चा

एहीचारित्र है संसारका नासक	मोक्षकाकारण है	९	अथजयमालकहिए है

रित्रमेवसंसार ॥ वारणंमोक्षकारं ॥ ९ ॥ अथजेयमाल

॥ॐनमःसिद्धेभ्यः॥गाथा॥

	गति॥४कौन	इंद्रियजातिभे.५	
१	एकेंद्रीजाति	नरकगति १	
२	बेंद्रीजाति	तिर्यंचगति २	
३	तेंद्रीजाति	मनुष्यगति ३	
४	चोइंद्रीजा॰	देवगति ४	
५	पंचेंद्रीजा॰	वेद तेकौन	
१५	जोगपज्ञा१५	स्त्रीवेद	१
४	मनकाजो	पुरुषवेद	२
१	सत्यमनजो॰	नपुंसकवेद	३
२	असत्यमन	अनंतानुबंधी.चौ॰	४
३	उभयमन॰	अनंतानुबंधीक्रो.पाषा	१
४	अनुभयमने	अनंतानुबंधीमानपाषाण	२
४	वचनके४	अनंतानबंधीमायावंस	३
१	सत्यवचन	अनंतानुबंधीलोभकृमि	४
२	असत्यवच	अप्रत्याख्यानकीचौकडी	४
३	उभयवचजो	अप्रत्याख्यानक्रोधहलरेख	१
४	अनुभयवच	अप्रत्याख्यानमानअस्थि	२
७	कायकेजोग	अप्रत्याख्यानमायामृग मींढा	३
१	औदारिककाय	अप्रत्याख्यानलोभमजी॰	४
२	औदारिकमिश्र	प्रत्याख्यानकीचौ॰	४
३	वैक्रियककाय	प्रत्याख्यानकीलोक	४
४	वैक्रियकमिश्र	प्रत्याख्यानक्रोधधूलरे	१
५	आहारककाय	प्रत्या॰मा॰काष्टस्थंभ	२
६	आहारकमिश्र	प्रत्या॰मायागोमूत्रव	३
	काययोग	प्रत्याख्यानलो.कसुंभ रागसा	४
७	कारमानअंग		

कायभेद॥तिसकेभा॥६	
पृथ्वीकाय	१
अपकाय	२
तेजसकाय	३
वाउकाय	४
वनस्पतीकाय	५
त्रसकाय	६
संज्वलनकीचौकडी४	
संज्वलनक्रोधजलरेख	१
संज्वलनमानवेतस्थंभ	२
संज्वलनमायाचवरखन	३
संज्वलनलोभहलिद्रारंग	४
हास्यादिकनोकषाय	९

हास्य १	सोग	१	स्त्रीवे	१
रति २	भय	२	पुरुष	२
अरति ३	जुगप्स	३	नपुंस	३

ज्ञानसुज्ञा		कुज्ञान	
मतिज्ञान	१	कुमतिज्ञा	६
श्रुतज्ञान	२	कुश्रुति	७
अवधिज्ञा	३	कुअवधि	८
मनपर्जय	४	एवंज्ञान	
केवलज्ञा	५	८	८

७ संयमभेद७ ॥ तेकोन :१

१ सामायकसंयम
२ छेदोपस्थापनसंयम
३ परिहारविसुद्धिसंयम
४ सूक्ष्मसापरायसंयमः
५ जथाख्यातसंयम
६ संजमासंयतासंजम
७ असंजतासंयमः एवंसंजम७

४ दर्शनभेदतेकोन ॥४॥

चक्षुदर्शन १	अचक्षुदर्शन २
अवधिदर्श० ३	केवलदर्शन ४

भव्यभेद२ तेकोन ॥

भव्य १ अभव्य २ ॥ एवं २

सम्यक्तभेद ॥६॥ तेकोन

मिथ्यातसम्य०	१	उपसम	४
समयमिथ्यात	२	वेदक	५
समयप्रकृति	३	क्षायक	६

संयमीभेद ॥२॥ तेकोन

संज्ञी ॥ १ ॥ असंज्ञी ॥ एवं २ ॥

आहारकभेद ॥२॥ तेकोन

आहारक ॥ १ ॥ अनाहारक एवं २

गुणस्थान १४ तेकोन ॥ गाथा ॥
गुनजीवापज्जत्तेपणासंयम
गानाउवाउवगोभियकमनो
वीसंतुपरूपनान्नणिपार ॥

१	मिथ्यात ॥	८	अपूर्वकरण ॥
२	सासादन ॥	९	अनिवृतिकर
३	मिश्र ॥	१०	सूक्ष्मसांपराय
४	अव्रत ॥	११	उपसांतकषाय
५	देसविरत	१२	क्षीनमोह ॥
६	प्रमत्त ॥	१३	संजोगकेवली
७	अप्रमत्त ॥	१४	अयोगकेवली

जीवसमासभेद १४ तेकोन

गाथा ॥ अडविहधाउणिच्चेयरविम
ल असणिसणीणं सुपयडियअ
पयडिपतिकुगुणियाजीवसगवणा२
अस्याअर्थ ॥ तिगुने ५७ ॥

१९ जीवसमास प्रज्ञासे: अप्रज्ञासे अन
त्रिप्रज्ञापते ५७ ॥

२ प्रथ्वीकायसूक्ष्मबादर ॥
२ अप्पकायसूक्ष्मबादर ॥
२ तेजकायसूक्ष्मबादर
२ वायुकायसूक्ष्मबादर ॥
२ नित्यनिगोदसूक्ष्मबादर ॥
२ इतरनिगोदसूक्ष्मबादर ॥
२ वनस्पतीकायसुप्रतिष्टितअप्रतिष्टित ॥
२ पंचेंद्रीसेनी १ असेनी २ एवं ॥
३ वेइंद्री १ तेंद्री २ चउइंद्री ३ ॥

प्रज्ञापतेभेद६ तेकोन ॥

गाथा ॥ आहारसरीरिंदियपज्जत्ती
आणपाणभासमणो ॥ चत्तारिपंचछ
प्पियइंदियवियलासणिसणीणं २

१	आहारपरजाप्ति	शरीरपर्जाप्ति	४ ॥
२	इंद्रियपर्याप्ति ॥	स्वासउस्वासपर्जाप्ति	५ ॥
३	भाषापर्याप्ति ॥	मनपर्याप्ति एवं६	६ ॥

१० प्राणभेद१० तेकोन

गाथा पंचविइंद्रियपाणा मणवय
कायणतिणिवलपाणा ॥ आणपा
णपाणा ॥ आउगपाणेणहोंतिदह पाण २

५ स्पर्स रसन घ्राण चक्षु श्रोत्र
३ बल मनबचन२ काय३ स्वास
२ उस्वास आनप्रान आयुप्रान ॥

४ संज्ञातेकोन ४

१	आहारसंज्ञा	३	मैथुनसंज्ञा
२	भयसंज्ञा	४	परिग्रहसंज्ञा

१२ उपयोगदर्शन ४ ग्यानोपयो० ८
ग्यानविपयच्छाविपजाइयकुलको
डिसंयुयासच्छिमाहातिएहिमणिय
कमेणचोवीसगणाणणानार्थ

[illegible] ध्यानकेभेदसोलातेकोनकोनसेसोकहिएहो ॥ १६ ॥

आरतध्यानकेभेद ४		रौद्रध्यानकेभेद ४	
इष्टवियोग १ अनिष्टसंयोग २ पीडाचिंतवन ३ निदानबंधन ४	२ ४	हिंसानंद १ अनृतानंदी २ स्तेयानंदी ३ विषयानंदी ४	
धर्मध्यानकेभेद ४	४	सुक्लध्यानकेभेद ४	४
आग्याविचय १ अपायविचय २ विपाकविचय ३ संस्थानविचै ४	२ ४	पृथक्त्ववितर्कविचार १ एकत्ववितर्कविचार २ सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात ३ व्युपरतक्रियानिवृत्ति ४	१ २ ३ ४
प्रत्येयलिष्मतेतेकोन ५७	५७	मिथ्यात्वतेकोन	५
गाथा॥ मिछ्यात्वाविरदातह कसायजोगायपच्चयाचेया पणदुदसवंधहेदुपणवी सपणरसाहुं॥ अर्थ॥	गाथा	एयंतबुद्धदरसी विवरीओवंभ तावसोविणओ इंदोविसंसं सयदो मक्कडिओचेवअण्णाणी १ अर्थ	
मिथ्यातनाम॥		अविरतवारातेकोन	
एकांतमिथ्यात॥ विपरीतिमिथ्यात॥ विनयमिथ्यात॥ संसयमिथ्यात॥ अज्ञानमिथ्यात॥	१ २ ३ ४ ५	पंचस्थावरकीरक्षानहीं ५ त्रसकीरक्षानहीं १ पंचइंद्रीकोनिरोधनहीं ५ मनकोनिरोधनहीं १	१ २ ३ ४
कसायपचीसप्रथमकही॥	२५	जोगपंद्रयमकहिआएहेए ५७ भये	५७
जातिभेदलखचौरासी ८४:			
गाथा णिच्चिदरधादुसत्तयतरुदसवियलिंदियेसुछच्चेव सुरणिरयतिरियचउरोचउदसमणुएसुसदसहस्स १ याकाअर्थतेलिपले ५२०००००एकइंद्रीलाष			
नित्यनिगोद ७००००००॥ इतरनिगो० ७००००००॥ पृथ्वीकाय ७००००००॥ आपकाय ७००००००॥ तेजकाय ७००००००॥ वायुकाय ७००००००॥ वनसतिकाय १००००००० दशलाष॥		बेइंद्रीलाष॥२००००००॥ तेइंद्रीलाष॥२००००००॥ चौइंद्रीलाष॥२००००००॥ देवगतिलाष ४००००००॥ नरकगतिलाष ४००००००॥ तिर्यंचगतिलाष ४००००००॥ मनुष्यगतिलाष १४००००००॥	
८४००००००एवंएकजा॥	जाति	कुलकोडिएकसौसाढासत्तानवेलाष	
८४००००००॥		॥१९७॥	

२२	पृथ्वीकायके॥	॥२४॥ विकलत्रयकके॥	पंचेंद्रीके एकत्र कुडी॥१०८॥
७	अपकायके॥	॥७॥ बेंद्रीके॥	॥२५॥ नरकगतिके
३	तेउकायके॥	॥८॥ तेंद्रीयके॥	॥२६॥ देवगतिके
७	वाउकायके॥	॥९॥ चौरिंद्रीयके॥	॥५३॥ तिर्यंचगतिके
२८	वनस्पतिकायके॥		॥१२॥ मनुष्यगतिके
	इति संपूर्ण॥		॥एवं १९७॥ कुलकोडि जाननी

अथ सोला सुपना चंद्रगुप्ति राजानैं आया सो लिख्यते॥

१॥ पहलै अकालउ सूरज आथियो॥ तीको फल राय जो वैजी॥ जायां जी पंचमकालका॥ केवलज्ञानी नहीं होसीजी॥ चंद्रगुप्त०२॥ तजैजी चंद्रमा चालती॥ तीको फल राजा देखोजी॥ जिनमत्तय मे जिनेस्वरो नी मेंपाखंडीघणा लेख्योजी चंद्रगुप्त०३॥ न्यारा जी न्यारी समाचारी॥ अथ देय मेंचलाय्योजी॥ सीखदीयाजी कुं मानसी गुरुका गेहीं होसीजी॥ चंद्रगु० ४॥ चौथा सुपनैजी बारा फणो॥ नाग देख्यो विकरालोजी॥ केतायक वरस कों आंतरोजी॥ पडसी बारा वरसको कालोजी॥ चंद्र०५॥ देवविमाने पाछो फिरयोजी॥ सुपनो पंचमहे ठेजी॥ देवविद्याधरनै आसीजी हो सी लब्धि विछेटीजी॥ चंद्र०६॥ छठे सुपनैजी रोडी परे॥ कमल विकस तो देख्योजी॥ वरणजी च्यारुं मायला॥ वाणिया के जिनधर्म लेखोजी॥ चंद्र०७॥ भूतभूत पादेखा नाचता॥ सुपनो सातवो जासीजी॥ मिथ्याती धर्मको मानता॥ अधिकी अधिकी होसी॥ चंद्र०॥ सुपनै देख्योज राजा आगवो॥ आग्याकौ विमकारोजी॥ उद्योत होसीजी नधर्मके विचविचमां चे अंधेरोजी॥ चंद्र०१०॥ तलाव सुको जाहीं नो दिसा दिखण दिसामें थोडोजी॥ तीनो दिसाजी धर्म नाहोसी॥ दिखिण दिसा धर्मजा टोसी॥ चंद्र०११॥ सोना का थाल में कुकर॥ देख्यो खैषी र खाडखातोजी॥ दसमै सुपना मैं राजा सब॥ हो जासी अनमत मतोजी॥ चंद्र०१२॥ हाथीजी उपरि वांदरो सुपनो ग्यारवो रासीज मलेछ राजा नवा होसी॥ हिंदु एक लोपासीजी॥ चंद्र०१२॥ तीव तैनेल खावासा होसी॥ उतणा घर फरसीजी॥ वडसीजी छुगली चोरटा साउकार मन मेंडरसीजी॥१४॥ चंद्र०॥ छोडसी कार समुद्रनैं सुपनै तेरमो कूडोजी॥ छत्रीजी वचन लोपसी॥ ताको वीसवासथोडो रहसीजी॥१५॥ चंद्र०॥ वछडा जुप्याजी रथ उपरै सुपनो चोदवो दोमै जी॥ तरुन पुरुष धर्म पलिसी॥ वृधिसपलअरमपो सीजी॥ चंद्र०१६॥ राजजी॥ राजाजी समकित लेनहीं भि कवारच दोष्टिपे सुपनो पंदरवो रचासीजी॥

मिथ्यातमेपडतासी॥ चेद्र०२७॥ विनामहावतहाथीलडे॥ सुपनोथ
लवोदेष्योजी॥ केतायकवरसाकेआंतरे॥ मागपामेहेनहीमिल
सीजी॥ चेद्र०२८॥ विपाकसुत्रकीचूलिका॥ मुनिभद्रबाहुकि
योनीचोडोजी॥ वीनतीप्रणमारेप्रमाणते॥ जेमालकीनीछेजे
डोजी॥२९॥इतिसोलेसुपन

अथ छंद लीषते ॥१॥ अथ समाधिमरन लिष्यते ॥ जोगीरासा
कीचाल गौतमस्वामीवंदौनांमीमरनसमाधिभलाहै॥मैकव
पोकतिसिदिनध्यांकंगाकंचनकलाहै॥देवधरमगुरुश्रीति
महांदिढसातविसननतहिजांनै॥त्यागिवाईसोंअतिपसंजमी
वोखतनिरवानै॥२॥चक्रीउपरीचूल्हबुहारीपानीत्रसनवि
राधै॥वनजकरैपरदर्वहरैनहिकर्मछहोंइमसाधै॥पूजासास्त्र
गुरुकीसेवासंजमतपचहुंदांनी॥परउपगारीअलपअहारी
सामायककविधग्यांनी॥३॥जापजपैतिहुंजोगधरैथिरतनकीम
ममताटारै॥अंतसमैवैरागसंभारैध्यानसमाधिविचारै॥आग
लगैअरुनावडुवैतवधर्मविघनजवआवै॥च्यारिप्रकारअ
हारत्यागिकेमंत्रसुमनमेध्यावै॥४॥रोगअसाअजरावउदेषै
काराबडदेषैकारनिअौरतिरारै॥वातवनीहैजोतनआवेनप्र
नवनकौनिवारै॥जोनवनैतोघरमेरहिकेसवसौंहोयनिरालामातपि
तासुततियकौसौंपेनिजयरिगहअहिकाल॥५॥कुछचेतालै
कुछश्रावकजनकुछउदबियाधनदेशी॥छिमांछिमांसवसौंक
रिआछेमनकोसल्यहनेई॥सुत्रुनिसौंमिलिनिजकरजोरैमैवज
करीबुराई॥तुमसेपीतमकौउपदीनेतेसवषकसोनाई॥६॥धन
धरतीजोमुषतेमांगेसोसवदेसंतोषै॥छहोंकायकेप्रांनीऊप
रकरुनाभावनरोषै॥नांचेधरवेरेकजागेकुछभोजनकुछ
पेलै॥दूधाधारीक्रमक्रमतजिकेछाछीअहारपहेलै॥५॥छाछि
त्यागिकेपांनीराषैपानीतजिसंथाराभूमिमांहिथिरआसनमां
डैसाधरमीटिगच्याराजवतुमजानोयहनजपैहैनवजिनवांनी
कहियो॥पोकहिमोनलियोसन्यासीपंचपरममनगहियो॥६॥च्या
चोआराधनमनध्यावैवारेभावननावै॥दसलछनमुनधर्मविच
रैरत्नत्रयमनल्यावै॥पैतिससोलैवटपनआरौदोयकवरनविचि
रै॥कांपातेराउपकीटेरापांनमईतूंसारै॥७॥अजरअमरतिजगु
नपूरोपरमानंदसुभावै॥आनंदकंदचिदानंदसाहिवतीनजग
पतिध्यावै॥छुधातृषादिकहोंहिपरीसैसहैभावसमराषै
चारपांचौसवत्यागैध्यानसुधारसचाषै॥५॥हामचांमरहिसूक्रजा

यसवधर्मलीनतनत्यागे॥अंदत्तुतपुंन्यउपायसुरगमैसेजउवैजै
जागे॥तहांसौंआवेसिवपदपावेविलसेसुषअनंता॥ द्यानतयह
गतिहोहिहमारीजैनधरमजेवंता॥१०॥इतिसंपूर्णं॥ ॥

॥अथ ॥प्रथमनमोंअरिहंतानंद्वतियनमोसिद्धांनंजी त्रि
तयनमोंआइरियानंनमोउवझायानंजी॥पंचमनमोलोएसव
साहूनंगुनगाऊंजी॥चारोंमंगलअरिहंतसिद्धसाधधर्मध्याऊंजी॥
चारोंउत्तमलोकमैंजिनसिधसाधसुधर्मजी चारोंसरनगहोंजिनवर
सिधसाधधर्मपरमंजी॥रिषभचंद्रप्रभुसांतजिनंदईमांनमनवंदोंजी आ
ईहैंहिगीचोवीसीसवनमपायनिकंदोंजी॥श्रीजिनवचनसुहा
वनेस्यादवादअविरुद्धजी॥तीनजगतमेदीपकावंदोंत्रिकरणसु
द्धजी॥प्रतिमाश्रीभगवंतकीस्वर्गमत्यपातालंजी॥रुत्यअरुत्य
उभेदसौंवंदकरौंत्रिकालजी॥पूरवपापजुमैंकीयोकृतकारत
अनमोदंजी॥मनवचकायत्रिभेदसौंसोसवमिथ्याहोदंजी॥आगे
पापजुहोयगोउनचासविधिनासोजी॥वर्तमानअपछेदकरौंतुम
आगेपरकासोजी॥सबजीवसोंमित्रतागुनीदेषहरषाऊंजी॥दु
नदयासमतासमताचारोंभावनभाऊंजी॥प्रभूपूजेजुगभेदसौंपर
पदपंकजसेऊंजी॥आगमअभ्यासौंसदारतनत्रयनितवेऊंजी
पअहरमानअरयअनमिलमूलिकहोसुषमांऊंजी॥ध्यात
दोयहरसांझकोंअर्धरात्रमेंभाऊंजी॥ध्यान नदीनदयारमोंभो
भोंभगतसुदीजैजी॥अंतसमाधिमरनकरौंरागविरोधहरीजै
जी॥इति संपूर्णं॥ अथ॥

वंदोंश्रीजिनराजपदरिद्धसिद्धदातारविघनहरनमंगलकर
नदारिद्रदलिनअपार॥१॥चोपई॥मिथ्यात्वकरमबंधनपोउ
रिनिवारनवनवतवउवदये॥सोसवनासजगतितैहोइ राहै
नप्रभुउभकारनकोपाय॥ज्ञानजोतअघनमछयकारा॥अयट
रकासककहैंगणधारा॥मोमनतवनवसेतुवनामा॥तहांनमर
मरकोकांमहूमूजागदमनत्वकाया॥करौंहर्षजलवंद
ऊवाग॥विषयमालचिरकालअपारा॥भाजेतजतनवंदव
द्धरा॥धपधूपमकनकमेंभूसवकस्यो॥नविकाश्मागसुरत्रे

अवतस्यौ ॥ चितग्रह्यो नतारतुमआय । करौहेमतनचित्रनकाय ॥ ५ ॥ वे
नुस्वारथसवजगसुषदाय । जोंत्यौंसचीउभ्यपरजाय । भगतिरुचीचि
तमलपामोहि । तुमवसउषगनकैसैंहोहि ॥ ६ ॥ जन्मोजगतवनमैंचि
रकाल । नपल्योषेदअगनिविकराल । तुमनयसुधासीतवानराषु
न्यतैदेलहिसवतपहरी ॥ ७ ॥ गमनप्रनावकोमलहौदेव । परमल
श्रीजुतकनकअनेव । मोमनपरसैतुमसवकाय । क्यौंमममिलैंमु
कसवसुषआय ॥ ८ ॥ विधवननजिसिवसुषपरकियौ । मदनमां
नछिनमैंहरलियौ । पीतपात्रवचसुधापिवंत । विषैरोगरिपुत्रा
सहतंत ॥ ९ ॥ तुमटिगमांतसथंभजुरहै । रतनरासिवऊसोभाल
है । देषतमांनरोगछयहोय । जद्यपिहैपाहनमयसोय ॥ १० ॥ तुममू
रतिगिरसपरसवाय । लगैंकर्मरजपुंजपलाय । ध्यांनतोहिउर
कमलमझार । होइपरमपदजगतिस्तार ॥ ११ ॥ भवभवपायोदुष
अपार । यादकरतलागतअसथार । तुमसवजांनअथानक्रि
याल । करौभगतअवहोहिदयाल ॥ १२ ॥ यापीस्वानअंतकीवा
र । लहोसुरगसुषसुननोकार । जपैंजोअमलमनतुमनगवांन
अचरिजकहावरैसिवथांन ॥ १३ ॥ तुमषनुसुद्धपांनछिवंत
ना लीभगतिविनांजोसंतमोहजरैदिढमोषकिवार । षोलस
कैनलहैसुषसार ॥ १४ ॥ मुकतपंथअयंतमवऊतस्यौ । गटे ॥
कलेसविषमलिसतस्यौ । सुषसौंसिवपदपुहचैकोय । जोतुम
वचनवदीपनहोय ॥ १५ ॥ कर्मधरातमनिथिभूरिदवीक
वीयहिवैनहिकूर । भगतकुदालषोदलैसंत । विलसैपरमानं
दतुरंत ॥ १६ ॥ स्यादवादहिमगिरिसौचली । तुमपदपरसउदधि
सिवरली । भगतगंगमैंमोमनन्हाय । क्यौंनपापमलकलुषि
तजाइ ॥ १७ ॥ परमातमथिरपदसुषमई । मैंसदोषतुमसवसुधुधि
ई । यद्यपिअसतयहध्यांनतुम्हार । तदपिसुवांछितफलदात
र ॥ १८ ॥ वचनउदधिसवजगविसतस्यौ । स्यादलहरिमिथ्यामलह
स्यौ । थिरमनग्यानदृष्टिगमनथौं । स्यांनसुधापांजमजैहरैं ॥ १९ ॥
भूषणवसनकुसमअसिगहैं । सोनाम्चवकदेवनलहै । तुमनि
परिग्रहव्यसनमनोग । कौंनकाजभूषणअसिजोग ॥ २० ॥ तुमसे

मानहिंइन्द्रजुनपे॥२१॥काअवतारीसोनयो॥लोकनाथनोवाशि
घिपोन॥सुकृतकंतरदविघसुतहोत॥२१॥राघुनवचनसुपुद
गलरूप॥नहिंम्यापैतुमगुनचिद्रूप॥नदपिनगतदिढसुथाजुग
है॥मनवंछितफलसुरतरुलहै॥२२॥रागदोषविनपरमउदा
स॥वाहरहतिअरुसबजगदास॥जुवनतिलकतुमहिगरिमु
नसे॥यहसजुताकहिंआननलसे॥२३॥जसगावेसुरनरत्रियपा
ग॥पंतरूपगपायकसंसार॥द्वादशांगपरिमोहनरहे॥युतिक
रसुगमपंथसिवलहे॥२४॥अनंतचतुष्टयरूपनिहाल॥आवे
मतरुचिसहितत्रिकालंपुन्यवानसुजनमारगहोर॥तीर्थंकरप
दविलसैसोइ॥२५॥इदसेवकरिपारनलहै॥गणधरादिसवगु
णनहिंकहैं॥हममतैतनकियोकछुएऊ॥जगतनिसिवसु
रनसमदेऊ॥२६॥दोहा॥सवदकाम्यहितनकैमेवादरराजम
रलाज॥एकीभवपरगटकियोद्यानतभगतजिहाज॥२७॥इति
स्तुति॥अथपदलिख्यते॥ राजविषैजुगलि
निसुषकियाराजस्याजनवसिवपदलिया॥स्वयंबोधस्वंभू
भगवांन॥वंदौंआदिनाथगुणषांन॥१॥इदक्षीरसागरजलल
यमेरुकुलाएगायवजाय॥मदनविनासिकसुषकरतार॥वं
दौंअजितपदकार॥१॥सकलध्यानकरिकरमरागवसेत॥मो
हतारोहोदेवाधिदेवमैमनवचननकरिकरौंसेव॥मोहितारो
होदेवाधिदेव॥तुमदीनदयालअनाथनाथ॥हमकौंराखो
आपसाथ॥२॥मोहतारोहोदेवाधिदेवयहमारावारसंसारदे
स॥तुमचरनकलपतरहरकलेस॥३॥मोहतारोहो॥८देवाधिदे
व॥तुमनामरसायनजीयपीय॥द्यानतअजरामरभवत्रती
य॥४॥मोहतारोहोदेवाधिदेव॥६२॥इति॥ केहारोरेजियक्रोध
काहेकरे॥देषिकैअविवेकप्रांनी॥क्यौंविवेकनधरे॥१॥रेजि
यक्रोधकाहेकौंकरै॥जिसेजेसीउदैआवै॥सोक्रियाआचरै
सहजनूंअपनौंविगारे॥जायडरगतपरे॥२॥रेजियक्रोधक
हेकौंकरैहोइसंगतिगुनसवनिकोसवजगउचरै॥तुमप
नलेकरमलेसवकौं॥तुरेलषमनजरै॥३॥रेजियक्रोधक

हैकोंकरै॥१॥वैदपरविषहरसकलनहिंआपनपकोमरै॥वकक
बायनिगोदवासाछिमांघांनतननेरैजियकोयकाहेकौंकरैरि
५॥६॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥विषैविलाससमकनहियार
कौ॥पांनथांनअधिकारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥१॥भपल
चलावैसोफलपावैआवरीनगहिसारी॥दीननहींअनिमां
नीनांहीमध्यरसामरहारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥२॥पूजा
दांनकौरैनहिचाहैसुरगतकोरतनारी॥जीवतदसामनकर
जांनीरागदोषपरहारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥३॥चंदनतृस
नदीनरूरविससिवारदसेउपगारी॥हेमराजतिनहीपुरष(
निकरवस्कधानीरपधारी॥ऐसेमित्रसौंकरिप्यारी॥४॥५॥
औरकौंविसारप्यारनेमपेमसार॥रोगसोगकौविजोगजोगहैं
अपार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौंविसार॥१॥उमजायसुषपायथं
नकौंनिवार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौविसार॥२॥धर्मछांतधर्मी
नीलसमरीलकार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौविसार॥३॥नीदना
सकांमत्रासक्रोधलोभहार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौविसा(
र॥४॥पापहांनआपप्यांनजायकौकरार॥प्यारनेमपेमसार(
औरकौविसार॥६॥दीनतानहांनतानस्वर्गमोषद्वार॥हेमरा(
जजीसनाथधर्मधर्मकार॥प्यारनेमपेमसारऔरकौविसार
७॥६॥तिहैईचेतनसबहीमैघाटवाटनहिऔर॥दीपमांट
मंदिरपरगासैसोलनमेसिरमोर॥चेतनसबहीमैघाटवाटनर(
हिऔर॥१॥उत्तमनीचकरमसोजमैमित्रमुकतकीगोर॥काहे
आपथोकाहिविरधोकाहिविरोधोपहमिथ्याकीटेर॥चे
तनसबहीमैघाटवाटनहि॥और॥२॥गजकुंषवावरणवज्ज
नैमानैसोनाबोर॥कौनपुरुषकीनिंदाकीजेकाकीकीजे
गोर॥चेतनसबहीमैघाटवाटनहिऔर॥३॥केवलग्यांनम
ईसवरजेयहसरधासिवपोर॥हेमराजआस्वाहैजानैअनुभै
अमृतकोर॥चेतनसबहीमैघाटवाटनहिऔर॥४॥८॥तिहै७॥फू
लीवसंत॥जहआदीसरसिवपुरगए॥भरतनृपबहतरजिन(
मूरकमईसवनिरमए॥फूलीवसंतफूलीवसंत॥१॥तीनचौ॥(

वीसरतनमैंउतिमांश्रंगरंगजेजेनए॥सिंहसमानसीससम(
सवकेश्रदतुतसोश्नापरनए॥फूलीवसंतफूलीवसंता२॥वाल
श्रादिश्राहूवकीरमुनिसवनिमुकतसुषश्रनुभए॥तीनश्रठा
ईफागनिषगमिलगए॥वेगीततनएन॥फूलीवसंतफूलीवसंत
३॥वसुजोजनवसुपेडीगंगा॥फिरीवृकतसुरश्रालए॥द्यानत
सोकैलासनमोहैगुनकायैजांवरनए॥फूलीवसंतफूलीव
संत॥४॥इति॥६१॥तुमग्यानविभोफूलीवसंत॥यकमनुमथ
करसुचसौरमंत॥तुमग्यानविभोफूलीवसंत॥१॥दिनवडे(
नएवैरागभाव॥मिथ्यामतिरजनीकोघटाव॥तुमज्ञानविभो
फूलीवसंत॥२॥वृकफूलीफैलीसुरुचिवेल॥ग्याताजनसमत
संगकेल॥तुमज्ञानविभोफूलीवसंत॥३॥द्यानतवांनीपिकम
धुररूप॥सुरनरपसुश्रानंदघनसरूप॥तुमज्ञानविभोफूलीव
संत॥४॥इति॥६२॥ग्यांनीजीवदयानितपालै॥श्रारंभतेपर
यातहोतहैं॥क्रोधघातनिजटालै॥हिंसात्यागदयाकरहावेज
लैकषायवदनमें॥वाहिरत्यागीश्रंतरदागी॥यकचेनरकम
रनमें॥ग्यांनीजीवदयानितपालै॥१॥करैदयापरश्रालसभाव
ताकौंकहियेपाप॥सोनसुभावप्रमादनजाके॥सोपरमारथ
श्रापी॥ग्यांनीजीवदयानितपालै॥२॥मिथ्याचारनिरुहि
मरहनासहतावकुडषजाता॥द्यानतवोलविमोलनिजीम
निकैरेजततसैंग्याता॥ग्यांनीजीवदयानितपालै॥४॥इति॥६३
७॥वेकाजएकब्रह्महीसेती॥श्रंगसंगनहिवहिरभूतसव
धनहाथसामग्रीनेती॥काजएकब्रह्महीसेती॥सोलहसुरग(
नवककैमेंउपा॥सुषतरसातमैंतनकावेती॥जासिवकारनमु
निगनध्यावै॥सोतेरेघटश्रानंदसेती॥काजएकब्रह्महीसे
ती॥१॥दानसीलजपतपव्रतपूजा॥श्रफलग्यानविनकिरिया
केती॥पंचदरवतोवैनितन्यारे॥न्यारीरोगविधजेती॥काज
एकब्रह्महीसेती॥२॥मूंश्रवनामीजगपरगासीद्यानतभा(
सीसुकलावेती॥तजोलालतउनकेविकलपसव॥श्रनुभोमग
नसुविद्यएती॥काजएकब्रह्महीसेती॥४॥इति॥६४॥होरीवेद

नषेलैहोरी॥सत्ताभूमिछमावसंतमैं॥समताशांतप्रियासंगगोरी॥चे
तनषेलैहोरी॥मनकोमटपेमकोपांनीतामैंकरुनाकेसरघोरी॥ग्यां
नध्यांनपिचकारीनरिआपसमैंछोरैंहोरी॥चेतनषेलैहोरी॥२॥गु
रुकेवचनमृदंगवजतहैंनैंडफतालटकोरीसंजमअ
तरविमलव्रतचूकानावगुलालउडैंरंगजोरी॥चेतनषेलैहो
री॥३॥धरममिठाईतपवरूमेवासमरसआनंदअमलकटोरी॥
ध्यांनसुमतकहैंसषियनसौंचिरजीवौयहजुगजुगजोरी॥चे
तनषेलैहोरी॥४॥इति॥७२॥नौरतनपोनजश्रीजिनराज॥सफ
लहोहिंतेरेसवकाजधनसंपतिमनवंछितभोग॥सवविध
आनवनैंसंजोग॥नौरतनयोनजश्रीजिनराज॥१॥कलपवृ
छताकेघरैंहैंकामधेनुनितसेवाचवैं॥पारसचिंतामनिस(
मुदाय॥हिनसौंआयमिलैंसुषदाय॥नौरतनपौनश्रीजिनराज
२॥दुर्लभतैंसुलभकैजाय॥रोगसोगदुषहरपलायसेवादेवकोरे
मनलाय॥विघनउलटमंगलवहराय॥नौरतनयोनविश्रीजिन
राज॥३॥डायनभूतपिसाचनवलै॥राजचौरकोजोरनचलैं॥ज
सआदरसौंजागप्रकास॥ध्यांनतिसरगमुकतपदवास॥नौरतन
योनजिश्रीजिनराज॥४॥इति॥७३॥जिनकेहिरदैंभगवांनव
सैंतिन॥आंनकौध्यांनकियानकियाचक्रीएकमिलापभ
एतैंऔरतरनमिलियामिलया॥जिनकेहिरदैंभगवांनवसै॥
तिनआंनकौध्यानकियानकीया॥१॥कचिंतमनवंछित(
दायकऔरतगनगहियागहिया॥पारसएककनीकरआवेऔर(
धननलहियालहिया॥जिनकेहिरदैंभगवांनवसैंतिन(
आंनकौध्यांनकीयानकीया॥२॥एकअनंतरससहितजिय
राऔरसहनउदियाउदिया॥एककलपतरुसवसुषदात
औरतरुनउगियाउगिया॥जिनकेहिरदैंभगवांनवसैंति
नआंनकौध्यांनकियानकिया॥३॥एकअनेमहादांनदेय
कै॥औरसुदांनदियानदिया॥ध्यांनअम्रतसुधारसचाष्यो
अमृतऔरपियानपिया॥जिनकेहिरदैंभगवांनवसैंतिन
आंनकौध्यांनकीया॥४॥इति॥७४॥आपोमहजवसंतषेलो

सवहोरी होरी हो उतबुधदया छमा वकृंत्या दा इत्ति जिपरतन
त्रैगुनजोरी हो ग्यांनध्यांनमफलालवृतहैअतहितसबद
होत्तघनघोरी धरमसुरागगुलालउडतहैसमतारंगडऔर
घोरीहो २ परसनउत्तरनरपिचकारीछोरतदोनोकरिनो
री इतत्तेकहैनारतुमकाकीउततैकहैकौंनछोरी ३ आ
ठकाअर्श तुअपावकमैजलतुकसां नईसुबउरी ग्यांन
तासिवआनंदचंदक्षुविदेमेसजनन्तैनचकोरी ४ इति ७५
अजतनाथसौंमनलावोरे करसौंतालवचनमुषनाम्मेमे
चितलगावोरे अजतनाथसौंमनलावोरे ग्यानदरससु
षलगुनधारी अनंतचतुष्टपध्यावोरे अवगाहनाअवा
धमूरतअगुरुअलषवतलावोरे १ अजतनाथसौंमन
लावोरे करनासागरगुनरतनागरजोतिउजागरगावो
रे त्रिभवननायकनवनयघायकआनंददायकगावोरे
अजतनाथसौंमनलावोरे २ परमनिरंजनपापकर्मगंजन
विरंजनवहावोरे ग्यानतजैसासहिवसेवौतैसापदवीपा
वोरे अजतनाथसौंमनलावोरे ३ इति ७६ राग आसाव
री अवहमअमरभयेनमरेंगे तनकारनमिथ्याततदीयौत
जकौंकरिदेहधरेंगे अवहमअमरभयेनमरेंगे उपजैमरे
कालतैप्रानी तातैकालहरेंगे राग दोषजगवंधकरतहै
इनकौनासकरेंगे अवहमअमरभयेनमरेंगे देहविनासी
मैअविनासी भेदग्यांनकरेंगे नासीजासीहमथिरवासीचो
षेह्वैनिषरेंगे अवहमअमरभयेनमरेंगे मैरैअनंतवारवि
नसमकैअवसवदुषविसरेंगे ग्यांनतनिपटनिकटअ
क्षरदो चितसुमरेसुमरेंगे अवहमअमरभयेनमरेंगे अ
वहमअमरभयेनमरेंगे ७७ इति आसावरी। माईग्यांनी
सोईकहियेकरमउदैसुषदुषभोगतैरागविरोधनलहियेमा
ईग्यानीसोईकहिये कोऊग्यानक्रियातैकोऊसिवमारगव
तलावै नैनिहचैविवहारसाधिकैदोनौचित्तरिझावैमा
ईग्यानीसोकहिये १ कोईकहैजीवछिनभंगुरकोईनित्य

वषांनै॥ परजय दरव तन पपरमानै॥२॥ नूसमता आनैं॥ भाई१
ग्यानी सो कहियै॥ कोई कहै गदै है सोई कोई कै हिम बोलै॥ ग्यांन
तस्या दसु तुलामैं दोनों वस्ले तोले॥ भाई ग्यानी सो कहियै॥४॥२६७
भाई कौन धरम हम चालै॥ एक कहै जिह कुलमें आए ठाकु
रकौ कुल गावें॥ भाई कौन धरम हम चालै॥१॥ सिवमत बोध सुवे
द नैयायक मीमांसक अरु जैना॥ आपसरी है आगममाहैं१
का की सरधा ऐना॥ भाई कौन धरम हम चालै॥२॥ परमेसर पै२
आया हो ताकी वात सुनीजै॥ पूछै वहुत न वोलै वह अब फिकर१
क्या कीजै॥ भाई कौन धरम हम चालै॥३॥ जिन सब मतके मायसे
च करि मारग एक बताया॥ ग्यानत सो गुरु पूरा पाया भाग हमार
आया॥ भाई कौन धरम हम चालै॥४॥ ॥ रागगोरी॥ हमारो कारज
कैसे होय॥ कारण पंच मुकत मारग के तिनमें के है दोय॥ हमा
रो कारज कैसे होय॥ हीन संघनन लघु आऊषा अलपमनी१
षाजोइ॥ कांचे भावन सचे साथी सव जग देख्यो टोइ॥ हमारो का
रज कैसे होय॥१॥ इंद्री पंच सुविषयन दौरै माने कहा न कोइ
साधारन चिरकाल वस्यो मै धरम विना फिर सोअ॥ हमारो का
रज कैसे होय॥२॥ चिंतावनी न कछु वनआवै अव सव चिंता
खोइ॥ ग्यांनत एक सुद्ध निजपद लखि आपमें आप समोइ१
॥ हमारो कारज कैसे होय॥४॥ ॥ रागगोरी॥ हमारो कारज ऐ
से होइ॥ आतम आतम परपर जाने तीनो संसै षोय॥१॥ हमारो
कारज ऐसे होइ॥ अंत समाधिमरन करि तन तजि होहि सक्र
सुरलोइ॥ विविधि भोग उपभोग भोगवै धरम तनों फल सोइ॥ ह
मारो कारज ऐसे होय॥२॥ पूरी आव विदेह भूप है राज संपदा
भोग॥ कारण पंच लहै गहै दुद्धर पंच महाव्रत जोइ॥ हमारो का
रज ऐसे होय॥ तीन जोग थिर सहै परीसह आव करम मल
धोय॥ ग्यांनत सुष अनंत सिव विलसै जनमै मरै न कोइ॥ हमा
रो कारज ऐसे होइ॥४॥ ॥२॥ देख्यो भाई आज जिनराज विराजै कं
चन मणिमय सिंहपाव पल्ल्यंक तरा हु पहु छाजे॥ देख्यो भाई आ
जिनराज विराजे॥ तीन छत्र त्रिभुवन जस जंपै चौसठ चमर स

माने॥ वांनीजोजनयोरमोरसुनिहरअहिपातगजाजे देषोमाई
श्री जिनराजविराजे॥१॥ सादेवारहकोदंडभी आदिकवाजेव
जे॥ छत्रत्रयी कहिपतिनामंडलकोहिमसूरससि लाजे॥ देषोमा
ईश्री जिनराजविराजे॥२॥ पुहपवृष्टिजलकनकमंदयवनइंद
सेवनितसाजे॥ प्रभुनचुलावैध्याननआवेसुरनरपसुनिजकाजे
देषोमाई श्री जिनराजविराजे॥३॥ ॥पि०॥ देषोमाई आतमराम
विराजे॥ छहोदरवनवतत्वगेयहै आपसुग्यायकछाजे देषोमा
ईआतमरामविराजे॥१॥ अरिहंतसिद्धसूरिगुरुमुनिवरयांचो
पदजिहमांही॥ दरसनग्यानचरनतपजिहमैपटतरकोऊनां
ही॥ देषोमाई आतमरामविराजे॥२॥ [illegible]ग्यांनचेतनकहियै
जाकीवाकीपुदगलकेरी केवलग्यांनविभूतिजासकैआ
नविनोक्रमचेरी॥ देषोमाईआतमरामविराजे॥३॥ एकेंद्रीपंचें
द्रीपुदगलजीवअतिंद्रीग्यांता॥ द्यांनतताहीसुद्धदरवकों
जांनपनोसुषदाता॥ देषोमाई आतमरामविराजै॥४॥ गोरी॥ पि०३
अवमोहतारलेऊमहावीर॥ सिद्धरथनंदनजगवंदनपापा
निकंदनधीर॥ अवमोहतारलेऊमहावीर॥ ग्यांनीध्यांनीदा
नीजांनी॥ वांनीरहरगंभीर॥ मोषकेकारनदोषनिवारनरोगवे
दारनवीर॥१॥ अवमोहितारालेऊमहावीर॥ आनंदपूरतसो
मतासूरतचूरतआपदपीर॥ वालजतीदृढव्रतीसमकतीदु
षदावानलनीर॥ अवमोहितारलेऊमहावीर॥२॥ गुनअने
तभगवांतअंतनहारा[illegible]शिवपुरहिमधीर॥ द्यांनतएक
ऊगुनहमपावैंदूरकरैभवभीर॥ अवमोहतारलेऊमहा
वीर॥३॥ गोरी॥ प०४॥ जैजैनेमनाथपरमेस्वर॥ उत्तमपुरुषने
कोंअतिउछवनवालब्रह्मीलधरनेस्वर॥ जैजैनेम[illegible]नाथ
परमेस्वर॥ नारापूर्वेऊनृपसेपकरिजेअघतिमरदिनेस्वर
१॥ तुमजसमहिमांहमकहाजानैं नाषनसकतसुरेस्वर॥
रइंद्रसवैमिलपूजैजैअमतनरेस्वर॥ गुनअनंतहमअंतन
पावैवरननसकतगनेस्वर॥ जैजैनेमनाथपरमेस्वर॥२॥ गु
णधरसकलकैयुतवाटेजैनबजलपोतेस्वर॥ द्यांनतह

मछदमस्तु कहा कहै कहत सकत सरवैस्वर।जैजै नेमनाथ पर।
मेस्वर।४।गौरी।७प।आदिनाथ तारन तरन।नाभिराय मरुदेव्या।
नंदा जनम जरा मरन हरनं।आदिनाथ तारन तरन।१।सकल
मनू छ्या जुगल उषित भए करमभूमि विधि सुष करनं।आप।
छवनू सपतल षचैते।भगतन भोग जोग धरनं।आदिनाथ तार।
न।२।कायोत्सर्ग छमास थस्यो दिढ वनष गमृग पूजन चरन।धी
रज धारी वरष अहारी सहस वरस तप आचरनं।आदिनाथ तार।
न तरन।३।करम नासि परकास ग्यांन को सुरपति कियो समोसर।
नं सब जन सुष दे सिवपुर पहुचे।द्यानत नवि तुम पद सरनं।आ
दिनाथ तारन तरन।४।गौरी।प दी।आदि देव पद सेलो जैवंती
यह रूजो।सिवमारग को राह बतावै और न कोई दूजो।सेलो
जे सेलो जैवंती यह रूजो।देव धरम गुर सांचे जानै झूठो मार
ग त्याग्यो।सेलो के परसाद हमारो जिन चरनन चित लाग्यो।से
लो जैवंती यह रूजो।२।चिरकाल सह्यौ अति भारी सो अब सह
ज विलायो।३।रितह रन सुष करन मनोहर धरम पदारथ
पायो।सेलो जैवंती यह रूजो।३।द्यांनति कहै सकल संतनि
कौं नितप्रति प्रभु गुन गावो।जैनधरम परधान ध्यान सौं सब
ही सिव सुष पावो।सेलो जैवंती यह रूजो।४।७।राग सोरठ।दे
ष्यो नेक फूल लेनि कस्यो विनु पूजा फल पायो।हरषत भाव
मस्यो गजपगतल सुरगन अमर कहायो।देषो नेक फूल
लेनि कस्यो विनु पूजा फ[..]ल पायो।१।मालनि सुता देहली पू
जी अपछर इंद्र रिकापो।२।हली चरु सो दृढव्रत पास्यो दारि
द्र तुरत नसायो।देष्यो नेक फूल ले निकस्यो वि नु पूजा फल
पायो।२।पूजा रह लकर जिन पुरुषनि तिन सुरग वनवन
यो।चक्री भरत न यो जिनवर को अवधि ग्यांन उपजायो।देषो ने
क फूल ले निकस्यो विन पूजा फल पायो।३।आर द्रव्य ले पू
नु पूजो ता पूजन सुर पद आयो।द्यानत आप समान करन है
सरधा सौं सिर नायो।देषो नेक फूल ले निकस्यो विन पूजा फ
ल पायो।४।इति पद।राग सारंग।आई आप न पाप कमाए

र॥आएक्योंनपरीसेमहियैआगेनोननवेघरुकहूनहेपूरव
करमनिर्दहियै॥नाईआपनपापकमाए॥१॥न्योंनजिमायेजे
नकोंचहियेघरुआयेंनहियें॥परबसतोसवहीवसहतहे।
सुवससहेंधनकहियै॥नाईआपनपापकमाए॥२॥रिणक
होमयरनेजदीजियेंमांगेंक्योंलेरहियै॥कोटिजनमतपर
उल्लनजेपरतेपरसहेंजैसहियै॥नाईआपनपापकमाए॥३॥
रोषउष्टधनलेजलालची॥पांनजामरिसुचहियै॥ग्यानतहे
रूसुवीसवमोतेएघरनांमनिवहियै॥नाईआपनपापकमाए
४॥इतिपदं॥८१॥रागसोरठ॥नाईकायानेरीउषकाटेरी॥वि
षरत्नसोचकहाहै॥तेरेपाससासनौतेरो॥म्यांनसरीरमहाहे
नाईकायातेरीउषकाटेरी॥१॥वोदेउतेरेनएपहिरनेकोंनेमे
हगहाहै

॥यादिदास्ती॥

१६८

१	तीनचोईसीका		छहढाली	३२
१	दर्सणवडो		जिनपूजाअष्टासही	३४
१	दर्सणछोटो		पूजाअष्टा	३६
२	नीवाणकाडभा		तीर्थंकराकी जयमाल	३६
२	भक्तामरजीभा		वीसतीर्थंकराकीजय पूजा	३७
४	एकीभावभाषा		सिद्धाकोअष्टक	३८
५	संस्कृतएकीभा	सं	गुराकोअष्टक	३८
६	वीषापहारसंस्कृ	सं	जिनवाणीपूजा	४०
७	कल्याणमंदर	सं	पंचमेरपूजाभाषा	४१
८	लक्ष्मीस्तोत्र	सं	अष्टाईजीकीपू भाषा	४२
९	पारस्वनाथस्तोत्र		सोलाकारणकीभा पू	४२
१०	देवाकीसीधाकी पू	सं	दसलक्षणजीकीभा पू	४३
२१	सोलाकारणसंस्कृ	सं	रतनत्रयजीपूजापू	४५
२१	दसलक्षणसंस्कृ	सं	जैनसतकभाषा	४७
२२	रतनत्रयसंस्कृत	सं	पदलीछपै	५५
२२	अष्टाईजीकीपू	संस्कृ	वाईसपरिसह	५७
२४	पंचमेरपूजा	सं	समेदसिखरवीलास	५८
२५	पदलीछपा		चरचासतक	६२
२५	सांतिपाठ		वारखडीसूरतकी	७२
२६	अकृतनित्यपूजा		दूसरीवारखडी	७६
२६	सुप्रभात स्तोत्र		राजुलजीकीवतीसी	७७
२८	सोलहकारणसोला			